

THE CARAKA SAMHITA

EXPOUNDED BY THE WORSHIPFUL ĀTREYA PUNARVASU,
COMPILED BY THE GREAT SAGE AGNIVEŚA
AND REDACTED BY CARAKA & DĒDHABALA

VOLUME VI



श्री गुलबकुण-विभाग, ©
शुद्धीर्णित आयुर्वेदिक कालेज, जम्नगर

EDITED AND PUBLISHED

IN

SIX VOLUMES

WITH TRANSLATIONS IN HINDI, GUJARATI AND ENGLISH

BY

SHREE GULABKUNVERBA AYURVEDIC SOCIETY

JAMNAGAR

INDIA

POPULAR EDITION

1949

RUPEES 75/-

First Impression 1949

4000 Copies

All Rights Reserved

Published by

SHREE GULABKUNVERBA AYURVEDIC SOCIETY, JAMNAGAR.

Printed in India

At The Ayurveda Mudranalaya, JAMNAGAR.

चरकसंहिताया विषयानुक्रमणिक ।

पृष्ठ

| विषयः | पृष्ठाङ्कः | विषयः | पृष्ठाङ्कः |
|---|------------|-------------------------------------|------------|
| उद्भिज्जद्रव्याणां संस्कृतपर्यायाः | १-२८ | 3. अमिमन्थ Chlerodendron phl | |
| पञ्चविंशत्या भाषाणां संक्षिप्तधृष्टाः | २९ | moids L. | 1 |
| उद्भिज्जद्रव्याणां पञ्चविंशत्या भाषासु नामानि | २०-१२२ | 4. अङ्गोल Alangium Lamarkii | |
| उद्भिज्जद्रव्याणां स्थानाध्यायश्लोकोल्लेखः | १२३-१७१ | Thw | |
| जन्मद्रव्याणां स्थानाध्यायश्लोकोल्लेखः | १७१-१८५ | 5. अजमोदा Apium graveolens L. | |
| पार्थिवद्रव्याणां स्थानाध्यायश्लोकोल्लेखः | १८६-१९० | 6. अतसी Linum usitatissimum | |
| बृहत्सुगन्धयोगतरोणां स्थानखण्डाध्याय- श्लोकोल्लेखयुतानि नामानि | १९१-२७६ | L. | " |
| योगानां स्थानाध्यायश्लोकोल्लेखयुतानि नामानि | २७७-२८४ | 7. अतिवला Abutilon indicum | |
| पारिभाषिकशब्दानां स्थानाध्यायश्लोको- ल्लेखयुता व्याख्या | २८५-३३५ | G. Don. | " |
| जलवर्गः | ३३६-३३७ | 8. अतिविषा Aconitum heterophyll- | |
| गोरसवर्गः | ३३६-३३७ | um Wall | " |
| इक्षुवर्गः | ३३८-३३९ | 9. अपराजिता-गिरिकर्णिका Clitoria | |
| मधुवर्गः | ३३८-३४० | ternatea L. | 3 |
| कृतासवर्गः | ३४०-३४७ | 10. अपामार्ग Achyranthes Asperia | |
| प्राणिवर्गः— | | L. | " |
| (१) प्रसहवर्गः | ३४६-३४९ | 11. अम्बुष्टकी Cissampelos Pareira | |
| (२) भूमिशयवर्गः | ३४८-३५१ | L. | " |
| (३) आनूपवर्गः | ३५०-३५१ | 12. अम्लिकाकन्द Dioscorea oppositi- | |
| (४) वारिशयवर्गः | ३५२-३५३ | folia L. | " |
| (५) जलचरवर्गः | ३५२-३५७ | 13. अरिसेद Acacia leucophloea | |
| (६) जाङ्गलवर्गः | ३५६-३५७ | Willd | 4 |
| (७) विट्ठिकवर्गः | ३५६-३५९ | 14. अर्क Calotropis gigantea R.B.R. | " |
| (८) प्रतुदवर्गः | ३६०-३६३ | 15. अर्जक Ocimum gratissimum L. | " |
| मद्यवर्गः | ३६२-३६७ | 16. अर्जुन Terminalia Arjuna W&A. | " |
| अक्षरादिकमेणातुकमणिका | ३६८-४४५ | 17. अवाक्पुष्पी Trichodesma indicum | |
| | | R.B.R. | 5 |
| | | 18. अशोक Saraca indica L. | " |
| | | 19. अश्मन्तक Bauhinia Racemosa | |
| | | Lam. | " |
| | | 20. अश्वगन्धा Withania Somnifera | |
| | | Dunal. | " |
| | | 21. अश्वत्थ Ficus Religiosa L. | 6 |

Caraka Plants

1. अक्ष Terminalia belerica Roxb. 1
2. अण्डु Aquilaria Agallocha
Roxb. "

| विषयः | पृष्ठाङ्कः | विषयः | पृष्ठाङ्कः |
|---|------------|--|------------|
| 22. अफ <i>Bridelia montana</i> Wall. | 6 | 50. कर्पूर <i>Dryobalanops aromatica</i> | |
| 23. अक्षणी <i>Ipomea reniformis</i> | | Goertn | 13 |
| Chois. | " | 51. कलाय <i>Lathyrus Sativus</i> L. | " |
| 24 आढकी <i>Cajanus indicum</i> Spreng. | " | 52. कशेरुक <i>Seirpus kysoor</i> R. | " |
| 25 आत्मयुता <i>Mucuna pruriens</i> D.C. | 7 | 53. काकमाची <i>Solanum nigrum</i> L. | 14 |
| 26. आमलक <i>Phyllanthus emblica</i> L. | " | 54. कारवेडिका <i>Momordica Charantia</i> | |
| 27. आम्र <i>Mangifera indica</i> L. | " | L. | " |
| 28. इक्षु <i>Saccharum officinarum</i> L. | " | 55. कार्पास <i>Gossypium herbaceum</i> L. | " |
| 29. इक्षुरक <i>Hygrophila Spinosa</i> | | 56. कालानुशरिवा <i>Ichnocarpus</i> | |
| Andres. | 8 | frutescens Br. | " |
| 30. इमूकी <i>Balanitis Roxburghii</i> | | 57. काश्मरी <i>Ginelinea arborea</i> L. | 15 |
| Planch. | " | 58. कापमर्द <i>Cassia occidentalis</i> L. | " |
| 31. इत्कट <i>Sesbania aculeata</i> Pers. | " | 59. चिरातलिन <i>Swertia chirata</i> Ham. | " |
| 32. उद्यक <i>Blepharis eculis</i> Pers. | " | 60. कृटज <i>Holarrhena antidysenterica</i> | |
| 33. उदुम्बर <i>Ficus glomerata</i> Roxb. | 9 | Wall. | " |
| 34. उषादिका <i>Basella rubra</i> L. | " | 61. कुटुम्बक <i>Leucas linifolia</i> Spreng. | 16 |
| 35. एरका <i>Typha elephantina</i> Roxb. | " | 62. कुमाजीव <i>Putranjiva Roxburghii</i> | |
| 36. एवाचि <i>Cucumis utilisissimus</i> L. | " | Wall. | " |
| 37. एरण <i>Ricinus communis</i> L. | 10 | 63. कुम्भी <i>Careya arborea</i> R. | " |
| 38. कटुतुम्बी <i>Laugenia vulgaris</i> Ser. | " | 64. कुरण्टक <i>Barleria Prionitis</i> L. | " |
| 39. कटुफल <i>Hibiscus abelmoschus</i> L. | " | 65. कुसुम <i>Carathmus tinctorius</i> L. | 17 |
| 40. कण्टकारी <i>Solanum Xanthocarpum</i> | | 66. कोविदार <i>Bauhinia variegata</i> L. | " |
| Sche. | " | 67. कोनातची <i>Luffa acutangula</i> | |
| 41. कदम्ब <i>Anthocephalus cadamba</i> | | varamara Clerke. | " |
| Miq. | 11 | 68. कोनास <i>Schleichera trijuga</i> Willd. | " |
| 42. कदर <i>Acacia senegal</i> Willd. | " | 69. कुंकुम <i>Crocus sativa</i> L. | 18 |
| 43. कपित्थ <i>Feronia elephantanum</i> | | 70. कदिर <i>Acacia catechu</i> Willd. | " |
| Correa. | | 71. गुग्गुलु <i>Balsamodendron mukul</i> | |
| 44. कारमर्द <i>Carisa carandas</i> L. | " | Hook. | " |
| 45. करवीर <i>Nerium odorum</i> Soland. | 12 | 72. गुग्गुलु <i>Abrus precatorius</i> L. | " |
| 46. कर्पा <i>Copparis aphylla</i> Roth. | " | 73. गुडची <i>Tinospora cordifolia</i> | |
| 47. कर्पज <i>Pongamia glabra</i> Vent. | " | Miers. | 19 |
| 48. कर्कशुद्धी <i>Rhus Succedanea</i> L. | " | 74. गोक्षुरक <i>Tribulus terrestris</i> L. | " |
| 49. कर्कशु <i>Zizyphus nummularia</i> | | 75. गोक्षुर <i>Elephantopus Scaber</i> L. | " |
| W. C. | 13 | 76. कर्कमर्द-गुग्गुलु <i>Cassia tora</i> L. | " |
| | | 77. कर्षु <i>Corchorus olitorius</i> L. | 20 |

| विषयः | पृष्ठाङ्कः | विषयः | पृष्ठाङ्कः |
|---|------------|--|------------|
| 78. चन्दन Santalum album L. | 20 | 105. दुरालभा Fagonia arabica L. | 27 |
| 79. लम्बरुपा Acacia concinna D. C. | " | 106. धूर्वा Cynodon dactylon Pers. | " |
| 80. चात्रेरी Oxalis corniculata L. | " | 107. दाक्षा Vitis Vinifera L. | " |
| 81. चित्रक Plumbago zeylanica L. | 21 | 108. धन्वन Grewia tillefolia Vahl. | " |
| 82. चिरचिल्ल Holoptelia integrifolia Planch. | " | 109. धव Anogeissus latifolia Wall. | 28 |
| 83. चिर्मट Cucumis melo L. | " | 110. घातकी Woodfordia floribunda Salisb. | " |
| 84. चिल्ली Chenopodium album L. | " | 111. धार्यक Coriandrum Sativum L. | " |
| 85. चोरक Angelica glauca Edgew. | 22 | 112. नन्दितक Ficus retusa L. | " |
| 86. जम्बु Eugenia jambos Lamk. | " | 113. नलिका Onosma echiodides L. | 29 |
| 87. जया Sesbania egyptica Pers. | " | 114. नागरञ्ज Citrus aurantium L. | " |
| 88. जलविष्पली Lippia nodiflora Rich. | " | 115. नाडी Ipomea aquatica Forsk. | " |
| 89. जाति Myristica fragrans Houtt. | 23 | 116. निम्ब Melia azadirachta L. | " |
| 90. जिङ्गिनी Odina wodfer Roxb. | " | 117. निगुण्डी Vitex negundo L. | 30 |
| 91. जीरक Cuminum cymium L. | " | 118. नीलिका Indigofera tinctoria L. | " |
| 92. ज्योतिष्मती Calastrus peniculata Willd. | " | 119. न्यग्रोध Ficus Bengaleensis L. | " |
| 93. तमाल Cinnamomum tamala Fr. Nees | 24 | 120. पटोल Trichosanthes dioica Roxb. | " |
| 94. तितित्तीक Tamarindus indica L. | " | 121. पत्र Cinnamomum icers Reinw. | 31 |
| 95. तिन्दुर्क Diospyros embryopteris Pero. | " | 122. पत्रक Prunus Puddum Roxb. | " |
| 96. तिल Sesamum indicum L. | " | 123. परुषक Grewia asiatica L. | " |
| 97. तिलपर्णी Gynandropis pentaphylla D. C. | 25 | 124. पर्पटक Rangia repens Nees. | " |
| 98. तुम्बुक Zynthoxylum alatum Roxb. | " | 125. पारावत Psidium Guyava L. | 32 |
| 99. त्द Morus Indica L. | " | 126. पाषाणभेद Saxifraga ligulata Wall., | " |
| 100. त्रिस्त Ipomea turpethum Br. | " | 127. विष्पली Piper longum L. | " |
| 101. दाडिम Punica granatum L. | 26 | 128. पीछ Salvadoria persica L. | " |
| 102. दाहुरिका Berberis aristata D. C. | " | 129. पुनर्नवा Berhavia repens L. | 33 |
| 103. दीप्यक Carum copticum Benth. | " | 130. प्रसारणी Pederia fetida L. | " |
| 104. दुग्धिका Euphorbia pilulifera L. | " | 131. प्राचीनामलक Flacourtia cataphracta Roxb. | " |
| | | 132. त्रियाल Aglaia roxburghiana Miq. | " |
| | | 133. प्लक्ष Ficus tsiela Roxb. | 34 |
| | | 134. फेविला Sapindus trifoliatus L. | " |
| | | 135. रकुल Mimosa elengi L. | " |

CARAKA—INDEX

| विषयः | पृष्ठाङ्कः | विषयः | पृष्ठाङ्कः |
|---|------------|--|------------|
| 136. बद्ध Zizyphus jujuba Lamk. | 34 | 167. वन्जुल Salix tetrasperma Roxb. | 42 |
| 137. बिल्व Aegle marmelos Corr. | 35 | 168. वक्त्र Cratœva religiosa Forst. | " |
| 138. बीजक Pterocarpus marsupium | | 169. वाताम Prunus amygdalus Baill. | 43 |
| Roxb. | " | 170. वार्तक Solanum melongena L. | " |
| 139. बीजपूरक Citrus medica L. | " | 171. वासा Adhatoda vasica Nees. | " |
| 140. बृहती Solanum indicum L. | " | 172. विकसुत Gymnosporia montana | |
| 141. ब्राह्मी Herpestis monniera Benth. | 36 | Benth. | " |
| 142. भद्र्य Dillenia indica L. | " | 173. बिडम् Embellia ribes Burn. | 44 |
| 143. चूडराज Eclipta alba Hassk. | " | 174. बिदारी Ipomœa digitata L. | " |
| 144. मण्डकपर्णी Hydrocotyle asiatica L. | " | 175. शङ्खपुष्पी Evolvulus alsinoides L. | " |
| 145. मदन Randia dumetorum Lam. | 37 | 176. शण Crotalaria juncea L. | " |
| 146. मधूक Bassia latifolia Roxb. | " | 177. शणपुष्पी Crotalaria verrucosa L. | 45 |
| 147. मरिच Piper nigrum L. | " | 178. शतपुष्पा Peucedanum graveolens | |
| 148. नाई Nardostachys Jatamansi | | Benth. | " |
| D. C. | " | 179. शतावरी Asparagus racemosus | |
| 149. सुत्र Phaseolus mungo L. | 38 | Willd. | " |
| 150. सुस्त Cyperus rotundus L. | " | 180. शमी Prosopis Spicigera L. | " |
| 151. सुत्रा Clematis triloba Heyne | " | 181. शल्लकी Boswellia serrata Roxb. | 46 |
| 152. मूलक Raphanus sativus L. | " | 182. शलिपर्णी Desmodium gangeticum | |
| 153. यव Hordeum vulgare L. | 39 | D. C. | " |
| 154. यवातक Alhagi maurorum Desv. | " | 183. शाल्मली Bombax malabaricum | |
| 155. रक्षोपल Nymphaea lotus L. | " | D. C. | " |
| 156. मन्थवक Doemia extensa Br. | " | 184. शिरोष Dalbergia Sissoo Roxb. | " |
| 157. यजमन Vigna catiangu Endl. | 40 | 185. शिग्रु Moringa Pterygosperma | |
| 158. राजादन Mimosa hexandra | | Gœrtn. | 47 |
| Roxb. | " | 186. शिरीष Albizzia lebeck Benth. | " |
| 159. गग्ना Pluchea lanceolata Oliv. | " | 187. शृङ्गवेर Zingiber officinale Rose. | " |
| 160. कर्हा Lanthus falcatus L. | " | 188. शृङ्गाटक Trapa bispinosa Roxb. | " |
| 161. रोहिणी Soymida febrifuga Juss. | 41 | 189. सप्तपर्णी Alstonia scholaris R. Br. | 48 |
| 162. लज्जुन Allium sativum L. | " | 190. सजे Shorea robust Gœrtn. | " |
| 163. लिङ्गुव Artocarpus Lokoocha | | 191. मधुप Brassica Compestris L. | " |
| Roxb. | " | 192. सारिवा Hemidesmus indicus Br. | " |
| 164. लेखित Portulaca oleracea L. | " | 193. सुधा Euphorbia nerifolia L. | 49 |
| 165. श्रेष्ठ Symlocos racemosa Roxb. | 42 | 194. सुरसा Ocimum sanctum L. | " |
| 166. अना Acorus calamus L. | " | 195. शोमराजी Proralea corylifolia L. | " |

| विषयः | पृष्ठाङ्कः | विषयः | पृष्ठाङ्कः |
|---|------------|-------------------------------------|------------|
| 196. हंसपादी <i>Adiantum lunulatum</i> | | 27. राम The hangal or kashmir deer | 57 |
| Burm. | 49 | 28. लटपक The minivet | " |
| 197. ह्युषा <i>Juniperus Communis</i> L. | 50 | 29. लटा The scarlet minivet | 58 |
| 198. हस्तिदन्ती <i>Croton oblongifolius</i> | | 30. वटिका The female bustard or | |
| Roxb. | " | button quail | " |
| 199. हारिद्रक <i>Adina cordifolia</i> Hook. | " | 31. वर्तारिक The rain quail | " |
| 200. हेमदुग्धा <i>Argemœ Mexicana</i> L. | " | 32. वागर The monkey | " |
| Caraka Animals and Birds | | 33. वार्तिक The jungle bush quail | 59 |
| 1. अय्यूर The bulbul | 51 | 34. शतपत्र The wood pecker | " |
| 2. अम्बुकुण्डो The water hen | , | 35. शम्भर The Indian sambhar | " |
| 3. इन्द्राभ The adjutant | , | 36. शरभ The elk or wapiti | " |
| 4. उत्क्रोण The trumpeter | " | 37. शतज्यो The golden eagle | 60 |
| 5. कङ्क The heron | 52 | 38. शारपद The stork | " |
| 6. कविशत The grey partridge | " | 39. श्यामकाकुलीमृग The dark-brown | |
| 7. कलविह्व The house sparrow | " | python | " |
| 8. कुरुर The fish eagle | " | 40. श्येन The hawk | " |
| 9. कुलिङ्गक The sparrow hawk | 53 | 41. सिंह The lion | 61 |
| 10. कोकिल The koel | " | 42. हंस The swan | " |
| 11. कोयलिट The coucal | " | 43. अश्व The horse | 62 |
| 12. गोकर्ण The mule deer | " | 44. अश्वतर The mule | " |
| 13. गोवा Iguana | 54 | 45. आरा The cobbler's owl bird | |
| 14. चारुङ्क The gazelle | " | (avocet) | " |
| 15. जीवगीवय The common mynah | " | 46. उद The cat fish | " |
| 16. दुन्दुभि The hornbill | " | 47. वरण The oorial (wild sheep) | 63 |
| 17. पारावत The pigeon | 55 | 48. उलूक The owl | " |
| 18. पुष्करातु The lily trotter | " | 49. उष्ट्र The camel | " |
| 19. श्वेत The chital (spotted deer) | " | 50. ऋक्ष The bear | " |
| 20. प्रियासमज The babbler | " | 51. ऋक्ष The musk deer | 64 |
| 21. यक The common crane | 56 | 52. एण The black buck (Indian | |
| 22. वलङ्का The snow wreath crane | " | antelope) | " |
| 23. भास The bearded vulture | " | 53. कर्दली The marmet | " |
| 24. मत्स्य The fish | " | 54. कर्कटक The crab | " |
| 25. मृणालकण्ठ The snake bird | 57 | 55. कालकुण्डल The common river tern | 65 |
| 26. रक्तार्मक The red jungle fowl | " | 56. कुतुट The cock | " |
| | | 57. कुम्भीर The gangetic garial | " |
| | | 58. कुरज The roe deer | " |

| विषयः | पृष्ठाङ्कः | विषयः | पृष्ठाङ्कः |
|---|------------|---------------------------------------|------------|
| 59. इल्लिङ्ग The baya or weaver bird | 66 | 86. प्लव The pelican | 72 |
| 60. कृषिका The hedgehog | " | 87. वही The peacock | 73 |
| 61. कूर्म The tortoise | " | 88. मृदराज The king bird of paradise, | " |
| 62. कोट्यारक The Indian muntjak | " | 89. मेक The frog | " |
| (barking deer) | " | 90. मकर The magar (the great | " |
| 63. खड्ग The rhinoceros | 67 | Indian crocodile) | " |
| 64. खर The ass | " | 91. नमुश The honey buzzard | 74 |
| 65. गज The elephant | " | 92. मदिष The buffalo | " |
| 66. गयडक The gecko | " | 93. नाजार् The cat | " |
| 67. गवय The gayal cow | 68 | 94. मूषिक The mouse | " |
| 68. गृध्र The vulture | " | 95. मृगमातृका The hog deer | 75 |
| 69. गो The cow | " | 96. लाव The common-quail | " |
| 70. गोनई The hill partridge | " | 97. लोपाक The fox | " |
| 71. चकार The chukor | 69 | 98. सोहृष्ट The king fisher | " |
| 72. चटक The tree sparrow | " | 99. वरपोत The deerlet | 76 |
| 73. चमर The yak | " | 100. वान्ताद The dog | " |
| 74. त्रिवष्टकाङ्गुलीमृग The reticulated | " | 101. वायस The crow | " |
| python | " | 102. वारह The spoon-bill | " |
| 75. चिळट The musk shrew | 70 | 103. वृक The wolf | 77 |
| 76. सुसु The susu (gangetic | " | 104. व्याघ्र The tiger | " |
| dolphin) | " | 105. गह्व The conch snail | " |
| 77. जटो The hoopoe | " | 106. गयरी The skimmer or scissor | " |
| 78. जम्बुक The jackal | " | bill | " |
| 79. तख The hyena | 71 | 107. शन The hare | 78 |
| 80. तित्तिरि The partridge | " | 108. शिशुनार The estuarine crocodile | " |
| 81. तिमिन्त्रिल The whale | " | 109. शुक्ति The pearl oyster | " |
| 82. द्वीपी The panther | " | 110. श्रावि The porcupine | " |
| 83. धूमिका The owl | 72 | 111. समर The wild boar | 79 |
| 84. मङ्गल The mongoose | " | 112. हरिण The red deer | " |
| 85. नन्दीमुखी The flamingo | " | | |

चरकसंहितागतोद्भिज्जद्रव्याणां संस्कृतपर्यायाः।

Sanskrit Synonyms of the Plant Substances mentioned in the
Caraka Sambhita

अक्षोटः-अग्रोट, पार्वतीय, फलनेह गुडाशय, कीरेष्ट, पर्पराळ, स्वाहुपज, पृथक्छद, रेखाकल, वृत्तफल, मदनभगल, अक्षोट, आक्षोट, अखरोट, कन्दराल, आस्कोटक, अक्षोटक, आखोट, मधुमज्ज, वृहच्छद ।

अगुरुः-कृमिज, लोट, राजार्द, वंशक, लघुलोहाख्य, जोङ्गरु, कृष्ण, वर्णप्रसादन, पिच्छिल, शृङ्गज, पातक, अनार्यक, असार, अमिदाष्ट, कृमिगन्ध, काण्डक, प्रवर, योगज, अनार्यज, कृष्ण, कालागुरु, कृष्णागुरु, वसुध, मंथल्य, विश्वरूपक, काकतुष्ट, शृङ्गारशीर्ष, केदर, कृशकाष्ठ, धूर्वाई, बल्लर, मिश्रवर्ग, गन्ध, शीतमालिन, जोगक, अउफक, काष्ठक ।

अग्निमन्थः-अग्निमन्थिनी, अरणि, गन्धपत्रा, गन्धपुष्पा, गणिकारिका, जगा, नादेयी, कृशाचुगा, क्षुद्राग्निमन्थ, लघुमन्थ, तपन, तमुत्पच, तेजोवृक्ष, इमिमन्थ, कर्णिका, गिरिकर्णिका, ज्येष्ठी, श्रीपर्ण, तेजोमन्थ, ज्योतिष्क, पावक, भारणि, वहिमन्थ, मथन, जप, पावकारिणी, अग्निमथन, अरणीकेतु, श्रीपर्णी, धिजगा, अनन्ता, नदीजा, तमुत्पच, पित्तमता, वहिमूल, अग्निजीजक, विन्धा, वातघ्नी, तर्धारि, वैजयन्तिक ।

अङ्गोष्ठः-अङ्गोष्ठक, अङ्गोष्ठ, अङ्गोल, बोध, दीर्घछेलक, दीर्घगन्ता, गन्धपुष्प, गुप्तस्नेह, गूढवलिङ्का, गुणाडयक, कोलक, कंकरोल, कंडक, कठोर, लम्बकर्ण, मदन, निकोचक, निकोटक, नेदिष्ट, पीत, पीतघार, रोचन, रेची, रामट, ताम्रफल, - वामक, विपन्न, विशालतैलगर्भ, भूपित, घलत, दृढकण्टक, गूढपत्र, दीर्घकील ।

अजकृर्णः-सर्जक, वस्तर्ण, कपाग, चिरपत्रक, सस्यध्वरक, शूर, पाल, सर्ज, सर्जरस, कालकूट, रजोद्वय, वल्लीवृक्ष, चीरपर्ण, राल, कार्य, सर्जक, गरिचपत्रक ।

अजगन्धाः-खरपुष्पा, वस्तगन्धा, विगन्धिहा, कारवी, वर्धता, गन्धा, वृङ्गी, पूतिमयूरिका, सुरपुष्पी, उग्रगन्धा, प्रपगर्भा, ब्राह्मी ।

अजमोदाः-खराडा, मयूर, दीप्यक प्रक्षकुशा, कारवी, लोचमर्कट, प्रस्तमोदा, उग्रगन्धा, मर्कटी, मोदा, गन्धदला, हस्तिकारवी, गन्धपत्रिका, मायूरी, शिलिमोदा, मोदाव्या, वहिरीपिका, ब्रह्मकीशी, विशाला, हयगन्धा, उग्रगन्धिहा, मोदिनी, फलमुखा, विशल्या, दिव्या, हस्तिमयूरिका, खपाडा, यवानी, दीप्य, पवाडा, भूकदम्ब, ब्रह्मरर्भ, क्षेत्रयवानिका, यवसाहा, दीपनी, दीपिनी, वातारि यवज-दीपनीय, शूलहन्त्री, यमानिका, उमा, तीव्रगन्धा, अजमोदिका, तीक्ष्णगन्धा, ह्या, अग्निविंघ्नी, भूमिकदम्बक, यवाग्रज, यवानिका ।

अतसीः-विच्छला, देवी, मदगन्धा, मधोत्कटा, उमा, खुमा, हेमवती, सुनीला, नीलपुष्पिका, चणका, क्षौमी, रुद्रवानी, सुवर्चला, नीलपुष्पी, पार्वती, मच्छना, तैलेत्तमा ।

अतिचलाः-चलिका, बल्या, भूरबला, धंटा, वंकरी, कपिशोका, शीता, शीतपुष्पा, विरक्तता, वाटयपुष्पिका, वृष्यगन्धिका, वृष्यगन्धा, कंकतिहा, पीतपुष्पा ।

अतिविषाः-अहणा, अतिसारघ्नी, भंगुग, भुङ्गी, सुग-बलभा, काश्मीरा, माक्षी, प्रतिविषा, प्रविषा, क्षिप्तुमैपज्य,

शोकापहा, श्यङ्गी, श्यङ्गीका, श्वेता, शुक्लकन्दा, श्वेतकन्दा, श्वेत-
वचा, श्यामकन्दा, उपविषा वीरा विरूपा, विषा, विपरूपा,
विश्व, अमृता, शुक्लकन्द, महोपध मृद्वी ।

अपामार्गः—अयोध्या अयामार्ग, अघाट, अश्वशल्य,
अपाङ्गक, चमत्कार, दुर्गह, धामार्गव दुग्मिपह, कीशायी,
किणिही, कान्तारिक, कर्कटपिपायी, किणी, कण्ठी, खरमञ्जरी,
क्षुरक, क्षुरमध्य, कुञ्ज, कुञ्जमालाकण्ट, मर्दटी, मयूरक,
पाण्डुकण्टक, पराकपुष्पी, प्रत्यक्पुष्पी, प्रत्यक्पर्णी, शैशरिक,
शैखरेय, शिखरी, स्वलमञ्जरी, तालाकण्ट, वसिर, वृत्तकल,
वपिपिप्पली, धुद्रापामार्ग, आघट्टक, दुग्धनिका, रघुविट्ट,
कल्पपत्रिका, क्षय, प्रत्यक्प्रेणी, स्वरच्छद, कूट, मर्कट-
पिप्पली, तालुकण्ट, कण्डकण्ट, अभःशल्य, पङ्क्ति, कण्टक ।

अम्वष्टकीः—पाठा, अम्वष्टा, पापचेरी, कुचेरा,
छिन्नवेशिका, अम्वष्टिका प्राचीना, पापचेरिका, यूथिका,
रथापनी श्रेयसी विद्वक्पेठा, एठाश्रीला, कुचेली, दीपनी,
वनतिका, तिलपुष्पा, वृत्तिका, शिशिवा, शक्र, माली,
वरा, देवी, वृत्तपर्णी, तिका, विद्वक्पेठा, रथा, अविद्वक्पेठा,
पाटिका, अविद्वक्पर्णी, पाटिका सुस्थिरा, प्रतापिनी,
वराधनी, माली, शिशिवा, शिशुत, वृत्तपर्णी रक्तनी,
विषहन्त्री, महोत्तरी, रथिया, दीपनी वीरा, वल्लिका,
वरातिका, वृत्तिकर्णिका, द्विद्विजता ।

अम्बिकाः—अम्बली, अम्बला अम्बली, पङ्क्ति आम्बिका,
आम्बिका, अम्बला भुक्ता, भुक्तिका लुक्तिका, चुक्ता,
चिचका, चिचा, लुक्ता, चरित्रा दन्तशठा, गुरुपत्रा, पक्षपत्रा,
पिच्छिला, सर्वांश, सुचुक्तिका, शाकचुक्तिका, सुतिन्तरी,
तिन्तित, तिन्तिली, तिन्तिला तिन्तरीका, तिन्तरीक,
यमवृत्तिरिति, वृक्षान्ध, चम्बिका शुक्ला ।

अरिमेद—अरिमेर, अरिमेरक गोधास्त्र, अरिमेद,
अहिमेद, अहिमारक, अरिमार, वृत्तिमेद ।

अर्कः—आदिपुष्पिका अलक, विम्भीर, दीर्घपुष्प,
दीर्घपुष्पिका रक्तपुष्प, दिव्यपुष्पिका, गणपती, गणपत्र,
गण्ठील, गन्दार, प्रताप, रक्तार्क, रातार्क, रुपिया,
सदापुष्प, सदापुष्पी शम्भु शीतार्क, शिवहय, शुक्लफल,
श्वेत, श्वेतार्क, तपन, वसुध, वेधा, वृत्तमल्लिका, शुक्लफल,

शुक्लार्क, श्वेतमन्दार, शर्करापुष्प, क्षीरदल, तूलफल,
सदाभुम, प्रताप, क्षीरकाण्डक, विशीर, भारकर, हरिद्व,
विश्ववान् अहर्वाधव, अर्थमा अहर्मेगि, उष्णरश्मि, भातु,
विकर्तन, गणरूप, मन्दार, प्रमाकर, विभाकर, दिवाकर,
दिभावसु सताथ, सविता, सुतु, आस्फोट, वसुध,
हिमाराति, पुच्छी क्षीरी, खज्जेन, चीतपुष्पक, जम्भल,
क्षीरपर्णी, विक्षीण, सदापुष्प, सूर्याह, आस्फोटक, हरि,
कीर, तनुफल, क्षीरगन्ध, अहर्पति, आस्फोटक, रवि ।

अर्जकः—शेपेट्केशी, निशाल रामतुलसी, शोफहारी,
सुगन्धी, सुसन्नक, सूक्ष्मपत्रक, सुसुव, सुवक्ता, वन्धवर्षा,
विपन्न श्वेततुलसी, गन्धपत्र, कुटेर, नम्रगन्ध, वधरी,
क्षुद्रतुलसी, क्षुद्रपर्ण सुस्वार्जक, जम्बीर, कुठेरा, कटिजर,
निर्वाजक, वेनुण्ड, वटपत्र, कुटेर, गन्धवृक्ष, वटपत्रक,
श्वेतच्छद पाता, श्वेतपर्णा, आम्बार्ज, तीक्ष्ण, तीक्ष्णगन्ध,
कृष्णार्जक, कामल मालुह, कृष्णमालुह दुग्धमल्लिका,
गरुड, वनधर्मा, कृष्णवर्गी, कालवर्णी, करालक कृष्णवर्णी,
सुमिपालक, कालमाजक, कवरी, तुली, ताम्रपुष्पा,
अनगन्धिका, कवरा, खरपुष्पिका सुरभी, तुलसीदेवा, सुता,
अनेतराक्षसी असुरा, वर्वा अन्नगन्धा ।

अर्जुनः—धाराफठ, वकुभ, कृष्णवृक्ष, निरन्तरफठक
नारद, श्यामनारक, वनजक्ष, वीरवृक्ष पार्थ, कर्कवीर्य,
मयूरक, मातुरेकपुत, चित्रयेवी वीरान्तक गिरीटी
नदीगर्ज, पाण्डव इम्बर, धनंजय, वैगन्तक गण्डीवी,
शिवमल्लक, कर्णारि, सन्ध्याची कुरुवीरक, क्रौन्धेय,
इन्द्रसूनु वीरदु, कृष्णनारथि, पृथाज, कस्तुर, पञ्चो,
इन्द्रदु, इन्द्रदुम, वीर, वीरवृक्ष ।

अवाक्पुष्पीः—शतपुष्पा, मिश्रि, वेपा, पीतिका,
मादवी, जिफा, अतिच्छन्ना, शताक्ष, कारवी, संपातपत्रिका,
पत्रा, वक्रपुष्पा, सुतुप्पिका, शनन्तुता, चतुला पुष्पाहा,
शतपत्रिका, वनपुष्पा, भूरिपुष्पा सुगन्धा, सूक्ष्मपत्रिका,
गन्धारिका अहिच्छन्ना ।

अशोकः—अशोक, धंगनाद्रिद, विचित्र नक्षत्रपुत्र,
दोषहारी दोहरी, गन्धपुत्र, हेमपुत्र, कर्माश्रक, वाताश्रि-
दहद, कान्ताश्रकदोहद, नट, पिण्डीपुष्प, पल्लव, प्रपल्लव,
रक्तपल्लव, रामा, रोगितक, श्यामा, शोकराश, सुगन्ध

श्रीनिरीक्षणदोहद, शोकहर्ता, स्मराविवास, ताम्रपल्लव,
 वीतरोक, विशोक, वञ्जुलद्वन्द्व, वञ्जुलमधुपुष्प, वामांघ्रिघातक,
 मधुपुष्प, पिण्डपुष्प, वामांघ्रिघातन, पट्पदमञ्जरी,
 चित्ररागी, कंकेली, कंशोद्वि, केलिक, कर्णपूर ।

अश्वमेधः—कुशलो, अणुपुष्प, श्लक्ष्णवक्त्रं वनराज,
यमलपत्रक, यमपत्र, चन्द्रक, कुक्षाल, अमलपत्रक, वालुकापर्ण,
इन्दक, अश्विमान्त, शिलान्त, इन्दुशपरी, अम्बुद, पावाणान्तक।

अथ्यगन्धाः—गन्धान्ता, वाजिनामा, ह्याह्या,
 कागदहर्णा, वग्दा वल्लः, कुष्ठगन्धिनी वाजिगन्धा, कटुका,
 अश्वारोहक, काराहर्णा, तुंगी, वग्गा, वाजिहरी, ह्या,
 अथ्यगन्धिका, कम्बुका, कम्बुकाष्टा, वरदिका, अश्वारोहा,
 वनजा, राजिनी, एयी, पुष्टिदा, पुण्या, ह्यगन्धा, पीवरा
 पञ्चावर्णा वातजो, श्यामला कामरूपिणी, कामप्रियहरी,
 गन्धपत्रो, ह्यप्रिया, वराहपत्रो अध्यगन्धिका, तुंगगन्धा,
 कम्बुका, अश्वारोहिका, मलजा, श्वरोदिता पुष्टिपीवरा,
 कल, प्रियहरी, कुष्ठगन्धिनी, कुष्ठगन्धा, वरणावर्णी ।

अभ्युत्थः-पञ्चमुत्तम त्त, अधरथ. बोधेद् बु बोधिरुद्,
बोधिदृढ, बोधितव. दैत्यदृ दैत्यवृद्ध, चरदल, चरपत्र
देवात्मा, धर्मरक्ष गुणपुत्र, गजभाक्षक गजानान गजपत्र
गुरु, वपीनन, गेणवात्त्व मल्लव. महादृढ, नागवधु.
पवित्रद. विपत्र, धीःदृढ, सेव्य. सत्य, दृष्टिदृढ, दयावत्,
श्रीमान्, शुभद, याज्ञिक विप्र, कुञ्जानन, विप्र.जा. वृक्षराज,
कृष्णानन, हारवाग, वैद्यवालय, विप्र, साक्षवत् गुणपत्र ।

असतः-नाराज, सौरि, वन्धूकपुष्पक, प्रियक,
चीनक, दाराम, प्रियशालक, दुमील, मीनवृक्ष, पीतसार,
पीतसालक, पीनगाल, पीनशालक, पीतमाल परम सुध,
वन्धकपुष्प, नीलर, प्रियसालक ।

आखुपर्णीः-आदिभू, बहुवर्णिका, बहुपादिका
 बहुदिव्या बहुधात्रीयता भूमिचरी, नष्टा चित्रा द्वन ती,
 कृतिता, गता, गुपादणी, भूराश्रया भूपदपणी, भूरीभवा,
 नृषिकाहता, गुपणीयता, गुपीकणी न्यसेधो, पदयश्चणी,
 पुनश्चणी, पणिता, प्रतीर्ग शता, पञ्चणी क जपविता,
 रण्डा, पचित्रा, सहस्रनृपी, शम्भरी, शतगुहिका, सुाणी,
 सुाणिता, अवचित्रा, उहृयणी, गृपा, वृपणी, श्विकपणी
 दिक्कन्ता, आखुपणी, आखुपणिका, उपवित्रा, पणिका ।

आढत्तीः—तुवरौ, तुल्या, करवीरभुजा, वृत्तमीजा,
पीतपुष्पा, चटर्था. मृताल, मृतालक, काक्षी, सुगर्जना,
मृत्सना, तुवरिका, शशपुष्पिका ।

आत्मगुणाः-रूपिकच्छ, अजडा, अघण्टा, कण्डूरा,
जडा, प्राण्पावणी, ऋष्यप्रोक्ता, श्मिन्नी मर्कटी.
कपिप्रभा, शुष्पिण्डी, स्वर्गगुणा. कण्डूरा, शुक्लश्मिन्नी,
जडा, अघण्टा. सद्यःशोधा, शूका, शुद्धवती. गावभजा,
वच्छ्रमती, कच्छूरा, ऋषभी रूपिकच्छूरा, ऋषभजटा.
स्वगुणा अनादा, प्रावृषा, शुक्लश्मिन्नी, अजडा, वानारी,
कपोकच्छ, शूष्पिण्ड, शूकपिण्डी, न्य प्रा, मर्हर्षी,
लाजली कुण्डली, चण्डा, दुरभिप्रहा कपिरेमकला, गुणा,
दु.स्पर्शा, प्रावृष्या, बदरी, गुरु, भार्षभी श्मिन्नी,
वराहिका, तीक्ष्णा, रोमाञ्च, वनशूकरी, काशीरोमा,
रोमवली, न्यज्ञा, शृण्या ।

आदित्यवल्लीः—आदित्यभक्ता, वरदा, अर्पभक्ता, सुवर्चला, स्थूलता, गर्वकान्ता, मण्डूकपर्णी, सुरदम्भना, तीरि, सुतेजा, अर्कद्विषा, रवीष्टा, मण्डूकी, सत्यनाम्नी, मार्तण्डवज्रभा, विकान्ता, भास्करेष्टा, सूर्यावर्ता, रश्मिप्रिया, रश्मिप्रीता, आदित्यवान्ता, सुखोद्भवा, सूर्यभक्ता, दय्यमुखी, सूर्यलता ।

व्यामलङ्कः—आमलिका, अमृतफल, बहुकली, धानिका, धानो, धानिकल, जातिकल, कायस्था, कर्षकला, पयसस, रोचनी, भिर, शिता, वान्ता, श्रीकल, श्रीमली, तिष्या, तिष्यकला, यथःस्था वृष्या, वृत्तकला, आदिकला, अक्षरा, आमलकी, अमृतकला, अमृता, जातीकल, जातीकलरस ।

आध्रः—साल, सहकार, अतिशैरभ, कामाज,
गधुदत्त, माकन्द, पिचवत्तभ, अतिशैरभ, चूतक, फल-
श्रेष्ठ, फलोत्पत्ति गृधालक, चूत, पट्टपदातिथि, वसन्तद्वि-
प्रीयिष्य गन्धवन्धु, अलपिष्य, शरैष्ठ, मदिरासस, विकवन्धु
केतवायुव, कोपी, कामशर, परपुष्टमोक्षसव कामवन्धु,
करीष्ट, माधवद्विष्ट, रुद्राग्नीष्ट, सीधुरस, मधूली, कोटि-
लोत्पत्त्य, वसन्तद्विष्ट, मोदाक्ष, गन्धधालय, गन्धधाम,
सुवन्द, विकराग, हृष्टप्रिय, प्रियन्धु, कोविलावास, वसन्त-
पादप, अमरप्रिय, मनोक्ष, सन्धधालास, शुक्रप्रिय, वनोत्पत्त्य,
मदाव्य, मजारी ।

आभ्रातकः—अभ्रात, पीतनक, कपिचूत, अमल-
याटक, शङ्खी, कपि, रसाज्य, तनुक्षीर, कपिप्रिया, वषैगात्री,
तनुक्षीरी, कपिचूडा, कपिप्रिया, पीतन, कपीतन, मधुराम्लक,
भुङ्गीफल, अम्बरातक, अम्बरीप, अभ्रात, अध्वगभोग्य,
मर्कटप्र, तुङ्गी ।

आरन्ध्रः—अरुज, आरोग्यशिम्वी, आमदा, चक-
परिण्यात्र, चतुरंगुल, दीर्घफल, द्रुमोत्पल, हिमपुष्प,
ज्वरान्तक, जटामुत, कृतमाल, कण्डू, कुष्ठसुदन,
कर्णारगक, कर्णिकार, कुष्ठ, कुण्डली, मङ्गराजद्रुम, मङ्ग-
कर्णिकार, मन्थान, मृपद्रुम, नक्तमाल, प्रमेहप्र, राजवृक्ष
रोचन, राजतद, रेचन, शम्पाक, शम्पाक, सुवर्णक,
स्वर्णमुत्र, स्वर्णद्व, स्वर्णीग, स्वर्णभूषण, कृतमालक, व्याधि-
घान, हेमपुष्प, शेफालिका, स्वर्णवृक्ष, सारकल, आरवत,
ज्वरान्तक, हिमपुष्प, व्ययान्तक, स्वर्गस्थाली, द्रुमोत्पल ।

आसकः—आसक, वीरसेन, वीर, वीरान्तक, आसक
भद्र, भद्रक, रक्तफल ।

आर्द्रकः—शृङ्गवेर, कटुमद, वट्टकट, गुल्ममूल, मूलत्र,
वर, कन्दल, महीज, सैकतेष्ट, अनूपन, अपाकशाक,
आर्द्रक, राहुचट्ट, सुशाक, शार्ङ्ग, आर्द्रशाक, सच्छाक,
आर्द्रिका ।

इक्षुः—दीर्घच्छद, भूरिष, गुडमूल, असिपत्र, मधुवृण,
सद्युष्टि, विपुलस, गुडशर, रसाल कोशकार, इक्षुर,
असिपत्रक, पयोधर, कर्कोटक, वंश, वास्तार, सुकुमारक,
असिपत्र, वृष्य, गुडवृण, मृत्पुष्प, गुडद, गण्डीरी, स्वज्ञ-
पवन, गुडकाष्ठ, तुणाधिप ।

इक्षुरकः—इक्षुर, केविलाक्ष, काकेक्षु, क्षुरक, क्षुर,
भिष्टु, वाङ्केक्षु, इक्षुगन्धा, इक्षुवालिङ्गा, शृगाली, शृङ्गलि,
अरगक, शृगालघटी, वज्रास्थि, शृङ्गना, वज्रकण्टक, वज्र
शृङ्गलिङ्गा, त्रिकेक्षणा, पिच्छिङ्गा, भुवनसन्निता, इक्षुगन्धा,
कोकचनयन, शरका, वीरतर, इक्षुर, शुक्रपुष्प, कुल हक ।

इक्षुदीः—भंगारवृक्ष, अनिलान्तक, अश्रुलिङ्गा, भद्रकी-
वृक्ष, दीर्घकण्टा, दासपमफला, गौरवक, इक्षुद, इक्षुल,
इक्षुलि, दिङ्गुवत्र, कृतरक, कोष्ठफल, मुनिपादप, पुविपत्रा,

पूतिगन्ध, शूलारि, तिकक, विपकण्टक, तैलफल, तापस-
वृक्ष, तापस्तद, तनुपत्र, तीक्ष्णकण्ट, विपगन्धक, विगन्धक,
तिकमञ्ज, तैलवीजा, तापसद्रुम, अनिगन्धक, तैलफल,
जलजन्तुविनाशक, दीर्घकण्टा, तैलवीजा ।

इन्द्रवास्णीः—आरमरक्षा, वृद्धरकला, वृद्धादगी,
चित्रफला, चित्रवल्ली, चित्रला, दीर्घवल्ली, देवी, गजचिर्मिष्टा,
हस्तिदन्ती, काया, कटुसा, कपिलाक्षी, कुम्भसी, महाकला,
महेन्द्रो, मृगाक्षी, मृगेश, मृगादनी, रम्या, श्वेतपुष्पा,
सौम्य, त्रपुमा, त्रपुसी, तंबसी, जहप्रिया, विजला, ऐन्द्री,
इन्द्राहा, इन्द्रवार, गवादनी, क्षुद्रकला, वृषमाक्षी, गवाक्षी,
महेन्द्रवास्नी, गजचिर्मिष्टा, विप्रवी, अमरा, गुग्गुलिङ्गा,
मात, सुवर्णा, सुकला, तारका, इन्द्रवल्ली, शालकप्रिया ।

उच्चटकः—भित्तवा, तित्तिमर, स्वस्तिक, मुनिपण्क,
श्रीवाक, सूचित्र, पर्णाक, कुकुट, शिखी, त्रितुष, मुनिपण्ण,
चतु, सुतपत्र, शित्तिचार, सूच्य, हय, सूचगह, सूचि, पत्रके,
श्रीदारक, वधु, कुसुट, कुकुट, सूचिदल, श्वेताम्बर,
मेघकृत, ग्राहक, शित्तिवार ।

उत्पलः—इन्दीवर, कुलप, कुन्दोद, नीलपत्रक,
सत्पत्रक, कन्दोद, सीगन्धक, सुगन्ध, कुङ्कुमलक,
असितोत्पल, इन्दिरावर, इन्दीवार, नीलपत्र ।

उदुम्बरः—अपुष्पफलसंवन्ध, उदुम्बर, ब्रह्माक्ष,
हेमदुग्धी, हेमदुग्धक, हेमदुग्ध, हरिताक्ष, जन्तुफल,
जघनफल, कालन्ध, क्रमिकण्ट, क्रमिण्टक, क्षीरवृक्ष,
क्रिमिण्टक, पवित्रक, पुष्पाशून्प, पणिमुस, पुष्पाहीन,
सौम्य, सदाफल, शीतवृक्ष, श्वेतफल, सुचतु, सुपनिधित,
यज्ञसार, यज्ञिय, यज्ञयोग्य, यज्ञफल, यज्ञोदुम्बर, यज्ञाक्ष,
शीतफल, शीतफल, मधुसूत, जवनेकल ।

उपकुञ्जिकाः—कृष्णाजानी, जरणा, सुान्या, कृष्ण-
जीरक, वर्षाकाली, कादमीरजीरका, काली, कल्पेशका, हया,
उद्गारशोधिनी, कृष्णा, वहुगन्धा, मेदिनी, पट्ट, मेदिनिका,
रुद्रा, नीला, नीलकण्ठा, वान्तिशोधिनी, बालमेवी, सुगन्ध,
सुगन्धा, कृष्णजीर, उद्गारशोधिनी, उपकुञ्जी, उपकुञ्जी,
उपकालिका, सुपवी, कुञ्जिका, कुञ्जी, पृथ्वीका, रथूलजीरक,
स्थूलकणा, पृथु, मनोज्ञा, जारणी, जीर्मा, तर्हणी ।

उपोदिकाः—उपोदक, पोतकी, मालवा, अमृतवलरी, कलमी, विडिला, विडिलचछदा, मोहिनी, मदशाक, विशाला नलिपोदकी, उपोदिका, उपोती, वृक्षप्रिया, अपोपिका, पूतिका पूतीका ।

उशीरः—मृणाल, अभय, समगन्धिक, मृणप्रिय, विरतर, वीर, वीरणमूलक नलद, अमृणाल, रेव्य अरदाद, जलाशय, लामजक, लघुभय, इष्टकापथ, लघुलय, अवदात, अवदाहेष्टकापत्र, इन्द्रमुस, उशीरक, जलवास, हरिप्रिय, वीरण, रणप्रिय, वीरतह, शिशिर, शीतमूलक, वितानमूलक, दाइहरण, जलामोद गन्धाज्य, सुगन्धिक, सुगन्धिमूलक, सुगन्धिमूल, कम्बु, कटायन, वीरभद्र, बहुमूलक, एणवालुक जलरास हरिप्रिय ।

एरकाः—गुन्मूला गुन्दा, शरी, शिन्धिव, शिन्धिवुन्दा, गुन्द, पटेरक रच्छ, शृङ्गवेराममूलक, शिविर्मुन्दा ।

एरण्डः—आमण्ड, अमण्ड, अमण्ड, चित्रक चंचुष, चित्रमीज, कान्त, दीर्घदण्डक, दीर्घदन्तक, गन्धर्वहस्तक, गन्धर्वहस्त, इष्ट, पञ्जाङ्गुल, कबूठ, शूलशत्रु, शुक, स्नेहपद, त्रिपुटीफल, तुच्छद, त्रिपुटी, तरुण, वागारि, वर्धमान, मृणहा, व्याघ्रपुच्छ, व्याघ्रदल, व्याघ्रवक्त्र, व्याघ्रम्बन, उरुवृक्ष, तुष, एण्डक, रुबुक, मण्ड, दीर्घपत्रक, रक्तैरण्ड, हरितकर्ण, व्याघ्र, व्याघ्रकर, हनु त्रिवीज, उत्तानपत्रक, उरुवृक्ष, नागकर्ण, चंचु, करपर्ण, पाचन, हिनगध, व्याघ्रफल, रफक, त्रिभूषी, तस्मैरण्ड, व्याघ्रपुच्छ, शूलैरण्ड, महैरण्ड, महापत्राङ्गुल ।

एर्षाकः—कर्कटी, व्यालपत्रा, लोमशा, रथूला, तोयफला, हरितदन्तफला, व्यालपत्रो, वृहत्फला, छर्षानिका, पीनसा, मूत्ररा, मूत्रफला, त्रुपुषा, हरितपर्णी, लोमशकाण्डा, बहुकादा चिर्मटी, कर्कटाक्ष, शान्तनु, बलुङ्गी, त्रुपुषी, उर्षाक ईर्षाक, ईर्षा ।

एत्वालुकः—एत्वालुक, आलुक, बाळक, हरिवालुक, कपित्थ, दुर्वर्ण, प्रसा, हड, ऐलेयु, सुगन्धिक, आलुक, अदिराखक, गन्धवक्त्र, कुष्ठगन्धी, गन्धाखक, एलाङ्ग, एत्वाल ।

एलाः—वगरथा, तीक्ष्णगन्धा, सुक्ष्मेला, द्राविडि, मुटि, कोरंगी मृज्जपिन्धा, उपकुञ्जिधा, वृत्था, त्रिपुटा, छुद्रैला, त्रिपुटी, पुटिका, चन्द्रसम्भवा, क्षोतवर्णी, दिवोद्भवा, चन्द्रवाला, बहुला, निष्कुटि, कुनटी, गौरांगी, गर्भारा, गन्धफलिका, सुगन्धिक, चन्द्रिका, श्वेतैला, छर्दिकारिपु, त्वचि-सुगन्धा, बहुला, मालेया, ताडपीफल, वृहदेला, त्रिपुटा, त्रिदिवोद्भवा, सुरभिःवक्त्र, मडिला, वन्याकुमारी, कुमारिका, पृथ्वी, गोपुटा, कायस्था, कान्ता, पृतावी, भद्रैला, गर्भसंभवा, इन्द्राणी, ऐन्द्री, दिव्यगन्धा, निष्कुटी, निष्कुटी, चर्मसम्भवा, वाला, मलवती, एलासी, सागरगामिनी, गन्धालीगर्भ, महैला ।

एलापर्णीः—कुलश, गन्धमूल, कुलशन, तीक्ष्णमूल ।

ककोलः—कंकोल, कंकोलक, पोपफल, क्षोरक कोरक, काकोल, कटुकफल, कटुकल, काळ, कटुक, कोल, तैलसाधन, गन्धव्याकुल, माधवोचित, मारिच मागधोपित, सुगन्धिकल, रथूलमरिच, फल, कृतकल, द्वेष्य, मरिच, क्षीरसम्भवा, कन्दफल, द्वीप, तक्षोल ।

कङ्गुः—पीततण्डुल, त्रियङ्गु, कङ्गु, त्रियङ्गु, चीनक, कङ्गुका, कङ्गुनी कुङ्गुनिका ।

कटभीः—नामिका, शोण्डी, पाटली, किण्वी मधुरेणु, छुद्रश्यामा, कैटय, श्यामला क्षिरीयपत्रा, वाटन्डी, शत-पादी, विपन्निता, मद्राश्वेता, महाशोण्डी ।

कटुफलाः—लताकातूरी ।

कटुरोहिणीः—कट्वी, कटुका, तिफा, कृष्णभेदा, अशोका, मत्स्यशकला, चक्रांगी, शकुलादनी, मत्स्यपिप्ता, रोहिणी, काण्डेहदा, अरिष्टा, तिफरोहिणिका, जननी, तिफा, शतपर्वा, नकुलप्रादनी, द्विजाङ्गी, मलभेदिनी, अशोवरोहिणी, कृष्णभेदा, कृष्णा, कृष्णमेदी, महोषधी, वट्टी, अंजनी, अट्ट, वेदारकटुका, वाटन्डी धन्वन्तरिप्रन्धा, वान्तिदा, कट्वी, कटुम्भरा, अशोका, काण्डेहदा, तिफका, चित्राङ्गी ।

कदफलः—अरण्य, भद्रा, भद्राजनक, भद्रावनी, कुसुदा, कायफल, कृष्णगर्भ, कुम्भी, कुमुदिका, कैटय, काफल,

कुम्भीपाक्षी, कुमुदी, लघुकाश्र्मर्य, महाकुम्भी, नावानु, पुरुष, प्रचेतसी, रोहिणी, रामसेनक, श्रीपर्णी, सोमवृक्ष, श्रीपर्णिका, उग्रगन्ध, लङ्कफल, सोमवल्ल, कुम्भीका, कुमुदिका, रजनक ।

कादम्बः—अशोकारि, दास, देव, हरिप्रिय, हलिप्रिय, हारिद्रि, जाल, जर्मिपर्ण, कदम्ब, कादम्बवर्ग, कर्णपूरक, ललनाप्रिय, सीधुपुष्प, नीप, नदिज, प्रावृष्य, पुलकी, प्रियक, प्रद्वप्रिय, सुगमि, वृत्तपुष्प, विपन्न, व्रणहारक, प्रावृष्य, महाढय पट्टपट्ट, धाराकदम्ब, धूलिकदम्ब, वृद्धवल्गु, मेघाम, वेशराढय, बहुफल, कादम्ब, महावदम्ब, भ्रमरप्रिय, भूमिकदम्ब, प्रियक, भूमिज, लघुपुष्प, भूतीप, सिन्धुपुष्प, मदाटप ।

कण्टकारीः—दुस्पर्षा, धुवा, व्याघ्री, निद्विषिका, वण्टालिका, कण्टकिनी, धावनी दुष्प्रघर्षिणी, दुली, कासघ्नी, कण्टकारिका, रट्टी, धावनेवा, कण्टश्रेणी, वृद्धी, प्रचंदिनी, राष्ट्रिका, अनाकाफता, भण्टाकी, मिही कुलि, निद्विषा, धुवर्धण्ट्या, बहुकण्टा, छुरफला, चिन्फला, पुत्रप्रदा, सर्पतनु ।

कण्टकीकरञ्जः—कुवेराक्षी, कर्कचिषा, काज, तिगगच्छिषा, वारिणी, तीरिणी, वल्ली कण्टकिनी ।

कतका—कतक, छेदनीय, कन, कतफल, अम्बुप्रसादन-फल, अम्बुप्रसाद, चक्षुष्य, गुच्छफल, कात्य, कतकरेणु, श्लक्ष्ण, तोयप्रसादन, शोधनारमक, लेखनात्मक, रुचिष्य, पयःप्रसादि, तिक्तफल, रुच्य, तिक्तमरव, तोयप्रसादफल ।

कदरः—खदिर, श्वेत, कञ्च, व्याधिमेद, रक्तसार, गायत्री, दन्तधावन, वण्टकी बालपत्र बहुशल्प, याज्ञिक, बालतनय, पार्थद्वुम, तिक्तसार, वण्टकीद्वुम प्रसख, यूपद्वु, वलपुत्र कर्कटी, त्रिषाण्य, कुट्टहज, बालपत्रक यूपद्वुम, खण्डपत्रो, क्षितिक्षम, मुशान्य, कञ्चक, यज्ञांग, जिह्वाशल्प, सरद्वुम, कुटारि, बहुसार, मेघा ।

कदली—आलवु, अम्बुपारा, अंशुप्रफला, बालकप्रिया, भागुफला, हस्तिविषाणी, कदली, मोचा, नगरीयधि, निःसारा, राजेशा, रम्भा, रोचक, सङ्कटका, सुकुमारा, सुफला, तन्तुविग्रह, तत्पत्री, ऊहस्तम्भा, वनलक्ष्मी, वारवुपा, वारवृषा, चर्मण्वली, वारणवल्गु, वारणवृषा, काष्ठीया, कदल, वारणवृषा, गुच्छफला, गुच्छदन्तिका, कदलक, मोचक, रोचक, लोचक, आयतच्छदा, रवादुफला, दीर्घपत्रा, निस्सार, हस्तिविषाणिका ।

कपित्थः—अक्षरस्य, भृकपित्थ, चिरपःक्री, दक्षिण्य, दन्तफल, दधिकल, दन्तशठ, देवापाशालय, गन्धफल, ग्रन्थिफल, ग्राहिकल, गोपचरण, प्रादी, कनिष्ठ, कवेष्ठ, कपीष्ठ, करमवल्गु, काटिस्थफल, कञ्जफलक, कपिप्रिय, कपीष्ठ कुचफल, मालर, मङ्गल्य, जन्मय, नीलमङ्गिका, पुष्प-फल, फञ्जानुगन्ध, कण्टकलक ।

कपीतनः—पारीश, फलीश, कपिचूत, पारीप, कमण्डलु, गर्भभण्ड, कन्दराल, सुपार्थक, लक्ष, चारुदर्शन, छवक, छव, क्षीरी, वरोहशाखी, दण्डप्ररोह, छत्र, जहावल, पुण्ड्र, महावरोह, हस्त्वर्ण, विम्परी, भिदुर, मङ्गलच्छय ।

कम्पिलकः—बहुपुष्प, चन्द्र, कर्कश, कम्पिल, कम्पील, कम्पिल्य, काम्पिल्य, कापिलिका, लोहितज, लघुपत्रक, सयुक्त, नदीवास, पिकाक्ष, पुनाग, पुष्केसर, पुनाया, रक्तचूर्क, रक्तफल, रेचना, रेचन, रेची, रजक, रेचनी, रोचन, रकांग, बहुपुष्प, बहुवल, कम्पीलक ।

कमलः—पङ्कज, पद्म, अचन, सलिन, अम्बुन, श्री, कुशोपाय, राजीव, अविन्द, सरोरुह पायोज, नल, अम्बुजन्म, अम्बुगोह, अम्बुपद्म, सुजल, अम्भोरुह, पायोर्ह, पुष्कर, वार्ज, तामरस, कुञ्ज, कज शतपत्र, विसकुसुम, सहस्रपत्र, मद्रोत्पल, वारिरोह, सारिज, पंकेरुह, त्रितप्रसून, वारिज, कनार, आसपत्र वनशोभन, जलजन्म जलरुद्र, जलरुह, सरोज, सरोजन्म, पंकेज, सरोरुह, श्रोवास, श्रीपर्ण, इन्दिरालय, जलजात, कम्प, नालीक, नालिका, वनज, अम्लान, पुटक, सारज, सरसीरुद्र, कुटप, सहस्रपत्र ।

करञ्जः—नकमाल, पुत्तिक, चिरविल्वक, रोचन, पूतार्ण, वदफल, प्रकीर्णक, पुत्तपत्र, कैर्द, कलिमार, उदकीर्ण, काज ।

करमर्दः—अचिन, अविम, यदुदर, चोक्र, फराम्बु, तन्तुविग्रह, तत्पत्री, ऊहस्तम्भा, वनलक्ष्मी, वारवुपा, वारवृषा, चर्मण्वली, वारणवल्गु, वारणवृषा, काष्ठीया, कदल, वारणवृषा, गुच्छफला, गुच्छदन्तिका, कदलक, मोचक, रोचक, लोचक, आयतच्छदा, रवादुफला, दीर्घपत्रा, निस्सार, हस्तिविषाणिका ।

हलकण्टक, डिंडिम, गुच्छी, आतिपुष्प, करमर्दक, कराम्ल, करमर्द, कृष्णपाकफल, वरामर्द, कृष्णपाक, कृष्णफल, कृष्णफलपाक, कणचूक, करमर्दी, कराम्लक, कण्टकी, करमर्दि, वनालय, क्षीरी, क्षीरफल महाशराम्बुद, पाकफल, पाककृष्ण, पाणिमर्द, फलकृष्ण, सुपुष्प, सुपेग, वनालय, वज्र, वनेधुदा, फल ।

करवीरः—अधमारक, अधम, अधदा, अधोधक, अधान्तक अधनाशक चण्डात, हयमार, हयघ्न हरिप्रिय, करवीर, कुम्भ कुन्द, प्रतिहास, प्रचण्ड, रज्ज्वारि, रक्तपुष्प, तुल्यारि श्वेतपुष्प, शतकुम्भ, शतप्रास शीतकुम्भ शीत-कुम्भ, शतकुन्द, शंकुद, वीर, वीर्य, तुंगारी, विषवीर्यशोका, रक्तप्रसव, चण्डीकुसुम, रविप्रिय, भूतशायी, रथूलकुसुम, दिव्यपुष्प, सिद्धपुष्प, हयमारक, गौरीपुष्प, गणेशकुसुम, लघुड, नयरात्र, मूर ।

करीरः—निष्पत्रक मन्थिल, कालच, गृध्रपत्र, करक तीक्ष्णकण्टक, गारपुष्प, बटुकल, मन्थिल, तीक्ष्णसार, कण्टकी, मरुभूक, कर, निष्पत्रिका, करिर, करक मृदुल, निष्पत्र, शोणपुष्प, त्रिदाहिक शतकुन्त, सुफल, उष्णसुन्दर, विष्वक्पत्र, कृशाशाप, चक्रक ।

कर्कटकीः—कर्कटी एर्वाक, वृक्षफला, बहुवृक्षा, कर्कटाक्ष, कण्डाज, कण्टकीफल, कौयफला, कण्टकीलता, पीतपुष्पा, रथूला, सुतीतज, सुधावास, त्रपुष, त्रपुषी, तोयफला, तुन्दिलफला, शान्तनु, बाण्डाजु सर्वाक, ईर्वाक, ईर्वाक मूत्रला, मूत्रफला, हस्तिपर्णा, हस्तिदन्तफला, पीनया, व्यालपत्रा, लोमशा, निर्मशी वलुनी, उर्दापनिशा, लोमशी, व्यालपत्री, लोमशाकाण्डा, त्रपुष, त्रपुष्कर्कटी, बहुफला, उर्दापनिशी, सुधवास ।

कर्कटशृङ्गीः—शृङ्गी, कुलीरा, कर्कटाह्वया, कुलीरशृङ्गी, चक्रा महापेया नवागिनी, चन्द्रास्त्रदा, विषाणी, वनज-सूर्यमा, कर्कटशृङ्गिदा, कासविनाशिनी, कुलिङ्गी, घोषा, चक्रांगी, कर्कटी, वनसूर्यजा, कर्कटज्या, कुलीरविषाणिका, नशांवा नतांगी, वक्रा, अजशृङ्गी, कुलीरशृङ्गी ।

कर्कशुः—इदर, कोल, सौमीर, फेनिल, कुह, कर्कशू, कोलि, कुवक, पिच्छला, बदरीच्छदा, सौवीरक, घालेष्ट,

घोण्टा; गोपघोण्टा, हस्तिकेलि, गोपघोण्टी, शुगालकोलि, चादिर, कण्टकी, फलशैलिर, वृत्तफल, गूढफल, दृढवीज, वककण्टक, सुरस, सुफल, स्वच्छ, कोली, कोला, कुवली, स्वादुफला, गृध्रनखी, कुवल, पिच्छिल, स्वादुफल, गुलक, कोलिद अजामिथा, उभयकण्टक ।

कर्कसः—दशानुल, फलराज, अमृताह, पटशुना, मधुफला, पट्टेखा, वृत्तकर्कटी, तिक्ता, तिक्तफला, मधुपाका, शर्मेवाक पण्डुला ।

कर्कोटकीः—चर्वोट, स्वादुफला, कर्कोटी, गनंज्ञा, कुमारिका अवन्ध्या, विषप्रशमनी पीतपुष्पी, महाजाली, पीतपुष्पा, महाजालिनिष्ठा, अवन्ध्या, बोधना, जाली, मनोज्ञा, मनरिचनी ।

कर्चूरः—वेध्य, मुख्य द्राविड, कल्पक शटी, कार्पा, दुर्लभ, गन्धमूलक, गन्धरात्रा, जटा, गन्धमूल ।

कर्पूरः—भोवसीक, सोमसंज्ञ, सिताश्रक, शिला, हिमांशु, शीतांशु, चन्द्रभस्म, निगापति, तरुसार, अस्माह्वय, रेणुसार, हय, हिमाह्वय, वेध, रेणुसारक, शीतमरीचि भस्मवेधन विडु, शीतमयूष, घनसार, चन्द्रहृद, जैवातृक ग्लो, कुमुदवाग्धव, शिताभ, हिमवाञ्छा, इन्दु, द्विजराज, नक्षत्रेया, सोम, निशीथिनीनाथ, यामिनीपति, शराधर, क्षपात्र, शशाङ्क, हिमवाञ्छक, हिमका, शीतप्रन, शाम्भव, शुभांशु, रफटिकाश्र, कारमिदिक, ताराश्र, चन्द्रार्द्रक, चन्द्र, नाकतुपार, गौर, कुमुद, शीतलरज, सिताह, रफटिक, शशि, हिमोपल ।

कर्धुदारः—वायनार, अश्वामतक, आस्फोट, उद्दालक, काशन, कारतार, कनकप्रभा, करक, काशनारक कुरी, गण्डारि, कोविदार, वाकनक, रक्तपुष्प, गिरिज, ताम्रपुष्प, चमरिफ, चम्पविदल, महापुष्प, युग्मपत्र, युग्मपत्रक, सुवर्णार, शोणपुष्प, स्वल्पकेसर, पाशारि, कुदाल, कुदार, यमलपत्रक मुद्गाल, यमलच्छद, कायनाल, चमरी कुदार, रक्तकामन ।

कलम्बः—शतपर्वा, कलम्बू, बहुतीव्रज, शायक, नीप, नालिशार्क, कडम्पी, कलम्मी, कलम्बिका ।

कलायः—मुण्डचणक, हरेणु, सतीन, त्रासन, नलक, हरेणुक, वरुल, सतीलक, खीण्डक, त्रिपुट, अतिवर्तुल, शमन, तीलक, वण्टी, सतीन, सतीनक ।

कसेरकः—गुण्डकन्द, कसेर, छुदमुस्ता, स्फुरेष्ट, सुगन्धि, सुगन्ध गन्धकन्द, राजकसेरक ।

काकनासाः—ध्वाक्षनास, काकतुण्डफला, सुरंगी, तस्करस्नायु, काकाङ्गी, वायसी, ध्वाक्षतुण्डा, सूनासिका, वायसाहा, ध्वाक्षनखी, काकाक्षी, ध्वाक्षनासिका, काकप्राणा, काकभृशु, चोरस्नायु, शिरोबला ।

काकमाचीः—बहुफला, बहुतिफ, ध्वाक्षमाची, गुच्छफला, जघनेफला, काका, काकमाचिका, काकमाता, काकिनी, कुष्ठाङ्गी, रसायनी, सर्वेत्तिका, सुन्दरी, स्वादुपाद्या, रिकका, वायसाहा, वायसी, काकाहा, कटुफल, कट्टी, रसायनवर ।

काकोदुम्बरिकाः—फलू, राजिफगुः, शिवाटिका, फलुनी, फलसंभारी, मलयू, चित्रभेषजा, उदुम्बरफला, कर्कशच्छदना, अमुमा, काकोदुम्बर, क्षीरी, खरत्रिका, राजिका, छुरोदुम्बरिका, कुष्ठानी, फलुवाटिका, अजाक्षी, फलुनी, मलयू, चित्रभेषजा, ध्वाक्षनाम्नी, फल, जघनेफला, बहुफला खरदका मलयु, फलुफला, काकोदुम्बर, अजाक्षी, भद्रोदुम्बरिका ।

कारवेष्टिकाः—अङ्गारवल्ली, दौर्बन्धक, पचार, बाहुवल्ली, कटिलकः, वृद्धवल्ली, चिरिपत्र, कारवेष्टी, फाफा, कारवल्ली, कटिलका, कण्टफला, कटिलक, कटिल, कण्डूर, कण्डकटक, पट्ट, पीतपुष्पा, नागसंवेदन, राजवल्ली, सुकाण्डक, सूक्ष्मवल्ली, शुपवी, शुपवी, तोयवल्ली, वज्रकाण्ड, ऊर्ध्वसित, वारिवल्ली, वीसकाण्डक, अग्रकाण्ड, सुकाण्ड, कटिल, अम्बुवल्ली ।

कार्पासः—नम्रजित्, तुण्डी, तुण्डिकेरी, पटपट्टी, नीचानन्ता, समुदान्ता, कार्पासी, सुसुमा, अनङ्गनीक, वदरा, चन्द्य, छादन, गुफ, कलाशान्त, माघनि, सारिणी, मरुदवा पाटडा, पीचु, समुदान्ता, सूत्रपुष्पा, तुडा, तुण्डिकेरीका, वादर, वदरी कार्पासिका पटछन ।

कालशाकः—कालशाक, नाडीक, धादशाक, काञ्जक,

कालेयकः—कालीय, कालीयक, पीताम, हरिचन्दन, हरिप्रिय, कालधार, काशानुसार्यक, नरायणप्रिय, पीत, हरिचन्दन, पीतकाष्ठ, जापक, जावक, कान्तिदायक, कालानुसार्य, कालय, वर्णद, पीतक माधवप्रिय, कर्पूर, कालीय, हरिप्रिय, कालधार ।

काशः—काण्डेष्टु, काष्ठेष्टु, वायसेष्टु, इक्षारिक, इक्षुकाण्ड, इक्षुरक, खेतचामरपुष्प, इक्षुकुष्ठम्, सुकाण्ड, कासेष्टु, नादेय, नीरज, वायसेष्टु शिरि, इक्षुगन्धा, पीतगल, कर्ममूल, इक्षुमलिका, इपीडा, अश्ववाला, चामरपुष्पा, काशी, चामरपुष्पिका, कांशा, अमरपुष्पक, काशक, वनहासक, इक्षारि, इक्षुर, शारद, सितपुष्पक, दर्शपत्रक, लेखनी, काण्ड, काण्डक, कच्छककारक, दर्भपत्र ।

काश्मरीः—काश्मर्या, क्षीरा, काश्मरी, मधुपर्णी, ओषर्णी, सर्वतोभरा, गम्भारी, कृष्णवृन्तका, मधुपर्णिका, भद्रपर्णी, भद्रा, गोपमद्रिका, काश्मर्य, कम्भारिका, कुमुदा, सदाभद्रा, कृष्णफला, कटुफला, कृष्णवन्तिका, सर्वतोभद्रका, शिरःपर्णी, सुभद्रा, कम्भारी, गोपभद्रा, क्षीरिणी विदारिणी, महाभद्रा, मधुभद्रा, स्वरुमद्रा, कृष्णा, अथेता, रोहिणी, गृष्टि, स्थूलस्त्रवा, मधुमती, सुफला, मदिनी, महाकुमुदा सुदृढाववा, काश्मीरी, पीतरोहिणी, मधुरवा, मङ्गकुमुदिका, पीतनडा, वातडा ।

कासमर्द—राजवृक्ष, कासन्न पीतपुष्पक, काशारि, परिमर्द, कर्पूर, कासमर्दक, अरिमर्द, क्षीरन, काल, कनक, काशमर्द, कर्कश, कालकृत, विमर्द, जरण ।

किराततिक्तः—किराततिक्तक, कैरात, कटुतिफ, किरातक, काण्डतिक्त, अनार्थतक्त, भूलेम्ब, रामसेनक, किरातक, तिक्तक सुतिक्तक, हैम, नेपालनिम्ब, नेपाल, तुणनिम्ब, ज्वरातक, नाडीतिक्त, अर्थतिक्त, निदारि, सन्निपातहा ।

कुङ्कुमः—काश्मीरज, कुङ्कुम, खिर, रक्त, अश्व, अन्न, पीतक, काश्मीर, वाहीक, सङ्कोच पिष्टन, वर, शोणिताह्वय, कुसुमात्मक, पीतक, रक्तचन्दन, हरिचन्दन धरन, रक्तसंज्ञ, सङ्कोचपिष्टन, खल रज दीपक, लंति, सौमर, चन्दन, काश्मीरजन्म, अमिश्रित, वीर, लोहितचन्दन, चार, वावाहीक,

भगिषोन्नर, रुनिर, गट, शोणित, सुल्लग, वण्ण, अरण, कालियक जागुड कान्त वहिषिरा, केसर, केसर, धीर, शक्ष रुधेर ।

कुटजः—कौटज, कौट, वत्सक, गिरिमल्लिका, कलिङ्ग, मल्लिकापुष्प, इन्द्रवृक्ष, वृक्षक, शकपर्याय, शक, वरनिक, पाण्डुर, कटुक, कुटुक, शकाशन, तिक्तक, रफनाशक, वृक्षक, शकःहण, काही, कुटज, प्रावृष्ण, शकगदप, शवकल, संभाही, पांडुद्रुम, प्रावृष्ण, महागन्ध, इन्द्रद्रु, शकशाखी, इन्द्रवृक्षक ।

कुतुम्भकः—छत्र, अतिष्ठवृक्ष, द्रोणा, द्रोणपुष्पी, वैकुण्ठ, द्रोणका, द्रोणवैकुण्ठका, फलेपुष्पा, क्षवपत्री कुम्भ-योनि, कुम्भिका, चित्रक्षुर, कुरम्बा, सुपुष्पी, श्वनक चित्रपत्रिका, पालिन्दी, कुम्भयोनि, छत्रणी, छत्रका, कौण्डिन्य, वृक्षसारक ।

कुमुदः—धेतजलत्र, अञ्ज, अम्भोज, अम्बुज, पद्म, अग्निन्द, कटुर, कुशेय, धवलोल्लस, कुमुद, कैव, शशिकान्त, इन्द्रकुमल, शीतलक, चन्द्राञ्ज, चन्द्रिकःपुञ्ज ।

कुम्भीः—कुम्भिका, वारिपर्णी, वारिमूली, समूलिका, पानीय, आकाशमूली, कुट्टग, कुमुदा, जलवल्कल, श्वेतपर्णा, पृष्ठज, अश्वकुम्भी, खली, पर्णी, पुरनी, वारिकर्णिका दलावक, वारिकर्णी ।

कुरण्टकः—किंकिरात, कुरण्ट, कनक, पीतपुष्पक, पीताम्बलन, सहचर, पीतधैर्यक, सहचरी, सदाचर, वीर, पीतपुष्प, दासी, पुर, सैर्य ।

कुलत्थः—अरण्यकुलत्थिका, चक्षुष्या, चिदिटा, कुशनी, कुलाली, इन्द्रवृक्ष, कुम्भकारिणी कुम्भकारिका, कुल्माय, कुम्भिल्लक, काननोदया, लोचनहिता, कुलत्थिका कुलत्थ, ताम्रबीज, श्वेतबीज, सितेतर, कालवृन्त ताम्रवृक्ष, ताम्रवृन्त ।

कुष्ठः—रोग, गद, व्याधि, उत्पल, पाकल, वानीरज, वाप्य, किञ्चक, आप्य, आमय, अगद, भाधुर, दुष्ट,

गदाख्य, गदाह, गदाहृ, हरिभद्रक जण, पदाख्य, कौवेर कुठिक, काकल, कुरिसत, नीरुज, पारिभाष्य, पालक, पवन, पञ्चक, पारिभद्रक, रुखा, रोग, रोगाहय, वाणीराज ।

कूष्माण्डः—पुष्पलता, फलवल्ली, वल्लिहा, मुशयोग, फला, पीतपुष्पिका, पुष्पलल, पीतपुष्प, वृक्षकल, वृक्षकजा, घृणावास, तिमिष, मन्मथकट्टी, कर्चक, कूष्माण्ड, शिखवर्धक, कुम्भण्ड, कूष्माण्डी, कर्षोदिका कुम्भाही, सुफला, कुशफला, नाडपुष्पकला ।

कुसुम्भः—पावक पीतमलक, वल्लरान, कीलता, लट्वा, पञ्चोत्तर, अग्निशिव, मन्मथकुसुम, कललोत्तम, कुकुटशिव, कमलोत्तर, लोहित, महारान, पीत, पावक, रफ, वहिषिरा ।

कुस्तुम्बुरः—अवधिका धाना, कुनटी धेनिका, भल्ला, हृद्यगन्ध, वेशण, धान्यक, भाण्य, धाना, धानी, धान्यक, भल्ला, छत्रधान्य, विदुषास धान्याक, धनिक, धान्य, धन्य, धनीयक, कुस्तुम्बुरी, छत्रा, धान्या, कुस्तुम्बुर, विदुषा, धान्याक, धानक, धान्य, सुगन्ध शकधोग्य सुक्ष्मपत्र, जनप्रिय, धान्यरीज, वीरधान्य, वेपकनिःतर ।

कृतचेधनः—कोशातकी, कृतच्छिद्रा, जालेनी, कृत-वेधनी, क्ष्वेड, सुतिष्ठा, घंटाली, मृदंगफलिना मृदंगफलिनी, स्वादुलला, सुपुष्पा, कर्षोदकी, पीतपुष्पा, चराफला, वीरफला, सुकोशा, धामार्गव, राजकोशातकी राजोमरकला ।

केशरः—चाम्पेय, केसर, नागकेशर, नागपुष्प, नाग कनकाख्य, महौषध, राजपुष्पा, फलक, स्वरवातन, केसर, कामनाख्य, सुवर्णाख्य, भुवनाख्य, पद्मप्रिय, इमाख्य, पुष्परेचन, नागाख्य, केशरी, किञ्चलक, नागकिञ्चलक, नागीय, काशन सुवर्ग, हेमकिञ्चलक, रक्ता, हेम, पिञ्जर, फणिकेशर, पद्मकेशर, पुनागकेशर ।

कैडर्यः—कालशाक, महानिम्ब, रामण, रमण, गिरि-निम्ब, महारिष्ट, कडर्य, शुक्रसार, अलहाह, छदित्र, प्रियसाल, वरत्तित, ककाहय, शुक्रसाल, सरभि, कृष्ण-निम्बक, श्रीपर्णिका, कुमुदिहा, कट्कटा, सरभिःछदा ।

कोद्वः—कोद्व, कोरूप, वनकोद्व, उद्दाल, कोरुप, कुद्व, कोरुपक, कोद्वार, मदनपक, उद्दालक, कोरुपक, कोद्वाल कोद्व ।

कोविदारः—काञ्चनार, कुद्दाल, कनकारक, कान्तपुष्प, करक, कन्तार, यमलच्छद, आम्बन्तक, आस्कोत, उद्दालक, काञ्चन, कान्तार, कनकरभ, काञ्चनारक, काञ्चनक, रफपुष्प, गिरिज, कुण्डली कुली, स्वल्पकेसर, चमरी, काञ्चनाल, कर्बुदार, पाकारी गण्डारि, ताम्रपुष्प, चम्पविदल, महापुष्प युग्मत्र, युग्मपत्रक, सुवर्णा, शोगपुष्प कुद्दार, रक्तकाञ्चन, महायमलपत्रक ।

कोशाक्षः—पत्रकम्प, वनाक्ष, जम्बुपादव क्षुद्राक्ष रक्षाक्ष, लाक्षाक्ष, सुरकक्ष, कृमिचक्ष, सुकोशक ।

कमुकः—पट्टिलोक्ष, स्थूलचलक, जीर्णपत्र, वृक्षपत्र, पट्टी लाक्षाप्रसादन, पट्टिकाक्ष, पट्टिका, पट्टिलोक्ष, पट्टिलोक्षक, वल्कलोक्ष वृहद्भास्व, क्षीर्णपत्र धक्षिमेवज, शावर, श्वेतलोक्ष, गालत्र, यदुलत्वच लाक्षाप्रसाद, वल्क ।

क्षवकः—छिक्नी, क्षवकृत्, तीक्ष्ण, छिक्का, प्राण-दुःखदा, लम्प, समगन्धा कृत्नासा, संवेदनापट्ट ।

क्षीरविद्वारी—इक्षुगन्धा, इक्षुगन्धी, इक्षुवल्ली, क्षीर-वन्द, क्षीरवल्ली, पक्षिविनी, क्षीरशुष्का, क्षीरलता, पय, कन्द्रा, पयोलता, पयोविद्वारिक ।

क्षुवकः—क्षुरक, तीक्ष्ण, क्, भूताकुश, क्षव, राजो-द्वेपत्रसंज्ञ, भूतद्रवी ।

क्षदिरः—श्वेतशार, कदर, सोमवल्लक, सोमवल्ल, ब्रह्म-शल्य, खमिरोपम, कर्मुक, कुजरुपक, सोमसार सोमक्ष, पथिद्रुम, श्यामसार, नेमिचक्ष, कंटारद्वय, महाचक्ष द्विजप्रिय, गायत्री, दन्तधावन, बालपत्र, ब्रिह्मशल्य, क्षितिक्षम, बालपुत्र, होम, हिमशय्या, चण्डीद्रुम, खमपत्री, क्षितिक्षम, कुण्डल, कुण्डारि मेघ, यद्वपत्रिशा, यज्ञांग, याज्ञिक, यूयट्ट रक्तखदिर, वास्तनय ।

खर्जूरः—पिण्डखर्जूरिका, पिण्डखर्जूरी, राजजम्बु, पिण्डीकल, सुद्वारिधा, दीप्या, संपण्डा, मधुववा, फल-पुष्पा, स्वदुपण्डा, रयमक्षा ।

गजपिप्पली—चविका कविवल्ली, कोलवल्ली, श्वेती, वर्शार, चव्यकला, छिद्वेदेही, दीर्घत्रय, इभक्षणा, करिपिप्पली, तैजसी चर्तुली, चविवल्लिका, गजाद्व, इभोयणा, कुञ्जरपिप्पली, गजोपणा, रधूकवेदेही, गजकृष्णा, कविल्लिका, चव्यजा, हस्तिमगधा ।

गवेधुकाः—गवेधु, गवेधु, गवेधुता, कुन्ध, धुदा, गोजिह्वा, गन्धद्रुथ कर्पणी, गोजिह्वा ।

गिरिकर्णिकाः—मधुक्षु श्वेतपुष्पी, श्वेत, कटनी, श्वेतनामा, श्वेतस्यन्दा, अपराजिता, आस्कोता, गिरिकर्णा, भूमिलगना, नागपथ्याक्षणी, गवक्षी, गिरिशालिनी, अश्व-क्षुरादिक्षणी, दक्षिपुष्पिका, गर्दनी, सितपुष्पा, विगिही भगा, सुपुष्पी, विपद्मोक्षी, सुपुष्पी, सिद्धपुष्पी, श्वेत्तराटा, गवादिनी ।

गुग्गुलुः—कालनिर्यास, जटापु, कौजिक, तुर, नक्षत्र, शिव, दुर्ग, महिषाक्ष, पल्लवा, धूर्त, देवधूत, कुम्भ, लल्ललक, कुम्भोष्ठ, कुम्भलक्षक, सर्वमह, उप, सुम्भी, कुन्ती, उद्दीप, पवनद्विष्ट, भवानीष्ट, निपाटक, जटाल, पुट भूतहर, शाम्भव, वायुव, महिषाक्षक, देवेष्ट, मरुष्ट, मरुदेष्ट, रक्षोहा, पल्लव, रक्षगन्धक, दिव्य वायुव ।

गुञ्जाः—चूडामणि, रक्तकलिका, काकपन्तिका, काकादनी, काकी काकचित्री, कुण्डला, कृष्णरक्तिका, गुट्टिका, गुप्ता, धाका, रक्तिका, काकजंघा, शिखिनी, काकिनी, कक्षा, कनीची, शांगुण्डा, काकतिका, काकतुण्डिका, काकिणी, चूडामणी सौम्या, शिखिनी, अरुणा, तन्त्रिका, शीतपाकी, सघटा, कृष्णचूडिका, रक्षा, कान्भोजी, नीलमृणाल, वन्धा, श्यामलचूडा, काकचित्री, काकपीठ, काकशन्ता, काकवदरी, काकशिम्बी, रचला, वक्त्रास्या, स्वाक्षनन्ता, दुर्गोष्ठा, वायसादनी, चटकी, तुलासीजा, अङ्गारवल्ली ।

गुह्यचीः—अमृतवल्ली, कुण्डली, चमलक्षणा, मधुपर्णी, सोमवल्ली विशल्या, तन्वी, निर्जरा, वत्सादनी, छिन्नहृदा, तन्त्रिका, अमृता, जीवन्तिका, वातरकारि, पामरोद्वारा, पिप्पली, उद्दाला, ज्वरारि, श्यामा, सुकृता, मधुपर्णिका, छिन्नोद्भवा, अमृतलता, रसायनी, छिन्ना, सोमलक्षिका, सिपकप्रिया, कुण्डलिनी, वयस्या, नागकुमारिका, छिन्ना, चन्द्रहासा, अमृतमेमवा, अमृतवल्ली, जीवन्ती, सेमा,

चक्रक्षगिका, धीरा, नामरन्वा, देवनिर्मिता, चक्राङ्गी, वागा, धीगा, जारनाशिनो, मण्डली, पिण्डभृता, बहुचिन्ता, कन्धरोक्षिणी, रसायनी, श्रुतिका, भिषगिन्ता, कन्धा, कन्धोद्गवा, यन्दा, अमृतान्दा, शुद्धचिन्ता, चण्डहासा, पिण्डपुङ्खिका, वसुहवा, निष्ठा ।

गोश्रुरकः—श्रुतौपी विकण्टक, रशदुकण्टक, गोश्रुण्टक गोश्रुर, वनश्रुण्टक, पलंकपा, ध्वंष्ट्रा, इक्षु-गन्धिका, वण्डी, छुदगोश्रुर, त्रिण्टक, पञ्ज, वट्टकण्टक. छुर गोश्रुण्ट, कण्टकल छुरश्रुर भक्षक, चण्डुम स्थल-श्रुण्टक, वनश्रुण्टक, भक्षक, धुराण, वण्टक व्यालदंष्ट्र, छुरक, महाण, दुधकम ।

गोजिह्वाः—गोजिह्वा, गोभी दार्दिगा, रारपणिनी, कुरसा दार्दिगिका भनहुजिह्वा, दर्विगा, दर्वी, दार्वी गोजिह्वा रूपपत्री, वातोना, अधोमुवा, अधःपुष्पी, प्रतना, धेनुजिह्वा ।

गोधूमः—गुहदुग्ध, अप्पा, म्नेच्छमोजन, गवन, निरुप क्षोरी, रशाल सुमता, अरुप गधूम यरक, हुष्ट, गिरिजा, सतिनामा, रसिक ।

चक्रमर्दः—प्रमुखाट दृष्ट मेषलेचन, पञ्चाट एङ्गन, चकी पुकाट तर्णिग, तर्किल, प्रमुनड, मेघाक्षि, कुमुग, प्रमुनाल, अदगन, गजाख्य, मेघाक्ष्य, एङ्गहस्ती, व्याघर्त्तक, चक्रमर्द, पुकाट, विगर्दक, तर्पट, चक्राष्टा श्रुक-नाशन, दृढमीन प्रमुखाट, रङ्गूग चक्रमर्दक, उरगाख्यक, उरणाक्ष, उरणाक्षक, चक्रपञ्चाक, तरवट, मेघाक्ष अण्डगन, अण्डहस्ती, चक्रिका ।

चणकः—हरिमन्थ, सुगन्ध, कृष्णकमुक, बालभोज्य, वाजिभक्ष, वञ्जुकी, वाजिमन्थ, जीघन, हरिमन्थक, हरि मन्थन, चण, वाजिभक्ष, वञ्जुकी, बालभोज्य सलप्रिय ।

चन्द्रनः—धीखण्ड, चन्द्रकान्त, गोशीर्ष भोगिवलभ, भद्रसार, मलयन, गन्धसा, भद्रभी एकाङ्ग, पटोर, वणैक, भद्राश्रय, सेव्य, रौहिग, ग्राम्थ, सपेण्ड, पीतसार, सदर्श, श्वेतचन्द्रन, तिलपर्ण, मंगलय, सलगोद्गव, गन्धरात्र, सुगन्ध, सर्पावात, शीतन, गन्धाख्य, पावन, शीतगन्ध, तेलपर्णिक, चन्द्रप्रति, भद्रभी, सिन्हिन, सपेण्ड, रात्रगोत्र ।

चक्रिकाः—चव्य, ऊपणा, कणापूल, चवण, उच्छिष्ट, कोलवल्ली, चवि, चवी, पुरंदर, तेजोवती, कोला, नाकुन्ने, उपणा, चव्यक, वशिर, गन्धनाकुली, कोलवल्ली, कुण्डमन्त्रक, कोला कृद्धर, तीक्ष्णा, करिकणा, वल्ली, कुटिलरामक, कटुका, कटुपाकिनी ।

चित्रकः—अनलनामा, पाठी, व्याल, ऊपण, कृष्णवर्मा, जातवेदा, वर्दि, विभाकर, विभावधु, वृद्धासु, वैधानर, शिलावान्, शुचि, शुष्मा, सप्तार्चि, दिगाराति, हिरण्यरेता, अनल, अमिशिरा, पाली, माली, चित्र, चित्राण् दाहक, दहन, दाहण, द्वीरी दिनाराति हिरण्यरेता, हुतभुक् ज्योतिष्क, ज तवेदा, कृष्णवर्मा, बालमूल, कुट, कृशासु, लोहिताङ्ग, पालक, पावक, पाठीन पाची, सप्तार्चि, शार्ङ्ग शिखी, शम्बर शूरा, शिलावान्, ऊपण, वैधानर, वलि, वलरी, वहिनागा, व्याल, माशर, अक्षिणी, उपरुधाक्ष्य, रक्तचित्र, महाङ्ग, रक्तचित्र द्वयाभि, हस्त्राभि ।

चिरचिदयः—प्रकीर्ण, प्रतिकरं, प्रतिक, कश्मिरक, प्रवी, प्रगीति, नक्तमाल, चिरचित्क, प्रतीक, रोचन, प्रतिपर्ण, श्रुतकल, शुच्यपुष्पक, स्निग्धपत्र, तपस्वी, विपारि, घृतपर्णक ।

चिभटः—धेनुदुग्ध, गोरक्षमर्कटी, सुविना, चित्राण्, क्षेत्रचिर्मिता पाण्डुकला, पथ्या, रोचनकला, चिभटिका, कर्चिर्मिता ।

चिल्लीः—वारत्त, वास्तुक, क्षारपत्र, क्षारकट, पांशुपत्र, शास्त्रेश, शाकवीर, बंकेल, धनाधन, पाशु, वसु, द्विभोषिका, क्षारराज, राजशाक, चक्रनर्त, चिल्लिका, तुनी, अमलोदिता, मृदुपत्री, क्षारदला, क्षारपत्र, वास्तुकी, मरदला, गौडवास्तु, पलाशलोदिता, चीरपत्री ।

सुक्रिकाः—सुक, सुकवास्तुक, लिङ्गुच, अम्लवास्तुक, चोका, दलाम्ब, अम्लताकाख्य, अम्लद्विमोचिका, पयाम्बा, रोचनी, शतवेधनी, मेदनी, भेदी, भीमा, शुग्गद, शुग्गकेतु, महाक्षर, मानसादावि, फलाम्ब, राजाम्ब, रमाम्ब, रक्तसरा, दाहद्रावि, सारतवेधनी, शतवेधनी पयान्तमाला, वीराम्ब, धेतगाम्ब, वाराणी, वरानिध ।

चोरकः—शङ्खित, चण्ड, दुष्पन्न, क्षेमक, रिपु, गगहाय, कोपनक, कितव, फलचोरक, चपड, धूर्त, पट्ट, नीच, निशावर, दुष्कृत, प्रन्थि, सुगन्धि, पर्णचोरक, तस्वर, चण्डा, केषमूर्च्छित, दुष्कुर्वीन, विरोध, कोरक, धनदायी, ऐन, राक्षसी, खड्ग, सुगन्धि ।

जम्बु—रन्ध्र, सुरभिषा, नीलकला, श्यामला, महास्त्रा, राजाहा, राजकला, शुक्रप्रिया, मेघपोदिनी, वृहत्फला, राक्षसम्बु, कोकिटेश, महाजम्बु, महानील, महाफला महापत्रा, नन्द, कटेन्द्र, स्वर्गमाता सुरभिषा, जम्बु ।

जाती—जातीफल, जातीक्षेप, जातिशय, जातिहोम, जातिसार, जातिपत्री, जातिफल, दोश, कोपक, नदगौड, मज्जसार, मालतीफल, फल, पुट, राजमोक्ष, शालूक, सुमरःक, जाती कोप जातिहोष, दोश, जातिशय, जातीसार जातिरुद्र, सेमनःक ।

जलपिण्डाली—अभिजाला, चटुगिखा, चित्रात्री, लातरी महाराष्ट्री, मन्त्रगन्धा, प्रागदा, शारदी, शङ्खलक्ष्मी नैयवहरी, नृगशीता, वागीर ।

जानी—(प्रवाल) जाती, मनोहा, सुवना रजपुत्री, चिन्ददा, मलती, हयगन्धा, चेतिका, तैलमादिनी, कृतती, चेतती कुकुमारी सुप्रिया, संचयपुष्पा, मनोहा, कनेष्टा, राजपुत्रिका, जातिहा, मालिनी, वासन्ती प्रशस्ती, सुवस्वती, वसन्तजा, वपिका ।

जिह्मिणी—जिह्मिणी, नोदधी, गुडमज्जरी, पार्वतेया, मुनिर्षोः नदनमज्जरी ।

जीसूतः—देवदली, वेणी कर्कटी, गगगी, वेरताणी, इतदेश, नयस्वरी विपत्री, जीमूतक, कण्टकल, नडा, देशफला, वट्फला, घोरा कदम्बा, विपदा कर्कटी, चारमुपिका इतकाया, दाजी, लोमगपत्रिका, तुरंगिका, तर्काय, गरतःशिनी, घेष, बाहुविपदा, चतुंगक, देवदाहिका, पीता ।

जीरकः—जम्ण, जीर, जीर्ण, दीप्य, दीपक, अजात्रिक, वह्निस्त्र, वह्निर्गन्ध, मागन्, अजाजी, कणा, जीरण, दीर्घक, मनोहा, वदग, रुच्य, पीताम, पूज्यमानक ।

जीवन्ती—अर्कपुष्पी, जीवन्ती, स्वर्णजीवन्तिका, स्वर्णलता, स्वर्णजीव, सुजीवन्ती, सुगणिका, नृप्रन्थि, शाकप्रेष्टा, तिक्तजीवन्ती, हेमा, हेमपूष्पा हेमवल्ली हेमाहा, हिमाधया, स्वर्णपर्णा, हेमपुष्पी, हेमवती, छौम्मा, जीवनी, जीवा, जीवदा, सुलकागी, रक्षात्री, प्राणश, भद्रा मंगल्या, मेघराटिका जीवनीय, खवा, मधुसूया, यगस्या, यददी, जीवपुष्पी, जीवशृष्टा, काञ्चिका, शतशन्धिका, मुक्तिदा, मृगराटिका, पुष्यमश, मधुसागर, जीवपुष्पा, जीवपत्री, जीवविनी, यगशकागी, वृहज्जीवन्ती, पुद्गमश, प्रियङ्गी, मधुग, जीवपुष्पा, वृहज्जीवा तिक्तजीवन्तिका तिक्तमद्रा तिक्तप्रिङ्करी, विप्रमृष्टि, केशमुष्टि सुमुष्टि, रगमुष्टि डोहीमुख, हेमजीवन्ती, स्वर्णजीवन्ती, हेमशीरी, सुमङ्गला, हेमला, जीवदात्री ।

जूर्णाडा—यन्तल, देवधाय, जूर्णाड जूर्णाच, जूर्णलल, यादनाच, खवाल, शिखरी, शतशङ्ख, दीर्घवाल, सुगन्धर क्षेत्रेष्ट, सुगन्ध, इक्षुमन्त्र, दीर्घतर ।

ज्योतिष्मती—रुद्धी, सुरणलतिहा, ज्योतिष्का, अभिगावा, लवगा, दुर्गेश, पत्तेश, लवगा, स्फुटरन्ध्री, पारावती, पिप्प, पीतनील, कजुगी, पारावताष्ट्र तिष्कला, इक्षुदी स्वर्णलता, अनन्धभा, ज्योतिर्लता, सुगिला, दीता मेध्या, मजिदा, गजिदा, सरस्वती, अमृता, कजुनी, अभिगावा दुर्मदा, किशुगा, आवेगा, काकण्डी, विपरी, पीडया ।

कुण्डलकः—श्वेताक, क्षोपण, नट, कटुन, मण्डकगर्ग, पत्रोम, टेण्डर, टिण्डक, गुकनाम, कुटनट, दीर्घगुन्त अरु, प्रथुशेम्भ, कटम्भर, रक्षोनक मयूरनक्ष अरु, प्रियनीवी, कटान शङ्ख, अरु, वट, विपसुन्, अश्वानाजाया, पूति, वृक्ष, मण्डक, मण्डक, भूतपुष्प, शोण, कटु, दीर्घवृत्तक, अश्वानाजाया, स्वर्णवल्कल, शङ्ख, प्रियजीव, क्षोपण, कुण्ड, भल्लूक कन्दर्प पादशङ्ख, भूवाटक पारिवादक ।

तगरः—नायानुसार्य, सुटिल, कल्याणशरिवा, जिह्म, चीन, चक्रचुप महोरग पिण्डगर, पादिक, दण्डम्भ ।

पिण्डीतगरक, पार्विव, राजहर्षण, नत, वक, विनम्र, शठ, कुंचिन नहुपादय, दीन, वर्धण, दण्डरुख, पालानुसारक ।

तण्डुलः—दसक, अक्षत, परिचय ।

तण्डुलीयकः—मेघनाद, काण्ठेर, तण्डुलैरक, भण्डीर, तण्डुलीवीर, विघ्न, अन्पमारिष, तण्डुलीक, तण्डुल, तण्डुली, तण्डुलीयक, ग्रन्थिल, वटुवीर्य, घनस्वन, सुसाक, पथ्यशाक, स्फूर्जंथ, स्वमितालय, वीर, तण्डुकनामा काण्ठीकमारिष, पण्यशाक, कण्टकमारिष ।

तमालपत्रः—अंजुग, छदन, दल, दलाहय, गन्धजात, गोमेद, गोमेदक, गोपन, इष्टगन्ध, पत्रक, पारिजन, पत्राख्य, पलाश, राम, रोमश, शीतल, सुनिगन्ध, सुस, सुकुमारक, तेजपत्र, तापस, तमालक, तमाल, तमालपत्र, वसनहा, वज्र, वसन, पत्र, वासस्, गोमेद, पत्राख्य ।

तरुणीः—रामतरुणी कणिका, देवकेशरा, सहा, कुमारी, गन्धाडया, भृङ्गेष्टा, भृङ्गरामा, द्विरेगणसम्भवा, अतिकुला, अतिकेसर, भद्रतरुणी, वृहत्पुष्पा, बहुपत्रा, देवतरुणी, कणिका, तरुणी, कुञ्जक, संकुञ्ज, कण्टाडया, नीलाङ्गिकुञ्जकुञ्ज, महासहा, वारिष्ठक, वृत्तपुष्प, शतपत्रो, रामतरुणी, सेवन्ती, सुरला, चारुकेसरा, शिखलमा, सुसना, सुशीता, लाक्षापुष्पा, सुवृत्ता ।

तामलकीः—चोराट, हिलोलिका, आमलकी, पुत्र-श्रीणिष्ठा, अमली, विश्वपर्णी, दृढपादा, सूक्ष्मदला, बहुपत्रा, दलस्पर्शनी, भूपर्वा, बहुफला, बहुपत्रा, भूम्यामलिका, अरुहा, हिमालया, वृष्या, विपत्री, बहुपत्रिका, बहुवीर्या, अहिमपदा, वीरा, तनालिका, उघटा, दृढपादी, विवुषा, विवृन्तिका, भूधात्री, चारट्टी, तामलकी, अजुटा, तालि, ताली, तमाली, तमालिनी, विवृषभृता तमक, भूधात्री, भूम्यमली, शिवा, क्षेत्रामली, क्षारिका, बहुपुष्पी, जहा, अधपत्रा, अजटा, सूक्ष्मफला, क्षेत्रामलकी, भूम्यामलकी, विवृषक, जडा, अफला, अमला, जडा, माला, जडा, माला, अमलजुटा ।

ताम्बूलपत्राः—भक्ष्यपत्रा, सुजहलता, सुरभूपण, सुजहली, दिवासीश, नागवली, नागिनी, नागवलिता,

नागवली, पर्ण, ताम्बूली, पर्णलत, ताम्बूलवली, सप्तशिरा, सप्तलता, कणिवली, ताम्बूलवलिता, पर्णगृहाशया, ताम्बूल, विषिका, फणिलता ।

तालः—आसवदु, भूमिपिशाच, देख्यपत्र, तृणराज, महोजन, तल, दीर्घतल, द्व्यध्रेष्ठ, द्व्यध्रे, पत्री, दीर्घस्वन्ध, ध्वजद्रुम, मधुरस, मदाख्य, दीर्घपादप, विरायु, तरुण, दीर्घपत्र, गुच्छपत्र, परपत्रवान्, दीर्घदु, तन्तुमियास, तन्तुगर्भ, शतपर्वा, प्रांगु, दुराहह, गजभक्ष, दृक्छद, चलच्छद, गुड, रवाहुकल, लेख्यच्छद, जलज ।

तालमूलीः—अशोघ्री, भूताली, दीर्घकन्दिका, गोधापदी, हेमपुष्पी, काशनपुष्पिका, खलनी, खर्जू, महाश्या, मुसली, तालमूली, ताली, तालमूलिका, तालपत्रिका, तालिका, शृङ्गकन्दा, सुवहा ।

तालीशः—अर्कवाह, करिपत्र, करोपत्र, अर्कवन्ध, करिच्छद, नील, नीशम्बर, पत्राख्य, तालीसपत्र, धात्रीपत्र, शुभेदर, प्रन्थिकापत्र, पत्राख्य, तुलसीच्छा, पत्राख्य, अर्कवन्ध, ताल, तलाहय, तमाहय, तालीपत्र, तालीयक, तालीसपत्रक, तामलकीदल, मुखरोगहर, हय, सुपत्र, आमलकीपत्र, तामलकीपत्र, घनच्छद ।

तिनिशः—अमगर्भक, अक्षक, अन्तिमुष्क, चकी चित्रकृत्, रधु, रध, रधिक, तिनाशक, स्पन्दन, स्पन्दन, सर्वसार, स्पन्दनद्रुम, शतांग, शकट, भस्मगर्भ, मेपी, जलधर, चञ्जुल, नेगी, चित्रकर्मा, स्पन्दनी ।

तिन्दुकः—नीलसार, कालस्कन्ध, अन्तिमुष्क, स्फूर्जक, स्फूर्जन, तुष्ट, रामण, अनिलसार, सृष्ट, स्पन्दन, रावण, रव, कृष्णत्वक्, कृष्णसार, सुषार, विरूपक, श्रितिसारक, केन्दु, तिन्दु, तिन्दुल, तिन्दुकि, तिन्दुहा, नीलसार, स्वर्गक, स्पन्दनाय ।

तिलः—होमधन्य, जटिल, पापघ्न, पवित्र, पितृतांग, पूरक, पूतधान्य, स्नेहक, तैलकल, यनोद्भव ।

तुम्बीः—अलाय, तुम्ब, तुम्बक, पिण्डकल, महाफला, आलाय, एलाय, लाय, लायका, तुम्बिका, अलीय,

कटुशालातु, लम्बा, इक्ष्वाकु, क्षत्रियवरा, तिक्तमीजा, महाफला कटुतुम्बी, कटुफल, तुम्बिनी, कटुतुम्बिनी, वृक्षफला, राजपुत्री, नृपारमगा, फलिनी, तिक्ततुम्बी, तिक्तका, कटुतिक्तका ।

तुम्बुरुः—तेजस्विनी, तेजवती, तेजन्द्या, लघुवल्कल, महौजसी, पारिजत, शीता, तिचा, अतितेजनी, तेजोहा, तेजिनी, अश्वघ्रा वल्लरी, स्वर्णनाकुली, विडालम्बी, सुतेजसी, सौरभ, सौरवनज, सातुज, द्विज, तीक्ष्णवल्क, तीक्ष्णफल, तीक्ष्णपत्र, महासुनि, रफुटफल, सुगन्धि, मूलघ्न, सौरज, अगन्धक, गन्धाल, रफुटितफल ।

तुरुरकः—अम्भपुष्प, कपिनामा, कपितैल, कृत्रिम, कपिश, चला, तुरुरक, सुफि, मुका, पिण्डित, सैहिकारघ, कपि, तैल, कपिल, चन्ना, पिण्डितवर, सिंहपिण्डक, सिद्ध, पावन, पवन, याव, धूस, धूसवर्ण सुगन्धिक, सिंहक, सिंहसार, पीतसार, यावल, (पण्याक, कपिज, कन्क, पिण्डीतैलक, करेवर, कृत्रिमक, लेपन, शालकीद्व, विष्टक, तैलपर्णी, वृक्षधूप, कपिचंचल, तैलाख्य, पिण्डक, यावन, राज, यवनदे, चंचलतैल, कृतक ।

तूदः—क्रसुह, ब्रह्मदार, तूत, ब्रह्मकाण्ड, ब्रह्मकाष्ठ, तूदुसार, मदसार, नीलरंगक, तूर, नीलशुन्तक, ब्रह्मण्य, सुपुष्प, सुरूप, ब्रह्मणेष्ट, नीलवृत्तक, विरकाष्ठ, पुण, नूड, पुष, पलायिक, यूप, यूप, तूल ।

तृणशून्यः—स्वर्णकेतकी, लघुपुष्पा, सुवर्णकेतकी, सुगन्धिनी, हेमकेतकी, कनकप्रसव, पुष्पी, हैमी, छिन्नरुहा, विष्टारुहा, स्वर्णपुष्पी, कामखड्गदला ।

त्रायमाणाः—देववला, पालिनी, भयनाशिनी, अवनी, रक्षणी, त्राणा, बलभद्रा, त्रायन्ती, गिरिजातुजा, सुभद्राणी, त्रायन्ती, वार्षिक, बलभद्रिका, बलदेवा, भद्रनमिका, कुलत्रा, त्रायमाणिका, सुकामा, गिरिजा, वार्षिका, अनुजा, मद्रन्याहा, कृतत्राणा ।

त्रिवृत्—अर्धचन्द्रा, कालमेपी, काली, कालङ्गिका, कालपर्णी, रेचनी, लघुरेचनी, मालिका, मसूरी, पालन्दी, पालिन्धी, रेचनी, सरसा, सदा, सरणा, श्यामा, सरा,

सुवहा, सर्वाभूति, सुपेगी, त्रिपुटा, त्रिमण्डी, त्रिवृता, त्रिवृत्तिका, त्रिवेला, सारा, विदला, सगला, मालविका, मसूरविदला, काला, कालमेपिका ।

त्वक्—वर, शीत, रक्त्पत्र, रामवल्लभ, तनुस्वर्, दासिता, त्वच, वरांग, भृङ्ग, चोच, शकल, उत्कट, सँदल, लाटपर्ण, मुखशोध्य, वनप्रिय, रामेष्ट, विज्जुल, त्वचा, चोल, शुद्धत्वच, पत्र, सुरनिवल्कल, सुतट्ट, त्वक्पत्र, वराङ्क, त्वचा, हय, वल्कल, मुखशोधन, सिंहल, बल्य, सुरसा, कामवल्लभ, महुगन्ध वनप्रिय, लटपर्ण, गन्धवल्लल ।

दन्तशठः—जम्बीर, जम्बल, जम्भ, गम्भीर, वक्त्रशोधी, रोचन, दन्तहर्षण, जम्बीर, रोचनक, मुखशोधी, आढ्यारि, जन्तुजित्, जम्भक, जम्भर, दन्तहर्षण, जेवत, दन्तहर्षक, जम्भी ।

दन्ती—मकूक, वराहाङ्गी, सुगप्रिय, लघुदन्ती, विशल्या, चतुर्धरपर्णी, एरण्डदल, शीघ्रा, श्येनघंटा, सुगप्रिया, वाराहाङ्गी, निकुम्भ, मकूलक, प्रत्यक्षपर्णी, दन्तिता, श्वेतघण्टा, निकुम्भी, निःशल्या, निःकुम्भ, नागस्फोता, दन्तिनी, उपचित्रा, भद्रा, रुक्षा, रेचनी, अनुकूला, रक्तदन्ती, मधुपुष्पा, एरण्डफला, तदणी, एरण्डपत्रिका, अपुरेवती, विशोषनी, कुन्मी, उडुन्वरदला ।

दर्भः—कुश, बर्हि, सूच्यम, यज्ञभूषण, दीर्घश्च, क्षुरपत्र, कुश, पवित्र, याज्ञिक, हस्वगर्भ, कुनुप ।

दाडिमः—करक, रक्तकुसुम, शुक्रवल्लभ, सुफल, दाडिमीसार, कृष्टिम, फलषाटव, रक्तवीज, दन्तवीजक, मधुवीज, कुचफल, रोचन, मणिवीज, वल्कफल, वृत्तफल, पिण्डपुष्प, दाडिम्भ, पर्वरुद्र, स्वादुम्ल, पिण्डीर, मुखवल्लभ, रक्तपुष्प, डालिम, शुक्रादन, सुनील, नीलपत्रक, मीलपत्र, दन्तवीज, लोहितपुष्पक ।

दारुहरिद्रा—दार्वी, पर्जन्या, पर्जनी, कटुर्दरी, द्वितीयाभा, कपीतक, पीतद्रु, कलियङ्ग, हरिद्र, पवम्पचा, हरिद्रा, काष्ठा, मर्मरी पीतिका, पीतदार, स्थिररागा, कामिनी, पीता, दारुनिशा, कालीयक, वामवती, द.रपीता, कर्कटिनी, हेमकान्ती, पीतत्वक्, पीतचन्दन, काष्ठरजनी, हैमवती, हेमकान्ता, कुसुम्भका, कर्कटकिनी ।

दुग्धिकाः—दुग्धी, क्षीरादिमहा, क्षीरी, क्षीरावी, मरुद्गवा, रवादुपर्णी, क्षीरिणी, क्षीराविका, कच्छरा, प्राहिणी, ताम्रमूला ।

दूर्वाः—नीलदूर्वा, रहानन्ता, भार्गवी, शतपर्णिका, शम्भू, सरस्वती, अमर, शतवल्ली, शद्वल, हरित, शतपर्वा, क्षीतकुम्भी, शीतला, वाहिनी, शीतली, हरिता, शम्भवी, श्याम, क्षीरा, शतप्रंथि, अमृता, धूर्ता, अनुवलिता, क्षिवा, शिवेष्टा, मङ्गला, जया, सुवगा, भूतदन्त्री, शतमूला, महौषधी, विजया, सौम्य, गौरी, शान्ता, रहा, अनन्ता, भार्गवी, शतवर्णा, गुणा, नन्द, अमरी, महावरी, हरषलिका, तिलपर्वा, दुर्गा, बहुवीर्या, हरिताली, कच्छरहा, अस्तितालता, पूता ।

देवदारुः—सुरदारु टुकिलिम, भद्रदारु, सुरालय, देवकाष्ठ पीतदु, भद्रवत्, शतपादप, पारिभद्रक, पीतदारु, दारु, पुत्तिकष्ठ, कल्पपादप, किलिम, अमरदारु, दारुक, स्निग्धदारु, शिवदारु, शम्भव, रुद्रवत्, भूतहारि, भवदारु, शक्रद्रुम, इन्द्रवृक्ष, दारुभद्र, इन्द्रदारु, मस्तदारु, सुभृद्द, रनेहवृक्ष, सुरद्रुम, सुरकाष्ठ, रनेहविद्य, मददारु, सुहाष्ठ, अरिनाश-दरुक, कण्टकर ।

द्रवन्तीः—शम्भरी, विवा, न्यग्रोधा, मृषिकाहया, प्रतःक्षेत्री, विवा, चण्डा, पुत्रक्षेत्री, आशुपर्णिषा, वृद्धन्ती, शुच्छकला, दुग्धगन्धा, विरेवनी, विपभद्रा, भद्रदन्ती ज्येतिष्का, जयावहा, शिका, प्रतिपर्णी, सहस्रमूली, विक्रान्ता ।

द्राक्षाः—स्वादुकला, नपुरसा, मृद्धीका, दारहूरा, गोशतनी, स्वाद्री, कृष्णा, चारफला, रसा, यक्ष्मणी, तापसप्रिया, प्रियाला, शुच्छकला, रसाला, अमृतफला, फलोत्तमा, सुकला, कञ्जीरिका, कर्मदिका ।

धन्वनः—धामनी, धनुर्वृक्ष, धर्मेन, महावल, राजासह, रुक्ष, स्वादुकल, पिच्छलत्वक्, पिच्छिलक, रक्षकुसुम, रजापद ।

धवः—वक्र, धुरन्वर, धवल, गौर, घट, कपाय, मधुरत्वक्, मधुरवल्क, नन्दित्र, पिशाचवृक्ष, पाण्डुतर, पण्डुर, पीतकल, शुक्लवृक्ष, शुष्कान्न, क्षाकशाख्य, स्थिर, शकटाख्य, रटतर, शुक्लवृक्ष, वय ।

धातकीः—अग्निज्वाला, अमिचला, बहुपुष्पिका, धात्री, धातुपुष्पिका, धातुपुष्पी, धातुपुष्पी, धावनी, शुच्छपुष्पी, कुसुद, कुजारा, मयवातिनी, मयपुष्पा, पार्वती, रोध्रपुष्पिणी, सुमिक्षा, सीधुपुष्पी, संघपुष्पी तीम्बजाला, ताम्रपुष्पी, वहि-शिखा, वहिपुष्पी, वहिज्वाला, मदकरा, इन्दुपुष्पिका, पार्वतीय, दाहनी, लोघ्रपुष्पिणी ।

धान्यकः—धान्यक, धान्यका, धान्या, धानी, धानेयक, कुस्तुम्बुक, छत्रधान्य, वितुलक, अयविका, अलङ्का, उवा, धन्याक, धनिक, धन्य, धनीयक, धनेयक, धानक, धान्य-बीज, धेनिका, धाना, ह्यगन्ध, जनप्रिय, कुनटी, कुस्तुम्बुरी, निःसा, कुस्तुम्बर, साकयोग्य, सुगन्धि, सुस्म-पत्र, वेधक, वेक्षण, बीजधान्य, धना, धानी, धनिका ।

धामार्गवः—महाकोशातकी, हस्तिघोषा, महाफला, घोषक, हस्तिपर्णी, वृहत्कोशातकी, हस्तिकोशातकी, ग्राम्य-कोशातकी, ऐसी, महत्पुष्पा, रापीतका, हस्तिघोषातकी, कर्पेटकी, पीतपुष्पा, महाजाली, धन्या, वृत्ता ।

नन्दीतकः—क्षुद्र कुचेरक, कुनी, अश्वत्थमेद, नन्दीवृक्ष, प्रोही, गजपादप, रथालीवृक्ष, क्षयतर, क्षीरी, वनस्पति, नन्दीरीक्षा, तुल, वण्टलक, कान्तलक ।

नलः—नल, नल, पीतल, धमन, नर्तक, रन्ध्री, शून्यमध्य, विभीषण, कुक्षिरन्ध्र, कौचक, धीर्ध्वंश, छिद्रान्त, मृदुपत्र, वंशपत्र, मृदुच्छद, नट, नटी, मृत्पुष्प, नालवंश ।

नलिकाः—विट्मलता, नलिक, कपोतचरणा, नली, सुविरा, धमनी, शून्या, निर्ध्व्या, नर्तकी, नटी, विट्मलतिका, कपोतवाणा, स्तुत्या, रक्षदला, नर्तकी ।

नाकुलीः—सर्पगन्धा, सुगन्धा, रक्षपत्रिका, ईश्वरी, नागगन्धा, सुरसा, अहिभुक्, सर्पादनी, व्यालगन्धा, नाग-सुगन्धा, गन्धनाकुली, नकुलेश, भुजंगाक्षी, सर्पांगी, विपनाशिनी, भोगिगन्धमा, सर्पसुगन्धा, विरिजपत्रिका ।

नागवलाः—अरिष्टा, भद्रौदनी, गांगेहकी, सभा, हस्वगवेष्टुका, महावाला, खगन्धिनी, गोक्षरज्जुला, चर-गन्धा, चतुःपला, महोद्या, महापत्रा, महाफला, दिग्धेव,

अनिष्ट, देवदण्डा, महागन्धा, घण्टा, खरबल्लिका, विश्वेदी, खण्डा, खर्वा ।

नागरङ्गः— नाङ्ग, त्वक्मुगन्ध, सुखप्रिय, नार्थङ्ग, नागर, ऐरावत, नागरक, चक्राधवासी, किर्भिर, किर्भिर-त्वक्, सुरग, स्वगन्ध, इरावत, वक्त्रवास, योगङ्ग, गन्धाल्प, गन्धपत्र, वरिष्ठ, वक्त्राधवासन, ऐरावतिक, योगी, सुरङ्ग, गन्धपत्र ।

नाडीः पट्टाक, नाडीक, नाडीशाक, नाडीच, केचुकी, पेचुली, पेचु, विश्वरोचन ।

नालिकेरः—नारिकेज, दडफल, लाडली, कूर्चशीर्षक, जुङ्ग, स्कन्धफल, तृणराज, सदाफल, नारिकेर, नाडिदेली, नारिकेली, नारीकेरी, नारिकेरि, नारिकेलि, सदापुष्प, क्षिरःफल, मृदुफल, पुटोदक, गारिकेर, रसफल, सुगुङ्ग, कूर्चशेखर, दडनीर, नीलतरु, मङ्गल्य उच्चतर, स्कन्धतरु, दाक्षिणार्य, दुराहट, त्र्यम्बकफल, शिराफल, करकाम्मा, पथेधर, सुक्कुण, कौशिकफल, फलमुग्ध, जटाफल, मुण्डफल, विधानित्रप्रिय, नाडीकेल, नारिकेर, सुभङ्ग, फलकेशर, वरफल, महाफल सदाफल, रोगगर्भ, त्र्यक्षक, तलरक्ष, लाडली ।

निष्पावः—राजशिम्यी, वल्लह, श्वेतशिम्विक, श्वेतशिम्वः, पालकाख्य, सुखप्रिय, माध्विका, मधुसर्करा, पलङ्कपा, स्कन्धशिम्यी, वृता, मधुसिता, सिता ।

नालिकाः—नीली, नीलिनी, नीला, नेववर्गा, कुटसला, दूली, ह्रीतविका, काला, नीलिका, नीलपुष्पिका, ग्रामीणा, मधुपर्गिका, राजनी, श्रीफली, तुल्या, तूणी, दोला, इलिका, दोगिधा, अल्लिका, प्रामणी, प्रामिणी, तूनी द्रोणी, मेला, तुच्छा, नीलवत्री, राज्ञी, नीलपुष्पी, काली, इयामा, मोधिनी, श्रीफला, ग्राम्या, भद्रा, भरवाही, मोचा, कृष्णा, व्यञ्जनकेशी, मकाफल, स्थिरज्ञा, रज्जुवती, वृत्तिका, अञ्जनकेशिका, चारटी, विजया, गन्धपुष्पी, स्थिररगा ।

नीवारः—तापस, मुनिमङ्ग, प्रधाधिक, अरण्यधान्यनामा, रत्तिक, अरण्यधान्य, मुनिधान्य, तृणोद्भव, तृणधान्य, दन्तरीदि, अरण्यजाली, प्रधाधिका ।

पटोलः—कुलरु, तिक, पाण्डुक, कर्कशच्छद, मण्डली, मधु, राजीफल, पाण्डुकल, राजनामा, अमृतफल, राजोमान्, तिकोत्तम, वीरगर्भ, कुष्ठ, कुष्ठार, कासमर्दन, पञ्चराजिक, ज्योत्स्ना, कच्छुर, ज्वरनाशन, तिकक, पटु, पटुक, कर्कशदल, कुलज, वाजिमान, लताफल, राजफल, राजपटोल, वरतिक, तिकभद्रक, वटुकल वटुक, कटु, अमृतकल, पाण्डु, नागफल, पञ्जर, ज्योत्स्नी, कच्छुव्री, प्रतीक, कुष्ठहा, कासमञ्जन ।

निकोचकः—कोलक, दीर्घफल, पीतधर, गुडमल्लिहा, मदन, गुप्तस्नेह, चाकल, मंकोट, पल्लोजप, ककोच, जलगोचक, पिस्त, सुकूलक, दन्तीफलप्रकाश, अङ्गोट, अङ्गोल, करेची, दीर्घलीलक, पीतवार, ताम्रक, गन्धपुष्प, अङ्गोल, कंटार, गूडपत्र, लम्बकग, रोचन, विज्ञानतैलगर्भ, गुणात्यक ।

निचुलः—इज्जल, हिज्जल, अश्वत्थ, जलवेतप, समुद्रफल, अश्विक, सदाधिक, सिन्धुफल, अश्वधिक ।

निम्बः—अरिष्ट, अर्कपादप, उर्दन, छदिन्न हिङ्गु, कटार्थ, काकफल, कीरेष्ट, कीटफ, मालक, नेता, निम्बक, निर्यास नियमन पक्कल, पारिभद्रक, पिचुमन्द, पीतधार, प्रभद्र, पूरुमालक, पूवारि, पीतपाक, गजभद्रक, रविप्रिय, सर्वतोभद्र, सुमना, उत्तिकक, सतिपक, सर्भद्रक, सुभद्र, शुक्ल-प्रिय, शीर्षपण, शीत, वरस्वच, विशीर्षपण, यवनेष्ट, यवनेटा, पारिभद्र, धमन, ज्येष्ठामालक, हिङ्गुनिर्यास, अग्निधमन ।

निर्गुण्डीः—सुगन्ध, शीतलहा, नीलसिन्दुक, सिन्दुकच्छ-पिका, भूतकेशी, इन्द्राणी, नीलका, नीलिका, नीलनिर्गुण्डी, सिन्दुक, पीतसदृ, कपिका, शेकालिका, शीतली, नीलमञ्जरी, कर्तरीपत्रा, वनजा, मरुत्पत्री, वनेन्द्राणी, श्वेतसुरा पीतलहा ।

पत्रः—तमालपत्र, पत्र, पलाश, छदन, दल ।

पद्मकः—चार हिम, कैदारज, कैदार, मलय, मालय, पीत, पीतक, पद्मश्ल, पद्मगन्धी, पद्माह्व, पद्मकृष्ट पाटला-पुष्प, वर्णक, रक्त, शुभ्र, सुगन्ध, सुगन्ध, पीतक, शीतल, शीतलीय, पाटलापुष्पसन्निभ ।

पनसः—महासर्ज, फलिन, फलशुक्ल, रम्य, कण्टक-फल, मूलफलद, अपुष्पफलद, पुतक, आशय, अपुष्प,

अतिवृहत्फल, चम्पाड, चम्पा, चम्पकाल, कण्टीफल, कण्टाफल, कण्टकिक, कोप, मृदङ्गफल, महासर्ज, मूल-फलद, पानस, फगप फलद, फलस, फलिन, फलवृक्ष, स्थूळकण्टफल, सुरङ्गफल, पलस ।

पयस्याः—क्षीरशोकोली, क्षीरशुक्ला, पयस्विनी, वयस्या, क्षीरमधुरा, नीरा, क्षीरविपाणिका, जीवन्तली जीवशुक्ला ।

परूपकः—परु, वन्मपत्रक, नीलवर्ण, परापर, परि-मण्डल, अलपास्थिह, परुप, परुप, गिरिपीड, रोपण, नागद-लोपम, परावत्, नीलचर्म, नीलमण्डल धन्वनच्छद, मुहुफल, परावर, नीलवर्ण ।

पर्यटकः—शीतप्रिय, पर्यटक, जवर, सूक्ष्मपत्रक, वरत्कि, पित्ताती, कुशशार, कवर, रेणुनामक, अरक, कदचनामक, कम्पाङ्ग, कृष्णशाल, कटुपत्र, चरक, रजत्, रेणु, रक्तपुष्पक, पांशुपट्याय, पांशु, पित्तारि, शीतप्रिय, शीत, सुत्ति, शीतवल्गु, पर्यटक, नम, तिक्त, त्रिवर्ध, वरत्कि, वरक, वर्मरुणक, प्रगन्ध, त्रिवर्ध, वृष्णारि ।

पलाण्डुः—राजपलाण्डु, यवनेष्ट, वृषाहत्य, सुकन्द, सुसङ्गण, लतार्क, दुटुन, दुर्गन्ध, सुसङ्गणक, सुकन्दक, निकेऽन, नीचभोज्य, लोहितकन्द, तीक्ष्णकन्द, उष्ण, दीपन, क्षुद्रप्रिय, कृमिघ्न, सुखगन्धक, बहुपत्र, विश्वगन्ध, रोचन, सुकन्दक, राजप्रिय, वृषकन्द, वृषेष्ट, वृषप्रिय, रक्तकन्द, राजेष्ट, उल्ली, ऊलि, श्वेतकन्द ।

पलाशः—किंशुक, यक्षिप, रक्तपुष्पक, क्षारभेष्ट, ब्रह्मवृक्ष, समिद्धर, पर्ण, यक्षिक, वातपोष, करक, त्रिपत्रक, ब्रह्मपादप, पलाशक, त्रिपर्ण, रक्तपुष्प, पूतदु, ब्रह्मवृक्षक, ब्रह्मोपनेता, काष्ठदु, बीजस्नेह, कृमिघ्न, वक्रपुष्पक, सुपर्णी ।

पाटलाः—पाटली, ताम्रपुष्पी, कुम्भिका, रक्तपुष्पिका, वसन्तरुती, अमोघा, स्थाली, विटवल्गुभा, स्थिरगन्धा, अम्बुवासा, कालवृन्ती, धर्तुर, फलेरुहा, अम्बुवासिनी, कृष्णवृन्ता, कुम्भी तोयाभिवाशिनी, काचस्थाली, कुवेराक्षी, तोयपुष्पी, पुष्पविका, अम्बुवासी, कामदूती, अभिप्रिया, मधुती, अलिवालभा, कोकिला, ताली ।

पाठाः—अम्बुवा, विद्वकर्णी, रधापनी, श्रेयसी, रसा, एकाशीला, पापचेली, प्राचीना, वनतिक्तिका, कुचेला, छिन्नवेशिका, अम्बुष्टिका, पापचेला, चूचिका, विद्वकर्णिका, कुचेली, दीपनो, तिक्तपुष्पा, वृद्धतिक्ता, शिशिरा, कृकी, मालती, वरा, देवी, वृत्तपर्णी, तिक्ता, अविद्वकर्णी, वाटिका, अविद्वकर्णा पाटिका, सुस्थिरा प्रतापिनी, वरदादनी, मालवी, त्रिशिरा, त्रिवृद्ध, वृत्तपर्णी, रक्तम्री, विषहन्त्री, गहौजसी, रुचिण्या, वीरा, वल्लिका ।

पारावतः—कलरव, अरुणलोचन, मदनकाकुरव, कामी, रक्तक्षण, मदनमोहन वारिवलासी, कण्ठीरव, गृहकपोतक ।

पालङ्क्याः—पलङ्क्या, मधुरा, धुरपत्रिका, सुपत्रा, स्निग्धपत्रा, प्रामोणा, प्राम्यवल्लभा, धुरिका, वास्तुकाकारा, धुरिका, चोरितच्छदा, पालंकी ।

पापाणमेदः—अश्वम, शिलाभेद, अश्वभेदक, उपल-भेद, श्वेता, नगभित्, शैलगर्भज, अश्वभित्, अश्वभेदक, पापाणभेदक, पापाणभेदन, पापाणभेदी, उपलभेदी, उल-भित्, शिलागर्भज, गिरिभित्, भिन्नभोजनी, दण्डित्, अश्वभित् ।

पिण्डालुः—ग्रन्थिल, पिण्डकन्द, कन्दप्रन्थि, रोमरा, रोमग्रन्थी, रोमकन्द, रोमालु ताम्बूलपत्र नानाकन्द, पिण्डक, पिण्डीतक, पिच्छिल, स्वादुकन्दक ।

पिप्पलीः—मागधी, कृष्णा, वैदेही, चपला, कणा, उपकुल्या, उपणा, शौण्डी, कोला, तीक्ष्णतण्डुला, चमाला, कोल्या, तिक्ततण्डुला, उष्णा, कटी, एरण्डा, मगधा, ऊषणा, कृकला, कटुबीज, कोरजी, इयामा, सूक्ष्मतण्डुला, एन्तकफा, मगधोद्गवा ।

पीलुः—शीत, सहस्रांशी, शीतसह, खंसी, गुडफल, बाह्यगन्ध, विरेचनफल, गाली, इयाम, करभवल्गु, पीलुक, कलभवल्गु । १ वीरश्व, रहन, तपन,

पुनर्नवाः—श्वेतमूला, शोधनी, दीर्घपत्रिका, क्षिप्रवीजक, पुष्पबीज, कटिलक, पक्षिवाटिका, वृक्षीर, क्षुद्रवर्षाभू, दीर्घाक्ष, अक्षिक, स्फोटहेतु, पृथ्वी, सितवर्षाभू, चिराटिका, वृक्षीर, वीरश्व । वर्षाजी, वर्षाही, धनपत्र ।

पुष्करः—पौष्कर, पुष्करमूल, पञ्चवर्णक, पञ्चकर्ण, पञ्चपत्रमूल, पञ्चवर्णक, पुष्करिणी, वीरपुष्कर, हुषा, काशीर, मन्मथी, श्यापारि, मूलपुष्कर, पुष्करजटा, पुष्करशिका, वीर, पञ्चवर्णक, पञ्चपुष्प, सागर, सूर, वृक्षचद, सुमूलक, शूलघ्न, कुष्ठमेर ।

पूगः—उद्वेग, खंसि, घोण्टाकल, चिकण, चिकणा, चिका, गुवाक, खग, दीर्घपादप, बल्कतह, दडवलक, मुनिहय, गुवाक, कसु, घोण्टा, गूवाक, कपोतन, कसु, कमुषी, पूगवृक्ष, अकोट, तन्तुघार, सुरेजन, गोपदल, राजताल, उटाकल, करमट्ट, पूगफल ।

पृथ्वीकाः—एला, स्थूलेला, बहुला, मालेया, तालकीफन, स्थूला, बृहदेला, त्रिपुटा, त्रिदिवंज्वर, सुभित्वक, महिला, कन्या, कुमारी, कुमारिभा, पृथ्वी, गोपुट, कायस्था, वान्ता, इन्दी, घृतची, मद्रैला, गर्भसम्भवा, इन्द्राणी, ऐन्द्री, दिव्यगन्धा, निःकुटी, चर्मसम्भवा, वाला, बलवती, एलकी, मद्रैला, सागरगामिनी, गन्धलीगर्भ, कन्यका, पुटा, स्वकुसुमगन्धा ।

पृथ्वीरणीः—पृथक्पणी, तन्वी, कोष्ठकपुच्छिका, त्रिपणी, पूर्णपणी, कसु, सिंहकांगुली, चित्रपणी, अंघ्रिपणिका, कोष्ठपिना, सिंहपुच्छी, कलसी, धावनी, गुहा, पिष्टपणी, लाङ्गली, कोष्ठकमेखला, दीर्घा, शृगालवन्ता, घोष्ठपुच्छिका, सिंहपुच्छिका, दीर्घपत्रा, अतिगुहा, घट्टिला, चित्रपणिका, कलसी, कोष्ठपुच्छी, कदला, कंकशत्रु, चककुल्या, चक्रपणी, शोणमाळा, महागुहा, धमनी, शृगालविना, मेखला, लांगुलिङ्गा, ब्रह्मपणी, दीर्घपणी, सिंहपुष्पी, पृष्टिपणी, अंघ्रिपणी, धावनी, विष्णुपणी, गुहा, लाङ्गुलिका, शृगालिका, चित्रपणी, चपचित्रा, श्वपुच्छा ।

प्रसारिणीः—प्रवारणी, राजयला, गन्धाली, कटम्भरा, गन्धाल्या, सारणी, सरणी, गन्धमद्रा, भद्रपणी, शरणा, गन्धोली, भद्रवला, प्रतानिनी, सुत्रसरा, प्रसर, सरा, पणी, प्रसला, प्रमद्रा, प्रतानिका, राजरणी, चन्द्राणि, नीवार, वल्या ।

चदरः—अरण्यधान्य, चदरि, अरण्यजाली, प्रदरः—पानीयासलक, वारिवदर, प्राची-

प्रियङ्गुः—फलिनी, कान्ता, लता, इयामा, गन्धकला, गोवन्दनी, विष्वक्सेना, कृष्णपुष्पी, कृष्णाङ्गी, महिलादधा, गुन्दा, कारम्मा, प्रियक, कटु, गोवर्णा, मेदिनी, मिथवल्ली, फलप्रिया, गौरी, शृता, कङ्गु, कङ्गुनी, भद्रा, गौरवल्ली, सुभद्रा, पर्णमेदिनी, शुभा, पीता, मङ्गल्या, प्रेयसी, लज्जना-विद्या, वनिता, नारिवहभा, प्रियवल्ली, वर्णमेदिनी, सुभगा, प्रेयसी ।

प्रियालः—खरस्वन्ध, चार, बहुलवलकल, राजादन, तापसेष्ट, सजकटु, धनुषपट, अखट, ललन, चारक, बहुवलकल, सनट्ट, तापसप्रिय, स्नेहवीर, उपवट, मोक्ष-वीर्य, द्रुसलक, राजातन, वियल, धनु, पट, हसजक, धनुःपट, प्रियालक, खटु, नवट्ट, भक्षवीज ।

पुष्पः—जटी, पर्करी, पकंटी, कर्परी, चादरिनी, शृङ्गी, वरोहशाखी, अश्वत्थी, विम्परी, वटी, कनककुतह, कपीतन, क्षीरी, सुपाथ, कमण्डलु, गर्दभाण्ड, पीतन, दटप्ररोह, छव, छवन्न, महावल, बन्दराण्ड, पकंटी, जटि, शीशा, चटछव, कपीतन ।

फक्षीः—फज्या, फजिका, पञ्चा, अजान्नी, अपराजिता, तकारी, चूचक ।

फलगुः—अजीर, मञ्जुल, बाकोदुन्ःरिवाफल ।

फेनिलाः—प्ररिष्टक, माहल्य, कृष्णवर्ण, अर्थसाधन, रक्तवीज, पीतफेन, फेनिल, गर्भपातन, रीठा, गुच्छफल, अरिष्ट, मङ्गल्य, कुम्भवीजक, प्रकीर्य, सोमवलकल ।

बकुलः—बकुल, केशर, कण्ड, तैलाङ्ग, मधुपञ्जर, सिंहकेशर, मुकुल, वरलब्ध, सीधुगन्ध, स्त्रीमुखमधु, दोहल, मधुपुष्प, सुमि, भ्रमगानन्द, शिरकसुम, शारदिक, करक, सिन्धुगन्ध, विशारद, गूढपुष्पक, धन्वी, मदन, पञ्चमोद, चिरपुष्प, मद्यगन्ध, मधुगन्ध, शोर्केशरक, लिङ्गासंज्ञ, विशारद, मद्यामोद ।

चदरः—कर्कन्धु, कर्कन्धुक, कर्कन्धू, कोल, फेनिल, कुवल, घण्टा, सौवीर, चदर, पिच्छला, अत्रिगा, कुह, कोली, विपम, उमयकण्टका, सरय, चदरीच्छदा, सौवीरक,

बालेष्ट, फलेशर, गणफल, गोपबोडा, हलिबोलि, गोपबोटी, गुमालकोलि, वादिर, गुडफल, दटवीज, कण्टकी, धकवण्टक, सुवीज, सुफल स्वच्छ, कोला, स्वदुफल, गुधमनी, विच्छिन्न, रशदुफला बोलिक, अजामिया, उभयवण्टक गुडफल, फेनिल ।

चला:-भदौदनी, वाटी, समझा, सरगष्टि, महागमझा ओदनिका, शीतपाकी, ओदनलया, वायव्युष्णी, रुनांगा, पिठल, वलिनी, चला, वाट्यालक, ओदनी, भद्रा, भदौदनी, सरककाष्ठिका कलणनिनी, भद्रबला, मोठावाटी, बलाव्या, शीतपाकी, वायव्याटी, निलया, वाट्याली, वाटिहा, वाट्यालिहा, ओदनहा, वा.घो, धनरा रक्ततन्दुला, कूरा, प्रदासा, वारिगा कणिजिलिहा, जयन्ती, कठोरगष्टिहा ।

विभीतक:-कलिद्रुम, रत्नपृष्ठ, संवर्त, अक्ष, विभीतकी, विभीत, तुप, पर्वफल, भूवास कलि, कुशिर वडुवीर्य, तैलकल, भूतावाग, सनई, वागन्त कलिपृष्ठ, वहेहुक, हार्थ, विपन्न, कलिन्द्र, अनिलपन्न, कासन, कलियुगालय तोलकल, तिलपुष्पक, कलक, वहेडक, पर्मन्न, कलिक ।

विन्धी:-रुफल गुण्टी, गुणिकेरी विन्धिका, अंष्टोपमफला, पीडवर्णी, ओठी, कर्मकारी गुण्डिरेरिका, गुण्डिरेशी, विम्प, विम्पक, कम्बजा, दन्तच्छोपम, गोही, रुचिरफला, छर्दिनी, तिफतुण्डी, तिफासया, कटुका, कटुगुण्डिका ।

चिलव:-महाकपित्थाख्य, धीफल, गोहरीकी, प्रतिवात, मज्जल्य, मालूर, त्रिशिर, दाण्डिल्य, शैल्य, मासुर, कपीतन, महाकपित्थ, अतिमज्जल्य, महाफल, शैल्य, ह्यध-गन्ध, शालाट्ट, कर्कटाह, शैलपत्र लिबेष्ट, पत्रप्रेष्ठ, त्रिपत्र, गन्धपत्र, लक्ष्मीकट, गन्धफल दुरारुह, विशालपत्र, क्षिपम, सदाहुफल, सख्यफल, सुनीतिक, मगीरसार, सत्व-भर्मे, अराराह, वण्टपात्र, सितानन नीलमणि, धीयफल, गोगहरीकी, वातसार, अरिमेद, सत्वकर्मा, वराहद, राभूतिक, राकलन कंटक, अशितानन ।

वीजक:-पीतसार, पीतसाल, वन्धूकपुष्प, धियक, सईक, असन, पीतसाल, पीतसालक, पीतसाल, पयमायुष, महासर्ज, सौरि, वीजश्व, नीलक, धियसालक, दयाम, सुनील अशन, धियसालक ।

वीजपूरक:-वीजपूर, मातुवज, रुचक, फलपूरक, वीजक, अमलकेशर, वीजपूर्ण, पूर्णबीज, सुकेशर, मातुलिज, सुपूर, वीजकलक, जस्तुम, दन्तुरच्छद, पूरक, रोचनफल, छद, अमलकेशर, सुमनफल, केसरी, केशराम्ब, वराम्ब, मधुकेशर, कृमिघ्न, गन्धकुसुम, सिंधुपादप, दन्तुरत्वच ।

वृद्धी:-महती, सिंदी, दिगुली, प्रसहा, कुशी, का.ता, छुदवाताकी, कपाकी, लता, वृद्धिका, अकान्ता, वार्ताकी, सिंदिका, रा.मूढा, स्थूलकण्टा, दहमण्टा, मण्टकी, महोष्टिक, बहुपथी कण्टतनु, कण्टाष्ठ, कटुकला, डोवली, वनशृङ्गाकी, पाराचंदी, विपदा, कान्ता, स्थूलकण्टाकी, महती, डोरली ।

ब्राह्मी:-वयस्था, मत्स्याक्षी, सुरसा, ब्रह्मचारिणी, वरा, सोमवल्ली, सरस्वती, सौम्या, मुरधेष्ठा, सुवर्चला, वपोत-वेगा वैधात्रो, दिव्यतेजा, मदीपथि स्वायम्भुवी, सौम्यलना, सुरेष्ठा, ब्रह्मकन्यका, मण्डूमाता, मण्डूकी, मेध्या, वीरा, दिव्या, भरती परमेष्ठिनी, शाब्दा, कपोतवल्ली, सोमवल्ली, सोमा, ब्रह्मसुवर्चला, त्वाष्ट्री, सुरेष्ठा, ब्रह्मकन्यका, मध्या, शारदी ।

भद्रमुस्ता:-गाम्जिय, कुखिलव, भद्रमुख, कुटजट, सुखक गुम्दा, कशोत्था, वगाही, प्रन्वि, भद्रकाशी, कचोट, कोडिष्ठा, कुरविन्दासया, सुगन्धि, प्रन्धिला, हिमा, बल्हा, कच्छोला, अर्णोद, वारिद, बन्द ।

भल्लातक:-अरुणकर, भल्लात, शोधहृत्, वहिनामा, वीरारु, मणकृत, भूतनाशन, भल्लातकी, अग्निमुखी वीरपृष्ठ, अन्तःसत्त, भल्लिका, अशोहिता, भाहो, निर्देहन, तपन, अनल, कृमिघ्न, शैलजीज, वातारि, स्फोटवीजक, पृथ्वीज, धनुर्धर, वीजपादप, बलि, महादीक्षण, अभिक, स्फोटहेतु, दोकसुत, रनेद्वीज, रफहर, वीरपृष्ठ ।

भव्यः—भव, भव्य, भविष्य, भावन, वक्त्रशोधन, पिच्छलमीज, लोमफल, आविक, संपुटाङ्ग, कुसुमोदर, रोमफल ।

भारद्वाजी:-कूकराट, व्याघ्राट, पुण्यदर्शन ।

भागी:-पद्मा, ब्राह्मणयष्टिका, अक्षरवल्ली, फली, ब्रह्मसुवर्वा, शुक्रमाता, कासघ्नी, भृगुजा, भार्गवा, अक्षरवल्ली, बालेय, ब्राह्मणी, ब्राह्मणयष्टिका, प्रज्ञायष्टी, ब्रह्मयष्टिका, ब्राह्मिका, ब्रह्मी, ब्राह्मी, भृगुजा, भृगुसभा, भ्रमरेष्ट, भृङ्गजा, भार्गी, दूर्वा, दिवदण्डी, गर्दभशाक, गर्दभशाका, हजिका, कालिद्रवल्ली, काष्ठघ्नी, कासजित्, खरशाका, मुखधौता, फलिका, शक्रमाता, सुल्पा, रक्षुपा, यष्टि, कालेयशाका, वान्तारि, वर्षक, वर्षा, शाकबालेय, भार्गी, अक्षरवल्ली, वर्षर, गर्दभशाखी ।

भूर्जः—भूर्जपत्र, चर्मा, बहुलवल्कल, सुचर्मा, छदपत्र, वल्कद्रुम, भूर्जपत्रक, चित्रवक्, विन्दुपत्र, रक्षापत्र, विचित्रक, भूतपत्र, मृदुपत्र, मृदुचर्मा, शैलेन्द्रस्थ, चर्मद्रुम, लज्जपत्र, शिवि, स्थिरच्छद, मृदुवक्, दलनिर्गोक, पद्मकी, विषादक, पत्रपुष्पक, भुज, वधूपट्ट, वृक्षवक्, मृदुच्छद वल्कद्रुम, विचित्रक, भूतपत्र ।

शुद्धराज-मार्कव, शुद्धाह, केश जन, पितृप्रिय,
रत्नक, केदय, कुन्तलवर्धन, शुद्ध, पतद, मार्कर, मन्कर,
मार्क, नागमार, पद्म, शुद्धसौदर, अज्ञारक, एकरज,
काजक, शुद्धार, अज्ञागर. केशराज, शुद्धारक, मेकराज,
पद्मजात, तेकराज, सेवाक्ष, महानील, हरिवाप्त, हरिप्रिय,

मकुष्ठः—मकुष्ठक, वनमुद्ग, कृमीलक, अमृत,
अरण्यमुद्ग, बह्नीमुद्ग, मुकुष्ट, राजमुद्ग, मयष्ठ, वरक,
निगूडक, कुलीनक, खण्डी, मुद्गष्टक, मुद्गष्ट, मयष्टका,
मयूष्ट, मयुष्ट, मयक, मयुष्टक, निरुद्धा ।

संज्ञिष्ठाः विकसा, जिह्वी, समझा, कालमेयिका,
मण्हकपर्णी, मण्वीरी, काला, योजनवल्लीका, योजनवल्ली,
मण्हकी काण्ठीरा, वखारज्जमी, रक्ताङ्गी, रक्तयष्टि, रक्ता,
भण्डो, योजनपर्णिक्ता, लतायष्टि, हेमपुष्पी, भिण्डोरी,
काण्ठीरी, मण्डिल, मण्डोरी भण्डि, मण्डिलकी, रसायनी,
रण्डोरी हणिणी गौरी वज्रा, रोहिणी, चित्रलता, चित्रा,

चित्राङ्गी, जननी, विजया, रक्षयष्टिदा, मञ्जुषा, छत्रिणी, रागाढ्या, कालमण्डिका, अरुणा, ज्वरहन्त्री, छाया, नागर-कुमारिका, मण्डोरलतिका, रागाङ्गी, वसुधाम्पणा, क्षेत्रिणी, ताम्रमूली, ताम्रिका, लोहितलता, ताम्रवल्ली, बाला, कालमेयी, गण्डाली, पद्मा, कालमण्डिका, नागकुमारिका ।

मण्डूकपर्णीः—माण्डूकी मण्डूकी, मेकी, मण्डूकपर्णिका,
माण्डूकी त्वाष्ट्री, दिव्या, महौषधी, ब्रह्माण्डूकी, सुप्रिया,
दर्दच्छदा ।

मदन.—छईन, पिण्डीनट, पिण्डीतक, करहाट, मधक, शाल्यक, विपुष्पक, पितुक, मुचुकुन्द, कण्ठधी, करहाटक, शाल्य, कण्ठ, रामच्छईनक, रामाच्छईनक, कैडर्य, धाराकक, तगर, राह गाह, मन्थिफल, वस्तिशोधन, तरट, राहु, पिण्डीतक घण्टाल, मादन, हपे, घण्टाख्य, बस्तिरोधन ।

मद्यन्तिकाः—तिमिर, बोधदन्त, द्विशन्त, नख-
रञ्जक, मेदिका, रागगर्भा, रञ्जका, नखरञ्जिनी, सुगन्धयुग्वा,
रागाह्नी, यवनेष्टा ।

मधूकः-मधुवृक्ष, मधुग्रीव, मधुस्रव, गुडपुष्प, रोध्रपुष्प,
वानप्रस्थ, साधव, मध्व, तीक्ष्णसार, डोलाफल, महादुम,
मधु, मधुवार, मध्वल, जलज, मधूलका ।

मरिचः—पवित्र, श्याम वेणुज. यवनत्रिय, शुद्ध, वल्लीज, वेल्ज, कोलक, धर्मपत्तन, कोल, ऊषण, वरिष्ठ, यवनेष्ट, वृत्तफल शाकाक्ष, वेणुक, कटुक, शिरोवृत्त, वार, कफविरोधि, मृष्ट, वीर, सर्वहित, कृष्ण, पलित, रुचिः, रूक्ष, धन ।

महवक्त्रः—महत्तक, महत्, मह, महर्ग, जम्बीर. फणिञ्जक,
प्रस्थपुष्प, समीरण, खरपत्र, गन्धपत्र, चट्टवीर्य, शीतरक्त.
सुराह, प्रस्थकुसुम, मरिच, छाजन्मसुरमिपत्र, कुलसौरभ ।

मसूरः—रागदाहि, मङ्गल्य, पृथुबीजक, सूर, कल्याण-
बीज, सुस्वीज, मसूरक, मङ्गल्यक, मसुर, ब्रौह्मिष्ठान्न,
गभोलिक, ताम्बूलराग, ह्यालसक, मसुरा, मसूरा, मसूरिका,
मसुरि, मङ्गल्या, माङ्गल्या ।

सहाश्रावणी:-महाश्रावणिका. भूकदम्बिका, छिन्ना,
ददम्बपुष्पिका, अव्यथा, अतितपस्विनी, महामुण्डी, ददम्ब-

पुष्पी, लोचनी, विकचा, कोडपूडा, पल्लवा, नदीदम्बा, मुण्डाह्वा, महामुण्डनिका, माता, स्थविरा, लोतनी, भूकन्द, अलम्बुषा, शृङ्गा, छिन्नमयिका, नीलकदम्बिका, बोडा, लोभनीय, लोचनी, कोडबोडा, लोभनी, लम्बुजा ।

मांसीः—जटामांसी, जटी, केशी, लोमशा, जटिला, मिशी, मांसी, तपरिवनी, हिंसा, मिषिका, चक्रवर्तिनी, नलद, वणिनी, कृष्णजटा, किरातिनी, भूतजटा, कम्पादी, पिशिता, पिशी, पेगी, पेक्षिनी, जटा, मांसिनी, जटाला, नलदा, मेपी, तामसी, माता, अमृतजटा, जननी, जटावनी, मृगभक्ष, जटामांसी, मीक्षिका, मिसि, मिसी, मिषि, केक्षिनी ।

मारिपः—मारीप, बाष्पक, सार्प ।

मालतीः—सुमगा, जःती, वाधन्ती, पुवती ।

मापः—कुरुविन्द, धान्यवीर, वृषाङ्कुर, मांसल, बलाव्य, विषय, विश्वभोजन, वीररत्न, यली, वीजवर ।

मापपर्णीः—रुद्रवृन्ता, पर्णिनी, पाण्डुलोमशा, शृङ्गिणी, हयपुच्छी, काम्बोजी, सिंहपुच्छिका, महापदा, सिङ्गुच्छी, पाण्डुलोमशपर्णिनी, पाण्डुलोमा, आर्द्रमाया, मांसमाया, मंगल्या, हयपुच्छिका, हंसमाया, अश्वपुच्छी, कल्याणी, मापपर्णिका, वज्रमूली, शालिपर्णी, विसारपर्णी, आत्मोद्भवा, बहुकल, स्वयम्भू, सुलभा, घना, सिंहविजा, विसम्बिका, सूर्यपर्णी, पाण्डुरा, मापपर्णिका, विसारिणी ।

मुद्गः—सूत्रोष्ठ, वर्णाङ्ग, रसोत्तम, मुक्तिप्रद, दयानन्द, भूषल, बाजिभोजन, सुफल ।

मुद्गपर्णीः—ध्रुवसदा, शिम्बी, मार्जारगन्धिका, वनजा, रिद्धिणी, हस्ता, शर्यपर्णी, कुञ्जिका, कसिका, कारमुद्गा, वनमुद्गा, वनोद्गा, अरण्यमुद्गा, वन्या, सदा, शिम्बिपर्णिनी, शिम्बिपर्णी, वनजा, पराङ्गिका ।

मुष्कः—मोक्ष, मोक्षर, मोलीट, मोलिह, क्षारश्रेष्ठ, क्षारशृङ्ग, मुष्क, मुष्टि, मूषक, मोक्षर, मोलिह, मेहन, पाटली, विषापट, जटाल, वनवी, सुतीक्ष्णक, क्षारोपण, शिखरी, वननासी, घण्टापाटलि, मुष्क, धुदापाटलि, जटाछ, क्षाटल, घण्टा, पाटलि, क्षारदु, कालमुष्क, घण्टाक, तीक्ष्ण, घण्टक, काशस्थाली ।

मुस्ताः—मेघाख्य, मुस्तक, मुस्त, चालेय, परिपेलव, घन, कुरुविन्द, मेघनाम, अम्बुवाह, अम्बुशृङ्ग, तडिरवाच, वारिवाह, बलाहक, स्तनयित्तु, तोषद, तोयवर, अन्ननामक, गात्रिय, भद्रमुस्तक, धीमदा, भद्रक, भद्रा, राजकपेठ, कसेरक, वारिदनामक, नादेय, जीमूत, वृषध्वंक्षी, जलद, जलावह, विण्डमुख, नागर, वारिद, अम्भोद, नीरद, वराही, गुन्दा, मन्थि, भद्रवासी, वशेर, कोडेष्टा, कुरुविन्दाख्या, सुगन्धि, प्रन्थिला, हिमा, वन्या, कच्छस्था, गुण्डमन्थि ।

मूलकः—मूलक, हरिपर्ण, सृष्टिकाक्षार, नीलकण्ठ, नीलकन्द, महाकन्द, हस्तिदन्त, भूमिनाक्षार, रुचिष्य, हस्तिदन्तक, रामाङ्गक, कुरुकन्द, मूलाह, दीर्घमूलक, दीर्घपत्रक, मृत्क्षार, कन्दमूल, सित, रुचिर, शङ्खमूल, दीर्घकन्दक, कुञ्जर, क्षामूल, शिम्बीकल, हरिपर्ण ।

मूर्धाः—मधुरसा, देवी, गोकर्णी, दृढवृत्रिका, तेजनी, पीलुपर्णी, धनुलाला, धनुर्गुणा, सवा, मधुलिका, धनुःश्रेणी, कर्मरु, धनुःशाखा, धवा, मूर्वी, मधुश्रेणी, धनु, श्रेणी, सुराङ्गिका, देवश्रेणी, वृथकृत्वा, मधुस्रवा, अतिरसा, पीलुपर्णिका, दिव्यलगा, ज्वलिनी, तिका, गोपवल्ली, मोरटा, त्रिपर्णी, स्वादुरसा, स्निग्धपर्णी, अमरा, भिन्नदला, अमरी, मधुमती, वृथकृत्वा, गोकर्णी, लघुपर्णिका, दहनी, पीलुनी, रक्तला, सुलोपिता ।

मृगलिङ्गिकाः—गात्रिक, कर्कटक, वार्धट, तोदर, कन्दन, मृगविद्रुहदा, मृगलैङ्क ।

मृष्टकः—राजी, राजिका, तीक्ष्णगन्धा, रक्तिका, धुजनिना, आसुरी, क्षव, क्षुताभिजनक, कृमिक, कृष्णसर्पप, क्षुध भिजनन, कृष्णिना, कटु, आसुरी, काकोदुम्बरिका, रक्तसर्पप, अतितीक्ष्णा, मधुरिक, क्षवक, क्षुतक, ज्वलन्ती, ज्वलप्रभा ।

मेघशृङ्गीः—मेघवल्ली, चक्षु, मेघविषाणिना, नन्दीशृङ्ग, चक्षुर्वहल, मेघशृङ्गी, गृहद्वमा, बहलचक्षु, विषाणी, अजशृङ्गिका, विषाणिना, अजशृङ्गी, चक्रश्रेणी, अजगन्धिनी, मूर्वी, नेत्रीपथी, आवर्तिनी, चर्तिका, सर्पदंष्ट्रिका, चक्षुष्या, तिकदुग्धा, पुत्रशृङ्गी, कर्णिका, अक्षिभेज ।

यवानीः—दीप्यक, दीप्य, भूतिक, यवानिषा, यवाप्रज, समगन्धा, यवाहा, भूकदम्बक, मद्यदर्भा, क्षेत्रयवानिका, यवसाह, दीपनी, दीपनी, वातारि, यवत्रदीपनीय, शूलहन्वी, यमानिका, उमा, हया, तीमगन्धा, अजमोदिका, तीक्ष्णगन्धा, अमित्रिनी, भूमिदम्बक, अजमोदा ।

यवः—सितशूक, मेघ्य, दिव्य, अक्षत, कञ्जुकि, धान्यराज, तीक्ष्णशूक, तुरगप्रिय, शकु, हयेष्ट, पवित्रधान्य, शीतशूक, शितशूक, हयप्रिय, यवक, खेतशुद्ध, प्रवेष्ट, तुरंगप्रिय ।

यवासकः—यास, अनन्ता, बालपत्र, अधिकण्टक, धर्मूल, समुधान्त, दीर्घमूल, मरुद्भव, यवास, कण्टकी, बहु-कण्टक, छुदन्कुटी, रोदनिका, विपन्न, कण्टकाञ्जक, विपणिंका, गन्धारी, वासन्त, वनदर्भ, विवणर, तीक्ष्णकण्टक, सूक्ष्मपत्र, अतिकण्टक, खर, कच्छुरा ।

यष्टिमधुः—मधुयष्टी, यष्टि, यष्ट्याहा, मधुयष्टिका, यष्टिमधु, क्लीतका, मधुक, यष्टिमधुका, यष्टीक, यष्टिका, यष्ट्याहक, क्लीतक मधुस्रवा, मधुम, क्लीतन, क्लीतनीयक, मधुवली, मधूली, मधुरसा, अतिमसा, मधुरनाम, शोपापहा, सौम्या ।

यूयिकाः—बालपुष्पा, पुष्पगन्धा, गुणोज्ज्वला, गणिका, चारमोदा, शिखण्डी, स्वर्णयूयिका, यूयि, वासन्ति, बालपुष्पी, शिखण्डिनी, अम्बष्टा, मागधी, प्रहसन्ती, बालपुष्पिका, मृद्धानन्दा, पुष्पगन्धा, गुणज्वला, हरिणी, शङ्खयूयिका, सुगन्धिका, यूयितरुणी, सुगन्धा, मोदनी, बहुगन्धा, गजाह्वया ।

रक्तचन्दनः—ताम्रार, ताम्रसार, रजन, रक्तवार, कुमोद, रक्तपीज, कुचन्दन, छुदचन्दन, तिलपर्णी, पत्राङ्ग, रक्ताक, ताम्रवृक्ष, चन्दन, लोहित, लोहितचन्दन, अर्क, ताम्रसारक, रक्ताङ्ग, तिलपर्ण, तिलपर्णिका, पत्राङ्ग, पत्राङ्ग, प्रवालफल, भारद्वाजप्रिय, हरिचन्दन, शोणित, हिम, अर्धचन्दन ।

राजादनः—फलाध्यक्ष, राजन्या, क्षीरिका, राजफल, कपीष्ट, क्षीरवृक्ष, वृषदुम, निम्बवोज, मधुफल, माधवोद्भव, क्षीरी, शुद्धफल, धूपेष्ट, राजवल्लभ, श्रीफल, हृदस्कन्ध, क्षीरशुद्ध, क्षीरी, क्षीरशुद्ध, चर, प्रियदर्शन, शुकेष्ट ।

रास्नाः—नाकुली, सुरसा, रास्ना, सर्पगन्धा, पल्लवा, श्लेष्मण्डिका, सुगन्धा, गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, मुजनाक्षी, छत्राक्षी, सुवहा, रसा, श्रेयसी, रसना, एलापर्णी, रसा, सुगन्धिमूला, रसाव्या, अतिरसा, सुकरसा, युक्तरसा, पुत्तिरसा ।

रुहाः—गन्धमादनी, रोहिणी, वन्दा, वृक्षादनी, सेव्या, परपुष्ठा, पराश्रया, वृक्षरुहा, कीर्तितका, काङ्कुरा, वन्दाका, शेखरा, वन्दका, बलदक, नीलवल्ली, वन्दाकी, परवासिका, वशिनी, पुत्रिणी, वन्धा, पादपरुहा, शिखरी, तद्गोहिनी, कामवृक्ष, शैखरी, केशरुपा, तरुहा, तरुहा, गन्धनादिनी, कामिनी, तरुशूक, श्यामा, द्वुपदी, पदी, वृक्षभक्ष, नीलवर्गा ।

रोहिणीः—मांसरोहिणी, अतिरुहा, शृता, चर्मकया, वसा, प्रहारवल्ली, विरुहा, वीरवल्ली, अमिरुहा, मांसरोहि, कशामांसी, महामांसी, मांसरोहा, रसायनी, सुलोमा, लोम-करणी, चन्द्रवल्लभा, सुनि ।

रोहितकः—रोहीतक, रोहित, कुवात्मली, दाहीमपुष्प-संज्ञक, चद्राप्रसून, कूटशात्मलि, विरोचन, शात्मलिका, रक्तपुष्प, सदापुष्प, रक्त, रुच्य, लोहनाशन, लोहवाती, रक्तपसादन, रोही, पञ्जीहशत्रु, दाटिमपुष्पक, लोह, मांसदलन, यक्षद्वैरी, चलच्छद, लोहारि, रोहितेय, रोहिण, रोचन ।

लक्ष्मणाः—पुत्रजननी, रक्तविन्दुच्छदा, नाशिनी, सुखिनी, नागवनी, मर्मकमा, क्षेत्रदूती, सितारिही, कुमंतिका, सुखेता, कण्टकारी, दुर्लभा, महीपथी, सिता, सितकण्टारिका, श्वेता, सितारिही, सितशुद्धा, छुदवातांकिनी, क्लिप्ता, कटुवातांकी, क्षेवजा, कपटेश्वरी ।

लवङ्गः—देवकुसुम, भृङ्गार, शिखर, दिव्य, चन्दनपुष्प, श्रीपुष्प, वारिसम्भव, श्रीरंज, कलिकोत्तम, सुपिर, तीक्ष्ण, वारिज, शेखर, लव, प्रसून, लवङ्गक, लवङ्गकलिका, रुनिर, प्रहणीहर, तोयाभिप्रिय, वारिपुष्प, तीक्ष्णपुष्प, गीर्वाणकुसुम, दिव्यगन्ध, श्रीप्रसूनक, रुद्राक्षी ।

लवलीफलः—सुगन्धमूला, लवली, पाण्डु, कोमल-वल्कला, शिन्ध्या, स्कन्धफल ।

लशुनः—रशोन, उग्रगन्ध, महौषध, अरिष्ट, म्लेच्छकन्द, शूलकन्द, महाकन्द, वातारि, दीपेपत्रक, रसुन, गृध्न, रशोनक, कटुकन्द, राहृच्छिष्ट, राहृःसृष्ट, भूतघ्न, यवनेष्ट, शीतमर्दक ।

लाङ्गलकी—कलिकारी, लाङ्गलिकी, दीप्ता, गर्भवातिनी, अग्निजिह्वा, वदित्तिखा, वदित्तिवत्रा, लाङ्गली, हलिनी, गर्भवातिनी, विशल्या, अभिमुखी, हली, नफा, सीरी, इन्द्रपुष्पिका, शक्रपुष्पी, अनन्ता, कलिकारिका, लाङ्गलिका, गर्भतुम्, इन्द्रपुष्पिका, विद्युच्चाला, वृणद्धत्, पुष्पसौरभा, स्वर्णपुष्पा, लाङ्गल्या ।

लामञ्जाका—सुनाल, अमृणाल, लय, लघु, इष्टका-पथिक, सेव्य, नलद, अवदातक, सुनील, शीघ्र, दीर्घमूल, अवदाहक, लव, इष्टकापथक, जलाश्रय ।

लिकुचः—लकुच, क्षुद्रपनस, डहु, लकच, ऐरावत, अम्लक, निकुच, कपासी, दृढवल्कल, कार्दर्य, शालसूर, रथूलस्कन्ध, प्रन्थिमत्फज, शाल, दंड, शूर,

लोणिकाः—लोणा, लोणी, बृहलोणी, घोलिका ।

लोधः—लोध, तिरीटक, शायर, गालन, लोध, लोधक, लोधशृक्ष, मार्जन, तिन्दुक, लकडर्मा, शूद्र, शायरलोध, महालोध, घलिप्रिय, वानरावान, वलभय, भिल्लतरु, तिष्ठक, काण्डमीलक, शम्बर, दलिलोप्रक, तिलक, काण्डनील, हेमपुष्पक, भित्री, शायरक, तिरीट, तरु, शम्बरपादप, काण्डहीन, शृक्ष, तिल्वक ।

वंशाः—वेणु, यवकल, कार्मुक, त्वक्सर, कर्मार, त्वक्चिदार, तृणध्वज, शतपर्वा, मस्कर, तेजन, किलाटी, पुष्पातार, बृहत्तृण, किष्कुपर्वा, वन्य, तृणकेतुक, कण्डाल, कण्टकी, महावल, दृढग्रन्थि, दृढवत्र, धनुर्दुम, धातुप्य, दृढकाण्ड, धीचक, कुक्षिरन्ध्र, पट्टपदालय, कमठ, मृत्युमीज, वादनीय, फलान्तर, तृणकेतु, पर्वेयोमि, सुपर्वन, तृणराजक, बहुपर्वन, दुरावह, सुधिराख्य ।

घचाः—उग्रगन्धा, गोलमी, पट्टगन्धा, शतपर्वा, मंगल्या, जटिका, तीक्ष्णा, गालिनी, लेशशा, विजया, उग्र, ।

रक्षोघ्नी, वच्या, काङ्गा, भद्रा, क्षुद्रपत्री, इक्षुपर्णी, स्मारणी, बोधनीया, भूतनाशिनी, खेष्मघ्नी, तीक्ष्णपत्रा, जलजा, इक्षुपत्रिका ।

चटाः—रक्तफल, शुक्ली, न्यग्रोध, स्कन्धज, ध्रुव, क्षीरी, वैश्रवणावास, बहुपाद, वनस्पति, नन्दी, शुभ्र, बृहत्पाद, वैश्रवणालय, वधवणोदय, धृक्षनाथ, यमप्रिय, कर्मज, भाण्डीर, जटाल, रोहिण, विटपी, स्कन्धरुह, मण्डली, बृहच्छाय, महाच्छाय, शुक्ली, यक्षवास, यक्षतरु, पादरोहण, नील, शिफारुह, बहुपात्, जटिल, जटी, अवरोही, विटपी ।

वत्सनाभः—वाकोल, गरल, श्वेड, विष, दारद, सौराष्ट्रिक, शौक्लिकेय, ब्रह्मपुत्र, प्रदीपन, आह्वय, अमृत, गरद, गर, कालकूट, कसाकूल, हारिद्र, रक्तशृङ्गिक, नील, घोर, हालाहलद, हलाहल, श्यङ्गी, भुगर, जाङ्गल, तीक्ष्ण, रस, रसायन, जङ्गुल, जाङ्गुल, जीवनाघात, किपुल, किञ्चल, प्राणहर ।

वरकः—रथूलकण्ट, रथूलप्रियङ्गुक, रुक्ष ।

वरुणः—वर्हपुष्प, तिक्तवाक, कुमारक, उदमाण, सेतु-शृक्ष, श्वेतद, मारुतापह, वरण, कुमार, अश्वरी, सेतुक, सेतु, वराण, सिखिमण्डल, श्वेतशृक्ष, श्वेतद्रुम, साधुशृक्ष, तमाल, गन्धशृक्ष, श्वेतपुष्प ।

वातागः—वाताद, वातवैरी, नेत्रोपमफल, सुफल, वादाम ।

वार्ताकाः—कण्टग्रन्थाकी, कण्डाल, कण्टपत्रिका, निद्रालु, वार्ताकी, मांसलफला, घृन्ताकी, मशेटिका, चित्रफला, कण्टकिनी, महती, पट्टफला, मिश्रवर्णफला, सिंदी, नीलफला, रक्तफला, शार्ङ्ग्रेष्ठा, वृत्तफला, चपप्रियफला, हिङ्गुली, मण्डकी, दुष्प्रधर्विणी, वार्ता, वार्ताकु, वातिकुण, वार्ताक, शार्ङ्गविल्व, राजकूष्माण्ड, महाशृङ्गी, शाक, विल्वक, वार्तिक, वापिमम, घेर, घृन्ताक, वज्रण, अङ्गग, नीलघृपा, माण्डिका, नीलकण्डक ।

चालकः—चारितोय, हीवेर, वारिद, बाल, केशनामक, कवामोद, वरपिङ्ग, कुन्तल, वारिनामक, बर्हिष्ठ, वदीच्य,

केश, केशनामा, अम्बुनामक, केस्य, वज्र, ललनाप्रिय, कुन्तलोशीर, ह्रीवैरक, वारि, तोय, जल, अम्बु, आचमन, पिरु, पञ्च ।

वासाः—वाषक, सिद्धिणी, वृष, सिंहमुखी, आटरूपः, सिद्धिदा, मिषमाला, आटरूपक, वासिका, वास, रामरूपक, मातृसिद्धी, देवमाता, कसनोत्पादन, अटरूप, सिद्धीवृष, सिंहास्य, वाजिदन्तक, आमलक, वाशा, वाशिका, वाजी, वैद्यसिद्धी, वसादनी, वसदानी, कण्ठीस्त्री, शितपर्णी, सितकणी, वाजिदन्ता, वाजिदन्ती, नासा, पद्ममुखी, सिंहपत्नी, मृगेन्द्राणी, आटरूप, अटरूपक, सिंहासन, सिद्धमुखी ।

वास्तुकः—वास्तुक, क्षारपत्र, शाकराट्, यवमध्य, गौडवास्तुक, यवशाक, पांशुपत्र, शाकप्रेष्ठ, शाकवीर, कंकल, घनाघन, वास्तु, वसुक, हिलमोचिका, शाकराज, राजशाक, चक्रवर्ती, वस्तुक ।

विकङ्कतः—सुवावृक्ष, ग्रन्थिल, रवाट्टक, यज्ञवृक्ष, कण्टकी, व्याघ्रपाद, वैकङ्कत, वृत्तिर, कण्टहारी, किङ्किरी, खरदार, कण्टपत्र, स्रग्दार, मधुपर्णी, कण्टपाद, बहुफल, गोपघोटा, गोपघोण्टा, खट्वम, मृदुफल, दन्तश, यज्ञिय, त्रयपादप, पिण्डार, हिमक, पूतकिङ्किणी, पृथुवीन, सुधावृक्ष, पादरोहिण, रावग, वाकपाद, किङ्किरी, पृत, पिण्डरोहिणक ।

विडङ्गः—किमिन्न, भरमक, मोषा, कृमिकण्टक, कैराल, वेल्, केवल, तण्डुल, चित्रतण्डुला, विडङ्गा, असोषा, तण्डुला, जन्तुनाशक, क्रिमिकण्टक, रसायन, पावक, क्रिमिरिपु, जन्तुन, चित्रतण्डुल, क्रिमिशत्रु, गर्दभ, कृमिहृत्, त्रिना, तण्डुला, तण्डुलीयका, वाताति, जन्तुनी, मृगगामिनी, कैराली, गह्वरा, गह्वरा, वापाली, वरा, सुचिचवीजा, वृषणाशन, जन्तुहन्त्री, कृष्णतण्डुला, शूद्रतन्त्रा, चिचवीजा, घोषा ।

वृक्षाम्लः—निचिदीक, लुक, अम्बुवृक्षक, अम्बुल, अम्बुलीज, अम्बुलशक, लुकाम्बा, तिन्तीवीरु, शाकाम्ल, लुकफल, अम्बुपू, पूराम्ल, रक्षपू, चूडाम्ल, वीजाम्ल, फलाम्ल, अम्बुवृक्ष, अम्बुफल, रक्षाम्ल, श्रेष्ठाम्ल, सिचिदीकल ।

वृश्चिकालीः—विषधी, विषाणी, उद्रिका, बलिपर्णी,

नेमरोगहा, दक्षिणावर्तकी, कलिशा, आगमावर्ता, देवलाहुलिका, करभा, भूरिदुग्धा, कर्कशा, अमरा, स्वर्णपुष्पा, युग्मफला, क्षीरविषाणिछा, मासुरपुष्पा ।

वेतसः—नम्रक, वानीर, वञ्जुल, वञ्जुलप्रिय, अभ्रपुष्प, विटुल, रथशीत, निचुल, निकुञ्ज, परिग्याध, नादेय, जलवेतस, शाखाञ्ज, पुष्प, तोयकाम, अभ्रपुष्पक, नीलप्रिय, नदीकूलप्रिय, सुशीतल, व्याधिघात, कलन, मज्जरीनम्र, सुपेग, गन्धपुष्पक, नादेयी, जलकाम, मेघपुष्प, निकुञ्जक, जलौक, संवत, दीर्घपत्रक ।

शङ्खपुष्पीः—मेघा, चण्डा, सुपुष्पी, कम्बुमालिनी, शङ्खाहा, पीतपुष्पी, कम्बुपुष्पा, मलविनाशिनी, कम्बुमालिनी, विरीटी, भूलम्बा, शङ्खकुसुमा, शङ्खगालिनी, मांगल्य, कुसुमा, कम्बुपुष्पी, वनमालिनी, इतरा, सूक्ष्मपत्रा, सर्पाक्षी, रक्षपुष्पी, रक्षपुष्पिका, नीलपुष्पी, विष्णुकान्ता, सितपुष्पी, श्वेतकुसुमा, वनविलासिनी, तिलकी, चिरिण्टी, शंखमालिनी ।

शणः—माल्यपुष्प, वानक, कटुतेज, निपादन, दीर्घशाल, त्वक्सार, दीर्घशङ्ख, वगन, निशावन ।

शतकुसुमाः—शतपुष्पा, मिथि घोषा, शताहा, शताक्षि, शतपुष्पिका, कारवी, तालपर्णी, माधवी, शोकका, निशि, शिका, अतिच्छन्ना, अवाकपुष्पी, छात्रा, संचातपत्रिका, वज्रपुष्पी, सुपुष्पिका, शतप्रसूता, बहला, पुष्पाहा, पोतिका, शतपत्रिका, शालेय, सालेय, पोति, अहिच्छन्ना, तालपर्णी, मिथी, शालेया, शीतशिवा, शालीना, वजना, पोतिका, वनपुष्पा, भूरिपुष्पा, सुगन्धा, सूक्ष्मपत्रिका, गन्धारिका ।

शतावरीः—शतपरी, पीवरी, इन्दीवरी, शतमूली, महाशीता, मीरुनी, बहुसुना, मीरु, वरी, ऋग्यजुषा, नागयणी, अहेरु, अमीरु, अमीरुनी, महापुरुषदन्ता, रंजिणी, द्वीविशु, ऋगयता, काचनशरिणी, मद्रभक्षिनी, शतपरी, पीवरा, वृष्या, दिव्या, द्वीपिका, दरकण्टिका, सूक्ष्मपत्रा, सूक्ष्मपत्रिका, सुवरा, बहुमूला, शताह्वया, द्वीपशत्रु, स्वादुरसा, शताहु, लघुपर्णिका, आत्मगुभा, जलमूल, शतवीर्या, मधौषधी, मधुरा, केशिका, शतपत्रिका, विश्वरथा, वैष्णवी, वाष्णी, वासुदेवप्रियंवदी, दुर्मेना, तैलवल्ली,

अर्धकण्टका, सुपत्रिका, शतवीर्या, महाशतावरी, महोदरा, सहस्रवीर्या, सुखा, महापुरुषपदिका, वीरा सुरंगिणी, बहु-पत्रिका, लघ्वैरुणी, महावीर्या, फणिजिह्वा, महाशता, सुवीर्या, महती, अर्धकण्टिका, शतमूली, अभीरु, बहुपत्रिका, स्वादुरया, आत्मशल्या, शतनेत्रिका ।

शटीः—गन्धपलाशी, पलाशी, षट्प्रन्था, सुव्रा, गन्धमूलिका, गन्धारिका, गन्धवधू, पृथुपलाशिका, गन्धमूली, ग्रन्धिका, कर्पूर, पलाशसटी, शमी, गन्धशटी, कर्तुर, कर्तुर, सुगन्धासटी, सुगन्धा, गन्धमूला, गन्धोली, गन्धमूलक, गन्धसटी, गन्धमूल, जोग्मूल, कच्छोरा, हिमन्त्रा, हैमी, पट्टप्रग्नि, पलाशा, गन्धाली, हिमाप्रन्था, अम्लनिशा, सुगन्धमूला, गन्धोरी, शठिका, पलाशिका, समुदा, तूर्णी, दूर्वा, गन्धा, सठी, अम्वहरिद, सौम्या, हिमोद्धवा, श्रविड, कार्प, वेधमुख्य, दुर्लभ, वधू, चन्द्रणी, चन्द्रगन्धा, दुग्धिध्या, तूर्णी ।

शमीः—शंकुफला, शकुफली, केशहन्त्री, शिवाफला, मज्जल्या, शिवा, शुभदा, लक्ष्मी, पवित्रा, पापनाशिनी, सक्तुफली, शकुफला, सक्तुफला, वाननारि, तुंगा, कचारि-फला, केशमधनी, तपनतनया, ईशानी, इष्टा, शुभकरी, हविर्गन्धा, मेघ्या, दुरितदमनी, समुदा, शकुफलिका, वह्निर्गन्धा, समीर, ईशान, सुरभी, पापनाशिनी, पापशमनी, भद्रा, शंकरी, सुपत्रा, सुखदा, ईशान, शंकरा, शंकुफलिका, सुभद्रा, कचरिपुष्पा, दुरितशमनी, सुरभिरथ, शापशमनी, शान्ता ।

शालुकीः—गजभक्ष्या, गजभक्षा, हादिनी, राजप्रिया, महाकदा, वसा, मोचा, सुरभी, सुरभिरथा, शिल्ली, शिल्ली, सल्लकी, शिल्ली, शिल्लभूमिका, सुवहा, सुरभी, महेश्वरा, वाहरी, कुन्दुवरी, गजशाना, महेश्वरा, महारण, अश्वमूत्री, अश्वपुत्री, कुम्मा, अलफला, करका, सुसमोदा, सुगन्धा, सुरभिल्लवा, गजनालभा, हल्वदा, बहुलवा, गन्धवीरा, सुखवा, वनप्रगिका, नागवधू, सुप्रिष्टा, गन्धमूला, रसाला, जलति-काका, दादा, कुन्दुवरी, शल्ली, सल्लक, मुत्तामोदा, जलविक्रमा, ह्या, कुन्दरिका, ज्यलफला, छिन्नकदा ।

शाकः ककचपत्र, खरपत्रक, अतिपत्रक, महीरुह, श्रेष्ठकाष्ठ, स्थिरसार, गृहद्रुम, अनिल, अर्ण, महापत्र, शाकतद, शाकशृङ्ग, शाकाख्य, अर्जुनोपम, शरपत्र, अतिश्र, सोमराज्जीः—कृष्णफला, वाक्कुची, कुप्रनाशिनी, सोमवल्ली,

वेजानी, कालमेयिका, अवल्युज, सुवल्ली, करच्छद, चम्पे, चन्द्रलेखा, कृष्णा, पूतिफला, वांगुजी, देन्दवी, शूलोत्खा, किमित्री, सुवलिङ्गा,

शालः—सर्जक, सर्जक, कृष्णश्री, काम्बोजी, साल, सर्जकार्प, अश्वकार्प, गेष्वापहा, काम्बिता, शस्यशम्बर, उपमेत, दीर्घशाखा, शशिदेखा, लताशाल, शंकुतरु, शंकुवृक्ष, सर्ज, सर्जरस, शशिदेखा, श्व, वाटोवृक्ष, चीरपर्ण, शालकार्प, अजकार्प, कपायी, ललन, गन्धशृङ्ग, वंश, शालनिर्घास, दिव्यशा, सुरेष्टक, शूर, यक्षधूप, सिद्धक, जरणद्रुम, ताद्वैप्रसव, धन्य, दीर्घपर्ण, कुक्षिक, कौशिक, अश्वकर्ण, चिरपर्णी, शाल-निर्घास, देवधू, विल्ला, वह्निवल्ग, फलकल, काल, फलयज, सर्वरप, बहुरूप, धूपन, शालनिर्घास, सर्ज, धूनक, शालघार, शास्त्रेष्ट, सर्जमणि, फलकशोद्धव, ललन, देवैष्टशीतल, शालरस, सुरभी, सर्जनिर्घासक, सुरधूप, कलकलज, महारूप, क्षण, शालरस, क्षणक, सर्जक, कपाय, चिरपत्रक, शूर, कालकूट, रजोद्धव, वल्लीवृक्ष, शाल, गन्धशृङ्ग, वंश ।

शालिपर्णीः—शालपर्णी, स्थिरा, सौम्या, त्रिपर्णी, अतिगुहा, धुवा, पीवरी, विदारिगन्धा, अंशुमती, दीर्घमूला, सुपत्रिका, गुहा, दीर्घपर्णी, दीर्घपत्रा, सुदला, सुपत्री, कुमुदा, सुपर्णिका, दीर्घपत्रिका, वातघ्नी, पातिनी, तन्वी, सुधा, सर्वाशुकरिणी, शोकघ्नी, सुभगा, देवी, शोधघ्नी, निधला, श्रीदिपणिका, सुप्ला, सुरुपा, शुभपत्रिका, सुपर्णी, शालिपर्णी, शालिदला, विदारी, शास्त्रपर्णी, एरूमला, अस्तमती, शालानी, शालिका, तन्वी, कीटविनाशिनी, कुमुदा, पित्तला ।

शालेयः—मधुरिका, सिता, माधुरी, तापसप्रिया, गन्धाधिका, चोषवती, सुगन्धा, छत्रा, त्वाहारा, शालिन, मिथेया, मधुरा, मिसी, शीतशिवा, सुपुष्पिका, शतप्रसूता, पुष्पाद्या, मिशी, घोषा, पोतिका, अद्रिच्छत्रा, माधवी, कारवी, संघातपत्रिका, अवाकपुष्पी, तालपर्णी, मंगल्या, शतपत्रिका, वनपुष्पा, भूरिपुष्पा, मधुरी, शतपुष्पा, मिथेया, वनया, संहितपुष्पक, वन्या, सुरसा, तालपर्णी, तालात्री, तालपत्रा ।

शास्त्रमलीः—अपरणी, शास्त्रमलि, शास्त्रमली, शास्त्रमलि, पिच्छला, पूणी, मोचा, स्थिरायु, तूलिकला, दुरादहा,

केश, केशनामा, अम्बुनामक, केश्य, वज्र, ललनाप्रिय,
कुन्तलोशीर, हीवेरक, वारि, तोय, जल, अम्बु, आचमन,
पित्र, छच ।

नेयरो

सर्वप

चासाः-वासक, सिंहपर्णी, वृष, सिंहमुखी, कण्टकद्रुम,
सिंहिदा, मिषमाला, आटरूपक, वासिष्ठद्रुम, दीर्घाष्ट्र,
मातृसिंहि, वैद्यमाता, कसनोत्पाद, दीर्घपादपा, कवला, वेष्टक,
वाजिदन्तक, आमलक, चर्वरस, मोचनिर्वाषक, चाजोविका,
वसादनी, रघुदा, चर्वरस, मोचनिर्वाषक, चाजोविका,
वाजिदन्तक, चर्वरस, मोचनिर्वाषक, चाजोविका, पञ्चपर्णी ।

अक्षिषापाः-वृष्णसारा, पिपला, युगपत्रिका, पिच्छला,
धूम्रिका, वीरा, कपिला, अयुरक्षिषापा, अयुर, पिच्छला,
युगपत्रिका, कालानुसार्य, श्यामा, धीरा, मण्डलपत्री,
तीक्ष्णधूमक, सहाय्यामा, तीक्ष्णसारा, कृष्णक्षिषापा ।

शिष्टः-शोभाजन, शिष्ट, तीक्ष्णगन्ध, अक्षीव,
सुभाजन, सोभाजन, सौभाजन, विद्रधिनाशन, मधुयुजन,
हरितसार, शाकपत्र, शिष्टक, सुपत्रक, उपदेश, शमादेश,
कोमलपत्रक, बहुमूल, देशमूल, तीक्ष्णमूल, उप, कामिनीश,
शोभतक, शोभाजन, सौभाजन, मोचक, तीक्ष्णगन्ध, सुतीक्ष्ण,
वनपत्र, श्वेतमरिच, कटुकन्द, गन्ध, गन्धक, कार्श्वक,
मेचर, आक्षीव, स्त्रीचित्तहारी, द्रव्यनाशन, कृष्णगन्धा,
मूलकपर्णी, मोच, तिलशिष्ट, जलप्रिय, सुखमोद, कृष्णशिष्ट,
चलुषा, रुचिराजना, अवदंश, सुखभङ्ग, श्वेतक, मधुशिष्टक,
रक्तक, दंश ।

शिरीषः-भण्डी, भण्डी, कपीतन,
शुक्रपुष्प, शुक्रतर, स्रुतपुष्प, शुक्रप्रिय, कर्णपूर, शुक्रद्रुम,
भण्डिर, स्रुतपुष्प, विषघाती, विषनाशन, शीतपुष्प,
भण्डिक, स्वर्णपुष्प, शुक्रैष्ट, वर्हपुष्प, विषहन्ता, सुपुष्पक,
उद्यानक, शुक्रतर, लोमशपुष्पक, कपीतक, कलिद्र,
श्यामल, शंखिनीफल, मधुपुष्प, वृत्तपुष्प, शिखिनीफल, ह्रवग,
श्यामवर्ग, शंखिनीफल, स्रुतपुष्पक, भण्डिक ।

शुण्ठीः-महोषधी, विश्वा, शुक्रार्द्र, विश्वमेपज,
मेपज, श्वेतवेर, विश्व, कफागि, नागर, शुण्ठी, इन्द्रमेपज,
महोषधी, विश्वोषधी, कटुपत्रि, कटुभद्र, शुण्ठ्य, कट्टरकटक,
सौवर्ण, आर्द्रक, शोषण, नागरह, आर्द्रज, औषध, ऊपण,
वट्टरणक, दूषण, औषध ।

शृङ्गाटकः-जलफल, त्रिकोणफल, जलसूचि, जलकण्टक,
जलवल्ली, जलाशय, जङ्गकन्द, शृङ्गाटिका, शृङ्गाट, शृङ्गरह,

शृङ्गकन्द, शृङ्गमूल, त्रिकोट, त्रिकट, त्रिक, वारिकण्टक,
वारिकुञ्जक, शुक्रदुग्ध, संधाटिका, क्षीगुक्र, विषाणी ।

शैलेयकः-शैलेय, शैलाख्य, पलित, वृद्ध, बालानुसार्य,
रथविर, शिलादद्रु, शिलापुष्प, शिलोद्भव, अम्बुपुष्प,
गिरिपुष्पक, गृह, जीर्ण, शिलोथ, कालानुसार्यक, शैलक,
शिलाख्य, शिलाभव, शिलज, शिलोथ, शैलज, शिलप्रसूत,
सुभग, शैलक, कालानुसारिवा, शीतशिव, शिलावन,
शैलज, शीतल, शैल, शिलेय ।

शैवलः-शैवाल, जलनीशी, जलज, शेषान, शैवाल,
शिवल, शेषाल, जलनीलिका, जलनील, अम्बुचामर,
जलकुन्तल, मञ्जुल, शैवाल, शेषार, वारिचामर, सलिलकुण्डल,
हृदपर्णी, अम्बुताल, जलशुक्र, जलाजन, अरक, जलक्षेप,
कावार, जलशृङ्गा ।

श्लेष्मातकः-बहुवार, उद्दाल, बहुवारक, शैल,
पिच्छल, भूतशृङ्ग, लघुश्लेष्मातक, लघुशैल, लघुशीत,
लघुपिच्छल, भूकुर्युदार, क्षुद्रश्लेष्मातक, श्लेष्मातक, शत्रु,
गन्धपुष्प, शापित, बहुवारक, उद्दालक, भूतशृङ्ग, बहुवार,
द्विजकुत्सित, शीतक, शाटक, कुर्युदारक, भूतद्रुम, श्लेष्मात,
शीतर, शैल, लघुभूतद्रुम, सूक्ष्मफल, बाहुवीर ।

सप्तपर्णः-शुक्तिपर्ण, विशालत्वक्, सारद, विषमच्छदा,
विद्र, विनद, विन्ध्याक, सारद, देवशृङ्ग, दलेगन्धि, शिरोहजा,
ग्रहनाश, सृतिपत्र, ग्रहाशी, ग्रहनाशन, गुच्छपुष्प, शुक्तिपर्ण,
सप्तपर्णक, अयुक्छद, अयुगच्छद, युगपर्ण, सुनेच्छद,
वृहत्त्वक्, बहुपर्ण, शालमलिपत्रक, मद्गन्ध, गन्धपर्ण,
सप्तच्छद, छत्रपर्ण, शरदिपुष्प, गृहपुष्प, सुपर्णक, सप्तवर्ण,
पत्रवर्ण ।

समझाः-लज्जा, शमीपत्र, अञ्जलिकारिका, रक्तगद्दी,
लज्जा, नवस्कारी, ताम्रा, खदिरका, कन्दिरी, रथका,
खदिरपत्रिका, संचोविनी, प्रसारिणी, समपर्णी, खदिरा,
गण्डमालिका, लज्जिका, रथशैलज्जा, अम्बुश्विनी, ताम्रमूला,
रक्तमूला, रथशैल, महाभीता, वक्षिनी, महोषधी, गन्धकारी,
स्पर्शसंकोचपत्रिका ।

सर्वपः-कटुकस्नेह, भूतम, रक्षिताफल, सप्तगन्ध,
ग्रहम, तन्तुम, कदम्बक, सरिषप, कदम्बद, विन्धवट,

षडम्ब, तन्तुक, ऋदुस्नेह, राजक्षवक, शुभ्रगौर, सिद्धार्थ, भूतनाशन, कटुक, रक्षोघ्न, राजिकाफल, तीक्ष्णक, दुराघर्ष, सिद्धप्रयोजन, सिद्धसाधन, सितप्रपैप, कुष्ठनाशक ।

सातलाः—सतला, सारी, विदुला, विमला, मला, बहुफेना, चर्मकपा, सारा, भूरिफेना, अमला, फेना, शैता, विपाणिका, स्वर्गपुष्पी, पुत्रघना, महालिका, चित्रघना ।

सारिवाः—सारिवा, अनंता, गोदी, उत्पलसारिवा, भद्रवल्ली, नागजिह्वा, कराला, भद्रवल्ली, गोपवल्ली, सुगन्धा, भद्रा, श्यामा, क्षारदा, गोपकन्या, गोपा, प्रतानिका, लता, आस्कोता, काष्ठसारिवा, गोपवधू, भवत्सारिवा, कृशोदरी, श्वेता, स्फोट, चन्दना ।

सिद्धितिकाफलः—मुष्टिप्रमाण, यदर, सेव, सेवित, सेवि ।

सुधाः—स्वही, समन्तदुग्धा, नागदु, बहुदुग्धिका, भद्र, महाशुक्ल, वज्रा, सिद्धुण्ड, शीतुण्ड, दण्डशुक्ल, स्तुक्, स्तुपा, स्तुहा, वज्र, वज्रदुग्ध, वज्रदुग्ध, वज्रकण्टक, शुद्ध, शुद्धा, शुद्धि, गुला, बहुगुल, कृष्णखार, निरिग, पत्रिका, नेत्रारि, शाखाकण्ट, सेतुण्ड, सिंहहृण्ड, वज्री, काण्डशाख, कुलिशदुग्ध, स्वही काण्डशोहक, स्वर्णन, नागदु, निरिगपत्रक, गण्डीर, वातारि, वज्रश, क्षीरकाण्डक, व्याघ्रनख, दण्डशुक्ल, बहुगुला, त्रिधारक, समन्तदुग्ध ।

सुनिपण्णकः—सितिचार, सितिमर, स्वस्तिर, सुनिपण्ण, श्रीवारक, सूचिपत्र, पर्णाफ, कुर्कुट, सिन्धी, विदुष, चञ्चु, सुतपत्र, सितिचार, सच्याराय, सुच्यार, सूचिपत्रक, वधु, कुरण्ड, कुण्ड, सूचिदल, श्वेतामर, मेधाकृत, ग्राहक, सितिचार, सितिन्नर, शितावरी, कुण्ड, श्वेताम्बर, पर्णक ।

सुरसाः—तुलसी, वैष्णवी, वृन्दा, सुगन्धा, गन्धहारिणी, अमृता, पत्रपुष्पा, पवित्रा, सुखलरी, सुभगा, तीमा, पावनी, विष्णुवटभा, सुरेज्या, कायरथा, सुखदुग्धि, सुरभि, बहुपत्री, मजरी, हरिभिया, अपेतराक्षरी, श्यामा, गौरी, त्रिदशमजरी, भूतनी, भूतपत्री, पर्णास, कठिञ्जर, कुटेरक, पुण्या, माववी, सुखलरी, प्रेतराक्षसी, सुनरा, प्राम्या, सुभगा, बहुपत्री, देवदुग्धि, विष्णुवटनी, मालश्रेष्ठा, पत्रपत्री, लक्ष्मी, श्रीकृष्ण-बलभा, पूतपत्री ।

सोमराज्जीः—कृष्णफला, दाकुची, कुष्ठनाशनी, सोमवल्ली, पूतिफली, वैजानी, कालमेयिका, अवलुज, सुवल्ली, गोमवल्लिका, कालमेयी, चन्द्रलेखा, कृष्णा, पूतिकला, वांगुजी, वाकुजी, सोमराजिवा, ऐन्दवी, शूलोत्खा, किमित्री, सुवलिङ्गा, सिता, सिताररी, चन्दी, सुप्रभा, कुष्ठहन्त्री, काम्बोजी, पूतिमधा, वल्लुजा, चन्द्रराजी, त्वग्दोषापहा, काम्बिदा, अवलुजा, चन्द्रप्रभा, पूतिगन्धिका, सुपर्णिका शशिदेवा, सोमा, कुष्ठनी, कण्डूनी, अतिसर्वचा, इन्दुलेखा, चान्दी ।

स्थोणेयकः—वर्हिशिव, वर्हिचूड, भानादीया, भान्ती, हरित, कीरवर्णक, पुष्पूर, मयूरचूड, शोर्णरोम, शोर्णोमक, शुक्पुच्छक, शुक्पुच्छ, शुक्विच्छ, विकीर्णरोम, विकच, स्थोणेय, विकीर्णराज, शुक्मर्ष, शोर्णरोमक, वर्हिचूड, शुक्पुच्छ, विकर्ण ।

रूपक्षः—लता, षोडशपर्वा, मरुन्माला, लतामस्ता, लक्ष्मिका, रामुद्रान्ता, कुटिला, देवपुत्रिका, देवपुत्री, देवी, पृष्ठा, पिशुना, रघु, वधू, लक्ष्मिका, लक्ष्मिका, ब्राह्मी, मनु, मालालिका, मालानी, लक्ष्मी, पद्मगुप्तिरसा, समुद्रकान्ता, मरुत्, माला, कोटि, वर्णा, लक्ष्मिका, वर्णलक्ष्मिका, तरुकर, चोरक, चण्ड, अलक, मालाली, षोडिका, पद्मगुप्ति, निगलिया, त्रिपाणिका, सुगन्धा, सुकुमारा, भूतलिका, पद्मगुप्ति, नखपुष्पी ।

हंसगदीः—कीरमाता, त्रिपादी, मधुलवा, सुवहा, हंसपदी, गोधाधि, त्रिकला, गोधापदिका, हंसवती, चित्रपदा, हंसपदिका, हंसाङ्गि, रक्तपादी, त्रिपदा, घृतमंडलिका, विश्वेश्वि, त्रिपदिका, त्रिपदी, कीटमारी, कर्णाटी, ताम्रपादी, विकान्ता, हेमपादी, ब्रह्मादनी, पदात्री, शीताजी, सूतपादिका, सन्नारिणी, पदिका, प्रहारी, कीरपादिका, धर्ताराष्ट्रपदी, गोधापदी, त्रिपादिका, रक्तपदी, ताम्रपात्री, विकान्ता, कीलपादिका, विपादी ।

हृषुषाः—विपुषा, विष्ठा, हृषुष, विष्णुगन्ध, विगन्धिका, अतिगन्धिका, विष्ठा, विष्णुगन्ध ।

हरिद्राः—निशादा, पीता, युवती, हेमरागिणी, काञ्चनी, क्षणदा, गौरी, मेरुनी, वरचर्णिनी, यामिनी, क्षपा, तमस्विनी, गन्धपलाशिका, सुवर्णवर्णा, मंगलप्रदा, कावेरी, उमा,

वर्णवती, पिङ्गा, पीतवाङ्महा, हेमरागी, रमंगवासा, चर्पणी, पीतिका, रजनी, निशा, बहुला, वर्णिनी, रात्रिनामिका, हरित, सुवर्ण, शिवा, दीर्घरागा, वराङ्गी, अनेष्टा, वरा, वर्णदात्री, पवित्रा, हरिता, विपन्नी, पिङ्गा, मङ्गल्या, मङ्गला, लक्ष्मी, भद्रा, शिफा, शोभा, शोमना, सुभगाह्वया, इयामा, जयन्ती, ज्यरान्तिका, योपित्तप्रिया, हृदिलासिनी, कृमिनी, निशाख्या, वर्णविलासिनी, हलदी, रजनी, वारवर्णनी, हलदिका, भद्रलता, रङ्गिणी, दीर्घाङ्गा, रजिनी, जगन्मता, रजनी-नाम्नी, पिङ्गला ।

हरीतकीः—अभया, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, हेमवती, अव्यया, चेतकी, त्रेयसी, शिवा, वयस्था, विजया, जीवन्ती, रोहिणी, सुधा, बल्या, रसायनकला, पावनी, प्रमथा, शाका, रुद्रप्रिया, वनतिका, शुक्लवृष्टा, सुषोम्न्या, जया, चेतनकी, प्रपथ्या, जीवप्रिया, जीवनिता, भिषग्वरा, भिषक्प्रिया, जीवन्ती, प्राणदा, जीव्या, देवी, दिव्या, हिमजा, गिरिजा, नन्दिनी, रोहिणी, वैजया, चेतनिका, कायस्था ।

हरेणुः—रेणुका, कपिला, कौन्ती, भम्भगन्धिका,

कृतान्ता, राजपुत्री, नन्दिनी, सरनादिनी, द्विजा, अभीष्टा, मतकरी, वरसुडो, वरा, कान्ता, महिला, हिमा, रेणु, हरेणुका, सुपर्णिका, पाण्डुपुत्री, शिशिरा, शान्ता, इत्ता, हेमगन्धिनी, घर्णिणी, कपिलोमा, हेमवती, पाण्डुपत्नी, राजपुत्री, कपिलोला, हेमवती ।

हारिद्रः—मेवाभ, प्रियठ, बहुकल, हरिद्रुम, मृद्वल्लभ, धाराकदम्ब, धूलिकदम्ब, प्रावृष्य, महाकदम्ब, केतराव्य, सुपुष्प, पद्मदाप्रिय, पुलही ।

हिङ्गुः—शूलहिङ्गु, वाङ्गिक, रामठ, जव, जङ्ग, सहजवेधि, जन्तुप्र, सूपधूपन, हिङ्गुक, रमठ, पिण्याक, वाङ्गी, गृहिणी, मधुरा, केसर, जातुक, रामठधनि, शूलहन्, वम्रगन्ध, भूतारि, जन्तुनाशन, रक्षोघ्न, उभवीर्य, अगूङ्गान्न, जरण, भेदन, दीप्त, शूलनाशक, अत्युष, भूतनाशन ।

हिङ्गुपर्णीः—नालीहिङ्गु, पलाशाख्य, जन्तुका, वशरत्री, पिण्डाहा, सुवीर्या, हिङ्गुनाडिका, वेणुपुत्री, पिण्डा, हिङ्गु, शिवादिका, पलाश, वेणुपुत्री, शेषादिका, पिण्डादिङ्गु ।

पञ्चविंशत्या भाषाणां संक्षिप्तसंज्ञाः ।

Abbreviations of the names of twenty-five languages

| | | | | | | | |
|------|------|------|----------|-------|------|------|-----------|
| A. | ... | ... | Arabic | M. | ... | ... | Marathi |
| B. | | | Bengali | Ma. | ... | | Malayalam |
| Bi. | ... | ... | Bihari | P. | | ... | Persian |
| Bu. | | | Burmese | Pu. | ... | ... | Punjabi |
| C. | | ... | Canarese | S. | ... | ... | Sanskrit |
| Cu. | | | Cutchi | Sinh. | ... | | Sinhalese |
| E. | ... | | English | Si. | ... | ... | Sindi |
| F. | | ... | French | T. | | | Tamil |
| Guj. | ... | | Gujarati | Te. | ... | ... | Telugu |
| Ge. | | ... | German | Tu. | | ... | Turkey |
| H. | | ... | Hindi | U. | | ... | Urdu |
| I. | | ... | Italian | Ur. | ... | ... | Urvi |
| L. | ... | | Latin | | | | |

दरकसंहिताभितोद्भिज्जद्रव्याणां पञ्चविंशत्यां भाषासु नामानि

The Nomenclature of the Plant Substances in twenty-five languages

| S. | अङ्ग्रेज | अगुरु | अग्निमन्थ | अङ्ग्रेज |
|-----------------------|--|---|-------------------------------|-----------------------------------|
| A. | Gawz | Ud, Udehindi, Ud en nadd, | | Alangium |
| B. | अखरोट, अङ्गुर | अगुरु, अगर | | अङ्गुल, अङ्गुरा |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Siekhyasi | Akyau | | |
| C. | अकोट्ट | अगर | तमिः | अङ्गोल |
| Ca. | अङ्गुर | अगुरु | अङ्गुर | अङ्गुर |
| E. | Wall nut tree | Eagle wood | Wind Killer | Alangy |
| F. | Noyer | Agalloche, Boisd'aloës, Boisde calambac | | Alangier |
| Guj. | अखरोट | अगर | अरणी | अङ्गोल |
| Ge. | Echte walnuss, Agallochabaum Walnusse Alderholzbaum | | | Angolanibaum |
| H. | अखरोट | अगर | अरणी, टेकर | अङ्गोल, टेकर |
| I. | Noss romane Folmba, Aloe delle Lndle | Calambucco, Folmba, Aloe delle Lndle | | Alangio |
| J., Javanese regin L. | Aquilaria Agallo- cha, (Roxb) | | Clerodendron Phlomoides L. | Alangium lamarkii (Thw' E num) |
| M. | अङ्गुर | अगर | एरण | अङ्गोल |
| Ma. | | | सिद्धत्तलि | अङ्गुलम् |
| P. | Charmaghy | Agar, Agrehindi | | |
| Pu. | अरेवारी, अखरोट | | | विसगर |
| Sinh. | | | अरमत् | ईशदा |
| Si. | | कीह | | |
| T. | अकोट्ट | अगर | सिद्धत्तलै | अङ्गुलम् |
| Te. | अकोट्ट | अगर | तेक्कलि | नङ्गुलम् |
| Tu. | Ceviz ag | Yalan öd ag Hind öd ag, Nasr ag | | Alang |
| U. | | Agar | | Ankol |
| Ur. | | | अयरिनि, होन्तरि | अङ्गुलो |

अर्जुन

३२।

अतसी

| अर्जुन | अर्जुन | अर्जुन | अर्जुन |
|--------|---------------------------------------|--------------------------|----------------|
| S. | अजगर्भ | अजगर्भ | अतसी |
| A. | Mukilljaka | Karafs, karafs Nabati | Kaltan, Malsag |
| B. | चुनदूध | रांछुनी, चनु | गालीना |
| Bi. | | | चितना, तेलि |
| Bu. | | | |
| C. | विभिन्न, गुग्गुलु, धूप, लोमान | | अलसि |
| Cu. | अजगर्भ (वेद्य) | अजगर्भ | अतसी |
| E. | White Dammer | Celery | Linseed |
| F. | | | |
| Guj. | लफेदशमर | बाफली | अलसी |
| Ge. | | | |
| H. | डुफेद शमर | डुफ | अलसी |
| I. | | | |
| L. | Vateria indica L. | Pawcdanum grande (Bc) | अलसी |
| M. | अजगर्भ (वेद्य) कुण्डुलकम्, पान्दम् | बाफली | अलसी |
| Ma. | पेरुपायनै, वेल्क | | |
| P. | Buejhudan | Duku | Bazarug |
| Pu. | | | |
| Sinh. | | | |
| Sl. | हाल | | |
| T. | कुण्डिल, त्वम् अटम्, कुण्डुलकम् | | अलसि |
| Te. | तेलुगुगुलु, दूधदगर | | अतसी |
| Tu. | | | |
| U. | Guggul | Kereviz | Keter |
| Ur. | | Ajmod | Alasi |
| | | | पेसु |

| S. | अतिवला | अतिविया | अन्तः कोटरपुष्पी | अपामार्ग |
|-------|---|---------------------------------------|--|-----------------------------|
| A. | Khitmi hindi Deishar | | | Nuaym, Mahbut, Hhamshad. |
| B. | पोटारी | | बीवातारक, | अपांग |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Bonkhoe | | | Kivalamon |
| C. | श्रीमुद्दे, गिडुंगि, तुत्ति | अतिवजे | समुद्रवाली, समुद्रसेगे | उत्तरेग |
| Cu. | सापटो | अतिमिन्न | समदरखोस | अघाडो |
| E. | Common mallow | Indian Atees | Elephant creeper | Rough chaff tree |
| F. | Fausse guima- uve Satinee Althoea | | | Herbe d' Inde |
| Guj. | सपाड, नांगरी | अतिविपनी हली | वरघारो | अनेडो |
| Ge. | | | | |
| H. | कंबी | अनीस | समंदरखोस | चिचडा, चिचिडा |
| I | Fiore di dodici ore | | | Sciamitro |
| L. | Abutilon indicum [G. Don] | Aconitum hetero- phyllum [wall] | Argyreia speciosa [Sw. cet] | Achyranthes aspera L. |
| M. | पेटारी, मुद्रा | अतिविप | समुद्रशोक | आषाडा |
| Ma. | तुत्ति, मुद्रा, पिटिकपट्ट | | समुद्रयोगम्, समुद्रप्याल, समुद्रस्तोम् | काटालनी |
| P. | Darakhtesha- nah. | Vajjeturki. | | Kharevazhu |
| Pu. | | बोनागा, पत्ति | | |
| Sinh. | अनोदगडा | | | कुट्टी, कुट्टी |
| Si. | सपाटो | | | करलमो |
| T. | नङ्गुट्टि, पेडुडुट्टि, टुट्टी | अतिविद्यम् | कंदरवालै | |
| Te. | अडविनेण्ड, पेडुवेण्ड | अतिवस | चमुदिरप्पाकै, पेयमुन्नै पालमुद्र, कोक्किट, सन्दपोड | नायुरिक्कि अपामार्गमु |
| Tu | Oylen cic Yalan Gullhâtem | | | Saman ag |
| U | Kangbi | | Samandrasotha | |
| Ur | नाको, दोनो | | विडो, मोन्डा, दोरके. | |

| S. | अर्जुन | अम्लिका | अम्लिका | अम्लिका |
|------|----------------------------|---------------------------|---|--|
| A. | | Abuta | Hhamdid Hhamidah hhullyah | umbli Tamar hindi, Hhawmar |
| B. | | अकानापी, नीमुका | अमुल, अमुलवाक | मुलि, तिन्तिरी, अम्लि |
| Bl. | | | | magi |
| Bu | | | | आम्ल, हुणमे, हुलि |
| C. | | पाडावली | पुलपुची, सयु | आम्वली |
| Cu. | | बंगजीवल | खाटखटुम्बो | |
| E. | Small Asparagus | False pareira brava | Yellow wood sorrel | Tamarind Tree |
| F. | | Fanx pareira brava | Trefle, Surelle Jaune, ixalode corniculee, petit | Tamarineer, Tamarin |
| Guj. | पूरुलकण्टो | वेणीवेल, करंडियु | खाटीचांगेरी | आंगली |
| Ge. | दरियाई गजवेल | Fal sche parecraw | Gehornter Sauerklee, Gelber sauerklee | Tamarinde Tamarin denbaum |
| H. | | पाटी, दुःखनिर्विपी | तिनपत्तीआ, अम्ल | इमली |
| I. | | Abuta | Ossalide Carnicu- lata, Erba lujula, panucco. Triloglio ace-toso | Tamarindo dolce Tamarindzio Tamarindo |
| L | Asparagus Dumosus (Bak) | Cissampelos pareira L. | Oxalis Corniculata L. | Tamarindus indica L. |
| M. | | पहाडवेल | अंबुटी | चिंच |
| Ma. | | रुडुवेली, पडुवेली | पालीयारला | अमलम, चुकम, पुलि |
| P. | | | | Ambalah, Tamarihindi |
| Pu. | | वेल, कटोरी | अम्लिका, अम्ल | अम्लि, इलिम |
| Sinh | | वेणीवेल | टिनेम्बुलम्बिलिया | महाशियाम्बाला |
| Si. | | कटोरी | | |
| T. | | अप्पटा, चिना, वटनिरुप्पी | पुलियाराइ | आम्लिम, तिन्तिडम, अमिलिगे |
| Te. | | अडिविंकतीगे, पाटा | पुलिचिन्ता | आम्लिका, चिंचा |
| | | विसवोधि | | कामु, तिन्तिगी |
| Tu. | | Abuta | Eksi, yonca | Temir hindi ag. Hind hur masi Temarhindi ag. |
| U. | | | | |
| Ur. | | ओकानो चिन्ति | | कोण्या, ओम्लिका, तिन्तिडी |

| S. | अम्लिकाकन्द | अरिसेद् | अर्क | |
|-------|-------------------------------|-------------------------------|--|-----------------------------|
| A. | | | Ushar, Ashur | Furanj misk |
| B. | | सफेदबुल | आंकडा, आकन्द | रामतुलसी |
| Bl. | | | मूर्तकन्द | |
| Bu. | | Tanaung | Maioh, mayo | |
| C. | नीरबट्टे, ताविनेरे, इनासर | नाथिबेल, विलिजालि | एफ्फे अर्क | |
| Cu. | अमरियो कन्द | हरसुं | ।क | नारातुलसी |
| E. | Betel yam | White babool | Mudar | Shrubby basil. |
| F. | | | Asclepiade | Basil deceylone |
| Guj. | आंवलियो कन्द | हरमो बावल | आकडो | रामतुलसी |
| Ge | | | groose mudarpflanze | |
| H. | | रीञ्ज | मदार, आक | दवना |
| I. | | | Asclepiode, Beidelossa | |
| L. | Dioscorea oppositifolia L | Acasia leucophloea (willd) | Calotropis gigantea (R B R.) | Ocimum gratissi mum (L.) |
| M. | माण्डा | हैवर | रुई | रामतुलसी |
| Ma. | | वेल्बेलम्, वेल्बेलम् | दिनेशम, एरिकु | रामतुलसी |
| P. | | | Khark | Palangmishk, |
| Pu. | | रेरु, सफेद कीकर | | वानेजरी, वन्जेरे |
| Sinh. | हिरिताल | अंदार | मुदुवार | गासताल, गसताल |
| Si | | | लैकोरपा | |
| T. | वेरिरलैवल्ली | पट्टियम्, वेल्बेलम् | अरुचुनम्, एरुक्कम् चडावेदम्, अरुक्कम् | एलुमिचण्डुलसी, पेरुंडुलुचि |
| Te. | आंग्तेगलु, अडविदुम्मट्टिगे | तेल्लुम्म | जिल्लेडु, मन्दारमु | निम्मतुलसी, रामतुलसी |
| Tu. | | | Kuzuotu | |
| U. | | | Ak... | Ramtulasi |
| Ur. | गौरोषि, पित्तल | गोइरि | आंकडो, ओर्को, कोलुडी | रामतुलसी |

| S. | અર્જુન | અવાકપુષ્પી | અશોક | અક્ષયવૃક્ષ |
|-------|------------------------------|---------------------|-------------------------------------|------------------------------|
| A. | | | | |
| B. | અર્જુન | છોટુકુલ્ય, છોટોકુલપ | અશોક | વનરાજ વનરાજી |
| Bl. | | | | |
| Bu. | Toukhyan | | Thawgabo | Hpalan |
| C. | અર્જુન, વિલમટિ, નીર્મટિ | | અશોક, અસુગે, કેકલિ | વિદ્યારંશ અરહમન્દાર |
| Cu. | અર્જુન (વેગ) | કંધાફૂલી | અશોક (વેદ) | આપટો |
| E. | Arjun | Indian borage | Asoka | Common mountain ebony |
| F. | | | | |
| Guj. | અર્જુન | કંધાફૂલી | અશોક | આર્ષોતરી |
| Ge. | | | | |
| H. | કૌદા | છોટા કુલ્કા | અશોક | આપટા |
| I. | | | | |
| K. | | | | |
| L. | Terminalia | Trichodesma | Saraca indica L. | Bauhinia racemosa |
| . | Arjuna (W & A) | indicum (R Br) | | (Lam) |
| M. | અર્જુનસાદડા | સિંધીની | અશોક | આપટા |
| Ma. | વેકમારુટ, મારુટ | | હેમપુષ્પ, વાન્ડુલમ્, અશોકમ્ | કોત્પુતી, મન્દારમ્ |
| P. | | | | |
| Pu | અર્જુન | | અશોક | કોસુવદ |
| Sinh. | કુન્વલ | | દિપેરાતેમ્બેલા | મયિલા |
| Sl. | | ગૌણવાન્ | | |
| T. | કુલમારુટ, નીર્મારુટ | કલદદાઇતુમ્બઈ | કાગૌલી, મલેક્ષરનૈ અચોગમ્, અનાગમ્ | ચણ્ણિ ઝારે, આરિયા |
| Te. | તેલમટિ, વલુમસુ | ગુણ્દાગુટી | વજ્જુલ્લુ, અશોકસુ | મંચિયેર, પચાને અલ્પિયવિરે |
| Tu. | | | | |
| U. | Arja. | | | |
| Ur. | કોર્જુનો, વોરજોન્નોસાદાનો | | ઓશોકો | ઓમ્પોરોહાવનરેજા |

| અશ્વત્થ | | ૩૬ | આદકી |
|---|------------------------------------|------------------------------|---|
| S. અશ્વત્થ | અસન | આશુપર્ણી | આદકી |
| A. Tin assnam, Arak el hind | | Ajanaulfar | Lubya sudani Bisillah hindiyah, |
| B. અશ્વત્થ, અસુદ | | અંદરકનિપન | અરહર, કોલ, ઓગેર |
| Bi. | | | |
| Bu. Nyaungbaudi | | | Pai-si-song, pesigon |
| C. અરલિ, અશ્વત્થ, વૃક્ષદારુ | કચેડે, સિહિગુલિમે | | તોગરિ, દાહુ, કારિપુટ્ટ |
| Cu. પિપરો | અસન | અંદરકની | તુવર |
| E. Sacred fig | Spinous Kino tree | | Pigeon pea. |
| F. Figuier des pagodes | | | Ambrevade, Cajan |
| Guj. પીપલો | અસન | અંદરકની | તુવેર |
| Ge. Indischer gottesbaum, Pagodenbaum | | | Angolische erbse, Catjang |
| H. પીપલ | શાજ, શરક, ગોંદની | મૂષા કર્ણી | અરહર |
| I. Fico del diavolo | | | Pisello d' Angola, citiso dell Indie |
| L. Ficus Religiosa L. | Bridelia montana (wallr) | Ipomœa Reniformis (Choia) | Cajanus. indicus (Spreng) |
| M. પિંપર | અસાળા | અંદીરકની | દૂર |
| Ma. અરસુ, અરચ લ, ચલચલમ્ | | | તુવર, આડકી, કાશિ |
| P. | | Goromusha, Goshamosha | Shakhil, shakull |
| Pu. મોર, પિપલ | ગોંદતી | | અરહર, તોહર, ડિઝર |
| Sinh. શે | | | રતાતોરા |
| Si. પીવર | | | |
| T. અચુવટ્ટમ્, ચુવલે, અરસુ; વૈગેમારમ્ | | પેરેટ્ટેક્કિરચ | ફયવે, પચ્ચુ, તુવે, આદકી |
| Te. અશ્વત્થમુ, ચલદલમુ, રાદિ | પ્લેતેગિ, સપ્પકોદારિ તેલ્લપીગિશ | તોડિન્નુઆતલિ | ચિન્નકળિડ, કળ્લુલ |
| Tu. Asnani-incirag Bo inciri | | | Hind bizelyasi |
| U. pipal | | Chukakani, Sharadam | Arhar |
| Ur. પિપ્પોલો, ઓશોથો, ચુરટો | ચુઆવાલિ | | હોરોદો, કાળ્લુલો |

| S. | आत्मगुप्ता | आदित्यवल्ली | आमलक | आम्र |
|-------|------------------------------------|------------------------------------|---|--------------------------|
| A. | Miyukunat el baqar | Abbad esh shams | Amlag, As sauanir, | Mango |
| B. | अकोलपि, मिचौटी, कामाच | सुरयाशुकि, सुरजशुकी | आम्ल, आमलकी, आम्ला | आम्, आम्र |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Khuele, Khwele | | Hziphyu shabju | Thayet. |
| C. | नसगुणी | सूर्यचान्ती | नेलि, धात्रि, आमलक | मावु, सीमावु, तोरोमावु |
| Cu. | कौवा | सुरजमुखी | वडी आमरीजा झाड | आवेजो झाड |
| E. | Cowage | Sun flower | Emblie myrobalan | Mango |
| F. | Pois a gratter, Mucune | Helianthe, Grand-soleil, Tournesol | Emblieque officinale, Cmyrobalan Emblie | Manguier, Arbre de mango |
| Guj. | बौवच | सुरजमुखी | आमळा | आंवे |
| Ge. | Jackf asel, Stechende-echte tfasel | Echoe stnuenblume | Graue myrobalane | Mangobaum |
| H. | केवौच | सुरजमुखी | आंवला | आम |
| I. | Fagiolo di Rio Negro | Corona del sole, Coppa di sole | Mirobalano embelica | Mango, Mangifera-comune |
| L. | Mucuna pruriens (D.C.) | Helianthus Annuus (LINN) | Phyllanthus emblica. L. | Mangifera indica L. |
| M. | कुहिली | सूर्यफूल | आंवला | आंवा |
| Ma. | शोरीवखी | | आमलकम, नेलि | आम्र |
| P. | Auareghorash | Aftabi, Gullaftab | Amelali, Amuleh | Amba, Ambeli, Naghyak |
| Pu. | गुल्चगजी, कुम्ब | | आम्बाल, आम्ल | आम, आम्बू, मवापि |
| Sinh. | आचार्यपट्टे | | औसदनेलि, नैली | आम्ब, मावण्ड, वालाम्ब |
| Si. | | | | आम्ब |
| T. | अमुदारि | | आमळगम्, तासिरि | आम्बिरम् |
| Te. | दुग्गं गिड | आदित्यभक्ति, चेदु | पुष्टुसिरिक, अंसरिक य | आम्रमु |
| Tu. | | Ay Cic, Gun cic Guee bakan | Amlac. | Mangu ag Hind Kiraz ag |
| U. | Kavaucha | Surajamakhi | Anwala | Amba |
| Ur. | रुनु, आलोकुशी | | खोन्टेना, ओनोला | आम्बो |

| आम्रातक | | ३८ | आर्द्रक | |
|---------|------------------------------|--|---------------------------|---|
| S. | आम्रातक | आरग्वध | आरुक | आर्द्रक |
| A. | | Kharrub hindi, Qitha hindi Khiyar shanbar, Bakbar hindi | Khawkh, Persik | Zangabil |
| B. | आम्र | आमुलतास | | आदा |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Grve | Gnookye | | Khyenseing |
| C. | मरहुनिसे, अमटे, अवेटकाई | रुके, बोण्डे, आरेवत | पिकेसु, पिचेसु | हसिशुण्डी, अद्द |
| Cu. | | | | आदु |
| E. | Indian Hog- Plum | Purging Cassia | Peach Tree | Green ginger |
| F. | | Canefcier, Casseen silieue, Cassier | Pecher | Amome des endes, Gingembre. |
| Guj. | अम्बाडो | रमाळो | आलुङ | आदु |
| Ge. | | Purgier Kasie Rohrenkasie | Echter pfirsich | logwer, gingiber |
| H. | अम्बाडा | अमलतास | आरु, आद्द | अदरक |
| I. | | Cassia solutiva, Cassia in bastoni c. di Levante | Pesco, Persico. | Pepe, Zenzero, Zenzero, Zenzevero |
| L. | Spondias mangifera Willd | Cassia fistula. L. | Prunus persica B & H F | Zingiber officinale (Rosc.) |
| M. | अम्बाडा | वहावा | अरु | आले |
| Ma. | कटापलम्, मांपुली, अम्बयम् | कोन, स्वर्णकम्, कृतमालम्, | | चिचटकम्, वटु |
| P. | Darakhtemoryam | Khiyarchanbar | Aru, Shuftalu | Shangabir Zangabil. |
| Pu. | अंबर | अली, कियार | अरु | अदक, अद |
| Sinh. | अम्बरेल्ल | अहल्ला | | इडुड |
| Si. | | चिमकानि इरागविरुडम् | | |
| T | मातुलिकि, गिरांगै | अरुकुवेडम्, चरकोरै | | आरत्तिरेगम्, चीगरम्, वेरकोम्बु |
| Te | अडविमामडि, बोरडमामडि | कोलपोन्न, आरग्वधसु | पिचेसु | अल्लसु, सोंटि |
| Tu. | | Harsember ag | Seftali Ag | Zencefil, Zencebil. |
| U. | | Amaltas | Adnd | ^ rakka |
| Ur. | आम्बोटो, आम्राटोको | मुनारी चोटुगेड्लो | पिचु, पिशु | आम्बोटो, शुण्डि |

| S. | इक्षु | इक्षुरक | इक्षुदी | इत्कट |
|-------|------------------------------------|--------------------------------|------------------------------------|-----------------------------|
| A. | Qassab essukkar. Qassab | | Heghelig. | Sasban Sayasban |
| B. | अफ, गन्ना, कण्डुली, पुरी | कण्डकलिका | हीमोन | धनीचा, धूनची, धूनवा |
| Bl. | कटारि, उख | तालमखाना | | |
| Bu. | Kyan, Keyan | | | Pouk, Najan ben. |
| C. | कचु, कण्टर | कोळवळिके चीज | इमडक, इमळरे | मुळ, जीनगि |
| Cu. | | एकरी | इगोरिया | गडेडेजो झाट |
| E. | Sugar Cane | Long Leaved barleria | Zachum oil plant | Prickly sesban |
| F. | Canne a sucre, Cannamelle | | Dattier du Desert | Sesbanie, sesbane |
| Guj. | शेरणी | एकरी | इगोरियुं | इहड |
| Ge. | Zuckerrohr | | Zachunbaum | Sesbanie, schnurfrechme |
| H. | ईख, गन्ना | तालमखाना | इमोट इगुआ हिमोट | जयन्ति |
| I. | Canna da zucchero, Cannamele | | Dattero Deserto | Sesbania. |
| L. | Saccharam Officinarum L. | Hygrophila spinosa (Andres) | Balanities Rox- burghii Plarch. | Sesbania aculeata (Pers) |
| M. | उस | कोळसुन्दा | हिंमण | चिंचिणी |
| Ma. | कान्तारकम्प, वेल्करीम्पु | वशाळचुली | नाचुण्ट | किटंडु |
| P. | Nalshakar | | | |
| Pu. | | | | जैन्तर |
| Sinh. | उक्, उक्कास | कट्टेरिकि | | |
| Si. | कामण्ड | | | गदोरेजी |
| T | अङ्गारिगै, फलै, कुरुयु | नीरमळी | तोळवडु, नाचुण्डन | मुळचमै, नीरचेमै |
| Tc. | चेरुक्, इचु, कान्तारसु | नीरगुळी | गार, इगुदि | पररजीखण |
| Tu. | Seker kamisi | | Haglig | Sesban |
| U. | Gana | Talimkhana | Hingot | |
| Ur. | इक्षु, भाऊ, गुजेदास | | इक्षुदीला | टेण्डुळा |

| S. | इन्द्रवारुणी | उद्यटक | उत्पल | उदकीर्यका |
|-------|--|----------------------------|------------------------------|--------------------------------|
| A. | Hbanzal, Hhadag Mararetees sahhari | Zughaf shuqaf | | |
| B. | इन्द्रायग, मखल | पुपानी | नीलपोष | उमुलकुचि |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Khiasi | | Kyanyu | Suuletthe |
| C. | कुन्तीवाई | | | |
| Cu. | कुजादेश | कण्डेरा गोंखर | कमर | |
| E. | Colocynth | | Blue water-lily | Prickly Brazil wood climber |
| F. | Coloquinte, echicotin | Blepharie | | |
| Guj. | इन्द्रवारुणी | उटींगण | नीलकमल | वाकेरीपूल |
| Gz. | Bitterzitrulle, Bitterapfel | | | |
| H. | इन्द्रायग | उत्तंजन | कृष्णकमल, नीलोफर | वाकेरीमूल |
| I. | Coloquinda, Coloquintida, Popone amaro | Blepharide | | |
| L. | Citrullus colocynthis (Schard) | Blepharis edulis (pers) | Nymphaea stellata (willd) | Caesalpinia digyna (Rohl) |
| M. | इन्द्रायग | उटञ्जन | निळकमल | वाकेरी |
| Ma | पेयटोकोमुट्टि | | सितमषेल | |
| P. | Hindavanahe- talkh | Anjara | | |
| Pu. | | | | |
| Sinh. | याकोमडु, पेतिपुत्त | | मानेल | |
| Si. | कुजपूर | | | |
| T. | पेयक्किमुट्टी | | नीलोत्पलम् | |
| Te. | वेरिपुच्छ | | नितिकुलव | नूनेगचा |
| Tu. | Abu Cehl Karpeazu, Hincal acielma, Hanzal | Kajit | | |
| U. | Indrayan | Uttanjan | | |
| Ur. | | | सुन्दिकैत | गिलो |

| S. | उदुम्बर | उपकुञ्चिका | उपोदिका | उशीर |
|-------|------------------------------------|---|------------------------------------|--|
| A. | Jamiza | Barakah, Kamun aswad, Hbabbah sawda Hhabbecel shūniz | Malabār | Usir |
| B. | यशहुम्बर | कालीजीरा | पुद्गुका | खसखस |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Thapan | Samonne | | Miyamoe |
| C. | अति | करेजीरिंगे | कैपावसले | लामंचा, लावंच |
| Cu. | उमर | | पोई | वाळ |
| E. | Gular fig tree | Black cumin | Indian spinach | Cuscus grass |
| F. | | Araignee, Quatre, epices | Baselle, Epinard- demalabar | Vetiver |
| Guj. | उमरछो, उमरो | कलौंजी जीरं | पोई, पोयी | वीरणनो वाळो |
| Ge. | | Echter schwarz Kummel | Weisse Beerblum malabar spinat, | |
| H. | गुळर | मणरैल, काला जीरा | पोय, पोइ | खस |
| I. | | Erhaspezie. Melanzie- lomesica | Spinacio della china, Badella | |
| L. | Ficus glomerata (Raxb) | Nigella sativa. L. | Basella Rubra. L | Andropogon muricatus Vetiveria zizanoides |
| M. | उम्बर | कालेजीर (Khory) | मयाळ | वाळ |
| Ma. | जलियाल, जन्तुफलम् | बहजीरकम् | बसेलाकिरा | वेटिवेर |
| P. | Tamarpi shah | Shuniz | | Khas |
| Pu. | चातवा | | | पकी |
| Sinh. | अशीरा | कांडुसु | मिविति | सैयन्दरा |
| Si. | | | पोइ | |
| T. | अचमाकडम्, अदवम्, कडजीरगम् आर्ने | | बसलकिरै | वेटिवेर |
| Te. | ब्रह्ममेदे, पैडि, अट्टि | नेत्राजीलकैरा | अहारासडा | हृदिवे |
| Tu. | | Coregotu, karamuk, sehniz | Pazu, cin Ispannagi. | |
| U. | Gular | | Poh | Khas |
| Ur. | डिमिरि, उदुम्बोरो | | | |

| प्रका | प्रका | प्रका | प्रका |
|-------|--------------------------|---|--|
| S. | प्रका | प्रका | प्रका |
| A. | Khirwa | Kissakadam | Qurassya, karaz |
| B. | होम्डा | मेग्ग | काकुर |
| Bl | अण्ड | | |
| Bu. | Kesu | | |
| C. | जम्बुदुल, आपु | औडल, चिदुहरल, हरल | चळीगटे |
| Cu. | घावाजरीओ | एगिदुं | काकडी |
| E. | Elephant grass | Castor oil plant | Melon cucumber |
| F. | | Ricin, palma, Christi | Cherry Tree |
| Guj. | घावाजरीओ | एण्डो | Cerisier Griottier, Cerise aigre |
| Ge. | | Echter-wunderbaum | एडवा |
| H. | होगला, पटेर | रॅडी, एण्ड | Sauerkirschen, Sauerkirsch |
| I. | | Fogiolo d' india | आलुवाल |
| L. | Typha | mano aperta | Ciriegio, Ciliégio, Agerotto, Ciliégio, Agerotto |
| | Elephantina | Risino, Palma Christi | |
| | Roxb | Ricinus | Brunus Cerasus |
| M. | पाणकगीस रामवाण | Communis L. | L. |
| Ma. | | एण्डी | आलुवाल |
| P. | | आमणकु, आवणकु, तकम् | वेल्रिक |
| Pu. | बोन् बोरी, दाव् | Bedangir | Khiya jard, Khiyatajara |
| Sinh. | | | Alubalu, Alubuali |
| Si. | बुरी | एण्ड | गिलास |
| T. | आनेकौर, आनपुल, चम्बु | तेलेन्दाक | |
| Te. | एगजम्सु, जाम्मुगरी, कन्द | हेरन् | |
| Tu. | | आमणकु, अटमानम् | फकरीकाई |
| U. | | आमुदसु, चिदामुदसु | दोसाकाई |
| Ur. | होगला | Beydencir, Harra, Hint, Geneotu, Gene greek | Ficle |
| | | Eranda | Kiraz ag |
| | | मेरोण्डा, चिदोको, गोवो | Kakri |
| | | काकनाई | Alubala |

| एला | ४३ | | कडु | |
|-------|---------------------------------------|---------------------------------------|-------------------------|---------------------|
| S. | एला | एलापर्णी | ककोल | कडु |
| A. | Qaullah shiran | Khawlangan | Hbaabb el arus | |
| B. | इलाची, ईलायिच् | बाराकालिजान् | सुगंध मरिच | |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Bala, Bhala, pala | Padagoji | | |
| C. | एलकि, इलकि, कौराझी | दुम्पुरास्मे, दुम्प्रास्ट, सुगन्धवाचि | गन्धमेणसु | |
| Cu. | | | | |
| E. | Lesser Cardamon | Galangal | Cubeb pepper | Italian millet |
| F. | Cardamoma petit | Galanga Majeur | Boirrier cubebe, Cubibe | |
| Guj. | एलची | कुलिमन | चणकवाच | कांग |
| Ge. | Kleine kardamomen | Galgant Grosse galgant | Cubebenstrauch | |
| H. | इलायची, एलची | बडा कुलिमन | कवाचचीनी | कंगनी, खेरा |
| I. | Cardamomo minore | Alpaina, Galanga maggiore | Cubebe, pepe a coda | |
| L. | Elettaria Cardamomum (maton white en) | Alpinia galanga (Swartz) | Piper Cubeba- (miquel) | Panicum italicum L. |
| M. | वेलदोडा | धोटकोळिजन | कंकोल | कांग |
| Ma. | एल, एलकाय, कार्डि, तुटि, | अरच, पेररत | चीनिमुळकु. | |
| P. | Hail, Hil | Khurduwara | Habelarus | |
| Pu. | ईलायचि | | | |
| Sinh. | इनासाल, ईन्साल | | | |
| Si. | | कुंजर | | |
| T. | एलम्, चिर्रेलम् | आणन्दम्, आरत्तै | वाल्मिळगु | |
| Te. | कोरंगि, एलकि | दुम्पुराङ्कसु, कचोरसु | चड्डव मिरियासु | |
| Tu. | Kucuk, kakule | Havlinan, Galanga | Kebebiye, Kebebe | |
| U. | Ilayachikhurd | Kulanjan | | |
| Ur. | एला, ओलैयो | | | |

| कटमी | कटुफला | कटुरोहिणी | कटफल |
|--------------------------------------|--|------------------------------|------------------------|
| A. | Hhabb el misk, Anbarbul | Kharba gehindi | Azuri |
| B. बोरी, कोरोय् | मुषकदाना | कटकी, कुर | कायफल कायाफल |
| Bi. | | | |
| Bu. Seet, sit | Baluwa | | |
| C. कषाधि, वागे वेळति | कस्तूरमेण्डे | | |
| Cu. सरसडो | | | |
| E. White siris | Musk mallow | Kurroa | Boxmyrtte |
| F. | Ambrette, Graine de musc, Ketmic, Musquee | | |
| Guj. सरसियो | लताकस्तूरी भींडो | कटु | कायफल |
| Ge. | Abel mosck, Bisam e ibisch | | |
| H. सफेद शिरीष | मुषकदाना, दुहा | कटकी | कायफल |
| I- | Fior muschiato, Ibisco muschiato, Ambretta | | |
| L. Albizzia procera Benth. | Hibiscus abelmoschus L | Picrorrhiza Kurroa Benth. | Nyrica nagi Thunb. |
| M. किरुई | कस्तूरभण्ड | कटकी | कायफल |
| Ma. परुन्तकर, कुटुम्माक | कटुरोहिणी | कटुरोहिणी | माहस |
| P. | Mushkdana | Kharbaqehindi | Dareshishamkan- dul |
| Pu. | | कालिकुटकी, कुर | कहेला, कही, बाफल |
| Sinh. | कापुकमिस्सा | | |
| Si. | | | कायफल |
| T. स्वलयुजिल्ल, नाडवागे, वेळ्वागे | कटुरोहिणी | कटुरोहिणी | महदम् |
| Te. गनाक, पेदपचर | वर्धूरमेण्डा | कटुरोहिणी | कैडर्यमु |
| Tu. | Amber cic | | |
| U. | Mushkdanah | Kutakisafed, Kutakisiyah | Kalphal |
| Ur सिरिसि स्रोयोद्धो | | | |

| कटुद्रव्य | | ४५ | कतफ |
|-----------|--------------------------|-----------------------------|-----------------------------------|
| S. | कटुद्रव्य | कण्टकारी | कण्टकीकरञ्ज |
| A. | | Badankare | Bundu, hindi, Qarahh |
| B. | | कण्टकारी | नाटा |
| Bi. | | रेंगनी | निर्मली |
| Bu. | | | Kalein |
| C. | दोडवेवु, हेवमणि, हेम | चिकसोण्डे, नेलगु. | गझिया |
| Cu. | बडोनिम | भोर्गिणि | ककचीआ |
| E. | Tree of heaven | Yellow berried nightshade | Bondue |
| F. | | | Bondue, Chicot du canada |
| Guj. | अरु | वेडी मोरीगणी | कांरुच |
| Ge. | | | Gemeiner Schusser baum Nicke—baum |
| H. | अरु | कटेरी, भटकटैया | कंज |
| I. | | Bondue, Niceheri | |
| L. | Ailanthus excelsa (Roxb) | Solanum xanthocarpum (sche) | Coesalpinia bonducella (Flem) |
| M. | महाकल | भुईरिंगणी | गजगा |
| Ma. | पेद | कण्टकारिचुण्ट, गुश्चुण्ट | कलिमारक |
| P. | | Badanagane doshti | |
| Pu. | अरुआ | कटेला, चान्कटिया | फिन्दुक् |
| Sinh. | कुम्बल | इलायडु | गुम्पुरुवेल् |
| Si. | | अदरेजदेने | करवत् |
| T. | अगाल, नार, पैरुप्ये | चुट्टरम, उदरवनि | गञ्जी |
| Te. | पेइमाण्डु, पेइपेप | चेलमुलग, जिहूचुखे, नेलपकुडु | गच |
| Tu. | | | Bondue |
| U. | | Katilla, Bhakkatiya | Bonduk |
| Ur. | गोरिमाफाच्य, महानिम्ब | चौकोवाद्दुहौटि | नोटा |

Nirmali

कोटेशो, निर्मळा

कोटेशो, निर्मळा

| कदम्ब | | ४६ | कनकपुष्पी | |
|-------|----------------------------|------------------------------|----------------------------|------------------------------|
| S. | कदम्ब | कदर | कदली | कनकपुष्पी |
| A. | | Shab qatad | Moz, Jalhh | |
| B. | कदम्ब | | काला, केला, केलि, | |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Mau | | Hugapyan | |
| C | वले, कदवले, कदम्ब | | जेजुवाळे, रसदाले, वृषिवोल | |
| Cu. | | अच्छोखेर | | |
| E. | Cadamba | Gum arabic Tree | Plantain | Hirtiz (Kashmir) |
| F. | | Gommier blane | Bananier, Fiquier d' ladam | |
| Guj. | कदम्ब | गोरड, सफेदखैर | केळ | हीरवी (का.) |
| Ge. | | Weissliche akazie, Verekbaum | Echte banane, Adams apel | |
| H. | कदम्ब | सफेदखैर | केलि | हीरवी (का.) |
| I. | | Acacia del senegal | F. Banano meladi Paradiso | |
| L. | Anthocephalus cadamba Miq. | Acacia senegal (Willd) | Musa Sapientum (Okunty) | Euphorbia thomsoniana, Boiss |
| M. | कदम्ब | गोरड, पाडराखैर | केळ | |
| Ma. | आरुटेक, काटम्ब, कटुचक | | पवान | |
| P. | | | Mouz, Tuhltula | |
| Pu. | | | | |
| Sinh. | कदम्ब | बोर | केहल, वाल्केहेल | |
| Si. | | | केविरो | |
| T. | धरुट्टम्, इन्दुलम्, कडप्पे | | सुगाण्डम्, इरचन्डालै | |
| Te | कदम्बम्, इडिमि, पेदकम्ब | | सुगन्धाड, तेनेयारदि | |
| Tu. | | Beyaz zamk ag | Moz ag, inciri adem | |
| U | | | Kela | |
| Ur. | कडोमो, नीपो | | कोनोकोरम्म | |

| कपित्थ | कपीतन | कम्पिलुक | कमल |
|--------------------------------------|---------------------------------------|---------------------------------------|---|
| S. कपित्थ | | | |
| A. Tuffahh Kabit | | Qanbil, Wars | Al ful el masri |
| B. कैट्ट, कट्टेव Bi. | गजशुण्ठी, पलासपिपल | कमलशुण्ठी, कामिल | पद्म, धोमोल |
| Bu. Hman, Mahan | | Tanthieden Tawthidin | Paduugma |
| C. दाडिफल, वेळल | | सुरहोषे, चन्द्रहिट्टु | तावररिगट्टे |
| Cu. कौड | पारसपीपरो | | कमल |
| E. Wood apple | Flowering peepul Portia Tree | Kamala | East Indian lotus |
| F. Feronic de L' Inde | Thespesia afeuilles de peuplier | Rottliere des Teinturiers | Nelambo, Feve d' Egypte Lotus sacre Lotus du nil |
| Guj. कोटी | पारसपीपत्रो | दपीलो | कमल |
| Ge. Elephant- enapfel | | Kamalabaum | Nillilie Addorisind |
| H. कैथ | पारसपिपल, मॅडि | रोरी, रोहिना | कमल |
| I. Pomo d' elefaute | | Kamala | Nimfea d' Egitto, Rosa des Nelo |
| L. Feronia elephantum (Correa) | Thespesia populnea (soland) | Mallotus philippinensis (Muell) | Nelumbium speciosum (willd) |
| M. मंजठ | मेण्ड | मपिला | कमल |
| Ma. दादीफल, कपित्थम्, वेळलु | चन्दनारम् | चैकोडि, कुरामट्टु | तामर |
| P. Kabit | | Kampileh | Beykhneelufer Nilufer |
| Pu. कैथ | पहारिपिपल | कामल, काम्मल | पाम्पोप् |
| Sinh. लिण्डुल् | सूरिय, गमसूरिय | हम्परान्देल | नेलुम्बो, नेलम् |
| Si. पवठ | | | पद्मम् |
| T. चिल्लन्न, चिरित्तम् | पिरम् | सुषुम्भेचारि, कपिलघोडि | अम्बल |
| Te. वेळग, पुष्पकलधु | मंगारेनी | अरदिगुप्पुत्तु, चेन्दिरम् | तामर |
| Tu. Fil Elmasi | | | Fuli masri |
| U. Kaitha | | Kalleh | Nilufer |
| Ur. काइलो वेले, कोइलो | पोरोलो दिप्पोलि | नेसोन्तोशुण्डि, कुकुमौ | पद्म |

| क.र.ज. | क.र.ज. | क.र.म.द. | क.र.वी.र. | क.री.र. |
|--------|---------------------------|-------------------------|-----------------------------|----------------------------|
| S. | क.र.ज. | क.र.म.द. | क.र.वी.र. | क.री.र. |
| A. | Shanaf ed dik | | | Sodab |
| B. | दहुरंकरज, दालकरमूच | वाइनवि, करमूच | कावी | |
| Bi. | | | | कारि |
| Bu. | Simizu, Thawen | | | |
| C. | होहो, हुल्लिगिलि, वट्टि | दोहोवळि, हेमगरिचिगे | कणिगले, पट्टिल | चिपुलि, करीर |
| Cu. | | | | बेरुओ झाड |
| E. | Indian beech | Bengal Currant | Oleander | Caper |
| F. | Arbre de pongolote | Calac | | |
| Guj. | करज | करमदां | करण | बेरुओ |
| Ge. | Mond bohne | | Wohlriechender | |
| H. | करज | करोन्दा | बनेर | बंर |
| I. | | | | |
| L. | Pongamia Jlabra (vent) | Carissa Carandas, L. | Nerium odoratum (Soland) | Capparis aphylla (Roth) |
| M. | करज | करवंद | कण्हेर | नेपती |
| Ma. | मिनारि, पुन्नु, उण्णु | कळवु, कारक, कारज | अरलि, कणवीरम् | |
| P. | Khainulmalisa | | Kharzahrah | Bergesodab |
| Pu. | करज | | गनेरा, गन्डिया | गरिया, देलहा |
| Sinh. | मण्णुळ, कण्ड | महाकरम्ब, महाकरण | | |
| Si. | | | | किल |
| T. | कायनम्, कीलैयम् | काळा, काळकाय | अगम्, अगारिडा | चेणगम्, सिरकाळै |
| Te. | कानग, कोवि, कायु | काल्लिवे, पेडूवाक, वाः | गनेरु, कस्तूरिपट्ट | बरीगु |
| Tu. | Dalbercia | | | |
| U. | Karanjwah | Karawanah | Kanir | Titili. |
| Ur | कोरोओ, कोजा | कोरोन्ड खिरोकोलि | कोनियोरो, कोरोबे | |

| कर्कटकी | | ४९ | कर्फाल |
|---------|----------------------|-------------------------------|----------------------------|
| S | कर्कटकी | कर्कटशृङ्गी | कर्कधु |
| A. | Khiyar Qathad | Summaq, Kadheb | Zariab |
| B. | खीरा, चाथा | काकभिरि | |
| Bi. | | | फूति, काकरी, काकुर, चर्सुन |
| Bu. | Thagwa, Thakhwathee | | Takhva |
| C. | चौतेकाई | कर्कटकशृङ्गी | पखेले, मुक्कुहण्णु |
| Cu. | | | चणिवावेर |
| E. | Common cucumber | Crabs Claw, | Wild jujube |
| F. | Concombre | Sumac batard, Sumacsuccedane | |
| Guj. | काकरी | काकडासिगी | चणीवेर |
| Ge. | Echte, gurke Kukumer | Tapanischer Sumach, Wachsbäum | |
| H. | खीरा | काकडासिगी | झडवेर |
| I. | Cocomero Cetriolo | Sommacco da sego | |
| L | Cucumis sativus L. | Rhus Succedanea L. | Zizgphus nummularia W.C. |
| M. | सिरा | काकडासिगी | गंगे, जंगलीबो |
| Ma. | वेगरीक | | |
| P. | Shiyare Khurd | | Shabaraka |
| Pu. | रौर. खितार | अररर | याल्, फेल्, विरोट |
| Silu. | विभिन्न | | |
| Sl. | | | वेर, गंगरा |
| T. | विभिन्नकाई | करकडगविज्जी | कोर्गोडि |
| Te. | दोसेगाई | बारसिङ्गी | नेलरेय |
| Tu. | Hiyar, Fidam | Joponya mom ag, Yalan summak | |
| U. | | | Zariab |
| Ur. | काकनाई | | |

| S. | कर्मोदक | कर्मूर | कर्मूर | कर्मदार |
|-------|------------------------------|---------------------------------------|------------------------------------|---|
| A | | Gadwar, Satwal, Zadwar | | Argat elqurun, |
| B. | कर्मोदक | एकद्वि, कचुरा | कर्मूर | |
| Bl. | | | | |
| Bu. | Sahyet, sapyit | Thanuwen | | |
| C. | गिदगलु | | कर्मूर | विलिङ्गुवाल, वनसम्पिगे |
| Cu. | कांठोल जीवल | | | |
| E. | | Zedoary | Camphor | White mountain ebony |
| K. | | Giugembre, Batard zidoaire | | Senne baterd, Ebenier de mon- tagne |
| Guj. | कर्मोदक | पट्टकचुरो | कर्मूर | काचनार |
| Ge. | | Zittewer, Kurkame Zedoararirzel | | Unachte senna Berge-benholg |
| H. | कर्मोदक | कचूर | कर्मूर | कचनार |
| I. | | Zedoaria, Zedoarialunga | | Bauhinia, Ebano moutano |
| L. | Moniardica- dioica (Roxb) | Curcuma Zedoaria (Rose) | Dryobalanops aromatica (goertn) | Bauhinia acuminata. L. |
| M. | कर्मोदक | कचोरा | कर्मूर | कांचन |
| Ma. | एरिमपासेल | | | वेळमन्दारम्, वेळमन्दारम् |
| P. | | Kazhur, Urukalkafur | | |
| Pu. | घारकरेला, हिरारा | | | |
| Sinh. | वृम्भकरयिद्धा | हाराद्धः | | |
| Sl. | | | | |
| T. | पडप्पकाई | | कर्मूरम् | कोळुमन्दारं, वेळमन्दारं |
| Te. | पो. उडुड | | कर्मूरम् | देवतावनम्, काचनम् |
| Tu. | | Gulpa hamra, Cevdar | | Bolunia, dag abanozi |
| U. | | Kachura | | |
| Ur | | | | चोड्रा |

| S. | कलम्ब | कलाय | कशेरुक | काकनासा. |
|-------|-------------------------------|--|--------------------|---------------------------------------|
| A. | | Gufan, Khullar | | |
| B. | कालमिसक, नलिके | कस्तूर, खेसारि | | |
| Bi. | | | | |
| Bu. | | | | |
| C. | | | | |
| Cu. | नारी-वल | | | बोघे-जीवल, |
| E. | Wild pot herb | Chickling Vetch | | Small stinking wort |
| F. | | Lentille d' Espagne, Gesse | | |
| Guj. | नाडानी भाजी | लांग | कसेला | कौवादोपी, शींगरोटी |
| Ge. | | Satplatterbae | | |
| H. | नाडीशाक, कलभी | खेसारी | कसेक, चीचन्दा | शींगरोटी, कौवाडोडो |
| I. | | Robigelio, Cieerchia, Moco, Pisello, Collivata | | |
| L. | Ipomoea aquatica Folsk. | Lathyrus Sativas L. | Selrpus kysoor. R. | Pentatropis microphylla (W & A) |
| M | नाटिशाक, नाळ | लांग | कचरा | शींगरोटा |
| Ma. | | | | पारप्पारम् |
| P. | | Masang | | |
| Pu. | गान्धियात्र, नालि | चुराळ, कास्तू | कशेरु, दिला | |
| Sinh. | कानकुन् | | | |
| Si. | नारो | मम | | |
| T. | सरकरेवलि | | | उप्पिळि |
| Te. | तुलीकुरा | | गुण्डातुङ्गागष्टी | चेकृतिविव, पूलपाल |
| Tu. | | Muirdemeg, Yasimerclmek | | |
| U | Narikakal | | | |
| Ur. | | | | |

| સાતમ્બાની | ૫૬ | પાલ્લેહિત્ત | |
|--|------------------------------|-------------------------------|-------------------------|
| S. કાકમાની | પાત્તલોગ | પાત્તલોગ | પાલ્લેહિત્ત |
| A. Enaththialah, Kanyalya ecyfiyah Ribriq | | Tin, harri | Uthimar |
| B. તામ્બાની વાંચે | માત્તલોગ, મેન્ડ | દુરુ કાંદુર | વામ્બાની, તરોગ |
| Bl. | | | |
| Bn. | Palkalag | Kaunag kadot | Kelingahin |
| C. | મચ્ચે, જાંબ, તાંદેલી | કાંચિ, જોડા | દાંતકદ |
| Cu જાંબ | જોડે ગાંબ | | |
| E. Black night shade | Sword bean | Red wood- fig tree | Carilla fruit |
| F. Morella noire, Pois fabre, Amonrette | Haricotsabre | | Pandipane |
| Guj. પીંડી | તાંબા | | કારેબી |
| Ge: Schwarzer nachtschatten | | RangoonLauchuk- feyen baum | |
| H જાંબ | જાંબ | જાંબ, જાંબ | કારેબી |
| I. Solano hero, Canavalia solatro ortense, Morella | | | |
| L. Solanum (A) nigrum. L. | Canavalia ensiformis D.C. | Picus. hispida L. | Momordica charantia. |
| M. જાંબ | જાંબ | જાંબ | વાંચી |
| Ma. | જાંબ, જાંબ | જાંબ, જાંબ | જાંબ |
| P. Rubahrtareek | | Aujirdashete | Karelah |
| Pa. જાંબ, જાંબ | જાંબ | જાંબ, જાંબ | જાંબ, જાંબ |
| Sinh. જાંબ | જાંબ | જાંબ | જાંબ |
| Sl. જાંબ | | | જાંબ |
| T. જાંબ | જાંબ, જાંબ, જાંબ | જાંબ, જાંબ, જાંબ | જાંબ |
| Te. જાંબ | જાંબ, જાંબ, જાંબ | જાંબ, જાંબ, જાંબ | જાંબ |
| Tu. Kopek Uzumu | Kilie fasulyasi | Yabani, fulek | |
| U. Makoya | Sem | | Karelia |
| Ur. | જાંબ, જાંબ | જાંબ, જાંબ | જાંબ |

| S. | कार्पास | कालशाक | कालानुसारिका | कालेयक |
|-------|--|---|---------------------------------|------------------------|
| A. | Qutn mulablab Qutn eshsharq | Jut | | |
| B. | कापास, तुला | चीनालोटापाट, वाची | डुभी | |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Wa, Wahi | | Tansapai | |
| C. | अरके, अंगर, दत्ति | | करिहम्बु | |
| Cu. | मारियोपा | जेडली | | |
| F. | Levant cotton plant | Jute plant | Dark blue creeper | Yellow sandle- wood |
| F. | Cotonnier d'Asie | Chanvr de- Calcutta, jute, Correte- Capsulaire | | |
| Guj. | कापास | हुंछ | काळां फूलवाळी उपलसरी | पीलुं चन्दन |
| Ge. | Ktrze Ugeorgia baumwolle | Julepkanze, Indischer flacks | | |
| H. | कापास | नरिचा | कालीसर | पीला चन्दन |
| I. | Cotone delle anchine, Cotone annuo, | Corcoro siliquoso | | |
| L. | Gossypium herbaceum L. | Corchorus Capsularis. L. | Ichnocarpus frutescens (Bit) | Santalum flavum L. |
| M. | कापास | चोचे | इयामलता | |
| Ma. | कार्पास, पदति, पदर | | पालवकि | |
| P. | Pambah | | | |
| Pu. | रई | | | |
| Sinh. | | | | |
| Si. | | | किरिबेल | |
| T. | चसुट्टिराउम, कार्वांसम्, टैपकत्ति, तुलनम् | | उदर, मोदी | |
| Te. | बदारक, बिजुलम्, कार्पांसम् | | इहुकेट्ट, सुण्डगशनम् | |
| Tu. | Pambuk fidani | Hind keneviri | | |
| U. | Rui | | | |
| Ur. | कार्पासो, चोपा | | भूनखोळि, माडोवि | |

| काश | काश | काश्मरी | कासमर्द | किराततिक |
|-------|-------------------------|--------------------------|------------------------|-----------------------------|
| S. | काश | | | किराततिक |
| A. | | | | Qasabuzzarirah |
| B. | काश, काशीया | गभारी, गुवार | बालकमुष्ट | बिंदा |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Thekkaygyee | Kyunboc, Yanamai | Kalan, Mezali | Sekhagi |
| C. | दम, होदिन्द | बोचाणिगे, गुप्ति, कूळ | बोदुतगसे | नेलावेक |
| Cu. | कांतिथो धा | सवनत्रो जाड | मुन्दो | |
| E. | Thatch grass | White teak | Round podded Cassia | Chiretta |
| F. | | | Bsols puant | |
| Guj. | काश, कासरो | शौवण | कासुंदरो | करियातुं |
| Ge. | | | | |
| H. | काश | गंभार, खंभार | भर्षीवी, कांविदा | चिरायता |
| I. | | | | |
| L. | Saccharum spontaneum L. | Gmelina arborea L. | Cassia occidentalis L. | Swertia chirata- (Ham.) |
| M. | काश | शिवग | कासिन्दा | किरात |
| Ma. | न.नाण, | कुमिक, कुमल | पोसाबिरम् | निलावेप्पा |
| P. | | | | Nenilawandi, Qusabuzzarirah |
| Pu. | काही, कान्हु | गुम्हार, कुम्हार | | |
| Sinh. | | अटडेम्माटा | पेनिटोर | |
| Sl. | खौ | | | |
| T. | अचवारम्, अंजलि | अरिवा, कम्बाल, पूळिगुमिल | पोमानिरे | निलवेन्वु |
| Te. | विक्कुपि, काकिचरु | अडविगुन्नुड, गुसुड | कासिन्दा | निलवेन्वु |
| Tn. | | | | |
| U. | | | Kasonji | Chiarayata |
| Ur | इण्णोरो | भोद्रोवणी, काइनोरि | कासुन्दि | |

| कुटुम्ब | कुटुम्ब | कुटुम्ब | कुमारजीव |
|---------|------------------|----------------------------|------------------------------------|
| S. | कुटुम्ब | कुटुम्ब | कुटुम्ब |
| A. | Zafaran, Kruku | Lisanel assafir el murr | |
| B. | कुटुम्ब | कुटुम्ब | कुटुम्ब |
| Bl. | | इन्दुरजकुलर | पुत्रजीव, अंशु |
| Bu. | Thanwai | Letong Kye, Letto pgyee | Badibyn Egayit |
| C. | कुटुम्बकेसरी | कोडसिगे, सण्णहले, वेप्पाने | पुत्रजीव, मेण्डिवनाले |
| Cu. | | | |
| E. | Saffron | Kurchi | White dead nettle shrub |
| F. | Safran, Safran | Holarrhine- cultive | antidyenterique |
| Guj. | केसर | कडो | शीणको कुयो |
| Ge. | Echter safran | Ruhr holarrhena | |
| H. | केसर | कोरेया, कुडा | गुमा |
| I. | Zafferano. | Olarhena | जियापुत्र |
| | Erocofiorito | | |
| | Flori, Forcuculo | | |
| L. | Crocus sativus | Holarrhena | Leucas linifolia |
| | L. | antidyenterica | Spreng. |
| | | (Wall) | Putranliva Roxburghii (wall) |
| M. | केसर | कुडा | गुमा |
| Ma. | | पालाप्पट्ट, कैपफोटरुप्पल | पुत्रजीव |
| P. | Larkinasa | Inderjave, Talkh | पेम्बोलम् |
| Pu. | | कवार, कुरा | जियापुत्र |
| Sinh. | | | |
| Si. | | | |
| T. | कुटुम्ब | अहलरवि, इन्दिरममं | गुम्मे |
| Te. | कुटुम्ब | गिरिमल्लिका, अंकुडु | पुल्लुम्बिन |
| Tu. | Zafran | Aci Serce dili | कुटुम्ब |
| U. | Jafranekar | | Guma |
| Ur. | | इन्दोनेजो, कया | भोलोकोलि |

| કુસુદ | | ૫૬ | કુલત્થ | |
|-------|---|-----------------------------------|---------------------------|---------------------------------|
| S. | કુસુદ | કુમ્મી | કુરળક | કુલત્થ |
| A. | Hhash es samak | | | Qalath, Hubulkilat |
| B. | કમલ | કુમ્મી, કુમ્મી | કાન્તાજટિ | કુર્તિકલાય |
| Bi. | | | | |
| Bu. | | Bambway, Banbwe | Leithaywe | |
| C. | વિજેતવં | કવલ, હળુમટ્ટિ, દટ્ટાલ, આલમખેલે | મુકુમોરણ્ટે, મોરણ્ટે | હુમ્લિ |
| Cu. | | | વજ્રદૌલ, કેંડા આસરીમં | |
| E. | White water lily | Saffron mango | Yellow nail dye | Horse gram |
| F. | Nenuphar blanc, Lis des etangs Nymphé. Lunifa, Lune d' eau, | | | Dolic biflore, Graindecneval |
| Guj | કુસુર | વાપુંમો | પીઝાકુલનો વાંટાશેરિયો | કઝધી |
| Ge. | Weisse seerose | | | Pferdekonn |
| H. | તંદે, મોદે છોટા કેવલ | કુમ્મી | પીંડે કટસૈયા | કુમ્મી |
| I. | Giglio Deglistagni, Lund d'aoqua, Ninfea blanche. Nenufaro | | | Dolico Cavalina |
| L | Nymphoea alba L. | Careya arborea (R.) | Barleria prionitis. L. | Dolichos biflorus L. |
| M. | પહિર કમલ | કુમ્મી | કોર ટી | કુઝીય |
| Ma. | નીરમ્બલ | આલમ, પેકુ, યુક, પેરા | ચેરમુક્કિ | મુયેરા |
| P. | Nilufur | | | |
| Pu. | પાપોગ | વાલુમ્બ | | કુલત્થ, |
| Sinh | એલુપ્પુ, એલુ | કાહત, અહટે | કટુકુમ્બુ | કોલ્લુ |
| Si | કુની | | | કુલિત્થ |
| T. | અમ્મર | અયૂસા, કરંરકુ | વરલૂમ્બી | વોલ્લુ |
| Te. | અમ્મલ, તામર | અચ્ચ, હુટ્ટરિજિ, ગટવા | મોઝી મુલ્લ, મોરણ્ટા | હલ્લવા |
| Tu | Ak nilufer, Sazamvagi | | | At boyruce |
| U. | Alliphul | | | Kulathi |
| Ur. | ખાવાલકન | કુમ્મી | દાસોદોરાણિ | |

| चयिका | | ३३ | चिरबिल्ल |
|-------|------------------------|--------------------------------------|--|
| S. | चयिका | बाएटी | चित्रक |
| A. | Dar fulful | | Shitrag |
| B. | चोई, गच्छा | रुनभो | शिता, चित्रक |
| Bi. | | | |
| Bu. | | | Kanchopphiyu |
| | | | Myau kseik |
| C. | चव्य | | चित्रमूल, मूत्रिके |
| Cu. | | | कसद्रि, निलवहि |
| E. | Long pepper | | Lead wort |
| F. | Poirvri long | | Indian elm |
| Guj. | चवक | | चितरो |
| Ge. | Langer pfeffer | | चरेल, वृणजो |
| H. | चार | रतनपुरुष | पीता |
| I. | Pepe lungo | | बिलविल, घिला, चिरविग |
| L. | Piper chaba (Hank). | Ionidium suffruticosum (D. c.) | Plumbago zeylanica L. |
| | | | Holoptelia integrifolia (Planch) |
| M. | चवक | रतनपुरुष | चित्रक |
| | | | भावडा |
| Ma. | | अरेलातमार | ग्रमुकोदुवेरी |
| | | | भावक |
| P. | | | Shitarak, Shittrak |
| Pu. | | | चित्रक |
| | | | अर्जन, दाचाम् |
| Sinh. | | | निष्ठुल |
| Si. | | | दाडाहिरिडा गोडकिरिडा |
| T. | | ओरिलैतमारै | कणैलम्, चैफोविवेलि |
| | | | चेळ्ळाय, आवा |
| Tc. | सेवासु | नीलकोमरी | अमिमाता, चित्रमूलसु |
| | | | पेटनेविलि, तप |
| Tu. | Dar biberi | | |
| Ur. | | | Chitalakri |
| | | | चितासुरो, मिस्तासु |
| | | | धारंगो |

| S. | चिभट | चिल्ली | चुक्रिका | चुचुपर्णी |
|-------|--------------------|----------------------------------|----------------------------|-----------------------------------|
| A. | Qawun | Fisa el Kilab | Hhummad, Hhanbit | Mulukhiyah |
| B. | काकरी, काकुर, फुटी | बाधुसम चन्दनवेष्ट | चाक, चुक, चुका | वानपाट, भुन्गीपाट |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Takhya | | Kala Khenboun | |
| C. | कलिंगड, वसंगार्ह | चकवती | | चुचुलसिडा |
| Cu. | | | | |
| F. | Melon | Goose foot, Wild spinach | Sorrel | Jews mallow |
| F. | Melon common | Grasseline, Poulegrasse | Oseille d' Ameroque | Mauvedes Juilos, Melochie |
| Guj. | चीमडुं | चील, टांको | चूको | छुंउ |
| Ge. | Melone | Weisse melde, Weisser gan sefuss | Amerikanischer Sauerampfer | Judenmalve, Me' -hie |
| H. | फूटककरी | वधुभा | चूरा | पाट |
| I. | Melone, Popone | Rosso, Gallina Grassa, Farnaccio | Romice d' America | Malva dei giardini Cororo ortense |
| L. | Cucumis melo L. | Chenopodium album L. | Rumex Vesicarius L. | Corchorus olitorius L. |
| M. | चिबुड | चाकवत | चुदा | चूच |
| Ma | | | | |
| P. | Kharbuzeh | Khurfa, Khuruelasafir | Turpak | |
| Pu. | | बाधु, बाधुआ | काद्यमीथा, खाटवीरी | वनफल |
| Sinh. | | | सूरी | |
| Si. | गिप्रो | नील | चूका | वनपाट |
| T. | काकरीकै | पहपुकिरै | शकन्कीराई | पेरदी |
| Te | पेशाई | पपुकरा | चुकाकुरा | परिण्टा |
| Tu. | Kavun fidani | Ak pazi | Humad otu | Muluhia |
| U. | Kharbuzah | | Chukakasag | |
| Ur. | | | | ओटो |

| चोरक | ६५ | जलपिप्पली |
|----------------------------|---|--------------------------|
| S. चोरक | जम्बु | जया |
| A. | Tuffahh el ward | Sasban, Saysaban |
| B. | ढोडाजाम्, बालजाम् | जयन्ती |
| Bi. | | |
| Bu. | Thabye | Yethugyi |
| C. | ने-छे, जम्बुनेरिछे | जयन्ति, जीनगि |
| Cu | | |
| E. | Jambol | Sesban |
| F. | Eugenier jambos, Jambosier | Sesbane, Sesbanie |
| Guj. चोरक | जांबु | रायसिंगनी |
| Ge. | Jambosenbaum | Sesbanie, schuurfrechme |
| H. चोरक, चोरा | जामुन | जयन्ति |
| I. | Prugna di Malabar, Mel arosa. Pomo rosa | Sesbania |
| L. Angelica glauca (Edgew) | Eugenia Jambos (Lamk) | Sesbania ægyptica (Pers) |
| M. | जांभूक | शेवरी |
| Ma. | जांबु, चांपा, ववेम् | मेळित्ताळि, शेम्प |
| P. | | Sisiban |
| Pu. चोरक, चोरा | | |
| Sinh. | जांबु | |
| Si. | जामु | |
| T. | जम्बुनाग, पेहनावल | साण्डै, चिरगति |
| Te | जम्बुनेरुडु | गाचिम्मा, सोमिण्ट |
| Tu. | Jamboz ag | Sesban |
| U. | Julab Jaman | Jait |
| Ur. | जांबु | ओयोन्नि |

| जाती | ६६ | | जामूत |
|-------------------------------------|-----------------------------|---------------------|--------------------------|
| S. जाती | जाती (प्रवाल) | जिह्मिनी | जीमूत |
| A. Gawz et tib, Gawz' buwa | Pasmaln | | |
| B. जातीफल Bi | जाती | जीओल | देवताड |
| Bu. Myatle, myatloe | | | |
| C. जाति | अजुगे, जाईपत्रे | चडिमर, भौरीथ | देवडांगर |
| Cu. | | | |
| E. Nut meg | Jasmine | | Bristly luffa. |
| F. Muscadier | Jasminede catalogne | | |
| Guj. जायफल | चमेली | मवेडी | कुटडवेला |
| Ge. Muskatnussbaum | | | |
| H. जायफल | चमेली | जिंगन | विंदाल, बंदाल |
| I. Noce moscata, Miristica | | | |
| L. Myristica fragrans (hout) | Jasminum granlaiforum L. | Odina wodier (Rorb) | Luffa echinata (Roxb) |
| M. जायफल | चमेली | मिपटी | देव डंगरी |
| Ma जातिक, जातिकलम् | मालति, पिचकम् | एति | देवताडी |
| P. Gauzibuya | Hashim | | |
| Pu. | चम्पेली, जानी | | |
| Sinh. सधिक | | | |
| Si. | | भुई | जंगथोरी |
| T. आदिफलम्, अट्टिमम्, च डि | चादिमल्लिग, वाणम् | ओदियमरम् | |
| Te. लवङ्गमु, जातिकलम् | जात्रि. मालति | ओट्टिमात्र | पालिबिर |
| Tu Kucuk hindistan, Cevizi ag | | | |
| U. | Chambeli | | Kukarabel |
| Ur. जातिकोरो, जाईत्रि | चोम्पेलि, जाईफुलो | | |

| जीरक | | ६७ | ~ ज्योतिष्मती | |
|-------|-------------------------------------|----------------------------------|---|------------------------------------|
| S. | जीरक | जीवन्ती | जूर्णाहा | ज्योतिष्मती |
| A. | Kammun, Sannut | | Dhurabnili, Dhurah sayji | |
| B. | जंरा | | जोवार, कुर्दि | मालकाङ्गी |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Ziya | | Pyoung | Myinkoungna- young |
| C | जंरा | | गाड | गदनगोक्षे, कर्मगवने |
| Cu. | | | | |
| E. | Cumin seeds | Cork swallow wort | Great millet | Staff plant |
| F. | Cumin | | Sorgho Commun grand millet Great millet | |
| Guj. | जीरं | दरी, गाडरी | जुवार | मालकाङ्गी |
| Ge. | Echter romerkummel | | Agyptische reiskorn Mohrenbartgros. | |
| H. | जंरा | दोरी, जीवन्ती, जंजी | जुआर | मालकाङ्गी |
| J. | Comino- domestico Ciminodolee | | Sorgo a scopa, Miglio | |
| L. | Cuminum cyminum | Leptadenia reti- culata (W&A) | Sorghum vulgare (pers.) | Celastrus pani- culatus (willd) |
| M. | जिरे | रायदेही, दंरी | जोधळा | मालकाङ्गी |
| Ma. | जीरकम् | | चावेला | पालकावम् |
| P | Zira | | | |
| Pu. | | | भाभाजुपाव, जोअर | साङ्खु |
| Sinh. | दर, सुदुर | | करलिरिदु | दुडुड |
| Si | जंरा | | | |
| T. | सौरगम् | पाहैफोडि | चोलम् | अडिवारिचम्, चंरियम् |
| Te. | जीरक | सुष्टदम्बुड, पालदीगे | जोअर | एरुदड, मालकाङ्गि |
| Tu. | Cimen. Kimyon | | Dari Zura | |
| U. | Jirah | | | Malkanguni |
| Ur. | | | | काटोवेचो |

| टङ्क | | ६८ | तण्डुल |
|-------|--------------------|--------------------------|------------------------------|
| S. | टङ्क | टण्डुक | तगर |
| A. | Kumnathra, Ingass | | Asarun |
| B. | | खोना, नाखोना | तगोर, बारबुर |
| Bi. | | | |
| Bu. | | Kyaungya | Chan, San |
| C. | | सोनेपट्टे, टण्डुकर | नान्दिवट्टल |
| Cu. | | | अक्की |
| E. | Peer tree | Indian calosanthes | Indian valarian |
| F. | Poirier | | |
| Guj. | रटङ्क (कारमी) | टेंदु | तगर |
| Ge. | Echter birnbaum | | |
| Hi. | नास्पती, नशपाति | टेंदु | तगर |
| I. | Pero | | |
| L. | Pyrus- communis L. | Oroxylum- indicum (vent) | Valeriana hardwic kii (wall) |
| M. | नास्पती | टेंदु | तगरमूठ |
| Ma. | | अरकु, पलरपायणि | |
| P. | Nashpati | | |
| Pu. | वटङ्क, नसपानी | मिरिङ्क, मोरि | बाल, तगोर |
| Sinh. | | तोदिङ्का | |
| Si. | | | |
| T. | पेगीकाय | अधि, अरण्ड, पन | |
| Te. | वेरिकाय वेरीपाण्डु | दुग्गिड्यम्, मोक्कनेर | |
| Tu. | Armud ag | | |
| U. | | Arlu | |
| Ur. | | पोम्पिडि, सेणो | |

तण्डुल

Ruz

चा १-धान

Chan, San

अक्की

Rice

Riz

चखा

Reis

चावर-पाफ

Riso

Oryza sativa L.

भात

अरि

Biranj

मुंजी, बालियन, ताये

दुल्, गोयान्

सरि

नेटु

पाय्यम्

Pirinc

Chan-cha.

चौल, धान

| तण्डुलीयक | | ६९ | ताडक |
|-----------|------------------------------------|--------------------------------|-------------------------------------|
| S. | तण्डुलीयक | तदणी | ताडक |
| A. | Zarmab | Wardah katbirat ul waraq | Tal, Dom, Shag clmaql |
| B. | चम्पनातिषा | गोलाप | ताल |
| Bi. | | | |
| Bu. | Thitchabo | Huinsi | Tau |
| C. | किरकहाले | गुलाबि | तार, करिताळे |
| Cu. | | | |
| E. | Prickly amaranth | Cabbage rose | Palmyra palm |
| F. | Tamala | Rose a cent feuilles | Borasse, Rondier, |
| Guj. | तांदळजो | गुलान | ताड |
| Ge | | | Palmyrapalme, Weinpalme |
| H. | चौलाई | गुलाब | ताड |
| I. | | Doppia, Rosellina dimacchia | Palmadel ferro, Palmadel palmira |
| L. | Amaranthus polygamus (willd) | Rosa Centifolia L. | Borassu flabellifer L. |
| M. | तांदुळभा | गुलान | ताडपत्र |
| Ma. | | गुलाब | करिम्पन, तालम् |
| P. | Sadrasn | Gul, Varda | |
| Pu. | | गुलाब | |
| Sinh | | | ताल |
| Si. | | | |
| T. | तालिशप्पट्टिरि | इरोस | चरुप्पनै, करदाळम् |
| Te. | तालीशपट्टि | गुलाबि, रोजा | ताड, करताळम् |
| Tu. | | Van giillii | Tedmir hurma ag, Tal |
| U. | Tejapat | | Tad |
| Ur | | | ताडो, तान्ने |

| तामलकी | ७० | तालीश |
|-------------------------|--------------------------------|------------------------------|
| S. तामलकी | ताम्बूल (पत्र) | तालमूली |
| A. | Tambul, Shah Sini, Tamul | |
| B. भूईआमली | पान | तालमूली |
| Bi. | | तालीसपत्र |
| Bu. Mizī phiyu | Kun, Kwan | |
| C. विरिनेल्लिगिडा | वीर्यद्वल्लि, नागवल्ली, | नेलताळिगड़े |
| Cu. | | तालीसपत्रे |
| E. | Betel leaf | Black musale |
| | | Himalayan silver fir |
| F. Harbe du chagrin | Betel, Temboul, Poivrier betel | |
| Guj. भोयआंवली | नागरवेलनां पान | काली सुसली |
| Ge. Weisse blatt blume | Betel Pfeffer strauch, Betel | |
| H. भूईआमला | पान | सुसली |
| I. | Betal | |
| L. Phyllanthus niruri L | Piper betel L | Curculigo orchioides (gaert) |
| | | Abies webbiana (windl) |
| M. भूयआंवली | नागवेल | काली सुसली |
| Ma. किरिगानेल्लि | ताम्बूलम्, वीतिक | नेलाप्पनकिल्लभा |
| P. | Bargetanbol | Musali |
| Pu. | | |
| Sinh वित्तवाका | बलान बुलानवेल | हिनविस्ताल |
| Si. निहरी | | |
| T. किलनेल्ली | चुकुलि, इल्लकोडि | निलप्पनै, कीरहान्गु |
| Te. नेलावुसारी | तमलपाकु, कस्मेराकु | नेलतोडी |
| Tu. | Tambul, Betal | |
| U. Bhui amla | Pan. | Musali |
| Ur. भूईआमला | नागवेलो | |

| तिनिश | | ७१ | तिलपर्णी | |
|-------|--------------------------------------|--------------------------------------|------------------------|--------------------------------------|
| S. | तिनिश | तिन्दुक | तिल | तिलपर्णी |
| A. | | Abnuṣ chjndi | Sim. sim | Tamalikal, Abu, Qam |
| B. | तिनिश | नकुनकन्दी गाव | पालातिल, तिल | हुलहुल |
| Bi. | | | | |
| Bu. | | | Hnan | |
| C. | वटहोले, हलि, मलेहोले | हीनेवण्ड, कुसुरे, गोविन्दु | एळु | श्रीफल |
| Cu | | | | |
| E. | Chariot tree | Riber ebony | sesame | Caravalla seeds |
| F | | | Sesame, Jugeoline | Brede caya |
| Guj. | तगळ | दिवरवी | तल | धोळी तलवणी |
| Ge. | | | Sesam, olliuge | Kleome senfkapper |
| H. | सन्दन | गाव, तेंडु | तिल, जिजली | दुरदुर |
| I. | | | Sesamo, Giuggiolena | |
| L. | Ongeinia dalbergioides (Benth) | Diospyros cambroypteris (Pers) | Sesamum indicum L. | Gynandropis pentaphylla (D. C) |
| M | तिवस | टेंडुगणी | तील | पांढरीतिळवण |
| Ma. | मलवेण, नेमि | पानधि, वनधि | एळु | वेल |
| P. | | Abnuṣchindi | Kunjad | |
| Pu. | सन्दन | | कुनजाड, तील, तिली | |
| Sinh | | तिविरि | तल | वेल |
| Sl. | | | तिल | किनरो |
| T. | नारिवेणी | काटान, पानिधै | एळु | वेलै |
| Te. | मगडभोवुळ, नम्मि | एटिमुम्मिक्, गधु | मुधु | वेअळुरा |
| Tu. | | | Susam, Sirlagan | Tamalika |
| U. | | Tindu | Til | |
| Ur. | पानधोले | केण्डु | | |

| तुम्बी | उर | तुवर |
|---|------------------------------|-------------------------------|
| S. तुम्बी | तुम्बुरु | तुम्बुक |
| A. Qar tawil, Qar dubba | Fagirch | Basiasayal |
| B. निक्कलाऊ | नेपाली घनिया, जीर, गैरा | शानी बीवा |
| Bi | | |
| Bu. Businswai | | Nantayok |
| C. कट्टिर | विम्म | पितारस |
| Cu. | | उप्पटि |
| E. Bottle gourd | | Storax |
| F. Bouteille, Calebasse d Europe | | White mangrove Paletuvier |
| Guj. कडवी तुंबडी | | पितारस |
| Ge. Echter flaschenkurbis | | तवरीया Saizbaum |
| H. कटुलीकी | तेजफल | पितारस |
| I. Zucealunga, Z a fiasco z bottiglia | | बी । Avicennia |
| L. Lagenaria vulgaris (Ser) | Zanthoxylum alatum (Roxb) | Altingia excelsa (Noronha) |
| M. कडूभोपळा | नेपालीघने | पितारस |
| Ma. वेळशोरा | | तिवर |
| P. Kaddushirin | Kababe, Jahanulsha | शूरि, शूरप्पम् |
| Pu. तुम्बा | कबाब, तेजफल | Ascleluben |
| Sinh. दियालावु | | |
| Si. कटु | | तिवर |
| T. पाराक | | कागडल, मईप्पट्टै |
| Te. अलवुन | | तेजमड, एरिवोयु |
| Tu. Sukabagi, Sukabak | | Kuram |
| U. Kadugol | Kababe | |
| U - | तुम्बोफोड | Silaras |

| वृक्ष | वृक्ष | वृक्ष | वृक्ष | वृक्ष |
|-------|----------------------------|-----------------------------------|-------------------------------|-------------------------------|
| S. | Tut | Kadi | Zarir | Turbud |
| B. | वृक्ष | केमोरी, केतुकी | | दधकर्म |
| Bi. | | | | |
| Bu | Posa | Satthapu | | |
| C. | हिप्पलिनैरिडे, कोरिह्मण | वेतकि, गुण्डिगे, केदिगे | | आहुतिगडे, विठेनागदन्ति |
| Cu. | | | | |
| E. | Mulberry | Screw pine | | Indian Jalap |
| F. | | Baqusis, Vacouet Vaquois | | Turbith |
| Guj. | शेतर | केवडा | | नसेातर |
| Ge. | | Pandanus palme. | त्रायमाण | Turbith |
| H | वृक्ष | केवडा | | निगोथ |
| I. | | Pandano odorasa, pandano cacca | | Turbide |
| L. | Morus indica L | Pandanus odortissimus L | Delphinium zalil (Aitch) | Ipomea turpethum (Br) |
| M. | वृक्ष | केवडा | त्रायमाण | तेड, निशातर |
| Ma. | चैरुमुक, तूलम् | कैट, पुल्लिपाम्बु, ताले | | चिवाक, रोचणि |
| P. | Shihatuta, Tut | Gulkiri, Kadi | | |
| Pu. | करन, वृक्ष | | | चित्तयऊष |
| Sihn. | | रुम्पी | | |
| Si. | वृक्ष | | | |
| T. | चादिनी, मुचुकट्टे | काण्डाल, केदिगे, ताले | | पगणुरै, कुम्भम् |
| Te. | पुस्तिक | गेदमि, गोज्जणि, मोगलि | | एररतेगड, तेळतेगड |
| Tu. | | | Zerdecop | Tarbit |
| U | Shahetuta | Keora | | Turbud |
| Uf. | वृक्ष | कायकोण्डा, केतोकी | | दुधोलोमी |

| त्वक् | दंत | दन्त | दन्ती | दर्भ |
|---|--------------------------|------------------------------|-------|-------------------------|
| S. त्वक् | दन्त | दन्त | दन्ती | दर्भ |
| A. Darsini, Qirfah | Qalambah | Habbussalati-nebarri | | |
| B. दालचीनी | वरानेवू, करणनेवू | दन्ती, दाकुम् | | दर्भ |
| Bi. | | | | |
| Bu. Hmauthin | Kigisamyasi | Natcho | | |
| C. दालचिनि, लवङ्गचफे | वीजपूर | दन्ती | | |
| Cu. | | दन्तीमूल | | |
| E. Cinnamon Tree | Lemon | Wild croton | | Sacrificial-grass |
| F. Cannellier de ceylan, Cinnamone | Limonier | | | |
| Guj. ताम्र | मोठं लिम्बु | दन्तीमूल | | दर्भ, दाभटो |
| Ge. zimbbaum | Citrone | | | |
| H. दालचिनी | जंजीर | दन्ती | | दाभ |
| I. Cannella. C. del ceylon, Albero della Cinnamo, | Limone | | | |
| L. Cinnamomum zeylanicum (Br) | Citrus limonum (Sp Riss) | Baliospermum montanum (Mudy) | | Poa cynosuroides (Retz) |
| M. दालचिनी | मोटलिम्बु | दान्ती | | दर्भ |
| Ma. एरिक्कोलम्, करुन | भातलम् | दंतिक्का | | |
| P. Talikhahe | Kalimbak | Bedangirckhatai | | |
| Pu. दारचीनी | गुलगुल | | | दाभ |
| Sinh. छुरण्डु | नत्रम् | | | |
| Si. | सीधारेन | | | दाभ |
| T. पुशामडिल्लु, पुशमिवायु | सुरकु | बाडमगु, पेयानणकु | | |
| Te. लवङ्गपट्ट, तमलवण | वीजपूर | कोण्डोमुदमु, नेलमंडि | | दर्भ |
| Tu. Tar cin ag, kurfa ag | | | | |
| U. Darchini | | | | |
| Ur. दालचिनी, गुग्गुलु | वीजपूर | दोन्ति | | |

| दाडिम | उप | दुःस्पर्शा | |
|-----------------------------|----------------------------|--------------------------|--------------------------|
| S. दाडिम | दारुहरिद्रा | बुन्धिका | दुःस्पर्शा |
| A. Rumman, al Lufan | Aargis | | Hhulawa, Shukan |
| B. दल्लिगच्छ | | बुराफेर | दुगलभा |
| Bi | | | |
| Bu. Salebin, Talibin | | | |
| C. अडिम्बे, दालिम्बे | कमिस्त, मरदरिशन | अवेमिडा | |
| Cu. | | | धमाऊ, धमाधे |
| E. Pomegrante | Indian barberry | Australian asthma weed | Cretan prickly clover |
| F. Grenadier | | | Trifle epineux de candie |
| Guj. दाडिम | दारुहरिद्रा | दूधली, दूधी | धमाधे |
| Ge. Echtergrana- tabaum | | | |
| H. अनार, दाडिम | दारुहरिद्रा | दूध | धमाधे |
| I. Pomogranato, pomo punico | | | Trifoglio spinoso |
| L. Punica granatum L. | Berberis aristata, (D. C.) | Euphorbia piluli- fera L | Fagonia arabica L |
| M. दालिम्ब | दारुहरिद्रा | मोथीदुधी | धमाधे, धमाधे |
| Ma. मातलम्, रफमीनम् | मरमाल, मरमाल | नेलपल्ले | |
| P. Anar | Chitra, Zirishk | | Badavard |
| Pu. अनार | बिना, कासमाल | | धमा, समध |
| Sinh. देउन्, देउगद | | पूददफिरिया, बिरितल | |
| Si. अनार, दालिम्ब | | | धमा |
| T. मादुळे, दाडिमम् | मुदुफाट, मुचिकाट | पञ्चयामिस् | |
| Te. दाडिम्ब, दाडिमम् | | नानयिदान | चित्तिगास |
| Tu. Nar ag | | | Dikenli yonea |
| U. Anarmitha | | | Badavard |
| Ur. दालिम्बो, दालिमो | | | |

| द्वी | उद् | द्राक्ष | |
|---|---------------------------|--------------------------------|------------------------------|
| S. द्वी | देवदारु | द्रव्यती | द्राक्षा |
| A. Nigll Nagir, Thil | Abhol hindi, Shag el ginu | Abate khrub | Karm Enab अङ्गुर |
| B. द्वी, द्व | देवदारु, देवदार | लालमेरेण्ड | |
| Bi. | | | |
| Bu. | | | Sabisi, Sabyit |
| C. गरिहृष्ट | भद्रदारु, पीतदार | तेतलागिभ | अङ्गुर, दाक्षे |
| Cu. छत्र | | | |
| D. Scutch grass Hariali couch grass | Deodar | | Grape vine |
| E. Hurbe du bermudes, Chiendent | Cedre deodar | | Vigne, vigne noble |
| Guj. प्रो, धरो | देवदार | रतवजोत | द्राक्ष |
| Ge. Echter hundrzahn | Indische ecder | | weinrebe |
| II. द्व | देवदार | जंगली एरण्डी | अङ्गुर |
| I. Dente canino, Capriola | Cedro deodara | | Vite |
| L. Cynodon dactylon (pers) | Cedrus deodara (Loud) | Jatropha glandu- lifera (Roxb) | Vitis vinifera L. |
| M. द्वी | देवदार | जंगली अरुंदी | द्राक्ष |
| Ma. कशिहृष्ट | देवदारम् | बाइल, नाकदन्ति | चारुफल, मधुरसम् |
| P. | Deodar | Baide angira | Angur |
| Pu. दौर्ग, कच्चार | देवद र्, दादा, केली | | अङ्गुर, दाक्ष |
| Sinh. | | | मुद्गाप |
| Si. छत्र | | | द्राक्ष |
| T. अङ्गमपिष्ट | देवदारम्, वण्डुगोष्टि | आदक, पल्लियमकु | चीसुडै, कोष्टणि, निराडकम् |
| Te. धेरिचा | देवदारु | कुण्डिगमु, नेपालेमु | द्राक्ष, क्लिमुगी |
| Tu. Buyukayrikotu | Cin ag, Deodar | | Asma |
| U. Dub | Deodara | Jangli eranda | Angur |
| Ur. | | सीम'नोरोकोकाओ | द्राक्ष, गोस्तोनि |

| धन्वन | | ७७ | धान्यक | |
|-------|--------------------------------|--------------------------------|-------------------------------------|----------------------------|
| S. | धन्वन | धव | धातकी | धान्यक |
| A. | | Kahti | Zahret el baqur | Kuzbarah |
| B. | धामनी | धाओया | धाई, धोव | धने |
| Bl. | | | | |
| Bu. | | | Patlugyi, Yelkyi | Naunau |
| C. | बुईके, तउचलि | बेकलु, रिण्डल | आरे, बला | कोत्तम्बरी |
| Cu. | | | | |
| D. | | Button tree | Pulsee flower tree | Coriander |
| F. | | | | Coriander |
| Guj. | धामन | धावडो | धवडी | कोथमीर |
| Ge. | | | | Echter Koriander |
| H. | धामनी | धन | धाऊ | धनिया |
| I. | | | | Erba Cimiana, coriandro |
| L | Grewia tillio- folia (vahl) | Anogeissus latifolia (wall) | Woodfordia flori- banda (salisb) | Coriandrum sativum L. |
| M. | धामन | धावडा | धावडी | कोथमीर |
| Ma. | चउधि, उना | मालकाणिरम्, वेळुम्ब | तातिरे | कोत्तम्बरी |
| P. | | Baklu, Banti | | Kashmir khuska |
| Pu. | | | ददि, खुई | |
| Sinh. | दमिजे | धातु | मलित | कोथमल |
| Si. | | | धाई | धनो |
| T. | चउधि, उणु | नामं, वेकनामै, वेकालि | वेळुके | कोत्तम्बरी |
| Te. | एरुतड, तुलिनाम | चिरिमानु, सिरिमानु | धातकी, गोडारि | कोत्तिमिरे, धान्यक |
| Tu. | | | Woodfordia Inek cic | Kinnis otu |
| U. | | Bakla, Banti | | Dhanja |
| Ur. | धामनो | धौड | धावुवी, धावुधो | |

| धामार्गव | | ७८ | नलिका |
|----------|------------------------------|---------------------|-----------------------------------|
| S. | धामार्गव | नन्दीतक | नल |
| A. | Luf | | नलिका Udhunel hhimar, unuma |
| B. | धुन्दुल, हस्तिपाप | कामरूप, जीर | नल |
| Bj. | | | |
| Bu. | Thabwot | Nyaungok | Kaing |
| C. | | हिलाल, पिळाल | हुळिगिड, हुळगलपु |
| Cu. | | | |
| E. | Towel gourd, | | Nodding reed |
| F. | Eponge vegetale | | Cannette |
| Guj. | गरुडा | नन्दीवृक्ष | नाली |
| Ge. | Agyptische schwammkurbis | | Sandlotwurz |
| H. | विद्या तुरडे | पिर, पिलखन, कमरुप | नरकुल |
| I. | Petuolo, Spugna vegetale | | Borrana: sal- atica: onosma |
| L. | Luffa aegyp- tiaca (mill) | Picus retusa L | Phragmites karka (Trin) |
| M. | धोसाले | नान्दुक | नल |
| Ma. | | इष्टियाल् | नरुम्, नावल |
| P. | Khujar | | |
| Pu | पितुराय | | नल |
| Sinh. | नेयाइनसोलु | पुनुग | लालजली |
| Sl. | तुरि | | |
| T. | पिकु | इबि. मलैयिधि | पेहनायाळ |
| Te | गट्टिविरा | कोण्डपिलर, वेरिनुवि | विकपगादि, पेहंरु |
| Tu | Misir kol kabagi Luf | | Sincar, Yalan havaciva otu |
| U | Turi | | |
| Ur | | | नोळो |

| S. | नवमालिका | नाकुली | नागमला | नागरङ्ग |
|-------|--|---------------------------|------------------------------|--|
| A. | Full | Zaravande hindi | | Burtuqal, Burtuqan |
| B. | वनमल्लिक, बेल. | इसरमूल | गोरखचाकुं | कामलानेवु, नारंगी |
| Bf. | | | | |
| Bu. | Mali, sabay | | | Liengman |
| C. | चण्डुमल्लिगे, मल्लि | ईश्वरीबल्लि | | कितले, नादेई |
| Cu. | | अर्कमूल | | |
| E. | Tuscan jasmine | Indian birth wort | | Orange |
| F. | Jasmin d' Arabie | Aterlusi | | Oranger, Oranger franc |
| Guj. | मोगरो | नोवेल, अर्कमूल | गंगेटी | नारंगी |
| Ge | Sambac jasmin | Arabischer jasmin | | Orangenbaum |
| H. | बेल, सुग्रा | ईश्वरमूल | गंगेरन | नारंगी |
| I. | Mugarino doppio Gelsomino a fiori grandi. | | | Melarancio arancio dolce cetrangolo, Portogallo |
| L. | Jasminum sambac (Ait) | Aristolochia indica L. | Grewia populifolia (vahl) | Ci'rus aurantium L. |
| M. | मोग्रा | सायसन्द | गंगेटी | संघे |
| Ma. | पिचकम्, चेरुपिचकम् | गरलवेणम्, पेरुमरुन | वलिय ऊरकं | मधुनारण्ण |
| P. | Gulesuped, Zambak | Zaravande hindi | | Naraug narerdj |
| Pu. | सुग्रा, चंचेली | | | नारंगी, सनतरा |
| Sinh. | पिच्छिमल | | | दोदन, दादंग |
| Si. | | | | |
| T. | कोण्डम्, मल्लिगे | इचडेचट्टि, ईचुर | | नागम |
| Te. | वोडुमल्ले, मल्ले | ईश्वरवेर | कट्टेकोण्डु, कट्टदरि | नागि |
| Tu. | Full, Misir Yasemini | | | Portokal ag Portokal ag |
| U. | Azad, Raibel | Shapesand | | Naraugi |
| Ur. | बेलोकुलो, मोल्लिका | गोपोरोरोणि | | नारंगी |

| नाडी | नाडी | नालिकेर | निकोचक | निचुल |
|-------|--------------------------------|---|----------------------------------|--|
| १. | नाडी | Gawzel hind, Nargil | Pustug | निचुल |
| ३. | कलमी शाक | दान, नारिकेर | गेतेल | हीमल, कुर्माआ |
| ३i. | | | | |
| ३u. | | On, Ondi, Oug, Onti | | Kyathia |
| ७. | | तेगु तेमिनवाई | | नीरुगणिपुल, होलेकव |
| ७u. | | | | |
| ८. | | Cocoa-nut | Pistachio tre | |
| ८. | | Cocotier | Pistachier d levant | |
| Guj. | नाडानी भाजी | नालिकेर | विस्ता | समुद्रफल |
| ८e. | | Indian ischer nusbaum, kokos- palme | Echte pistazie, Pistazienbaum | |
| I. | बलम साग | नारियल | पिस्ता | हिमल |
| I. | | Albero del cocco, Cocco palm di latte | Pistacchio comune, Pistacchio | |
| L. | Ipomoea aquatica (Forsk) | Cocos nucifera L. | Pistacia vera L. | Barring tonia- acutangula (Geertn) |
| M. | नाड | माड | गिम्मे | सधफल, समुद्रफल |
| Ma. | | चौचम, कुञ्जै, तेद. | | अरुपेर, निरुपेर |
| P. | | Badinj, Nargil | | |
| Pu. | नाळी | | | |
| Sinh. | कागकुन | बोल नागिली | | इडाभीडेडा |
| Si. | नारो | | | |
| T. | कोइलहु, धारकरवल्ली | नाडिग डम्, तेवै | | भारम, कणटि |
| Te. | तुतिकुरा | टेनका, नारिकेरसु | | कडम्, कणिगि |
| Tu. | | Narcil ag, Hindu- stan cevizi ag | Sam fistik ag | |
| U. | Narikakal | Narivel | | Samandarphala |
| Ur. | | नोडि. नारिकेल | | हिजोलो, निशिरा |

| निम्ब | ८१ | नीलिका |
|---|-----------------------|---------------------------------------|
| S. निम्ब | निर्गुण्डी | निष्पाव |
| A. Shagarah, Hho- rrah, Zauzalakht, Azadirakht | Aslag | Lablab |
| B. निम्ब | निर्गुण्डी | बोरबोटी |
| Bi. | | नील |
| Bu. Kamaka, Tamaka | Kiyubaubin | Pai |
| C. वेवु, वेसु | लकि, विळिनेकि | अवरे |
| Cu. | | नीली, अजुर, हेण्णुनीलि |
| E. Neem, Margosa | | Hyacinth bean |
| F. Azedarach, Lilas des indes | | Dolic lablab |
| Guj. लिंवडो | नगोड | वाल |
| Ge. Indian isehar lilak, Margosa, Zederach | | Gemeine lablab |
| H. नीम | निर्गुण्डी, संभाळ | लोविया |
| I. Albero dei paternostri, Azadarac, Lauro greco | | Dolico Egiziano, Fagiolo d' Egitto |
| L. Melia | Vitex negundo L. | Dolichos lablab L. |
| M. लिंव | निर्गुण्डी | वाल |
| Ma. राजवेप्पु, निम्बम | नोकि, इद्राणी | वेळवर |
| P. Nub-Nib | Banjangangasht | Lobiya |
| Pu. नीम | विषा, वेनफाट्ट | कालालोविया |
| Sinh. कोहुम्ब | निका. निलनिका | इरिविज |
| Si. निमुरी | निलनीका | वल |
| T. कडुप्पागै, मालूगम् | वेळैनिकी, चिन्दुवारम् | अवरे |
| Te. वेसु, निम्बसु | सिधुवारसु, वाविलि | अलसन्दा |
| Tu. Tesbih ag, Zehri zemin | | Lablab |
| U. Neem | | |
| Ur. लिम्को, निमो | सिधुवार, इद्राणी, | नीली, नीळो |

नीवार
८२
पत्र

| S. | नीवार | पटोल | पचूर | पत्र |
|-------|-------------------------------|-------------------------------------|------------------------|------------------------------|
| A. | | | Baratanaki | Dadarasani |
| B. | युरीषन | पोटोल | बेतसुर्गा | |
| Bl. | | | | |
| Bu. | | | | Lenkyan |
| C. | ज्यारहुमेदे | पचवळ | गोरगि | दालचिनी |
| Cu. | | | | |
| E. | | Wild snake gourd | | Cinnamon |
| F. | | Trichosanthes contourue | | |
| Guj. | बंटी, नमारचोरवा | पटोल | लांपट्टी | |
| Ge. | | Schlangen fruchliga haarblume | | zimmt |
| H. | तीनी, तीली | परवर | सकंदसुर्गा, सुर्वाली | दारचिनी |
| I. | | | | |
| L. | Hygrory za aristata (ness) | Trichosanthes diocea Roxb | Celosia argentea L. | Cinnamomum iners (reineu) |
| M. | देवभात | परवर | कुरडु | रानटालचिनी |
| Ma. | नीरवलिपुल्ल | पटोलम् | | कारकरवा |
| P. | | Palol | | Sailu myah |
| Pu. | वस्ताल | पालवल | सलगार | सलगार |
| Sinh. | गोजान्बा | | | कुरुण्डो |
| Si. | | | सर्वाल | |
| T. | | कंबुप्पुदलै | | कटुक्कुरुवप्पटै |
| Te. | | काम्बुपोटका | गुरुगु | पाचिकु |
| Tu. | | | | |
| U. | | Parawal | Sarwali | |
| Ur. | | पाटल | | |

| पत्राक | पत्राक | पत्राक | पत्राक | परूपक |
|--------|-------------------------|-------------------------------|-------------------------|-----------------------|
| S. | पत्राक | पत्राक | पत्राक | परूपक |
| A. | | | | Phalasa |
| B. | | कनधल, काथल | बिलायकन्द | कालसा, शुक्ररी |
| Bi. | | | | |
| Bu | Panni | Peingnai, Pienne | | pintayaw |
| C. | | हलसु, तागे, पनस, | भूमिचक्रगेदे, नेलसुम्बळ | बुद्धिपूडिप्पे, तचचलि |
| Cu. | | | | फोटीयाल, फालसा |
| E. | Himalayan cherry | Jack tree | Giant potato | Asiatic grewia |
| F. | | Jaq | | |
| Guj. | पत्राक | फणस, | विदारीकन्द | कालसा |
| Ge. | | Indeschir brothau | | |
| H. | पदम | चक्रि | बिलाईकन्द | कालसा |
| I. | | | | |
| L. | Prunus puddum (Roxb) | Artocarpus integrifolia L. | Ipomoea Digitata L. | Grewia asiatica L. |
| M. | पत्राक | फणस | भूईकोदळा | कालसा |
| Ma. | | कोदवक, वरिक्क | मुतालकण्ट, पालमुटकु | चाबीचा |
| P. | | | | Falseh, Palasa |
| Pu. | पदम | | | कालसा |
| Sinh. | | कोर | किरिवाडु | दोवनीय |
| Si. | | | | कालसा |
| T. | | मुससवलम्, वाडुकै | निलपूचणि, पालमुडकि | पलिच, उल्लु |
| Te. | | पनस, वेरुपनस | भूचक्रगड, गुम्मुडु | नल्लजान, जान |
| Tu. | | | | |
| U. | | Katabal | Balai kand | Phalasa |
| Ur. | | कोण्डोकाळो, पोनीवो | भूचक्रगड | फारीसाकोलि |

| परपटक | | ८४ | पलाश |
|--------------|----------------------|---------------------|------------------------|
| S. | परपटक | परपटकीफल | पलाण्डु |
| A. | | | Bassal |
| B. | | वाटेनपारीया, तेकारी | पलाण्डु, वियाज |
| Bi. | | | पलाश, पोलारी |
| Bu. | | | फारघ, पारघ |
| C. | | बौडुळ | Kesunni |
| Cu. | | | Pauk, Pin, Pouk |
| E. | | Winter cherry | नीरुळी |
| F. | | | शुतुग, सुताल |
| Guj. खडसलियो | परपोटी | कान्दा | पेतुडे, जोझाड |
| Ge. | | Onion | वेतुडे, जोझाड |
| H. | खरमोर | Ognon, Oignon | Bastard teak |
| I. | चिरपोटी | | Butee, Arbrea |
| L. | Rangia repens (Nees) | डुंगळी | lagre |
| M. | घाटी वित्तपापडा | Zwiebel | खाखरो |
| Ma. | चिरपोटी | Kinobaum, Lackbaum | |
| P. | निशयिडुय | प्याज | डाक |
| Pu. | हवीकाकनाज | Cipolla | Butea |
| Sinh. सडुनाई | मोटु | Allium cepa L. | Batea frondosa (Roxb.) |
| Si. | | कान्दा | पळघ |
| T. | कोडागसलै | वावांग | शामट, किशुकम् |
| Te. | कुपन्टी | Piyas | Darakhtepalah |
| Tu. | | प्याज | |
| U. | | लुम | कालिय |
| Ur. | | डुंगरी | |
| | | इरुळी | मुक्कु, किगम् |
| | | नीरुळी | मोटुग, पलाशम् |
| | | Sogan | Salan Sacag |
| | | Piyaz | Palash |
| | | | किञ्जुको, पोलोशो |

| पाटला | | ८५ | पालङ्क्या | |
|-------|--|---------------|-------------------------------------|---------------------------------|
| S. | पाटला | पाठा | पारावत | पालङ्क्या |
| A. | | | Guwafah, Safra | Isfanakh, Isbanekh |
| B. | धारमार, पारुली | | गौअली, पियार | पालंग |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Thakhwo- tthpo | | Malaka | |
| C. | हादरि, पादरि, रुलदुरे | पाडावदी | पेरल, गोव, जामफल | वसने |
| Cu. | | | | |
| E. | Trumpet flower | | Guava | Garden spinach |
| F. | | | Goyavier, Gouyavier | Epinard |
| Guj. | पाडला | काळीपाट | जमरुख, पेह | पालख |
| Ge. | | | Grosse gelbe guayava | Echter spinat, Garten spinat |
| H. | पाडल | | अमरुद | पालक |
| I. | | | Gaajave, Psidio, Pero dell indie | Spinace Spinacci |
| L. | Stereospermum Cyelea peltata chelonoides D. C. | H. K. | Psidium guayava L. | Spinacia oleracea L. |
| M. | पाडळ | पाशावळ | पेरू | पालक |
| Ma. | काचस्थलि, पातिरि | पाटकित्यु | मलाकापेर, कोय्या | |
| P. | | | Amreed | Isfinanj, Ispanak |
| Pu. | | | आमरुड | बीजपालक, पालक |
| Sinh. | लुनुमाडाल | | पेरा | |
| Si. | | | पैतून | पालक |
| T. | कणचिरुक्कम्, पाडलम् | | वेलैक्कोग, उय्यक्कोण्डन | बसैयीलौकिरै |
| Te. | कलिगोट्टु, मगवेप | वीसबोवी, पाडा | तेल्लजाम, गोय्य | दुम्पावच्चालि |
| Tu. | | | Hind armudu ag nari guafa | Ispanak, Ispannak |
| U. | | | Amreed | Palak |
| Ur. | पाटोळि | भोकानोविन्धि | बेटोजामो, जामो | |

| पाषाणभेद | | ८६ | पीलु |
|----------|------------------------------|---------------------|---------------------------------|
| S. | पाषाणभेद | पिण्डालु | पिप्पली |
| A. | Burbit, Siyaf | | Erq edh dhahab Dar fulful |
| B. | | चुवटि आलु | पिप्लामूल, पिप्पली |
| Bi. | | | |
| Bu | | | Peikchin |
| C. | हिट्टुळक | | हिप्पली, तिप्पली |
| Cu. | | | |
| E. | Indian rock foil Yam | | Long pepper |
| F. | Flambedeau | | Poivrier long |
| Guj. | पाषाणभेद | | पीपर |
| Ge. | Wasserschwertelilie | | Langer pfeffer |
| H. | पाषाणभेद | शकरकन्द | पीपल |
| I | Acorofalso, Gladi. ologiallo | | Albero del pepe, Pepe longo |
| L. | Saxifraga Lingulata wall | Dioscorea globosa R | Piper longum. L |
| M. | पाषाणभेद | गोराडु | पिप्पली |
| Ma. | | | चपला, कटुतिप्पलि |
| P. | | | Pilpil, Pipal |
| Pu. | | | पिप्लामूल, पिप्पल |
| Sinh. | | | टिप्पली |
| Si. | | | टिप्पली |
| T. | | कायवळि | सांचलै, आरगडि |
| Te. | | गूतपेण्डलमु | पिप्पळु, मोडि |
| Tu. | Sari Susan Kilic otu | | Bafer ag, Dar fulful |
| U. | | | Pipul |
| Ur. | | जोडुआलु | भाईहेहि, किकेला, मोगध, पिप्पोली |

| S. | पुनर्नवा | पुष्कर | पूरा | पृथ्वीका |
|-------|-------------------------|---------------------------------|-----------------------------|------------------------------|
| A. | Sabaka | Zanbaq azraq | Fufal Tanbul, kawthal | Halzakar |
| B. | पुनर्नवा, श्वेतपुनर्नवा | पुष्करमूल | सुपारि | परा-इलाची |
| Bi. | | | | |
| Bu. | | | kun, kungsi | Ben, Pala |
| C. | कोम्मेगिट | | अडिके, वेष्टे | रोष्टेलफि |
| Cu. | पुनर्नवा | | | |
| E. | Pigweed | Orris root | Supari palm | Greater carda mom |
| F. | Patagon | Lis sauvage, Flambe | Noisetted'inde, Aerc | |
| Guj. | साटोडी | पोकरमूल | सोपारी | मोटी एरुनी |
| Ge | | Blaaweiris, Deu- tsche lisch | Pinang palme Areka palme | |
| H. | साट, टिकि | पोकरमूल | सुपारी | वही इलाची |
| I. | | Azurro, Iride salvatica | Palmaarec, Arce | |
| L. | Boerhaavia repens L. | Iris germanica L. | Areca catechu L. | Amomum subu- latum (Roxb) |
| M. | पुनर्नवा | वाळवेखण्ड | सुपारी | मोटेवेलभोडे |
| Ma. | भासुधमा | | अटेका, चेम्पलुका, कामुक | चन्द्रवाल, पेरलम् |
| P. | Devasapat | Susari | Girdchob, Popal, Pupal | Hailkallan |
| Pu. | | | | |
| Binh. | जनतोपम् | | पुवाक् | |
| Si. | नकवेल | पोकरमूल | | |
| T. | मुकरेष्ट | | कसुपु, पफुप्पान | गरुगचनि, चिन्दिरिगे |
| Tc. | पुनर्नवा | | गौडपोक, ओप्पुवकुल | पेष्टेअकि |
| Tu. | | Mavi zambak Mavi susau | Fufal ag, Arek hurma ag | |
| U. | Bashkhira | | Supari | Ilayachikallan |
| Ur. | | | पूगो, सुपारि, त्रिनोडुमो | स्पूलेला |

| S. | पृश्निपर्णी | प्रसारणी | प्राचीनामलक | प्रियङ्गु |
|-------|----------------------|---------------------|-----------------------------|----------------------------|
| A. | | Bazraulkaras | Nabq hindi | |
| B. | संकरवटा | गन्धा, माधुली | पानीयाला | प्रियङ्गु |
| Bl. | | | | |
| Bu. | | | Naywed, Naywe | |
| C. | ओन्देलेहोले | हेसरिणे, कळुन्चोरि | किरिनेलि, गोरजि | तोडिलकार्यी |
| Cu. | | | | |
| E. | | | | |
| F. | | | Prunior malgache | |
| Guj. | पिठवण | प्रसारणघेल | | |
| Ge. | | | Flalourtje | |
| H. | पिठवन | गन्धालि | पनियाला | प्रियङ्गु |
| I. | | | Pruno d' India | |
| L. | Uraria picta (Desv.) | Paederia foetida L. | Flacourtia cataphracta Roxb | Aglaia Roxburg hiana (miq) |
| M. | पिठवण | प्रसारणी | ताम्बड, पान आवळा | गवला |
| Ma. | ओरिला | तालागिली | कनि वायुकट्टन् | चेम्पुलि, पुण्याव |
| P. | | | Talispatar | |
| Pu. | डेटरदाने | | | |
| Sinh. | | | रतंगवस्सा | |
| Sl. | | | | |
| T | चितारण्पालडे | | सरलु | कणिणकोम्बु |
| Te. | | साविंगला | कुरगार्ची | एररन्हुण |
| Tu. | | | Acab ag | |
| U. | | Gandhana | Tulispatar | |
| Ur. | ईश्वोरोजेडा | गन्धाली | पानियोगल | प्रियोङ्गो |

| પ્રિયાલ | | ૮૨ | ફરુ | |
|---------|---------------------------------|------------------------|-----------------------------|------------------------|
| S. | પ્રિયાલ | સુક્ષ | ફાંબી | ફરુ |
| A. | Habulsamnah | | | Tiu |
| B. | પ્રિયાલ | | | અંજીર, હુમુર |
| Bl. | | | | |
| Bu. | Lambo, Lamboben | | | Tiethie |
| C. | કેલેગેરુ, મુધકે | પિલ્લિવસરિ, દેશવસરિ | | અંજૂર |
| Cu. | ચારોલી | | કંગથલ | |
| D. | | | Goodnight flower creeper | Fig tree |
| F. | | | | Figuier Carique |
| Guj. | ચ રોલી | પીપર | કમિમો, ફાંગ | અંજીર |
| Ge. | | | | Echter feigen- baum |
| H. | ચાર | પીપર | ફાંગ, કલમીલતા | અંજીર |
| I. | | | | Ficaja, Fico |
| L. | Buchannania latifolia (Roxb) | Ficus tsiela (Roxb) | Rivea ornata (chois) | Ficus carica L. |
| M. | ચાંલી | પિપર | ફાંદ | અંજીર |
| Ma. | કાકમાવુ | ચેલ | | શીમયત્તિ |
| P. | Nakulekwajah | | | Anjir |
| Pu. | ચિરોલી, ચિરાંત્રી | | | ફેગરી, ફામુ |
| Sinh. | | પ્લાવુગ | | |
| Si. | | | | અંજીર |
| T. | ચારે | હલિયિ | મુચુદે | ચીમેયાહિ |
| Te. | ચાહમામિદિ | પેદુચિ | બોદિતીયે | જૂરુ, મણિમેદે |
| Tu. | | | | Incir ag |
| U. | Chironji | | | Anjer |
| Ur. | ચારો, પ્રિયાલો | ગોરિ | ઓન્દ્રોનોફ | પુષ્પેશુન્યો |

| फेनिला | | ९० | बला |
|------------------------------------|-----------------------|---------------------------|----------------------|
| S. फेन्ला | बकुल | बदरी | बला |
| A. Ritah | Qishdah hindi | Unnab | |
| B. वारासीदा | बकुल | बोगरी | बला |
| Bi. | | | |
| Bu. Meavmesne- khati | Kaya, Khaya | Zi, Ziben | |
| Cu. अंदाद | पगडे | बेरो | हेतुनि |
| Cu. | सुसल | बोर | बलबुवरो |
| E. Soap nut | Indian medlar | Jujube | |
| F. Savonnier, Rita Cavequi, Clengi | | Jujubier, Gingeolier | |
| Guj. बरीडा | बोलसरी | बोर | खरेटी, बलदाना |
| Ge. Seifenbaum | Elengibaum | Jugabebaum | |
| H रिडा | सुलसरी | बेर | कंधी, बोल्ला, बलदाना |
| I. Sapotiglia | Elengi | Giuggiolo, Melo d india | |
| L. Sapindus tri- foliatus L | Mimusops elengi L. | Zizyphus jujuba (Lamk) | Sida cordifolia L. |
| M. रीठा | बकुल | बोर | चिरुणा |
| Ma. अक्काय, पुलिचि | इरणिग | बदरम् , बोलम् | काटुरम् |
| P. Bindake hindi | | Kanar, Kunar | |
| Pu. | मौलसरी | बेर, बरो | खारेन्ट |
| Siuh. तालै मरठा | मुनेमल | महादेवरा | हिनदोना |
| Si. | | बेरजंगरी | बरियारा |
| T. पृथ्विकोट्टै, पुणलै | ले | अडिदारम् , बिबगम् | नीलतुत्ती |
| Te. फेनिलमु | साविगला | गंगरेणु | चिरुवैडा |
| Tu. Sabon ag | Kok1 | Unnab ag | |
| U. Ritha | Molsari | Ber | |
| Ur. मुगोजि | खीदि, बोकुलो | बोडोकोडि, बोडोरी | बिबोकोपारि |

| S. | विभीनक | विभीनी | विलय | वीजः |
|-------|-----------------------------|------------------------------|----------------------------|------------------------------------|
| A. | Balilag, Balilah | Kabar hindi | Bull, Qiththa el hind | Damulakhvain |
| B. | बहेरा | बीम्बु | बेल; बिल्व | पीतसाल |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Bankha | Kenbung | Okshit, oreshit | |
| C. | तारे | तोंडेश'ल | बिल्वपत्रे, मालूर | नेत्रहोत्रे |
| Cu. | बेहरा | बीलेडा | बीलीजो झाड | बीआ |
| E. | Beleric myro- balan | Scarlet fruited gourd | Bael tree | Indian kino tree |
| F. | Beleric myro- balan | Coccinie | Bel indien, | Kinodesindes |
| Guj. | बेहडा | डिंडेरा | बिभी | बिथो |
| Ge. | Myrobalanen- baum | Scharlachranke, | Bhelbaum | |
| H. | बहेरा | बंदुगी | बेल, सिरफल | बीया, बिजयसार |
| I. | Mirobalano | Coccolaba Uvifera | Bella indiana | |
| L. | Terminalia belerica Roxb | Cephalandra Indica (naud) | Aegle marmelos (Correa) | Pterocarpus marsupium (Roxb) |
| M. | बेडडा | तोंडले | बेज | बिबडा |
| Ma. | गजि, गुपम् | ग्वेज | कूबळम्, माविलावु | कण्टकर, धध |
| P. | Balela, Balilah, | Kabaret hindi | Safarjalehindi | Kbunesiah- wasbam |
| Pu. | बहेरा, ब हीरा | धोल कन्दुरी | धील | |
| Sinb. | बुड | बीवाक | बेली | गन्गलु |
| Si | बेरा | बंदुरी | बील | |
| T. | अकन, अम्बनट्टि | कोवे | अलुसीगम्, मा बिल्लै | कुग'त्र, तडिगति |
| Te | ताडि, ताड | बिम्बिका | बिल्वन, मालूरमु | पेडगि, वेगिस |
| Tu. | Bahlac | Kirmizi hind keberi | Hind ayva ag | |
| U. | Behera | Kundaru | Bel | Damulakhvain |
| Ur. | बहट | | बेल, बीकडो | बियासार |

| S. | बीजवृक्ष | वृद्धी | ब्राह्मी | भद्रमुक्ता |
|-------|----------------------|------------------------|----------------------------|--------------------------|
| A. | Tuffahh mahi | | | Suad |
| B. | बरातीमु, बिजोरा | ब्याकुर, गुरकामाई | प्रक्षी | मोथा, भद्रमथा |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Shaukta kera | | | |
| C. | महाफल, रुचक | केम्पुगुळ, हेव्वगुळ | नीरुवाग्ही | तुंगेगडे |
| Cu. | बिजोरा | बाडरीगणी | नेवरी | भद्रमोय |
| E. | Adam's apple | Indian night-shade | Thyme leaved gratiola | Indian cyperus |
| F. | Cedratier, Cedrat | | | |
| Guj. | बिजोरा | म्हेटीरिंगणी | ब्राह्मी | भद्रमोय, नागरमोय |
| Gz. | Ech'e zitrone | | | |
| H. | बिजोरा | बग्दण्ण, भद्रकटैया | ब्राह्मी | नागरमोया |
| I. | Cedro | | | |
| L. | Citrus medica L. | Solanum indicum L. | Herpestis monniera (Benth) | Cyperus Tuberosus (Roth) |
| M. | महालुंग | ढेरले | ब्राह्मी | मोथा, भद्रमोथे |
| Ma. | होलेंग, मातल | चेरुचुण, निलवळुतिन | ब्राह्मी, नीरुवाग्ही | हरिसुत्त |
| P. | Ruranj | Bidengawe-jangali | | |
| Pu | बिजोरी, बिम्बु | बंडयंगि | | |
| Sinh. | सिम्बु | सिम्बु | लुनुविला | कालंदुरु |
| Si. | | | | |
| T. | चीडई, कोम्मट्टिमाडलै | चिरुवळुडलै, कण्णाल | ब्राह्मी | होरा |
| Te | लुङ्गमु | चण्णमुळुग | ब्राह्मणि, चेष्ट | तुंगमुम्मे |
| Tu. | Agackavunu ag | | | |
| U. | | Jangli bingan | | |
| Ur. | | त्रिहोण, बोनो त्रिहोति | | |

| भ्रष्टातक | ९३ | भार्गी |
|-----------------------------|---------------------------|-------------------|
| S. भ्रष्टातक | भव्य | भरदाजी |
| A. Baladur | | Abruma aghusta |
| B. भिला | चालता | उलटकंवल, ओलटकंवल |
| Bi. | | |
| Bu. Chyaibeng, Khisi | Thibuta | Baikyo, Bebya |
| C. गेरु, केदवीन | वेदकणिगळे | गेदपुष्पीगिडा |
| Cu. भिलागा | करमल | उलटकमल |
| E. Marking nut | | Devil's colton |
| F. Noix de marais | Selit, Dillenia elegante. | Abrome |
| Guj. भिलागु | करमल | |
| Ge. Tintinbaum | Rosenapfel | Abrome |
| H. भिलावा | चालता | उलटकमल, कुमल |
| I. Semecarpo d'orient | Dillenia | Abroma |
| L. Semecarpus anacardium L. | Dillenia indica L. | Abroma augusta L. |
| M. विचवा | गोदे करमळ | ओलटकंवल |
| Ma. चेकुर, चेरकोट | चलिट, वाळपुष | |
| P. Biladur | | |
| Pu. भिलावा, मेला | | |
| Sinh. किरिबुदुग | वापारा | |
| St. | | |
| T. चेंगोटे, कालगम् | उवाटेकु, उगफाय | विचपुपुति |
| Te. नलजीलि, तुम्पदममिदि | पेदळिंग, वळिंग | |
| Tu. Baladur ag | Dillenia | Abroma |
| U. Bhilavvana | | |
| Ur. भोलाचोली, भोलाआ | चालोटा | विचवाचो गोडें |

| भूर्ज | | १४ | मज्झिमा | |
|-------|--------------------------|---------------------|--------------------------------|---------------------|
| S | भूर्ज | भृङ्गराज | मकुण्ड | मज्झिमा |
| A. | | Suweyd | | Fovvah |
| B | भुजिपत्र | केष्टी, केष्टुरिया | वनमुद्रवेरी | मंजिष्ठा, मज्झि |
| Bi. | | | | |
| Bu. | | | | |
| C. | | गरुग | मडकी | मज्झि |
| Cu. | भोजपत्र | | मठ | मज्झि |
| E. | | Trailing Eclipta | Tapery beans, moth bean | Indian madler |
| F. | | Eclipte droite | | |
| Guj | भोजपत्र | भंगरो | मठ | मज्झि |
| Ge. | | Aufrechte mehlblume | | Farberwazel |
| H. | भृङ्गपत्र | मदरा | मोड | मज्झि, मज्झि |
| I | | Eclipta | | |
| L. | Betulu Bhoj-patra (wall) | Eclipta alba (Han) | Phaseolus aconitifolius (Jach) | Rubia cordifolia L. |
| M. | भोजपत्र | माका | मठ | मज्झि |
| Ma. | | | | मज्झि |
| P. | | | Adas, Mashe hindi | Runas |
| Pu. | भुज | | मोड | खुरि, मज्झि |
| Sinh. | | किकिरिन्दि | | मज्झि |
| Si | | टिक | मोहर | |
| T. | | कैकेशी | बुलकपिरे | मज्झि |
| Te. | भृङ्गपत्री | गलगर | वनमुद्र, मितुमुद्र | ताम्रवल्ली |
| Tu. | | Kiazib paskalya-cle | | |
| U. | Bhurja pattra | Bhangra | | Majitha |
| Ur. | | Ja, जिहो | | मज्झि |

| S. | मण्डूकपर्णी | मत्स्यायक | मदन | मद्यन्तिका |
|------|----------------------------|-----------------------------------|--------------------------|-----------------------------|
| A. | Zharniba | Kawar el abid Luqmat el ehamal | Qurs el ghurab | Hhenna, cal qatab |
| B. | धोलकुरी | | मदन, मैनफल | मेन्दी, मेहेरी |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Min Kuabin | | Hsay thanpaya | Dan |
| C. | ओन्देलग | होनगोले | मंगरि, अरेमायक | गोरष्टि |
| Cu. | ग्राही | जरभाजी | मीढक | मैदी |
| E. | Indian pennywort | | Emetic nut | Camphire |
| F. | Bevilaque | Herb'd emballage | Randie, Jasmin fleuri | Henne, Hennen |
| Guj. | खडवाही | पाणीनी भाजी | मीढक | मैदी |
| Ge. | Wassernabel | Garnelenkraut | Randie | Agyptischer hennastrauch |
| H. | खडवाही | मच्छेरी | मैनफल | मेहरी |
| I. | | | Randia | Alcanne, Cnue, Cipro |
| L. | Hydrocotyle asiatica L. | Alternanthera sessilis R. Br. | Randia dumetorum Lam. | Lawsonia alba Lam. |
| M. | ग्राही | काचरी | मेळफल | मैदी |
| Ma. | कोअगम् | | करलिक्काय, कार | मयिजांजी |
| P. | Sardetur-kastau | | Juzulkuch | Hina |
| Pu. | | | मिडल, मिधल | मेहन्दी |
| Sinh | हिणोटुकोला | मोकुनुवचा | कुकुसुमन | मरीतोन्दी |
| Si. | | | जुजुलमेन्डल | मेन्दी |
| T. | चलरी, चक्का | | बौर, कडुलम् | रयिलैनन्दी |
| Te. | मोफुडु | | मांगार, मदनसु | गोरंटा, मेदा |
| Tu. | | Gazel lokmasi | Randia | Kena ag, Hina . |
| U. | Barhmi | | Mainphal | Mehendi |
| Ur. | | | पोटुआ | मेहन्दी |

| S. | मधुक | मरिच | मरवक | मसूर |
|------|----------------------------|--------------------------------------|------------------------|----------------------------|
| A. | | Fulful aswad | | |
| B. | महुआ | गोल मोरिच | Mardaquush | Adas |
| Bh. | | | सुद | बुरीमुमसूर |
| Bu. | Kansan | Nayukon | | |
| C. | दोदृप्पे, हिप्पे | मेणसु, मेणसिन कालु | | मसूर |
| Cu. | महुडा | मिरी | सुर्वो | मसूर |
| E. | Mahua tree | Black pepper | Sweet margoram | Lentil |
| F. | | Poivrier Noir | Marjolaine a coquille | Lintille |
| Guj. | महुडो | काळा मरी | मरको | मसूर |
| Gc. | | Gemeiner pfeffer pepenero, Pevere | Echter marjoran | Echte linse |
| H. | महुवा | काळी मिर्च | मरवा | मसूर |
| I. | | | Majorana | Lenticchia |
| L. | Bassia latifolia (Roxb) | Piper nigrum L. | Organum majorana L. | Leus esculenta (moench) |
| M. | मोहडा | मिरी | | |
| Ma. | इरिप्प, पुवुन | वेळजम्, मोलकम् | मरवा | मसूर |
| P. | Gulechakan | Pilpel | | Adas |
| Pu. | | गोलमिरिचरण | | मसूर, मोरी, मोही |
| Sinh | | मिरिच | | |
| Si. | | गुमिरी | सुर्वो | |
| T. | कट्टिपुप्पे, महुगम् | उत्तिरम्, क्लिदम् | मरु | मिसूरपुरपुर |
| Te | अउविधिप्प | मिचयम् | मरुवसु | मिसूरपप्पु |
| Tu | | Sinh her | Mercankosk | Mercimer |
| U. | Mahuva | Ka 1 triach | Marvakhusha | Masur |
| Ur | मोहुल, मोहुक | मरवा | | |

| S. | महाध्रावणी | मांसी | मातुलुङ्ग | मारिष |
|-------|-------------------------|--------------------------------|------------------------|--------------------------|
| A. | Hhabaqbaq | Sunbul hindi | Laymun hindi | Bustau abulz |
| B. | गोरकमुण्डी | जटामांसी | महानिम्बु | वनस्पतनाटिआ |
| Bi. | | | | |
| Bu. | | | Shanktones | |
| C. | करण्डे | जटामांसी | चकोत | हरिवेसोपु |
| Cu. | मुण्डेरी, गोरखवल | वालछड | चकोवा | भाजी |
| E. | Indian globe thistle | Spikenard | | Love-lies-bleeding |
| F. | Boulette | Nard indien | Pamplemousse | Amaraute tricolore |
| Guj. | मुण्डी | जटामांसी | चकोटुं | अदवाड डांभो |
| Ge. | Duftende, Ballablume | Indische narde | Pompelmusorange | Fuchsschwanz |
| H. | गोरखमुण्डी | जटामांसी | सदाफल, चकोव | मर्षा, मरखा |
| I. | Sfaeranto | Spignardi | Pompelmusa | Amaranto a trecolori |
| L. | Sphaeranthus indicus L. | Nardostachys Jatamansi (D. C.) | Citrus decumana (Murr) | Amaranthus gangeticus L. |
| M. | मुण्डी | जटामांसी | पपनस | माड |
| Ma. | मिरंगणी | जटामांसी | पंपरमासम् | |
| P. | Kamaduriyus | Sunbueuttib | Chakutrah | Kishtah |
| Pu. | मुण्डी, गुफकमुण्डी | | चकोत्रा | |
| Sinh. | | जटामांसी | जम्बुल, महमारम | छुदुताम्पाला |
| Sl. | | जटामांसी | | |
| T. | रोडकरण्डे | जटामांसी | पाम्पलिमासु | |
| Te. | रोडासोरम् | जटामांसी | पाम्पलमासम | तोरकूर |
| Tu. | | Sunbul hindi | Hind limon ag | Sultan borgi |
| U. | Kamdaryus | Balachada | Chakutrah | Lalsatg |
| Ur. | | | पम्पोळोमाशो | |

| मालती | | ९८ | | मुकूलक |
|-------|-------------------------------------|-----------------------|-------------------------------|----------------------------|
| S. | मालती | माप | मापपर्णी | मुकूलक |
| A. | | Mash | | Habulsavera kabar |
| B. | मालती | माप | मापनी | |
| Bl. | | | | |
| Bu. | | | | |
| C. | मालतिलता | उदु | काडुदु | चिलगोझा |
| Cu. | मालती | उडद | शींगणीयार | चिलगोझा |
| E. | | Black gram | | |
| F. | | Haricot mungo | | |
| Guj. | मालती | धडद | वालियो वेलो | चिलगोझा |
| Ge. | | Mungobohne. | | |
| H. | मालती | उडद, उरद, उडिद | मापपर्णी | गुनोवेर |
| I. | | Fagiolo a zigzag | | |
| L. | Aganosma caryophyllata G. Don | Phaseolus mungo L. | Teramnus labialis (sprang) | Pinus gerardiana (wall) |
| M. | मालती | उडीद | रान उडीद | चिलगोझा |
| Ma. | कयेरुखळी | चेरपोयारा | | |
| P. | | Benumash | | Chilgozah, sus |
| Pu. | | माप | | |
| Sluh. | | उडुन्दुमाई | | गालगोझा |
| Si. | | माह, उरद | | |
| T. | | पोनिप्पयारे | काडुअलंदु | |
| Te. | मालतीपालमहे | मिनुमुल | | |
| Tu. | | Angola fasulyasi | | |
| U. | | Mash | | Chilgozah |
| Ur. | मालोति | | | |

| मुद्र | | १९ | मुष्कक | |
|-------|------------------------|--------------------------|----------------------------|-------------------------------|
| S. | मुद्र | मुद्रपणी | मुजातक | मुष्कक |
| A. | Mashedamy | | Khusy-uth-thalab | |
| B. | मुग | मुगनी | सालिबमिथ्री | घण्टापाकल |
| Bl. | | | | |
| Bu. | Pai, Painouk | | | Thits-welwe |
| C. | हेकर, उहु | काहुहेसर | | बुला, गण्ट, मगण्टे |
| Cu. | मग | नगी | सालम | नकही |
| E. | Mung | Three lobed kidney bea | Salep | Mokha tree |
| F. | Haricot mungo | | | |
| Guj. | मग | सडवाड मगी | सालम | मरखो |
| Ge. | Rauhhaarige bohone | | | |
| H. | मुंग | मुगनी | सालिबमिथ्री | मोखा |
| I. | | | | |
| L. | Phaseolus radiatus. L. | Phaseolus trilobus (Ait) | Eulophia campestris (wall) | Schrebera swietcnoides (Roxb) |
| M. | मूग | रान मूग | सालम | मोरवा |
| Ma. | | | | |
| P. | Mung | | Sungmisri | |
| Pu. | मुंग | | सालिबमिथ्री | |
| Sinh. | मुनगे | विन्से | | |
| Sl. | मुंग | | | |
| T. | पचै, मिह | नारीपायर | | मगलिङ्गम् |
| Te. | पेचा, पेसर | विह्मिपोसर | | पोंडमुफाटि |
| Tu. | | | | |
| U. | Mung | | Salabmisri | |
| Ur. | पालमुग | | | घोण्टिया, नेगीटुली |

| सुस्ता | १०० | मृगलिण्डिका | |
|------------------------------|---------------------|--------------------------|--------------------|
| S. सुस्ता | मूलक | मूर्वा | मृगलिण्डिका |
| A. Ziblel maiz, suqqayt | Fioyl fugel | | |
| B. मोथा, सुषा | मूला | | |
| Bi. | | | |
| Bu. | Moula | | Chinyok |
| C. हुंगेगड़े | मूलंगी | कोरटिंगे | नेडिंगड़े, सुषेकवे |
| Cu. मूषा | | मूर्वा | केकड |
| E. Indian cyperus | Garden radish | | |
| F. Souchet rond | Nayet rave | | |
| Guj. मोष | मूला | मोरबेल | केकड |
| Ge. Runde zyperwurzel | Rettich | | |
| H. मोथा | मूली | चुरहार | खर्पट |
| I. Cipro orientale, Padulina | Rafano | | |
| L. Cyperus rotundus L. | Raphanus sativus L. | Clematis triloba (Heyne) | Garuga pinn (Roxb) |
| M. मोथा | मुळा | मोरबेल | काकड, कुकड |
| Ma. हरिसुत्तन | कनकपल, मुलंगी | | करवेपु, करेयप |
| P. Muske zamin | Turkhmeturub | | |
| Pu. | मूली, तारमीरा | | कास्पड, सरोटा |
| Sinh. कालोन्दुरु | राडु | | |
| Si. | मूरी | मरवा | |
| T. कोरा, कीरल | मुलंगी | | एथैकारै, मरुय |
| Te. गण्डाला, मुस्तकसु | मुलंगी | | कोम्बवेप, गद |
| Tu. Topalak | Turp | | त्रिजोडु, मोहि |
| U. | Mulekebija | | |
| Ur | | | |

| મુદ્રક | ૧૦૧ | યવ | |
|-------------------------------------|----------------------------|----------------------------|-----------------------|
| S. મુદ્રક | મેષમુદ્રકી | યમાની | યવ |
| A. Khardal aswad | Suwar el hind, Barkasht | Kammun hhabashi | Shair |
| B. ગરસરિશ | અંતમોરા | જોવાન્ | જવ, જો |
| Bi. | | | જોવારવર |
| Bu. | Khungiehe | | Muyan |
| C. દેવમુરિ | ઘાડુકલનાર | ઓમા | જવેગોષી |
| Cu. રાઈ | અટિર | ચોદારા | જો |
| E. Mustard | Indian screw tree | Bishop's weed | Barley |
| F. Moutarde noire, Senve noir | Helictere, Isore | Ammi, Sison | Orge commune |
| Guj. રાઈ | મરડાશીંગો | અજમો | જવ |
| Ge. Senfsunk hl, Senf | Isora helictere | Herrenkummel | Saatgerste, Gerste |
| H. ઝાલીરાઈ, રાઈ | મરોરફલી | અજવાઈન | જવ, જો |
| I. Mostarda | Isora. | Ammi, Sisone | Orzo commune |
| L. Brassica nigra L. | Helicteres isora L. | Carum copticum Benth&hk | Hordeum vulgare L. |
| M. મોદરી | મુલ્કશીંગ | ઓવા | જવ |
| Ma. કહુક | ઈશ્વરમુરિ, કૈયૂના | ઓમમ્ | |
| P. Sarshaf | Kishtburkisht | Nankhah | Jao |
| Pu. રાઈ | મરોરફલી | | ચૂમા, જો |
| Sinh. ગનય | ગિમિઆગાહ | અસ્તમોદમ્ | |
| Si. | વરકટી | | |
| T. રહુગુ | વલમ્બુરિ | ઓમમ્ | વારલિયારિસિ |
| Te. અવહ | ફાવરિ, રવાસિ | ઓમામી | વારલિવીચમ્ |
| Tu. Kara hardal | Barkast | Emmus, Misir anisonu | Arpa |
| U. Rai | Marorphali | Ajwan | Jav |
| Ur. | ઘોડિમોડિ, ઓરોક | | |

| यवासक | | १०२ | रक्तचन्दन |
|-------|-----------------------|-----------------------|---|
| S. | यवासक | यष्टिमधु | यूथिका |
| A. | Aqul, Shawk el gimal | Shag | रक्तचन्दन Sandalan Saudal abhmar |
| B. | जवास्व | जष्टिमधु | जुई लालचन्दन |
| Bi | | | |
| Bu. | | Noekhiyn | Nasani, Sandakee |
| C. | बलिदुरुचे | अतिमधुर | मल्लिगे, हुरिनबल्लि |
| Cu. | जवास्व | | जुई रक्तचन्दन |
| E. | Camel thorn | Liquorice | Red sanders |
| F. | Alhagi des maures | Reglisse glabre | Sandal rouge |
| Guj. | जवास्व | जेठीमध | जुई रतांजली |
| Ge. | Mannua strauch | Echtes sussholz | Roter sandel- baum |
| H. | जवास्व | मुलहट्टि | जुही रक्तचन्दन |
| I. | Manna di persia | Regolizia | Sandalo rosso |
| L. | Alhagi maurorum (Bak) | Glyeyrrhiza glabra L. | Jasminum auriculatum Vahe Pterocarpus Santalinus |
| M. | जवास्व | ज्योष्टिमध | जुई रक्तचन्दन |
| Ma. | कप्पदुम्प | अतिमधुरम् | बोलिड पत्राङ्गम्, रक्तचन्दनम् |
| P. | Kharebuz | Bikhemahak | Buckum |
| Pu. | | मुलेट्ट, जटिमध् | चन्दनलाल |
| Sinh. | | अतिमधुरम् | रक्तचन्दन |
| Si. | उण्डुरस्वर | | |
| T. | | अतिमधुरम् | डबिमै, मुल्लैकोडि |
| Te. | गिरिकर्णिका | अतिमधुरम् | मोल्लतीगे, अडविमोल्ल |
| Tu. | Mann ayran | Megan koku | Kirmizi sandal agr |
| U. | Javasa. Athariyun | | |
| Ur. | | | बोनोमोल्लिका, जुई इन्द्रोचोन्दो |

| रकनाल | | १०३ | रहा | |
|-------|---------------------------|--------------------------------|-----------------------------|--------------------------|
| S. | रकनाल | राजादन | रासना | रहा |
| B. | लालमीस्ता, पटवा | खीरखेजुर | | धुरामन्डा |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Chinbaung | | | Kbyeepaung |
| C. | पुण्डीसोपु | यकुल | रास्से | बदनिके |
| Cu. | मिडी | रानजो झाड | | |
| E. | Red sarrel Rosella | | Indian groundsel | |
| F | | | | |
| Guj. | | राण | रासना | बांदो |
| Ge. | | | | |
| H | पटवा, लाल अंबारी | खिनी | रासना | बांदा |
| I. | | | | |
| L. | Hibiscus sabdariffa L. | Mimusops hexa- ndra (Roxb.) | Pluchea lanceolata Oliv. | Loranthus falcatus L. |
| M. | लालअंबाडी | रांजण | रासना | बांडगुळ |
| Ma. | पोलेची | फाल | | इति |
| P. | | | | |
| Pu. | | | रासना | अमुट, बांदा |
| Sinh. | राता बिलिचा | पाछ | | |
| Si. | लालअंबारी | | कुरासना | |
| T. | सिमेकासुव | बुद्धिलम्, पाले | | कामरिचम् |
| Te. | एद्यगोमथुरा | मंचिपाल, नम्मि | | जिष्ट, बादातिक |
| Tu. | | | | |
| U. | | Khirani | | |
| Ur. | | रिग्गरी, राजोनो | | निश्होणो |

| रोहिणी | | १०४ | लक्ष्मणा |
|--------|--------------------------|-------------------------|----------------------------------|
| S. | रोहिणी | रोहितक | रोहिण |
| A. | | | Khilal, Mamani |
| B. | रोहन, | तिक्तराज | गन्धवेना |
| Bi. | | | |
| Bu. | | | |
| C. | कलपरिगे, सोमे | मुकुमुतुग | वसनचुल्ल |
| Cu. | रोहिणी | | रौव |
| F. | Bastard cedar | | Geranium grass |
| F. | | | Citronnelle |
| Guj. | रोण | रगतरोहिडो | रोहिणवास |
| Ge. | | | Cameleshov |
| H. | रोहन | हरिनहर्द, रोहिणी | रुधवास |
| I. | | | Griunco odorato, Squinante |
| L. | Soymida febrifuga (Guss) | Amoora rohita (W. & A.) | Andropogon schoenanthus (Marind) |
| M. | रोहण | रोहितक | रोहिण |
| Ma. | | चेम् | |
| P. | | | |
| Pu. | | | रातुष |
| Sinh. | | | |
| Si. | | | |
| T. | चेमदनम्, चेम् | कुरैल्लुवरम्, वनगुल | शुक्रुवारिप्पुल |
| Te | चेवनातु, सोमि | चेवमातु, रोहितक | |
| Tu. | | | Tibni, Mekke |
| U. | Rohan | | Haciler otu |
| Ur. | सेण्शान्, कवी | प्पीहासन | |

| S. | लवङ्ग | लवलीफल | लशुन | लाङ्गलिकी |
|-------|-------------------------------|-----------------------------------|--------------------|----------------------------|
| A. | Qurunfil | | Thawn | Al bahir al hindyah |
| B. | लौग | हरिकुल | रसुन | वीश |
| Bi. | | | | |
| Bu. | | Thimbawzibyn | Kesumplin | Hseemutouk |
| C | लवङ्ग, देवकुसुम | किरिनेलि, अरुनेलि | वेळळी | काळिङ्गुम |
| Cu. | | रवटीआमरी | | |
| E. | Clove tree | The Country goosebery | Garlic | |
| F. | Giroffier | | Ail | Supurbe de Malabar |
| Guj. | रबीड | कांकणां, हरफारेवडी | लसुण | दूधियेःउनाग |
| Go | | | Knoblauch | Malabarische methonika. |
| H | लौग | हरफारेवडी | लसुण | दल्लिहारि |
| I. | Carlofilli, Garofano | | Aglia | Narciso superbo |
| L. | Caryophyllus aromaticus L. | Phyllanthus distichus. (Muell) | Allium sativum L. | Gloriosa superba L. |
| M. | लवङ्ग | रायआंवळा | लसुण | कळलावी |
| Ma. | करवाम्बु, लवङ्गम् | नेलिपुळि, अरिनेलि | वेळुली | मलत्तामा, वण्टाल् |
| P. | | | Sir | |
| Pu. | | | पीयास | करीयारी, सुलीम |
| Sinh. | करावु | रातानेली | सुडुडु | तियगदा |
| Si. | | | धुम | |
| T. | दरुव, दिराम्बु | चडागम्, अरुनेलि | वेळैपुण्डु | अक्किनिचिलम्, कान्डाल् |
| Te. | लवङ्गसु | राचमुसिरिक | वेळुलि, वेळगडा | कलपगट, वेळिनाभि |
| Tu. | Babar karaufil | | Sarmusak, Sarmisak | |
| U. | | Harpharuri | Lehsun | Kanol |
| Ur. | देशेकुमुमो, लोचोत्तो | नारोकोळि | | पंचांगुळैया |

| लामजक | | १०६ | लोणिका |
|-------|-------------------------------|---------------------|--|
| S. | लामजक | लिकुच | लोणिका |
| A. | | | Bashmalah Riglah, Hhurfah |
| B. | कागकुस | देफल्, मादार | बरालोनीया |
| Bi. | | | |
| Bu. | | Miauktot. | Mayabyit |
| C | कारीलावन्चा | वाटेहुळि, एखुहुळि | डुडागोराई |
| Cu. | | | लाखाडुंगी, कुतबो |
| E. | | Monkey gack | Puaslane |
| F. | | | Bibassier du Japon Pourpier, Pourcellaine |
| Guj. | पीलोवाळो | लकुच | डुणी |
| Ge. | | | Japanische mispel Gartenportulak |
| H. | लामजक | बडहल | लोणिका |
| I. | | | Pruno del Giappone Porcellana, peplo |
| L. | Andropogon iwaranacussa Roxb. | Artocarpus Lokoocha | Eriobotrya Japonica, Lind Portulaca oleracea. L. |
| M. | विबळावाळा | लकूच | धोळ |
| Ma. | | लकुचम् | कोरिचिरा |
| P. | | | Cholza |
| Pu. | बूर | डाहोचो | लोमक |
| Sinh. | | कौनमोन | गेण्डाबोला |
| Si. | | | लोक |
| T. | | इलगुसम्, इरप्पाळ | इलकोट |
| Te. | | नक्केसु, कम्मरेसु | कारिकिरै |
| Tu. | | | पप्पुकरा |
| U. | | | Musmula, yeni iz otu dunya ag |
| Ur. | | Barhal | Lakhota Khurfah |
| | | ज्यूटो | पुदनीसाम |

| लोध | | १०७ | वासा | |
|-------|---------------------------|-----------------------------|-----------------------|-------------------------|
| S. | लोध | वंश | वचा | वज्रुल |
| A. | Lutr, Armak | Khayzaran, Qana | Qasab edh dharirah | Khilaf |
| B. | लोध | वांस | वच | पानीनाम |
| Bl. | | | | |
| Bu. | Dankyat | Kyakatwa | Linhe | Momaka |
| C. | वाललोडुगिनामारा | विदिर, वम्बु | वजे | निरुवडि, वडके |
| Cu. | लोध | वंश | वेरवण्ड | |
| E | Lodh tree | Spiny bamboo | Sweet flag | Sallow |
| F. | Lotour, Lotur | Bambou, Bambousier | Calamus | |
| Guj. | लोध, लोवर | वांस | पोडावज | |
| Ge. | Lotbaum | Bambusrohr | Echter-Kalmus | |
| H. | लोध | वांस | वच | वेद, वैस |
| I | | Bambu | Acoro aromatico | |
| L | Symplocos racemosa (Roxb) | Bambusa arundinacea (Willd) | Acorus calamus L. | Saliz tetrasperma Roxb. |
| M. | लोध | वावू | वेखण्ड | वाळुज |
| Ma. | | तेजनम्, वेणु | वसम्पा | अत्रपल, निरुधि |
| P. | | Nal | Agar Agreturki | |
| Pu. | | नरु | वच, वारीगोज | वधा |
| Sinh. | | उना | वाडकाह | |
| Si. | | | | सफौदा, वित्सा |
| T. | | अम्बल, कुलैसुंगिल् | वाशम्बु | आरुप्पलै वडि |
| Te. | लोडुग, सावरमु | वेडुरु, वोन्गु | वडज | एतिपाल, कोण्डगजेरु |
| Tu. | Kurfe ag. Amerika cayi | Hazuran, | Egir otu, Azake egiri | |
| U. | Lodapathani | Bansa | Bacha | Bedmushk |
| Ur. | लोधो | कोण्टावांसो | | वैसि, पाणिनामो |

| लामज्जक | | १०८ | | वरुण |
|---------|---------------------------|----------------------------|-------------------------|-------------------------------|
| S. | वट | वत्सनाभ | घरक | वरुण |
| A. | Athab | Bish, Halhal | Dukhn | |
| B. | वर, बोट् | विस, वत्सनावदिस | चीना | वरुण |
| Bi. | | | | Kadat, Kadet |
| Bu. | Pyinyaung | | चीना | |
| C. | आळ, वट | वत्सनाभी | वरागु, सावे | नेखम्बेले, विलपत्रि |
| Cu. | वडजो झाड | वचनाग | | |
| E. | Banyan tree | Aconite | Millet | Three leaved Caper |
| F. | Figuier des Benains | Aconit d' inde | Panic millet | Crate'vier |
| Guj | वडलो | वचनाग | चीणो | वायवरणो |
| Ge. | Bauianen Feigenbaum | Indische akonit knollen | Echte hirse | Krateva, Tapiabaum |
| H. | वरगद् | वचनाग, धियाविस | चेना, चीन | वरदा |
| I. | Fico dei Baniani | Aconito d' india | Panico miglio | |
| L. | Ficus bengale- nsis L. | Aconitum ferox (Wall) | Panicum miliacum. L. | Crataeva religiosa (Forst) |
| M. | वड | वचनाग | वरी | वायवरणा |
| Ma. | पेगल वटम् | वत्सनाभी | | निरविल, वरुण |
| P. | Darakhteresha | Bishnag, Zher | Arzan | |
| Pu. | वरगद् | | सालन, सलर, चीना | वरन, वरनही |
| Sinh. | महालुग | वचनाभी | मेनैरी | लुतुवरना |
| Si. | बुर | | चोनु | |
| T. | पटम् | वचनाभी | वरागु | इमैविलै, कूदिलम् |
| Te | विट'प, पेट्टमत्ती, वाटी | वचनाभी | वरगळु | विलवरम, मारिडु |
| Tu. | Ba. ag | Bildirein otu | Karacadari | |
| (') | a | | | Barna |
| U. | | | | विजोगो |

| वाताम | | १०९ | वासा |
|-------|-------------------------|----------------------|-------------------------|
| S. | वाताम | वाताम | वालाफ |
| A. | Lawz | Badhingau | वासा |
| B. | विलासि, वादाम | वारताऊ, वैगुन | वाला, गन्धवाला |
| Bi | | | वसावा |
| Bu. | Badan | Khayan | |
| C. | वायामि | वदने | सुडिवाळा |
| Cu. | वदाम | | काळो वाळो |
| E. | Almond tree | Briujal | Fragrant slicky mallow |
| F. | Amaudier | Melongene | pavoniaodorante |
| Guj. | वदान | वंतीरू, रीगणा | Noyer de malabar |
| Ge. | Echte mandel | Eierfrucht | अरट्टसी |
| H. | वदान | वैगण, भण्डा | Malabaris chenuss |
| I. | Mandorlo | Melanzana | अरुसा |
| L. | Prunus amygdalus Stokes | Solanum melongena L. | Justicia arbore-scente |
| M. | वदाम | वांगी | Pavonia odorata (willd) |
| Ma. | वदाम | कटिरि, वळुत्तन | Adhatoda vasica (Nees) |
| P. | Badam | Badanjan. | अडुऊसा |
| Pu. | वदम् | वैगन | अट्टोडकम् |
| Sinh | रत्तरोटम्बा | वाम्बातु | |
| Si | | वांगन | |
| T. | वादुमे | सुकुटारि, वाङ्गम् | आविबट्टम्, पेरामुदि |
| Te. | वादामसु | वङ्काय, निडुपुवळ्म् | आडोदी, व.न |
| Tu. | Bodem ag | Bedineau Patlican | अडुसरम् |
| U. | Badamshirm | Baingan | Malabar cevig ag |
| Ur. | व.दामो | वैङ्गोना | Arusa |
| | | | वासोङ्गो, रोड्मुलि |

| S. | वास्तुक | विकृत | विशुद्ध | विषाणिका |
|------|-------------------------|--------------------------------|-----------------------|----------------------|
| A. | Fisael kilab | | Kabuli, Biring | |
| B. | वायुताग | वैचोनाछ | भाईचीरगा, भीरंगा | छागलवान्ति |
| Bi | | | | |
| Bu. | | | | |
| C. | चक्रवर्ती | मलेगु, तम्झाज | वायुविच्छ, विटंग | वेलिहृति |
| Cu. | चरल | वीगो | वावटंग | दुधरी बाल |
| E. | White goose foot | | Embelia | |
| F. | Anserine blanche | | Ribeller | |
| Guj. | चील, ययवी | विक्को | वावडींग | नागलादुधेनी |
| Ge. | Weisser ganscfuss | | Embelle | |
| H. | दचुआ | वैरल | बावरंग, यवेरंग | चरण |
| I. | chenopodio bianco | | Embellia | |
| L. | Chenopodium album L. | Gymnosporia montana (Benth) | Embelia ribes Burn | Dœmia ex (R. Br.) |
| M. | चाकवत | वेहेकळ | वावडिंग | चरण |
| Ma. | | | विशालम्, वावविलङ्गम् | वेलिपुत्ति |
| P. | Khurfa | | Birangekabali | |
| Pu. | यधुआ | रिंगरो | बाङ्गुग | श्रीतू |
| Sinh | | | वेलाम्बिडा | |
| Si. | शील | | | सूर्यल |
| T. | पाखुकिरे | कशगि, बालुबुवे | फुटुकोडि, वेहल् | उत्तमानि |
| Te. | पप्पुकरा | गेबलिंग, पेद्दन्त | विडरुसु | गुरति |
| Tu. | Ak pazi | | Biring, Kabuli | |
| U. | | | Bavrang | |
| Ur. | | गोमोबोवा | विटोयो | युग्मफलिका |

| S. | वृक्षामल | वृक्षिकाली | चेतस | शङ्खपुष्पी |
|-------|----------------------------|---------------------------|------------------------|----------------------------|
| A. | | | Qassab draku | |
| B. | | विचटि | चेत | |
| Bi. | | | | |
| Bu. | | | | |
| C. | सुर्गिनिहुलि, तिप्तिडिक | दूलगोण्ड | हेच्चे, नागवेष्ट | विष्णुकान्ति |
| Cu. | कोकम | खाजवल | चेत | |
| E. | Wild mangosteen | | Rattan cane | |
| F. | | | Rotang, Rotin | |
| Guj. | कोकम | खाजवणी | नेतर | शङ्खावली |
| Ge. | | | Rotany, | |
| H. | कोकम | बईटा | चेत | श्यामकान्ता |
| I. | | | Finocchio d' india | |
| L. | Garcinia indica (chois) | Tragia involucrata Lin | Calamus rotang L | Evolvulus alsinoides L. |
| M. | कोकम | खाजकोलती | चेत | सांखवेल |
| Ma. | पुनंभुलि | चेरुकोडिथुवा | चूरु, पुरम्पु | विष्णुकान्ति |
| P. | | | | |
| Pu. | | | | शङ्खपुष्पी |
| Sinh. | | वेलकहम्मिलिय | वेवेल | विष्णुकान्ता |
| Si. | | | | |
| T. | सुरगल | कडोरि | सुवेदम्, सडी | विष्णुकान्ति |
| Te. | | दूलगोण्ड | वेष्टम्, प्रविलि | विष्णुकान्ता |
| Tu. | | | | |
| U. | | | Benekli hind kamisi | |
| Ur | | विछुआटि | चेटो | |

| शङ्खिनी | ११२ | शतावरी | |
|---|-------------------------|-----------------------------------|-------------------------|
| S शङ्खिनी | शण | शतकुसुमा | शतावरी |
| A. | Qinnibel krotolarya | Sadhab el barr | Shaqaquul |
| B. | शण, सन | सुडपा, शुल्फा | शतमूली |
| Bi. | | | |
| Bu. | paikpiyen | Samyeit | Kanyomi |
| C. | सणधु | सञ्चसिगे | आपादि, हलधुमककबळि |
| Cu. कुतीमुभा | | | |
| F. | Indian hemp | Dill | Asparagus |
| F. | Chanvrier de Bengale | Aneth, Fenouil batard | |
| Guj. आंखफूटामणी | सण | सुश | शतावरी |
| Ge. | Bengalischer hanf | Gartendill, Dill | |
| H. | सन | सोया | शतावर |
| l. | Nacchera del Bengala | Anetsodoroso, Ancto | |
| L. Ctenolepis cerasiformis H K. F. D. | Crotalaria juncea L. | Peucedanum graveo lens (Benth) | Asparagus racemosus |
| M. | ताग | शेषु | शतावरी |
| Ma. | पुळिवलि, सनम् | चतुकुप्पा | चटवालि, सटवालि |
| P. | San | shol | shaqaquul |
| Pu. | | सोया | सतावर |
| Sinh. | हौना | सयकुप्पे | हसावरी |
| Si. | तागसन, सिनि | सायाकुप्पाई | दिलोरा |
| T. | कुटिरम्, वकुन्नार | शतकुपि | चाट्टावारि, मिगुंडवानम् |
| Te. | गिलिगु, वुगुसु | सौष | चलगड्ड, पीचर |
| Tu. | Gunes Keneviri | Durang otu, Tere otu | |
| U. | | Soya | Satavara |
| Ur. | सोणो, चोणि | | सोतर |

| शमी | ११३ | शाल |
|----------------------------|---------------------------|-----------------------------------|
| S. शमी | शालकी | शाक |
| A. Ghaf | Luban | Addulb el hindi |
| B. शमी, गोमी | कुनडुर, सलै | सेगुन |
| Bl. | | सखेर, शाल |
| Bu. | Bringiloban | Kyum, Kywon |
| C. वक्षि | सांघ्राणि, नायिचल | तेग, सागुवानि |
| Cu. | सलियागुगुल | साग |
| E. | | Teak |
| F. Prosopis | | Teck, Tek |
| Guj. शमी, खीजडो | सलै | साग |
| Ge. Ahrenschelfe, Prosopis | | Teakbaum, Indische eiche |
| H. शमी | सालई | सागोन |
| I. Prosopis | | Querce delle indie orientale, Tek |
| L. Prosopis spicigera L. | Boswellia serrata (Roxb.) | Tectona grandis L. |
| M. सौदेड | सालई | सागवान |
| Ma. परगु, वक्षि | पालङ्कम् | तेक |
| P. | Kuudur | Saj, sal |
| Pu. जन्ड, जग्दी | साल्ही | सागून, सागवान् |
| Sinh. | कुम्डिकन | तेका |
| Si. कन्दि | | लोहेर |
| T. कुलिषम्, तमलि | सुरैडम् | कालिन्दी, तेकु |
| Te. त्रिषदसिनि | धूपु, अंडुग | तेकु |
| Tu. | | Sac ag, Tek ag |
| U. | Kundur, Lobana | Sagum |
| Ur. लोदिगे, सोमि | लोवान | सागुनी |

| S. | शालिपर्णी | शालेय | शास्मली | शिशप |
|-------|---------------------------|---------------------------|---------------------------|-------------------------|
| A. | Matan, Arqia | Shamar, Shumarah | Bambaks | Sasam, Sissu |
| B. | शालपानी | मौरी, पानमुहोरी | रक्तो सीसुल, तुला | शिसू, सिस् |
| Bi. | | | | |
| Bu. | | | Dadu, Lepanbin | |
| C. | सुरेलेहोले | वडीसोपु | वरगं, दूदि, सौरी | अगर, सिंसपे |
| Cu. | शालवण | वरियाली | | |
| E. | Tick trefoil | Fennel | Red silk cotton tree | Sissoo |
| F. | Desmodie | Fenonil aneth doux | Bombax, Fromager | Ebenier Jaune |
| Guj. | शालवण | वरियालि | शिमलो | सीसम |
| Ge. | Bundelhulse | Echter fenchel | Seindenbaum-- wollbaum | Sissoobaum |
| H. | शालपान, शालवण | सौफ | सेमल | श्रीशम, सिद्ध |
| I. | Desmedie | Finocchio | Bombace, Bambagia | Ebanogiallo, Sissu |
| L. | Desmodium gangeticum D.C. | Foeniculum vulgare Goertn | Bombax malabaricum (D.C.) | Dalbergia sissoo (Roxb) |
| M. | शालवण | वडीशेप | शालसांवर | शिसव |
| Ma. | पुछटि | | रक्तसुरिङ्ग, पुरीण | इरुविल् |
| P. | | Badiyan | | |
| Pu. | शालपुर्ही | | | नेलकार, शिशौ |
| Siuh. | | | कटुइम्बुल | |
| Si. | | | | सिस्सु |
| T. | पुछाडि | सोहीकिरे | मुल्लिलासु, पुळै | सिस्सु, यट्टे गेट्टे |
| Te. | गीतनारम्, कोलाकुपोर्ष | पेडाजि, लङ्करासु | गेडवूरग, शास्मलि | सिस्सु, सिंसप |
| Tu. | Gene yulafi | Rezene Raz yane | Bombaks | Dalbercia sissu a. |
| U. | Shalwan | Sorf | | Shisham |
| Ur. | शालोपोर्नी | | शास्मलि, सिमुली, मोचोरोसो | सिद्ध |

| S. | शिष्ट | शिरीष | शुण्ठी | शूकरी |
|-------|--|-----------------------------|-------------------------------|----------------------------|
| A. | Al ban, yasar | Labakh, Daqn elbasha | Zangabil | |
| B. | साजिना, सुजुना | शिरीष, सिरिस | आदा | वराहिकन्द |
| Bi | | | | |
| Bu. | Dantha lone | kokko | Khyensing | Pankhade |
| C. | बुग्गे, मेचक, गुग्गल | बागे, होम्बागे | हसिमुण्डि, अल | |
| Cu. | | | | |
| E. | Drum stick tree | | Ginger | |
| F. | Moriuge aptere | Bois noir, Lebbek | Gingembre | |
| Guj | सरसवो | सरसवो | सूँठ | |
| Ge. | Behenbaum | Siris acacia | Ingwer, Ginger | |
| H | सैजना, सोजना | शिरीष | अद्रक | वाराहीकन्द |
| I. | Noce di behen | Lebbek | Zerzero, zenzevero | |
| L. | Moringa ptery- gosperru (Gaertn) | Albizzia lebbeck (Bem:h) | Zingiber officinale (Rose) | Tacca pinnatifida Forsh |
| M. | शेवगा | शिरस | सूँठ, आढे | वेवकांदा, केन |
| Ma. | सुरिण, शिष्ट | काटुवाक, नेन्मानि | सीक्षोक्तम्, चिचिवेर | चेन |
| P. | | Darakhtej- akherla | Zangabil | |
| Pu. | साजना | | आदा, अद्रक | |
| Sinh. | सुरता | मारा | इशुफ | |
| Sl. | राजोरा | शिरस, सिरस | | |
| T. | सुलिंगे, काय्कीरे | अडुक्वागे, लट्वागे | अलम्, सिगिवेरम् | करचुनै |
| Te. | सुलिंगे, शीतवृक्षसु | दिरिसनसु, धपीतनसु | शुण्ठी, अलसु | चण्डकन्द |
| Tu. | Ben ag. Surkun ag | Labak | Zencefil, Zencebil | |
| U. | Sahajua | Darash | | |
| Ur. | सुनिका, सोजिना | सिरिसे, तिन्या | आद्रोको, ओडा | |

| S. | शृङ्गाटक | शैलेयक | शैवल | शृङ्गमातक |
|-------|--------------------------|--------------------------|----------------------------|--------------------------------------|
| A. | | | | Mukhatah, Dabq |
| B. | पानिकल | | शेओला | बहुवार, बोहरी |
| Bj. | | | | |
| Bu. | | | | Thanat |
| C. | | कलुह | अन्तरगंगे, नीराता | वाडुचळे, हाडिगे |
| Cu. | | | | |
| E. | Shingara nut | Rockmoss | Eel grass | Sebesten's plun |
| F. | Macre | Parmetia desmurs | Valisnerie spirale | Sebestier, Arbre aux- sebestes |
| Guj. | शिगोडां | परयरफूल | शेवाल | गुंदे |
| Ge. | Gemeine wassernass | Wandschild- flechte | Sumpfschraube | Sebestenbaum |
| H. | सिघडा | सिलावक, पत्थरकाफूल | जल्लील, सियाल् काई | भोकर, गोंदी |
| I. | | | Valisneria | Sebesto mixa |
| L. | Trapa bispinosa Roxb. | Permelia parlala Eshc | Vallisneria spiralis L. | Cordia myxa (Roxb) |
| M. | शिगाडा | दगडफूल | शेवाल | भोकर |
| Ma. | वरिपोलम् | | चण्टि | विरियकम्, काटि |
| P. | | Dowalah | | Sapistan |
| Pu. | सिद्धारा | चाल्चालिरा | | लस्वाग |
| Sinh. | इविलिया | | | लोड, लोडु |
| Si. | | | शेवर | लेष्टुरी |
| T. | सिंधारा | डालापु | | विरिखु, नरविळि, सेड |
| Te. | कुव्याकम् | राथपु | पंचटुष | चिनबोटुकु, नफेरे |
| Tu. | | | Vallisneria | Sebestan ag |
| U. | Singhara | Habakkarmani | | Lasora |
| Ur. | | | | आमोमेटे, गोंदी |

| सप्तपर्ण | | | ११७ | सर्पप |
|----------|---------------------------------|---------------------|----------------------------|----------------------------|
| S. | सप्तपर्ण | समज्ञा | सरल | सर्पप |
| A. | Alistonyah | Mustah hiyah | | |
| B. | चद्दान्, छतिअन् | लज्जावत, लाजाक | सरलकाष्ठ | कालिसरसान, शुर्गी |
| Bi. | | | | |
| Bu. | Lettok | Htekayung | | Amemniyenzi |
| C. | एकेडेहाळे, जम्त्रहाळे | मुड्युदावरे, लज्जा | वर्हि | बिक्सिअसिचे |
| Cu. | | | | सुराह |
| E. | Dita | Sensitive plant | Three leaved pine | |
| F. | Dita, Echite | Mimose | | Chou Chompetre |
| Guj. | सातविण | सीसामणी | सरल | सरसव |
| Ge. | Schulholz baum | Sinnplanze | | Feldkohl |
| H. | छातियान्, चात्तिवन् | लाजवन्ती | चील, चीर | सरसो |
| I. | Alstonia | Erba mimosa | | Cavolo campestre, Colza |
| L. | Alstonia scholaris R.B.R. | Mimosa pudica L. | Pinus Longifolia, Roxb. | Brassica campestris L. |
| M. | सातविण | लाजाक | देवधुप | शिरशी |
| Ma. | एलिलम्पाल, मुक्कपाळ | तिटारमनि, तोद्यवाडि | चरळम्, श्रीवासम् | वेळ, काडुगु |
| P. | | | | Sipanianesiyah |
| pu. | | लाजवन्ती | चीर | |
| Sinh. | रुक्मना | | | कलुभावे |
| Sl. | | | | |
| T. | एलिळम्पालै, वडिरासि | समंगै, तोद्यावाडि | सिमैदेवपारि | करपुकडुग |
| Te. | एडाकुलरति, पालगदद | पेद्दिन्दकण्टि | सरळ | नल्लावडु |
| Tu. | Dala ag | Kusen fidaue | | Ova lahanasi |
| U. | | Lajjalu | | |
| Ur. | | | सोरोळोकाडो | गंगातोरिया |

| सातला | | ६१८ | | सुभा |
|-------|-----------------------|--|--------------------|--------------------------|
| S. | सातला | साबिया | निम्बितिकाफल | सुभा |
| A. | | Ushbah hindi, Zayyan | Tuffahh | |
| B. | बनीश | अनारपूर | हेर | हिंदीना, अनारपूर |
| Bi. | | अनारपूर | | |
| Bu. | Ken brown. Suboke | | | Shasung |
| C. | संकेत, मरली | सुगंधित, मरली | हेर | सुगंध |
| Cu. | | | | मर |
| E. | | Indian sarsaparilla | Apple | |
| F. | | Salcaparilla del' inde | Pommier, Egrasseau | |
| Gaj. | बनीश | सुगंधित, अनारपूर | मरली | मर |
| Ge. | | Halbfaden, Indische sarsaparilla | Echter appel baum | |
| H. | बनी | हिंदी अनार | हेर | हिंदी, अनार |
| I. | | Salcapariglia d' india | Pomo, Melo | |
| L. | Acach concinna D.C | Hemidesmus indicus Br | Pyrus malus. L. | Euphorbia nerifolia I |
| M. | सुगंध | अनारपूर | मरली | सुगंध |
| Ma. | सुगंध, हिंदी | मरली, अनारपूर | | मरली |
| P. | | Aushbah hindi | Seb, Sef, Sir, Sib | |
| Pu. | | | मर, अनार, मरली | मरली |
| Sinh. | | सुगंध | | |
| Si. | | | मर | सुगंध |
| T. | सुगंध | अनार, अनारपूर | | मरली |
| Te. | बनीश, अनार | सुगंधित | | मरली |
| Tu. | | Hiud saparnasi | Elma ag | |
| U. | | Aushba hemaghrabi | | Zakum |
| Ur | | बनीश, अनारपूर | | मरली |

| सुनिषण्णक | | ११९ | सोमराजी | |
|-----------|-------------------------------------|----------------------|-----------------------|----------------------------|
| S. | सुनिषण्णक | सुरसा | सैरेय | सोमराजी |
| A. | | | | |
| B. | शुशुनिशाक | तुळसी | कांटाजाती | वावची |
| Bi. | | | | |
| Bu. | | Lun | Leithaywe | |
| C. | | श्रीतुळसी | मुळुगोरणे | वावन्तीगिड |
| Cu. | | तुळसी | कांटा असेरीओ | वावची |
| E. | Marsilia | Holy basil | | |
| F. | | | | |
| Guj. | लांपडी | तुळसी | कांटा शेळीओ | वावची |
| Ge. | | | | |
| H. | चौपतिया | तुळसी | कटसरैया, वज्रदन्ती | वावची, वावची |
| I. | | | | |
| L. | Marsilia quadrifolia (Figare) | Ocimum sanctum L. | Barleria prionitis L. | Psoralea corylifolia L. |
| M. | फुरडु | तुळस | कोरंटी | वावची |
| Ma. | | सुरसम्, तुळसि | चेमुळि | |
| P. | | | | Waghehi |
| Pu. | | तुळसी, वनतुळसी | | वावची |
| Sinh. | | मदुरतल | कट्टुरण्ड | वोडी |
| Si. | | | | |
| T. | | भलांगै, सुरसम् | फुरण्वि, कुडान् | फरपोकरीशी |
| Te. | | नटतुलसि | कोण्डगोच्चि | फरशेगि |
| Tu. | | | | |
| U. | | | | Babechi |
| Ur. | | | दालेकोराण्टि | वाकुची |

| स्थौणेयक | | १२० | हपुषा |
|----------|------------------------------|---------------------------------|-----------------------|
| S. | स्थौणेयक | स्पृका | हंसपादी |
| A. | | Iklil el malek an nafal | Quasab |
| B. | घेण्ट्, भाण्ट् | बौपीरिह | गोयलेलाटा, कालीझांट |
| Bi. | | | हपुषा |
| Bu. | Bugiphyn | | |
| C. | वसदनपाद, इन्वने | | नवलाद |
| Cu | | | नीरुह्वे |
| E. | | Melilot | कारायडो |
| F. | | Millot, Couronneroyale | Maiden hair |
| Guj. | | | Juniper |
| Ge. | | | Genievre |
| H. | धुनेर | Echtersteinklee, Melillotenklee | हंसराज |
| I. | | अस्पुर्क | हंसपदी, कालीझांप |
| L. | Clerodendron-infortunatum L. | Meliloto, Vetturina | हाउवेर |
| M. | भाण्डीर | Melilotus officinalis Lam. | Jinopronano. G. nero |
| Ma. | पेरुवेल्म, पेरुकु | Adiantum lunulatum Burn | Juniperus Communis L. |
| P. | | | |
| Pu. | कालीवसुटि | Aklilulmalak, Zirir | |
| Sinh. | गास्पिना | | हाउवेर |
| Si. | | | |
| T. | कसकणिण, पेरुगिलै | | |
| Te. | चिरम्बुसि, गुरुज | | |
| Tu. | | Muflun, Iklil il melik | वेटार धूप, गैपुक् |
| U. | | Aspurk | |
| Ur. | दोग्जारी | | Ardic ag, Ars ag |
| | | | Abahal, Saru |

| S. . हरिद्रा | हरीतकी | हरेणु | हस्तिदन्ती |
|--------------------------------|----------------------------------|-----------------------|----------------------------------|
| A. Aqid hindi, Kurkum | Shagar, Shir hindi | Bisillah, Bizillah | |
| B. हलिद, पित्रास | हरीतकी | मटर | वरागाच् |
| Bl. | | | |
| Bu. Hsan wen, Tanun | Pangah | Pai | Theyin |
| C. अरिदिना | अकले, हरडे | बाटगडले | |
| Cu. | | | |
| E. Turmeric | Chebulic myrobalan | Pea | |
| F. Curcuma, Safrandes indes | Myrobalan Chebula | Petit pois, Pois Vert | |
| Guj. हळदर | हरडे | वाटाणा | |
| Ge Gilburir zei | Rispiger, Myrobalan enbaum | Snaterbse, Erbsen | |
| | हल्दी | दर | मटर |
| Curcuma | Mirobalano nero | Pisollo Coltivato | |
| Lunga | | | |
| Cureumalonga Roxb. | Trminalia chebula, Retz | Pisum Stivum L. | Croton oblongifolius Roxb. |
| A. हळद | दरडा | वाटाणा | धणसर |
| Ma. मसाल, मरिनालु | कटुफ, कायस्थ | पटणि | |
| P. Darzardi | | | |
| Pu. हल्दार | हलेल, हरा | मटर | |
| Sinh कडा | आलु, अरळ | रतगोरडिया | |
| Si. | हर | लारकण | |
| T. मजल | आमगोल, वडु | पटनि | |
| Te. पम्पी, पाहुपु | करकाय, नलकरक | गुण्डुसानिधेल | |
| Tu. Kurkum, | Kabuli halile | Bizelya fidan | |
| U. Halodi | Hae jarad | | |
| Ur. | होरिड | | |

| S. | ह्यारिद्र | हिङ्गु | हिङ्गुपर्णी |
|-------|----------------------------------|----------------------------|--------------------------|
| A. | | Angudar, Shag abu kabir | |
| B. | केलीकदम्ब | | |
| Bi. | | | |
| Bu. | Hnaubeng | | |
| C. | अरक्षिनट्टो, आणवु | | डिकामलि, विकै |
| Cu. | | | |
| E. | | Asafoetida | White emetic nut |
| F. | | Assafoetida | |
| Guj. | हलदरवो | ईग | डिकामारी |
| Ge. | | Asandisteck en- kvaut | |
| H. | हलद | ईग, हिमा | डिकामालि |
| I. | | Assafetida | |
| L. | Adina cordifolia Benth & k | Ferula asafoetida L. | Gardenia lucida Roxb. |
| M. | हेद | ईग | डिकेमाली |
| Ma. | कटम्प, पीटम्प | | |
| P. | | Angadana | |
| Pr. | | | |
| Sinh. | कोलोङ्ग | | |
| Si. | | वधायनी | |
| T. | कदम्बै | पेरुगायम् | कंथिल तिकामलि |
| Si. | दाहुग | | एरुविकि, तल्लमंग |
| T. | कदम्ब | | |
| Te. | विरम्बु, ५६ | Slytan boku, | |
| Tu. | | Muñiltit melik | |
| U. | | ng, Anjadan | |
| Ur. | दोगरी | Aspu | |

चरकसंहितागतोद्भिज्जद्रव्याणां स्थानाध्यायश्लोकोद्धेखः *

Reference to the Section, Chapter and Verse of the Plant Substances
in the Caraka Samhita

| | |
|--|--|
| अंशुमती [सु. अ.]-वि. २८-९६; २९-८०. | वि. ८-१४३, १५१; इ. २-१३; वि. १-१ ४८, |
| अक्ष [सु. अ.]-वि. १२-३२, | १ ५८, १ ६३, २ १२; २-३ २८; ३-२५३, |
| अक्षत-सू. ८-२८; वि. ८-९, ११; शा. ८-३५; | २६७, २६९; ६-२८, ३९, ५०; १२-६५, ७०; १५-१४८; |
| वि. १४-५०. | १७-१२३; २४-१३३; २५-९१; २६-१५९, १८२, |
| अक्षि(क्ष)पीठ (क.)-वि. २३-२१५, २१६; क. ११-३. | १८८, २१०; २७-४२; २८-१५०, १६८, १७९; |
| अक्षीव [सु.]-सू. ४-११ १५; वि. ३-२६७. | २९-९२, १०७; ३०-३२५; क. १-२३; |
| अक्षोड (ट) [अ.]-सू. १३-१०; २६-८४; | सि. १२-१९ ३. |
| २७-१५७ वि. ११-३७; २६-१७१; २९-६६, ९९. | अग्नि [सु. अ.] वि. २६-२०; सि. ४-२१. ७-६३. |
| अगुह [सु. अ.]-सू. ३-२८; ४-१६ ३७; | अग्निमथ्य [सु. अ.]-सू. २-११, ४-१३ २६; |
| १७ ४२; ५-२१, २७, ६३; ६-१६, १७, २५; २६-४९; | १७ ४२; २१-२४. वि. १-१ ४३, १ ६२; |
| | ३-२६७; ६-२८; १३-१७०; १४-४५; ७-५७; |
| | सि. १०-१९, ३० |

* ग्रन्थस्थानाध्यायसंक्षिप्तसंज्ञानां विवरणम् ।

Explanation of the Marks of Reference.

| | |
|--|---|
| [सु.] सुश्रुतसंहितायामस्ति । | Refers to the Suśruta Saṃhitā |
| [अ.] अष्टाङ्गहृदयेऽस्ति । | " " Aṣṭāṅga-hṛdaya |
| ; अस्मादिहोदयनन्तरमध्यायस्याङ्कोऽस्ति । | This mark is followed by the number of the chapter. |
| — अस्मादिहोदयनन्तरं श्लोकस्याङ्कोऽस्ति । | This mark is followed by the number of the Verse. |
| सू. चरकसंहितायां सूत्रस्थानम् । | Refers to Sūtrasthāna in the Caraka Saṃhitā |
| नि. " निदानस्थानम् । | " " Nidānasthāna २-१५; |
| वि. " विमानस्थानम् । | " " Vimānasthāna ८, ३८; |
| शा. " शारीरस्थानम् । | " " Śārīrasthāna ३-२३७; |
| इ. " इन्द्रियस्थानम् । | " " Indriyasthāna ८, ८५, १२५; |
| चि. " चिकित्सास्थानम् । | " " Cikitsasthāna १२-३६, ६५; |
| क. " कल्पस्थानम् । | " " Kalpasth १६-१२२; १७-१२३; |
| सि. " सिद्धिस्थानम् । | " " Siddhisti; २१-७४; २३-५८; |

अग्निमुखी-सू. ४-९ | ४.

अष्टयचन्द्रन-वि. ६-१७

अङ्गलोड्य-सू. २७-११७.

अङ्गोटः-सू. २७-१५९.

अङ्गोल [सु. अ.]-वि. २३-२४४.

अजकर्ण [सु.]-वि. ८-१४४.

अजगन्धा [सु. अ.]-सू. १-७८; २-४; ४-१७ | ४५; २७-१७३; वि. ८-१३६; चि. २-२९९; ५-७०, ७९; १३-१२६; १८-१४६; २७-४३; क. ७-२२, ५४; ११-१३, १७; १२-१०, ३३, ३५;

अजडाफल-वि. २-२ | १८, ४ | १५, ४ | ३१.

अजमोद [अ.]-वि. ३-२६७.

अजमोदक-सू. २३-१८.

अजमोदा [सु. अ.]-सू. ४-९ | ६, १७ | ४५; २५-४९; वि. ८-१४२, १५१; चि. ५-७९, ८७; ११-८८; १२-४३; १४-७३; १५-९६, १९०; ३०-५५; क. ७-४१, ५२; सि. ४-१५.

अजशृङ्गी [सु. अ.]-वि. ८-१३६; चि. १-४ | ७; ३०-२७३; क. ११-१३, १७; १२-११, ३३.

अजा [सु.]-वि. १-४ | ७.

अजाजी [सु. अ.]-सू. २-४; ४-१७ | ४५; २३-२०; २८-३०; वि. ८-१५१; चि. ५-६९, ७१, ८०, ८७; ८-१४२; ११-७४, ८६, ८८; १२-४१, ५७, ६०; १३-१०३, १०५; १४-६३, ६८, ७२, ८९; १५-८८, १०२, ११३; १७-१०१; १८-७७, १७३; Si. १०७; २३-७८, २३१; २४-१२१, १७७, T. क. २६-२२, ८५, १३८, २१६, २१७, Te. चिरम्बु क. ७-४०, ५८; सि. ८-४२. Tu.

]-वि. २-३०; ७-१७१; २२-४३;

U.

Ur. बोगरी -१२.

अतसी [सु. अ.]-सू. ३-१८; १३-१०; वि. ५-६; वि. ७-२६; शा. ८-३४, ४७, ६१; चि. ५-१४१; ६-०२; ८-१७६; २५-५१; क. ११-११; सि. ४-५.

अतिगुहा [सु. अ.]-वि. २३-२१३.

अतिच्छन्ना [सु. अ.]-वि. ८-१३९; चि. १-४ | ६; ९-४६.

अतिवला [सु. अ.]-सू. ४-१० | ७; वि. ८-१३९. शा. ८-२४; चि. ३-२६७, २८-१५९, २९-५६, ६२. सि. ३-३९, १२-१६ | ५, १६ | ६, १६ | ९.

अतिरसा-सू. ४-१० | ७, १८ | ५०.

अतिविषा [सु. अ.]-सू. २-२२; ४-९ | ३, ११ | १२; २३-१९; २५-४०. वि. ८-१४३, १५१; चि. ३-२०४, २१९; ६-३८, ४२; ७-६८, १३२; ११-१६; १२-४४; १३-१५९; १४-१८७, २३०, २३६; १५-९८, ९९, १०१, १०५, १२९, १३४, १३८, १६५, १७३ १८६; १६-६१, १२२; १९-५१, १०५, १०८; २३-१९७; २६-२१, ९७, १०१, २०१; २७-३७, ३६; २८-१५१, १६८; ३०-९१; सि. ४-१४; ८-१९.

अधोगुडा-सू. १-७७

अध्यण्डा-वि. ३-२६७

अनन्ता [अ.]-सू. ४-१५ | ३१; २५-४०; वि. ८-१४४; शा. ८-२९; चि. ३-२५८; ४-१०३; २३-२३२; २६-१७९, २३४; ३०-९२; सि. ३-४८; १०-२१, ४३.

अन्तःकोटरपुष्पी-सू. १-८२.

अन्नपाकि-सि. १२-१९ | २.

अपामार्ग [सु. अ.]-सू. २-३, २३; ४-१३ | २७; वि. ७-२०; ८-१५१; शा. ८-१९; चि. ७-१२४; ८-१७६; ९-६६; १०-१८; १३-१७१; १७-१२६; २३-२४५; २६-१८४; सि. १२-१६ | ९.

अपेतराक्षसी-चि. १०-३९.

अभय [अ.]-सू. ३-२९; ५-६४; चि. ४-८१; १२-६९.

अभय [सु. अ.]—सू. १-८२; २-२९; ४-११ | १२, ११ | १३, १३ | २४, १४ | ३०, १६ | ३६, १६ | ३९, १८ | ५०; १३-१०; १५-७; २३-९, १७; २५-४९; २६-५१; वि. १-१ | ६३, १-१ | ८१, १-३ | ३, ३ | ४१; ३-२३३; ४-५७; ५-७९, १३०, १५४; ६-२९, ३०; ७-६१, ८४; ९-५६; १२-२७, ३२, ५०, ५१, ५३; १३-७८, ७९, ८१, १५१; १४-६५, १०८; १५-८८, ९९, १०१, १०३, १५२, १६८; १७-१४१, १८-५९, ६०, ११२, १२२, १६३; १९-२०, १०४; २०-२१; २१-७३; २६-२१; क. ७-२० ३/४ ३०, ४६; ९-७; वि. ३-४७; ९-१८, २०.

अभीषपत्री-वि. ८-१३९.

अभिषुक्त [सु. अ.]—सू. १३-१०; २७-१५७. वि. ११-३७; १८-१०३; २६-१७१; २९-६६

अमरदास [सु. अ.]—वि. १२-४३, ५३; १३-१४७. सि. ३-५८, ६७; ७-२६.

अमृताल-सू. ३-२६.

अमृता-वि. २०-३५; ३०-१५०.

अमृतका-सू. १४-३१.

अमृतफल-वि. ७-१४७.

अमृतफला-वि. १८-८८.

अमृतवल्ली [सु. अ.]—वि. १-१ | ७७; २२-४५.

अमृता [सु. अ.] सू. ४-१८ | ५०; २५-४०; २७-४. वि. १-१ | ५८, १ | ६३; ३-२०२, २४३; ६-३०, ७-१४६; २३-७०; २८-१५७, १७२; २९-७३; ३०-२६१, २६७, २७९. सि. ३-६१; ४-१८; ९-८७.

अमृतासङ्ग-वि. १४-५५.

अमृताक्षय-वि. २६-२८३

अमृताक्षा-वि. २६-२४३.

अमोघा-सू. ४-१८ | ४९; शा. ८-२०, ५८.

अम्यष्टकी-सू. ४-९ | ५; वि. ८-१४४.

अम्बष्ठा [सु. अ.]—वि. १५-१०८, ११३; ३०-९१.

अम्बु [सु. अ.]—सू. ३-२९; वि. ४-४६; ६-३९; १२-६५; १४-१६४; २४-१५९; २८-१५२; ३०-२७५.

अम्बुव [सु. अ.]—वि. ३०-८९; वि. ३-६३.

अम्भःमयाभाक-सू. २७-१७.

अम्लचाक्षेरी-सू. २७-९३; वि. ३-२६७.

अम्लचेतस [सु. अ.]—सू. २-२९; ४-९ | ६, १० | १०, १६ | ३७; २५-४०; २७-१५२. वि. ८-१४०; वि. ५-७९, ८६, १६२, १६६; ८-१४१; ९-५५; १२-५५; १५-१०८; १७-८७, १०४; १८-१२७, १७८; २३-८०; २४-१७२, १७७; २६-६१ क. ७-६३; सि. ९-१९.

अम्लिका [सु. अ.]—सू. २७-१५२; वि. ८-१४०; वि. १४-१२४, २००.

अम्लिकाकन्द-सू. २७-१२१.

अरिमेद [सु. अ.]—सू. ४-१७ | ४३; वि. ८-१४४. सि. २६-२०६.

अरिमेदस्-वि. २६-२०६.

अरिमेदा-सू. ४-१८ | ४८.

अरिष्ट [सु. अ.]—वि. ३-२४१, २५८; ७-१५२.

अरिष्टा [सु. अ.]—वि. २४-१६०.

अरिष्टा सू. ४-१८ | ४९; शा. ८-२०, ५८.

अरुक्-सू. १३-१०.

अरुक्कर [सु. अ.]—सू. ४-११ | १३.

अर्क [सु. अ.]—सू. १-११४; ३-१२, ४-९ | ४, १३ | २२; ५-७३; १४-३१, ४२, ४३; २६-४९. वि. ७-१७, २१; ८-१४३, १५१. सि. ३-२६८; ७-५७, ८५, १०२, १०६, ११२; २३-५६, २०५, २१६, २४४; २५-८७, ९५; २६-१३, २४; २७-२७, ५०, ५४; २९-१४८; ३०-८२, १०९, ११५; सि. ३-५६; १०-२३.

अर्जक [सु. अ.]—सू. १४-३२; २६-३८; वि. ८-१४२; १४-३२; वि. ७-८४, ८५, १२५; १२-६७, ७२; २७-५६. ८०; १२-३३, ६५;

अर्जुन [सु. अ.]—सू. ३-२५; १६-१२२; १७-१२३; वि. ८-१४४. सि. ३-१७६; २१-७५; २३-५८; ८-१२९; २३-२०४.

| | |
|---|---|
| अलकक-वि. १७-१३२; १८-७३; ३०-२२६. | २८-१६६; १७०; २९-७३; ३०-२६०. सि. ३-३९; |
| अलक [सु. अ.]-वि. ७-१७; ८-१५१. सि. १०-१३. | ४-४; १६-१६ २, १६ ६, १९. २. |
| अलावु [सु. अ.]-सू. २७-११२; मि. ५-७ ६; वि. ७-१९, ५२; २६-१४; २९-३६. | अश्वत्थ [सु. अ.]-सू. ४-१५ ३३; ५-२२; २५-४९; २७-१०५, १६४; मि. ८-१४४; सि. ३-२५८; ४-१०४; ६-३२; ११-३१; १४-२२५, २३४; १५-१२६; १९-९९; २१-८५; २५-४६, ८७, ११३, ११७; २६-९८; क. १-८; सि. ६-६६; ८-३८; ११-२४. |
| अवघात-वि. ७-१२९. | अश्वत्थला [सु.]-वि. १-४ ७. |
| अवघातक-क. ८-३. | अश्वमार [अ.]-वि. ७-९८. |
| अवगुज [सु. अ.]-सू. २७-३३, १०२. वि. ८-१४२. सि. ७-१६९, १७०, १७१; १४-१२३, १९-३९. | अश्वदन्त-सू. ३-१७; वि. २९-१४२; सि. ९-५१. |
| अवगुजक-सू. २७-९६. | अश्वारोहिका-सि. १०-३७. |
| अवाक्युष्णी-वि. ७-११४; १४-२३४; २९-६२. गङ्गाया सू. ४-१८ ४९. शा. ८-२०, ५८. | असन [सु. अ.]-सू. ४-१७ ४३; ५-७३; २५-४९; वि. ८-१५१; सि. १-२ १२, ३ ३, ४ १३; ३-२५८; ४-९४; ६-३२; ७-१०१, १५२, १६५; २६-२७२; २७-५६; क. १-८. |
| अशोक [सु. अ.]-सू. ४-१८ ४७; वि. ८-१४४ | असनपर्णी-वि. ८-१३९; सि. २६-७०. |
| अशोकोरोहिणी-सू. ४-१८ ४८; शा. ८-६१. | असितसुर-वि. १८-११७; २३-१८१. |
| अश्वत्थक [सु. अ.]-सू. १-११४, ११५; ४-१५ ३३; १४-३१ सि. ८-१४०, १४४; सि. ६-३८; १४-४७; २६-१८४. | असिता-वि. १२-१०७. |
| अश्वभिर् [सु. अ.]-वि. २६-४६ ६६; सि. ८-१३. | असितोत्पल-शा. ८-२८. |
| अश्वमेध [सु. अ.]-वि. २६-६४, ६९. सि. ३-६५. | आक्षिपिकल-सू. २७-१६३. |
| अश्वमेधक [सु. अ.]-सू. २३-१५; सि. २९-७३; सि. ९ ८. | आखुपर्णिका-सू. ८-१५; सि. ३०-१०७; सि. ४-१८; १०-३२. |
| अश्वकर्ण [सु. अ.]-सू. ४-१७ ४३; २५-४९; वि. ८-१४४; सि. ३-२५८; ११-३२; २३-२२०; २५-८८. | आखुपर्णी-सि. ३-६१; ८-२. |
| Si. अश्वकर्णक-सि. ११-२८. | आ(अ)टूरक [सु. अ.]-वि. ३-२५८; ४-६६; ७-७७. १५-१२५. |
| T. क. नूरक-वि. २३-२४५. | आढकि-वि. २६-१५३. |
| Te. विरम्भक-वि. ९-८७. | आढकी [सु. अ.]-सू. २१-२६; २७-३३; वि. ७-१७; सि. ४-३७; १०-२०; २३-१७, २४३; २८-१३०; २९-५१; सि. १०-३४. |
| Tu. १-१० अ.]-सू. ३-८; ४-९ २, १३६, १३९; सि. २-१ ३४; १२. १७-११७; १८-७५; ४; २७-४३, ५०; | आत्मगुप्ता [सु. अ.]-सू. १८-४, २४-४७; २७-३४; वि. ८-१३९; सि. १-१ ७६; २-१ २६, १ २८, १ ३३, २ ४, २ १४, ४ २३, ४ २८; ३-२५८; ५१-३६, ६६; १८-७६; २६-१६८; |
| U. १३६, १३९; सि. २-१ ३४; | |
| Ur. दोगरी १२. १७-११७; १८-७५; | |

२६-५६, ७६; क. ४-१३; सि. ३-५०, ५३; १०-२९;
१२-१६ | ९, १८ | ६, १८ | ७, १८ | ८, १९ | २,

आत्मजा-चि. ३-२६७.

आदानी-शा. ८-४७.

आदिस्थपणी [सु. अ.]-चि. १-४ | ७.

आदित्यवल्ली-चि. १६-२६८.

आनूपल्लीतक-सु. १-८१.

आमल-क. १-१६.

आमलक [सु. अ.]-सु. २-२६, ३१; ४-११ | १३,
१३ | २४, १६ | ३६, १६ | ३९; ५-१२; ७-६१;
१३-६३; १५-७; २१-२३, २६; २३-३८; २५-४०,
४९; २६-४९, ५०, ८४; २७-४, १४७, २८२;
वि. ७-१७, २१; ८-१३६, १४०; चि. १-१ | २५,
१ | ३७, १ | ४१, १ | ४६, १ | ५८, १ | ६५,
१ | ६६, १ | ७५, १ | ७६, १ | ७७; २ | ४, २ | ६,
२ | ७, २ | ८, २ | १०; ३ | ३, ३ | १७, ३ | ४१;
४ | १९, २-१ | २८; ३-१८४, १८६, १८७,
२०२, २०७, २२०, २२५, २३०; ४-३५, ५७;
५-१२०, १२२, १२४, १३३; ६-३०, ३६, ४८;
८-६७, १३७; ११-६६; १४-१३८, १४८, १५३,
१५८, २०२; १५-१२०, १५२; १६-५८, १३५;
१८-१३६; २१-४४, ६१, ६७, १०१, १११, ११२;
२२-३६; २४-१३९, १४०, १७१, १८३; २६-२७९;
२८-२४३; २९-९८, ९९; ३०-११७, १४९,
२५९; क. १-१२, १४; ७-४६, ६७; ८-१०; ९-६;
१०-११, २०; सि. १२-१८ | १, १९ | २.

आमलकी [सु. अ.]-चि. १-१ | ३६; २६-५३,
९९, २७७; ३०-७८; क. १-८; ७-६५; १२-१२.

आम्र [सु. अ.]-सु. २-२८, ४-१० | १०,
१४ | २८, १५ | ३१, १५ | ३३; २६-८४; २७-१३९,
२८२; वि. ८-१४०, १४४; चि. ४-९९, १०१;
८-१२७; १५-१३६; १९-५४, ११०; २४-१८३;
२५-११६; २६-२७१, २७२; ३०-७९, ९०,
सि. ८-३६.

आम्राव [सु. अ.]-सु. २७-१२९; चि. ६-३१.

आम्रातक [सु. अ.]-सु. ४-१० | १०; २६-८४;
२७-१६१; वि. ८-१४०; चि. २२-३५; क. ७-७५;
११-७.

आरवध [सु. अ.]-सु. १-८३; २-१०; ३-३;
४-११ | १३; २३-१०, १२; वि. ८-१३५;
चि. ३-२०४; २३२, २४५; ४-५७; ७-९१, ९७, १६०;
१५-१७९; १६-५८; १८-१११; २१-८८, ८९;
२६-५७, १३५; २७-२७, ३४; क. १-२२, २-१०,
१४; ६-७; ८-३; १०-१५; सि. ३-३९, ५६;
सि. १२-१६ | १, १६ | २, १६ | ६.

आरुक [सु. अ.]-सु. २७-१३२, १३३.

आर्द्रक [सु. अ.]-चि. ८-१४२; वि. ९-५३;
१२-४७, ४९; १३-१५३; २४-१११, १२६, १२७,
१२८, १७६; २८-१३७.

आलुक-सु. २५-३९; २७-९९.

आसुरी [सु. अ.]-सु. २७-१०१.

आस्फोत [सु. अ.]-चि. ३-२६७; ७-१.

आस्फोता [सु. अ.]-चि. १५-१२५. ११२;
२३-२४३; २८-१२५.

इष्ट [सु. अ.]-सु. ४-१, ११ | ४७;
१६ | ४०; ६-१३; १३-६६; २
२७-२३७; वि. ४-५; चि.
३-३ | ५; ६-११; ८-२४;
२-१ | २४, १ | २८, १६.
४ | ४६; २२९,

५-१२२, अ.]-सु. २-४, ७; ३-५, २४, २८;
२१६; १, १७ | ४४; ७-२१; २३-१५;
१०२, १, १४२, १५१; शा. ८-३४, ३८;
३४, २३६४, १ | ६९; २-१ | ३१; ३-२३७;
२८८; २; ६-४१, ५०; ७-७४, ८४, ८५, १२५;
१२७; १४५; ११-२१, ४०; १२-३६, ६५;
७-७; १५-१४८; १६५; १६-१२२; १७-१२३;
७१, ७३, ९२, १७६; २१-७७; २३-५८;

इक्षुरक [सु. अ.] - सू. ४-१२ | २०;
वि. २-४ | २३, ४ | ३१; ४-७९; २६-६२;
सि. १२-१८ | ६, १८ | ७, १८ | ८.

इक्षुवालिका-सू. ४-१२ | १७; २५-४९;
वि. ८-१३५, १३९; शा. ८-२९, ५७; वि. २-१ | २४;
क. १-२५.

इक्षुवाकु [सु. अ.] - सू. १-८१, ८३; २-७;
३०-६२; वि. ८-१३५; शा. ८-४१; क. ३-१,
३३, १२३, २३; सि. १०-२५; १२-१२.

इक्षुवालिका-वि. ११-१८.

इक्षुद [सु. अ.] - वि. १८-६९.

इक्षुदी [सु. अ.] - वि. १-३ | १५; ६-२०;
७-११९.

इक्षुद [सु. अ.] - सू. ४-१२ | १७, १५ | ३५;
वि. ४-५; वि. ८-१३९; शा. ८-५७; वि. ३-२५८;
सि. ७-३०.

इक्षुयव [सु. अ.] - वि. ७-७७; ८-१२५;
४-२७, १३२, १७३, १९०; २१-५२; क. ५-४;
१४-४

इक्षुणी [सु. अ.] - वि. १४-१३८.
८-१३. - वि. ६-४२.

अक्षुमेद [सु. अ.] -

अक्षुमेदक [सु. अ.] - ८५, ९०.

वि. ९८. - १२.

अक्षुर्कण [सु. अ.] - १४-१६०.

वि. ८-१४८; वि. ३-२५८,
१-८.

Si. अक्षुर्कण-वि. ११-२४.

T. कक्षुर्कण-वि. २३-२४५.

Te. विक्षुर्कण-वि. ९-८७.

Tu.

]-1- अ.] - सू. ३-८;

U. १३६, १३९; वि. २-

Ur. वोग्दारी - १२. १७-११७; १८
४; २७-४३, ५०,

उत्पल [सु. अ.] - सू. २-२१; ३-२४, २६;
४-१५ | ३२, १५ | ३४; ५-२२, ६४; १४-११;
१५-१२; २५-४०, ४९; २७-११७; वि. ६-१७;
शा. ८-२४; वि. १-१ | ५८, १ | ६४, ४ | १४;
३-१८३, २२३, २५८, २६०; ४-५०, ८०, ८९, ९३
१०१, १०२, १०७, १०८; ५-११९; ६-३१, ३२;
७-१०२, १३३; ८-८४; १४-१९९, २१८, २२१,
२३०, २३६, २३७; १५-१२७; १८-९८; १९-५३,
५४; २१-५४, ५६, ५७, ७२, ७५, ७९, ९७;
२२-४२; २३-७७, ९५, ९७, २४३; २४-१५६;
२६-५१, ७३, १६१, १७७, २१६, २३८,
२७६; २९-६४, ११०, १२८, १४२; ३०-७८, ८९;
सि. ३-४७, ५०; १०-३३, ४३; १२-१६ | ११.

उक्षुर्कण [सु. अ.] - सू. १-८२; २-९; वि. ८-१३६;
सि. १०-२६.

उक्षुर्कण [सु. अ.] - सू. २५-४०; वि. ३-१४५,
१९९, २५८; १५-१३४; १८-४९, १०६; १९-५०;
२३-२८१ २०२; २७-२९, ४३; क. ७-५७.

उक्षुर्कण [सु. अ.] - सू. ५-२२; २५-४९; २७-१०५,
१६४; वि. ५-८ | २; शा. ८-२४; वि. ३-२५८;
४-४९, ७५, ९०; ७-१५; ११-३३; १४-१०, २१४,
२२५, २३४; १५-१२६; १९-९९; २१-७३, ८५;
२५-४६, ८७, ११३; २६-९८; २९-१३१; ३०-७३,
७७, ७९; सि. ८-३६, ३९.

उक्षुर्कण-वि. १२-३.

उक्षुर्कण [सु. अ.] - सू. २५-४०; २७-१४; वि. २-४;
४-५; ५-६; वि. ७-२६; ८-१३५; शा. ३-४ | ५.

उक्षुर्कण [सु. अ.] - शा. ८-४१, वि. १३-१२५;
२६-१३८; क. १२-१३; सि. ९-८.

उक्षुर्कण [सु. अ.] - वि. ७-१४५.

उक्षुर्कण-वि. ८-१३५; क. १२-४.

उपोदिका-सू. २-३३; २६-८४; २७-९४;
वि. ८-१३५; वि. १४-१२३, २०४; १९-३१; २९-५२;
सि. ७-६१.

उमा [१. अ.]-सू. २७-३४; वि. १७-८४; २५-५३,
७४; २९-१४०.

उरुवुक स. ४-९ | ४.

उरुवुक [सु. अ.]-सू. १४-४२; २५-४९;
२७-१०८; वि. ८-१३९; वि. १२-२५, २८; १३-६९;
२६-६२; क. ७-५०.

उरुमाण [सु. अ.]-सू. २७-१५७; वि. १९-६५.

उशीर [सु. अ.] सू. ४-१० | ८, १२ | २०,
१४ | २८, १७ | ४३, १७ | ४४; ५-२१; २५-४०;
वि. ८-१३५, १४३; वि. ३-१४५, १९९, २०५, २०६,
२१९, २४१, २४५, २५८; ४-३१, ४५, ७३, ७८,
८०, १०२; ६-२९, ३०; ७-१४४; ८-८३; ११-४४;
१४-१८६; १५-१२५, १३७; १६-१०८; १९-५०;
२०-३१; २१-५४, ७६, ८७; २२-४१; २३-७७,
२००; २६-१७७, २०८, २१६; २८-१५८; २९-१०६,
१११, ११४, १३४; ३०-८७; वि. ३-६१; ४-२०;
६-४९, ८३; ९-१७; ९-८; १०-२२, ३९;
१२-१६ | १.

ऊपण [सु. अ.]-सू. २४-५०; वि. १५-११५.

ऊषि [सु. अ.]-सू. १-१ | ६३, ४ | १५;
२-१ | २६, १ | ३४, २ | ५; ४-१०३; ११-३६, ४६,
६२; १८-३९, १०१, १२६, १७८; २६-८७, १६७;
२८-१५९; २९-५६, ९३, १५३; वि. ३-४८, ४९.

ऊषभका [सु. अ.]-सू. ३-२२; ४-९ | १,
१२ | १९; वि. ८-१३९; शा. ८-१९, ६२; वि.
१-१ | ४४, १. | ६३, १ | ७६; २-१ | २५, १ | ३४,
२ | ५; ३-२५८; ४-८४; ११-२९, ३५, ४४, ४५,
६२; १५-१५६; २३-९५, १९६, २६-९३, १६१,
१६९; २८-१२५, १५१, १६१; २९-५५, ७२, ७७,
९३, १११; ३०-५०; क. २-१२; ४-१३; ७-१८;
वि. ४-३; ९-८; १२-११ | १, १९ | २.

ऊषभी [सु. अ.] सू. ४-१० | ७.

ऊषगन्धा-सू. ४-९ | २; वि. ८-१३९.

ऊषप्रोका-सू. ४-१० | ७; वि. ८-१३९;
वि. ३-२५८; २९-७२.

एकाष्टीला-वि. १०-२३.

एकेषीका [सु. अ.]-वि. ३-२६७.

एङ्गज [अ.]-सू. ३-३, १३, १५; २७-३३;
वि. ७-९३, १०३, ११३, १२६, १२७, १६०, १६१.

परका-सू. ३-२४, २७; वि. २९-१३४.

परण्ड [सु. अ.] सू. २-१२; ४-१३ | २२,
१७ | ४४; १३-१०; २५-४०; २६-८४, ९३;
वि. १-१ | ४३; ३-२३५, २६७; ५-९२, १४१,
१५०; ७-१०८, ११२; १३-६५, १७३; १४-४४;
१५-७९; १७-७७; १८-१७१; १९-४८; २६-२९,
४६, १८२, २३७, २४०; २८-८५, ११४, ११५, १६१;
२९-६१, ८१, ८३, १०३, १५०, १४१; ३०-१९८;
क. ११-११ वि. ३-३६, ३८, ६१, ६५; ४-४, १८;
७-५०, ८-१३; ११-३२; १२-१६ | २, १६ | ६.

एवादि [सु. अ.]-वि. २६-५२, ५३, ६४;
वि. ९-८.

एवादि [सु. अ.]-सू. २७-११०, १११, ११२;
वि. २६-५२, ५३, ६०.

एलवालुक [सु. अ.] ४-१२ | २०, ११ | ४७;
२५-४९; वि. ८-१४४; वि. ९-३५; १४-१३९;
१६-१०८; क. १-२३.

एलवालु [सु.]-वि. १५-१६५.

एलवालुक-वि. १४-१५९.

एला [सु. अ.]-सू. २-४, ७; ३-५, २४, २८;
४-१६ | ३७, १७ | ४४; ५-२१; २३-१५;
वि. ८-१३५, १४२, १५१; शा. ८-३८, ३८;
वि. १-१ | ६४, १ | ६९; २-१ | ३१; ३-२६७;
५-७०, १५७; ६-४१, ५०; ७-७४, ८४, ८५, १२५;
८-१३७, १४५; ११-२१, ४०; १२-३६, ६५;
१४-१६४; १५-१४८; १६५; १६-१२२; १७-१२३;
१८-७१, ७३, ९२, १७६; २१-७४; २३-५८;

२४-१७७, १८१; २६-५७, १३८, १९०, १९२,
२०८, २०९, २१६, २४९; २८-१५०, १५८, १६२;
२९-१०७, १४२, १५०, १५२; क. १-२३; ७-३२,
३४, ४६, ७५; सि. ३-५७; ७-१८; १८-१५.

पलापर्वी-वि. ८-१३५.

पेन्नी [सु. अ.]-सू. ३-२७; ४-१० | ७,
१८ | ४९; शा. ८-२०, ५८, ६२; वि. १-३ | २४,
४ | ६; २६-७०; २९-९४;

पेन्नुक सू. २७-११४.

पोदनपाकी वि. ८-१३९; वि. ३-२५८.

पुक्क [सु. अ.]-सू. ५-७३; वि. ३-२५८;
७-१२९; १४-२१४; २३-१००; २५-११३;
क. १-८.

पुक्कोल [सु. अ.]-सू. ५-७७, वि. २६-२१०;
२८-१५३.

पुक्कु [सु. अ.]-सू. २६-८४.

पुक्कुरा [सु. अ.]-सू. ४-१५ | ३२;
वि. ८-३८, ४१.

पुक्कुरेरी [सु. अ.]-सू. ३-१०. वि. ६-३२.

पुक्कुरी [सु. अ.]-वि. ९-७०; १५-१८८;
२३-६६, ७९, १८७, २०४, २१३, २४५.

पुक्कुरा [सु. अ.] वि. ९-४७.

पुक्कु [सु. अ.] वि. २३-६६.

पुक्कु [सु. अ.]-वि. २६-२०१; सि. ११-९.

पुक्कुरोहिणी [सु. अ.]-वि. ३-२००; ५-१०६;
२७-३१, ३७, ३८.

पुक्का [सु. अ.] वि. ७-१७; वि. ७-६८;
१५-१३३; १८-१६३; २३-१९८; २६-१९०, १९८;
क. ५-६१.

पुक्काख्या रोहिणी वि. ७-१०९.

पुक्कालावु [सु. अ.] वि. ७-११६; १४-५७.

पुक्कुसि ११-६.

पुक्कुवि [सु. अ.] वि. ९-७०; १५-१३७;
१८-१७३; क. १०-१२.

पुक्कुला-वि. २८-१५२

पुक्कुरोहिणी [सु. अ.]-सू. ४-९ | ३, १२ | १८;
२३-१९; वि. ३-२०४, २०६, २०८, २११, २१३,
२२९, २९९; ६-४१; ७-६२, १३६; १०-१८;
१३-१३३, १५८; १४-२३५; १५-१३७, १७३, १८२;
१६-९९, १२२; १७-१४१; २७-३५; क. ७-५९;
सि. १२-१६ | १.

पुक्कुरोहिणी-वि. ८-१४३; शा. ८-५६;
वि. १५-१२९.

पुक्कुल [सु. अ.]-सू. ४-९ | ५, १२ | २०,
१८-४७; वि. ८-१४४; वि. ४-७३; ६-२७; ७-१०२;
१४-२३६; १८-११२, १६३; १९-५४, ११३;
२३-६६; २५-६६, ११२; २६-९७, २०९; ३०-७९,
९२; सि. ४-१३.

पुक्कु [सु. अ.]-सू. ४-१५ | ३१; २५-४०;
वि. ८-१४४; वि. ११-३४; १५-१३४; ३०-९२;
सि. ८-३९.

पुक्कुल [सु. अ.]-सू. २७-९६; वि. ८-१४३;
वि. ३-१८९; ४-३८.

पुक्का [सु. अ.]-सू. ४-१५ | ३२; वि. १९-११३;
२०-२९.

पुक्कुरोहिणी-वि. ३-१८२.

पुक्कुरोहिणी [सु. अ.]-सू. ४-१४ | ३०, १६ | ३६,
१६ | ३८, १७ | ४४; वि. ८-१३९, १५१;
वि. २-१ | २५, ३ | ८; १९-२१, २६, ५०;
सि. ९-८; १२-१६ | २, १६ | ५.

पुक्कुरोहिणी-सू. २-२२; ४-१७ | ४२;
वि. १-४ | १६; १४-१२९; १५-१७१; १८-३५,
१०६, १२५, १८४; २४-१६५; क. १०-१०;
सि. १२-१६ | ४, १९ | २.

कतक [स. अ.]-सू. ४-११ | १६; वि. ८-१३९; शा. ८-३४; चि. २६-२५१, २५२.

कत्तृण [अ.]-सू. २-१३; ४-१२ | १७; चि. ८-७९; १८-११२; २३-२१३; सि. ७-१७; ११-२५.

कदम्ब [स. अ.]-सू. ४-१२ | २०, १८ | ४७; २७-११४; वि. ८-१४४; चि. ३-२५८; ६-२७; १८-१५४; २५-८७, ९५; २९-९९; सि. ६-६६; ११-१९ | १.

कदर [स. अ.]-सू. ४-१७ | ४३; २५-४९; चि. ३-२५८.

कदली [स. अ.]-चि. ३-२५८, २६०; ४-१०७; ७-८९, १६८; १३-१७१; १४-२१८; २१-७३; २६-५५, २२८.

कनक [अ.]-चि. १-१ | ४९; ७-७४; २३-७८; २६-५४.

कनकक्षीरी [स. अ.]-चि. ७-१११.

कनकपुष्पी-चि. ७-१६७.

कपिकच्छु [अ.]-चि. ११-६२; २८-१२५, १६०.

कपित्थ [स. अ.]-सू. ३-१३; २५-४०, ४९; २६-५०, ८४; २७-१३६; चि. ६-३५; ७-९३; ८-१२७; १२-७१; १४-१३८; १५-११३, ११४; १७-१३५; १९-१११; २०-३६, ३९; २३-४८, ७०, ९६, १८४, १८६, २१६; २६-७६; २९-१४८; क. ७-३१; सि. ११-२६.

कपीनन [स. अ.]-सू. ४-१५ | ३३; २५-४९; सि. ८-१४४; चि. ३-२५८; १५-१२६.

कपोतवल्ली-चि. ८-१३९.

कम्पिल [स. अ.]-चि. ६-३५; क. ११-१६; १२-३९.

कम्पिलक [स. अ.]-सू. १-८३; २-९; ३-१०; २६-८४; वि. ८-१३६; चि. ५-१०५, १३०; ७-१०३, ११४, १२०; १३-११९; २१-१३७; २५-९०, ९३;

२६-१३, ६४; क. ९-१०, १०३, १७; ११-१८; १९-३५; सि. १०-२६.

कमल [अ.]-सू. ३-२४; ५-२२; चि. ४-१०१, १०२; १९ ५३; २६-५१; सि. ३-४७, ५०.

कमरुथा-चि. २६-८३.

करञ्ज [स. अ.]-सू. ३-३, १३, १४, १५; ५-७३; १३-१०; १४-३१, ४३; वि. ७-१७, २६; ८-१४२; शा. ८-५६; चि. ३-२६७; ७-४८, ५६, ९१, ९३, १११, ११९, १५२, १५८; १२-६७, १४-५७, १०१; २३-६९, २४६; २६-२३, ५७, १५४, १८६; २७-३४, ५७; क. ११-११, १४.

करञ्जौ द्वौ [स. अ.]-चि. १५-१७९.

करमवे [स. अ.]-सू. ४-१० | १०; २६-८४; वि. ८-१४०.

करमवेक-[स. अ.]-सू. २७-१६१.

करवीर-सू. ३-१५; ४-११ | १३; ५-७३; वि. ८-१४३; शा. ८-३२; चि. ७-५६, १०२, १२९, १५८; २३-६९; २५-८७.

करवीरक [स. अ.]-सू. ३-३, १०; चि. ७-११५; २१-८७; २६-२६६; सि. ४-१९.

करहाट [स. अ.]-चि. २६-१५; क. १-२७.

करीर [स. अ.]-सू. २७-१४०; वि. ८-१४३; चि. १४-१०; ३८-८२; सि. ७-३१; ११-२६;

कर्कट [स. अ.]-चि. २३-११.

कर्कटकी [अ.]-चि. १८-५१, १५३.

कर्कटशृङ्गी [स. अ.]-चि. ८-१३९; १७-१०१; १८-५०, १५९; २१-३८.

कर्कटाख्या-चि. १६-८९; १७-९४; १८-११८, १७३, १७७; सि. ४-१०.

कर्कटाख्या-क. ७-१८.

कर्कटिका [स. अ.]-चि. १९-१०४.

कर्कशु [सु. अ.]—सू. ४-१३ | २४; २५-४९;
२७-१३२; शा. ८-४७; वि. १३-१२५; १४-१०;
क. ११-७; सि. ३-८; ११-२६.

कर्कश [अ.]—सू. २७-९७; वि. ८-१४३.

कर्करुका [सु. अ.]—वि. १९-३२.

कर्कोटक [सु. अ.]—सू. २७-९६; वि. ८-१४३;
वि. ३-१८९३.

कर्कोटकी-क. ४-३.

कर्चूर-सू. २७-१५५.

कर्णिकार-क. ८-३

कर्दम-सि. ७-५७; ८-३६.

कर्पूर [सु. अ.]—वि. २८-१५३.

कपोलचल्ली-वि. ८-१३९.

कर्णुदार [सु. अ.]—सू. ४-१३ | २३; २७-९९,
१०४; वि. ८-१३५; वि. १४-२०२; क. १-१४;
सि. ७-६१; १०-३४.

कलम-सू. २६-८, ११; वि. १४-९५.

कलम्य [अ.] सू. २७-१०१.

कलशी [सु. अ.]—वि. ३-१८७.

कलसी [सु. अ.]—वि. ३-२२४.

कलाय [सु. अ.]—सू. २७-२९, ९२, ९६३;
वि. १४-१०; २०-३७; २५-६२; ३०-२५८.

कलिङ्ग [सु. अ.]—वि. ३-२२८; ७-४६, ९१;
१५-१०१; सि. ३-५९, ६३; ११-२३.

कलिङ्गक [सु. अ.]—वि. ३-२००, २११;
६-४२; ७-६८; १२-४४; १६-६०, ९४; २६-२०१;
क. ५-४; सि. ४-२०; ११-३४.

कशेरु [अ.]—वि. १४-१०.

कशेरुक [अ.]—सू. ३-२१; २७-११६; वि. ८-१३९,
१४४; शा. ८-२४; वि. ३-२५८; ८-८४; १४-९;
२९-८३; २६-५०, ७३; २९-९९; सि. १०-३८.

कशेरुका-वि. २१-५८; सि. ३-४९.

कसेरुक [सु. अ.]—वि. २६-१६९.

काकणन्तिका-वि. ५-७ | ८; वि. ७-२०;
१४-१०.

काकनासा [सु. अ.]—वि. ७-१२३; १८-४०;
३०-५१, ५३; सि. ४-५, ९; १०-३७.

काकनासिका-वि. ८-१३९; वि. १-१ | ६४.

काकमाची [सु. अ.]—सू. ३-१७; २६-८४;
२७-८९; वि. ५-६; वि. ८-१४३; सि. ७-९६;
१२-७३; १४-१२४; १६-७०३, ८४; २६-२६९;
२९-५२.

काकाण्ड[सु.]—सू. २७-३४; वि. २३-४९, ५२, ५३.

काकाण्डोला [सु. अ.]—सू. २७-३४.

काकाह्वा [अ.]—वि. २१-९०.

काकोदुम्बरिका [अ.]—वि. ८-१४३; वि. ७-१७०.

काकोलि-वि. ४-९५; २६-९३; सि. ३-४९.

काकोली [सु. अ.]—सू. ४-९ | १, ९ | २,
१२ | १९, १७ | ४४; वि. ८-१३९; शा. ८-२४;
वि. १-१ | ६४, ७६; २-२ | ५; ११-३५; १८-९९,
१०१; २६-१७०; २८-१५९; २९-१६, ९३; क. ४-१३;
७-१९; सि. १०-२८; १२-१९ | ३.

काकोलीद्वय [सु. अ.]—वि. २९-७२.

काकोलयौ [अ.]—वि. २५-९२.

काञ्चनक्षीरी [सु. अ.]—वि. १३-१३३;
क. १०-१२.

काण्डीर-वि. ३-२६७; क. १-२५.

काण्डेधु-सू. ४-१२ | २०; २५-४९; वि. ४-१४;
वि. ८-१३५; वि. २-१ | २४; सि. १०-३३.

कान्ता [अ.]—वि. २५-११६.

कायस्था [अ.]—वि. ९-५७; १७-१४०३.

कारवी [सु. अ.]—सू. २७-३०७; वि. १२-६०;
१३-१२६; १४-७२, ८९; २४-१८२, १८३;
२६-२१९.

- कारवेहिका-वि. ८-१४३.
 कार्पास [सु. अ.]-शा. ८-४३; वि. १९-९३;
 २६-६९; २८-१३५३.
 कार्पासी-वि. ८-९६.
 कालकूट [सु.]-वि. २३-११.
 कालकृतक-वि. ८-१३५; क. १-२५;
 वि. १८-३३.
 कालमालक [सु.]-वि. २-४; वि. ७-१७, २९;
 ८-१४२, १५१; वि. ३-२६५; क. १-२५.
 कालशाक [अ.]-सू. २७-९१; वि. १६-१८२.
 काला (कालानुसारिवा) [सु. अ.]-
 वि. २८-१६१.
 काला (काकोली) [सु.]-वि. ३-२५८.
 कालागुरु [सु.]-शा. ८-४१.
 कालानुसारिवा [सु.]-वि. २६-२४३.
 कालानुसार्य [सु.]-वि. ३-२५८.
 कालानुसार्या [अ.]-वि. ४-१०३.
 कालीय [सु. अ.]-वि. ६-१७; वि. ३-२५८.
 कालीयक [अ.]-वि. ४ ७३; ६-३१; १६-५६;
 २४-१६०; २५-११६; २६-२३४; २९-१११;
 ३०-८९.
 कालेयक [सु.]-सू. ३-२६.
 काश [सु. अ.]-सू. ४-१२ | १७, १५ | ३५;
 वि. ८-१३९, १४४; शा. ८-२९, ५७; वि. १-१ | ४४;
 ३-२५८; ४-१०३; १४-२२५; २२-४४; वि. ७-३०,
 ९-८.
 काश्मरी [सु. अ.]-वि. २६-१६७.
 काश्मर्य [अ.]-सू. २ ११; ४-१३ | २४,
 १६ | ६८, १७ | ४१; ११-६६; १५-७; २५-४०, ४९;
 २७-१३५; वि. ८-१३६, १३९; शा. ८-२९;
 वि. ६-१ | ४३; १ | ६२; ३-२०६, २५८; ४-३९;
 ११-१४; १२-३७, ६७; १४-२०२; १६-५६;
 १८-३९, ८३, २६३; १९-७४; २३-१९५; २६-२७२;
 २८-९६, १२१; २९-५९, ६४, ७६, ८५, ९७, १०५,
 ११२, ११६, १२१; ३०-५२, १००; क. ७-२०;
 वि. ३-५३; ६-८३; ७-१३, २८; १०-१९, ३९,
 ४२; १२-१६ | ५, १६ | ११.
 काष्ठगोधा-वि. १-४ | ७.
 कास्त-वि. २६-७३.
 कासमर्द [सु. अ.]-वि. १८-११७, १६१, १६३,
 ३८-५२; क. १-२५; ४-१७.
 कासमर्दक [सु. अ.]-वि. १७-९९.
 कणिही [सु. अ.]-सू. ४-११ | १५; वि. ७-२१.
 किराततक [अ.]-वि. ३-२०२, २११; ४-३८,
 ७४; ६-४१; ७-१४६; ८-१०८; १४-१९६; १५-१२७,
 १३७.
 किराततकक [सु. अ.]-सू. ४-१२ | १८,
 १४ | २९; वि. ७-२१; ८-१४३; शा. ८-५६;
 वि. ३-१९८, ३४३; ४-३८, ४५; ७-१४१; १४-१८६;
 १९-५०; २१-५५; ३०-२६२, २६७.
 किलिम-वि. ८-१४२; शा. ८-३४, ४१;
 क. ७-१५.
 किंशुक [सु. अ.]-वि. १-३ | १५, ३ | ३३;
 ६-३१; २६-२५८; २९-११०; वि. १०-३१.
 कुक्कुम [सु. अ.]-वि. २३-५४, ७८, १९०;
 २६-५२; २८-१५२, १६२; २९-११३.
 कुचम्बन [सु. अ.]-वि. ४-१०३; ३०-२७५.
 कुचैला [अ.]-सू. २७-९५.
 कुञ्जिका-सू. २७-३०७; वि. १४-७२; १५-१०८;
 ३०-५४, ५७.
 कुटज [सु. अ.]-सू. १-८३, ८४; २-७; ३-१४,
 १५; ४-११ | १२, ११ | १४; वि. ७-१७, २१;
 ८-१३५, १४३; शा. ८-३२, ४१; वि. ३-२५८,
 ८-४३, ४७, ५६, ९४, १०२, ११३, १२९, १५३,
 १५८; ८-१०८, १०१; १४-१९७; १५-१३८; १९-८०;
 २३-२८६; २५-८७, २६-५७; ३०-१००; क. २-९;

सि. ३-५६; ११-८, १२; १२-१६ | १. १२-१८ | १, १८.

कुटजत्वक्-सू. २५-४०; वि. ३-१०९; १०-१८; १४-१८५, १८७, १८८.

कुटजट [सु. अ.] वि. १५-१२५; १८-७३; २४-१५९; सि. १०-२३.

कुटिखर [सु.] सू. २७-९९.

कुटेरक-सू. २-४; २७-१०१; नि. २-४; वि. ७-१७, २१; ८-१४२, १५१; वि. ३-२६७; २७-५४; क. १-२५.

कुतुम्बरु [सु. अ.] सू. २७-९८.

कुन्दुरु [सु.] वि. २८-१५३.

कुमारजीव-सू. २७-१००.

कुमुद [सु. अ.] सू. ४-१५ | ३४; १५-१२; २५-४८, ४९; २७-११७; वि. ६-१७; शा. ८-२४; वि. ३-२५८; २४-१५६; २९-१२८.

कुम्भी [सु.] वि. ८-१४४.

कुरण्टक [अ.] वि. २१-८९.

कुरुविन्द [सु.] सू. २७-१४.

कुलक [सु. अ.] सू. २७-९७; वि. ८-१४३; वि. ३-१८९; १७-९७; २३-२२५; २६-१५६; २७-२७, ३४; ३०-७४, २५९.

कुलत्थ [सु. अ.] सू. २-१२; ३-१८; ४-१३ | २२; १३-८४, ९४; १४-२५; १५-७; १७-९९; २१-२५; २४-६; २५-४०; २६-८४; २८-२६; नि. २-४; ५-६; शा. ८-३४, ४१-५६; वि. १-३ | ६२; ३-१८८; ५-१६४; ८-६७, ६८, ७१; १२-६२; १३-११७; १४-४०, ९३; १५-८३, १४४; १६-८०, ८४, १२८६; १७-९३, ९४; १८-४३, १०९, ११६, १२९, १५८; २१-१९, १२८; २४-१४७; २६-४६, १५६; २८-१११, १२०, १३५, १४०, १७६; २९-६, १०४; ३०-८८, २५८, २६४; क. १-१३; सि. ३-५६; ६६; ४-५,

२९, ३९; ७-११, ३८, ५१; १०-२०; ११-३४; १२-१६ | ६, १८ | १६.

कुलत्थक वि. ८-१४३.

कुलिङ्ग-सू. ४-१२ | १९.

कुलिङ्गाक्षी वि. ८-१३९.

कुलीरशृङ्गी [अ.] सू. ४-१४ | ३०.

कुवल-सू. ४-१० | १०, १३ | २४; २५-४९; नि. २-४; वि. ८-१३६, १४०.

कुश [सु. अ.] सू. २-२६; ३-२७; ४-१२ | १७, १५ | ३५; ८-२८; १८-१४; वि. ८-९, ११, १३९; शा. ८-१०, २९, ५७; वि. ३-२५८; ४-१०३; ६-४६; १४-२१५, २२५; १९-६४; २२-४४; २५-८४; २६-५०; क. १-९; सि. ७-३०; ९-८.

कुशपुष्पक-वि. २३-१२.

कुक्कुण्ड शा. ६-११.

कुष्ठ [सु. अ.] सू. ३-४, ८, १०, १२, १३, १५, १८, २०, २३, २४, २८; ४-९ | ३, १२ | २०, १३ | २५; १४-३६, ५२; २३-१५; २५-४०; वि. ७-१७; ८-१४२, १५१; शा. ८-३४, ३८, ४१; इ. २-१३; वि. १-१ | ३१; ३-२६५, ३०५; ६-२८, ४२; ७-८४, ९३, १०२, १०६, ११३, ११७, १२६, १६०; १६९; ८-७७, १७६; ९-३७, ६५; १०-२५; १२-६५, ७३; १३-१०९, १२७, १५९; १४-५३, ९३, १३१, १६०; १५-१८२, १८८; १६-६०, ९४, १०९; १७-१४१; १८-५२; १९-१०५, ११८; २१-१२३; २३-५८, ६२, ७०, ७८, ९९, १९१, १९४, १९५, २०१, २०२, २१२, २४५; २५-५१; २६-२०, २१, २२, १०१, १५३, १८२, १९१, २०६, २२३, २२६; २७-३५, ३७, ४३, ५४; २८-११३, १५३, १५८, १६८; २९-१०७, १४२, १४९, १५०; ३०-५८, ७२, १०६, १०९; क. १-२३; सि. ३-१४, ५७, ६७; ४-१३, २०; ७-२३; ८-१९; १०-१५, ३०; ११-१२, २३; १२-१६ | २, १६ | ६.

कुष्माण्डक-सू. २७-१०२.

कुसुम्भ [सु. अ.]-सू. १३-१०; २५-३९;
२७-१०१, ११०; वि. ५-६; वि. ७-१२; वि. २३-२०३;
२६-५२.

कुसुम्भुर [सु. अ.]-वि. ७-१७; ८-१३५,
१४२; वि. ७-१२२; १४-१०७; क. १-२३.

कुटरणा-क. ७-४.

कुष्माण्ड [सु. अ.]-सू. २७-११३.

कुतमाल [सु.]-सू. ४-११ | १४; वि. ८-१४३;
वि. ७-४६. ८०, १५३; क. ८-३.

कुतवेधन [सु. अ.]-सू. १-८१, ८३; २-७;
३०-६३; वि. ८-१३५; शा. ८-४१; क. ३-१७;
६-१, ३, ७, १४; सि. ११-९, १३.

कुमिहर-वि. ७-१५३.

कुष्माण्धा-सू. १-११६, ११७; ३-४; २५-४९;
२६-८४; वि. ८-७९, १२९; १४-४२; २८-१३०.

कुष्णस्त्रिक-वि. २६-२७२.

कुष्णतिल [सु. अ.]-वि. १९-८४.

कुष्णपर्णासि (ऋग्वरुत)-वि. १८-११७.

कुष्णपिण्डित-वि. २६-२७२.

कुष्णशण-वि. २६-२६९.

कुष्णशैरेयदा-वि. २६-२६८.

कुष्णपण्डिक-सू. २७-१३.

कुष्णा [सु. अ.]-वि. ४-७८; १२-४१, ७०;
१६-४८, ११२; १७-१४०; २०-३१; २३-९६;
२६-२७९; क. ९-७. सि. ३-३७, ६२; ४-९,
१५, २०; ७-२३; ८-११.

कुष्णाशु-वि. २६-२७०.

कुवुक [सु.]-सू. ४-११ | १५; २३-२०;
वि. ८-१४३; वि. १४-१०; २६-५७.

कुम्बुक [अ.]-सू. २७-९६.

कुट्ट [अ.]-सू. २७-११४.

कुशर [सु. अ.]-सू. ५-२०; वि. १-१ | ६९;
२-१ | ३१; ४-९४; ५-१५७; ६-३१, ४२; ७-१३०;
८-७८, ८३; ९-३६; १४-१६४, १९७, १९९, २१०;
१५-१६४; १६-१२१; २१-९७; २३-९५, १९२;
२७-४३; २९-१०६; क. ७-३२, ७५; सि. ३-५०;
१२-१९ | १.

कुशी [अ.]-वि. ९-४५.

कुट्य [सु.]-सू. ४-१० | ९. १८ | ४८; वि. १०-२७.

कुट्य [सु. अ.]-वि. ७-१७; वि. २६-५५.

कुक्कन-वि. ६-१७.

कुठफल-सि. ११-१२.

कुठफला-क. ४-३.

कुद्रव [सु. अ.]-सू. २१-२५; वि. १४-२०५;
१८-९६; २७-२६.

कुद्रूप [सु. अ.]-सू. २७-१६; वि. २-४; ५-६;
वि. ४-३६; १३-१९२; २२-२८; २३-२२४; ३०-२५७,

कुद्रूपक-शा. ३-४ | ५.

कुल [सु. अ.]-सू. २-१२; ३-१८; ४-५०;
१३-८४, ९४; २७-२७९. नि. ५-६; शा. ८-३२; वि.
३-१८६३; ५-७२, ७७; ११-३४; १३-८४, ११७;
१२५; २४-२००; १५-८३, ८९; १७-१०८, १३६;
१८-१५८; १९-३५, ४३; २०-२३; २१-९५, ९७;
२४-१२१, १५१; २६-४६; २८-११४, १२०, १३२.
१४०, १७६; २९-१०४; क. ७-३०; ८-१; १०-११;
११-७; १२-७; सि. ३-६६; ४ ५, २१, ३९; ७-११,
३८, ५१; १०-२०; ११-२६; १२-१६ | ६.

कुलवल्ली-वि. ३-२१०.

कुविदार [सु. अ.]-सू. ४-१३ | २३; २७-१००,
१०४; वि. ८-१३५. सि. ३-२५८; ४-३९, ७०;
१४-२०३; २३-२४४; क. १-१४, १६; २-९; ३-१४;
४-६, ८; ५-८; ६-९, १०; सि. १०-३५.

कुशातक [अ.]-क. ६-९.

कुशातकी [सु. अ.]-क. ६-३, ११.

कोशाग्र [सु. अ.]-सू. २६-८४; वि. ८-१४०;
वि. ३०-८२.

कोषातक-सि. ३-५६.

कोषातकी-वि. ७-२६; वि. ७-११९.

कौन्ती [अ.]-वि. ९-३५; १२-६५; २३-५५;
वि. ८-१३.

कमुक [सु. अ.]-सू. २५-४९; वि. ४-७४;
६-४१; ७-८१; १४-१५९; १५-१६५; १६-१०८;
वि. ७-३७.

किमिन्न-सू. २३-१८; वि. २६-१३.

कौञ्च-वि. २३-११.

कौञ्चादन [अ.]-सू. २७-११६; वि. ३-२५८.

कृतीक [सं.]-वि. ८-१३६.

क्षवक [अ.]-सू. ४-१३ | २७; वि. २-४;
वि. ७-१७, २१; ८-१४०, १५१; वि. ३-२६७;
७-११३; २६-१८४; क. १-२५.

क्षीरकाकोली [अ.]-सू. ४-९ | १, ९ | २,
१२ | १९, १३ | २१; वि. ८-१३९; वि. १-१ | ७६;
११-३५, ६२; २८-१५९; २९-५५, ५६, ६५, ९३;
३०-५१; क. ७-१९; सि. ४-१०; १०-३८;
१२-१९ | ३.

क्षीरपुष्पी-वि. १-४ | ६.

क्षीरवल्ली-वि. ८-१३९.

क्षीरविदारी-वि. ८-१३९.

क्षीरशुक्ला-वि. ८-१३९; वि. १-१ | ७६;
२३-२०१; क. ७-१९.

क्षीरिका [अ.]-वि. २-३ | ८.

क्षीरिणी [अ.]-सू. १-७८; २-९; ४-९ | २;
वि. ८-१३६; वि. १४-२०२; १९-३१; क. ११-१४;
सि. १०-२६.

क्षुद्रसहा [सु. अ.]-वि. ८-१३५, १-९;
क. ४-१६; सि. १२-१९ | २.

क्षेमक-वि. ३-२६७.

क्षौद्रपर्णी-वि. ७-१२३.

क्षौमक-शा. ८-४७.

क्ष्वेड [अ.]-क. ६-३, १०.

खण्डिका-सू. २७-२८.

खदिर [सु. अ.]-सू. ३-३; ४-११ | १३,
१७ | ४३; २३-१२; २५-४०, ४९; वि. ८-१४८;
शा. ८-३३, ४७; वि. १-२ | १२; ३ | ३, ४ | १३;
३-२५८; ४-७०; ६-२८; ७-७३, ७६, ९७, १०१,
११९, १२९, १३५, १५२, १५८, १५९, १६६;
१८-६४; २१-८८; २३-१८८; २५-८४, ९१;
२६-९८, २०६; २७-५६; क. १-८; सि. १०-३०;
११-२४, २६.

खरपुष्प-वि. ८-१४२.

खरपुष्पा-वि. ७-१७; ८-१४४.

खराश्वा-वि. २६-६०; सि. ९-८.

खराह्वा-सू. २३-१५; २७-१७२; वि. १४-४३.

खर्जूर [सु. अ.]-सू. ४-१६ | ४०;
२३-३८; २५-४९; २६-११६, १२७, २७९;
वि. ८-१३६, १३९, १४४; वि. १-४ | १४;
२-२ | ६, २ | १४, २ | १८, २ | २१; ३-२३७,
२५८; ४-३३, ७१; ५-१२३, १३३; ८-९६, १००,
११५; ११-२१, ३७, ६३, ७२; १४-१०; १५-१५१;
१८-८९; २१-१०९; २२-४१, ४२; २४-१३६,
१४०; २६-७६, १६८, १७१; २८-१२१; २९-६६,
९६; क. ११-७; सि. १२-१६ | ११, १९ | १,
१९ | २.

गजपिप्पली [सु. अ.]-वि. १२-४१; क. ७-१०.

गण्डीर [सु. अ.]-सू. ४-११ | १५, १७ | ४५;
२७-१०६, १७१; वि. २-४; वि. ७-१७, २१; ८-९४०,
१४२, १५१; वि. ३-२६७; ४-३८.

गण्डीरपुष्पी-वि. ८-१५१.

गन्धन (षण्टिक)-सू. २७-१४.

गन्धनाकुली [सु.]-वि. ३-२६७.

गन्धप्रियङ्गु-सू. २५-४०; शा. ८-२४; वि. २१-९०.

गन्धफला-वि. २३-५७.

गरागरी-क. २-३.

गर्मूटी-सू. २७-१८.

गवाक्षी [सु. अ.]-सू. १-७७; २-९; वि. ८-१३६, १५१; वि. ७-६३; १३-१२४; १८-११४; २३-५३.

गवेषुक [सु. अ.]-सू. २-२५; २५-४०; २७-१७.

गवेषुका [अ.]-वि. २०-३१; २६-६९.

गाङ्गेरुकी [सु.]-सू. २७-१४२.

गिरिकर्णिका [सु. अ.]-वि. २३-१९५.

गिरिमल्लिका-क. ५-४.

गुग्गुलु [सु. अ.]-सू. ३-४; ५-२१; शा. ८-६१; वि. १-३ | ५९; २६-१५२, २७-३६; २८-२४२; २९-१५९; ३८-१२१; क. १-२३.

गुञ्जा [सु. अ.]-वि. ७-११२; ३०-२२६.

गुह्यचिका [सु. अ.]-वि. १२-२५.

गुह्यची [सु. अ.]-सू. २-१२; ३-३, २२; ४-११ | ११; १२ | १८, १४ | २९, १७ | ४१; २६-४९; वि. ८-१३५, १४३; शा. ८-५६; वि. १-३ | ३०; ३-१९८, २०२, २११, २२२, २२७, २५२, २९९; ६-२९; ७-१२४, १५३; ८-७२; १२-३४; १५-१९०; १६-६३, १३४; १७-९४, १८२; १८-३५; २०-३१; २४-१४५; २६-५७; २८-१४८, १७०; २९-७१, १०३, १२१; ३०-५३, ५८; ५९, ९९; क. १-२२; वि. ३-१३, ३९; ४-४; ९-८; १२-१६ | १, १६ | २, १६ | ६, १९ | १.

गुग्गुला [सु. अ.]-सू. ४-१२ | १७, १५ | ३५; वि. ८-१३९; शा. ८-५७; वि. ३-२५८; ४-१०३.

गुह्या [सु. अ.]-वि. २३-२१३.

गुञ्जल-१. १-२५.

गुञ्जनक-वि. १२-३३; १४-४३, १२४; २०१, २०५; १७-१३१; १९-३८.

गोक्षुरक [सु. अ.]-सू. ४-१६ | ३८, २५ | ४०; वि. २-१ | २६; ३-२६७; ८-१११, १७०; २६-६४, ८७; २७-४१; वि. ९-८; १२-१६ | २, १६ | ११.

गोजिह्वा [सु. अ.]-सू. २७-९७; वि. २१-८४; २३-२२०; २५-८९.

गोधूम [सु. अ.]-सू. ३-२२३; ५-२५, ३८, ४३; १४-११, ३५; २१-३१; २२-२५; २७-४, २१, २६१; शा. ८-५६; वि. २-१ | ३९, २ | ७, ३ | ७, ३ | १६, ४ | १९, ४ | २३, ४ | ३४; ८-६९, १२०; ११-२९, ५८; १६-४१; १७-८४, १००; १८-७६; २० ३५; २१-११४, १२८; २५-६२; २६-१४८; २८-११४; २९-५०, १५९; ३०-१०६, २६८, ३१६, ३१९; क. १२-२०; वि. ३-५४; १०-२९; १२-१६ | १२.

गोधूमक-वि. २ | ११.

गोपवल्ली [सु.]-वि. ८-१३९.

गोपी [अ.]-वि. ८-१३५.

गोलोमी [सु.]-सू. ४-१८ | ४८; शा. ८-६१.

गौर (शालि)-सू. २७-८.

गौर (षष्टिग)-सू. २७-१३.

गौर (सर्वग) [सु. अ.]-वि. ८-१७८; १८-१८२.

गौरी [सु.]-वि. ४-२१.

ग्रन्थि-वि. २३-५२; २६-९४.

ग्रन्थिक [सु. अ.]-वि. १६-७३; २७-४५.

घन [सु. अ.]-वि. १५-१६५; १६-८७; २६-१९०, १६८, २०८; वि. ३-१४, ३७; ८-१९.

चक्रमुद्रक-सू. २१-२५.

चञ्चु-वि. १९-३२.

चणक [सु. अ.]-सू. २७-२८; वि. ३-१८८; ४-३७; ८-११६; २०-३१, ३७; २१-१११; २२-३१; २६-५१.

चण्डा [सु. अ.]-सू. ३-८, २८; ४-१६ | ३७; वि. १२-७०.

चतुरङ्गुल [स. अ.]—सू. ३-१७; २५-४०; ३०-६३; वि. ८-१३६; चि. ३-२४१; क. ८-१, ३, ५, ९, १३; ९-११, १६; १०-२०.

चन्दन [स. अ.]—सू. ३-२३; ४-१० | ८, ११ | १४, ११ | १६, १४ | २९, १७ | ४१, १७ | ४४; ५-२१, ६३; ६-२५, ३०, ३१; २५-४०, ४९; वि. ८-११, १४३; शा. ८-३२; इ. २-१३; १२-७३३; वि. १-१ | ४८, १ | ५८, १-६४, २ | १२, ३ | ३, ४ | १६; ३-१४५, २१९, २२३, २४७, २५३, २५८, २६१, २६२, २६३, २६५; ४-३१, ४५, ७३, ७६, ७८, ८०, ८१, ९९, १०८; ५-११९, १३१; ६-२८, ३०, ३९; ७-१३०, १३१, १३२, १३३, १४१, १४५; ८-७७, ७८, ८३, ८५, ८६; ९-३७; ११-१८; १२-५३, ६८, ६९, ७१; १४-१८५, १८६, १९३, २१५, २२१, २२७, २३०, २३६; १५-१२५, १३७, १४८; १६-४७; १७-१३१; १८-९०; १९-५०, ५३, ८६; २०-३२, ३३; २१-५४, ५५, ७४, ७५, ७६, ७९; २२-३८, ४१; २३-५८, ७७, ९८, १९०, १९१, २००, २३१, २४२; २४-१५३, १५५, १५८, २५-४७, ८८, ९१; २६-१६१, १७७, १७९, १८२, २०८, २१६, २३४, २७६; २७-३०; २८-१५०; २९-९३; १०६, ११०, १२८, १-०, १३४; ३०-३२४; सि. ३-४७, ४८, ५०, ५३; ६-४९; १०-२२, ४२, ४३; १२-१९ | २, १९ | ३.

चर्मकपा-वि. २३-६६.

चर्मलाह्ला [अ.]—क. ११-३.

चरिका [स. अ.]—वि. १८-१५८; २६-१६७; २८-१६८;

चव्य [स. अ.]—सू. २-१८; ४-९ | ६, ११ | ११, ११-१२, १७ | ८५; वि. ७-१९, २६; ८-१३५, १४२; शा. ८-३४, ३८, ४१, ४८; चि. १-३ | ३; ३-१८६; ५-६५, ७१, ८७, १४७; ६-२९, ४१; ८-१६९; ९-२५५; १३-११२, १४८; १४-६८, ६९, १०५, १०७, १५५, १५९, २३०; १५-९६, ११२, १७३,

१८८; १६-७३, ९४, १०२; १८-३६, १२७, १७८; १९-४४, १०५; २०-३३; २६-२८७; २७-३२, ३८; २९-१५३; क. ७-५४.

चाह्वेरी [स. अ.]—सू. २-१९; वि. ८-१४०; चि. ८-१२५, १३१, १४-१११, ११५, १२२, २३१, २३९; १९-४३, १११,

चारटी-वि. ९-४५.

चित्रक [स. अ.]—सू. २-१८, २९; ४-९ | ३, ९ | ४, ९ | ६, ११ | ११, ११ | १२, १७ | ४५; २३-२०; २४-५७; २६-४७, ६८; २७-१०६; वि. ७-१९, २६; ८-१३५, १४२; शा. ८-३४, ३८, ४१, ४८; चि. १-३ | ३, ४-१४; ३-२६७; ५-६५, ६९, ७१, ८०, ८६, १४५, १४७, १६५; ६-२९, ४२; ७-६५, ८४, ८८, १०५, १०८, ११२, १२४, १७०; ८-१०१, १६९; १०-३०; १२-२४, २९, ३०, ३४, ३९, ४१, ५५, ५७, ५८, ६०, ७३; १३-७९, ८०, ११२, १२६, १३७, १४७, १४८, १६३; १४-४०, ५४, ६२, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७६, ८९, १०४, १०५, १०८, ११०, ११४, १२२, १३१, १४४, १४८, १५३, १५९, २३१, २३६; १५-८२, ९६, १००, १०३, ११२, १३२, १४६, १५२, १६५, १७१, १७३, १८२, १८३, १८६, १८९; १६-४४, ७०, ७३, ७८, ८१, ९३, १०२; १७-९४, ९६, १०१, ११०, १४२; १८-३६, ७३, ५७, ७७, १५८, १६१, १७३, १७८, १८२; २१-१२६; २६-२१, २४, ६५, १९५, २८७; २७-३२, ३५, ३७, ४५; २८-१२२, १३०, १६७, १७०; २९-१५२; ३०-५५, ५९, २८०; क. १-२२; ७-१६, ४०, ५४, ५८, ७०; ९-७, ९; १०-१४; १२-२३, २७, ३२; सि. ४-१४; ७-१९; १०-२४; ११-२४, ३२, ३४.

चित्रकमूल-सू. २५-४०, ४९.

चित्रा [स. अ.]—सू. ४-९ | ४; १३-१०; क. १२-३.

चिरविल्व [स. अ.]—सू. ४-९ | ३; वि. ३-२६७; ५-१६५; १३-१६७.

चिर्मट [अ.]—सू. २७-११२; वि. १९-३२.
 चिल्ली [स. अ.]—सू. २७-९८.
 चीन (षट्कि) [अ.]—सू. २७-१४.
 चीनक [अ.]—वि. ४-५; ५-६.
 चुक्रिका [अ.]—वि. ८-१३१.
 चुकीका—वि. ८-१३३; १५-११४; २४-१५१.
 चुचुपर्णिका—सू. २७-१००.
 चुचू—वि. २३-२२५.
 चोरक [स. अ.]—सू. ३-२४; ४-१८ | ४८;
 शा. ८-६१; वि. ९-४५, ५७; १७-१२३, १४०;
 २६-१३८; क. १-२३; ४-१६; सि. ४-२१.
 छत्रा [स. अ.]—वि. ८-१३९; वि. १-४ | ६;
 ९-४६.
 छिन्नरुहा [स. अ.]—वि. ८-१३९; वि. ७-७७;
 १८-५४; क. ७-१९; सि. १२-१६ | ४.
 जटिला [स. अ.]—सू. ४-१२ | १९; शा. ८-६१.
 जम्बीर [स. अ.]—सू. २७-१६७.
 जम्बु [स. अ.]—सू. ४-१५ | ३२; वि. ३-२५८.
 जम्बू [स. अ.]—सू. २-२८; ४-१४ | २८,
 १५-३३; वि. ८-१४४; सि. ८-१२७, १२९; ११-३१;
 १५-१३६; १९-११०; २०-३०; २२-३५; २६-७६,
 २७२; ३०-७९; सि. ८-३६.
 जया [अ.]—वि. ९-४५.
 जल [स. अ.] सू. ३-२७; वि. ४-१०२;
 ७-१३०; २३-५६.
 जलपिप्पली—सू. २७-१७१.
 जाति [अ.]—वि. १५-१३५; २६-१४५, २०५,
 २१०.
 जाती [स. अ.]—वि. ३-२०७; ७-५७, १११;
 २३-५६; २६-२४५; २८-१५२; क. ४-१६;
 सि. ४-१८; ९-५१.
 जाती(फल) [स. अ.]—सू. ५-७७; वि. १७-१२६.

जातुकशाक [स. अ.]—सू. २६-८४.
 जाम्बव—सू. २५-४०, ४९; २६-८४; २७-१४०;
 नि. २-४; इ. १-२३; ३-६; वि. १४-१०; १९-५४;
 २०-३८; २५-११३; ३०-८२.
 जालमालिनी—वि. २३-२०६.
 जिझिनी [स. अ.]—वि. ८-१४४, १५१;
 वि. ३०-८३, १०८; सि. ७-५७.
 जीमूत [स. अ.]—सू. १-८१, ८३; २-७;
 ३०-६२; शा. ८-४१; क. ३-१७.
 जीमूतक [अ.]—वि. ८-१३५; वि. २६-१५;
 क. १-६, २०; २-१, ३, ४, १३, १५; ३-६;
 ५-१०; सि. १०-२५; ११-५.
 जीरक [स. अ.]—वि. २-१ | ४३, ४ | २१;
 १३-१२६; १४-१०३; क. ७-५३.
 जीवक [स. अ.]—सू. ३-२२; ४-९ | १,
 १२ | १९, १३ | २१; वि. ८-१३९; शा. ८-१९, ६२;
 वि. १-१ | ४४, १ | ६३, १ | ७६; २-१ | २५,
 १ | ३४, २ | ५, २ | २१; ३-२५८; ४-८४;
 ११-२९, ३५, ४५, ६२; १५-१५६; १८-१०१;
 २३-९५, १९६; २६-८८, ९३, १६१, १६८, २७८;
 २८-१५१, १५९; २९-५५, ७२, ७७, ९३, १११;
 ३०-५०, २७०; क. २-१२, १५; ४-१३; ५-१०;
 ७-१८; सि. ३-५०; १२-१९ | १, १९ | २.
 जीवन्तिक—सू. २७-१०७.
 जीवन्ती [स. अ.] सू. ३-२५, ४-९ | १,
 १३ | २१, १६ | ३७, १८ | ५०; ५-६५; १४-३६;
 २५-३८; वि. ८-१३९; वि. १-१ | ४४, १ | ५८,
 १ | ६३. २ | ४, ४ | ६; २-१ | २५, २ | ५,
 ३ | ८; ३-२५०; ५-११९; ७-१२०; ८-१११,
 १७१, १७५; ११-३५, ४५; १४-१२४, २३५;
 १७-१४३; १९-३२; २३-२२५; २५-७६, ८९;
 २६-१६७; २८-१६०; २९-७७, ९३, १३९;
 ३०-५०; क. ५-१०; सि. ३-४९; ४-९; १०-३०.
 जूणाहा—सू. २१-२५; २७-१८.

- जोड़क [अ.]-वि. १-४ | १५.
 ज्योतिष्मती [सु. अ.]-सू. १-७८, ७९; २-५;
 ४-१; | २७; ५-२६; वि. ८-१५१; चि. ३-२५८,
 २६७; २३-६८.
 झिण्टि-सू. २७-१८.
 डङ्ग [सु.]-सू. २७-१३६.
 दिण्टिकेर-वि. १४-१०.
 दुण्डुक [सु. अ.]-वि. २३-७०.
 तगर [अ.]-सू. ४-१७ | ४२; वि. ८-१३५, १४३;
 इ. १-१३; चि. ३-२६७; ६-२७; ७-८७; ८-७७;
 ९-६४; २३-५४, ७८, ८०, १९१, १९८, २०६;
 २६-१८२; २८-१५४; २९-१०७, १५०; ३०-५८;
 क. १-२३.
 तण्डुल [सु. अ.]-सू. ५-९; १३-९०; १४-२९;
 वि. ४-७३; ८-१२५, १७६; ११-२६; १५-१३०;
 १९-५१, ८२, ८६; २०-३२, ३३; २१-७५;
 सि. ७-१३; ८-४१.
 तण्डुलीय [अ.]-वि. ४-७६; १४-१२३.
 तण्डुलीयक [सु. अ.]-सू. २७-९५, चि. ११-२७;
 २३-१९८, २१७, २२५; ३०-९६; सि. १०-३२.
 तपनीय-सू. २७-९.
 तमाल [सु. अ.]-वि. ३-२६७; ७-११७; २३-१९२;
 क. १-८.
 तरुणी [सु.]-वि. १०-३१.
 तरुट-सू. २७-११६.
 तर्कारि-वि. २६-१३८.
 तर्कारी [सु. अ.]-वि. ८-१५१; चि. ८-१७६;
 २६-१५३, २७-५२, ५६.
 ताडक सू. २५-४९.
 तामलकी [सु. अ.]-सू. ४-१६ | ३६;
 वि. ८-१३९; चि. १-१ | ६३; ३-२१९, २२५;
 ५-११९; ८-११२; ११-३७; १७-१०२, १२३,
 १३०, १४२; १८-४०, १०१, १२०, १७८; २६-८७,
 १७०; २८-१५९; २९-५८, ९३, १५३; सि.
 १२-१९ | २.
 ताम्बूल [सु. अ.]-सू. ५-७७.
 ताल [सु. अ.]-वि. ८-१३९, १४४; चि. ३-२५८;
 ११-३१; २६-१६८,
 तालज-वि. ११-२४.
 तालप्रलम्ब-सू. २७-११५.
 तालमूली-वि. १८-७५.
 तालशस्य सू. २७-११६, १३०.
 तालसस्य-वि. १८-१५४.
 तालीश [सु. अ.]-वि. ८-१३५; चि. ८-१४५;
 १२-६५.
 तालीस [अ.]-शा. ८-४१; चि. १७-१४३;
 २६-१९२; २७-३०.
 तिकरोहिणी [सु.]-वि. ७-१४०, १४४;
 २७-३०.
 तिककरोहिणी [सु.]-वि. १२-२१, ५३, ७२;
 २६-९१.
 तिकला-क. ११-३.
 तिका [अ.]-वि. ३-२४१, ३४३; १५-१८१;
 सि. ३-६१.
 तिकालावुकवीज-वि. ७-१०३, १०८,
 तिकतेक्ष्वाकु-वि. २३-३०६.
 तिनिश [सु. अ.]-वि. १-२ | १२; ३ | ३;
 ३-२५८; क. १-८.
 तित्तिडीक [सु. अ.]-सू. २६-८४; वि. ८-१४०;
 चि. ४-९५; ५-७९; ८-१३८, १४१; १४-६४.
 तित्नुक [सु. अ.]-सू. ४-१७ | ४३; २५-४०,
 ४९; २७-१४७; वि. ८-१४४; शा. ८-४७; चि. १४-१०;
 ३०-७९; क. १-८.
 तिरीटक-क. ९-३.
 तिल [सु. अ.]-सू. २-२६, २८; ३-१४;
 ४-१३ | २२, १५ | ३२; ५-५; ८-२८; १३-१०,

२४, ८५, ९१; १४-२५, २९; १५-७; १७-२७, ३७,
९९; २४-६; २६-८४; २७-३०, १०९, २६०, २७०;
मि. ४-५; ७-१४; वि. ७-१२, २५; शा. ८-२९;
मि. १-२ | ३; २-३ | १६; ३-२६७; ५-९१, १४१;
७-७, ८३; ८-७८, १७७; १३-६५; १४-९, ४१,
१९३, २२०; १६-७, ७२; १८-७९, ११०; १९-३५;
२१-१९; २५-५१, ७४, ७८, ७९, ८५, ८९; २६-१८,
१३९, २७८, २७९; २८-१११, ११३, ११४;
२९-१३३, १३६, १३९, १४८; ३०-४७, ७७;
क. १-१४, २४; ७-४१; ११-१०; सि. ६-५५,
६६; ७-५६, ६१.

निलपणिका [स. अ.]-सू. २७-९७.

निलपणी [म. अ.]-वि. ३-२६७.

निलवक [स. अ.]-सू. १-११६, ११७; २५-४९;
३०-६४; वि. ७-२६; ८-१३६; मि. ३-२६७;
१३-१२४, १५८; १८-१५१, १८१; २६-१०१;
२८-८४; क. १-६; ९-१, ३, १३.

नुगा [स. अ.]-मि. ४-७६; सि. ३-५३.

नुगाक्षीरी [म. अ.]-मि. १-३ | ४०, ४ | २०;
२-१ | ३०, १ | ३६, १ | ३८, २ | ७, २ | १६,
२ | २४, ४ | २६, ४ | ३१; ८-१०३; ११-७०;
१६-१००; १७-१११; १८-५६; २६-१७०; क. ६-२२.

नुङ्ग [स. अ.]-सू. ३-२६; ४-१० | ८; मि. ८-१४४;
सि. १०-२२.

नुम्व [अ.]-सू. ४-१८ | ४७; मि. २९-३७.

नुम्बी [स. अ.]-मि. २६-१५; क. ३-३, ११,
१५, १९.

नुम्बु [स. अ.]-सू. २-३; ३-८; २७-३०७;
मि. ८-१४३, १५१; मि. ७-१०९, ११३; १४-८९;
क. ७-५४; मि. ९-१८.

नुम्फ [स. अ.]-मि. २८-१५३.

नुद [अ.]-सू. २७-१३५.

तूर्णक-सू. २७-८.

तृणपञ्चमूल [स. अ.]-वि. २२-३०;
सि. ३-४८.

तृणमूल [स. अ.]-मि. ४-१०३.

तृणशून्य [स. अ.]-सू. २५-४९; २७-१४५;
मि. ३-२५८.

तेजोवती [स. अ.]-मि. १७-१४१; २६-१८९,
२१७; २७-३६.

तेजोदा [स. अ.]-मि. ८-१३७; १५-१६५; २६-
१९०, १९५, १९९.

तैम्बुक [स. अ.]-शा. ८-३३, ३४.

तैल्यक [अ.]-मि. १५-७९.

तोदन [स. अ.]-सू. २७-१४२.

तोयवर्णी-[स. अ.]-सू. २७-१७.

तौघर [स. अ.]-मि. ३०-१२४.

त्रपुष [स. अ.]-सू. १-८१, ८४; मि. २६-५२,
६०, ६४, ७३.

त्रुस-सू. २७-११०, १११; मि. ९-८.

त्रायन्ति-वि. १२-५३; क. ७-५९.

त्रायन्तिका [स. अ.]-मि. २९-५८; सि. ३-३६,
६२.

त्रायमाणा [स. अ.]-मि. ८-१४३; मि. ३-२०६,
२०८, २२०, २२२, २२४, २३२, २४७, ४-५७, ९०;
५-११५, ११८, ११९, १२८; ७-६२, १३६, १४०,
१४१, १४६; ८-१०८, ११२; ९-४५; १३-१३४;
१५-१३७; १६-४७; १८-१७७; १९-६०; २१-५९,
६३; ३०-२७९.

त्रिकटु [स. अ.]-मि. २३-४१.

त्रिकटुक [स. अ.]-मि. ५-७९; १०-२०;
१४-१०७; १५-१७७, १८९; १६-८०; १७-११३;
२३-२१६, २४२; मि. ७-१९.

त्रिकण्टक [स. अ.]-मि. ३-२३६; ६-३८;
१४-२३४; १७-९४; १८-४०; २८-१७३.

त्रिगन्धक-वि. १६-८९.

त्रिजातक [सु. अ.]-वि. २४-१२८.

त्रिवशाह-वि. २८-१६२.

त्रिपर्णी [सु.]-सू. २७-१०२.

त्रिफला [सु. अ.]-सू. २-९; १३-६६, ७८, ९२, ९५; २३-१०, १२, १७, १८, १९; २४-५६; शा. ८-३२; वि. १-३ | ४२, ३ | ४३, ३ | ४५, ४ | १६; ३-२०१, २०५, २०६, २०८, २२२, २३१, २९९; ५-६५, १०६, ११५, १२३, १४९; ६-२२, २६, २८, ४१, ४६; ७-४४, ६२, ६५, ६८, ७४, ७७, ८१, ८२, ९१, ९७, १००, १३६, १४०, १४४, १५३; ८-१००; १०-१८; १२-२१; ४२, ४९, ७२; १३-११५, ११९, १२५, १३३, १३५, १४९, १५८, १६३; १४-४५, ५३, ६६, ६७, १४५; १६-५३, ६०, ६३, ६५, ७०, ७३, ७८, ८०, ८७, ९४, ९७, ९९, १०२, १०६, ११९; १८-३९; १५८, १७३, १७४, १७६; २०-३७; २१-६०, ८७, ९१, ९७, १२९; २३-३४०; २५-८४, ९०, ११०, ११५; २६-२९, ६५, ८७, १६३, १६७, १९५, १९८, २०५, २०९, २३९, २४१, २४३, २५४, २७०, २८२; २७-३८; २८-१२९; २९-८५, ८६, १५२; ३०-५२, ५८, ८४, ९८, १२१, १५०, २५४, २७३, २७९; क. ७-१३, ३६, ३७, ४०, ५४, ६१, ६३, ६५; ९-१२; १०-१४; सि. ३-५९; ४-१८; ७-२८; ८-९; १०-२३, २५; ११-२६; १२-१८.

त्रिभण्डी [सु. अ.]-क. ७-४.

त्रिवृत् [सु. अ.]-सू. ४-१३ | २५; २५-४०, ४९; वि. ७-१८; ८-१३६; वि. ४-५७; ५-११५, ७-६९, ८५, १५३; १२-२१, २४; १३-३९, १२८, १३९, १८१; १४-६६, ११९, १२२; १५-२३१; १६-६६, ९३; २०-२६; २१-६७; २३-२०३, २४१; २५-८५; २८-१८, ९८; २९-८२; क. १-६; ७-१, ३, १४, २२, २३, २५, २७, ३१, ३४, ३६, ३७, ४१, ४७, ५०, ५१, ५७, ६८, ६९, ७२, ७४; ८-११, १२, १७; १०-१८; ११-९, १२, १६; १२-२७; सि. ४-२०, ३९; ७-११.

त्रिवृता [सु. अ.]-सू. २-९; ३-५; वि. ३०-६३; वि. ७-२६; वि. ३-२३१, २३२, २९९; ४-५७; ५-१०५, १४९, १५३, १५६; ७-४४, ५६; १०-२०; १३-११९, १३४, १४०, १६३; १६-६०; १८-८५, १२१, १५१, २१-६६; २९-८४, ८५; ३०-२५४; क. ७-४, ५६, ५८, ५९, ६३, ६५, ६६, ७१, ८०; ९-१४; १०-१४, १५; ११-३२.

त्रिलौगन्ध [सु.]-वि. १२-५०.

बुटि [अ.]-वि. २६-५५, ६४, ८७.

घैफल [सु.] सू. २१-२२; वि. १-३ | ४३.

ज्यूपण [सु. अ.]-सू. २३-१५, १८; वि. ५-६५; ७-१०९, ११३; १२-२४, ४२, ५५, ६२; १३-१०२; १४-६२; १६-५९, ७३, १०२; १७-१४६, १८-३९, १७२; २६-१३, ८७, ९८, २१७, २५०, २८४; क. ७-६३; १०-१४.

त्वक् [सु. अ.]-सू. ३-२८; ५-२१, ६४; वि. १-१ | ६९; २-१ | ३१; ५-१५७; ६-५०; ७-७४; ८-१०३, १३७, १४५; ११-२१, ३१, ४०; १२-२५, ३६, ६५; १५-११२, १६५; १७-१२३; १८-७५, ९२; २३-७७, १९०, १९१, २०५; २६-१३५, १३८, १७८, १८४, १९२, २०८; २८-१६१, २९-९३, १३१, १५०; क. १-२३; ७-३५, ३२, ४६, ७५; सि. १२-१९ | २.

त्वक्क्षीरी [अ.]-वि. ११-१७, २०, ५४, ६२; १५-१६४; १६-८९; १८-८८, १०४, १४६, १७६; २९-१५२; सि. १२-१९ | १, १९ | २.

त्वक्का-वि. २८-१३.

थौण्यक-वि. १२-६५.

दण्डैरका-वि. २६-५१; क. १-२५.

दधित्थ [सु.]-सू. २-१९, २८; वि. १४-९३, १४८; २२-३६; २३-८०.

दन्तशठ [सु. अ.]-सू. २६-८४; २७-१६१; वि. ८-१४०; वि. ३-३६७,

वन्ती [सु. अ.]-सू. २-९; २५-४९; २६-६८, ३०-६४; वि. ७-२६; ८-१३६; वि. ५-१०५, १४९; ६-२०, ४५; ७-४४, ४८, ५६, ८१, १११, १२४; १०-२०; १२-२४, २५, ३४, ५३; १३-७९, १२५, १२७, १४८, १४९, १५४, १६४, १६७; १४-११९, १२२, १४८, १५४; १५-१५२; १६-५१, ५६, ५९, ९४; २१-१२६; २३-२०३, २४१, २४५; २६-१४५; २७-३३, ५२; ३०-५८; क. १-६; ७-६५; ८-१५; १०-१४, १५; ११-१३, १७; १२-१, ३, ११, १२, १४, १८, २२, २३, २७, ३०, ३१, ३२, ३३, ४०; सि. ४-१५; ११-२५.

दर्वुर [अ.]-सू. २७-१४.

वर्म [सु. अ.]-सू. ४-१२ | १७, १५ | ३५; वि. ८-१३५, १३९; शा. ८-५७; वि. १-१ | ४४; ११-४४; २६-६३; २९-११०; सि. ९-८; १०-३३; १२-१६ | ३, १६ | ५, १६ | १०.

दशमूल [सु. अ.]-वि. ५-१४९; १७-१०५, १४०; १८-७९, १२३; १९-४५; २६-२४, १४०, १६३; २८-१०६, ११०, ११९, १२५, १३०; २९-७३, ८१, १२४; ३०-१११; क. ८-१४; ९-५; १२-९, १५; सि. ३-६१; ४-४, १८; ७-२०, ३८.

दशमूली-वि. ५-१४२; १७-१०२; १८-५७.

दाडिम [सु. अ.]-सू. २-१९, २०; ४-१० | १०, १४ | २८, १६ | ४०; १३-८४; २३-३८; २६-८४; २७-१५०, १५१; वि. ८-१३६, १४०; वि. ३-१८०; ४-३५, ९५. १००; ५-६९, ७२, ७४, ८०, ८५, ८७, १३३, १४२, १६६; ८-६७, १२५, १३०, १३३, १४१; ११-८५, ८८; १२-५५; १३-१३०, १३५; १४-१९, १०६, १२५, १३८, २००; १५-८९, ९७, १००, ११४, ११६, १२४; १६-४४, ९०; १८-१२६, १६५; १९-२८, ३३, ३६, ४४, ५४; २०-२४; २१-१०९, १११, ११७, १२८; २२-३६, ४९; २३-२२६; २४-१२१, १२७, १२९, १३६, १३९, १५०, १५१, १७५, १८०; २६-११७, २१९; २८-१३२; ३०-७९; क. ७-३०, ५४, ७५; ११-७; सि. ३-४३; ६-६५; ९-१९.

दारु [सु. अ.]-वि. ७-६५, ८८, १०१, १२३; १२-२५, ६५; १६-९३; १८-१७८; २३-६९, २४५; २६-५३, २२६; २७-४३; २८-१५०, १६९, १७३; ३०-१६६, २७६; सि. ४-२०; ६-४३; ७-११, १७, १९; ८-१९.

दारुनिशा-वि. ६-४०.

दारुहस्त्रिदा [सु.]-सू. ४-९ | ३, ११ | १२, ११ | १४; वि. ७-१७; ८-१३५, १४३; वि. १४-१६०, १९-५२, ८०.

दार्धी [सु. अ.]-सू. ५-६३; वि. ६-२६, २८; ७-४६, ६१, ८४, ९१, ९७, १०३, ११४, १२०, १३५, १४०; ८-१३७; ११-३४; १२-५३; १४-१८६, १९६, २२१, २३१, २३४; १५-१३५, १३७; १६-५४, ६३, ७३, ९७; २१-५९, ९१, ९७, १३७; २५-८४, ८८, ९३; २६-५३, १८८, १९१, १९७, १९८, २०१, २०२, २३८, २४३; २९-१३४; सि. ३-६१; ४-२०.

दीव्यक [सु. अ.]-वि. ५-६९, ७१; ६-२७, ३८; ९-५४; १२-३९; २४-१८१.

दीर्घशूक [सु. अ.]-२७-८.

तुग्धिका [अ.]-वि. ८-१३१; १४-१९८; २१-८३; २६-२६६.

तुरालभा [सु. अ.]-सू. ४-१४ | ३०, १६-३६, २५-४०; वि. ३-१९८, २११, २१३, २२४; ४-७५; ५-११९; ७-१०३, १४०, ८-१०६, ११२, १२६; १०-१९; १४-१५३; १५-१३४, १५७, १७९; १६-४७; १७-९४; १८-५०, ५३, ६३, ११८, १२७; १९-५२, ५४; २०-३८; २१-५५; क. ७-५२, ५७, ६१.

दुःस्पर्श [सु. अ.]-वि. २४-१६६.

दुःस्पर्शक-व. १४-१००, १९६.

दुःस्पर्शा [सु. अ.]-वि. १५-१८६; १८-५१, १५९.

दूर्वा [सु. अ.]-सू. ३-२७; चि. ३-२५८;
४-१००; ८-८३; १२-७२; १४-२१९; २१-७७,
९६; २५-९३; सि. ६-८३; १०-३९, ४२.

देवताडक-क. २-३.

देवदारु [सु. अ.]-सू. ३-२५; २३-१२;
वि. ८-१५१; चि. ३-२१०, २६७; ७-१२४; ८-७८;
१२-२२; १३-१०८, १५९; १४-५०, १३१, २३०;
१५-८२, ९९, १३८, १९०; १६-४८, ७३, १०२,
११९; १७-७८, १०५; १८-३९, ११८, १२०;
१९-१०५; २१-८९, १३०; २३-२३१; २६-२२३,
२६९; २७-२९, ३१, ३२, ५०; ३०-५८, ६०;
सि. ३-३९, ५६; ४-१३; ६-६६; ११-३२;
१२-१६ | २, १६ | ६.

द्रवन्ती [सु. अ.]-सू. १-७८; २-१०; २५-४९;
३०-६४; वि. ७-२६; ८-१३६; चि. ७-१२४;
१३-१५४; २३-२४१; २७-५२; क. १-६; ११-१३,
१७; १२-१, ३, १२, १४, १८, २३, ३३, ४०;
सि. १०-३५; ११-२५.

द्राक्षा [सु. अ.]-सू. २-१०; ४-१० | ९,
१३ | २४, १६-३६, १६ | ३९, १६ | ४०; १३-६७,
९३; २७-१३२, २७९; सि. १-१ | ६३; २-१ | २७,
२ | ६, २ | २१; ३-२२०, २२५, २३३; ४-८४,
१००; ५-१२३, १३०, १३३; ८-१००, १११, ११५;
११-२०, २६, ६२; १२-३२; १३-१२५; १५-१५१;
१६-५२, ५७, १००, १०५; १७-१३०, १३६;
१८-३९, ५०, ५४, ७१, ८७, ८८, ९०, ९४, ९८,
१००, १६३, १७२, १७३, १७६; १९-८०; २०-२६,
२८, ३०, ३३, ३६; २१-५८, ११२; २२-४१, ४२;
२३-२२३, २४-१४०, १४२, १४६; २६-४९, ५२,
९३, ९५, १६१, १७९, २१९, २८८; २९-५९, ६४,
७१, ८४, ८५, ९६, १२१; १२७; ३०-५२, २६३,
२७२; क. ७-२०, २६, ५६, ५७; ८-८, १७; ११-७;
१२-३०; सि. ३-५३; ६-५५; ७-१३, १४; ८-१६;
१०-४२, ४३; १२-१९ | १.

द्वारदा-वि. ८-१३९; चि. १-४ | १५.

द्विकाकोली [अ.]-वि. २६-१६०; २९-५८.

द्विचन्दन [अ.]-वि. २५-९२.

द्विपञ्चमूल [सु. अ.]-वि. २५-७७; २६-४६;
२९-६१; सि. ३-१३, ३५, ५९, ६५; ११-२३, ३४;
१२-१६ | ६, १८.

द्विपञ्चमूली [सु. अ.]-वि. १०-१८.

द्विवला [अ.]-वि. २३-१५३.

द्विमधुक चि. २६-२३८.

द्विमेवा [अ.]-वि. २९-९२,

द्विरजनी [अ.]-वि. २३-५२, ७१; २६-१४५;
३०-५३.

द्विसारिवा [अ.]-वि. १०-२१; २३-१०२;
सि. ९-८.

द्वीपिका-क. १-२२.

द्वीपी [अ.]-वि. ८-१३५.

घनजय [अ.]-वि. ४-७५.

घन्याक-वि. ५-६९.

घन्वन [सु. अ.]-सू. २५-४९; २७-१४२;
वि. ८-१३५, १४०; चि. ३-२५८; ६-२७.

घन्वयवास [अ.]-वि. ७-१४५, १४-१८६.

घन्वयवासक [अ.]-सू. ४-१४ | २९; चि. ३-२०७.

घन्वयास [अ.]-वि. ४-४६.

घन्वयासक [अ.]-सू. ४-११ | १२; चि. ३-२०४,
१८-१७८, २१-५८; २६-१७०.

घव[सु. अ.]-सू. ३-३; वि. ८-१४४; चि. १-२ | १२,
३ | ३, ४ | १५; ३-२५८; ६-२८; ७-१२४, १२९;
१४-२१४; २१-८८; २६-५७; ३०-७५, ८२, १०८;
क. १-८; सि. ११-२४.

धातकी [सु. अ.]-सू. ४-९ | ५, १५ | ३१,
१५ | ३४; २५-४९; वि. ८-१४४; शा. ८-३२;
चि. ३-२५८; ४-८१, ९९; ६-३१; ७-९५; ८-१३०;
१४-१९७, २३०; १५-११२, १२९; १९-५४, ९०, १०९,
११०; २५-६७, ६८, ८९, ९१; २६-२०८; २७-२९३,
३०, ७८, ९२, १२१, १२२; सि. ८-३८, ३९; १०-३०.

धान्य [सु. अ.]-सू. ३-८; २३-२०; २७-२०७;
शा. ८-१९; वि. २-१ | ४३; २ | ४; ४ | १६;
४ | २१; ५-६५, ७४, ८०, १६४; ८-७०, १३७,
१४२, १८१; ११-८८; १२-५५; १३-११०, १२५;
१४-७२, ८९, १०३, ११०, १२५; १८-३६, ११२;
१९-२०, ४०, २०-२३, ३१; २२-६१; २३-९५;
२४-१२८, १३०, १८३; क. ४-१५; ७-४०;
ति. ३-३६; ४-४३; ६-५३.

धान्यक [सु. अ.]-सू. ४-१४ | २९, १७ | ४२;
२७-१७३; वि. २-१ | १९; ३-१८३, २६७; ५-८६,
१११; ११-८६; १४-१०६, १२९; १९-२०, २६;
२०-२४ क. ७-५४.

धान्यमाप [सु. अ.]-शा. ८-१९; वि. २-२ | ४.

धानी [सु. अ.]-सू. ४-१८ | ५०; वि. ७-१५५;
११-३८, ५०, ६३; १२-३२, १००; १६-८९, १०१;
१८-१२०, १२२, १६५; २०-३२; २३-२२६;
२६-२१६, २५९, २६०, २६१, २७३; २९-८६;
३०-२७४; क. ७-३०, ४२, ५०; ८-१३; ११-१५;
ति. १०-४३.

धामार्गध [सु. अ.]-सू. १-८३; २-७; ३-६२;
वि. ८-१३५; शा. ८-४१; क. १-६; ४-१; ३, १४,
१७, २०; ति. ११-७.

धामार्गधक-वि. १०-२५.

धावनी [अ.]-वि. ३-१८७.

ध्याम-वि. २८-१५४.

ध्यामक [सु. अ.]-सू. ५-२१; वि. ३-२६७;
१२-६६; २३-५४, ७८; २५-११७.

नत [सु. अ.]-सू. ३-२३, २८; वि. ६-४२;
९-३७; २३-६२, ९९, १८४, १८८, १९०, १९४,
२०१, २१२, २३१; २५-११६; २७-२९; २८-११३,
१५८, १६९; ति. ८-१९.

नकमाल [सु. अ.]-सू. ४-११ | १४; वि. ८-
१३५, १४३; वि. ७-९५; २१-१२४; २६-१८४.

नदीमापक-सू. २७-११४.

नन्दा-क. १०-८.

नन्दीतक-वि. ८-१४०.

नल [सु. अ.]-वि. ३-२५८; ४-१०३; २१-८४,
८८, ९०; ति. १०-२१.

नलद [सु. अ.]-सू. ३-२५; ४-११ | १४;
वि. ८-१३५, १४३; वि. ३-२६७; २१-७७; २३-
७७; २६-१८२; २७-२९३.

नलिका [अ.]-वि. २८-१५२.

नलिन [सु. अ.]-सू. ३-२७; ४-१५ | ३४; २५-
४९; वि. ६-१७; वि. ३-२५८.

नलिनीका-सू. २७-१०१.

नधमालिका-वि. २६-१८४.

नाकुली [सु. अ.]-वि. ३-२६७; २३-५७, २१२.

नाकुलीद्वय [अ.]-वि. ९-४६.

नागकेशर [अ.]-वि. २८-१५४.

नागदन्ती [सु. अ.]-वि. ८-१५१; वि. २३-२४१.

नागपुष्प [सु. अ.]-वि. ३-२५८; २१-५६,
५७, ७२; २५-४७.

नागधला [सु. अ.]-वि. १-१ | ५८, २ | ११,
२ | १२, ४ | ६, ४ | १५; ११-३३, ९९;
२१-१२५.

नागर [सु. अ.]-सू. २-५, १८, २१, २२, २४;
४-११ | ११, ११ | १२, १४ | २९; २१-२३;
२६-५१; शा. ८-३४, ४१; वि. २-१ | ४३; ३-१४५,
१७९, १८०, १८३, १८६, १८७, १९८, २११,
२२३, २३७; ४-४५, ८६; ५-९१, १४४, १४७,
१६४; ८-६७, ७०, १०१, ११८, १२५, १२७, १४१,
१४५, १६९; ११-३५; ६७; १२-२२, २३, २५,

२७, ४१, ४७, ४९, ७३; १३-७९, ११०, ११२, ११५, १५८; १४-६८, ७०, ९२, ९७, ९८, ९९, १००, १०२, १०५, ११०, १३३, १२५, १२९, १५३, १८५, १८६, १९५, २००, २३१, २३५; १५-८२, ९८, ९९, १००, १०६, १२९, १६८, १७३; १६-६६, ७२, ८७, १००, १३०; १७-९५, १०९, ११०, १११, १२३, १३०, १३६; १८-३६, ४७, ४९, ६३, ७४, ७७, ९९; ११५, ११८, १२२, १४६, १५९, १६१, १६३; १९-२०, २६, ४०, ४३, ५३, ५४, १०७, १०९, ११०, १११; २०-२४, ३७; २१-५६; २३-१८९; २०५; २४-१३०, १४५, १६६, १६९, १७५; २६-८३, ८५, ९७, २३२, २३९; २७-४७; २८-१२२, १३७; २९-६५, ८०; ३०-८९, २६१, २६६, १७७, २८०; क. ७-१४, २९, ५२; १२-२३, सि. ४-१४, ४३; ७-१८.

नागरक-वि. १३-१४२.

नागरक-सू. २७-१५६.

नाडी-सू. २७-९७.

नाम्नीमुखी-सू. २७-२२.

नारिकेल [सु. अ.]-सू. २७-१३०; वि. ३-२५८; २८-२८; क. १-८.

नारी-वि. १-४ | ७.

नालिका [सु. अ.]-सू. २७-१०१.

नालिकेर [सु. अ.]-सू. २६, ८४.

निष्ठुच-सू. २५-३९; २६-८४; २७-१३२.

निष्कम्भ [सु. अ.]-सू. ३-५; वि. २६-६०; क. १. १-२४, ३२.

निफोवफ [सु. अ.]-सू. १३-१०; २७-१०७; वि. २९-६५.

निष्ठुल [सु. अ.]-सू. २-१०; वि. ७-८९; १०-२०; ११-१३; १३-१३७; २५-११७; सि. ४-१३.

निदिग्धी [सु. अ.]-वि. २६-८९; १८-५४.

निदिग्धिका [सु. अ.]-सू. २-११; वि. १-१ | ४२; ३-२२०; ८-११४; ११-३५; १२-३४, ४१; १४-१९८, २३७; १७-९४; १८-१६१; २६-८७; ३०-६०; सि. ११-३२.

निम्ब [सु. अ.]-सू. २-७; ३-३, ८; ४-११ | १४; २३-१०, १२; २७-९७; वि. ८-१४३, १५१; शा. ८-३२; वि. ३-२०४, २२४, २५८, ३०७; ४-३८; ५-११५; ६-३०, ३१, ३८; ७-५७, ६५, ६८, ८२, ९७, १००, १०१, १०३, ११२, १२९, १३५, १३६, १४०, १५७, १५८; १२-६३, ७२; १५-१२६, १३६, १३८, १८१, १८९; १६-४८, ५३, ६३, ८७, १२२; १७-९७; २०-३४, ३५; २१-५१, ५४; २३-५१, ६९, ७९, २०२, २४३; २५-८४, ८५, ९५; २६-२३९; २७-२७; २९-१४८; ३०-७४, ८०, ९९, २५३, २५९, २७९; क. २-९; सि. ३-६१; ४-१९; ८-८.

निर्गुण्डी [सु. अ.]-सू. ४-११ | १५; वि. ७-२१; वि. ८-८४; २८-१३४; सि. ४-१८, ९-५८.

निशा [सु. अ.] वि. ६-३१; ७-१६१.

निष्पाव [सु. अ.]-सू. २४-६; २६-८४; २७-३३, १००; वि. २-४; वि. १६-७; २९-६.

निस्त्रिंशपत्रक-क. १०-८.

नीप [सु. अ.]-सू. ४-१३ | २३; २७-१४५; वि. ७-२१; ८-१३५; शा. ८-३४; क. १-१४; सि. १०-३४.

नीला-वि. १-४ | ७.

नीलिका [सु.]-वि. २६-१२; क. ११-१४.

नीलिनी [सु.]-सू. २-९; वि. ८-१३६; वि. ३-२९९; ५-१०४, १०५, १५२; १०-१८; १३-११९, १३४, १३७; क. ७-५१, ६१; सि. ४-१४, १०-२६.

नीली-[सु. अ.]-वि. १८-८७; २६-२७१; क. ७-३४.

नीलोत्पल [सु. अ.]-सू. ४-१७ | ४१; वि. ४-८६, ९९; ७-१६९; ८-११२; १४-१९३, १९७; १९-७५; २१-७६; २५-४७, ८८; मि. १२-१९ | १, १९ | २.

नीवार [सु. अ.]-सू. २७-१७; वि. ४-३६; २९-५०.

नैषध-नि. ४-५.

नैषधक [अ.]-सू. २७-१२.

न्यग्रोध [सु. अ.]-सू. ५-२२; २५-४९; २७-१०५, १६४; शा. ८-१९, २४; वि. ३-२५८; ४-५०, ७५; ११-३१; २१-७३, ८२, ८५; २५-४६, ६३, ८४, ८७, ११०; ३०-११८; सि. १०-३८.

न्यग्रोधी-क. १२-३.

पञ्चाङ्गल [अ.]-सू. २७-१०९.

पटोल [सु. अ.]-सू. ३-८; ४-११ | ११, १४-२९; २१-२६; २५-४९; २७-४, ९६; वि. ८-१३५, १४३; चि. ३-१८९, २००, २०१, २०४, २१३, २४१, २५२, २५३, ३५८; ४-३८, ७५, ९०; ५-११५, ६-३०, ३८; ७-४३, ४६, ४७, ६२, ६८, ९७, १००, १२८, १३१, १३५, १३६, १४०, १४४; १२-५३, ६३; १३-११९, १५-१२६, १३५, १३८, १८१; १६-४७, ८७; १८-१११; १९-८७; २०-३५; २१-५१, ५४, ५९, ६०, ६१, ९७, १११; २४-१३९, १४५, १७१; २५-९०; २६-२४३; ३०-२५३, २७९; क. १-२२; सि. ३-३६, ५८, ६१; ४-१८; ८-८; १२-१९ | २.

पतङ्ग (तण्डुलविशेष) [सु. अ.]-सू. २७-९.

पतङ्ग (रक्तचन्दन)-वि. २६-२१०.

पत्तूर [सु. अ.]-सू. २७-१००; वि. ३-२६७, २६-४६.

पत्र [सु. अ.]-सू. ३-२९; ५-२१, २७, ६३; वि. १-१ | ६९; ३-२६७; ५-१५७; ६-४२; ७-७४, १३०; ११-२३, ४०; १२-३६; १४-१६४; १७-७७; क. ७-२०, ३०, ४६.

पद्मक-वि. १५-१६५.

पद्म्या [सु. अ.]-वि. ५-१०५, १२२; ८-१००; १४-१५३; १५-९८, १०२, १२०; १६-५०, ९८; १८-११८, १२०, १२६; २१-१२५; २६-८६, ९७, १८९, २१७, २८७; ३०-८४; क. ७-१६, ५०; सि. ३-५४, ५८; ७-१९.

पद्म [सु. अ.]-३-२६; ४-१५ | ३१, १५ | ३४; १४-११; २५-४०, ४९; २७-१०५; वि. ६-१७; शा. ८-२४; इ. ५-१५; वि. १-१ | ५८; ३-२५८; ४-४४, ८०, ९४, १०७, १०८; ६-३१; १४-२३७; १८-८७; २१-५६, ५७, ७२, ७६; २५-८८; २९-६४, ९९, ११०, १२८, १२९; ३०-२२६; सि. ७-१३.

पद्मक [सु. अ.]-सू. ३-२४, २७; ४-१० | ८, १८-४७; ५-२१; वि. ८-१४४; सि. ३-२५८; ४-७३; ६-३०, ३८; ७-६८, १३१, १४५; ८-८३; ९-३७; ११-३१; १२-६०, ६८, ६९; १५-१२५, १३७; १७-८०, १४५; १८-८८, १७२, १७४, १७६; २१-७४, ७७, ८७; २३-२००, २४४; २६-१६८, २०८, २१६, २३४; २७-३०; २८-१५१; २९-६५, ९२, ११०, ११२, ११४, १३४, १४६; सि. ३-४८; १०-२२.

पद्मकेशर [सु. अ.]-सू. ४-१५ | ३१; ५-६५; वि. ८-१४४. चि. ४-७१; ८-८४; ११-१८; १९-७५, १०९; २३-५५; २६-२०८; २९-११२.

पद्मचारदि-वि. २३-५५.

पद्मरेणु [अ.]-सि. ३-५०.

पद्मा [अ.]-सू. ४-१५ | ३१; वि. ८-१४४; चि. १-४ | ७; ३-२५८.

पद्मोत्तरिका-सू. २६-८४.

पनस [सु. अ.]-सू. २५-४९; २६-८४; २७-१४३, ५. ११-७.

पयस्या [सु. अ.]-सू. ४-९ | २, १० | ७,
१० | ८, १५ | ३२; वि. १-४ | ६, ४ | १५;
२-१ | २५, २ | १८, ३ | ८; ३-२५८; ४-१०२;
८-७९, ८४; २३-२२३; २७-४१; २९-९२; ३०-५०,
८९, २६४, २७१, २८१; क. ७-१९; सि. ८-११;
१०-२१, ४३; १२-१९ | ३.

परिपेलव [सु. अ.]-वि. ८-१४४; क. १-२३.
परिध्याद्य-शा. ८-२९.

परुषक [सु. अ.]-सू. ४-१३ | २४, १६ | ३९,
१६ | ४०; १५-७; २३-३८; २५-४९; २७-१२८,
१३२, १३५, २७९; वि. ८-१३६, १३९; शा. ८-२९,
४७; वि. ३-२०६; ४-३३; ५-१२३, १३३; १८-३९;
२१-१०९, ११२; २२-४१; २४-१३६, १४०, १४९;
२६-२०, १६७; २९-५९, ८५, ९६; ३०-५२, ६५;
क. १-१२; ११-७; सि. ११-२६; १२-१६ | ५,
१६ | १२.

पणानि-वि. २-६; वि. ७-१७, २१; ८-१४२,
१५१; सि. ३-२६७.

पणालिङ्ग-क. १-२०.

परिण्यः चतस्रः [सु. अ.]-वि. ३-२४५; ८-
५०; २४-१५०.

पर्य्या-वि. ११-२६.

पर्यट [सु. अ.]-सू. २७-२७२; वि. ३-१५३;
१५-१८१.

पर्यटक [सु. अ.]-सू. ४-१४ | २९; २७-९७;
वि. ३-१४५, १९७, १९८, २२४, ३४३; ४-३१, ७५;
७-१८०, १४४; ८-१०६; १५-१३५; १६-४८;
१८-११०; १९-२०, ५०; २१-५८; २४-१६६.

पर्यटकीफल-सू. २७-१६२.

पर्यणी-सू. २७-१०८.

पर्यपुष्पी-सू. २७-१०८.

पलङ्कपा [सु. अ.]-सू. ४-१८ | ४८; शा. ८-६१;
वि. ३-३०७; ८-७८.

पलाण्डु [सु. अ.]-सू. २७-१७५; वि. १४-२०४,
२०८, २०९; १७-१३१.

पलाश [सु. अ.]-सू. २-१३; ३-१६; वि. ५-
८ | ५; वि. ८-११; शा. ८-१०; वि. १-१ | ७५,
२ | ७, ४ | १७; ४-८८, ८९, ९४; वि. ७-६९,
८५, ८७, ८९, १६५; ११-४४; १२-६५; १३-१०८,
११०, १५०; १४-९२, १२२; १५-१४२; १८६;
१७-१४३; १८-७७, १४६; १९-२७, ५९; वि. ३-
६५; ७-१९; ११-२५; १२-१६ | ६.

पांसुवाव्य-सू. २७-१२.

पाकल [अ.]-वि. ७-१६१; २३-१२६.

पाटल [सु. अ.]-सू. २७-१५.

पाटला [सु. अ.]-सू. २-११; ४-१६ | ३८;
वि. ८-१३५; वि. १-१ | ४३; ३-२६७; २३-२०१,
२०२, २४३.

पाटलि [सु. अ.]-वि. १-१ | ६२, ७-८९;
२५-९५; सि. १०-१९.

पाटली [सु. अ.]-वि. ११-२४.

पाठा [सु. अ.]-सू. ४-१२ | १८, १६ | ३९;
२३-१०; १२, १९; २७-८८; वि. ८-१३५, १४३;
शा. ८-५६; वि. ३-१९८३, २०४, २११; ५-७९;
६-२७, २८, ३२, ४२; ७-१०३, ११३, १४४;
८-१२६, १२८; १०-२०; ११-१६; १२-३४, ४१, ४४;
१४-६२, ६९, ९०, ९८, ९९, १००, १०७, ११०,
११३, १४८, १५३, १५९, १९५, २३०, २३७;
१५-१०३, १०६, १२५, १२९, १३४, १३५, १४२,
१७३, १७९, १८६; १६-१२२; १७-१०६; १८-३६,
११४, १५८, १६१, १६३, १७६, १९-२६, ३२, ५४,
१०५, १०७, ११०; २३-२१७, २४४; २६-६०, ८७,
१४५, १८९, १९१, १९४, १९९, २०१, २०५;
२७-३८, ३७, ४२; ३०-९०, २६६, २७६, २७७;
क. ७-५८; सि. ३-५६, ५९, ६१, ६३; ४-१९;
१२-१८.

पाठे द्वे-वि. १८-३९.
 पाण्डुक-सू. २७-८.
 पापसेलिक [सु.] - वि. ३-१८९.
 पागावत (फल) [सु.] - सू. २६-८४, २७-१३४;
 वि. २२-२९.
 पारावतपदी [सु.] - क. १-२३.
 पालक [सु.] - वि. २३-१२.
 पालकृष्ण [सु. अ.] - सू. २७-१००.
 पालिन्दी [सु. अ.] - सू. ४-११ | १६.
 पापाणमेव [सु. अ.] - सू. ४-१५ | ३५; वि. २६-६०.
 पिचुमर्द [सु.] - वि. ७-१७; ८-१३५; वि. ७-४६,
 १३१, १४४; २१-५२, ५९, ९७; २५-९०; २७-५०;
 क. १-२२.
 पिण्डफला-क. ३-३.
 पिण्डालु [सु. अ.] - सू. २४-६; वि. २-४.
 पिण्डालुक [सु. अ.] - सू. २७-१२३; वि. १४-९.
 पिण्ड-वि. १४-१०.
 पिण्डोतक [सु.] - वि. २८-३४; क. १-२७;
 वि. ३-६२; १०-३०.
 पिप्पली [सु. अ.] - सू. २-३, ७, १८, २४, ३१;
 ४-९ | ६, १० | ९, ११ | ११, १३ | २५, १३ | २७,
 १४ | ३०, १६ | ३६, १७ | ४२, १७ | ४५; १३-९२;
 २३-३५; २४-५७; २६-५१, ८४; २७-४,
 २९७; वि. १-१५, १६; ७-१७, १८, १९, २१;
 ८-१३५, १४२, १५१; शा. ८-३४, ४१, ४८;
 वि. १-१ | ८८, १ | ५८, १ | ६२, १ | ६८,
 १ | ७६, २ | ७, २ | ८, २ | ९, २ | १०, ३ | ३,
 ३ | २४, ३ | ३२, ३ | ३३, ३ | ३५, ३ | ३६,
 ३ | ३७, ३ | ३९, ३ | ४०, ३ | ४५, ४ | १५,
 ४ | २०; २-१ | २७, १ | ३७, २ | २१, ३ | १२,
 ३ | १८, ४ | २५, ४ | ३१; ३-१७९, १८४, १८६,
 २१९, २२३, २२८, २४३, २४८, २६७, ३०३, ३०६;

५-९८, १४४, १४७, १५६, १६४; ६-४२, ७-४८,
 १६१, १७१; ८-६७, ९१, ९६, १००, १०१, १०३,
 १०८, ११२, ११५, १३७, १४२, १४५, १४६, १६९,
 १७१; ११-२०, २१, ३०, ३३, ३७, ४८, ६६, ७२,
 ७९; १२-३०, ३२, ३९, ५३, ५५, ६६, १३-७८,
 ७९, १०२, १०६, ११७, १३४, १५८, १६३; १४-५०,
 ५२; ५३, ५४, ७२, ८९, ९२, १०४, १०६, ११०,
 ११३, ११९, १३१, १३९, १५५, २३५; १५-७४,
 ८२, १०६, १४२, १५४, १६०, १६३, १६४, १६८,
 १७३; १६-४४, ७२, ८९, ९४, १००, १२१, १२९,
 १३७; १७-९५, १११, ११२; १२३, १३५, १३६,
 १४१; १८-३६, ४७, ५१, ५५, ६०, ६३, ७१, ७७,
 ८७, ८८, ८९, ९१, ९४, १००, १०४, १०९, ११४,
 ११६, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १३५, १६१,
 १६३, १६६, १६९, १७२; १९-२०, २७, ८०, १०६,
 ११४, ११८; २०-२८, ३४, ३९; २१-५२, १२०;
 २३-५०, ५६, १८३, १८५, १८९; २६-१४, २१,
 १४५, १५३, १८८, २१६, २४७, २५८, २६१, २७०,
 २७६, २८७; २७-२८, ३१, ३२, ३८; २८-१२२, १६८;
 २९-६४, ८०, ९९; ३०-५०, ५४, ५७, ६६, ८४;
 क. १-१४, २२; ६-११३; ७-१५, २९, ३६, ३७,
 ४०, ५२, ५६, ७०; १२-५, २७, ३२, वि. ३-१४,
 ४०, ५८, ६७; ७-१७; ८-१०; ९-१८; १०-१५,
 २४; ११-२३; १२-१६ | २, १६ | ४, १६ | ६,
 १६ | ८, १६ | ११, १८ | १, १८ | २, १८ | ३,
 १८ | ५, १९ | १, १९ | २.

पिप्पलीसूत्र [सु. अ.] - सू. २-१८, २३, २९;
 ४-९ | ६, १७ | ४५; २५-४०; वि. ७-१९; ८-
 १३५, १४२; शा. ८-३४, ४८; वि. ५-७१,
 ८७, १४७; ८-१६९; १२-४१, ५५, १३-११२,
 १२६, १६३; १४-६२, ७२, ८९, १०४,
 १०५, १०६, १०७, ११०, ११४, १५९, २३५;
 १५-८२, ८८, ९६, १०३, ११७, १४२, १६५,
 १८९; १६-९४; १८-१०२, ११५; १८-३६, ५३,
 ५७, ९२, ११९, १२६, १५८; १९-२७, ४४, १०६;
 २८-३१, ३२, ४७; २९-१५२; ३०-३८०;
 क. १-२२, ७-१५. ०.

पीतदारु [सु. अ.]-सि. ९-८, १०-२३.

पीतद्रु [अ.]-वि. १२-२५; १७-११०; २६-९७.

पीलु [सु. अ.]-सू. २-४, १०; ३-४; ४-१३ | २४, १६ | ३९; १३-६७; २५-४९; २७-१४५; वि. ७-१७; ८-१३६, १४२, १५१; शा. ८-४७; वि. १३-१४५; १७-८७; २३-२१७; २४-१४९; २९-८१; क. ७-२०, २६; ११-७; १२-७; सि. ७-२६, ६३; ११-२६.

पीलु-वि. ३-२६७.

पीलुपर्णिका [अ.]-सू. २७-१०२.

पीलुपर्णी [अ.]-वि. २७-४१; ३०-५०.

पुण्डरीक [सु. अ.]-सू. ४-१५ | ३४; २५-४९; वि. ६-१७; चि. ३-२५८; ७-१८; २३-३२; सि. १२-१९ | १.

पुण्ड्र-सू. २५-४९.

पुनर्नवा [सु. अ.]-सू. २-१२; ४-१३ | २२; १३ | २६, १६ | ३६, १८ | ५०, वि. ८-१३५, १३६, १३९; चि. १-१ | ४३, १ | ५८, १ | ६४, २ | १२, ४ | ६; २-१ | २६; ३-२६७; ७-१२५; ८-७९, १७५; ११-२६, ५६, ६६; १२-२२, २३, ७३; १३-१०९; १६-९३; १८-१२७, १७७; २३-१३; २६-२३, २४, ४६, ६३, ७०, ८२, १७०; २९-६१, ६४, ७३, १०३; ३०-१३; क. ४-१७; सि. ३-३९, ६५; ४-४; ९-८; १०-२३, ३२; ११-३२; १२-१६ | १, १६ | ६.

पुनर्नये छे-वि. ११-३६, १२-३४, १६-११९.

पुर [सु. अ.]-वि. ८-१४४; चि. ३-२६७.

पुलाक-सू. १४-४२; चि. १४-४०; २३-१७०.

पुष्कर [सु. अ.]-वि. १-१ | ६३; ५-६९, ८०, ८६; २६-२७२; सि. ४-१४; ९-१८.

पुष्करदीप-सू. २६-८४; २७-११९; वि. ८-१३९, ०४४; शा. ८-२४; चि. ३-२५८; सि. १२-१९ | १.

पुष्करमूल [सु. अ.]-सू. ४-१४ | ३०, १६ | ३७; २५-४०; चि. ३-२११, २२५, २६७; ६-४१; ८-१०८, १११; १५-१०९; १७-१२९; १८-५३, ५८; २६-२२, ९७.

पुष्कराख्य [अ.]-वि. ८-१०१; १४-६३, १३१.

पुष्कराह [अ.]-वि. १२-६०; १७-१०४, १२३; १८-१२३; २६-८३, ८४; २८-१६९.

पूग [सु. अ.]-सू. ५-७७.

पूतना [अ.]-वि. ९-४५.

पूतीक [सु. अ.]-सू. १-११६, ११७; वि. ७-१२३; २६-२३.

पृथक्पर्णी [सु. अ.]-वि. ११-४४.

पृथ्वीका [सु. अ.]-सू. २-४; ५-२०; वि. ८-१३५, १५१; चि. ३-२६७; ५-७१; ७-१२२; २६-२३८.

पृश्निपर्णी [सु. अ.]-सू. २-११, २०, २१; ४-९ | ५, १६ | ३८, १७ | ४४, ५-६५; २५-४०; वि. ८-१३९; चि. १-१ | ४२; ३-१८३, २४७, २६७; ४-४६; ८-११४; १४-१९९, २३४; १८-१०१; १९-२१, २६, ५०; २३-२४५; २४-१६५; २५-७५; २६-८८; ३०-२८१; सि. ७-१३; १०-१९, ३८; १२-१६ | २, १६ | ५, १६ | ११.

पोटगल [अ.]-वि. ८-१३५; सि. १०-३३.

पोटा-क. १-२५.

पौण्ड्रक [सु. अ.]-सू. २७-२३८.

पौष्कर (विष) [सु. अ.]-वि. २३-११.

पौष्कर-सू. २६-८४; चि. ३-२१३, २६०; १०-१९; १३-१२७; १७-१०१, १०२, १४२; १८-७७, ९२, १११, १२६, १५९, १७७; २६-८५, ८६, १७०; २८-१२२.

प्रकीर्त्या [सु. अ.]-सू. १-८२; वि. ८-१३६; सि. १०-२६.

प्रग्रह [सु.]—क. ८-३; सि. १०-३०; ११-२४.

प्रतिविषा [सु. अ.]—चि. ७-१४४; १९-२२.

प्रत्यक्षणी—क. ११-१४.

प्रत्यक्षपुष्पा [सु.]—सू. १-८२, ८५; ४-१३ | २३;
२५-४०; वि. ८-१३५.

प्रत्यक्षपुष्पी—क. १-१४.

प्रत्यक्षपुष्पी—सू. १-७७; क. १२-४.

प्रपुन्नाड [सु.]—सू. ३-१३.

प्रपुन्नाड [सु.]—सू. २७-१०२; वि. ७-९३.

प्रपौण्डरीक [सु. अ.]—सू. ३-२४, २६; ५-६४;
चि. ३-२५८; ४-६८, ७४, १०२; ७-१३३; ८-८४,
९१; १८-७१; १९-९५; २१-५७, ९१; २५-८९, ९२;
२६-९४, २०८, २४३. २७०, २७६; २९-९४, ११२,
१३४; सि. ३-५०.

प्रमोदक—सू. २८-९; वि. ४-५.

प्रशान्तिका—सू. २१-२५.

प्रशान्तिका—चि. ४-३६.

प्रसारणी—चि. २८-१६६.

प्राचीनामलक [सु.]—सू. २७-१४६.

प्रियक [सु.]—सू. २५-४९.

प्रियसु [सु. अ.]—सू. ३-२६, ४-१५ | ३१,
१५ | ३४, १८ | ४६; ५-२०; २१-२५; २५-४९;
२७-१७; वि. ६-१७; ८-१३५, १४४; शा. ८-४४;
इ. १२-७६; चि. ३-२४६, २५८; ४-३६, ४४, ६६,
७०, ९४; ६-३१. ४१; ७-१३२, १६५; ९-७०;
११-३१; १५-१५५, २२७. २३६; १५-१५४, १५८;
२१-७२; २३-७८, २२४; २६-२३५; २८-१५३;
२९-११२; ३०-१०६, ११९, २५२, २६६;
सि. ३-३७, ४०; १०-३१, ३९; १२-१६ | १,
१६ | २, १६ | ६.

प्रियङ्गु—चि. ४-४४; २३-२४५; २५-९०.

प्रियङ्गुका [अ.]—चि. ४-७३, ८१, १०८;
१९-८३.

प्रियमल [सु. अ.]—सू. ३-२१; ४-१६ | ४०, १७ | ४३;
१३-१०; २५-४९; २७-१५८; वि. ८-१३६, १४४;
शा. ८-२९; चि. ३-२५८; ४-१०१४ २२-३०;
२६-२७८; २९-१३३; ३०-६६; क. ११-७; १२-७,
३६.

प्लव [सु. अ.]—चि. ६-४२; ७-१३०.

प्लव [सु. अ.]—सू. ४-१५ | ३३; ५-२२;
२५-४९; २७-१०५, १६४; वि. ८-१४४;
चि. ३-२५८; ४-३८; ११-३१; १५-१२६; २१-८५;
२५-४६, ८७; ३०-११९; सि. ६-६६; ८-२९.

फज्जी [सु. अ.]—सू. २७-९८.

फणिज्जक [सु. अ.]—सू. २-४; ३-४; चि. २-४;
वि. ७-१७, २१; ८-१४२, १५१; चि. ३-१६७;
७-४८; २६-१८५; क. १-२५; सि. ९-१७.

फल [सु. अ.]—सू. ३०-६२; वि. ८-१३५;
शा. ८-४१; चि. ३-२४८; ७-४७; ८-११८;
२६-१४; ३०-२५२; क. १-६, १३, १४, १६, १७,
१८, १९, २०, २२, २३, २४, २७, ३०; ५-१०;
७-७०, ७६; १२-३२; सि. ३-१३, १४, ४६, ५९,
६६; ४-२०; ६-४३; ८-९; १०-२५; ११-३४;
१२-१६ | ११.

फलत्रिक [सु. अ.]—चि. ६-४०; १०-३९;
सि. ३-६२.

फलपूर—चि. २६-८४.

फलपूरक—चि. ४-९५; २०-३६, ३९.

फलाम्ल—चि. ११-८०.

फलिनी [सु. अ.]—चि. १४-१८९; २१-७४;
२४-१५९; २५-६६; २६-२०९; क. ३-३,
सि. ३-६२.

फली—चि. २७-३८.

फल्गु [सु. अ.]-सू. ४-१६ | ४०; २७-१२८;
वि. २-१ | २७; १०-१९; २६-६३; २८-१२१.

फेनिला [सु.]-वि. २९-११०.

वकुल [सु.]-वि. ७-२१; ८-१४३; वि. ३-२५८.

वदर [सु. अ.]-सू. ४-१० | १०, १३ | २२,
१३ | २४, १४ | २८, १४ | ३०, १६ | ४०,
१७ | ४३; १३-९५; १५-७; २३-१६; २५-४९;
२६-८४; २७-१३२, १४१; मि. २-४; वि. ८-१३६,
१४०, १४४; वि. ३-२६७; ८-१४१; १२-६०;
१३-१२९; १४-१०, २०४; १५-११३; १८-४३;
१९-३१; २०-३८; क. १-२६; ९-६; ११-७; १२-७.

वदरी [सु. अ.]-वि. ३-२५८; १४-२१४;
१८-१८०; २२-३५; २४-१६०; क. १-८;
सि. ६-८३; ७-३१; १०-३९.

वन्धुजीव [सु.]-वि. २३-१८१, २४३.

वला [सु. अ.]-सू. २-१२, २०; ३-२१;
४-१० | ७; ५-६३; २५-४०; २७-१०७; वि. ८-१३९;
शा. ८-२४; वि. १-१ | ४३, १ | ७७, २ | ४,
२ | १२; २-१ | २५, २ | ५; ३-१८३, १८७,
२०५, २२४, २३६, २४२, २४७, २५८, २६७;
४-४७, ७८, ८४; ५-१०६, १३४; ८-७२, ७८,
७९, ९०, ९१, ९३, ९४, १०६, १११, ११४, १७०,
१७६; ११-२०, ३७, ४४, ५६; १३-१७१; १४-१९९,
२३४; १६-५३, १३७; १७-९६; १८-१२५,
१७४; १९-२६, ५०, ११०; २१-७९, ८५, ९१,
१२५; २४-१६५; २५-६३, ७५, ८४, ८९, ९०;
२६-४६, ६९, ९३, १३५, १६१, १६३, १७७, २८३;
२८-१०६, १११, १२३, १४८, १५९, १६७, १८५;
२९-५६, ६२, ७३, १०४, ११०, ११९; ३०-४९,
५९, १०७, सि. ३-१३, ३६, ४०, ४८, ६५; ४-४,
९; ७-१३, २८; ८-३९; ९-८, ८७; ११-३४;
१२-१६ | १, १६ | ३, १६ | ५, १६ | ६, १६ | ९,
१६ | १०; १९ | २, १९ | ३.

वलाह्य [अ.]-वि. २८-१६६.

वलाहक-वि. २३-११.

वले द्वे [अ.]-सू. ३-२२; वि. १२-३४;
१८-१४५, १५३; २३-१८८, २१२; २६-८७;
२९-७६.

वल्गज-शा. ८-३४, ४१.

वहुफेनरसा-क. ११-३.

वहुला-वि. ८-१०३.

वालक [सु.]-वि. १२-६८; १७-१२४; २०-३२,
३३; २३-७७; २८-१६१.

वालेक्षु-वि. २६-७३.

वाह्नीक [सु. अ.]-वि. २३-१०२; ३०-९१.

विभीतक [सु. अ.]-सू. ४-१३ | २४, १६ | ३९;
१३-१०; १५-७; २७-१४८; वि. ७-३१; ८-१३६, १४४;
शा. ८-२९; वि. १-१ | ७५, १-७६, १-७७, ३ | ३,
३ | ४१; ६-३५; ११-६२; १२-७१; १५-१६०;
१८-९२; २१-५६, १२४, १२५; क. १-१६; १२-१५;
सि. १२-१६ | १.

विम्बी [सु. अ.]-सू. १-७८, ७९; ४-१३ | २३;
२७-१४२; वि. ८-१३५; वि. ७-८५; १४-१०;
क. १-१४; ४-१७.

चित्र [सु. अ.]-सू. २-११, १९, २०, २८;
४-११ | १२, १३ | २५, १३ | २६, १६ | ३८;
५-६४; १३-१०; २१-२४; २५-४०, ४९; २७-१०७,
१३८; वि. १-१ | ४३, १ | ६२; ३-१८३, १८६,
२२०, २३५, २६७; ४-४६, ५०; ५-१६५; ८-१२६,
१२७; १२-४३, ५५, ६०; १३-१६९, १४-४०,
४४, ४७; ६३, ६९, ७०, ९०, ९३, १००, १०८,
११०, १३१, १९५, २००, २३०, २३७; १५-१००,
११३, १२९, १३६, १८८; १६-५९, ११९; १७-९४,
१४२; १८-७७, १०९, १२३; १९-२०, २६, ३४,
३५, ४५, ४८, ६२, १०४, १०९, ११०, ११४, ११८;
२०-२३; २३-६६; २६-६६, १३५, १८४, २३७, २४३;
२७-२९, ५६; २८-९७, १२३, १४१, १६९, १७६;

२९-१०४; ३०-९१, २६६, २७८; क. ३-१५; ८-११;
१०-१०; सि. ३-१४, ५९, ६६; ४-८, १५, १७,
२०, ३७; ७-११, ५२; ८-५, ३८; १०-१९; ११-२६,
३४, ३५; १२-१६ | २, १६ | ५, १६ | ६, १८.

विलम्बक-क. ८-१७.

विलम्बपर्णी-सू. २७-१०७.

विस्वादिपञ्चमूल [अ.]-सि. ९-८.

विस [सु. अ.]-सू. ५-१०; २६-८४; २७-११६;
वि. ८-१४४; सि. ३-२५८; ११-१८, ४६; १४-९;
२१-७३, ७९, ८३; २५-४७; २६-७६, ९४, १६८,
२४३; २९-१३३; सि. १२-१९ | २.

वीजक [सु. अ.]-वि. १६-१०६.

वीजपूर [सु. अ.]-वि. ५-७७; २३-६८.

वीजपूरक [सु. अ.]-वि. ५-१६६; १५-९१;
२२-३६; २४-१२१.

वृहत्पत्र-क. ९-३.

वृहती [सु. अ.]-सू. २-१२; ४-१४ | ३०,
१६ | ३८, १७ | ४४; सि. ८-१३९, १५१; ३-२१४,
२२४, २६७; ७-४६, ८८, १०२, १०८, ११२, १२८;
८-९१, ११४; ११-३६, ६२; १४-५०; १८-८८;
१९-२६, ५०; २३-५५, २४४; २६-१६९, २३७,
२४०; २९-७६; ३०-५८; क. १०-१०; सि. ३-५६;
९-८; १०-३८; १२-१६ | २, १६ | ४, १६ | ५.

वृहतीद्वय [सु. अ.]-वि. १-१ | ६२; १२-२९;
१५-१०६; २३-९७; २६-६२; २९-६५.

वृहत्तयौ द्वे [सु. अ.]-सू. २३-१९; सि. ३-२१०;
२१३; १८-७५; २६-६९; २७-५६; सि. १०-१९.

वोधिचक्षु [अ.]-वि. २९-१५८.

ब्रह्मसुवर्चला [सु. अ.]-वि. १-१ | ५८, ४-७.

ब्राह्मी [सु. अ.]-सू. ४-१८ | ४९; शा. ८-२०,
५८; सि. १-३ | २४, ४ | ६; ७-६९; १०-२५;
१८-४०.

भण्डी [सु. अ.]-सू. २७-१०७.

भद्रदास [सु. अ.]-वि. ७-२३; सि. १६-६६.

भद्रपर्णी-वि. ८-१३५.

भद्रमुस्त [अ.]-वि. १४-१६०; १९-२०.

भद्रमुस्ता[अ.]-सू. २१-२९; सि. १९-१२०;
२४-१४५.

भद्रश्री [सु. अ.]-वि. ३-२५८; ४-१०२.

भद्रौदनी-सू. ४-९ | २.

भल्लातक [सु. अ.]-सू. ३-५; ४-९ | ६,
१५ | ३३; १८-४; २६-८४; २७-१६५; सि. ७-२३;
८-१४२, १४४; शा. ८-३३; सि. १-२ | १३, २ | १४,
२ | १५, २ | १६, २ | १७, २ | १९; ३-२६७;
५-१४३, १४६; ६-३८, ४५; ७-८२, ११३; १२-२९;
१३-१५८; १४-५५, ७०; १५-१४६, १७७; २१-१२६,
१३०; २२-४७; २३-१००; २६-२७१; २७-३२, ४५;
२८-१६८; ३०-१५०; क. १-२०.

भव्य [सु. अ.]-सू. २६-८४; २७-१३१, १३५;
सि. २४-१३६; २९-६५.

भारद्वाजी-सू. ४-९ | २; सि. ८-१३९.

भार्गी [सु. अ.]-वि. ३-२१३; ७-१११; १०-२०;
११-३६; १६-१२०; १७-१०२, १०९, ११०;
१८-४७, ५१, ५४, ५८, ६३, ११२, १२७; क. ७-१५;
सि. ४-४, १३.

भार्ङ्गी [सु. अ.]-वि. ६-४२.

भूतीक [सु. अ.]-सू. ४-१७ | ४२; १४-३३;
शा. ८-२९; सि. ३-२६७; १०-२१; १३-११०;
१७-१४२; १९-२०, १०५; २६-८५; सि. ३-६५;
४-४; ११-२५.

भूनिम्ब [सु. अ.]-वि. ७-६९; १०-२०;
१२-४२; १५-१३७, १३६, १८१; १६-४८; सि.
३-६१; ४-२०; ८-८.

भूर्ज [सु. अ.]-सू. ३-४, १५; वि. ८-१४४;
शा. ८-३४, ३८, ४१; चि. २१-१२५; २५-१००;
२६-२२७.

भूर्त्तुण [सु. अ.]-सू. २७-१७२; नि. २-४;
वि. ७-१७; ८-१४२; चि. ३-२६७.

भृङ्ग [सु. अ.]-वि. २४-१८१; क. ७-३४.

भृङ्गरजस् [सु.]-वि. ४-६८.

भृङ्गराज [सु.]-चि. १८-११७; २६-१६४;
क. १-२५.

मकुष्ठ [सु. अ.]-वि. ४-३७; ८-११६;

मकुष्ठक [सु. अ.]-सू. २६-८४; २७-२७;
चि. ३-१८८; १४-१०; १९-५०; २९-५१.

मच्छिप्रा [सु. अ.]-सू. ४-१० | ८, ११ | १६,
१६ | ३९; नि. ४-३३; शा. ८-३२; चि. ३-२५८;
६-३९; ७-६५, १००, १२०; ८-८३; ११-४४;
१२-६८; १४-१५९; १५-१४७, १५८; १६-१०५;
१७-१४५; २१-७६; २३-५०, ७९, १८५, १९६;
२५-११४; २६-२०८, २३४, २३८, २७०; २८-१५०,
१६२; २९-९४, १०७, ११३, ११४, १२३, १३४;
३०-२७५; सि. ३-४८; १०-२१, ४३; १२-१६ | १,
१९ | ३.

मण्डूकपर्णी [सु. अ.]-सू. ४-१८ | ५०;
२७-९५; वि. ८-१४३; शा. ८-३४, ४१;
चि. १-१ | ४८, १ | ५८; ३ | ३०; ११-९२,
१३-१८१; २३-२२५.

मत्स्याख्यक-वि. १-३ | २४.

मदन [सु. अ.]-सू. १-८१, ८४; २-७, १२;
३-३; ४-१३ | २६; १५-९, १०; २३-१०; वि. ८-१३५;
१५१; शा. ८-४१; चि. ३-६२८, २४१, २४३,
२४५, २४६, २४७; ४-५९, ६०; ७-४३, ४६, ९१;
१४-५४, १३१; १५-१७९; १८-८३; २१-५१, ५२;
२३-५६; २६-१५३; २७-३३; २८-१५४; क. १-२७;
७-७४; सि. ३-३९, ५७, ६७; ४-९, १३; ११-१३,
२३; १२-१६ | ४, १६ | ५, १६ | ६, १६ | ८,
१६ | १०, १८ | २, १८ | ३.

मदनफल-सू. ४-१३ | २५; १५-९, १०;
२५-४०; वि. ७-१७, १८; क. १-२६; सि. ९-८;
१२-१६ | १, १८ | १, १८.

मद्यन्तिका [अ.]-वि. १०-२१; २६-२७१.

मद्यन्ती [सु. अ.]-वि. ८-१२९; २९-११२.

मधुक [सु. अ.]-सू. २-७; ३-२१, २२; ४-९ | १,
९ | ५, १० | ८, १० | ९, ११ | १४, १३ | २१,
१३ | २३, १३ | २५, १५ | ३४, १७ | ४४, १८ | ४६;
५-२१, ६३; १५-९; २५ | ४०; वि. ८-११, १३५;
चि. १-१ | ४९, १ | ५८, १ | ७६, १ | ७७, ३ | ४५;
२-१ | २७, १ | ३४, २ | ५, २ | २१, ३ | १९;
३-२०५, २२८, २४३, २४७, २४८, २५०; ४-६०, ६८,
९५, १०१, १०२; ५-११५, १३१, १४५; ७-४३,
४४, ४७, १३३; ८-७२, ७५, ७७, ७९, ८३, ९०,
९१, १११, १७६; ११-२०, २१, २७, ३६, ४८,
७३, ९२; १३-१०३; १४-१३१, २१४, २१५, २१६,
२२०, २२९; १५-१८९; १६-५३, १०९, १३७;
१७-११५; १८-६९, ७१, ८३, १३५, १४५, १७६;
१९-६६, ८२, ८७; २१-५१, ५६, ५७, ७२, ७४,
७७, ७८, ८०, ९१, ९७; २२-४३; २३-५६, ८०,
९५, १८८, २०२, २२३, २४६; २५-४७, ४८, ६४,
७५, ७८, ८५, ९२; २६-५३, ८७, ९४, १४०,
१६३, २४१, २५०, २६७, २६९, २७६, २७९;
२८-९६, १६२; २९-५५, ७१, ७२, ९६, १०३,
११६, ११७, १२१, १३१, १३३, १३४, १४६;
३०-५९, ७८, ९२, ९८, ११९, २६३, २७२, २७८;
क. १-१२; २-९; ३-२२; ४-६, ८; ५-८; ६-६;
७-१७; सि. ३-४०, ५०; ४-९, १३; ७-१३, १४;
९-८; १०-१५, ४२, ४३; ११-२३, ३५; १२-१६ | १,
१६ | ४, १६ | ५, १६ | ६, १६ | ८, १६ | १०,
१६ | ११, १८ | १, १८ | २, १८ | ३, १९ | १,
१९ | २, १९ | ३.

मधुपर्णी [सु. अ.]-सू. ४-९ | ५, १३ | २१;
वि. ८-१३९; चि. २६-७०; २९-७२, ९२, ११७.

मधुयष्टि [सु. अ.]-सू. २८-१८६; २९-९१;
सि. ३-५३.

मधुयष्टिका [सु. अ.]-चि. ३-२४६; १६-१००; २९-१०७; सि. १०-२९.

मधुयष्टी-वि. २३-१९६.

मधुयष्ट्याह्वा-सि. १०-२८.

मधुरसा [सु. अ.]-चि. ३-२५८; १६-६१.

मधुवल्ली-वि. ८-१३९.

मधुलिप्तु [सु. अ.]-नि. २-८; वि. ७-१७; चि. १३-१५५; १५-१३९; २६-२३७; २९-१५१.

मधुलिप्तु [सु. अ.]-वि. ८-१४२; चि. १५-१३५.

मधूक [सु. अ.]-सू. ३-२१; ४-१५ | ३२, १७ | ४१; १३-१०; २५-४९; सि. ८-१३५; शा. ८-१०; वि. १-४ | १४; २-१ | २८, २ | १८; ३-२०६, २५८; ४-३३, ८१, ९४, १०४; ५-१२३; ११-२०, २७, ७१; १५-१४६, १५०; १९-८८; २३-१८८, २०२; २६-८७, १६१, १७९; २९-९६; क. ५-१०६; सि. ३-५३; ६-५३; ७-१३; १०-४२; ११-२४; १२-१६ | ११, १९ | ३.

मधूकपुष्प-वि. १-१ | ५८.

मधूकपुष्पी-वि. ८-१३९.

मधूक-वि. २-४.

मधूकिका [सु. अ.]-वि. ८-१३९; चि. १७-१११; क. ४-१३; सि. १२-१९ | १, १९ | २, १९ | ३.

मधूली [अ.]-सू. २७-२२.

मधूरक्त [सु. अ.]-वि. १२-२३; २३-५७.

मरिच [सु. अ.]-सू. २-३, २३; ३-१२; ४-९, ६, ११ | १५, १३ | २७, १७ | ४५; २८-२९८; वि. ८-१४२, १५१; चि. २-१ | ३०, २ | २४, ४ | ११, ४ | २१; ७-४८, ७४, ८७, ११७; ८-१४२, १४५; ९-६७, ६८; ११-४०, ६७, ७४, ८६; १२-३२, ३६; १४-९२, १३९, १५८, २०६; १५-१०२, १२०, १६४, १६८; १६-१२९; १७-९८, ११०; १८-७१, ७३, ९०, १०४, १८०; १९-१०७,

१११; २०-३९; २३-५०, १८३; २४-२३, १२७, १२८, १७७, १८१, १८३; २६-१३८, १९२, २१६, २१९, २४७, २६१; ३०-७२, ९२; क. ७-१५, २५, ४०; १२-२३; सि. ८-४२; ९-१७.

मरुवक-क. १-२३.

मरुट-वि. २३-१३.

मरुटी [सु. अ.]-वि. ९-४५.

मलपू [सु. अ.]-वि. ७-१६२; १६५.

मसूर [सु. अ.]-सू. २७-२८, २९; चि. ३-१८८; ४-३७, ४६; ५-११६; १४-१०; १६-४२; १९-५०; २०-३७; २१-६०, ८०, १११; २२-३१; २५-६२; २९-५१, १३४; ३०-२५८; सि. ८-३८; ३९-४०.

मसूरविदला-वि. ८-१३६; चि. ७-१३७; क. ११-१४.

महाजालिनि-क. ३-१७; ४-३.

महापन्न-वि. १४-१२४.

महापुरुषदन्ता [अ.]-वि. ९-४६.

महामेदा [सु. अ.]-सू. ४-९ | १; वि. ८-१३९; चि. १-४ | ६; ३-२५८; २६-१६८; २८-१६०; २९-६१; क. ४-१३; सि. १२-१९ | १, १९ | ३.

महात्रीहि [अ.]-वि. ४-१.

महावृक्ष [सु. अ.]-सू. ४-४; चि. ८-१३६; क. १-६; १०-६, २२.

महाशालि [सु. अ.]-सू. २७-८, ११; चि. १४-९५; २१-११३.

महाध्रावणी [सु. अ.]-वि. ८-१३९; चि. १-४ | ६; ३-२५८; २८-१६०.

महाश्वेता [सु. अ.]-सू. ४-१३ | २७; सि. ९-८७.

महासहा [सु. अ.]-वि. ८-१३५, १३९; क. ४-१६; सि. १२-१९ | २.

महौषध [सु. अ.]-सू. ४-१२ | १८; २४-४९; शा. ८-५६; चि. ३-२१०; १२-३५, ४२; १८-८७; १९-५४; २६-८४, २२६.

मांसी [सु. अ.]-सू. ५-२१; चि. ७-८७; १२-६५; १४-३३१; १७-७८; १८-६९; २०-३३; २३-५४, १०२, १९०; २६-६५, २०९, २३४; २८-१५३, १५८; २९-९२, ११२, १३१; क. १-२३.

मागधिका [सु. अ.]-चि. ७-६८, १४१; १२-२३; १५-१२५; २०-२९; २२-५३; २६-१२; सि. ३-४४; ६-४३; ८-१३.

मागधी [सु. अ.]-चि. २-१ | ३०; ३०-१५०.

माचीक [अ.]-चि. ८-१४४.

मातुलङ्ग [सु. अ.]-सू. ४-१० | १०, १४ | २८; २४-४९; २६-८४; २७-१५४; चि. ८-१४०; ३-२६७; ५-७८, ८४, ८५, ८८; ८-१३०; ९-५३; १५-८९, ९७, १४२, १६८; १६-६६, १२९; १७-८७, ९७, १०४, १०८; १९-१८८; २१-१२९; २२-३४, ४४; २३-२०८; २४-१११, १३१, १७४; २६-८५, ८६, २०८; ३०-५६; क. ७-३०, ७५; १०-१२; चि. ९-८.

मारिष-सू. ७-१००.

मार्कव [सु. अ.]-चि. ७-२१; चि. २६-२६७, २६९.

मालती [सु. अ.]-सू. ५-७३; १८-३२; शा. ८-३२; चि. १-१ | ८८; ७-९५, १६८; ९-३६; ३०-५९, ७४.

माण [सु. अ.]-सू. २-२८, ३२; ३-१८; ४-१३ | २२; ५-११; १३-८९; १४-२५; १५-७; १७-९९; २१-३१; २४-६; २५-३९, ४०; २६-८४; २७-४, २४, ३४, २५३, ३३६; सि. २-४; ३-१०; ४-५; ५-६; चि. १-२२ | १; शा. ६-११; ८-२८; चि. १-२ | १३; २-१ | २६, १ | ३३, १ | ३८, १ | ४७, २ | ७, २ | १४, २ | १८, ३ | १, ३ | ३, ३ | ८, ३ | १४, ३ | १३, ४ | १६, ४ | २१,

४ | २३, ४ | २४, ४ | २८; ३ | २६७; ७-७; ८-७१, १७७; १४-९, १०, ४०, १६-७; १७-८४; १८-७६; १९-३५; २१-१९; २४-१२६; २८-९८, १११, ११४, १७४; २९-६, १०४; ३०-७२; क. १-१३, १४; १२-१९, ३४; सि. ४-५; ७-२४; ८-१८; १०-२९; १२-१६ | १२.

माषपर्णी [सु. अ.]-सू. ४-९ | १, १२ | १९; चि. ८-१३९; चि. ३-२६७; २९-६१, ७३; ३०-५०; क. ७-१८.

मुकुन्द-सू. २७-१८.

मुकुन्दक [सु.]-चि. ४-५.

मुकुलपुष्प [अ.]-चि. २-४ | ३९.

मुकुलक [अ.]-सू. २७-१५७; चि. २५-५३; क. ७-४६; १२-३.

मुल्हा [अ. सु.]-सू. ४-१८ | ५०.

मुञ्जात [अ.]-चि. २६-१७१; २९-६६.

मुञ्जातक [अ.]-सू. २७-१२०; चि. २२-३०, ९६; सि. ३-५०.

मुद्र [सु. अ.]-सू. ५-५, १२; ६-६१; १५-७, १६; २१-२५; २५-३८; २७-२३, २५९, ३३६; चि. १-२२ | १; शा. ३-४ | ५; ८-५६; चि. २-३ | १६; ३-१५७, १८८; ४-३७, ४६, ७८; ५-१६४; ६-२०, ४८; ७-८३, ८-११६; १२-६२; १३-९७; १४-१०, २०५; १६-४२; १७-९६, ९७; १८-९६, १८४; १९-३५, ५०; २०-२७, ३१, ३७; २१-६१, ८०, १११; २२-३१; २३-२६६; २४-१३९; २५-७९, ११२; २६-१४८, १५०, १५६; २९-५१; ३०-२५८; क. १-१३; १२-१८, ३७; सि. ३-८.

मुद्रपर्णि-चि. २३-५६; ३०-५०.

मुद्रपर्णिनी-चि. २९-७३.

मुद्रपर्णी [सु. अ.]-सू. ४-९ | १, १२ | १९; चि. ८-१३९; चि. ३-२६७; ७-१२३; २९-६१; क. ७-१८; चि. ३-५३; १०-२८.

सूक्तक [सु. अ.]-वि. १५-१८९; २६-१९२.

सुस्त [सु. अ.]-सू. ३-५, १०; ४-९ | ३, ११ | ११, ११ | १४, १२ | १८, १४ | २९; ५-२२, ६४; २३-१०, १२; २५-४०; वि. ८-१४३; शा. ८-३२; वि. १-१ | ४८, १ | ६४, ४ | १४; ३-१४५, १९७, १९८, २०१, २०२, २०५, २०६, २०७, २१०, २१९, २२३, २२४, २४३, २४६, २४८, ३४३; ४-३१, ४७, ६०, ७१, ७४, ७८, ८१; ६-२७, ३८; ७-४६, ६५, ७७, ९१, १०२, ११३, १४२, १४४; ८-१००, १३७; ११-१६; १२-२३, ४१, ४३, ६५; १३-१५९; १४-१९६, २३१, २३६; १५-९८, ९९, १२६, १२९, १३८, १५८, १८२, १८८; १६-४७, ६०, ७०, ७३, १०३, ११९; १७-१२३; १८-५१, ६९, ८७, ९०, ९२, ११२, ११४, ११५, ११८, १२०, १२१, १६३, १७६; १९-२२, ५०, ५२, १०४; २१-५४, ८८, १३०; २३-७७; २४-१५०, १६६, १६७; २५-९०; २६-२०१, २२७, २३५, २३९; २७-३०, ३६, ३८; २८-११३, १५१, १६१; २९-८६, १५०; ३०-९१, ९८, १९८, २७६, २७७; क. ७-१६, ४६, ५२, ५७, ६१; सि. ३-४०, ५९, ६१; ६-५३; ८-९; १०-२३; १२-१६ १, १६ | २, १८ | ९, १८ | १५, १८ | १६, १८.

सुस्तक [सु. अ.]-वि. ६-३२; १५-१३२.

सुस्ता [सु. अ.]-वि. ५-११९; ६-२६, ४०; २०-३८.

सूक्तक [सु. अ.]-सू. १३-१०; १४-३१; २४-६; २६-८४; २७-१६८; वि. २-४; ५-६; वि. ७-१७; ८-१४२, १५१; शा. ८-२८; वि. ५-७२, १६५; ७-७, १०२, १२७, १६९; ८-६८, ७५; १२-४४, ६३, ७३; १३-११५; १४-९, ४५, ९३; १५-८९, ११५, १४४; १६-१२९; १७-९९; १८-८१, १०९; १९-३१; २१-१२४, १२८; २४-१७०; २६-२२६; २८-१३६, १४०, १६७, १७४, १७६; २९-५; सि. १२-१६ | ६.

सूक्तकपर्णिका [सु. अ.]-वि. ७-२१; वि. ३-२६७.

सूक्ता [सु. अ.]-सू. ४-११ | ११, १२ | १८; वि. ८-१३५, १४३; शा. ८-५६; वि. ३-२०४; ६-२८, ४१; ७-६५, ६८, १०८, ११३, १४६; ११-६२; १५-१२५, १३९, १७९, १९०; १६-४७, १२२; १८-८७, ११४, १६१; २०-३३; २३-२४३; २५-८८; २६-१४५, १६९, १९९; २७-३४, ३५; २९-९२; ३०-२६६, २८०; सि. ३-५६; ७-१७.

सूक्तकपर्णिका [सु. अ.]-वि. १२-७२.

सूक्तकपर्णी [सु. अ.]-क. १२-४.

सूक्तकक्षया [सु. अ.]-क. १२-३.

सूक्तकक्षिका [सु. अ.]-सू. २५-४९.

सूक्तकाल [सु. अ.]-शा. ८-३२; वि. ३-२५८; ४-७५, ९४, १०२; ७-१३०; १२-६८; १४-९; १५-१४८; १८-९५; १९-५३; २१-५४, ७५; २६-१६८, २७१; सि. १२-१९ | २.

सूक्तकाली [सु. अ.]-वि. ८-१२९.

सूक्तकाल-क. ६ ३.

सूक्तिका [सु. अ.]-सू. २-२४; ४-१३ | २१; १५ | ७; २३-३८; २५-३८, ४९; २७-१२६; वि. ८-१३६, १३९; शा. ८-२९; वि. १-४ | १४; २-२ | १४, २ | १८; ३-१८५, २०१, २०६, २०८, २२३, २३०, २३२, २३३, २३७, २५८; ४-३३; ८-९६; ११-२१, ३६, ४६; १४-१६२; १८-९१, ९२, १३६, १५१; २१-१०९; २४-१३६, १८२; २६-१६७, १९८, २०५; ३०-६५, ९०; क. १-१२; सि. १२-१६ | १०, १९ | २.

सूक्तक-सू. २७-१७०.

सूक्तक-वि. २३-१२.

सूक्तकाल [सु. अ.]-सू. ४-९ | १, १२ | १०, १३ | २१; वि. ८-१३९; वि. १-१ | ४४, १ | ६४, ४ | ६; २-१ | २५, १ | ३४, २ | २१, ३ | ८; ३-२२५, २५०, २५८; ४-९५; ५-४४; ११-४५, ६३; १८-४०; २६-१३७;

२८-१५९; २९-५६, ७२, ७७, ११२; क. ४-१३;
७-१८; सि. ३-४९; ४-९, १४; १२-१९ | १,
१९ | २, १९ | ३.

मेवायुग-वि. २६-९३.

मेवायुगम [सु. अ.]-वि. १८-९९.

मेदे [अ.]-वि. ११-३५; २५-८८; २६-८७;
२९-६४.

मेघशृङ्गी [सु. अ.]-वि. ३-२६७; क. ९-७.

मोच [सु. अ.]-सू. २६-८४; २७-१४३;
वि. ३०-१२२.

मोचरस [अ.]-सू. ४-९ | ५, १५ | ३१,
१८ | ४६. १८ | ४७; वि. ८-१४४; चि. ३-२५८;
४-७६, ८६, ९९; १४-१८९, १९३, २३७; १९-५३, ७५.

मोरट [सु. अ.]-वि. ८-१३९.

यमानी-वि. ६-४३; ८-१२६.

यच [सु. अ.]-सू. २-१२, ३१; ३-१८, २०;
४-१३ | २२, १४ | २८, १६ | ४०; ५-१२; ६-२५,
३८, ४३; १३-८४, ९४; १४-२६, ३५; १५-७;
२१-२३, २५; २३-२५; २५-४०; २७-४, १९, २६१;
शा. ८-९, १८, ५६, ६१; चि. १-१ | ७५, २ | १३,
३ | १८; ३-३०८; ४-७८; ६-१८, २१, २४, ४८;
८-६७, ६९, ७१, १२०, १७७; ११-१९, २९, ८१;
१२-३५; १३-९७, ११७, १८१; १४-१०, ४०;
१५-८३, १६०; १६-४१, १०९; १७-७८, १००;
१८-५८, ५९, ७६, ९६, १०८, १५८; १९-३५;
२०-३५; २१-७८, ८०, ११०, ११४, १२८;
२४-१३२, १७२, १७९; २५-७८; २६-१८, ४६,
१४८, २८६; २७-२६; २८-१११, ११४, १२०, १४०,
१७६, १८५, १८७; २९-५०, १०४, १३२, १५९;
३०-७१, १०६, १२१, १५२, २५७, २६८, ३१९;
क. १-१३; ७-७३; ८ १४; वि. ३-३६, ६६; ४-५,
८, ३९; ७-११ ३८, ५१, ६१; ९-८, १८; १०-२०,
२९, ३०; ११-२४; १२-१८ | ५, १६ | ६, १६ | ७,
१६ | ९, १६ | १०, १६ | १२.

यवक [अ.]-सू. ५-११; २१-२५; २५-३९;
२७-१२; वि. २-४; ४-५; ५-६.

यवतिका [सु.]-क. ११-३.

यवशाक [अ.]-सू. २७-१०२; शा. ६-११.

यवानिका [अ.]-वि. १४-११०; १५-१७७.

यवानी [अ.]-सू. २३-२०, २७-१७०, ३०७;
वि. ५-८६, १६५, १६८; ६-२९; ८-१३७, १३८,
१४१; १२-१५, १३-१०३, १०५, १२५, १४-६३,
७०, ७३, ९९, १००, १०७, १९५; १५-१२०, १३५,
१३८; १८-७७, १२६; १९-२७, २४-१२१, १६९,
१७५; २६-६५, ८५; क. ७-५३; १२-२३; सि. ३-१४,
६७; १२-१६ | २, १६ | ६.

यवाल [सु. अ.]-सू. ३-२७; वि. ४-६८, १००,
१०३; १४-२१४, २२५; २६-२१०,

यवालक [सु. अ.]-वि. ३-२२२; ४-१७५.

यष्टि [सु. अ.]-वि. २९-७७.

यष्टिका [सु. अ.]-सू. ४-१४ | २८; वि. ४-८१.

यष्टिमधु [सु. अ.]-वि. १-३ | २०; क. १-१४.

यष्टिमधुक [सु. अ.]-वि. २९-११५; ३०-६६.

यष्टीमधु [सु. अ.]-वि. ८-१३९.

यष्टीमधुक [सु. अ.]-शा. ८-२४, चि. १-३ | ३०;
३०-२७१; सि. ७-५३.

यष्ट्याह्व [अ.]-सू. ३-२४, २७; वि. ७-१३१,
१४६; ११-३३, ६७; १२-७१; १६-१२१; १८-३६,
८४, ८७; २२-४४; २३-२४४; २५-८८; २६-१४०,
१६१, १७७, २०८, २३४, २४३, २६५, २७८;
२८-१३७, १५१, १७२; २९-११०, ११४, १३२;
३०-८९, २५२; क. ३-१४; ७-१९, ५७; सि. ३-४७,
४८, ६२, ६७; ७-५६, ५७; ८-१३.

यष्ट्याह्वय-वि. १२-४४, ५३; सि. ३-४६.

यष्ट्याह्वा-वि. ७-१३६; २१-५९.

- यष्ट्यादिका-चि. २६-९१.
 यातुक-सू. २७-१०२.
 यास [सु.] -चि. ७-१४६.
 यवती-चि. १-१ | ५८.
 यूथिका [सु. अ.] -चि. १-१ | ५८; ८-१२९;
 १५-१३५; २६-१८४; ३०-६०.
 रक्तचन्दन [सु. अ.] -चि. २६-१७१; ३०-९२.
 रक्तनाल-सू. २७-१२३.
 रक्तमूली-चि. १०-३१.
 रक्तशालि [सु. अ.] - सू. २७-८, ११;
 शा. ८-२४, २८; चि. ३-१७८, १८१; ८-१३२; ११-२६;
 १३-९७; १४-९५; १९-४१, ५६, ७२; २१-११३;
 सि. ८-३८.
 रजनी [सु. अ.] -चि. १-१ | २५; ७-७७, ८७,
 १००; १२-४१; १३-११९; १७-१४५; २२-४९;
 २३-४९, ५०, ७९, १९०; २६-६३; २९-११४;
 क. ४-१६; ७-१६; सि. ४-१८.
 रजनीद्वय [सु. अ.] - चि. ७-६८; २३-१०१,
 १८५, २१२; २५-११४; २९-१४९.
 रजन्यौ [सु. अ.] - चि. ९-३५; १०-१८;
 २३-२२०, २४६; २६-३०९.
 र(च)ण्डा-क. १२-४.
 रसाञ्जन-[सु. अ.] - सू. ३-१३; ५-१५;
 चि. ७-६१, ८४, ९३, १२५; १४-१८७, १९५, २२०;
 १७-१२९, १३४; १८-१६९, १७७; १९-५२, १०८;
 सि. ३-८०, ६२; ११-२३; १२-१६ | १, १६ | २,
 १६ | ६.
 रसोन [सु. अ.] -चि. ३-३०४.
 रक्षोघ्न [अ.] -चि. २६-१५.
 रक्षोघ्नी-चि. २३-७९.
 राजकशेरुक-चि. ८-१३९, १४४; सि. १०-३७.
 राजकोशातकी [अ.] -क. ४-३.
 राजक्षवक [सु. अ.] -सू. ४-९ | २; २७-९०;
 वि. ८-१३९.
 राजमाप [अ.] -सू. २७-२५.
 राजवृक्ष [सु. अ.] - चि. ७-९६, १६१;
 क. ८-३, ४.
 राजादन [सु. अ.] -सू. २५-४९; २७-१४३;
 वि. ८-१३५, १३९; चि. ३०-९७.
 राठ [अ.] -क. १-२७.
 राढ-चि. २६-१४.
 रास्ना [सु. अ.] -सू. ३-१८, २२, २५, २८;
 ४-१३ | २६; २५-४०; चि. २-१ | २६; ३-२५०,
 २६७; ५-१०६, १४५; ८-७८, १७०; १२-७२;
 १३-११०; १४-४३; १५-८८, १६८; १७-९६, १०२,
 १०६; १८-३६, ४३, ४७, ५४, ७७, ९२, ११८,
 १२७, १७४; २३-२३१; २६-८२, ९७, १४०, १६०,
 १६३, १७०, २८३; २७-४१; २८-१११, १२२,
 १३०, १३७, १४८, १६१, १६५, १६८, १७२;
 २९-५६, ६२, ८१, १०३; ३०-५७, ५९; सि. ३-१३,
 ३९, ४८, ६१; ४-४, १५, २०, २९; ८-८, ११;
 ९-८७; ११-३४; १२-१६ | १, १६ | २, १६ | ६,
 १८ | १, १८ | २, १९ | २.
 रुधिर-सू. ४-१८ | ४६.
 रुहा [अ.] -चि. ३-२६७; १४-१२४; २३-८०.
 रोहा-चि. ३-२६७.
 रोहिणी [सु. अ.] -सू. ४-१० | ७, १८ | ४८;
 २६-८४; चि. २-४; ३-२४१, २५८; ७-१००,
 १२८; ३०-२६१; क. १-२३; सि. ११-२५.
 रोहिणी कटुका-चि. ५-११५, ११९; ७-१०२,
 १०६, १३२.
 रोहीतक [सु. अ.] - चि. ६-३५; ७-१:९;
 १३-८१, ८३, ८५, १४९; २६-९८; ३०-११६.

- रोहिण (स्थावरनिष)-वि. २३-१२.
 रोहिण (कृत्तूण) [सु. अ.]-वि. ३-२६७; १०-२१;
 १८-७३; २६-१३८; क. १-९; सि. ४-४.
 लकुच [सु. अ.]-नि. २-४; ५-६; वि. ८-१४०.
 लक्ष्मणा [सु. अ.]-सू. २७-१०१.
 लता [अ.]-सू. ३-२७; ४-१० | ८; वि. ४-७६;
 १२-६८; २९-११२; सि. ४-२१.
 लम्बा [सु. अ.]-वि. २६-१५३; क. ३-३.
 लवङ्ग [सु. अ.]-वि. २६-२१०; २८-१५३.
 लवलीफल [सु.]-सू. २७-१४५.
 लशुन [सु. अ.]-सू. २-५; ३-४; २६-८४;
 २७-१७६; वि. २-४; वि. ७-१७; ८-१४२, १५१;
 शा. ८-३४, ४७, ५६; वि. ५-९४, १७७; ७-१११;
 ९-४९, ५२, ६४; १४-९; २३-७०; २६-१५०;
 २८-१७७.
 लाङ्गल-वि. १४-९५.
 लाङ्गलक-वि. ७-१०९.
 लाङ्गलकी [सु.]-सू. २७-१०८; वि. २३-१२.
 लाङ्गलिकी [अ.]-शा. ८-३८.
 लाङ्गली [सु. अ.]-शा. ८-३४.
 लाङ्गुल-सू. २७-८.
 लामज्जक [सु.]-सू. ३-२९.
 लिक्च [सु.]-सू. ४-१० | १०.
 लोहक-सू. २७-१००.
 लोणिका [सु. अ.]-सू. २७-१०२; वि. १९-३३.
 लोणीका [अ.]-वि. १४-१२३.
 लोघ्र [सु. अ.]-सू. ३-५, १०, १२, २६, २९;
 ४-१५ | ३१, १८ | ४६; ५-२२; २५-४९;
 वि. ८-१४४, १५१; शा. ८-४४, ५०; वि. ४-४५, ६७,
 ७३, ८१, ८९, ९३, १०४; ६-२७, ३०, ३१, ३८,
 ४१; ७-९३, ९५, १२९, १३१; १४-१३९, १५९,
 १९३, १९७, २३०; १९-५३, ९०, १०९; २१-५५,
 ५७, ७६, ७७, ९७; २२-३६, ४३; २३-५७, २४६;
 २४-१५९; २५-६६, ६८, ९०, ११०, ११३;
 २६-१९१, १९५, २०९, २१७, २३३, २७०; २७-३०;
 २९-१११; ३०-७९, ९१, ९८, ११८; क. ९-३, ४,
 ८, ९, १२, १६, १८; ११-१६; १२-३५; सि. ३-४७,
 ४८, ५०; ९-८; १०-२६, ३१; १२-१९ | ३.
 लोह [सु. अ.]-सू. ३-२४; २३-१८; वि. ७-१३०;
 १७-८०.
 लोह्याल [अ.]-सू. २७-९.
 लोहितचम्प-वि. ४-१०२.
 लोहितशालि [सु.]-सू. १५-१६; २५-३८;
 वि. ७-२१; वि. २२-४२, ४३.
 लौहित्य सू. २७-१७.
 लंशा [सु. अ.]-सू. १४-४३; वि. ८-१४४; ६-५-३०;
 वि. २१-१२५; २३-८०, २१२; ३०-२५८.
 लंशाक [अ.]-सू. १४-३१.
 लंशलेखन-वि. १८-७३.
 लम्बा [सु. अ.]-सू. २-९; ३-५, १८, २०;
 ४-९ | ३, ११ | ११, ११ | १२, १३ | २५, १७ | ४२,
 १८ | ४८; २३-१५; वि. ८-१४३, १५१; शा. ८-३४,
 ३८, ६१; वि. १-१ | २५, १ | ४९, १ | ५८,
 ३ | ३, ३ | २४, ४ | ६, ४ | १४; ३-२०५, २५०,
 २६७, ३०७; ५-७०, ८०, ८६, १४४; ६-३८; ७-६८,
 १००, १०३, ११३; ८-७५; ९-४५, ६४, ६९;
 १०-२५, २७; १३-८०, १०४, १०९, १२४, १२६,
 १३४, १५९, १६३; १४-४१, ६३, १३१; १५-९९,
 १०१, १०३, १३४, १७४, १८२, १८९; १७-१४३;
 १८-५३, ११२, १६१; १९-२०, ४५, १०५, ११८;
 २२-४७; २३-७०, ८०, १८३, २१२; २६-२१, ६१,
 ८५, ९७, १३८, १५२, १५३, २०९, २२३, २२६,
 २७-३१, ३३, ३६, ४१; २८-१५४, १६८; २८-१४९
 १५२; ३०-५४, २५२, २७३, २७७; क. १-१
 ७-१६, ५४, ५८; सि. ३-१४, ४४, ६७; ४-१०, १
 ७-१८; २४; ८-१९; ९-८; १२-१६ | २, १६ |

वज्रल-सू. २५-४९,
वज्रुल [सु. अ.]—सू. ४-१८ | ४७; क. १-८;
सि. १०-२१.

वट [सु. अ.]—सू. ४-१५ | ३३; वि. ८-१४४;
वि. ३-२५८; ४-८६; १५-१२६; १८-१४७; २२-४४;
२३-४१, १९७; २६-९८; क. १-८; सि. ६-५०;
७-६१; ११-२४.

वत्सल [सु. अ.]—सू. ३-४; २३-१०; ३०-६३;
वि. ३-२०१, २०४, २१०, २४३; ४-६०, ८९;
७-१०६; ११-१६; १५-१७९, १८६; १४-१३२,
१३४; १६-४७, १०३; १९-५२, ८५; २३-२४३;
२५-९०; २७-५२, ५४; ३०-९१, ९२, २५२;
क. ३-१७; ५-१, ३, ४; ७-६१; सि. ९-८;
१०-२५, ३०.

वत्सकफल-सू. ४-१२ | १८, १३ | २५;
शा. ८-५६; वि. ७-१३२; ११-३४; १५-१२९,
१९-५१, २१-५१; सि. १२-१६ | २, १६ | ६.

वत्सकवीज-वि. ३-२१३; ७-९५, १४२, १४६;
१४-१८९, १९५, २२७; १५-१०३; सि. ३-४०.

वत्सनाभ [सु.]—वि. २३-११.

वनतिलक [अ.]—सू. २७-९५.

वनत्रपुपी-वि. ८-१३९.

वन्य [अ.]—सू. ३-८; ५-२२, ६४; वि. ३-२५८;
२१-७४; २३-७७.

वयस्था [सु. अ.]—सू. ४-१८ | ४८; वि. ८-१५१;
शा. ८-६१; वि. ९-५७; १०-२७; १७-१४०;
२६-८३.

वरक [सु. अ.]—सू. २७-१४, १८; वि. ८-१४४;
शा. ३-४ | ५.

वराङ्ग [सु. अ.]—वि. ८-१५१; वि. ३-२६७,
७-८१.

वराङ्गदला-वि. ३-२६७.

वरी [सु. अ.]—वि. १९-६२; २९-९२.

वरुका-सू. २७-१८.

वरुण-वि. ३-२६७; ५-१६५; १४-४५.

वर्धमान [सु.]—वि. १७-८०.

वर्षाभू [सु. अ.]—वि. ८-१७०; १२-२५;
२९-६१; सि. ९-८; १२-१६ | २.

वल्लीफल [सु. अ.]—वि. २०-२२.

वशिर [सु. अ.]—सू. ४-१५ | ३५.

वसुक [सु.]—सू. ४-१२ | २०, १५ | ३५.

वांशी [सु. अ.]—वि. ११-३३, ५८; १८-८९.

वाटघण्टी-सू. ४-१८ | ४९, शा. ८-२०, ५८.

वाटघायनी-सू. ४-९ | २.

वातघोष-वि. ३-२५८.

वाताम [सु. अ.]—सू. २७-१५७; वि. ११-३७;
२६-१७१; २९-६६.

वानीर-वि. ३-२५८; ४-१०२; क. १-८;
सि. १०-२१.

वाण्य-सू. २७-१२; वि. ५-१३०.

वायसी [सु. अ.]—वि. १२-६३; १८-८१.

वारुण-सू. १४-३१; शा. ८-३३.

वार्ताक [सु. अ.]—सू. २७-९७, १६२; वि.
१६-१२३; १७-१००; १८-१७२; २३-४१, २२५;
२६-१५६; ३०-२५९.

वार्ताकी [अ.]—वि. ८-१५१; वि. १५-१८३.

वार्ताकु [सु.]—वि. ८-१४३; वि. १५-१८८;
२३-५१, ६८; सि. ९-५८.

वासा [सु. अ.]—सू. ३-३; १४-३१; १५१, १५४; २०-२६; २२-३६; २३-२४६; २६-४९, वि. ३-२२२; ४-८८; ७-१२८; ८-१०५; १२-६७; १७-१४६; २३-२४३; २६-२३९.

वास्तुक [सु. अ.]—सू. २७-८८, ८९; वि. ४-४९; १३-१८१; १४-१२३, १९४; १८-८१; १९-३१; २७-२७; २९-५२.

विकङ्कत [सु. अ.]—सू. २७-१४५; वि. ८-१४३.

विकक्षा [अ.]—वि. ८-१७५.

विजया [सु. अ.]—वि. २५-४७.

विडम्ब [सु. अ.]—सू. १-८१; २-३, २३; ३-३, १०, १२; ४-११ | ११, ११ | १३, ११ | १५, १३ | २७; ५-६४; २१-२३; २३-१९; २५-४०; वि. ७-१७, २१, २२, २३, २५, २६; ८-१३६, १४२, १५१; शा. ८-३४, ४१; वि. १-१ | २५, १ | ४८, १ | ५८, १ | ७७, २ | ९, २ | १०, ३ | ३, ४ | १४; ५-६५, ८६, १०६, १४४; ६-२७, २८, ४१; ७-४८, ७७; ८४, १०३, १०५, १०६, १०९, १११, १५७, १५९, १६०, १६१, १६७; ९-३७; १२-३९, ७२; १३-८०, ११९, १२७, १४८; १४-५०, ६३, १३९, १५८; १५-८८, १४६, १५४, १५८, १६४, १८९; १६-७०, ७३, ७८, ८१, ९३, ९७, १०३, ११९, १२२; १८-५२, १२५, १८२; १९-१०५, १११; २०-३७; २१-१३७; २३-५७; २५-९०; २६-२०, १०१, १५२, १५३, १८४, २५२, २५४; २९-१५२; क. ७-३७, ४०, ४६; सि. ३-६२; ४-१४, १८; ८-९, १०; ९-१७.

वितुलक-वि. १८-१७६; २९-९४.

विदारी [सु. अ.]—सू. ३-२१; ४-१० | ९, १३ | २१; २८-१२१; वि. ८-१३९; वि. १-१ | ६४, १ | ७६, २ | ४, ४ | ६, ४ | १६; २-१ | २५, १ | २८, १ | ३५, २ | ६, २ | २२, ३ | ८, ३ | १४, ४ | २५, ४ | २८; ३-२५८; ४-९५; ५-१२३; ८-७५, ७९, ९०, १७६; ११-३८, ५०, ५६, ५७, ६३, ६६, ७०, ८०; १६-५८; १८-४०, ८४, ९५,

१५१, १५४; २०-२६; २२-३६; २३-२४६; २६-४९, ५०, ५१, ७३, १६१, १६९, २८८; २८-१२५, १६०; २९-७९, ७३, ९८; क. ७-२२; सि. ३-५०, ५४; १०-२८; १२-१६ | ५, १६ | १०, १८ | ३, १९ | १, १९ | २, १९ | ३.

विदारिगन्धा [अ.]—सू. २५-४०, ४९; वि. ४-१३६; वि. १-१ | ४२; ८-९०; क. ११-९.

विदारीगन्धा [सु. अ.]—सू. ४-१७ | ४४; वि. ३-१८३; २६-२६३.

विदुल [सु. अ.]—सू. ४-१३ | २३; वि. ८-१३५; क. १-१४; सि. १०-३४.

विशाला [सु. अ.]—वि. ६-४०, ४१; ७-६५, ६८, १०८, १४५; १२-५३; १३-१२८; १४-१४८; १६-६०; १८-१२१; २३-५५, २४४.

विश्व [सु. अ.]—सू. २-२९; वि. ३-२५०; २७-५२.

विश्वदेवा [सु.]—वि. ८-१३९.

विश्वमेवज [सु. अ.]—सू. २७-१६६, २९६; वि. १-१ | २५, १ | ७७; २-२ | २१; ३-१९८, ३०२; ५-१५६; १३-१४८; १५-१०३; १८-१२०; १९-१०४, ११४; २८-१६८; क. ७-५६.

विष [सु. अ.]—१-३ | २४.

विषाणिका [सु. अ.]—सू. १-७८; वि. १३-१६४; २०-२७३.

विष्वक्सेनकांता-सू. ४-१८ | ४९; शा. ८-२०, ५८.

वीरण [अ.]—सू. ४-१२ | १७; शा. ८-२९, ५७.

वीरा [अ.]—वि. ८-१३९; वि. २-१ | २५, १ | ३४; ५-११९; ८-७९, १०१; ९-४५; ११-३५, ६२; १४-१२३, २३६; १५-१२७, १५६; २१-७८, ७९, ९०, ९१; २५-४७; २६-९३; २८-१६१; २९-६५, ११४, १३१; ३०-५०; क. ४-१३; सि. ३-४९.

वृक्षधूमक-सू. २७-१०१.

वृक्षक [सु. अ.]-वि. ८-१३५; वि. ६-३०;
७-९७; क. १-२२; ५-४.

वृक्षगृहा-सू. ४-१४ | ३०.

वृक्षादनी [सु. अ.]-सू. ४-१५ | ३५.

वृक्षाम्ल [सु. अ.]-सू. ४-१० | १०; २३-३८;
२७-१५१; वि. ८-१४०; वि. ३-१८७; ११-८५,
८८; १२-६०; १३-१३१; १४-२००; १५-१०८,
११४; १९-२८; २२-३४; २४-१२१, १५१, १७७;
२६-२१९; २८-१३२.

वृद्धगृहा-सू. ४-१२ | १९.

वृद्धिकाली [सु. अ.]-वि. ८-१५१; वि. ९-४७;
१३-१०९; १६-१२०.

वृक्षीर [सु. अ.]-सू. ४-१३ | २२, १३ | २६,
१६ | ३६; वि. ८-१३५, १३६, १३९; वि. ३-२६७;
१८-१२६, २६-४६, ७०; २९-७६; क. ४-१६;
सि. ३-६५; १०-३२.

वृष [सु. अ.]-सू. २७-९६; वि. ८-१४३;
वि. १-१ | ६४; ३-२४७, ३०३; ५-१२६; ७-१५३,
१५८; १२-७२; १४-४४, १५३, २१४; १८-९९;
२६-२८५; २८-१७०; ३०-८३; सि. ३-४८, ६५;
९-८.

वृषक [सु. अ.]-सू. २३-१५; वि. ७-८५; २६-५२,
६०, ६९; २९-१५२; ३०-५४, ५६, ५७; सि. ४-४.

वृषकर्णिका [अ.]-वि. २१-८४.

वृषपर्णिका [अ.]-सू. ४-११ | १५.

वेणी-क. २-३.

वेणु [सु. अ.]-वि. १४-४५; ३०-८२; सि. ३-७.

वेणुयव-सू. २७-२०; वि. ३०-२५७.

वेतस-[सु. अ.]-३-२७; वि. ८-१४३; शा. ८-२९;
वि. ३-२५८; ४-३८, ७५; ५-६९; ६-३२; ७-१५२;

८-१२९; १२-६८; २१-७५, ८५; २२-३५, ४४;
२४-४६, ८७; २९-११०, १३३.

वेतसशाक-सू. २७-१०९.

वेण [सु. अ.]-सू. ३-२६; २७-४, ९५;
वि. ८-१४३; इ. ५-३०; वि. ४-३८; २७-२७;
२९-५२; ३०-२५८, २५९.

व्याघ्र-वि. २६-१८४.

व्याघ्री [अ.]-सू. ५-६५; वि. ३-२११, २३६;
५-१०६; ८-११२.

व्योष [सु. अ.]-सू. १३-८४, ९३; २३-१९;
वि. ५-६९, ७१, १४२; ७-६१, ६५, ७७; ९-६५;
१२-२१, २७, २९, ५०; १३-१०३, १०५, १२२,
१३६, १३७, १४८, १५०; १४-११४; १५-८८, ९६,
१०५, ११२, १३२; १६-७८, ९३, ९७, १०८, ११९;
१७-१००, १०४; १८-५२, ५३, ९२, १२३, १२५,
१६५, १७१, १७४, १७८, १८२; १९-४४, ११२;
२०-२५, ३५; २२-४७; २३-६९, ७१, ७८, १०२,
१९७, २१०; २४-१७२; २६-५५, ६०, १५०, १५२,
१५६, १८६, १९४, १९८, २४२, २८७; २९-१५२;
३०-२५९, २७४; क. ७-४६, ५३, ६५; सि. ८-२३,
२६, २७, २८, ३१, ३२, ३३; ९-२०.

व्रीहि [अ.]-सू. २७-१५, ३३९; शा. ८-१८.

शकुनाहत [अ.]-सू. २७-८.

शकुलादनी [अ.]-सू. ४-९ | ४; २७-९६.

शक-क. ५-४.

शङ्खपुष्पी [सु. अ.]-वि. १-१ | ४८, १ | ५८,
३ | २४, ३ | ३०, ३ | ३१; १०-२५; १८-५७;
२९-६२.

शङ्खिनी [सु. अ.]-सू. १-८१; ४-९ | ४;
२५-४९; ३०-६४; वि. ८-१२६; वि. १३-१२४,
१६७; २३-२०९; २६-१३; क. १-६; १०-१५;
११-१, ३, ५, ९, १०, १२, १९; सि. १०-२६.

शटी [सु. अ.]-सू. ४-१४ | ३०, १६ | ३७;
२७-८८; वि. १-१ | ६३; ३-२११, २१२, २१३,
२२५, २६७; ५-७०, ७९, ८६, १४४; ६-४१;
८-१०१, १०८, १११; ११-३५; १२-६०; १३-१२६;
१४-७२, ९२, १२४, १३१; १५-८८, १०९, १६५,
१६८; १७-१०२, १२३, १२९, १४२; १८-३९, ४९,
५०, ५१, ५३, ५७, ७७, ९२, १०६, ११४, ११५,
११८, १२३, १२५, १५९, १७६; १९-२७, ३२, ४५;
२६-६०, ८४, ८५, ८६, १७०; २८-१२२, १५०,
१६९; वि. ४-१०, १४, २१; ७-१८, १९;
१२-१९ | ३.

शण [सु. अ.]-सू. २७-९९, १०४; वि. ८-१४४;
वि. १५-८३; १७-१२६

शणपुष्पी [सु. अ.]-सू. १-७८, ७९; ४-१३ | २३;
वि. ८-१३५; क. १-१४.

शतकुसुमा-वि. १२-१६ | १, १६ | २, १८ | ३.

शतपत्र [अ.]-सू. ४-१५ | ३४; २५-४९;
वि. ६-१७; वि. ३-२५८; सि. १०-२१.

शतपर्व-वि. ३-२५८.

शानपुष्पा [अ.]-सू. ४-१३ | २५, १३ | २६;
१८-३६; वि. ८-१३९; शा. ८-८१; वि. ३-२५०,
२६७; ७-८४, १६५; ८-७५, ७७; १९-६२;
२६-२२६; २८-१५९; २९-९२; क. १-२३; सि. ९-८;
१२-१६ | ६, १८ | १, १८ | ९, १८ | ११, १८ | १३.

शतवीर्य [अ.]-सू. ४-१८ | ४९; शा. ८-२०,
५८; वि. ८-१७५.

शतावरी [सु. अ.]-सू. ५-६५; २५-४९;
२७-१०७; वि. ८-१३१, १३९; वि. १-१ | ४४,
१ | ५८, २ | ४, ४ | ६, ४ | १५; २-१ | २५,
१ | २८, १-३४, २ | ६, २ | १४, २ | १८,
३ | १८, ४ | २८; ३-२५०, २५८; ४-८५, ९५;
५-१२३; ७-१४५; ८-७९, १०५; ११-३६, ४६,
६६; १८-४०; १९-५०, ७८, ९८; २३-२४४;

२५-४७, ७५; २६-४६, ५०, ७०, ८८, १६९;
२८-११०, १६०; २९-५२, ५८; ६१, ७२, ७३, ७७,
८१; ३०-५३, ६४, ६५; क. २-१२; ४-१३;
सि. ३-४९; ४-५, ९; ९-८; १०-२८, ३८;
१२-१६ | ४, १९ | १, १९ | २.

शताहक [सु.]-सू. २७-१४५.

शताह्वा [सु. अ.]-सू. ३-१८, २०; वि. ३-२४६;
१३-१०४, १२६; १४-४१, १३१; १९-११८;
२६-१३५; २२३; २८-१६९; २९-१४०, १४२, १४९,
१५०; ३०-७२, १०६; वि. ३-१४, ४०, ४४, ४६,
६२, ६७; ४-८, ९, १३, २१; १०-१५; ११-२३,
३५; १२-१८ | १६.

शनाह्वे-सू. ३-२१, २५.

शमी [सु. अ.]-सू. २५-४९; २७-१६०; वि. ८-१४४;
वि. १-२ | ३; क. १-८; सि. १०-३०.

शम्पाक- [सु.]-वि. ७-१४४; १०-१९, २७;
१८-१५१; २३-५७; २६-२३; २८-१७३; क. ८-३,
१५; सि. ३-६१; ४-१९; ९-५८.

शम्बरी-क. १२-४.

शम्याक [अ.]-वि. ११-२६.

शरपञ्चमूल-वि. १८-१००; २२-२७.

शरमूल [सु. अ.]-वि. ८-१३९; वि. १-१ | ४४,
४ | १६; ३-२५८; सि. ९-८.

शलाह [सु. अ.]-शा. ८-२४; सि. ८-३६.

शल्लकी [सु. अ.]-सू. ४-१५ | ३२; ५-२३;
वि. ८-१४४, १५१; वि. ३-२६७; १७-८०; २८-१६१;
३०-१०८; क. १-८.

शाक [अ.]-सू. २७-६, ८८, ९७, ९८; १०२,
१०७, १२२, १२४, २५९, २६८, ३१६, ३१८;
वि. ४-३८.

शास्त्रल [अ.]—वि. १६-१२९; २१-७५; २९-१३१.

शारद (पष्टिक) [अ.]—सू. २७-१४.

शास्त्रेष्टा [सु. अ.]—सू. २७-९६; वि. ८-१३५;
१च. १८-७१; ३०-२६०, २६६, २७७, २८०;
सि. ३-५६.

शाल [सु. अ.]—सू. ४-१८ | ४७; २५-४९;
वि. ८-१४४; सि. ३-२५८; ६-२७; ११-३१;
सि. ११-२४.

शालकल्याणी—सू. २७-१०२.

शालपर्णी [सु. अ.]—सू. २-११, २०;
४-१६ | ३८; वि. ८-१३९; सि. ३-२६७; १९-२६,
५०; सि. १०-१९.

शालि [सु. अ.]—सू. ४-१२ | १७; ५-५, १२;
६-२८, ३८, ४३; ७-११; १५-७, १६; २१-३१,
५२; २७-४, ९, १२; वि. ८-१३९; शा. ३-४ | ५;
८-९, १९, २४, २९, ५६, ५७; सि. १-१ | ४४,
१ | ७६, १ | ७७, २ | ४, २ | ११, २ | १३;
२-२ | ७, ३ | ८, ३ | १६, ४ | २३; ४-३६, ८७,
१०३; ५-११०, १३३; ६-२०; ७-६३; ८-६९;
११-३२; १४-१९१, १९३, २०५, २११; १६-४१;
१७-१००, ११३; १८-७६, ९७; १९-३५, ३६, ३९;
२०-२७, ३३, ३५; २१-११०, ११४; २२-२८;
२३-२२४; २४-१३२, १३८; २५-११२; २६-५०,
१४८; २७-४०; २८-१८५; २९-५०; ३०-१५२,
२५७; क. १-२४; सि. ३-५१; ८-४१; १२-१६.

शालिपर्णी [सु. अ.]—सि. १२-१६ | २, १६ | ५,
१६ | ११.

शालूक [अ.]—सू. ५-१०; २७-११६; शा. ८-२४;
वि. ३-२५८; १४-९; २१-७९; २६-७६, १६८;
३०-८९.

शालेय—च. ४-७५.

शाल्मलि—सू. २७-९९, १०४; वि. ८-१३५;
सि. ४ | ३९, ७०; १४-२२७; १९-६४.

शाल्मलि—वि. ८-१३५.

शाल्मली [सु. अ.]—सू. ४-१५ | ३२; सि. ३-२५८;
१४-२०२, २२५, २३६; १५-११३; २५-६३;
२७-२९; ३०-७५, ९१.

शावरक [सु.]—वि. १५-१५८; २६-२३३.

शिशपा—सू. २५-४९; वि. ८-१४४; शा. ८-३८;
वि. १-२ | १२, ३ | ३; क. १-८.

शिशु [सु. अ.]—सू. २-३, २३; ३-८; ४-१३ | २७;
१४-३१; २३-१९; २७-१७०; सि. २-४; वि. ७-१७;
८-१३५; सि. ३-२६७; ७-१०६, १०९, ११३;
१२-६७, ७२; १३-१५८; १४-४५; १७-९८;
२६-२२६; २४०; २७-५२; २८-१७६; सि. ८-९;
११-२४.

शिशुक [सु. अ.]—सू. १३-१०; सि. ८-१४२;
वि. १३-१०८; २३-१८३; २६-६६; १८६; २७-५२;
२८-१६८.

शितिवारक [अ.]—वि. २६-५६, ६०.

शिविर—सू. २७-१८.

शिरिष [सु. अ.]—सू. २-५; ३-४, २८, ३१;
४-११ | १६, १८ | ४७; २५-४०, ४९; सि. ८-१४४,
१५१; शा. ८-३२; सि. ६-३१; ७-९६; १५-५३;
१७-११४; २१-८५, ९०, ९१; २३-४९, ५२, ५३,
५५, ७१, ७८, ९९, १९३, २००, २०२, २०४,
२०८, २०९, २१२, २१८, २४२; २६-१८४; २८-१७२.

शिवा[अ.]—सू. ४-१८ | ४९; शा. ८-२०, ५८.

शीतक—वि. ८-१४०.

शीतकुम्भिका—वि. ३-२५८.

शीतपाकी [अ.]—वि. ८-१३९; सि. ३-२५८.

शीतपाक्य—सि. ३-५३.

शीतगल्ली—वि. ३-२६७.

शुक्लवर्ण—सू. ५-०३.

शुकि [अ.]-सू. २५-४९.

शुक्लसुरस-वि. २३-१०१.

शुक्ला [अ.]-वि. ८-१३९.

शुण्ठक-वि. १२-४४.

शुण्ठी [सु. अ.]-वि. ५-७४; ११-८५, ८९, ९२; १२-२५, ७०; १३-८०, १०४, १६३; १८-११२, ११४; २१-५८; २३-२०९; २६-२२, २२२, २२३, २२५; २७-४५; ३०-९२, २६७; सि. ९-१९.

शुषा-सू. २७-८८.

शूकघान्य [अ.]-वि. १-२ | ३.

शूकरी [अ.]-वि. ९-४६.

शूर्पपर्णी [अ.]-वि. १-१ | ४३; २-२ | ५.

शृङ्गवेर [सु. अ.]-सू. ४-९ | ६, १७ | ४२, १७ | ४५; १३-८६; २५-३८; वि. ७-१७, १९; ८-१३५, १४२, १५१; शा. ८-४८; वि. ३-२६७; ८-१२६; १३-१५३; १४-८९, १०४; १८-५०, ६३; १९-२२, ८०; २४-१२१; २६-९४, ९७, १४४; २८-१४७; २९-९९; क. १-२२; ७-१६.

शृङ्गवेरिका-सू. २७-१७१.

शृङ्गाटक [सु. अ.]-सू. २५-४९; शा. ८-२४; वि. २-२ | १४, २ | २२; ३-२५८; ४-७१; ८-१००; ११-३७, ५८; १४-१०; १८-८७, १०४; २६-५१, १६९; २९-६५, ९९; सि. १०-२८; १२-१९ | १.

शृङ्गाटिका [सु.]-वि. ८-१३५, १३९.

शृङ्गी [सु. अ.]-सू. ४-१६ | ३६; वि. १-१ | ६३; ३-२११, २१३; १४-१०; १८-५४, ११२; २३-१३; २६-१६८.

शेख [सु. अ.]-वि. २३-१८७, २०१, २०४.

शैखरिफ वि. ७-१९.

शैलेय [सु. अ.]-सू. ३-२८; ५-२२; वि. ३-२६७; १२-६५; २३-५४; २८-१५२.

शैलेयक [सु.]-क. १-२३.

शैवल [सु. अ.]-वि. ४-१०३; २२-३७; २६-९४.

शैवाल-[सु. अ.]-सू. ३-२६; वि. ३-२५८; २१-८४, ९०; सि. १०-२१.

शोभाञ्जन [सु. अ.]-सू. ४-१३ | २२; १४-३२; वि. १७-९९; २६-६७.

शोभाञ्जनक [अ.]-वि. ८-१५१; वि. ३-२६७; ७-१२४; २७-५६.

श्यामा [सु. अ.]-सू. १-७७; २५-४९; ३०-६३; वि. ७-२६; ८-१३६; वि. ७-१२४; १२-२५; १४-५४, ५५; १५-२३१; १६-६६; २६-१२, १४; २९-८१; ३०-६२; क. १-६; ५-५; ७-१, ४, ८, २३, २९, ३६, ५१, ६९, ६७, ७२, ८०; ८-१४; १०-१२, १८; ११-९, १२; १२-१४, ३२; सि. ४-१४, ३७, ३९; ६-८३; १०-२५.

श्यामाक [सु.]-सू. २-२६; २१-२५; २७-१६, १८; शा. ३-४ | ५; वि. ४-३६; १३-१९२; १४-२०५; १८-९६; २७-२६; ३०-२५७.

श्योनाक [सु.]-सू. २-११; ४-१३ | २६, १६ | ३८, १७ | ४२; वि. १-१ | ४३, १ | ६२; २७-५६; सि. १०-१९.

श्योनाक [अ.]-वि. २६-१३५.

श्रावणी [सु. अ.]-वि. ८-१३९; वि. १-४ | ६; ३-२५८; ११-४६, ६२; १८-१०१; ३०-५०; क. ४-१३; ७-१८; सि. ३-५३; ४-९.

श्रावणीद्वय-वि. २-२ | २१.

श्रीनिवासक-वि. २८-१५३.

श्रीपर्णी [सु. अ.]-वि. १-४ | १६; ३-२५८; ८-१२९; क. ७-३०; सि. १०-३५.

श्रीवेष्टक [सु. अ.]-सू. ४-१५ | ३२; ५-२३;
वि. १२-६६; २३-५५; २७-२९, ४३; क. १-२३.

श्रेयसी [सु. अ.]-सू. २७-१०७; वि. १०-२०;
१८-५३, १६१; २६-९३; २८-१४०; सि. ९-८.

श्रयाह [अ.]-सू. ३-३; वि. ३०-१०७.

श्रेष्ठमातक [सु. अ.]-सू. ४-११ | १६; २७-१५९;
वि. ३०-२७५.

श्वदंष्ट्रा [सु. अ.]-सू. २-१२, २२; ४-११ | १५,
१३ | २६, १५ | ३५; २३-१२, १५; वि. ८-१३९;
वि. १-१ | ४२, १ | ६२; २-२ | ५, ३ | ८,
३ | १४, ४ | २८; ३-१८२, २२४, २४१; ६-२८;
८-१०६; ११-४४; १४-११०, ११३; १५-१७३;
१८-८९; १९-२१, २६, ५०; २६-५०, ५५, ६०,
६२, ६३, ७४, १६९; २७-५६; २८-१४६, १६८;
२९-७६; ३०-५७; सि. ८-१३.

श्वसन-क. १-२७.

श्वेतकश्यप [अ.]-वि. ७-९४, १०५, १०६.

श्वेतनामा-सू. १-७७.

श्वेतभण्डा-वि. २३-२४५.

श्वेतभण्डी-वि. २३-२१०.

श्वेतमरिच [अ.]-वि. २६-२४५, २४६.

श्वेतवचा [अ.]-सि. ३-६२.

श्वेतशालि-वि. २१-८०, ११३.

श्वेता [सु. अ.]-सू. १-७९; ४-१३ | २७,
१८ | ५०; वि. ८-१५१; सि. ३-२६७; २३-७०,
१००, २१३.

श्वेता गिरिकर्णिका-वि. २३-१९५.

श्वेता मृत्तिका-वि. २४-१८०.

पद्मग्रन्था [सु. अ.]-वि. ३-२०४; ७-११३,
१४५; १५-१२५, १७९.

षष्टिक [सु. अ.]-सू. ४-१२ | १७, १६ | ४०;
५-५, १२; १५-७; २७-४, १३, १४; शा. ८-२४,
२९, ५६, ५७; वि. १-१ | ७५, १ | ७७, २ | ४,
२ | ११, २ | १३, ३ | ३७, ४ | २३; २-१ | ४७,
२ | ३, २ | ७, २ | ११, २ | १६, २ | २०, २ | २३,
२ | २५, २ | २७, २ | २८, ३ | ८, ३ | १३,
३ | १४, ४ | २३; ४-३६; ६-२१; १३-१६५;
१४-२११; १७-१००; १८-७६, ९७; २१-११३;
२३-२२४; २४-१३८; २५-११२; २९-५०; ३०-१५२,
२५७; सि. १२-१६.

संघर्षक-वि. ३-२५८.

संघर्षा-वि. ८-१३९.

सङ्कोच-वि. २-३ | २८.

सङ्कोच (विषभेद)-वि. २३-१३.

सतीन [सु. अ.]-वि. २४-१३९; सि. ३-८.

सदापुष्पा [सु. अ.]-सू. ४-१३ | २३; वि. ८-१३५.

सदापुष्पी [अ.]-क. १-१४.

सप्तच्छत्र [सु. अ.]-वि. ६-३५; ७-६५, ११२,
१२९, १४४; २६-५७; सि. ३-६१; ८-८.

सप्तपर्ण [सु. अ.]-सू. ३-४; ४-११ | १३,
१७-४३; २३-१०; २५-४९; वि. ८-१३५, १४३,
१४४, १५१; वि. ६-२९; ७-९१, ९७, १५४, १५८;
१०-१८; १५-१२५, १३४, १७९; १७-११४; २१-८८;
सि. ४-२०.

सप्तला [सु. अ.]-सू. २-९; ३०-६४; वि. ८-१३६;
क. १-६; ७-६५; १०-१५; ११-१, ३, ५, ९, १२,
१५, १९; सि. १०-२६.

समझा [सु. अ.]-सू. ४-९ | ५, १५-३१;
वि. ८-१४४; वि. ४-७६, ८९, ९९; ११-६६;
१४-१८९, १९३, २२०, २२७, २३०, २३७; १७-१०८;
१९-२१, ५३, ७५, ११०; २१-८७; २५-६७, ८८;
२६-१६७, १९०, २०९; २७-२९; ३०-९१, १२१;
सि. ८-३८, ३९.

सरल [अ.]—वि. ७-२३; ८-१५१; वि. ३-२६७; १५-८२; १७-१०६; २३-२३१; २७-३१, ४२, ४३, ५६; २८-१५०; क. १-२३; ७-१५, ५८; सि. ७-२६.

सरला [सु.]—वि. १३-१५५, १५९; ३०-१२१.

सर्ज [सु. अ.]—सू. ३-५; वि. ८-१४४; वि. ३-२५८; ६-३१; २३-१००; २५-९१; २९-११४; ३०-१२२.

सर्जरस [सु. अ.]—सू. ३-१०; ५-२२; वि. ७-१२०, १२७; १४-५१, २२०; १७-७२, १४५; २१-७७; सि. ७-५७; ८-३६.

सर्पच्छद्राक्त—सू. २७-१२३.

सर्पा—वि. १-४ | ७.

सर्वानुभूति—क. ७-१.

सर्षप [सु. अ.]—सू. २-३; ३-६, ८; ४-११ | १४, १३ | २५, १३ | २७; ८-२८; १३-१०; १४-३१; १८-७ | १; २५-३९; २६-८४; २७-१२२; सि. २-४; वि. ७-१७, २६; ८-९, ११, १३५, १४२, १५१; भा. ८-३२, ३४, ४७, ६१; वि. ३-३०८; ५-१४१; ६-२०; ७-१०३, १०६, ११०, १११, ११५, ११९, १२६; ८-१६६; ९-६५, ८०; १२-९८; १४-१०; १५-७४; १८-११०; २०-३४; २३-७०, ९८; २६-१३, १४, १५४; २७-४३, ५१, ५२, ५३; २८-१८८; २९-१३६, १४८; ३०-२५२, २६८; क. १-१४; ५-१०; १३-११; सि. ३-५७; ७-२३, २६, ६३; ८-८, १२; ९-५१, ५८; १०-१५.

सहकार [सु.] क. ७-३१.

सहचर [सु. अ.]—वि. ७-२१; भा. ८-१९; वि. २६-२६४; २८-१७२; २९-१३९; सि. ४-५, १९; १२-१६ | ३, १६ | ६, १९ | २, १९ | ३.

सहदेया [सु.] वि. ८-१३९.

सहचवीर्षा [सु.]—सू. ४-१८ | ४९; भा. ८-२०, ५८; वि. ४-१०२; सि. १२-१५ | ३.

सहा [सु.]—वि. २८-१६२.

सहाचर [सु. अ.]—वि. २८-१४४, १६१; ३०-५३; सि. ९-५८.

सातला [सु. अ.]—वि. १३-१२८, १३४, १६४; २८-८४; क. ७-५७, ५९; १०-१२.

सारिवा [सु. अ.]—सू. ३-२४; ४-१० | ८, १० | ९, १२ | १८, १६ | ३९, १७ | ४१; ५-६४; भा. ८-५६; वि. ३-२०१, २१९, २५८; ४-७६, ८१, १०१; ७-१२८; १५-१०६, १२५; १८-१७७; १९-५०; २१-५४, ७६; २३-२०१, २०२, २४३; २८-१५८; २९-७६, ९४, १२३, १४६; ३०-२६३, २७५; सि. ३-४८, ५३; १०-२१, ४३; १२-१६ | ३, १९ | ३.

सारिवाख्य—सू. २७-९.

सारिवाहय [सु. अ.]—वि. १४-१६०.

सारिवायुग—वि. २६-१६९.

सारिखे [अ.]—वि. ७-१४५; ९-३५; १०-२१.

साल [सु.]—क. १-८.

सावरका [सु.]—वि. २३-५५.

सितगिरि—वि. २३-९५.

सितमरिच [अ.]—वि. २३-१९३.

सिता—सू. ३-२७, ४-१० | ८.

सिद्धार्थ [सु. अ.]—वि. १५-१३५.

सिद्धार्थक [सु. अ.]—वि. ७-९१; ९-६९; सि. ३-६७.

सिन्धुवार [सु. अ.]—सू. ३-२८; ४-११ | १६; वि. २३-५६, १९५.

सिन्धुवारिका [सु. अ.]—वि. २३-७९, २००; ३०-२७१.

सिध्वितिकाफल—सू. २७-१४२.

सुगन्धक [सु.] सू. २७-९; वि. ४-५.

सुतश्रेणी—क. १२-८.

सुधा [सु. अ.]-सू. १-७०; ३०-६४; वि. ५-१०७, १५३, १७४; ७-८७; १३-१५०; १४-५३, ५७; १५-१८३; २१-१२६; २५-५३; २६-१३, १८.

सुनिषण्णक [सु. अ.]-सू. २७-८८; वि. १४-२३९; १८-८१; २३-२२५; २७-३७; २९-५२.

सुमनस् [अ.]-सू. ३-४, १४; वि. ७-९४; २६-२४१, २५७.

सुमना [सु.]-वि. ८-१३५, १४३.

सुमुख [सु. अ.]-सू. २६-८४; २७-१७३; वि. २-४; वि. ७-१७, २१; ८-१४२, १५१; वि. ३-२६५; क. १-३५.

सुरदारु [सु. अ.]-सू. ३-१८, २४, २८; ४-१२ | १८, १३ | १५, ५-६५; शा. ८-४४, ५६; वि. ७-७३, १०९; ४७, २३५; १८-१७४; २३-५५, ७८; २६-१०१, १२५-१३१. १०-१५; ११-२५.

सुरभी [सु. अ.]-सू. ५-६५; वि. २३-२४३.

सुरस [सु. अ.]-सू. ३-८; २७-१६९; वि. २-४; वि. ७-१७, २१; ८-१४२, १५१; शा. ८-३२; वि. ३-२६७; ५-७०; ७-११२; ८-१०१; १७-१२३; १८-७१, १२३, १७१; २३-५३, ५४, ६९, ७९, १९०, २१२, २१५, २४३; २६-१५३, २६४, २६९; २७-५४, ५६; २८-१५१; क. १-२५.

सुरसा [सु. अ.]-सू. २-४; ४-१६ | ३७; १४-३२; २६-८४; वि. २३-५२; २७-५२.

सुरास-सू. ३-३; वि. ६-२८; १४-१६०; १८-११२; २६-६४, ८५; २७-३७; २८-११३; वि. ३-६१; ११-२५.

सुरादा [सु. अ.]-वि. ६-२६.

सुवर्चला [सु. अ.]-सू. २७-९९; वि. ७-६१.

सुवर्णक्षीरी [सु.]-वि. ७-२१.

सुवहा [सु.]-सू. ४-९ | ४, ११ | १६; वि. ७-२१; क. ७-४.

सुषवी [सु. अ.]-वि. ८-१३५, १४३; वि. १५-८३; क. १-२२.

सूक्ष्मैला [सु. अ.]-सू. ४-११ | १६; ५-६४, ७७; शा. ८-४१; वि. १-१ | ४९; २-२ | २५; १७-१२५; २६-१७०.

सूर्यपर्णी-वि. १९-५०; २८-१५१.

सूर्यकान्ता-वि. १-४ | ७.

सेव्य [अ.]-वि. ६-५०; ७-४६, १२८, १३२; १४-१६४; १८-७३; २०-३२; २३-१००; २४-१५९; वि. ३-५३.

सैरेय [सु.]-सू. १४-३२.

सोम [सु.]-वि. १-४ | ७.

सोमराजी [सु. अ.]-सू. २-२४; वि. २३-८०; २६-२७२.

सोमवल्क [सु. अ.]-सू. ४-१५ | ३३; वि. ८-१३५; १४३, १४४; वि. ६-३८; २३-२२०; क. १-८, २६; वि. १०-४३.

सोमवल्ली [सु.]-वि. ८-१३९.

सौगन्धिक [सु. अ.]-सू. ४-१५ | ३४; १५-१२; वि. ६-१७; वि. ३-२५८.

सौगन्ध्यायनी-वि. ८-१३५; क. ४-१६.

सौवर्णी त्वक्-वि. ७-७७.

स्थलजङ्घीतक-सू. १-८१.

स्थिरा [सु. अ.]-सू. ४-१० | ७, १८ | ५०; ५-६४; २३-१९; वि. १-१ | ५८, १ | ७७, ४ | ६; ३-२१९, २२४, २४२, २४७; ४-४६; ८-११४, १३३, १७०; ९-४२, ४७; ११-४४; १४-२३६; १८-१०९; २६-२३, ६९, ७४, ८७, ९५, १६०, १७०; २८-११५; २९-७६, ८१, ९२; ३०-१०; वि. ४-१४; ७-१३, २८; ८-११, ४०; १०-२०, २५.

स्मिथरादिपञ्चमूल-वि. ३-४८; १२-१६ | १.
 स्मिथरादिपञ्चमूली [म. अ.]-वि. १-८.
 स्थौण्य-वि. २३-५४; २८-१५४.
 स्थौण्यक [म. अ.]-वि. ३-२६७; क. १-१३.
 स्तुह [म. अ.]-सू. २५-४०; वि. १३-१४०,
 १४१. १६७; २३-२४१; २६-२४; क. १०-१६, १८०.
 स्तुगुह-क. १०-८.
 स्तुही [म. अ.]-सू. १-११४, ११५; वि. २३-२०९.
 स्तृणा [म. अ.]-वि. १२-६६; २३-५४, ७७;
 २८-१६२.
 स्फूर्जक [म. अ.]-वि. ८-१४४.
 स्यन्दन [म. अ.]-सू. २५-४९; वि. ८-१४४;
 वि. ३-२५८.
 स्योनाक [म. अ.]-वि. ३-२६७; १३-१७०;
 १५-१३४; १७-८०; २८-१७३.
 स्वगुह [म. अ.]-वि. ११-४५; १८-३९; २६-८७;
 वि. ४-१०.
 स्वययुक्ता [म. अ.]-वि. १-१ | ५८; २-३ | १५;
 ९-४३; १८-५७.
 स्वर्णक्षीरिणी-सू. ४-९ | ४; क. ७-१६, ५८, ६०.
 स्वर्णक्षीरी [म. अ.]-वि. १३-१२६, १६४; १६-६६;
 २३-२०३; २७-३६.
 स्वर्णयूयिका-वि. १०-३१.
 स्वातुफण्टक [म. अ.]-वि. ८-१३५; क. १-२२.
 संसपदी [म. अ.]-वि. २३-२२०, २९-९२.
 संरावादी [म. अ.]-सू. ४-१० | ९; वि. ८-१३९.
 एपुषा [म. अ.]-सू. २३-२०; वि. ५-७१, ७९;
 १३-१०५, १५, १३३; १४-४३, ६३, ६९, ७१,
 ७२; १९-२७; २४-१२१; २६-६९; वि. ३-४०;
 १२-१६ | २, १८ | ९, १८ | १२.

हयगन्धा [म. अ.]-वि. २८-१७३.
 हयमारक [म. अ.]-सू. ३-१४.
 हरिचन्दन [म. अ.]-शा. ८-९.
 हरिद्रा [म. अ.]-सू. ४-९ | ३, ११ | १३,
 ११ | १६; वि. ४-३४; वि. ८-१३५, १४३, १५१;
 शा. ८-३२, ४४; वि. १-१ | ४९, १ | ७७; ६-२६,
 ३८; १४-५२, ५४; १६-५३, ९८; १७-७७; २३-६९;
 २६-१८४; २९-८६, १४२; क. १-१९; वि. १०-२३.
 हरिद्रे [म. अ.]-सू. २-५; ३-३, ८, १४, २५;
 २३-१२, १९; वि. ६-२७; ७-१०८, १४५, १५३;
 १३-१५९; १५-१८२; १६-४७, ९९, ११९; २३-१९१,
 १९८, २१६, २३१; २५-८५; २७-३१.
 हरीतकी [म. अ.]-सू. ११४१३-१२; २५-४०;
 वि. ८-१३६; वि. १-१ | २', १ | २९, १ | ३४,
 १ | ३६, १ | ३७, १ | ४', १ | ४६, १ | ७५,
 १ | ७६, १ | ७७; ३-३०; ९-१५८; १६-२७;
 १२-२१, २२; १३-१५२; १४-६७, ११९, १३८,
 १४८; १५-१४२; १६-६८; १८-५८, ११५; २६-२२,
 ८३, २३३; २७-२८, ३०, ३२; क. १-१६; ११-११;
 १२-१५, २७.
 हरेणु [म. अ.]-सू. ३-५, ६५; २७-२८;
 वि. ४-५; वि. ८-१३५; वि. १५-१६५; २१-७७,
 ८०; २३-१०२, २२६; २५-६३; २८-१५१, १६०;
 वि. ४-१४.
 हरेणुक [म. अ.]-शा. ८-५६; वि. २३-७७.
 हरेणुका [म. अ.]-सू. ५-२०; वि. ८-१५१;
 वि. ३-२६७; ४-४७; २३-७७, १९७; २९-१५०;
 क. १-२३.
 हन्तिदन्ती-[म. अ.]-सू. १-७७.
 हस्तिपर्विनी-सू. १-८४.
 हस्तिपर्वी-सू. १-८२.

हस्तिपिप्पली [सु. अ.]-चि. १३-१०८, १४८, १५८; १४-७२, ८९, १०४, ११०; १५-८२, ११३; १८-५७, ११९; १९-२७, १०६; क. १-२२; ७-४०, ५१, ६१.

हस्तिदयामाक-सू. २७-१७.

हायन [अ.]-सू. २७-१२.

हायनक [सु.]-नि. ४-५; ५-६.

हारिद्र [सु. अ.]-सू. २६-८४.

हालाहल [सु.]-चि. २३-१३.

हिंक्षा [अ.]-चि. ३-२६७; २६-६०; २७-५४; २९-१४८; ३०-६२.

हिङ्गु [सु. अ.]-सू. २-२९; ४-१६ | ३७, १८ | ४८; २३-१५, २०; २४-५०; २७-२९९; शा. ८-३४, ४१, ४७, ६१; चि. २-४ | २१; ५-७९, ८५, ९९, १४२, १४४, १६२, १६६; ७-१०९; ९-५०, ५५, ५७, ६४, ७४; १०-२६, २७; १२-४४; १३-१५८; १४-६२, ७१; १५-९६, १०१, १०५, १०९, १७३, १८६, १८८; १७-८७, १०१, १०४, १०८, १४०, १४३; १८-३६, ४७, ५२, ५३, ११४, १२३; १९-२८; २३-५६, ७०, ८०, ९६, १०२;

२६-१३, २०, २२, २४, ६१, ६५, ८३, १५२, १८४, २२२, २२६; क. ७-१५, ५३, ६३; सि. ९-८, १८, १९.

हिङ्गुनिर्यास-सू. ४-९ | ६; २५-४०; वि. ८-१४२, १५१.

हिङ्गुपर्णी-चि. ९-५७.

हिङ्गुपत्रिका-चि. ९-६६.

हिङ्गुशिवाटिका-चि. १५-१०९.

हिन्ताल-क. १-८.

ह्रेम [अ.]-सू. ३-२९; चि. १-३ | २४; २१-७४; २४-१५९; २५-११६, ११७; २७-३८.

ह्रेमक्षीरी [सु.]-चि. २५-५३.

ह्रेमदुग्धा [अ.]-क. १२-२३.

ह्रैमवती [सु. अ.]-सू. १-७७, ७९; ४-९ | ३; क. ४-१६; ७-१६, ५१.

हीचेर [सु. अ.]-सू. २-२१; ४-१४ | २९, १७ | ४१; ५-२१, ६४; वि. ८-१३५; चि. ३-२४१; ४-३१, ७५, ८६; १४-२००, २३०; १९-२०; २१-९१; २४-१६५; सि. ४-१३; १२-१९ | २.



चरकसंहितागतजङ्गमद्रव्याणां स्थानाध्यायश्लोकोल्लेखः

Reference to the Section, Chapter and Verse of the Animal Substances in the Caraka Samhita

| | |
|--|---|
| अङ्गपाद-मि. ३-१२. | अश्व-सू. २७-३५; शा. ३-१५; इ. १२-८६; |
| अङ्गारचूडक-सू. २७-५२. | चि. ६-२४; ७-१६०; १४-४१; १७-११५; १८-२०; |
| अङ्ग-ट. १२-७६; चि. ११-८३; १८-४४; | २३-७१, ११९; २८-१८; सि. ७-३४; ११-१९, २१. |
| ३०-१०१; क. १२-८; मि. ३-१०; ६-८२; ९-५२; | |
| १०-४१; ११-१९, २०, २१, २२. | करीष-सू. १४-६०. |
| मूत्र-चि. २३-७१. | क्षीर-चि. ११-८३. |
| मेदस्-सू. २५-३८. | शकृत्-सू. १४-२६; चि. ७-२२; चि. १४-४१. |
| रधिर-चि. १९-७४. | शकृद्भस्-चि. ४-६८, ६९; १७-११६, १३०, १३६ |
| जीर्ण चि. २८-१०७. | अश्वतर-सू. २७-३५. |
| अङ्गा-चि. ११-५०. | असितपुच्छक-चि. १४-१३८. |
| क्षीर-चि. १८-१३५; २६-१३९. | अहि-चि. १०-५१; २३-१३८. |
| पयस्-चि. ५-१३३; ८-११६; ११-५०; | पुरीष-चि. १०-५१. |
| १९-८४; २९-५३, १३३. | विष-चि. २३-८७, १३८. |
| मांस-गू. २८-६१. | आखु-चि. २३-१००, १४७; २६-१७५. |
| मूत्र-मू. १-९३, १००; चि. ३०-८०; | मल-सू. २७-२१३. |
| क. ७-१३. | आजितपट्ट-चि. २५-९६. |
| मेदस्-चि. ११-२७. | आरा-सू. २७-४३. |
| अत्यृष्ट-सू. २७-५०. | आविदा-सू. २७-२२३. |
| अम्बुक्षुक्कुटी-सू. २७-४३. | पयस्-सू. २७-२२३. |
| अवस्तर-सू. २७-४९. | पिहित-चि. २-४; चि. १४-९. |
| अवि-चि. ३०-१०१; सि. ११-१९, २१, २२. | मांस-चि. १५-२२५. |
| असृक्-चि. ३०-१०१. | शाटक-सू. १४-३७. |
| क्षीर-सू. २५-४०. | रूपिस्त्र-गू. २५-३९, ४०. |
| मूत्र-गू. १-९३, १००; चि. २६-१८५; | आशीविष-चि. १७-९; २१-६; २३-१३६. |
| क. ७-१३. | हृन्मृगोप-सू. २४-२२; चि. ३०-२२६. |
| शोणित-चि. १०-८१. | |
| अधिका-चि. ११-२०, २६. | |

उचिष्टिङ्ग-वि. २३-१५३, १६५, १७२.
 उत्क्रोश-सू. २७-४३.
 उन्मुक्त-वि. २३-९.
 उपसक्त-सू. २७-४७.
 उपसक्त-वि. ३-१९०,
 उरग-वि. ३-३६; चि. ८-१५१; २३-१००;
 सि. ७-३४.
 उरण-सू. २७-४५; सि. ११-२०.
 उरभ-सू. ६-४३; १५-७.
 रस-सू. १३-८३.
 उत्कृ-सू. २७-३६; वि. ३-७ | ३; इ. ५-२९;
 वि. ८-१५०; १०-५१.
 चर्मन्-वि. ९-७५.
 गख-वि. ९-७५.
 गिस्त-वि. ९-७५.
 पुरी-वि. १०-५१.
 मूत्र-वि. ९-७५.
 लोमन्-वि. ९-७५.
 शकृत्-वि. ९-७५.
 उष्ट्र-सू. २७-३५; वि. ३-३६; इ. ५-८; १२-६८;
 वि. ८-१५८; १४-४८, १२६; २८-१८; २९-९;
 सि. ११-१९, २०, २१, २२, २६.
 कर्ष-सू. १४-६०.
 मूत्र-सू. १-९४, १०३.
 शकृत्-सू. १४-२६; वि. १७-११६.
 उष्ट्री-सू. १-१०६; वि. १२-२६; १३-१५२;
 २२-३३.
 क्षीर-सू. १-१०६.
 पयस्-वि. १२-२६; १३-१५२; २२-३३.
 ऊर्ध्व-सू. २७-४०.

क्रक्ष-सू. २७-३५; वि. ८-१५३; २६-४७;
 ३०-११२.
 क्रष-शा. ८-१०. वि. १७-४६.
 मूत्र-वि. १०-४८.
 क्रष्य-सू. २७-४६; वि. ५-८ | ४; चि. ७-१७.
 एकशफ-वि. १७-११८.
 अस्थि-वि. १७-११८.
 खुर-वि. १७-११८.
 चर्मन्-वि. १७-११८.
 एकशफा-सू. २७-२२१.
 पयस्-सू. २७-२२१.
 एण-सू. ५-५; ६-४३; १५-७; २७-४६, ७८;
 वि. १-२२ | १; शा. ८-२४; वि. ३-१९०; ४-४१;
 १९-५०; २३-२२६; २४-१३८; ३०-२६०; सि. १०-४१.
 मांख-सू. ६-२५; २५-३८; वि. १४-२०६.
 रस-वि. १९-५०; २३-२२६.
 शोणित-वि. १०-४१.
 फङ्ग-सू. २७-४९.
 फङ्गु-सू. २७-५२.
 कच्छप-वि. १९-३८.
 कच्छपरस-वि. १९-३८.
 कणभ-वि. २३-९, १५२.
 कदली-सू. २७-३८.
 फपि-वि. २३-२३६.
 फपिञ्जल-सू. ५-५; ६-२५, ४३; १५-७;
 २७-४७, ६८; शा. ८-२४; वि. ३-१९०; ४-४१;
 १४-२०६; २४-१३८; ३०-२६०.
 मांखरस-सू. १५-१६.
 रस-वि. १९-५०, ७७.

कपोत-सू. २६-८४; २७-५२, ७३; इ. १-१५;
२-६; वि. ४-४१; १६-७९; २३-२०३, २०८;
२५-५३, १००.

विश्व-वि. २३-२०३, २०८; २५-५३, १००.

कपोतक-वि. १६-८४.

कर्कट-सि. १२-१८ | ८.

कर्कटक-सू. २७-४०; सि. १२-२६.

रस-सि. १२-१८ | ७.

कलविह्व-सू. २७-५२; इ. १-१५; वि. २५-१००.

कलविह्वविश्व-वि. २५-१००.

काक-इ. १-१५; वि. ८-१५१; १३-११०, १८२.

पुरीष-वि. १०-५१.

रस-वि. २३-४७.

फाकतुण्डक-सू. १७-४२.

काकुलीमृग-सू. २७-३७.

काकमद्गु-सू. २५-३९.

वसा-सू. २५-३९.

फादम्ब-सू. २७-४२; क. १-८.

कामकाली-सू. २७-४४.

कारणवृ-पू. २७-४१; सि. २-१९ | २.

अण्डरः -मि. ९ |

कर -वि. १ : १ : १८२

० सू. १३-१०७, १८३.

का -वि. २-७.

का -वि. २-७; २-४६; शा. ८-२४;
वि. ३-

न. ९-५०.

की -वि. २७-२१३; वि. १०-५१; २३-९,
१०८, १९९, २१०.

कुक्कुट-सू. २५-४०; २७-४८; वि. २-१ | ४४;
३-१९३; ४-५०; ५-११०; १८-८०; २६-१७५,
२५३; सि. १२-१८ | १, १८ | ६, १८ | ९, १९ | १,
१९ | २.

अण्ड-वि. २६-२५४.

अण्डकपाल-वि. २६-२५३.

अण्डरस-सि. १२-१६, १९ | १.

आमिष-वि. १८-८०.

मांस-वि. २-१ | ४८; २३-६७.

रस-सू. १३-८३; वि. २-४ | १२;
सि. १२-१८ | २.

वसा-सू. २५-३८.

शक्र-वि. १४-५४.

कुक्कुभ-सू. २७-४७.

कुक्षर-वि. १४-५१.

नख-वि. १०-४०.

पुरीष-वि. १४-५१.

कुड्यकीटक-शा. ८-१९.

कुम्भीर-सू. २७-४०.

वसा-सू. २५-३९.

कुरङ्ग-सू. २७-४५; शा. ८-२४; वि. ३-१९१.

कुरङ्ग-सू. २७-३६; वि. १७-११८.

कुलिङ्ग-वि. २-४ | ३३; १८-१४८;
सि. १२-१९ | १.

अण्डरस-सि. १२-१९ | १.

लिङ्गक-सू. २७-३६, ५१.

कूर्चिका-सू. २७-३८.

कूर्म-सू. २७-४०, ८४; वि. ५-१६९; १४-१२६;
२३-१२७.

वसा-वि. २८-१२८.

कुकण्टक-वि. २३-९.

कुकलासक-वि. २३-१४९.

कुरणसर्प-वि. १४-४८; २३-१३४, १३६.

वज्रा-वि. २६-२५९.

केशरिन्-सू. २७-४२.

कैरात-सू. २७-५०.

कोकिल-सू. २७-५०; क. १-८.

कोयष्टि-सू. २७-५०.

कोट्टकारक-सू. २७-४५.

क्रावर-सू. २७-४९; वि. ४-५०.

क्रव्यादमांस-सू. २२-२७.

क्रव्यान्मांस-सू. २५-४०.

रस-वि. २५-४०.

क्रौञ्च-सू. २७-४९; वि. ३-१९२; ५-११०;
२३-२५३.

अस्थि-सू. २३-१५.

क्षीर-वि. ८-१६९; ११-४१.

क्षौद्र-सू. ६-३९; ७-६९; १५-७; २१-२४; २३-९,
१८, २१, ३५, ३६; २४-५६; वि. ७-२२; वि. १-१ | ५१,
१ | ५२, १ | ५८; १-२ | ४, २ | १६; १-३ | ४५;
१-४ | १९; २-१ | १३६; २-२ | १६, २ | २२,
२ | २४; २-३ | ५, ३ | ७, ३ | ९, ३ | ११,
३ | १२, ३ | १८, ३ | १९; २-४ | ३१, ४-३३;
३-२३१, २३७, २४६; ४-५९, ६६, ७२, ८०,
८८; ५-४८, १२५, १२७, १५०; ६-२२, ३५, ४५;
७-१२३; ८-९६, ९७, ११५; ११-१९, २८, ३०,
४९, ५१, ६४, ७४, ८१; १२-३६, ३९; १३-१०६;
१५-१३०, १५०; १६-७०, ९८, ९९, ११२; १७-७५,
११५, ११९, १२७, १४६; १८-५५, ८९, १०४,
११७, १३७, १७५, १७९, १८०; १९-५१, ५५,
८२, ८३, ८६, ८८, ९९, १०९; २०-३९; २१-१२९;
२२-६१; २३-१८४; २४-१६८; २५-१०३, १०४,
११४, २६-५५, ७३, ९०, १८६, १८९, १९५,
२००, २०२, २०४, २१९, २५२, २५९, २६०,

२६२, २८८; २७-३३, ३५, ३७, ४२, ४४, ५१;
२९-६६, ७९, ८५, ८६, १००, १२७; ३०-८८, ८९,
९३, ९६, १२२; क. ३-१०३; ५-८; १२-११;
सि. ३-४५, ४७, ५४, ६-५२; ८-५, ६, ७, ११, ४२;
१०-२२, २४, ३७, ४२; १२-१६ | ६, १८.

खर-सू. २७-३९, ८४; धा. ८-६२.

खङ्गिन्-वि. ८-१५४.

खर-सू. २७-३५; वि. ३-३६; धा. ८-३४, ४१;
इ. ५-८; १२-६८; वि. ६-२४; ७-१६८; ८-१५८;
१०-४०.

अस्थि-वि. ७-१६८; १०-४०.

करीष-सू. १४-६०.

मूत्र-सू. १-९४, १०४.

शकुत्-सू. १४-२६; वि. १४-४१; १७-११६.

गज-सू. २७-३९; वि. ३-३६; वि. २-२ | २९;
२-४ | ६, ४ | ३५; ८-१५४; ९-८२; १४-५५; १७-११६;
१८-२०; २३-११९, २५२; २८-१८; सि. ७-३४;
११-१९, २०, २१, २२, २४; १२-१९ | १.

अस्थि-वि. १४-५५.

मौक्तिक-वि. २३-२५२.

शकुत्-वि. १७-११६.

गण्डक-सू. २७-३८.

गण्डूपद-वि. ७-१२; वि. ८-१५१.

गवय-सू. २७-३९.

गिरिवर्तक-सू. २७-४९.

गृध्र-सू. २७-३६; इ. ५-२९; वि. ८-१५०;
१०-५१.

पक्ष-वि. १०-५१.

गृहगोधिका-वि. २३-९, १५६.

गोमायु-वि. २३-१०.

गोधा-सू. २५-३८; २७-३८, ७०; शा. ८-२१;
चि. १२-६२; १४-१२६; २३-१३४, १८६;
सि. १२-१८ | ५.

मांस-शा. ८-२१.

रस-सू. २-३३; चि. ७-८८.

गोधेरकसर्प-चि. २३-१३४.

गोनर्द-सू. २७-४९; सि. १२-१७, २४.

गोनस्त-चि. २३-१३६.

गोपापुत्र-सू. २७-५०.

गो-सू. १५-७; २७-३५; चि. ३-३६; ८-१३;
शा. ८-९; इ. १२-८३; चि. ६-२४; ७-१६०;
८-१५८; ९-६७; ११-५०, ८३; १४-१२६; १६-६४;
१७-११५; १९-४; क. १२-४; सि. ७-३४; ११-१९,
२०, २२, २५; १२-१८ | ६, १८ | ८.

करीव-सू. १४-६०.

क्षीर-सू. १-१०६; २७-७९; चि. १०-१७;
११-७०, ८३; १६-६४; १८-९१, १०७, १३५;
२३-६७; २६-९२, १५५; २९-१२६, १४२;
सि. १०-४०; १२-१९ | १.

चर्मनू-चि. ९-४९.

दन्त-चि. २३-२०३.

पयस-सू. २७-२१७; शा. ८-२४;
चि. २-१ | ३५; २-२ | ४, २-४ | ३०; ४-८३;
५-१३३; ११-५०; १३-१०८; १९-८८; २९-५३.

पित्त-सू. ३-६; चि. ७-१७१; ९-६७;
१४-५२; २३-५०, ५१, ५२, ७१, ८२, १८५,
२३२; ३०-१०३.

पिशित-नि. २-४.

पुच्छ-चि. १३-४१; सि. ३-९; ९-५१.

पुरीद-चि. १५-११७.

वाल-चि. १७-७९.

मांस-सू. ५-११; २५-३९; चि. २३-६७.

मांसरस-सू. २-३१, १३-८३; चि. ११-८३.

मूत्र-सू. १-९३, १०१; ३-१३; चि. ७-१७;
८-१४२; चि. ५-१७८; ७-६१, ८६, १०५,
११५, १५८, १६९, १७०; ९-३४, ४९; १०-१७,
३२, ४१; १२-२१, २६, ७३; १३-१०९, १२१,
१२५, १५१, १६-५४, ५८, ६४, ६५, ६७, ६८,
६९, ७५, ९५, १०३; २१-१२३; २३-२४१, २४७;
२६-१२, १४, ६१, २०१; २८-१९१; २९-१४७;
३०-६०, ८३३; क. ७-१३; १०-१५, १६;
१२-२४; सि. ३-५९; ८-१२; ९-८; १०-२४;
१२-१८.

रोचना-चि. ७-१०८, १६७; २३-५४,
२३१, २६-३६.

शृङ्ग-चि. १७-७९.

शकट-सू. १४-२६; चि. १४-४१.

शकटस-चि. ४-६८; १०-२२; १७-१३०;
१८-९१.

सर्पिस्-सू. २५-३८, ४०; चि. २-२ | ११;
२-४ | २५.

स्नायु-चि. १७-७९.

गोमय-चि. ७-२३; ८-११; शा. ८-१०;
इ. १२-१, ८९; चि. ७-५७.

गोमयरस-चि. २३-४६, ४८; २५-११६.

गोमयाग्नि-चि. १-२ | १०, १-३ | ३.

चक्रवाक-सू. २७-४४; क. १-८.

खकोर-सू. २७-४७, ८५; चि. ३-१९०;
२३-११०; सि. १२-१९ | १.

अण्डरस-चि. १२-१९ | १.

चटका-सू. २५-३९; २७-५२, ७५, ८६;
चि. २-२ | १०; २-४ | ६. सि. १२-१८ | ८;
१९-१.

| | |
|--|--|
| अण्डरस-वि. ११-२५; सि. १२-१८ ७, १९ १. | जलौकस्-वि. १४-६१; २१-६९. ११९; २३-१५५; २९-३६, ३७. |
| मांस-वि. २-१ ४६. | शकृत्-वि. १०-४०. |
| यसा-सू. २५-३९. | जलौका-वि. १३-९, ३९. |
| समर-सू. २७-३९. | जाण्डक-वि. १७-११८. |
| सरणायुध-सू. ७-११; २७-६७; सि. ३-२९७; ५-१८१. | जारद्ववस्ति-सि. ३-१०. |
| चारुक्-सू. २७-४६. | जीवजीवक-सू. २७-५०; |
| चाप-सू. २७-३६; सि. ४-३१; इ. १२-७६; सि. ८-१५०; १७-११८. | जीवजीव-सि. १२-१९ १. |
| चिपपृष्ठकाकुलीनृग-सू. २७-३७. | अण्डरस-सि. १२-१९ १. |
| चिरटी-सू. २७-५२. | जीवजीवक-इ. १२-७५. |
| चिलिचिम-सू. २५-३९; २६-८३, ८४; सि. ५-६. | डिण्डिमानक-सू. २७-५१. |
| चिल्लट-सू. २७-३८. | तक्षक-वि. २३-१९५. |
| सुलुकी-सू. २७-४०. | तरधु-सू. २७-३५; सि. ८-१५३; २३-१०; सि. १२-१९ १. |
| सुलूक-वि. २८-१२८. | ताम्रचूड-वि. २-२ २८. |
| वसा-वि. २८-१२८. | अण्ड-वि. २-२ २८, |
| छागमांस-वि. २३-६७. | रस-सू. २-३२; शा. ८-२८. |
| जटी-सू. २७-५१. | तित्तिरि-सू. २७-४८, ६८; शा. ८-२८; सि. २-१ ४१, ४४; सि. ३-१९२; ४-४९; ५-११०, १८१; ८-६६, १५१, १५८; १४-१२१, २०७; १६-१२८; १७-९३; १८-१४७; १९-३९; २०-२३; २४-१४५; २६-२८४. |
| जतुका-वि. १४-४८. | रस-वि. ११-७०; १४-१२१; सि. २३-२२६; २४-१२३; २६-२८४. |
| जम्बुक-सू. २७-३६. | तिमिङ्गल-सू. २७-४०. |
| जम्बुक-वि. ३-७ ३, सि. ९-७४. | तुरग-वि. ३-३६. |
| चर्मन्-वि. ९-७५. | तुरङ्ग-वि. ८-१५४. |
| नख-वि. ९-७५. | |
| पित्त-वि. ९-७५. | |
| भूज-वि. ९-७५. | |
| लोगन्-वि. ९-७५. | |
| शाङ्ग-वि. ९-७५. | |

दक्ष-सू. २७-८५; चि. २-१ | ४९; २-२ | १०;
८-६६, १५८; ११-२५; १४-१०, १२१, २०७;
१६-१२८; १७-९३; १९-३९; २३-१८२; २४-१२३;
२५-५३; सि. १०-४१.

अण्ड-चि. ११-२५.

रस-चि. १४-२०७.

शोणित-सि. १०-४१.

द्विकुण्ड-चि. १४-२०७.

रस-चि. १४-२०७.

द्विरेफ-चि. २-२ | २६.

द्वीपिन्-सू. २७-३५.

द्विशफ-चि. १७-११८.

अदिध-चि. १७-११८.

चर्मन्-चि. १७-११८.

खुर-चि. १७-११८.

शृङ्ग-चि. १७-११८.

रोमन्-चि. १७-११८.

कुण्डलि-सू. २७-५१

घातैराष्ट्र-सू. २७-८५.

धेनु-चि. २-३ | ३.

धूमिका-सू. २७-३७.

नकुल-सू. २७-३८; इ. ३-६; चि. ८-१५२;
२३-१०; सि. १२-१८ | ५.

पुरीष-चि. १०-५१.

तुण्ड-चि. १०-५१.

पद्म-चि. १०-५१.

नक्र-चि. २ | २-१०.

अण्ड-चि. २ | २-२८.

रेतस्-सू. २५-४०; चि. २-१ | ४८.

वत्सा-चि. २८-१२८.

शुक-चि. २-२ | १०.

नख-सू. ५-२०; चि. १२-६६; १३-३२; २३-७७;
२८-१५९; २९-९३.

नन्दीमुख-इ. १-८.

नन्दीमुखी-सू. २७-४३.

नाग-चि. ११-८३; सि. १२-१८ | ६,

नागीक्षीर-सू. १-१०६; चि. ११-८३.

नारी-चि. १७-१३१.

क्षीर-चि. १७-१३१.

पयस्-चि. २२-३३.

स्तन्य-चि. १५-२३०.

नृकेश-चि. १४-४९.

न्यङ्कु-सू. २७-३९.

पतङ्ग-शा. ८-५९; चि. ८-३६.

पन्नग-चि. २३-८४.

पाकहंस-सू. २५-३८.

वत्सा-सू. २५-३८.

पाकार-सू. २७-५१.

पाण्डविक-च. २७-५३.

पारावत-सू. २७-५२३; चि. ४-४१; १४-५५;
१८-२३; २२-२९.

रस-चि. ४-४१; १९-७२.

शकृत्-चि. १४-५५.

पिपीलिक-चि. १३-१८७.

पिपीलिका-वि. ७-१०; चि. २१-३०; ३०-१०.

पुण्डरीक-क. १-८.

पुण्डरीकाक्ष-सू. २७-४३.

| | |
|---|--|
| पुष्कराक्ष-सू. २७-४२. | वर्हिण-वि. २-१ ४९. |
| पृषत्-वि. ६-२४. | अण्डरस्-वि. २-१ ४९. |
| पृषत्-सू. २७-४५; वि. ३-१९१. | मांस-वि. ८-१५०. |
| मांस-वि. १२-१९ १. | रस्-वि. २-१ ४४. |
| रस्-वि. २३-२२६. | यलाका-सू. २६-८४; २७-४१; वि. २३-९८. |
| रुधिर-शा. ८-३२. | अस्थि-वि. २३-९८. |
| प्रतुद-सू. २७-५२; वि. ६-१९; ८-१६१; २९-५०, ७४. | वस्त-सू. १४-२९; शा. ८-१०; वि. ८-७३. |
| रस-वि. १८-१८५. | चर्मन्-शा. ८-१०; वि. ९-७५. |
| प्रवाल-वि. १७-१२५; २१-८२; २६-५६, २४६. | नख-वि. ९-७५. |
| प्रसह-सू. २४-७; २७-३६३; वि. ८-१६०; १५-२९०; १८-१५६; २९-१३७. | पित्त-वि. ९-७५. |
| पिशित-वि. १८-१५६. | मूत्र-वि. ९-६५, ७१, ७५; १०-२६, ३२, ३५, ३८, ४४, ४८; १४-५७; २६-२२४, २४९; ३०-११०. |
| मांस-सू. ६-१२. | लोमन्-वि. ९-७५. |
| रस्-वि. २४-१२४. | शिरस्-सू. १४-२९; वि. ८-७३. |
| प्रियवादिन्-३. १२-७५. | विटाल-वि. १०-४१. |
| प्रियात्मज-सू. २७-५०. | मूत्र-वि. १०-४१. |
| सुव-सू. २७-४१. | भास-सू. २७-३६. |
| अस्थि-वि. २६-२४६. | भुजगपति-वि. २३-९९. |
| यक-सू. २७-४१. | शिरस्-वि. २३-९९. |
| वधु-सू. २७-३५, ५१; ३०-७७. | भृङ्गराज-सू. २७-५०; क. १-८. |
| वर्हिन्-सू. २७-४८, ६५; वि. ७-१७०; ८-१५८; १४-१२१; १६-१२८; १७-९३; १९-३९; २०-२३. | सेक-सू. २५-३९; २७-३८. |
| अण्डरस्-वि. १२-१९ १, १९ २. | मकर-सू. २७-४०. |
| पाद्-वि. १८-१७०. | मक्षिका-वि. ३-७ ३; ४-७; इ. २-२१, २२; ५-१६; वि. ८-३५; २३-११०. |
| पित्त-वि. २३-२१७. | मणितुण्डक-सू. २७-४२. |
| रस-वि. १९-३९; २६-२८४. | मण्डूक-वि. २३-९, १५४. |

मत्ताक्ष-वि. १२-१९ | १.

अण्डरस-सि. १२-१९ | १.

मज्जा-सि. १२-१९ | १.

वसा-सि. १२-१९ | १.

मत्स्य-सू. ५-११; १३-११; २६-८२, ८३;
२७-४०, ८२; वि. ७-१२, १६; शा. ४-३९ | २,
४०; ८-२१, २८; इ. १२-७६, ८५; वि. २-४ | २०;
७-७, २१; ८-७३; १७-७४; १९-९; २३-९, १५५;
२४-१२४; २५-७६; २६-१५९; २८-९७, १७६;
क. १०-१९; सि. १२-२५.

आमिष-सू. ३-१९; १८-८०.

पित्त-वि. ५-१७५, ३०-१०३.

पिहित-वि. २-४; वि. १४-९.

मांस-सू. २२-२५; शा. ८-२१;
वि. २-४ | १७, ४-२०.

रस-वि. १७-७४.

वसा-वि. २५-७६; २८-१२८.

मत्स्यक-शा. ८-१९.

मद्-सू. २७-४२.

मधु-सू. ५-१२; ६-१२; २५-४०; २६-८४, ९०;
वि. १-१३, १४, २२ | ३; ७-२१; ८-१४२, १४३,
१४४; शा. ८-९, ३२; इ. २-१३; वि. १-१ | ६८,
१ | ७५, १ | ७७; १-२ | ७, २ | ८, २ | ९, २ | १०,
२ | ११, २ | १४; १-३ | ३, ३-३२, ३-३४,
३-४१, ३-४६; २ | २-२७, २-४ | १०, ४-२९,
२३१, २४२, २४९, २५९; ४-६५, ६८, ६९,
७०, ७१, ८९, ९३; ५-१५३, १७७; ६-२३, २९,
३२, ४०, ४३; ७-८१; ८-१०२, १०३, १४०, १६५,
१७१; १०-६४; ११-१५, १८, २२, २९, ३९, ५५;
१२-३२, ३५, ५१; १३-१०४; १५-१३९, १४७,
१५३, १६३; १६-६१, ६२, ७९, ९०, ९७, १०१;
१७-११४, ११६, १२९, १३६; १८-९०, ९१, ९५,
९७, १००, ११३, ११९, १२१, १३८; २०-२१, २७,

२९, ३०, ३८; २१-१२८; २२-२८, २९, ३०, ३२,
४१, ४२, ४६; २३-४६, ४८, ६२, ८०, ९६, ९७,
२०९, २२३, २३२; २४-१६१, १७४; २५-६५;
२६-५०, ५५, ५७; २७-२८, २९, ३७, ३८, ३९;
२९-१५८; ३०-६६, ८४, ९८, १०४, ११७, ११८, ११९, २५५; क. १-१२, १३, १४, १५; ९-१२;
सि. ३-१५, २३, ३७, ४६, ६३; ६-५३; ८-४; १०-१३,
१५, ३४, ४०, ४३; १२-१६ | १, १६ | २, १६ | ५,
१६ | ७, १६ | १०, १८-३, १८ | ५, १८ | ६,
१८ | ७, १८ | १३, १८ | १४, १८ | १६.

पौत्तिक-सू. २७-२४३, २४४.

भ्रामर-सू. २७-२४३, २४४.

माक्षिक-सू. ५-४३; २७-२४३, २४४;
वि. ४-८३; ११-२०, ५९, ७९; १८-६०, २०-२८,
३२, ३७; २६-५३, १९७, २८७; ३०-३७४.

मधुदंक-वि. ६-४६.

मधुच्छिष्ट-शा. ३-१६; वि. ७-१२१; ११-१७;
१५-२२८; १७-७९; २५-७६, १०३, १०४;
२६-१३५; २९-१२३, १४३.

मयूर-सू. १३-८३, वि. ३-१९२, २९८; ४-५०;
५-११०; १७-११७; २३-१८२; २६-१६३;
सि. १२-१८ | १, १८ | ३, १८ | ९.

पादनाल-वि. १७-११७.

मांस-सू. २६-८४.

रस-सू. १३-८३.

मयूरी-वि. २६-२८४.

क्षीर-वि. २६-२८४.

सर्पिस्-वि. २६-२८४.

मशक-वि. ३-७ | ३; इ. २-२१; वि. २३-१५७.

महिष-सू. २७-३९; वि. ३-३६; सि. ८-१५८;
१६-१३४.

| | |
|--|--|
| अण्डरस-सि. १२-१९ २. | लोमन्-सि. ९-७५. |
| यिहित-सू. २७-८०; नि. २-४; वि. १४-९. | शक्त-नि. ९-७५. |
| वसित-सि. ३-१०; ११-२०. | शोणित-नि. १०-४१. |
| रस-२-१ ४२; ४ १५, ४ २०. | मुक्ता-वि. १७-१२५; २१-८१; २३-२००. |
| वसा-सू. २५-३९. | मूषक-वि. ३-७ ३. |
| शोणित-सि. १०-४१. | सूषिक-सू. २७-३५; शा. ८-५९; वि. २३-१४८. |
| महिषी-वि. ११-८३. | मांस-सि. १२-१८ ५. |
| क्षीर-सू. २५-४०; वि. ११-८३; १८-१०७; सि. १०-४०; १२-१९ १. | मृग-सू. १३-११; वि. ३-७ ३; इ. १२-७८; वि. ८-१५५; १४-१९४; १९-७३; २४-१२४; ३०-१०१; फ. १-८; १२-८; सि. ६-८२; १२-१८ १०, २६. |
| घृत-वि. ४-१०१; १६-१३४. | मांस-सू. २२-२५; वि. ८-१५५. |
| दधि-वि. २६-८८. | रस-वि. १९-७३. |
| पयस्-सू. २७-२१९; वि. १२-२६; २९-५३. | रुधिर-वि. १९-७४. |
| मांसरस-वि. ११-८३. | मृगमातृका-सू. १५-७; २७-४५. |
| मूत्र-सू. १-९३, १०२; वि. १३-१५१; १५-१८१. | मृणालकण्ठ-सू. २७-४२. |
| सर्पिस्-वि. १६-५३; २३-२४१. | मेघराव-सू. २७-४३. |
| मक्षिका-वि. ३०-३२५. | मेष-वि. १०-४८; १७-११६; १९-४०. |
| विश्व-वि. २०-२९. | मूत्र-वि. १०-४८. |
| विष्टा-वि. १७-१३२; ३०-३२५. | रक्त-वि. १९-४०. |
| मानुषपयस्-सू. २७-२२४. | शक्त-वि. १७-११६. |
| मार्जार-सू. २७-३५; वि. ९-७४; २३-२३६. | गौक्तिक-वि. २४-१५३. |
| चर्मन्-वि. ९-७५. | यक्त-वि. १९-९. |
| नख-वि. ९-७५. | यष्टिका-सू. २७-५२. |
| पित्त-वि. ९-७५. | यूक्ता-वि. ४-७; ७-१०. |
| पुरीष-वि. १०-५१. | रक्तवर्त्मक-सू. २७-४७. |
| मांस-सि. १२-१८ ५. | रक्तशीर्षक-सू. २७-४४. |
| मूत्र-वि. ९-७५. | |

| | |
|---|---|
| रक्षाक्ष-वि. ४-४१. | चरपोत-सू. २७-४६. |
| राजहंस-वि. १२-१८ १. | चराटक-वि. २६-२२४. |
| राम-सू. २७-४५. | चराह-सू. २१-३४; २७-३९; शा. ८-३१; |
| रुच-सू. २७-३९. | वि. ७-१६०; १४-४८, ५१; १७-११६; १८-८०; |
| रोहिणी-स. २७-४४. | १९-९; २६-४७; ३०-१०१. |
| रोहित-सू. २५-३८; २७-८३; वि. २-४ १८; | असृज-सू. १४-२९. |
| २३-१८३; वि. १२-१८ ४. | आमिष-वि. १८-८०. |
| पिक्त-वि. २३-१८३. | दन्त-वि. ७-१६०. |
| रोहीतल-वि. २३-२१४. | पिक्त-सू. १४-२९; वि. ५-१७५; ३०-७१. |
| पिङ्ग-वि. २३-२१४. | पिशित-सू. २७-७८३; वि. २-४; वि. १४-९. |
| लङ्कयक-सू. २७-५१. | मांस-शा. ८-२१; वि. २-४ ११. |
| लङ्का-सू. २७-५१. | रस-सू. १३-८३. |
| लाक्षा-वि. ९-६१; ११-१५, १७; १६-१०७; | रधिर-वि. ७-१२२. |
| १७-७७, १३६, १४५; ६८-९८; २३-५६, ८०, १०२; | वसा-वि. २६-४७. |
| २५-११४, ११७; २६-१५३, २०९; ३०-९७. | विश्व-वि. १४-५१. |
| रस-वि. ११-३४. | वृषण-वि. १२-१८ ८. |
| लाव-सू. ५-५; ६-५, ४३; १३-८३; १५-७; | शकुत्-वि. १७-११६. |
| २७-४८, ६९; शा. ८-२४; वि. ३-१९०; ४-४१; | वर्तक-सू. २७-४८; ३०-७२, ७४; वि. ३-१९२; |
| ८-६६; १४-९४, १२१, २०६; १८-१४१; २०-२३; | ४-४१, ५०; ५-११०; ८-६६; १४-१२१; १९-३९. |
| २३-२२६; २४-१२३, १३८. | वर्तिका-सू. २७-४८. |
| रस-वि. १८-१४१; १९-५०; २४-१२३. | वर्तारक-सू. २७-४७; क. १२-१८. |
| लूता-वि. २३-९, ८४, १४५, २०२. | वस्त्राशिमि-वि. २३-१००. |
| लोपाक्ष-सू. २७-३६; वि. ८-१५३; १४-१२६, | वाजिन्-सू. १-१०४; वि. २-२ १३, २-२ ३०; |
| २०७. | २-४ ५१. |
| लोहपृष्ठ-सू. २७-५१. | वाटी-सू. २७-४३. |
| घटा-सू. २७-५०. | वानर-सू. २७-३५. |
| वहवा-सू. १-१०६; ह. १२-७५. | |
| द्वीर-सू. १-१०८. | |

| | |
|---|---|
| वान्ताद्-सू. २७-३६. | व्याघ्रकरज-वि. २६-१८४. |
| वायस-सू. २७-३६; सि. ६-७९. | व्याघ्रतख-वि. २३-१९०; २७-३८; २८-१५१; २९-१५०; सि. १२-१९ ३. |
| वारह-म. २७-४९. | व्याल-वि. ३-७ ३; वि. २३-१७६, २३६. |
| वार्ताक-सू. २७-४७. | वाहूनि-वि. ३-७ ३; क. १-८. |
| वासन्तकवत्ता-वि. १४-५६. | वाहू-सू. २७-४०; इ. १२-७६; वि. १७-१२५; २१-७५, ८२; २६-२४१, २४२, २४६, २५२. |
| वासुकि-वि. २३-१९८३. | नाभि-वि. २६-२४२. |
| विषगुपिक-वि. २३-८४. | शतपत्र-सू. २७-५०; इ. १२-७६; क. १-८. |
| विष्किर-सू. २७-४८; वि. ६-१९; ८-१६१; १२-६२; १८-१८५; २९-५०; सि. १२-१८ ४, १८-१०, २४, ३६. | शतपदी-वि. २३-१५६. |
| रस-वि. १२-६२; १८-१८५. | शकरी-वि. २-४ १७. |
| विश्वम्भरा-वि. २३-२१४. | शम्बर-सू. ५-५; २७-४६; शा. ८-२४. |
| वृक-सू. २७-३५; ३०-७५; वि. ९-७४. | शरभ-सू. ५-५; ६-४३; २७-४५. |
| चर्मन्-वि. ९-७५. | शरारि-सू. २७-४२. |
| नख-वि. ९-७५. | शरुक्-सू. २७-३८, ७१; वि. ९-७४; १४-१०६; १७-११२, ११७; सि. १२-१८ ५. |
| पिप्त-वि. ९-७५. | चर्मन्-वि. ९-७५. |
| मूत्र-वि. ९-७५. | तल-वि. ९-७५. |
| लोमन्-वि. ९-७५. | पिप्त-वि. ९-७५. |
| शकल-वि. ९-७५. | मांस-वि. ९-७५. |
| वृष-इ. १२-३३; वि. ११-५; १४-५१; सि. १२-१८ ६, १८ ८. | मूत्र-वि. ९-७५. |
| चर्मन् वि. १४-४९. | लोमन्-वि. ९-७५. |
| वृषदंश-वि. ३-३०२; १४-४८, ४९. | शकल-वि. ९-७५. |
| शकल-वि. ३-३०२. | शकल-वि. १७-११७. |
| कुपभ-शा. ८-३४, ४१, ६२; इ. १२-७१. | शोणित-वि. १८-११२. |
| व्याघ्र-सू. २७-३५; शा. ८-१०; वि. ८-१५३; २३-१०. | शश-सू. ५-५; ६-४३; १५-७; २७-४५, ७७; शा. ८-२८, ३२, वि. ३-१९१; ४-४१, ४९; १७-११२; १९-५०, ७३; २४-१३८; २६-१७५; ३०-२६०. |
| चर्मन्-शा. ८-१०. | |
| वत्ता-वि. ३-३०५. | |

- मांस-सू. ६-२५; चि. १७-११२.
 रस-चि. १९-५०, ७३.
 रुधिर-शा. ८-३२.
 शोणित-सि. १०-४१.
 शशधनी-सू. २७-३६.
 शारङ्ग-सू. २७-५२.
 शारिका-चि. २३-२५३.
 शार्दूल-चि. २३-१९२.
 नख-चि. २३-१९२.
 शिखिन्-सू. २७-८५; शा. ८-२८; इ. १२-७६;
 चि. २-१ | ४१; २-२ | १०; १४-१०; २३-५१,
 ९८, १०९, २५३; २४-१५७; सि. १२-१७, २४,
 २५, २७.
 अण्डरस-सि. १२-१७.
 पित्त-चि. २३-५१.
 वर्ह-चि. २३-९८.
 रस-चि. १२-६२; २३-२२६; २४-१२३.
 शिशुमार-सू. २७-४०; चि. २-२ | १०.
 शुक्र-सू. २७-५२; चि. २३-२५३.
 शुक्ति-सू. २७-४०; चि. २१-८२.
 शूकर-चि. ८-१५८; १७-७४; २६-२५१.
 वस्ति-सि. ३-१०.
 रस-सू. १३-९० (१); चि. १७-७४.
 वसा-सू. २६-८४.
 शृगाल-चि. ८-१५२; ९-६७; १०-४१.
 श्यामकाकुलीमृग-सू. २७-३७.
 श्येन-सू. २७-३६ शा. ८-२८.
 श्वन्-चि. ४-७; इ. ५-८, २९; चि. १०-४१, ५०;
 २३-१०, १७५, सि. ६-७९.
 पित्त-चि. १०-५०.
 सूत्र-चि. १०-४१.
 श्वदंष्ट्र-सू. २७-४५.
 श्वापद-शा. ८-५९; चि. ८-३६.
 श्वायित्-सू. २७-३८; चि. १४-१२६; १७-११२,
 ११८; १८-१७०; २३-२२६.
 श्वेतकाकुलीमृग-सू. २७-३७.
 सर्प-शा. ४-३८ | ४; ८-४१; चि. ९-८२;
 १४-४९; २३-९, १२३, १२४, १३२, १३४, १३७;
 २५१.
 दूर्वाकर-चि. २३-१२४, १२५, १२७.
 मणि-चि. २३-२५२.
 मण्डली-चि. २३-१२४, १२५, १२८.
 मल-सू. २७-२१३.
 राजिमान्-चि. २३-१२४, १२५, १२९.
 विष-चि. १३-१३२; २३-२५४.
 सारस-सू. २७-४४; इ. १२-७५; चि. २६-५५;
 सि. १२-१७, १९ | २.
 अण्डरस-सि. १२-१७, १९ | २.
 अस्थि-चि. २६-५५.
 सारिका-सू. २७-५२.
 सिद्धार्थ-इ. १२-७५.
 सिंह-सू. २७-३५; चि. ८-१५३; ९-८२;
 १०-४१; २३-१०.
 सूत्र-चि. १०-४१.
 वसा-चि. ३-३०६.

| | |
|--|---|
| सुमुख-सू. २७-४३. | सर्मन्-चि. ७-२१. |
| सुमर-सू. २७-३९. | सूत्र-सू. १-९४, १०२; चि. ७-१६९. |
| स्त्रीक्षीर-सू. १-१०६. | मेव-सू. २५-३९. |
| स्थगिका मक्षिका-चि. २३-१५८. | हस्तिनी-सू. २७-२१३. |
| हय-सू. १-९४; इ. १२-८३; चि. ११-५; २६-६८; २९-९. | पयस्-सू. २७-२२३. |
| गूत्र-सू. १-९४. | हारिद्रक-सू. २६-८४. |
| हरिण-सू. २७-४६; शा. ८-२४; चि. ३-१९१; ४-४१; १४-२०६; १९-५०. | हंस-सू. २७-४१, ६६; इ. १-१५; १२-७६; चि. २-१ ४१, १ ४९; २-२ १०; ६-२४; ८-१५८; २३-२५३; २६-१७५; क. १-८; सि. १२-१७, १८ ६, १८ ९, १९ १, १९ २. |
| यस्ति-सि. ३-१०. | अण्डरस्-सि. १२-१७, १९ १, १९ २. |
| रस-चि. १९-५०. | कवाथ-सि. १२-१८ ९. |
| रघिर-शा. ८-३२. | रस-सू. १३-८३. |
| हस्तिन-नि. ४-४३; चि. ७-१६८. | |

चरकसंहितागतपार्थिवद्रव्याणां स्थानाध्यायश्लोकोद्धेखः।

Reference to the Section, Chapter and Verse of the Mineral Substances in the Caraka Samhita

| | |
|--|---|
| अगारधूम-वि. २३-५१; सि. ७-२५; ९-५८. | अश्मजतु-वि. १६-८१; १२-४९. |
| अग्र्यलवण-वि. २३-९६. | अश्ममयी शिला-सू. १४-४७. |
| अर्जन-सू. १-७०; ३-५. | आनूप (लवण)-वि. ८-१४१. |
| अद्रिजतु-वि. १६-७८. | आयस-सू. १४-२६; शा. ८-१९, ३४, ४०; वि. १-३ ४३; १२-७; १५-१८७; १६-८३. |
| अमृतासङ्ग-सू. ३-१०; वि. १४-५५; २५-११७. | आयस (शिलाजतु)-वि. १-३ ५९. |
| अमृतासंश-वि. ७-११४. | आल-सू. १-७०; ३-५, १०, १२; वि. ९-६६; १८-६९, ७४; २३-५४. |
| अयस्-सू. १-१३१; वि. १-४ २२; ७-८८; १२-२१, ४२; १५-१८८; १६-६९; ७०, ७८, ९७, ९८, ९९, १०५, ११९; १७-१२६; २१-१३१; २५-११५; २६-२५४, २८०, २८२; ३०-८४. | हृष्टका-वि. २७-४९. |
| गुड-सू. १-१३१. | ऊयर-सू. २५-३९; २७-१९९; वि. ८-१४१. |
| चूर्ण-वि. ७-८८; २६-२८०, २८२. | औद्भिद-सू. १-८८; २७-३०३ वि. ८-१४१; वि. १५-८५; २६-२२७. |
| सल-वि. १६-७८. | कनक-सू. ५-१८; शा. ३-१६; ८-१९; वि. १-१ ५८. |
| रजस्-वि. १२-२१, ४२; १५-१८८; १६-६९, ७०, ९७, ९८, ९९, १०५, ११९; १७-१२६; २५-११५; २६-२५४; ३०-८४. | ककैतन-वि. २३-२५२. |
| अयस्कृति-वि. १३-७३. | काच-वि. १७-१२५. |
| अर्क्ष (मणिविशेष)-वि. ७-८५. | काञ्चन-वि. १-४ ५९. |
| अल-वि. १७-७८. | काञ्चनगैरिक-वि. २०-३२. |
| अश्मन्-शा. ८-३४, ४२, इ. १२-२०; वि. १-३ ६३; ५-१७; ९-२०; ११-५; १२-७, ८२. | काललवण-सू. २७-३०३, वि. ८-१४१; शा. ८-३४; वि. १३-१३४. |
| अश्मघातीस-वि. २५-१००. | काललोह-वि. १७-१२९. |
| अश्मघन-शा. २-३०. | काललोहरजस्-सू. २१-२३; वि. ७-१७१. |
| | कालायस-वि. १-१ ५८. |
| | कालोत्थलवण-वि. १५-१७१. |

- कासीस-सू. ३-५, १०; वि. ७-१०२, १०९, ११४, ११७, १६७; २१-१२६; २५-११५, ११७; २६-२५४, २७१; ३०-७९, १२१.
- कांक्षी-वि. २३-५४; ३०-१२१.
- कांस्य-शा. ८-९; वि. २४-१५४; सि. ३-७.
- कूप्य-वि. ८-१४१.
- कृष्णमृत्-वि. १९-८२; २२-४४.
- कृष्णमृत्तिका-सू. २७-२००; वि. १९-६४.
- कृष्णसिकता-वि. २२-४४.
- कृष्णायस-वि. १-३ | ४९.
- गजमौक्तिक-वि. २३-२५२.
- गन्ध-वि. १७-१२५.
- गन्धक-वि. ७-७१.
- गरमणि-वि. २३-२५२.
- गिरिज-वि. १-३ | ६४; २१-१३०; ३०-१४८.
- गृहधूम-सू. ३-५; वि. ७-८७; २३-४१, १९७, १९८; २१३; २६-१९४; २९-१४९.
- गैरिक-सू. १-७०; ३-५; वि. ४-७३, ७९, ९९; २०-३३; २१-८२; २३-१२०; २५-११७; २६-३१०, २३२, २३५; ३०-९१.
- सत्वारि लवणानि-वि. १२-४३.
- जतु-वि. २३-१००.
- ताप्य-वि. १६-७८; २६-२५०.
- ताम्र-सू. १-१३१; ५-७४; शा. ३-१६; वि. १-१ | ५८, ३ | ४९, ४ | २२; ७-११७; १७-१२६; २१-१३१; २६-२४६, २५५; सि. ३-७.
- ताम्रशिलाजतु-वि. १-३ | ५८.
- ताम्ररजस्-वि. २३-२३९.
- तीक्ष्णायस-वि. १-३ | १६.
- तुल्य-सू. ३-१२; वि. ७-११४, १२०; २६-२५०.
- त्रिषु-सू. ५-७४; शा. ३-१६; वि. ७-८८; सि. ३-७.
- द्वे तुल्ये-वि. ७-१०८.
- द्वे लवणे-वि. ५-८०; २६-१२, १०१.
- धूम-सि. ७-२४.
- पक्कालोष्ट-वि. ४-८०; २२-४२.
- पक्क-सू. १८-६; इ. ५-३२; सि. २२-३७.
- पञ्च लवणानि-सू. १-७५; वि. १३-१५९, १६३; १५-१०६, १२१, १६८, १७४, १९०; १८-४८, १६०; २३-४१; २६-२४, ६४.
- पाक्य-वि. ८-१४१; वि. १५-८५, १०९.
- पाट्यक-वि. ८-१४१.
- पादाण-सू. १४-२६, ५८; २७-२०९, २१०; वि. २१-१३१.
- पांशु-वि. ३-७ | १; इ. १२-२८, वि. १-८ | ५९; २३-३८३, १७४.
- पांशुज-सू. २७-३०४; वि. ८-१४१.
- पिचुक-वि. २३-२५२.
- पु.कमिणीमृत्-वि. ४-१०४.
- पौग-अञ्जन-वि. २६-२५०.
- प्रवाल-इ. ११-१४; वि. १-१ | ५८; १-४ | २२; ३-२६२; १७-१२५; २१-८२; २६-४६, २४६.
- भस्मन्-इ. ५-३१; १२-२८.

मणि-सू. १-७०; ६-३१; नि. ७-१६;
वि. ३-३६; ६-१७; ८-९, ११, ८७; शा. ८-६२;
चि. २६-२५०.

मण्डूर-चि. १६-७४, ९५, १०३.

मनःशिल-सू. १-७०; ३-५, १०, १२, १५;
५-२६; चि. ३-३०६; ७-११७, १६७, १७०;
१७-७७, १४५; १८-५२, ६९, ७१, ७३, ७४, ७५,
१३०, १४६, १४७, १६९; २०-३९; २३-५५, ७८,
१९०, १९२, २१३; २५-११४; २६-१५२, १९६;
२३५, २५०, २५२.

मरकत-चि. २३-२५२.

माक्षिक-चि. ७-७०; १६-७३, ८२; २१-१३०.

मुक्ता-सू. ६-३१; वि. ६-१७, ८-९, ११;
चि. १-४-२२; ४-७९, १०६; १७-१२५; २३-२००.

मृत्-सू. ९-१३; १८-६; शा. १-४३; ३-२०;
चि. ४-७९; १६-२८, १२१; २०-४२; २६-२२४.

पिण्ड-सू. १३-९७.

प्रसाद-चि. ४-८१.

सृष्टलोष्ट-सू. २५-४०; चि. २०-३०.

सृष्टिका-सू. १४-४६; चि. १-२ | ११, ४-२१;
२-४ | २६; ४-६६; १६-२७, ११७; १९-६५;
क. १-९.

मौक्तिक-चि. ३-२६२, २६५; २१-८१; २४-१५३.

मौलक-चि. ८-१४१.

रजसू-क. १-११.

रजत-चि. ८-९, ११; शा. ३-१६; ८-९, १९,
३४, ४४; चि. १-१ | ५८, २ | ४, ३ | २३, ३-४९,
४ | २२; २४-१५, १५४.

रत्न-सू. ८-१९; इ. १२-३३, ७२;
चि. २४-१२.

रस-चि. ७-७१.

रसोत्तम-चि. २५-११६.

रीति-सि. ३-७.

रक्तम-शा. ८-४४.

रूप्य-सू. ५-७४; चि. १६-७८; १७-१२६;
सि. ३-७; ९-५१.

मल-चि. १६-७८, ८१.

रूप्यशिलाजतु-चि. १-३ | ५८.

रोमक-वि. ८-१४१; चि. १५-८५.

रोमश-चि. २९-१५२.

लवण-सू. १-७०; ८-२०; १३-९०(१), ९८;
१४-३५; १५-१६; २५-४०; २७-४; वि. १-१५,
१८; ७-२१; ८-१३९, १४०, १४२, १४३, १४४;
शा. ८-२९, ३२; चि. १-३ | २४, ३ | ४६;
२-१ | ४३; ३-२४९; ५-१४२; ७-८७, ८८; ८-९०;
९-५४; १०-३७; १३-९०, १०२; १४-९९, १३७;
१५-१०५, २०५; १७-९५, ९८; २१-१३१; २३-१७३;
२४-१२२; २५-५१, ८५; २६-६६, ८१, ८५;
२८-११३, १३७; २९-८५, ९९; ३०-५७, २५३;
क. ३-१०३. ५-८, ११; ६-११; ८-११; ९-१५;
११-६; १२-७५; सि. ३-२२३, ४०; ६-४२, ६४; ७-२३,
२५, २९, ४५, ५०, ५२, ६३; ४-१४, २३, २६,
२८; ९-५८; १०-१३, १५; १२-१६ | ७, १६ | ८,
१६ | ९, १८ | ९, १८ | १६.

लवणत्रय-चि. १५-१७७, १८३; २०-२५;
सि. ९-१८.

लवणद्वय-सू. २-५; चि. १७-१२५.

लवणपञ्चक-चि. १३-१२७; सि. ११-३३.

लवणानां चत्वारि-चि. १५-१११.

लवणानि-चि. १८-४५; १३-१३७; १५-९६;
२६-४७; क. ७-४१.

लेलीतक-चि. ७-७०.
 लोमश-सू. ३-४ | १५.
 लोष्ट-सू. १८-६; इ. १२-१०; चि. ३-११२;
 २३-२५१.
 लोह-चि. ९-३०, ८०; २५-१०३, १०४;
 २६-२५०, २७४.
 रजसू-चि. १२-३९; १६-८२; १८-१७७.
 लोहाः-सू. १-७०; चि. १-३, २०; ३ | ५२;
 २५-८२, २६-२४६.
 मल-सू. १-७०.
 लोहितमृत्-चि. २३-१०१.
 वज्र-चि. ७-७२; २३-२५२.
 घराटक-चि. २६-२२४.
 पत्नीकमृत्तिका-चि. २७-४९, ५१, ५४.
 वालुका-चि. ८-१४१.
 वालुका-चि. ६-९; क. १-१३.
 चिड-सू. १-८८; २७-३०२; चि. ८-१४१;
 शा. ८-३४; चि. ५-६९, ८५, १०५, १४४, १६८;
 १४-१०७; १५-८५, १००, १०९, १७१; १७-१०१;
 १९-२८; २४-१११; २६-२२, २१६, २२७; क. ७-५३.
 चिद्रुम-चि. ८-९, ११.
 विषमृषिका-चि. २३-२५२.
 वेदमधुम-चि. २६-१४.
 वैदूर्य-इ. ७-१२; चि. १-४ | २२; ४-७९,
 १०६; चि. १७-१२५; २३-२५२; २६-२४६.
 शङ्ख-चि. १-४ | २१; ३-२६२; ४-७३, ७९,
 ९९; चि. १७-१२५; १९-८२; २१-७५, ८२;
 २६-२४१, २४६, २५२.

शाङ्गनाभि-चि. २६-२४२.
 शार-चि. ५-६२; २१-१३३.
 शर्करा-चि. २७-५८; क. १-८.
 शिला-सू. १४-४८; चि. ११-५; २१-१२६.
 शिलाजतु-सू. २१-२४; २४-५६; चि. १-३ | ४८,
 ३ | ५६, ३ | ६२; ५-९७; ७-७२; १३-१५२,
 १५३; १६-८८; २३-२१३; २८-२४२; २९-१५९.
 शिलातल-चि. २-४, | ३४.
 शिलाह्वय-चि. १-३ | ६५; २६-९९.
 शिलोद्भेद-चि. १५-११३; ३०-९०.
 शुक्ति-चि. २१-८२.
 सर्षपणि-चि. २३-२५२.
 सर्वलोह-चि. १-३ | ४६.
 ससार-चि. १७-१२५.
 सामुद्रक-सू. २७-३०४.
 सामुद्र-सू. १-८९; चि. ८-१४१.
 सार-चि. २३-२५२.
 सिफता-सू. १-७०; १४-२६; २७-२१०;
 चि. ३-७ | १; चि. १२-७०; २२-२२; २७-५८;
 क. १-८; ८-६.
 सीलक-शा. ३-१६; चि. ७-८८; १७-१२६.
 सुधा-सू. १-७०.
 सुवर्ण-सू. १-७०; ५-७४; शा. ८-३४;
 चि. १-२ | ४; ३ | ८६; २४-१५; चि. ३-७.
 सुवर्णमाक्षिक-चि. ७-७१.
 सूर्यकान्त-चि. ९-१८.
 सैन्धव-सू. १-८८; ५-१२; २५-३८; २६-४०;
 २७-३००; चि. ८-१४१; शा. ३-४ | ५; ८-३४, ४३;

चि. १-१ | २५; २-४ | ११, २-४ | १९; ३-३०३,
३०५, ३०६; ५-७१, ८५, ८६, १४४; ७-४८, ९३, १२२,
१२६, १६७, १६९; १०-२६; ११-२७, ८५; १२-८०,
१०३, १०४, १०५, १३४; १४-५३, ६३, ८०, १०७;
१५-८५; २०-२४, ३४; २३-७०, १०२, १८३, २०३,
२२४, २३२; २४-१११; २६-१५, १४१, १९६, २२३,
२२७, २३२; ३०-५४, ५८, ७१, ७२, १०९, २५९,
२७६; इ. १-१४; ७-१४, ६५, ७७.

सौगन्धिक-सू. ३-१०; चि. १७-१२६.

सौराष्ट्री-चि. ७-११४; १५-१३८; ३०-७९, ९८.

सौधर्चल-सू. १-८८, २३-२०; २४-४९;
२७-३०१, ३०३; वि. ८-१४१; शा. ८-३४;
चि. ५-६९; ८-१४२; ९-३४; ११-६७; ८५, ८८;

१२-२७, ५५; १४-६३, ६९; १५-८५, १०१, १०२,
१०९; १७-१०१, १०८, १०९, १४०, १४२; १८-१२२,
१२६; २४-१११, १७७, १८१, १८३; २६-१३, २१६,
२१९, २२७; क. ७-५३, ६३; सि. ७-१७; ९-१९, २०;
१२-१६ | ५, १६, १८ | ५.

सौवीराक्षन-सू. ५-१५.

स्फटिक-चि. १-४ | २२; १७-१२५.

हरिताल-सू. ५-२६; चि. ३७-११४, २६-१९६.

हिरण्य-वि. ८-९, ११; इ. ५-३३.

हेमन्-वि. ८-९, ११; चि. १-३ | २३, ३ | २५;
.४ | २२; ३-२६२; ४-७९; २१-१३१; २३-२३९,
२४०; २४-७२, १५५.

वृद्धलघुत्रयीगत रोगाणां स्थानखण्डाध्याय- श्लोकोल्लेखयुतानि नामानि* ।

Names and references to the Section, Chapter and verse of the
diseases, mentioned in the Vṛddhatrayi and the Laghutrayi (the
big triad and the small triad of Medical works).

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता स. अ. श्लो. | भावप्रकाशः स. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| अजीर्ण— | चि. १५-४२. सू. ४६-४९९. | | | ६-५, ६. | पू. ७-९. | म. ६-१३. |
| वातज | | | सू. ८-२५. | | | ,, ६-१६. |
| पित्तज | | | ,, ८-२६. | | | ,, ६-१६. |
| कफज | | | ,, ८-२५. | | | ,, ६-१६. |
| आमजन्य | | सू. ४६-५०२. उ. ४६-१०. | ,, ८-२५. | ६-१०. | पू. ७-१०. | ,, ६-१८. |
| विदग्मजन्य | | सू. ४६-५०२. | ,, ८-२६. | ६-११. | ,, ७-१०. | ,, ६-१९. |
| निष्ठश्धजन्य | | सू. ४६-५०२. | ,, ८-२६. | ६-१२. | ,, ७-९. | ,, ६-२०. |
| रसोपजन्य | | सू. ४६-५०३. | ,, ८-२९. | ६-१३. | ,, ७-१०. | ,, ६-२१. |

चतुष्टयम्—

चरकसंहिता-सुम्न्यदां निर्णयसागरमुद्रणालये मुद्रिता तृतीयावृत्तिः १८६३ शकाब्दः

सुश्रुतसंहिता- ,, ,, १८६० ,,

अष्टाङ्गहृदयम्- ,, मुद्रितम् पद्यं संस्करणम् ,, ,,

लघुत्रयी—

माधवनिदानम्- ,, ,, चतुर्थं संस्करणम् १८६१ शकाब्दः

शार्ङ्गधरसंहिता- ,, मुद्रिता द्वितीयं संस्करणम् १८५३ शकाब्दः

भावप्रकाशः-वाराणस्यां हरिदास संस्कृत निगीत ३९ चोखम्भा प्रथमावृत्तिः १९३५ क्रिस्ताब्दः

| रोगाणां | १९३ | | | | | नामानि |
|-----------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|----------------------------|
| रोगाणां नामानि- | सरफ- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | नाथव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता स. अ. श्लो. | भाचप्रकाशः रा. अ. श्लो. |
| दिनपाकि | | | | | | म. ६-१७. |
| प्रतिवासर | | | | | | ,, ६-१७. |
| विस्त्रिका | वि. २-१०. | उ. ५६-६. | मू. ८-७. | ६-१६. | पू. ७-११. | ,, ६-२४. |
| द्विद्विका | | ,, ५६-९. | ,, ८-२८. | ६-११. | ,, ७-११. | ,, ६-३२. |
| अलसक | वि. २-१०. | ,, ५६-८. | ,, ८-११. | ६-२०. | ,, ७-११. | ,, ६-२८, २९. |
| अतस्त्राभिनिवेश- चि. १०-५५. | | | | | | |
| अतिसार- | ,, १९-४. | ,, ४०-३. | नि. ८-१, ३. | ३-४. | ,, ७-७. | ,, २-६. |
| वातज (अनुग्रथित) | ,, १९-५. | ,, ४०-१०, ११. | ,, ८-५. | ३-६. | ,, ७-७. | ,, २-४३. |
| पित्तज | ,, १९-६. | ,, ४०-१०, ११. | नि. ८-८, ९. | ३-७. | ,, ७-७. | ,, २-४५. |
| कफज | ,, १९-७. | ,, ४०-११, १२. | नि. ८-९, १०. | ३-७. | ,, ७-७. | ,, २-७५. |
| सन्निपातज | ,, १९-८. | ,, ४०-१२, १३. | नि. ९-१०. | ३-७. | ,, ७-७. | ,, २-८४. |
| भयज | ,, १९-११, १२. | | नि. ८-१२, १३. | | ,, ७-७. | ,, २-१०१, १०२. |
| शोक्कज | ,, १९-११, १२. | ,, ४०-१३, १४. | नि. ८-१३. | ३-९, १०. | ,, ७-७. | ,, २-९९, १००. |
| आमातिसार | ,, १९-५. | ,, ४०-१५, १६. | नि. ८-१४. | ३-११. | ,, ७-७. | म. २-१०४. |
| उवरातिसार | | | | ३. | | ,, ३-१. |
| रक्तातिसार | ,, १९-७०. | ,, ४०-११५, ११६. | | ३-२०. | | ,, ३-४९. |
| अपची- | | नि. ११-११. | उ. २९-२५. | ३८-९, १०. | | ,, ४३-९. |
| | | चि. १८-१७. | | | | |
| अपतर्पणज रोग- सू. २३-२६. | | | | | | |
| | | | सू. १४-२९, ३१. | | | |
| अपस्मार- | नि. ८-५. | उ. ६१-३. | उ. ७-१. | २१-१. | ,, ७-४०. | ,, २-३. |
| | चि. १०-३. | | | | | |

| रोगाणां | १९३ | | | | | | नामानि |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|--|------------------------------|--------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माघव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता स्था. अ. श्लो. | भावप्रकाशः स्था. अ. श्लो. | |
| वातज | नि. ८-८१ चि. १०-९. | उ. ६१-११, १२. | उ. ७-९- १२. | २१-३. | पू. ७-४०. | न. २२-५. | |
| पिण्डज | नि. ८-८२. चि. १०-१०. | ,, ६१-१२, १३. | ,, ७-१२, १३. | २१-४. | ,, ७-४०. | ,, २२-६. | |
| कफज | नि. ८-८३. चि. १०-११. | ,, ६१-१४, १५. | ,, ७-१४, १५. | २१-५. | ,, ७-४०. | ,, २२-७. | |
| सन्निपातज | नि. ८-८४. चि. १०-१२. | ,, ६१-१७. १७. | ,, ७-१५. १५. | २१-६, ७. | ,, ७-४०. | ,, २२-८. | |
| आगन्तुज | नि. ८-९. चि. १०-५३. | | | | | | |

अभिघातजरोग-

| | | | | | | |
|---------------|------------|------------|--|-------|------------|----------|
| शिरोभिघातज | सि. ९-६. | | | | | |
| हृदयाभिघातज | सि. ९-६. | उ. ४३-२. | | | | |
| वस्त्राभिघातज | सि. ९-६. | | | | | |
| अतनिहत | | सू. १२-३८. | | | | |
| उष्णवातहत | | ,, १२-३८. | | | | |
| धूमाभिहत | | ,, १२-२९. | | | | |
| तल्याभिहत | | ,, २६-१०. | | | | |
| शीताभिहत | | ,, १२-३८. | | | | |
| क्षाराभिहत | | ,, ११-२६. | | | | |
| अमातुपोषर्ग | | उ. ६०-१. | | | | |
| अम्लपित्त- | चि. १५-४७. | | | ५१-१. | पू. ७-१०३. | म. १०-२. |
| अधोगत | | | | ५१-३. | | ,, १०-४. |

| रोगाणां | १९४ | | | | | नामानि |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | साधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गचर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः म. अ. श्लो. |
| ऊर्ध्वगत | | | | ५१-४-६. | | म. १०-३. |
| अरुचि- | चि. ८-६०, ६१. | | | | | |
| अरोवक्र- | चि. २६-१२४. | उ. ५७-१. | नि. ५-२८. | १४-१. | पृ. ७-२७. | म. १५-१. |
| वातज | „ २६-१२४. ८-६१. | „ ५७-६. | „ ५-२८. चि. ५-५०. | १४-२, ४. | „ ७-२७. | „ १५-११. |
| पित्तज | „ २६-१२५. „ ८-६१. | „ ५७-४. | नि. ५-२८. चि. ५-५१. | १४-२, ४. | „ ७-२७. | „ १५-३. |
| कफज | „ २६-१२५. „ ८ ६१ | उ. ५७-५. | नि. ५-२८. चि. ५-६१ | १४-२, ४. | „ ७-२७. | „ १५-२. |
| सन्निपातज | „ २६-१२६ ८-५१. | उ. ५७-५. | नि. ५-२८. | १४-३, ४. | „ ७-२८. | „ १५-३. |
| क्षेपज | „ २६-१२६. „ ८-६. | „ ५७-६. | | | | |
| चित्तविवर्धयज | „ ८-६०. | „ ५७-६. | नि. ५-२८. | | „ ७-२८. | „ १५-३. |
| वर्धुद- | „ १२-८७. | नि. ११-१३. चि. १८-३० | उ. २९-१४, १५ | ३८-१८, १९. | „ ७-६९. | „ ४४-१८, १९. |
| वातज | | नि. ११-१४. | „ २९-१४, १५. | ३८-१८, १९. | „ ७-६९. | „ ४४-१८, १९. |
| पित्तज | | „ ११-१४. | „ २९-१४, १५. | | „ ७-६९. | „ ४४-१९. |
| कफज | | „ ११-१४. | „ २९-१४, १५. | | „ ७-६९. | „ ४४-१९. |
| रक्तज | | „ ११-१५, १६ | „ २९-१६, १७. | ३८-२०, २१. | „ ७-६९. | „ ४४-२०, २१. |
| सांघज | | „ ११-१७, १८. | „ २९-१४, १५. | ३८-२२, २३. | „ ७-६९. | „ ४४-२२. |
| मेदोज | | „ ११-१४. चि. १८-४१. | „ २९-१२, १५. | | „ ७-६९. | „ ४४-१९. |
| शर्माबुद | | नि. १३-२५, २८. | „ २९-१७, १८. | ५५-२४. | „ ८-९१. | म. ४४-६१ ९८. |

| रोगाणां | १९५ | | | | | ५ |
|--------------------|--------------------------------|------------------------------------|---------------------------|----------------------------|--------------------------------|--------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. खो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. खो. | अ. हृदयम् स्था. अ. खो. | माधव- निदानम् अ. खो. | शार्ङ्गधर- संहिता अ. खो. | भायप्रकाशः रा. अ. खो. |
| अप्यर्बुद | | नि. ११-२०. | | ३८-२५. | | म. ४३-२४. |
| द्विर्बुद | | ,, ११-२०. | | ३८-२५. | | ,, ४३-२४. |
| अर्शस्- | वि. १४-७. | नि. २-४. वि. ६ | वि. ८. नि. ७-२. | ५-१, २. | पृ. ७-१२. | ,, ५. |
| शुष्क | | | ,, ७-९. | | ,, ७-१३. | |
| आर्द्र | | | ,, ७-९. | | ,, ७-१३. | |
| वातज | ,, १४-११-१३. | नि. २-१०. | ,, ७-२८-३४. | ५-३, ४. | ,, ७-१२. | ,, ५-१२-१७. |
| पित्तज | ,, १४-१४-१६. | ,, २-११. | ,, ७-३४-३७. | ५-५, ६. | ,, ७-१२. | ,, ५-१८-२०. |
| कफज | ,, १४-१७, १८. | ,, २-१२. | ,, ७-३७-४१. | ५-७, ८. | ,, ७-१२. | ,, ५-२८-३२. |
| रक्तज | | ,, २-१३. | ,, ७-४३-४५. | ५-२४-२६. | ,, ७-१२. | ,, ५-२१-२७. |
| सन्निपातज | ,, १४-२०. | ,, २-१४. | ,, ७-४२. | ५-९. | ,, ७-१२. | ,, ५-३४. |
| सहज | ,, १४-८. | ,, २-१५. | ,, ७-३. | | ,, ७-१३. | ,, ५-३५. |
| उत्तरकालज | ,, १४-९. | | ,, ७-३. | | ,, ७-१३. | |
| द्रव्यज | ,, १४-३०. | | ,, ७-४२. | ५-९. | ,, ७-१२. | ,, ५-३३. |
| अलसक- | वि. २-१२. | ठ. ५६-७, ८. | | ६-१९, २०. | ,, ७-१०. | ,, ६-२८, २९. |
| अर्म- | | ,, ४-३. | सू. ८-६-१०. | ५९-६५, ६६. | | |
| अलर्क- (जलवाय) | | क. ७-४३. | | ६९-७७-६३. | | |
| अश्मरी- | वि. २६-३६-३८. | नि. ३-३४. वि. ७ | नि. ९-६, ७. | ३२-१, २. | ,, ७-५९. | ,, ३६. |
| वातज | ,, २६. | नि. ३-१०. | ,, ९-११, १२. | ३२-६-८. | ,, ७-५९. | ,, ३६-६, ७. |
| पित्तज | | ,, ३-९. | ,, ९-१३. | ३२-८, ९. | ,, ७-५९. | ,, ३६-२१. |

| रोगाणां | १९६ | | | | | नामानि |
|---------------------------|------------------------|--------------------|----------------------|------------------|----------------------|-----------------------|
| नामानि- | सरक- संहिता | सुश्रुत- संहिता | अ. हृदयम् स्थितिः | आध्व- निदानम् | शार्ङ्गधर- संहिता | भावप्रकाशः |
| | स्था. अ. श्लो. | स्था. अ. श्लो. | स्था. प्र. श्लो. | अ. श्लो. | न. अ. श्लो. | न. अ. श्लो. |
| कफज | | नि. ३-८. | नि. १-१४. | ३२-१, १०. | पृ. १७-५. | न. ३६-२९. |
| शुक्राद्वरी | | ,, ३-११, १२. | ,, ३-१६-१८. | ३२-११-१४. | ,, ८-५९. | ,, ३६-३८. |
| शर्करा | नि. २६-३९. | ,, ३-११, १४. | ,, ९-१८, १९. | ३२-१४, १५. | ,, ७-५९. | ,, ३६-४०. |
| असृग्दूर- (रक्तप्रदूर) | ,, ३६-२०४- २२३. | शा. २-१८-२०. | उ. ३३-५३. | ६१-१, २. | ,, ७-१७६. | ,, ६८-३. |
| वातिक | | | | ६१-४. | ,, ७-१७६. | |
| पैत्तिक | | | | ६१-३. | ,, ७-१७६. | |
| कफज | | | | ६१-३. | ,, ७-१७६. | |
| शान्तिपातिः | | | | ६१-४. | ,, ७-१७६. | |
| आमदोष- | वि. २-१०. | सू. ४६-१, ०२. | सू. ८-१-३. | ६-२२. | ,, ७-१०. | |
| आलस्य | | | | | | ,, १-५४. |
| आमपित्त | ,, २२-१५. | | | | | ,, १-५५. |
| आमवात | | | | | ,, ७-४१. | ,, २५-२-९. ४९, ५०. |
| आलस्य | ,, २८-६६. ,, २९-११. | | ,, १५-४. | २४- | | ,, २८. |
| शार्ङ्गदोष- | वि. ३०-२०४- २१०. | शा. २-५. | | | ,, ७-१७५. | ,, ६८-३. |
| वातज | ,, ३०-२१२, २१३. | ,, २-५. | शा. १-१०. | | ,, ७-१७५. | ,, ६८-३. |
| पित्तज | ,, ३०-२१४- २१६. | ,, २- | ,, १-१०. | | ,, ७-१७५. | ,, ६८-५. |
| कफज | ,, ३०-२१६- २१८. | ,, २-५. | ,, १-१०. | | ,, ७-१७५. | ,, ६८-५. |

| रोगाणां | १९७ | | | | नामानि | |
|-------------------------|--------------------------------|------------------------------------|---------------------------|----------------------------|------------------------------------|--------------------------|
| रोगाणां नामानि- | सरक- संहिता स्था. अ. लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. लो. | अ. इत्यम् स्था. अ. लो. | नाभय- निदानम् अ. लो. | शार्ङ्गधर- संहिता रा. अ. लो. | भावप्रकाशः रा. अ. लो. |
| पित्तपित्तज | | ,, २-५. | | | ,, ७-१७५. | |
| रक्तज | | ,, २-५. | ,, १-११. | | ,, ७-१७५. | |
| धूम्रपातज | | ,, २-५. | ,, १-११. | | ,, ७-१७५. | |
| वातपित्तज | | ,, २-५. | ,, १-११. | | ,, ७-१७५. | |
| सन्निपातज | | शा. २-५. | शा. १-१२. | | पू. ७-१७५. | |
| आनाह (आधनाह)- | चि. २८-२९. | उ. ५६-२०, २१. | नि. ११-६०. | २७-१७. | ,, ७-४९. | म. ३०-१९. |
| प्रत्यानाह- | | | | | ,, ७-४९. | |
| उदररोग- | ,, १३-९, १५. | नि. ७-१-६. चि. १४-१. | ,, १२-१. | ३५-१, २. | ,, ७-५१. | ,, ४०-१-३. |
| वातज | ,, १३-२३- २५. | नि. ७-८, ९. चि. १४-५. | ,, १२-१४, १५. | ३५-५-८. | ,, ७-५१. | ,, ४०-१-८. |
| पित्तज | ,, १३-२६- २८. | नि. ७-९, १०. चि. १४-६. | ,, १२-१६, १७. | ३५-९, १०. | ,, ७-५१. | ,, ४०-९, १०. |
| कफज | ,, १३-२९- ३१. | नि. ७-१०. चि. १४-७. | ,, १२-१८, १९. | ३५-११, १२. | ,, ७-५१. | ,, ४०-९, १०. |
| सन्निपातज | ,, १३-३२- ३४. | नि. ७-११, १४. चि. १४-८. | ,, १२-२०, २१. | ३५-१३-१५. | ,, ७-५१. | ,, ४०-१२-१५. |
| प्लीहोदर शूलवात्युदर | ,, १३-३५- ३८. | नि. ७-१४, १६. चि. १४-१३. | ,, १२-२३- २७. | ३५-१९, २०. | ,, ७-५२. | ,, ४१-१७, १८. |
| वदग्निदोदर | ,, १३-३९- ४१. | नि. ७-१७, १८. चि. १४-१७. | ,, १२-२८- ३२. | ३५-१९, २०. | ,, ७-५२. | ,, ४१-१९, २०. |
| छिदोदर | ,, १३-४२- ४४. | नि. ७-१९-२१. चि. १४-१७. | ,, १२-३२- ३६. | ३५-२१, २२. | ,, ७-५२. | ,, ४१-२१, २२. |
| जलोदर | ,, १३-४५- ४८. | नि. ७-२१-२३. चि. १४-१८. | ,, १२-३६- ४०. | ३५-२२-२४, २५. | ,, ७-५२. | ,, ४१-२३, २४. |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता रवा. भ. ओ. | सुश्रुत- संहिता रवा. भ. ओ. | भ. हृदयम् रवा. भ. ओ. | माधव- निदानम् भ. ओ. | जाकभर- संहिता मं. भ. ओ. | भागवतः मं. भ. ओ. |
|--------------------|------------------------------|----------------------------------|-------------------------|---------------------------|-------------------------------|---------------------|
| अतःशोथः | वि. ११-१५- ५८. | | वि. ११-१३, ४४. | १०-३५. | पृ. ७-५७. | मं. ४१-३५. |
| उदाणतं- | .. २९-६-१०. | उ. ५०-१. | मृ. ४. | २७-१. | .. ७-४५. | .. १०. |
| दाउनिमदम् | .. १९-७. | .. ५५-७. | .. ४-३. | २७-२. | .. ७-४८. | .. १०-१. |
| मृशमिदम् | | .. ५५-९, १०. | .. ४-४, ५. | २७-४. | .. ७-४८. | .. १०-५. |
| पृथ्वीमिदम् | | .. ५५-८, ९. | .. ४-३, ४. | २७-३. | .. ७-४८. | .. १०-४. |
| सुश्रुमिदम् | | .. ५५-१५. | .. ४-११, २०. | २७-१०. | .. ७-४७. | .. १०-१३. |
| तर्जिमिदम् | | .. ५५-१४. | .. ४-१७. | २७-९. | .. ७-४६. | .. १०-१०. |
| धन्वमिदम् | | .. ५५-१३. | .. ४-९. | २७-७. | .. ७-४६. | .. १०-८. |
| हृन्मिदम् | | .. ५५-११. | .. ४-१०. | २७-५. | .. ७-४७. | .. १०-६. |
| अनुमिदम् | | .. ५५-१२. | .. ४-१२. | २७-६. | .. ७-४७. | .. १०-६. |
| उद्वेगमिदम् | | .. ५५-१४. | .. ४-७, ८. | २७-८. | .. ७-४७. | .. १०-९. |
| पुनःपिथम् | | .. ५५-१६. | .. ४-१३, १२. | २७-११. | .. ७-४५. | .. १०-१२. |
| सुप्तापिथम् | | .. ५५-१६. | .. ४-१०, ११. | २७-११. | .. ७-४५. | .. १०-१३. |
| धन्वपिथम् | | .. ५५-१७. | .. ४-१४. | २७-१२. | .. ७-४६. | .. १०-१४. |
| निशपिथम् | | .. ५५-१७. | .. ४-१७. | २७-१३. | .. ७-४६. | .. १०-१५. |
| कासपिथम् | | | .. ४-१३, १४. | | | |
| उन्माद- | वि. ७-४. वि. ९-३, ४. | .. ६९-३. | उ. ६-१. | २०-१. | .. ७-३७. | .. २१-६. |
| वातः | वि. ७-७ १ वि. ९-१०. | .. ६२-८. | .. ६-९-१०. | २०-७, ८. | .. ७-३७. | .. २१-८. |
| पित्तः | वि. ७-७ २ वि. ९-११, १२. | .. ६२-९. | .. ६-१०, ११. | २०-९, १०. | .. ७-३७. | .. २१-१०. |

| रोगाणां | १९९ | | | | नामानि | |
|--------------------|---|--------------------|-------------------------------|------------------|----------------------|--------------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता | सुश्रुत- संहिता | अ. हृदयम् स्था. अ. स्त्रो. | माधव- निदानम् | शार्ङ्गधर- संहिता | भावप्रकाशः स्था. अ. स्त्रो. |
| कफज | नि. ७-७ । ३. ठ. ६२-१०. चि. ९-१३, १४. | स्था. अ. स्त्रो. | स्था. अ. स्त्रो. १३. | २०-११, १२. | पू. ७-३७. | म. २१-१२. |
| सन्निपातज | नि. ७-७. चि. ९-१५. | „ ६२-११. | „ ६-१४. | २०-१३. | „ ७-३७. | „ २१-१३. |
| आगन्तुज | नि. ७-१०. चि. ९-१६. | „ ६०-७. | „ ६-१५- १७. | २०-१४, १५. | „ ७-३७. | „ २१-१५, १६. |
| शोकादिज, विपज | | | „ ६-१५-१७. | २०-१५. | „ ७-३७. | |
| देवोन्माद | „ ९-२०. | „ ६०-८. | | २०-१८. | „ ७-३८. | „ २१-१९. |
| देवप्रहोन्माद | | „ ६०-९. | | २०-१९. | „ ७-३८. | „ २१-२०. |
| गन्धर्वोन्माद | „ ९-२०. | „ ६०-१०. | | २०-२०. | „ ७-३८. | „ २१-२१. |
| यक्षोन्माद | „ ९-२०. | „ ६०-११. | | २०-२१. | „ ७-३८. | „ २१-२२. |
| पित्तोन्माद | „ ९-२०. | „ ६०-१२. | | २०-२२. | „ ७-३८. | „ २१-२३. |
| भुजगोन्माद | | „ ६०-१३. | | २०-२३. | „ ७-३९. | „ २१-२४. |
| राक्षसोन्माद | „ ९-२०. | „ ६०-१४. | | २०-२४. | „ ७-३९, ४०. | „ २१-२५. |
| विशाचोन्माद | „ ९-२०. | „ ६०-१५. | | २०-२५. | „ ७-३९. | „ २१-२७. |
| वार्धकोन्माद | | „ ६०-१६. | | | „ ७-३८. | |
| किन्नरोन्माद | | | | | „ ७-३८. | |
| गुह्यापोन्माद | „ ९-२०. | | | | „ ७-३९. | |
| प्रेतोन्माद | | | | | „ ७-३९. | |
| सिद्धोन्माद | „ ९-२०. | | | | „ ७-३९. | |
| अद्रुतोन्माद | | | | | „ ७-३९. | |
| जलाधिदेवतोन्माद | | | | | „ ७-३९. | |

| रोगाणां | २०० | | | | नामानि | |
|--------------------|--------------------------------|------------------------------------|--------------------------|----------------------------|--------------------------------|------------------------|
| रोगाणां नामानि- | अरक- संहिता स्था. अ. खो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. खो. | अ. हृदम् स्था. अ. खो. | माधव- निदानम् अ. खो. | शाहीधर- संहिता स. अ. खो. | भास्कराशः स. अ. खो. |
| ब्रह्मराक्षसोन्माद | वि. ९-२०. | | | | पृ. ७-३०. | म. २१-२६. |
| ब्रह्माण्डोन्माद | | | | | ,, ७-४०. | |
| कृत्तवोन्माद | | | | | ,, ७-४०. | |
| वेतालोन्माद | | | | | ,, ७-४०. | |
| गुह्योन्माद | | | | | ,, ७-४०. | |
| भूतोन्माद | वि. ९-१७. | | | २०-१७. | ,, ७-३८. | |
| उपदंश- | | नि. १२-७. | स. ३३-५. | ४७. | ,, ७-८२. | ,, ५०. |
| वातज | | ,, १२-९. | ,, ३३-५, ६. | ४७-२. | ,, ७-८२. | ,, ५०-२. |
| पित्तज | | ,, १२-९. | ,, ३३-६. | ४७-२. | ,, ७-८२. | ,, ५०-२. |
| कफज | | ,, १२-९. | ,, ३३-७. | ४७-३. | ,, ७-८२. | ,, ५०-३. |
| सन्निवृत्तज | | ,, १२-९. | ,, ३३-८. | ४७-४. | ,, ७-८३. | ,, ५०-३. |
| रक्तज | | ,, १२-९. | ,, ३३-७. | | ,, ७-८३. | ,, ५०-३. |
| उपलक्षिता- | सू. १८-१९, वि. १२-७७. | ,, १६-३९. | ,, २१-३५. | ५६-३२. | ,, ७-१३५. | ,, ६५-९१. |
| कफरोग- | ,, २७. | वि. ५-३१, ३२. | | २१-१. | ,, ७-१०५. | ,, २४. |
| कफरोग- | सू. २०-१७. | | | | ,, ७-१२२- १२५. | ,, २७-२-५. |
| कफरोग- | वि. २६-१२७, ३. २०. १२८. | | ,, १७-१. | ५७. | ,, ७-१४२- १४४. | ,, २-६३. |
| वातज | ,, २६-१२७, १२८. | | ,, १७-१-३. | ५७-३४. | ,, ७-१४२. | ,, ६३-२०. |
| पित्तज | ,, २६-१२७, १२८. | | ,, १७-४, ५. | ५७-१४. | ,, ७-१४२. | ,, ६३-२१. |
| कफज | ,, २६-१२७, १२८. | | ,, १७-५, ६. | ५७-१५. | ,, ७-१४२. | ,, ६३-२२. |

| रोगाणां नामानि- | वरक- संहिता स्या. अ. श्लो. | जुष्ट- संहिता स्या. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्या. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता अ. श्लो. | भास्कराक्षः अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|----------------------------------|-------------------------|
| सन्निपातज | वि. २६-१२७, १२८. | | २. १७-७,८. | ५७-१५. | पृ. ७-१४२. | म. ६३-२३. |
| रक्तज | | | ॥ १७-६,७. | | | |
| कर्णकण्ड | ॥ २६-१२८. | उ. २०-११. | ॥ १७-१२. | ५७-६. | | ॥ ६३-११. |
| कर्णवेष्ट | ॥ २६-१२८. | ॥ २०-९. | ॥ १७-१२. | ५७-४. | ॥ १-१४३. | ॥ ६३-९. |
| कर्णमूषक | | ॥ २०-११. | | ५७-६. | | ॥ ६३-११. |
| कर्णनाद | ॥ २६-१२८. | ॥ २०-७. | ॥ १७-९. | ५७-२. | ॥ ७-१४४. | ॥ ६३-६. |
| कर्णपाक | | ॥ २०-२५. | | ५७-१२. | | |
| कर्णप्रतिनाह | | ॥ २०-१२. | ॥ १७-११. | ५७-७. | ॥ ७-१४४. | ॥ ६३-१३. |
| कर्णनिक्षिपि | | ॥ २०-१४. | ॥ १७-१४, १५. | ५७-११. | ॥ ७-१४३. | ॥ ६३-१६. |
| कर्णलोष | ॥ २६-१२७, १२८. | ॥ २०-१६. | ॥ १७-१२. | ५७-१३. | ॥ ७-१४३. | ॥ ६३-१९. |
| कर्णस्त्राव | ॥ २६-१२७. | ॥ २०-१०. | | ५७-५. | ॥ ७-१४३. | ॥ ६३-१०. |
| कर्णाग्निर | | ॥ २०-१७. | ॥ १७-१५. | ५७-१३. | ॥ ७-१४३. | ॥ ६३-१५. |
| कर्णाग्नि | | ॥ २०-१६. | ॥ १७-३७. | ५७-१३. | ॥ ७-१४३. | ॥ ६३-१५. |
| कर्णमूषक | | ॥ २०-१२. | ॥ १-१३, १४. | ५७-१३. | ॥ १-१३. | ॥ ६३-१४. |
| कर्णनिर्ण | ॥ २६-१२७. | ॥ २०-१५. | ॥ १७-१३. | ५७-१३. | ॥ २-१४२. | ॥ ६३-१८. |
| कर्णनिर्ण | ॥ २६-१२७. | ॥ २०-८. | ॥ १७-१०. | ५७-३. | ॥ ७-१४३. | ॥ ६३-७. |
| कर्णशूल- | वि. २६-१२७. | ॥ २०-६. | ॥ १७-१२, १३. | | ॥ ७-१४३. | ॥ ६३-१८. |
| कर्णपालिरोग- | | वि. २५. | | | ॥ ७-१४३. | ॥ ६३-२४. |
| ज्वरात | | ॥ २५-६, ७. | उ. १७-२१, २२. | ५७-१७, १८. | ॥ ७-१४३. | ॥ ६३-२५. |

| रोगाणां | २०२ | | | | | नामानि |
|---------------|------------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|--------------------------|
| नामानि- | धरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता स. अ. श्लो. | आचप्रकाशः स. अ. श्लो. |
| अभ्यसक | | नि. २५-८. | स. १७-२२, २३. | ५७-१८- २०. | पृ. ७-१४५. | म. ६३-२६. |
| विषपत्नी | | | ,, १७-१६, १७. | | ,, ७-१४५. | ,, ६३-१६. |
| दुःखवर्धन | | ,, २५-९. | ,, १७-२३, २४. | ५७-२०. | ,, ७-१४५. | ,, ६३-२७. |
| गरिपोटक | | ,, २५-५. | ,, १७-२०, २१. | ५७-२०. | ,, ७-१४५. | ,, ६३-२४. |
| परिलंही | | ,, २५-१०, ११. | ,, १७-२४, २५. | ५७-२१, २२. | ,, ७-१४५. | ,, ६३-२८. |
| पालिशोष | | | ,, १७-१९. | | ,, ७-१४५. | ,, ६३-५०. |
| निवारि | | | | | ,, ७-१४५. | |
| फास- | दि. १८. | च. ५२. | नि. ३-२२. | ११. | ,, ७-२१. | ,, ११. |
| वातज | ,, १८-१०-१३. | ,, ५२-८. | ,, ३-२२-२४. | ११-५. | ,, ७-२१. | ,, ११-५. |
| पित्तज | ,, १८-१४-१६. | ,, ५२-९. | ,, ३-२४, २५. | ११-६. | ,, ७-२१. | ,, ११-६. |
| कफज | ,, १८-१७- १९. | ,, ५२-१०. | ,, ३-२६, २७. | ११-७. | ,, ७-२१. | ,, ११-७. |
| क्षतज | ,, १८-२०- २३. | ,, ५२-११. | ,, ३-२७-३२. | ११-८-११. | ,, ७-२२. | ,, ११-८-११. |
| स्रवज | ,, १८-२४- ३०. | ,, ५२-१२. | ,, ३-३२-३५. | ११-१२, १३. | ,, ७-२२. | ,, ११-१२-१४. |
| कामला- | नि. १६-३४-३६., सू. १९-४ ७. | ,, ४४-१०. | नि. १३-१५. | ८-१६-१८. | ,, ७-१९. | ,, ८-२०. |
| कोष्ठाश्रित | ,, १९-४ ७. चि १६-३६ | | नि. १३-१६. | ९-१८. | | ,, ८-२०. |
| कुम्भकामला | ,, १६-३७. | ,, ४४-११. | नि. १३-१८. | ८-१९. | ,, ७-२०. | ,, ८-२१. |
| ग्रास्ताश्रित | चि. १६-३४, ३६. सू. १९-४ ७. | | ,, १३-१६. | ८-१८. | | ,, ८-२१. |

| रोगाणां | २०३ | | | | | | नामानि |
|---------------|------------------------------------|--|-------------------------------|--------------------------------|---------------------------------------|-------------------------|--------|
| नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. स्त्री. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. स्त्री. | अ. हृदयम् स्था. अ. स्त्री. | मायव- निदानम् अ. स्त्री. | शार्ङ्गधर- संहिता न. अ. स्त्री. | भागवतः न. अ. स्त्री. | |
| अलघ | | च. ४४-१२. | वि. १३-१९. | | | | |
| पानकी | | ,, ४४-६. | | ८-२३. | | | |
| लापरक | | ,, ४४-१२. | | | | | |
| लोदर | | | वि. १३-१९. | | | | |
| किलास- | वि. ७-१७३. | नि. ५-१७. | नि. १४-३७. | ४९-२६. | | म. ५३-४५. | |
| किणिस- | शा. ८-३२. | | शा. १-५८. | | | | |
| कुष्ठ- | नि. ५-६. चि. ७-१३. | नि. ५. | नि. १४. | ४९-१-६. | | ,, ५३. | |
| कपास | नि. ५-८. चि. ७-१४. | ,, ५-८. | ,, १४-१३. १४. | ४९-१०. ११. | पू. ७-८७. | ,, ५३-१८. | |
| उदुम्बर | नि. ५-८. चि. ७-१५. | ,, ५-८. | ,, १५-१६. | ४९-११. १२. | ,, ७-८७. | ,, ५३-१९. | |
| मण्डल | नि. ५-८. चि. ७-१६. | ,, ५-८. | ,, १५-१६. १७. | ४९-१२. १३. | ,, ७-८७. | ,, ५३-२०. | |
| श्लेष्मजिह्वक | नि. ५-८. चि. ७-१८. | ,, ५-८. | ,, १५-१८. १९. | ४९-१३. १४. | ,, ७-८८. | ,, ५३-२४. | |
| पुण्डरीक | नि. ५-८. चि. ७-१८. | ,, ५-८. | ,, १५-२६. २७. | ४९-१४. १५. | ,, ७-८९. | ,, ५३-२३. | |
| क्षिप्त | नि. ५-८. चि. ७-१९. | ,, ५-१२. | ,, १५-२१. २२. | ४९-१५. १६. | ,, ७-८८. | ,, ५३-२१. | |
| कारणक | नि. ५-८. चि. ७-२०. | ,, ५-८. | ,, १५-२९. ३०. | ४९-१६. १७. | ,, ७-९०. | ,, ५३-२२. | |
| एककुष्ठ | ,, ७-२१. | ,, ५-१०. | ,, १५-२०. | ४९-१७, १८. | ,, ७-८८. | ,, ५३-२५. | |
| चर्म | ,, ७-२१. | ,, ५-१०. | ,, १५-२०. | ४९-१८. | ,, ७-८९. | ,, ५३-२५. | |
| किटिम | ,, ७-२२. | ,, ५-१४. | ,, १५-२०. | ४९-१८. | ,, ७-८८. | ,, ५३-२३. | |

| रोगाणां | २०४ | | | | नामानि | |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|----------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शङ्खधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| विषादिह | वि. ७-२३. | नि. ५-२३. | मि. १५-२३. | ४९-१९. | पू. ७-८८. | म. ५३-२८. |
| अलसक | ,, ७-२३. | ,, ५. | ,, १५-२२, २३. | ४९-१९. | ,, ७-८८. | ,, ५३-३४. |
| रुद्ध | ,, ७-२३. | ,, ५-८. | ,, १५-२४. | ४९-२०. | ,, ७-८९. | ,, ५३-३१. |
| चर्मदल | ,, ७-२४. | ,, ५-१०. | ,, १५-२९. | ४९-२०. | ,, ७-८९. | ,, ५३-२६. |
| पामा (रुक्म) | ,, ७-२५. | ,, ५-१४. | ,, १५-२८. | ४९-२१. | ,, ७-८९. | ,, ५३-२९, ३०. |
| विस्फोटक | ,, ७-२५. | | ,, १५-१७. | ४९-२२. | ,, ७-८९. | ,, ५३-३२. |
| शताव | ,, ७-२६. | | ,, १५-२५. | ४९-२२. | ,, ७-८९. | ,, ५३-३५. |
| विचर्षिका | ,, ७-२६. | ,, ५-१३. | ,, १४-१८. | ४९-२३. | ,, ७-८७. | ,, ५३-२७. |
| स्थूलाकृक | ,, ७-२७. | ,, ५-९. | ,, १४-१९. | | | |
| महाकुष्ठ | ,, ७-२७. | ,, ५-९. | | | | |
| धित्र | ,, ७-१७३. | | ,, १४-३७. | ४९-३६. | ,, ७-९०. | ,, ५३. |
| रकसा | | ,, ५-१५. | ,, १४-३८. | | | |
| क्लैश्य- | ,, ३०. | | | | | ,, ७१-२. |
| बीजोपघातज | ,, ३०-१५८- १६२. | | | | | ,, ७१-७. |
| ध्वजमज्जन | ,, ३०-१६३- १७५. | | | | | ,, ७१-३. |
| अराजग्न्य | ,, ३०-१७६- १८०. | | | | | |
| शुष्कक्षयज | ,, ३०-१८२- १८५. | | | | | ,, ७१-५. |
| पैत्रिक | | | | | | ,, ७१-४. |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुधृत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | नार्मधर- संहिता न. अ. श्लो. | भाष्यप्रकाशः न. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-----------------------------------|-----------------------------|
| जिगृह्यजम्ब | | | | | | न. ११-६. |
| सहज | | | | | | ,, ७१-८. |
| स्त्रीय- ईर्ष्य | शा. २-२०. | शा. २-४०. | शा. १-७२. | | पू. ७-१७१. | |
| आतपय | | ,, २-३८. | ,, १-७२. | | ,, ७-१७१. | |
| कुम्भीक | | ,, २-४०. | | | ,, ७-१७१. | |
| सुगन्धिन् | | ,, २-३९. | | | ,, ७-१७१. | |
| पण्ड | | ,, २-४०. | | | ,, ७-१७१. | |
| वृणुत्रि | शा. ४-३१. वि. २-१८९. | | | | | |
| वार्ता | शा. ४-३०. | | | | | |
| रुमि- | सू. १९-९. | | | | | ,, ७. |
| वाह्यज- यूश | ,, १९-९. | | नि. १४-४४. ७-३. | | ,, ७-१४. | ,, ७-३. |
| लिङ्गा | ,, १९-९. | | ,, १४-४४. ७-३. | | ,, ७-१४. | ,, ७-३. |
| पिपीलिङ्गा | सू. १९-९. वि. ७-१०. | स. ५४-१२. | | | | |
| रक्तज- केशाद | सू. १९-९. वि. ७-११. | ,, ५४-१५. | ,, १४-५२. ७-१७. | | ,, ७-१५. | ,, ७-१४. |
| योमाद | सू. १९-९. वि. ७-११. | ,, ५४-१५. | ,, १४-५२. ७-१२. | | ,, ७-१५. | ,, ७-१४. |
| लोमविध्वंस | सू. १९-९. | | ,, १४-५२. ७-१२. | | ,, ७-१५. | ,, ७-१४. |
| लोमक्षीप | वि. ७-११. | | ,, १४-५२. ७-१२. | | ,, ७-१५. | |
| सौरभ | सू. १९-९. वि. ७-११. | | ,, १४-५२. ७-१२. | | ,, ७-१५. | ,, ७-१४. |
| ओदुम्बर | सू. १९-९. वि. ७-११. | | ,, १४-५२. ७-१२. | | ,, ७-१५. | ,, ७-१४. |

| रोगाणां | २०६ | | | | | | नामानि |
|-----------------------|------------------------|--------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|-----------------------------|--------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता | सुश्रुत- संहिता | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भाष्यप्रकाशः ख. अ. श्लो. | |
| जन्तुमारु | सू. १९-९. वि. ७-१२. | | नि. १४-५२. | ७-१२. | पू. ७-१६. | म. ७-१४. | |
| कफज- अन्वाह | सू. १९-९. वि. ७-१२. | | ,, १४-४९. | ७-९. | ,, ७-१५. | ,, ७-१०. | |
| उदराह- (उदरावेष्ट) | सू. १९-९. वि. ७-१२. | | ,, १४-४९. | ७-९. | ,, ७-१५. | ,, ७-१०. | |
| हृदयाह- (हृदयोदक) | सू. १९-९. वि. ७-१२. | | ,, १४-४९. | ७-९. | ,, ७-१५. | ,, ७-१०. | |
| चुर (कुर) | सू. १९-९. वि. ७-१२. | उ. ५४-६. | ,, १४-४९. | ७-१०. | ,, ७-१५. | ,, ७-१०. | |
| दर्मपुण | सू. १९-९. वि. ७-१२. | ,, ५४-१२. | ,, १४-४९. | ७-१०. | ,, ७-१६. | ,, ७-१०. | |
| सौगन्धिक | सू. १९-९. वि. ७-१२. | | ,, १४-४९. | ७-४९. | ,, ७-१६. | ,, ७-१०. | |
| महापुद- (महाकुह) | सू. १९-९. वि. ७-१२. | | ,, १४-४९. | ७-९. | ,, ७-१५. | ,, ७-१०. | |
| पुरीषज- मकेरु | सू. १९-९. वि. ७-१३. | ,, ५४-८. | ,, १४-५५. | ७-१५. | ,, ७-१७. | ,, ७-१०. | |
| मकेरु | सू. १९-९. वि. ७-१३. | | ,, १४-५५. | ७-१५. | ,, ७-१७. | ,, ७-१०. | |
| लेलिह | सू. १९-९. वि. ७-१३. | | ,, १४-५५. | ७-१५. | ,, ७-१७. | ,, ७-१०. | |
| मृश- (मुल्लाह) | सू. १९-९. वि. ७-१३. | ,, ५४-१२. | ,, १४-५५. | ७-१५. | ,, ७-१७. | ,, ७-१०. | |
| मृश- (मौसल) | सू. १९-९. वि. ७-१३. | | ,, १४-५५. | ७-१५. | ,, ७-१७. | ,, ७-१०. | |

| रोगाणां | २०७ | | | | नामानि | |
|--------------------|---------------------------------|-------------------------------------|----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|----------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता रघा. अ. स्तो. | सुश्रुत- संहिता रघा. अ. स्तो. | अ. हृदयम् रघा. अ. स्तो. | माधव- निदानम् अ. स्तो. | शार्ङ्गधर- संहिता ग. अ. स्तो. | भावप्रकाशः रघ. अ. स्तो. |
| आमय | | ठ. ५४-८. | | | | |
| वित्रय | | ,, ५४-८. | | | | |
| हृष्य | | ,, ५४-८. | | | | |
| विष | | ,, ५४-८. | | | | |
| गणहरद | | ,, ५४-८. | | | | |
| सूत | | ,, ५४-८. | | | | |
| हिसुत | | ,, ५४-८. | | | | |
| महापुष्प | | ,, ५४-१२. | | | | |
| प्रसून | | ,, ५४-१२. | | | | |
| निपिट | | ,, ५४-१२. | | | | |
| पिरीलिका | | ,, ५४-१२. | | | | |
| दाहण | | ,, ५४-८. | | | | |
| शोणितज- | | | | | | |
| केगाद | | ,, ५४-१५. | नि. १४-५२. ७-१२. | | पृ. ७-१७. | |
| रोमाद | | ,, ५४-१५. | | | | |
| नराद | | ,, ५४-१५. | | | | |
| दन्ताद | | ,, ५४-१५. | | | | |
| किफिश | | ,, ५४-१५. | | | | |
| कुष्ठज | | ,, ५४-१५. | | | | |
| परीतर्प | | ,, ५४-१५. | | | ,, ७-१८. | |
| स्नायुः | चि. २९-११. | | | | | |
| खुड- | | | नि. १६-४. | | | |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| गण्डमाला— | नि. १२-७९. | नि. ११-१०, १२. | उ. २९-२५. | ३८-८,९. | पू. ७-६७. | म. ४४-८. |
| गर्भिणीरोग— | | | | | | |
| उपविष्टक | शा. ८-२६. | | शा. २-१५. | | ,, ७-१८१. | |
| नागोदर | ,, ८-२६. | शा. १०-५७ | शा. २-१६, | | ,, ७-१८१. | |
| लीनगर्भ | | ,, १०-५७. | ,, २-१८. | | ,, ७-१८१. | |
| मृतगर्भ | ,, ८-३०. | नि. ८-१२, १३. | ,, २-२३. | | | म. ७०-११७. |
| मूढगर्भ | | ,, ८-४,५. | ,, २-२९, ३०. | ६४-४-६. | ,, ७-१८१. | ,, ७०-११३. |
| विष्कम्भ | | | ,, २-२९,३०. | | ,, ७-१८१. | |
| विक्लिस | शा. ८-३२. | | ,, १-५८. | | | |
| गलगण्ड— | मू. १८-२१. चि. १२-७९. | नि. ११-२२. | उ. २१-५३. | ३८-१,२. | ,, ७-१३९. | ,, ४४-१. |
| गुल्म— | नि. ३-७. चि. ५-४८. | उ. ४२-४. | नि. ११-३३- ३८. | २८-१-३. | ,, ७-५२. | ,, ३२-१. |
| वातज | नि. ३-७. चि. ५-८-११. | ,, ४२-१०. | ,, ११-४१- ४४. | २८-१-८. | ,, ७-५२. | ,, ३२-१०. |
| पित्तज | नि. ३-९. चि. ५-१२,१३ | ,, ४२-११. | ,, ११-४४, ४५. | २८-९,१०. | ,, ७-५२. | ,, ३२-१२. |
| कफज | नि. ३-११. चि. ५-१५ | ,, ४२-१२. | ,, ११-४६, ४७. | २८-११,१२ | ,, ७-५२. | ,, ४-१४. |
| रक्तज | नि. ३-१३. चि. ५-१८. | ,, ४२-१३- १५. | ,, ११-४९- ५५. | २८-१५,१६. | ,, ७-५३. | ,, ४-१७,१८. |
| सन्निपातज | नि. ३-१२. चि. ५-१७. | ,, ४२-१३. | ,, ११-४८. | २८-१४. | ,, ७-५३. | ,, ४-१४. |
| द्वन्द्वज | ,, ५-६. | | ,, ११-४८. | २८-१३. | ,, ७-५३. | ,, ४-१५. |

| रोगाणां | २०९ | | | | | नामानि |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| ग्रहणीदोष- | चि. १५-५१-५७. उ. ४०-१६६-१७२. | नि. ८-१५. | ४-१-३. | पू. ७-८. | म. ४-१. | |
| वातज | ,, १५-५९-६४. | ,, ४०-१७५. | ,, ८-२३, २४. | ४-५-१०. | ,, ७-८. | ,, ४-७-१८. |
| पित्तज | ,, १५-६५, ६६. | ,, ४०-१७६. | ,, ८-२५, २६. | ४-११, १२. | ,, ७-८. | ,, ४-१३, १४. |
| कफज | ,, १५-६७-७०. | ,, ४०-१७६. | ,, ८-२६-२९. | ४-१३-१६. | ,, ७-८. | ,, ४-१५-१८. |
| आमज | | | | | ,, ७-८. | |
| सन्निपातज | ,, १५-७१, ७२. | ,, ४०-१७६. | ,, ८-२९. | ४-१७. | ,, ७-८. | ,, ४-१९. |
| संग्रहग्रहणी | | | | ४-१७ ३. | | ,, ४-२०-२२. |
| घटीयन्त्र | | | | ४-१७ ४. | | ,, ४-२४. |
| अस्थि- | ,, १२-८१, ८२. | नि. ११-३. | ,, २९-१. | ३८-११. | ,, ७-६८. | ,, ४४-११. |
| वातज | | ,, ११-४. | ,, २९-२, ३. | ३९-१२. | ,, ७-६८. | ,, ४४-१२. |
| पित्तज | | ,, ११-५. | ,, २९-४. | ३८-१३. | ,, ७-६८. | ,, ४४-१३. |
| कफज | | ,, ११-६. | ,, २९-४, ५. | ३८-१४. | ,, ७-६८. | ,, ४४-१४. |
| मेदोज | | ,, ११-७. | ,, २९-५-९. | ३८-१५. | ,, ७-६८. | ,, ४४-१५. |
| तिराज | | ,, ११-८. | ,, २९-१०, ११. | ३८-१६, १७. | ,, ७-६८. | ,, ४४-१६. |
| रक्तज | | ,, ११-८, ९. | ,, २९-५, ६. | | ,, ७-६८. | |
| अस्थिज | | | ,, २९-८. | | ,, ७-६९. | |
| मांसज | | | ,, २९-६, ७. | | ,, ७-६९. | |
| मणज | | ,, २९-१३. | ,, २९-१२, १३. | | ,, ७-६८. | |
| जनपदोद्धृत- | नि. ३-४. | सू. ६-११-१७. | | | | |
| लीयविकार- | | | | | | |
| जाठराग्निविकार- | नि. ६-१२. | सू. ३५-२४. | | ६. | | ,, ६ |
| मन्दाग्नि | ,, ६-१२. | ,, ३५-२४. | सू. १-८. | ६-३. | ,, ७-२७. | ,, ७-६. |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शाङ्गिधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|------------------------------------|---------------------------|
| विषमग्नि | नि. ६-१२. | सू. ३५-२४. | सू. १-८. | ६-३, ४. | पृ. ७-२७. | म. ६-२. |
| तीक्ष्णग्नि | ,, ६-१२. | ,, ३५-२४. | ,, १-८. | ६-४. | ,, ७-२६. | ,, ६-३. |
| अथग्नि (भस्मक) | ,, १५-२२१. | | | | ,, ७-२७. | ,, ६-९. |
| ज्वर— | नि. १-२०. चि. ३. | सू. ३९-१३. | नि. २-१, २. | २-३. | ,, ७-२. | ,, १-९. |
| वातज | नि. १-२१. | ,, ३९-२९, ३०. | ,, २-१०- १८. | २-८, ९. | ,, ७-२. | ,, १-२९२ २९५. |
| पित्तज | ,, १-२४. | ,, ३९-३१, ३२. | ,, २-१८- २०. | २-१०, ११. | ,, ७-२. | ,, १-३३८- ३४०. |
| कफज | ,, १-२७. | ,, ३९-३३, ३४. | ,, २-२१, २२. | २-१२, १३. | ,, ७-२. | ,, १-३७१, ३७२. |
| वातकफज | ,, १-२९. चि. ३-८७. | ,, ३९-४७- ४९. | ,, २-२५. | २-१५, १६. | ,, ७-२. | ,, १-४०१. |
| वातपित्तज | नि. १-२९. चि. ३-८६. | ,, ३९-४७, ४८. | ,, २-२४. | २-१४, १५. | ,, ७-२. | ,, १-३९१. |
| पित्तकफज | नि. १-२९. चि. ३-८८. | ,, ३९-५०. | ,, २-२६. | २-१७. | ,, ७-२. | ,, १-४२७. |
| सन्निपातज | नि. १-२९. चि. ३-८९- १०२. | ,, ३९-३५- ३८. | ,, २-२७-३३. | २-१८- २३. | ,, ७-३. | ,, १-४४०- ४४४. |
| आगन्तुज | नि. १-३०. चि. ३-१११. | ,, ३९-७६- ८०. | ,, २-३८- ४५. | २-२६- ३१. | ,, ७-५. | ,, १-८९५. |
| विषमज्वर— | ,, ३-५३- ७३. | ,, ३९-२९- ७०. | ,, २-६४- ६१. | २-३१, ३२. | ,, ७-३. | ,, १-७१९. |
| सन्तत | ,, ३-५३- ६०. | ,, ३९-६७. | ,, २-५८, ५९. | २-३४. | ,, ७-४. | ,, १-२४. |
| सतत | ,, ३-३१. | ,, ३९-७०. | ,, २-६९. | २-३५. | ,, ७-४. | ,, १-७२५. |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता स्त. अ. श्लो. | भावप्रकाशः स्त. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|---------------------------------------|-----------------------------|
| अन्येषुष्क | वि. ३-६२. | सू. ३९-७०. | सू. २-७०. | २-३५. | पू. ७-४. | म. १-७२६. |
| तृतीयक | ,, ३-६४. | ,, ३९-७१. | ,, २-७०, ७१. | २-३६. | ,, ७-४. | ,, १-७२७. |
| चतुर्थक | ,, ३-६४- ६७. | ,, ३९-७१. | ,, २-७२, ७३. | २-३६. | ,, ७-४. | ,, १-७२९. |
| चतुर्थकविपर्यय | ,, ३-७३. | | ,, २-७३, ७४. | २-३९. | | ,, १-७३६- ७३९. |
| सन्निपातज- | | | | | | |
| कुम्भग्रीवाक | | | | | | ,, १-५१०. |
| पार्श्वनाव | | | | | | ,, १-५११. |
| प्रतापी | | | | | | ,, १-५१२. |
| अन्तर्दह | | | | | | ,, १-५१३. |
| दण्डरात | | | | | | ,, १-५१४. |
| अन्तक | | | | | | ,, १-५१५. |
| एणीराह | | | | | | ,, १-५१६. |
| हारेद्र | | | | | | ,, १-५१७. |
| अजघोष | | | | | | ,, १-५१८. |
| भूतहास | | | | | | ,, १-५१९. |
| सन्निपातज | | | | | | ,, १-५२०. |
| संश्लेष | | | | | | ,, १-५२१. |
| संश्लेषी | | | | | | ,, १-५२२. |
| शीतान्न | | | | | | ,, १-५२३. |
| तन्निक्ष | | | | | | ,, १-५२४. |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्या. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्या. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्या. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| प्रलापक | | | | | | म. १-४९५. |
| रक्तजीवी | | | | | | ,, १-४९६. |
| अभिन्यास | | | | | | ,, १-४९८. |
| जिह्वक | | | | | | ,, १-४९९. |
| सन्धिघ्न | | | | | | ,, १-५००. |
| अन्तक | | | | | | ,, १-५०१. |
| रुग्दाहि | | | | | | ,, १-५०२. |
| चित्तविभ्रम | | | | | | ,, १-५०३. |
| कर्णिक | | | | | | ,, १-५०४. |
| कण्ठकुञ्ज | | | | | | ,, १-५०५. |
| भुग्ननेत्र | | | | | | ,, १-५०७. |

सप्तधातुगत ज्वर—

| | | | | | |
|-----------|----------------|---------------|---------------|-------|---------------------|
| रक्तजन्य | वि. ३-७६. | च. ३९-८३. | नि. २-५८, ५९. | २-४८. | ,, १-८०१. |
| रक्तजन्य | , ३-७७. | ,, ३९-८४. | ,, २-६९. | २-४९. | ,, १-८०३. |
| मांसजन्य | ,, ३-७८. | ,, ३९-८५. | ,, ३-७०. | २-५०. | ,, १-८०५. |
| मेदोजन्य | ,, ३-७९. | ,, ३९-८६. | ,, २-७०, ७१. | २-५१. | ,, १-८०७. |
| अस्थिजन्य | ,, ३-८०. | ,, ३९-८७. | ,, २-७२, ७३. | २-५२. | ,, १-८०९. |
| मज्जाजन्य | ,, ३-८१. | ,, ३९-८८. | ,, २-७३, ७३. | २-५३. | ,, १-८११. |
| शुक्रजन्य | ,, ३-८२. | ,, ३९-८८, ८९. | | २-५४. | ,, १-८१२. |
| आगन्तु— | | ,, ३९-१४. | | २-२६. | पू. ७-५. , , १-६९५. |
| . अभिघातज | ,, ३-११२, ११३. | ,, २९-२०. | ,, २-३८. | २-२६. | ,, ७-६. |

| રોગાણાં | ૨૧૩ | | | | નામાનિ | |
|-------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|--------------------------------|------------------------|
| રોગાણાં નામાનિ— | સરક- સંહિતા સ્થા. અ. શ્લો. | સુશ્રુત- સંહિતા સ્થા. અ. શ્લો. | અ. હૃદયમ્ સ્થા. અ. શ્લો. | માઘવ- નિવાનમ્ અ. શ્લો. | શાર્કઘર- સંહિતા અ. શ્લો. | ભાવપ્રકાશઃ અ. શ્લો. |
| શ્રમજન્ય | | | નિ. ૨-૩૮, ૩૯. | | પૂ. ૭-૬. | |
| છેદજન્ય | | | ,, ૨-૩૮, ૩૯. | | ,, ૭-૬. | મ. ૧-૬૯૬. |
| ક્ષતજન્ય | | | ,, ૨-૩૮, ૩૯. | | ,, ૭-૬. | ,, ૧-૬૯૬. |
| દાહજન્ય | | | ,, ૨-૩૮, ૩૯. | | ,, ૭-૬. | ,, ૧-૬૯૬. |
| અભિચારજ— | વિ. ૩-૧૧૮. | અ. ૩૯-૨૧. ,, ૩૯-૭૯. | ,, ૨-૪૩, ૪૪. ૨-૨૬. | | ,, ૭-૫. | ,, ૧-૭૦૫. |
| અભિશાપજન્ય | | | ,, ૨-૪૩. ૨-૨૬. | | ,, ૭-૫. | |
| અભિવક્ત્રજન્ય | ,, ૩-૧૧૪. | ,, ૩૯-૮૦. | ,, ૨-૪૦. ૨-૨૬. | | ,, ૭-૭. | ,, ૧-૭૦૫. |
| મહાવેશજન્ય | | ,, ૩૯-૨૧. | ,, ૨-૪૦. | | ,, ૭-૫. | |
| કામજ | ,, ૩-૧૨૨. | અ. ૨૯-૨૧- ૭૮. | ,, ૨-૪૨. | | ,, ૭-૬. | ,, ૧-૬૯૯. |
| ભયજ | ,, ૩-૧૧૫. | ,, ૩૯-૭૯. | ,, ૨-૪૨. | | ,, ૭-૬. | ,, ૧-૭૦૩. |
| શોકજ | ,, ૩-૧૨૩. | ,, ૩૯-૨૧- ૭૯. | ,, ૨-૪૨. | | ,, ૭-૬. | ,, ૧-૭૦૩. |
| ક્રોધજ | ,, ૩-૧૨૩. | ,, ૩૯-૭૯. | ,, ૨-૪૨. | | ,, ૭-૬. | ,, ૧-૭૦૩. |
| વિષજ | ,, ૩-૧૨૪. | ,, ૩૯-૨૦- ૭૬. | ,, ૨-૪૧. | | ,, ૭-૬. | ,, ૧-૬૯૮. |
| ઘૌષ્ઠિગન્ધજ | ,, ૩-૧૨૭. | ,, ૩૯-૨૧- ૭૭. | ,, ૨-૪૧. | | ,, ૭-૬. | ,, ૧-૬૯૯. |
| જલપ્રાસ- (જલસંપ્રાસ) | | ક. ૭-૪૮. | અ. ૩૮-૧૬. | ૬૯-૫૭- ૬૩. | | |
| હર્દિ— | વિ. ૨૦-૪, ૫. | અ. ૪૯-૩- ૬. | નિ. ૫-૩૦. | ૧૫-૧-૪. | ,, ૭-૨૮. | ,, ૧૭-૬. |
| વાતજા | ,, ૨૦-૭- ૯. | ,, ૪૯-૯. | ,, ૫-૩૧- ૩૩. | ૧૫-૬. | ,, ૭-૨૮. | ,, ૧૭-૬, ૭. |

| रोगाणां | २१४ | | | | | नामानि |
|--------------------------|-------------------|--------------------|------------------|------------------|----------------------|-------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता | सुश्रुत- संहिता | अ. हृदयम् | माधव- निदानम् | शार्ङ्गधर- संहिता | भावप्रकाशः |
| | रथा. अ. श्लो. | रथा. अ. श्लो. | रथा. अ. श्लो. | अ. श्लो. | न. अ. श्लो. | न. अ. श्लो. |
| पित्तजा | वि. २०-१०, ११. | उ. ४९-१०, | नि. ५-३३, ३४. | १५-७. | पृ. ७-२८. | म. १५-८. |
| कफजा | ,, २०-१२, १३. | ,, ४९-११. | ,, ५-३४, ३५. | १५-८. | ,, ७-२८. | ,, १७-९. |
| सन्निपातजा | ,, २०-१४, १५. | ,, ४९-१२. | ,, ५-३६. | १५-९. | ,, ७-२८. | ,, १७-१०. |
| द्विष्टार्थजा संयोगजा | | | ,, ५-३६, ३७. | | ,, ७-२९. | ,, १७-११. |
| वीरगल्लजा | ,, २०-१८. | ,, ४९-१२. | ,, ५-३६, | १५-१२. | | ,, १७-११. |
| दीर्घदृश | | ,, ४९-१२. | ,, ५-३७. | १५-१२. | ,, ७-२९. | ,, १७-११. |
| आमजा | | ,, ४९-१२. | ,, ५-३७. | १५-१०. | | ,, १७-११. |
| वसरात्म्यजा | | ,, ४९-१२. | | १५-१२. | | ,, १७-११. |
| हमिजा | | ,, ४९-१२. | ,, ५-३७. | १५-१२, १३. | ,, ७-२८. | ,, १७-१२. |
| तृष्णा- | वि. २२-५- ७. | ,, ४८-३- ५. | ,, ५-४५- ५७. | १६-१२. | ,, ७-३०. | ,, १८. |
| वातजा | ,, २२-११, १२. | ,, ४८-१. | ,, ५-५०, ५१. | १६-३. | ,, ७-३०. | ,, १८-४. |
| पित्तजा | ,, २२-१३, १४. | ,, ४८-१. | ,, ५-५१. | १६-४. | ,, ७-३०. | ,, १८-५. |
| आमजा | ,, २२-१५. | ,, ४८-१४. | ,, ५-५४. | १६-८. | | ,, १८-९. |
| क्षयजा | ,, २२-१६. | ,, ४८-१३, १४. | ,, ५-५७. | १६-६, ७. | ,, ७-३१. | ,, १८-८. |
| औषसगिष्ठी | ,, २२-१८. | | ,, ५-५७. | १६-९. | ,, ७-३१. | ,, १८-११. |
| क्षन्ना | | ,, ४८-१२. | | १६-६. | | ,, १८-७. |

| रोगाणां नामानि - | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. छद्मग्र स्था. अ. श्लो. | गाढव- सिद्धान्तम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भारव- स्था. अ. श्लो. |
|---------------------|----------------------------------|-------------------------------------|------------------------------|----------------------------------|-------------------------------------|-------------------------|
| कफज | | उ. ४८-११. | मि. ५-५२, | १६-५. | पू. ७-३०. | म. १८-६. |
| भक्तज | | ,, ४८-१५. | ,, ५-५४. | १६-८. | | ,, १८-१०. |
| त्रिदोषज | | ,, ४८-१५. | | | ,, ७-३१. | |
| दग्ध— | | सू. १२-१६. | | | ,, ७-७९. | |
| मुष्ट (बुच्छ. वा.) | | ,, १२-१६. | सू. ३०-४७. | | ,, ७-७९. | |
| अतिदग्ध | | ,, १२-१६. | ,, ३०-४८. | | ,, ७-७९. | |
| दुर्दग्ध | | ,, १२-१६. | ,, ३०-४८. | | ,, ७-७९. | |
| सम्यग्दग्ध | | ,, १२-१६. | ,, ३०-४५. | | ,, ७-७९. | |
| स्नेहदग्ध | | | ,, ३०-५२. | | | |
| दाह— | सू. २०-१४. | | | १९-१. | ,, ७-३५. | |
| नाडीव्रण— | चि. २५-५६. | मि. १०-९, १०. | उ. २९-२६- २८. | ४५-१, २. | ,, ७-७९. | म. ४८-१. |
| वातजन्य | | ,, १०-११. | ,, २९-२९. | ४५-३. | ,, ७-७९. | ,, ४८-३. |
| पित्तजन्य | | ,, १०-११. | ,, २९-२९, ३०. | ४५-३. | ,, ७-७९. | ,, ४८-४. |
| कफजन्य | | ,, १०-११. | ,, २९-३०, ३१. | ४५-४. | ,, ७-७९. | ,, ४८-५. |
| द्वन्द्वज | | ,, १०-११. | | | | |
| सन्निपातजन्य | | ,, १०-१३. | ,, २९-३१. | ४५-४, ५. | ,, ७-७९. | ,, ४८-६. |
| शल्यनिमित्तज | | ,, १०-१४. | ,, २९-३१. | ४५-५, ६. | ,, ७-७९. | ,, ४८-७. |
| नाडीकल्पन— | शा. ८-४५. | | | | | |
| व्यापत् | | | | | | |

[illegible]

| संज्ञाणां | २१७ | | | | | नामप्रति |
|------------------------|---------------------|---------------------|--------------------------|---------------------------------|----------------------|---------------------------|
| नामादि- | संज्ञा- संज्ञिता | संज्ञा- संज्ञिता | अ. एवम् रसा. व. स्था. | मात्र- निदानम् अ. स्त्री. | शार्दूल- संज्ञिता | भावप्रकाशः व. न. स्था. |
| तानाकार- | वि. २६-११२. | व. २२-१६, १७. | उ. १९-१९. | ५८-९. | पू. ७-१४९. | म. ६४-१४. |
| अपीतल- | „ २६-११४. | „ २२-६. | „ १९ २०, २१. | ५८-१. | „ ७-१४८. | |
| प्राग्विक- | „ २६-११५. | „ २२-८, ९. | „ १९-१८, १९. | ५८-२. | „ ७-१४८. | „ ६४-७. |
| तावाधयडु- | „ २६-११५. | „ २२-१९, २०. | „ १९-२०. | ५८-२८ | | „ ६४-६९. |
| तावाधयडु- | „ २६-११६. | „ २२-२०. | „ १९-२६. | ५८-२८. | „ ७-१४८. | „ ६४-३१. |
| पुस्तक- | „ २६-११६. | „ २२-१०. | „ १९-२४. | ५८-४. | „ ७-१४९. | „ ६४-८. |
| पूतिनाम- | „ २६-११३. | „ २० ३, ८. | „ १९-२३. | ५८-२. | „ ७-१४८. | „ ६४-६. |
| संज्ञिता- | „ २६ ११७. | „ २२-८, ९. | | ५८-३. | | |
| दीप्त- | „ २६-११७. | „ २२-१४, १५. | | ५८-५. | „ ७-१४९. | „ ६४-१२. |
| अंशधु- | | „ २२-१३, १४. | | ५८-३. | „ ७-१४८. | „ ६४-३१. |
| तावाधयडु- संज्ञिता- | वि. ४-९७. | „ २२-९. | | ५८-२८. | | „ ६४-३१. |
| तावाधयडु- | „ १४-८. | „ २२-२१. | „ १९-२५. | ५८-२८. | „ १४८. | „ ६४-३१. |
| पुस्तक- | | | „ १९-२५. | | | |
| पीनस(आमस)- | | | „ १९-१३. | | | |
| अभिप्रेत- (मिश्रित) | उ. २१-१. | „ २२-१२. | „ १४-२०. | १४-१-८. | „ ७-६५. | „ ३८. |
| मतिपत्त- | „ २१-१०- १२. | „ २२-३३. | | | | „ ३५. |
| पिप्पल- | | | | | | „ २-१००. |
| निन्तामिका- | | | | | | „ २-१०९. |
| वेष्टरोग- | वि. २६. | उ. १-२८. | उ. ८-१०. | ५९ १-३. | | „ ६२. |

| रोगाणां नामानि- | चरफ- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | भाधन- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः स. अ. श्लो. |
|-------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| वायुज | चि. २६-१२९. | उ. १-२९-३१. | च. ८-१६. | | | |
| पित्तज | ,, २६-१२९. | ,, १-३१-३३. | | | | |
| कफज | ,, २६-१३०. | ,, १-३३-३५. | | | | |
| मन्निपातज | ,, २६-१३०. | ,, १-३९-४२. | | | | |
| रक्तज | | ,, १-३७, ३८. | | | | |
| हस्तिप्रसारोग- | | | | | | |
| पूगालस | | ,, ९-४. | ,, १०-७. | ५९-७०. | पू. ७-१५९. | ग. ६२-१०४. |
| चणवाह | | ,, २-४. | ,, १०-३, ४. | ५९-७०. | ,, ७-१५८. | ,, ६२-१०५. |
| तूनालाव- (मन्निपातज) | | ,, २-६. | ,, १०-६. | ५९-७२. | ,, ७-१५८. | ,, ६२-१०५. |
| खेमलाव | | ,, २-६. | ,, १०-२. | ५९-७२. | ,, ७-१५८. | ,, ६२-१०८. |
| रत्नालाव | | ,, २-७. | ,, १०-४. | ५९-७३. | ,, ७-१५८. | ,, ६२-११०. |
| दित्तालाव | | ,, २-७. | ,, १०-४. | ५९-७३. | ,, ७-१५८. | ,, ६२-१०७. |
| जललाव | | | ,, १०-१, २. | | ,, ७-१५८. | |
| पर्वणिका | | ,, २-८. | ,, १०-५. | ५९-७४. | ,, ७-१५८. | ,, ६२-१११. |
| अलजी | | ,, २-८. | ,, १०-८. | ५९-७४. | ,, ७-१५८. | ,, ६२-१११. |
| मन्निप्रान्थ | | ,, २-९. | ,, १०-६, ९. | ५९-७५. | ,, ७-१५८. | ,, ६२-११२. |
| वृक्प्रारोग- | | | | | | |
| सर्पक्षिणी | | ,, ३-९, १०. | ,, ८-१२. | ९-७६. | ,, ७-१५९. | ,, ६३-७७. |
| कुम्भीका | | ,, ३-१०, ११. | ,, ८-६. | ५९-७७. | ,, ७-१५९. | ,, ६३-७८. |
| पोग्नी | | ,, ३-११. | ,, ८-९, १०. | ५९-७८. | ,, ७-१५९. | ,, ६३-७९. |
| वर्तमानिका | | ,, ३-१२. | ,, ८-१८. | ५९-७९. | ,, ७-१५९. | ,, ६३-८०. |
| अशोवर्तम | | ,, ३-१३. | ,, ८-१३. | ५९-८०. | ,, ७-१५९. | ,, ६३-८२. |

| रोगाणां नामानि - | चरक- संहिता स्या. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्या. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्या. अ. श्लो. | माधव- नियानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता स. अ. श्लो. | भावप्रकाशः स. अ. श्लो. |
|-----------------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| शुष्काक्षि- (लोहित) | | उ. ३-१४. | | ५९-८९. | पू. ७-१५४. | म. ६२-८२. |
| अशननामिका | | ,, ३-१५. | उ. ८-१४. | ५९-८२. | ,, ७-१५६. | ,, ६२-८३. |
| वह्मवर्म | | ,, ३-१६. | | ५९-८३. | ,, ७-१५५. | ,, ६२-८४. |
| विषम्वक्त्रवर्म | | ,, ३-१७. | | ५९-८४. | ,, ७-१५५. | ,, ६२-८५. |
| वर्त्मकदंम | | ,, ३-१९. | ,, ८-१८. | ५९-८६. | ,, ७-१५६. | ,, ६२-८७. |
| क्रिष्टवर्म | | ,, ३-१८. | ,, ८-१२. | ५९-८५. | ,, ७-१५५. | ,, ६२-८६. |
| इयाववर्म | | ,, ३-२०. | ,, ८-१७. | ५९-८७. | ,, ७-१५६. | ,, ६२-८८. |
| प्रक्षिन्नवर्त्म- (कफोच्छिष्ट) | | ,, ३-२१. | ,, ८-१०. | ५९-८८. | ,, ७-१५४. | ,, ६२-८९. |
| अपक्षिन्न- (क्रि. त्म) | | ,, ३-२२. | ,, ८-१६. | ५९-८९. | ,, ७-१५५. | ,, ६२-९०. |
| वात हत- (उरिग्रष्टवर्त्म) | | ,, ३-२३. | ,, ८-६. | ५९-९०. | ,, ७-१५७. | ,, ६२-९१. |
| वर्धुः | | ,, ३-२४. | ,, ८-२४. | ५९-९१. | ,, ७-१५५. | ,, ६२-९२. |
| विमिश्र | | ,, ३-२५. | ,, ८-५. | ५९-९३. | ,, ७-१५४. | ,, ६२-९३. |
| शोणि. 'दीप्ति- (रक्ष. त्म) | | ,, ३-२६. | | ५९-९३. | ,, ७-१५४. | ,, ६२-९४. |
| लग्न | | ,, ३-२७. | ,, ८-११. | ५९-९४. | ,, ७-१५६. | ,, ६२-९५. |
| मिश्र र्म | | ,, ३-२८. | ,, ८-१५. | ५९-९५. | ,, ७-१५६. | ,, ६२-९६. |
| कुंचा | | | | ५९-९६. | ,, ७-१५४. | ,, ६२-९७. |
| पक्ष्मरे T- | | | | | | |
| पक्ष्म लेप | | ,, ३-२९, ३०. | ,, ८-२१, २२. | ५९-९७, ९८. | ,, ७-१५५. | ,, ६२-९९, १००. |
| पक्ष्म त | | | ,, ८-८, ९. | ५९-९९. | ,, ७-१५४. | ,, ६२-१०१. |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|-------------------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| शुक्रगतारोग— प्रस्तार्थम् | | उ. ४-४. | उ. १०-१७, १८. | ५९-६५. | पू. ७-१६०. | म. ६२-६५. |
| शुक्रार्थम् | | ,, ४-५. | ,, १०-१२. | ५९-६५. | ,, ७-१६०. | ,, ६२-६६. |
| लोहितार्थम् | | ,, ४-५. | ,, १०-१६. | ५९-६६. | ,, ७-१६१. | ,, ६२-६७. |
| अधिमांसजार्थम् | | ,, ४-६. | ,, १०-१८, १९. | ५९-६६. | ,, ७-१६०. | ,, ६२-६८. |
| स्नाय्वर्थम् | | ,, ४-६. | ,, १०-१८. | ५९-६६. | ,, ७-१६१. | ,, ६२-६९. |
| शुफि | | ,, ४-७. | ,, १०-१०, ११. | ५९-६७. | ,, ७-१६०. | ,, ६२-७०. |
| अर्जुन | | ,, ४-७. | ,, १०-१७. | ५९-६७. | ,, ७-१६१. | ,, ६२-७१. |
| पिण्डक | | ,, ४-८. | ,, १०-१३. | ५९-६८. | ,, ७-१६०. | ,, ६२-७२. |
| सिराजाल | | ,, ४-८. | ,, १०-१६. | ५९-६९. | ,, ७-१६०. | ,, ६२-७३. |
| सिराजपिण्डका | | ,, ४-९. | ,, १०-१६. | ५९-६९. | ,, ७-१६१. | ,, ६२-७४. |
| बलासक | | ,, ४-९. | ,, १०-१२, १३. | ५९-६९. | ,, ७-१६१. | ,, ६२-७५. |
| कृष्णगतारोग— | | | | | | |
| समणशुक | | ,, ५-४. | ,, १०-२३. | ५९-२२. | ,, ७-१६२. | ,, ६२-५६. |
| अमणशुक | | ,, ५-८. | ,, १०-२५. | ५९-२४. | ,, ७-१६२. | ,, ६२-५८. |
| पाकात्यय- (शिरासक) | | ,, ५-९, १०. | ,, १०-२८. | ५९-२७. | ,, ७-१६२- १७०. | ,, ६२-६२. |
| अजका | | ,, ५-१०. | ,, १०-२६. | ५९-२८. | ,, ७-१६२. | ,, ६२-६३. |
| सर्वाश्रयारोग— | | | | | | |
| वाताभिव्यन्द | | ,, ६-६. | ,, १५-१-३. | ५९-५. | ,, ७-१६९. | ,, ६२-११६. |
| पित्ताभिव्यन्द | | ,, ६-७. | ,, १५-८, ९. | ५९-६. | ,, ७-१६९. | ,, ६२-११८. |
| कफाभिव्यन्द | | ,, ६-८. | ,, १५-१०, ११. | ५९-७. | ,, ७-१६९. | ,, ६२-११९. |

| रोगाणां | २२१ | | | | | | नामानि |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|----------------------------------|------------------------|--------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता अ. श्लो. | भावप्रकाशः अ. श्लो. | |
| रक्ताभिषेन्द | | उ. ६-८. | उ. १५-१२, १३. | ५९-८. | पू. ७-१६९ | म. ६२-१२०. | |
| वातज अधिमन्थ | | „ ६-१२, १३. | „ १५-३, ४. | ५९-९, १०. | „ ७-१६८. | „ ६२-१२२, १२३. | |
| पित्तज „ | | „ ६-१४, १५. | „ १५-९, १०. | ५९-९, १०. | „ ७-१६८. | „ ६२-१२२, १२३. | |
| कफज „ | | „ ६-१६, १७. | „ १५-११, १२. | ५९-९, १०. | „ ७-१६८. | „ ६२-१२२. | |
| रक्तज | | „ ६-१८, १९. | „ १५-१३, १४. | ५९-९, १०. | „ ७-१६८. | „ ६२-१२२, १२३. | |
| शोफपाक | | „ ६-२१, २२. | „ १५-१७- १९. | ५९-१४. | „ ७-१७०. | „ ६२-१२४. | |
| अशोफपाक | | „ ६-२३. | „ १५-१९. | ५९-१४. | „ ७-१७०. | „ ६२-१२४. | |
| हृताधिमन्थ | | „ ६-२३. | „ १५-५. | ५९-१५. | „ ७-१७१. | „ ६२-१२५. | |
| वातपर्याय | | „ ६-२५. | „ १५-७. | ५९-१६. | „ ७-१७१. | „ ६२-१२६. | |
| श्लेष्माक्षिपाक | | „ ६-२६. | „ १५-१६, १७. | ५९-१७. | „ ७-१७०. | „ ६२-१२७. | |
| अन्यतेवात | | „ ६-२७. | „ १५-६, ७. | ५९-१८. | „ ७-१७०. | „ ६२-१२८. | |
| अम्लाध्युषित | | „ ६-२८. | „ १५-२१- २३. | ५९-१९. | „ ७-१७०. | „ ६२-१२९. | |
| सिरोत्पात | | „ ६-२९. | „ १०-१४. | ५९-२०. | „ ७-१६०. | „ ६२-१३०. | |
| सिराप्रहर्ष | | „ ६-३०. | „ १०-१५. | ५९-२१. | „ ७-१६०. | „ ६२-१३१. | |

दृष्टिगतरोग—

| | | | | | |
|----------------|----------------|-----------------|---------------|----------|----------|
| वातिक-लिङ्गनाश | „ ७-१८, १९. | „ १२-८- १२. | ५९-४१, ४२. | „ ७-१६५. | „ ६२-२९. |
| पैक्षिक „ | „ ७-१९, २०. | „ १२-१३, १४. | ५९-४२, ४३. | „ ७-१६५. | „ ६२-३०. |

| रोगाणां | २२२ | नामानि | | | | |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| शैथिल्य-लिङ्गनाश | | उ. ७-२०- २२. | उ. १२-१६- २०. | ५९-४३, ४४. | पू. ७-१६५. | म. ६२-३१, ३२. |
| रक्तज | ” | ” ७-२२, २३. | ” १२-२०, २१. | ५९-४४, ४५. | ” ७-१६६. | ” ६२-३४. |
| सालिपातिक | ” | ” ७-२३, २४. | ” १२-२२. | ५९-४५, ४६. | ” ७-१६६. | ” ६२-३३. |
| परिप्लव | ” | ” ७-२५, २६. | ” १२-१५, १६. | ५९-४७, ४८. | ” ७-१६६. | ” ६२-३५. |
| दिवान्ध्य | ” | ” ७-३५, ३६. | ” १२-२५- २८. | ५९-५५, ५६. | ” ७-१६७. | ” ६२-४५. ” |
| रात्र्यान्ध्य | ” | ” ७-३७, ३८. | ” १२-२४, २५. | ५९-५७, ५८. | ” ७-१६७. | ” ६२-४७. |
| धूमदर्शी | ” | ” ७-३९. | ” १२-२९, ३०. | ५९-५९. | ” ७-१६७. | ” ६२-४८. |
| हस्वजाड्य | ” | ” ७-४०. | ” १२-१५. | ५९-६०. | ” ७-१६७. | ” ६२-४९. |
| नकुलान्ध्य | ” | ” ७-४०, ४१. | ” १२-२३, २४. | ५९-६०, ६१. | ” ७-१६७. | ” ६२-५०. |
| गम्भीरिका | ” | ” ७-४१, ४२. | ” १२-१२. | ५९-६१, ६२. | ” ७-१६८. | ” ६२-५१. |
| निमित्तजन्य | ” | ” ७-४२. | ” १२-३०, ३१. | ५९-६३. | | ” ६२-५२. |
| अनिमित्तजन्य | ” | ” ७-४३, ४४. | | ५९-६३, ६४. | | ” ६२-५३. |
| पाण्डुरोग- | वि. १६-७- ११. | ” ४४-३. | ” १३-१- ४. | ८-१, २. | ” ७-१९. | ” ८. |
| वातज | ” १६-१७, १८. | ” ४४-७. | ” १३-९, १०. | ८-४. | ” ७-१९. | ” ८-४. |
| पित्तज | ” १६-१९- २२. | ” ४४-८. | ” १३-१०, ११. | ८-५. | ” ७-१९. | ” ८-५. |
| कफज | ” १६-३- ५. | ” ४४-९. | ” १३-११- १२. | ८-८. | ” ७-१९. | ” ८-६. |

| रोगाणां | २२३ | | | | | नामानि |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|----------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः रा. अ. श्लो. |
| सन्निपातज | चि. १६-२६ | उ. ४४-१०. | नि. १३-१२. | ८-७. | पू. ७-१९. | ग. ८-७. |
| मृदुसंक्षयजन्य | „ १६-२७- ३०. | | „ १३-१३- १५. | ८-८-१०. | „ ७-१९. | „ ८-११, १२. |
| अपानकी | | „ ४४-६. | | | | |
| नासात्मज- | | | | | | |
| पित्तविकार | | | | ६-११-१७. | „ ७-११५- १२१. | „ २६-२९. |
| अक्षिपाक | सू. २०-१४. | | | | | |
| अङ्गगन्ध | „ २०-१४. | | | | | |
| अङ्गवदारण | „ २०-१४. | | | | „ ७-११८. | |
| अतिस्वेद | „ २०-१४. | | | | „ ७-११७. | |
| अतृप्ति | „ २०-१४. | | | | „ ७-११७. | |
| अन्तर्दृष्टि | „ २०-१४. | | | | | |
| अम्लक | „ २०-१४. | | | | | |
| अंसदाह | „ २०-१४. | | | | | |
| आस्यविपाक | „ २०-१४. | | | | | |
| ऊष्माधिक्य | „ २०-१४. | | | | | |
| ओष | „ २०-१४. | | | | | |
| वक्षः | „ २०-१४. चि. २०-७. चि. १२-११. | | | | | |
| कामा | सू. २०-१४. चि. १६-३२. | उ. ४४-१०, ११. | नि. १३-१५- १७. | ८-१६-१८. | „ ७-१२. | |
| गुह्य | सू. २०-१४. | | | | | |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता | सुश्रुत- संहिता | अ. हृदयम् स्या. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------|--------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| गुदपाक | सू. २०-१४. | | | | | |
| चर्मदलन | ,, २०-१४. | | | | | |
| जीवादान | ,, २०-१४. | | | | | |
| तमःप्रवेश | ,, २०-१४. | | | | | |
| तिक्तास्यता | ,, २०-१४. | | | | | |
| तृष्णाधिक्य | ,, २०-१४. | | सू. ११-७. | | | |
| स्वगवदरण | ,, २०-१४. | | | | | |
| त्वग्दाह | ,, २०-१४. | | | | | म. २६-६. |
| द्वयष्टु | ,, २०-१४. | | | | | |
| दाह | ,, २०-१४. | | सू. ११-७. | १९-२. | पू. ७-१२९. | ,, २६-६. |
| धूमक(धूमोद्गार) | ,, २०-१४. | | | | ,, ७-११६. | ,, २६-५. |
| अकालपलित | | | | | | ,, २६-२. |
| पूतिमुखता | ,, २०-१४. | | | | | |
| प्लोष | ,, २०-१४. | | | | | |
| मांसकण्डेद | ,, २०-१४. | | | | | |
| मांसदाह | ,, २०-१४. | | | | | |
| मेढ्रपाक | ,, २०-१४. | | | | | |
| रक्तकोष्ठ | ,, २०-१४. | | | | | |
| रक्तविस्फोट | ,, २०-१४. | | | | | |
| रक्तपित्त | ,, २०-१४. | च. ४५-१-१०. | | | | ,, १९-१-७. |
| रक्तमण्डल | ,, २०-१४. | | | | | |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|---------------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| लोहितगन्धास्यता सू. २०-१४. | | | | | पृ. ७-११८. | |
| विदाह | ,, २०-१४. | | | | ,, ७-११६. म. ६-७. | |
| शोणितक्लेद | ,, २०-१४. | | | | | |
| हरित-हारित- नेत्रमूत्रवयेश्व | ,, २०-१४. | | | | | |
| हरिताव | ,, २०-१४. | | | | | |
| हारिद्रत्व | ,, २०-१४. | | | | | |
| पिडका- | ,, १७-८२. | नि. ६-१४. | नि. १०-२५, २६. | ३३-२७, २८. | ,, ७-६३. | ,, ३७. |
| शराविका | ,, १७-८४. | ,, ६-१५. | ,, १०-२७. | ३३-२९. | ,, ७-६४. | ,, ३७-३९. |
| कच्छपिका | ,, १७-८५. | ,, ६-१६. | ,, १०-२८. | ३३-३०. | ,, ७-६४. | ,, ३८-३२. |
| जालिनी | ,, १७-८६. | ,, ६-१६. | ,, १०-२९. | ३३-३०. | ,, ७-६४. | ,, ३८-३२. |
| विनता | ,, १७-८९. | ,, ६-१७. | ,, १०-३०. | ३३-३१. | ,, ७-६४. | ,, ३८-३३. |
| अरुजी | ,, १७-८८. | ,, ६-१८. | ,, १०-३१. | ३३-३३. | ,, ७-६४. | ,, ३८-३५. |
| सर्षपिका | ,, १७-८७. | ,, ६-१५. | ,, १०-३३. | ३३-२९. | ,, ७-६४. | ,, ३८-३९. |
| विद्रधिष्ठा (विद्रधि) | ,, १७-९०. | ,, ६-१९. | ,, १०-३४-३२. | ३३-३४. | ,, ७-६५. | ,, ३८-३६. |
| पुत्रिणी | | ,, ६-१७. | ,, १०-३३. | ३३-३२. | ,, ७-६४. | ,, ३८-३४. |
| मसूरिका | | ,, ६-१८. | ,, १०-३२. | ३३-३२. | ,, ७-६४. | ,, ३८-३४. |
| विदारिका | | ,, ६-१९. | ,, १०-३४. | ३३-३४. | ,, ७-६४. | ,, ३८-३५. |
| प्रदर- | नि. ३०-२०४. शा. २-१८-२०. | | | ६१-१. | | ,, ६७-३. |
| वातज | ,, ३०-२१३. | | | ६१-२. | | ,, ६७-६. |

| रोगाणां नामानि- | स्वरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|--------------------|------------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| पित्तज | चि. ३०-२१४- २१६. | | | ६१-३. | | म. ६७-५. |
| कफज | ,, ३०-२१७, २१८. | | | ६१-३. | | ,, ६७-४. |
| साक्षिपातिक | ,, ३०-२२०. | | | ६१-४. | | ,, ६७-७. |
| प्रमेह— | नि. ४-८. | नि. ६-४. | ,, १०. | ३३-६. | पू. ७-६०. | ,, ३७. |
| उदकमेह | ,, ४-१३. | ,, ६-१०. | ,, १०-८. | ३३-७, ८. | ,, ७-६०. | ,, ३७-८. |
| इक्षुवालिका | ,, ४-१४. | ,, ६-१०. | ,, १०-९. | ३३-८. | ,, ७-६०. | ,, ३७-९. |
| सान्द्रमेह | ,, ४-१५. | ,, ६-१०. | ,, १०-१०. | ३३-९. | ,, ७-६०. | ,, ३७-९. |
| सान्द्रप्रपादमेह | ,, ४-१६. | | | | | |
| शुक्रमेह | ,, ४-१७. | | | | | |
| शुकमेह | ,, ४-१८. | ,, ६-१०. | ,, १०-११. | ३३-१०. | ,, ७-६०. | ,, ३७-११. |
| शीतमेह | ,, ४-२१. | | ,, १०-१२. | ३३-११. | ,, ७-६१. | ,, ३७-१२. |
| शनैर्मेह | ,, ४-२१. | ,, ६-१०. | ,, १०-१३. | ३३-१२. | ,, ७-६१. | ,, ३७-१२. |
| सिक्तमेह | ,, ४-२०. | ,, ६-१०. | ,, १०-१२. | ३३-११. | ,, ७-६१. | ,, ३७-११. |
| लायमेह | ,, ४-२२. | | ,, १०-१३. | ३३-१२. | ,, ७-६०. | ,, ३७-१२. |
| क्षारमेह | ,, ४-२९. | ,, ६-११. | ,, १०-१४. | ३३-१३. | ,, ७-६२. | ,, ३७-१३. |
| कालमेह(कृष्णमेह) | ,, ४-३०. | | ,, १०-१४. | ३३-१३. | ,, ७-६२. | ,, ३७-१४. |
| नी.मेह | ,, ४-३१. | ,, ६-११. | ,, १०-१४. | ३३-१३. | ,, ७-६१. | ,, ३७-१४. |
| लघुमेह | ,, ४-३२. | ,, ६-११. | ,, १०-१५. | ३३-१५. | ,, ७-६१. | ,, ३७-१५. |
| माज्जिमेह | ,, ४-३३. | ,, ६-११. | ,, १०-१५. | ३३-१४. | ,, ७-६१. | ,, ३७-१५. |

| रोगाणां | २२७ | | | | | नामानि |
|---------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता स. अ. श्लो. | भावप्रकाशः स. अ. श्लो. |
| हारिद्रमेह | नि. ४-३४. | नि. ६-११. | नि. १०-१५. | ३३-१४. | पू. ७-६१. | म. ३७-१४. |
| वसामेह | ,, ४-४१. | ,, ६-१२. | ,, १०-१६. | ३३-१५. | ,, ७-६२. | ,, ३७-१६. |
| मज्जमेह | ,, ४-४२. | | ,, १०-१७. | ३३-१६. | ,, ७-६२. | ,, ३७-१६. |
| हस्तिमेह | ,, ४-४३. | ,, ६-१२. | ,, १०-१७, १८. | ३३-१७. | ,, ७-६२. | ,, ३७-१७. |
| मधुमेह (क्षौद्रमेह) | ,, ४-४४. | ,, ६-१२. | ,, १०-१८. | ३३-१६. | ,, ७-६२. | ,, ३७-१७. |
| सुरामेह | | ,, ६-१०. | ,, १०-१०. | ३३-१९. | ,, ७-६०. | ,, ३७-१०. |
| लवणमेह | | ,, ६-१०. | | | | |
| पिष्टमेह | | ,, ६-१०. | ,, १०-१०. | ३३-१०. | ,, ७-६०. | ,, ३७-१०. |
| फेनमेह | | ,, ६-१०. | | | | |
| अम्लमेह | | ,, ६-११. | | | | |
| सर्पिर्मेह | | ,, ६-१२. | | | | |
| प्लीहरोग— | सू. १९-४. ,, १८-२८. | | | | | ,, ३३. |
| वातः | ,, १९-४ ४. | | | | | ,, ३३-७. |
| पित्तज | ,, १९-४ ४. | | | | | ,, ३३-५. |
| काश | ,, १९-४ ४. | | | | | ,, ३३-६. |
| सर्पित्तज | ,, १९-४ ४. | | | | | ,, ३३-८. |
| रक्तज | ,, १९-४ ४. | | | | | ,, ३३-४. |
| फिरङ्गरोग— | | | | २-१-९. (परि०) | | ,, -१. |
| बालरोगाः— | | | | ६८. | | |
| कुक्कुट | | उ. १९, ९. | उ. ८-१९, २०. | ६८-८, ९. | ,, ७-१८८. | ,, ७-१२७. |

| रोगाणां | २२८ | | | | | नामानि |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्या. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्या. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्या. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः स. अ. श्लो. |
| पारिगर्भिक | | | | ६८-१०,११. | पू. ७-१८७. | म. ७०-१३३, १३४. |
| तालुकण्टक | | | उ. २-६३,६५. | ६८-११,१३. | ,, ७-१८७. | ,, ७०-१२४, १२५. |
| महापद्म | | | | ६८-१४,१५. | ,, ७-१८७. | ,, ७०-१२६. |
| उपशीर्षिक | | | ,, २३-२१. | | | |
| गुदपाक | | | | | ,, ७-१८७. | ,, ७०-१२९. |
| शय्यामूत्र | | | | | ,, ७-१८८. | |
| स्कन्दप्रह | | उ. २८. | ,, ३-६,९. | ६८-२०,२२. | ,, ७-१८९. | ,, ७०-२५. |
| स्कन्दापस्मार | | ,, २९. | ,, ३-९,११. | ६८-२२. | ,, ७-१८९. | ,, ७०-२९. |
| शकुन्तीप्रह | | ,, ३०. | ,, ३-१८,२०. | ६८-२३. | ,, ७-१९०. | ,, ७०-२७. |
| रेवतीप्रह | | ,, ३१. | ,, ३-२७,२८. | ६८-२४. | ,, ७-१९१. | ,, ७०-२८. |
| पूतनाप्रह | | ,, ३२. | ,, ३-२०,२१. | ६८-२५. | ,, ७-१९०. | ,, ७०-२९. |
| अन्धपूतनाप्रह | | ,, ३३. | ,, ३-२३,२५. | ६८-२६. | ,, ७-१९०. | ,, ७०-३०. |
| श्रीतपूतनाप्रह | | ,, ३४. | ,, ३-२२,२३. | ६८-२७. | ,, ७-१९०. | ,, ७०-३१. |
| मुखमण्डिकाप्रह | | ,, ३५. | ,, ३-२६,२७. | ६८-२८. | ,, ७-१९०. | ,, ७०-३२. |
| नैगमेय(प) | | ,, ३६. | ,, ३-१२,१४. | ६८-२९. | ,, ७-१९०. | ,, ७०-३३. |
| दन्तोद्गम | | | ,, २-२६,२७. | | ,, ७-१८६. | ,, ७०-१३५. |
| भगन्दर- | चि. १२-९६,९७. | नि. ४. | ,, २८. | ४६-१. | ,, ७-८०. | ,, ४९-३. |
| शतपोनक | | ,, ४-५. | ,, २८-११-१३. | ४६-२,३. | ,, ७-८०. | ,, ४९-४. |
| चष्ट्रग्रीव | | ,, ४-६. | ,, २८-१३. | ४६-३,४. | ,, ७-८०. | ,, ४९-५. |
| परिखावी | | ,, ४-७. | ,, २८-१३. | ४६-५. | ,, ७-८१. | ,, ४९-६. |
| शम्भूकवर्त | | ,, ४-८. | ,, २८-१७,१८. | ४६-६. | ,, ७-८२. | ,, ४९-७. |

| રોગાણાં નામાનિ- | ચરક- સંહિતા સ્થા. અ. શ્લો. | સુશ્રુત- સંહિતા સ્થા. અ. શ્લો. | અ. દૃવ્યમ્ સ્થા. અ. શ્લો. | માધવ- નિવાનમ્ અ. શ્લો. | શાર્કાઘર- સંહિતા સ્થા. અ. શ્લો. | ભાવપ્રકાશઃ સ્થા. અ. શ્લો. |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|------------------------------|------------------------------|---------------------------------------|------------------------------|
| ઉપમાર્ગગામી | | નિ. ૪-૯. | ઉ. ૨૮-૧૮, ૨૦. | ૪૬-૭. | પૂ. ૭-૮૨. | મ. ૪૯-૮. |
| શાયજન્ય(ક્ષતજ) | | | ,, ૨૮-૨૦. | | | ,, ૪૯-૮. |
| મગ્ન- | વિ. ૨૫-૬૮, ૭૧. | ,, ૧૫-૩. | ,, ૨૭. | ૪૪-૧. | ,, ૭-૭૮. | ,, ૪૭. |
| ઉત્પિપ્પ | | ,, ૧૫-૫, ૭. | | ૪૪-૨, ૩. | ,, ૭-૭૭. | ,, ૪૭-૨. |
| વિશ્લિષ્ટ | | ,, ૧૫-૫, ૭. | | ૪૪-૩. | ,, ૭-૭૮. | ,, ૪૭-૨. |
| વિવર્તિત | | ,, ૧૫-૫, ૭. | | ૪૪-૩. | ,, ૭-૭૮. | ,, ૪૭-૨. |
| તિર્યકક્ષિત | | ,, ૧૫-૫, ૭. | | ૪૪-૩. | ,, ૭-૭૮. | ,, ૪૭-૨. |
| અતિક્ષિત(ક્ષિત) | | ,, ૧૫-૫, ૭. | | ૪૪-૪, ૫. | | ,, ૪૭-૩. |
| અવક્ષિત | | ,, ૧૫-૫, ૭. | | ૪૪-૪. | | ,, ૪૭-૩. |
| કર્મટક | | ,, ૧૫-૧૦. | | ૪૪-૪. | | ,, ૪૭-૪. |
| અશ્વદર્શ | | ,, ૧૫-૧૦. | | ૪૪-૪. | | ,, ૪૭-૪. |
| પૂર્ણિત | | ,, ૧૫-૧૦. | | ૪૪-૪. | | ,, ૪૭-૪. |
| પિષિત | | ,, ૧૫-૧૦. | | ૪૪-૪. | | ,, ૪૭-૪. |
| અસ્થિચ્છદ્ધિત | | ,, ૧૫-૧૦. | | ૪૪-૫. | | ,, ૪૭-૫. |
| અતિપાતિત | | ,, ૧૫-૧૦. | | ૪૪-૫. | | ,, ૪૭-૫. |
| મજ્જાનુગત | | ,, ૧૫-૧૦. | | ૪૪-૫. | | ,, ૪૭-૫. |
| સ્ફુટિત | | ,, ૧૫-૧૦. | | ૪૪-૫. | | ,, ૪૭-૫. |
| વક્ર | | ,, ૧૫-૧૦. | | ૪૪-૫. | | ,, ૪૭-૫. |
| છિદ્રસ્થ દ્વો મેદૌ | | | | | | |
| અણુવિદીર્ણ | | ,, ૧૫-૧૦. | | ૪૪-૫. | | ,, ૪૭-૫. |
| વહુવિદીર્ણ | | ,, ૧૫-૧૦. | | ૪૪-૫. | | ,, ૪૭-૫. |
| પાટિત | | ,, ૧૫-૧૦. | | | | |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् निदानम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् स्था. अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता स्था. अ. श्लो. | भावप्रकाशः स्था. अ. श्लो. |
|------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|--|------------------------------------|--|------------------------------|
| काण्डभ्रम | | नि. १५-१०. | | ४४-६. | | म. ४७-१. |
| मद— | सू. २४-२७. | | नि. ६-२६. | | पू. ७-३३. | |
| वातज | „ २४-३०. | | „ ६-२६, २७. | | „ ७-३३. | |
| पित्तज | „ २४-३१. | | „ ६-२७. | | „ ७-३३. | |
| कफज | „ २४-३२. | | „ ६-२८. | | „ ७-३३. | |
| सन्निपातज | „ २४-३३. | | „ ६-२८. | | „ ७-३३. | |
| रक्तज | „ २४-३४. | | „ ६-२८, २९. | | „ ७-३३. | |
| मद्यज | „ २४-३३. | | „ ६-२९. | | „ ७-३३. | „ १९-२२-२६. |
| विषज | „ २४-३४. | | „ ६-२९. | | „ ७-३३. | |
| मधुमेह | नि. ४-४४. | „ ६-२४. | „ १०-१८. | ३३-२३-२६. | „ ७-६२. | |
| मवात्यय- (पानात्यय) | वि. २४. | उ. ४७. | „ ६-१४. | १८-१. | „ ७-३४. | „ १९-३७-४२. |
| वातज | „ २४-१०, ११. | „ ४७-१८. | „ ६-१८. | १८-१६. | „ ७-३४. | „ १९-४५. |
| पित्तज | „ २४-१२-१४. | „ ४७-१८. | „ ६-१९. | १८-१७. | „ ७-३४. | „ १९-४७. |
| कफज | „ २४-१५-१७. | „ ४७-१९. | „ ६-२०. | १८-१८. | „ ७-३४. | „ १९-५०. |
| सन्निपातज | „ २४-१००. | „ ४७-१९. | „ ६-२०. | १८-१८. | | १९-५१. |
| ध्वंसक | „ २४-१९९-२०१. | | „ ६-२२. | | | |
| विज्ञेयक | | | | | | |
| विक्षय | „ २४-२०२. | | „ ४७-२२. | | | |

| रोगाणां | २३१ | | | | | नामानि |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| परमद | | उ. ४७-१९, २०. | | १८-१९. | पू. ७-३४. | म. १९-५२. |
| पानाजीर्ण | | „ ४७-२०, २१. | | १८-२०. | „ ७-३५. | „ १९-५३. |
| पानविभ्रम | | „ ४७-२१, २२. | | १८-२०, २१. | „ ७-३५. | „ १९-५४. |
| पानदृढ | | „ ४७-२३. | | | | |
| मसूरिका | चि. १२-९३. | नि. १३-३८. | उ. ३१-८. | ५४-१, ४. | „ ७-९७. | „ ५९. |
| वातज | | | | ५४-४, ६. | „ ७-९८. | „ ५९-४. |
| पित्तज | | | | ५४-६, ८. | „ ७-९८. | „ ५९-५, ६. |
| कफज | | | | ५४-९, १०. | „ ७-९८. | „ ५९-९, १०. |
| त्रिदोषज | | | | ५४-११. | „ ७-९८. | „ ५९-११. |
| रफज | | | | ५४-८. | | „ ५९-७. |
| सप्तधातुगत | | | | | | „ ५९-१२. |
| मरक- | | सू. ६-१७. | | | | |
| महागद- | „ १०-५६. | | | | | |
| मुखरोग- | „ २६. | नि. १६. | „ २१. | | | „ ६५. |
| वातज | „ २६-११९. | | | | | |
| पित्तज | „ २६-१२०. | | | | | |
| कफज | „ २६-१२१. | | | | | |
| सन्निपातज | „ २६-१२२. | | | | | |
| ओष्ठप्रक्षोप(वातज) | | नि. १६-५. | „ २१-४. | ५६-२. | „ ७-१२८. | „ ६५-६. |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|---------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| ओष्ठप्रकोप (पित्तज) | | नि. १६-६. | च. २१-५. | ५६-३. | पू. ७-१२८. | म. ६५-७. |
| „ (कफज) | | „ १६-७. | „ २१-५, ६. | ५६-४. | „ ७-१२८. | „ ६५-८. |
| „ (सन्निपातज) | | „ १६-८. | „ २१-६, ७. | ५६-५. | „ ७-१२८. | „ ६५-९. |
| „ (रफज) | | „ १६-९. | „ २१-७, ८. | ५६-६. | „ ७-१२८. | „ ६५-१०. |
| „ (मांसज) | | „ १६-१०. | „ २१-८. | ५५-७. | „ ७-१२९. | „ ६५-११. |
| „ (मेदोज) | | „ १६-११. | „ २१-९. | ५६-८. | „ ७-१२९. | „ ६५-१२. |
| „ (अभिघातज) | | „ १६-१२. | „ २१-१०. | ५६-९. | „ ७-१२९. | „ ६५-१३. |
| खण्डीष्ट | | | „ २१-३. | ५६. | „ ७-१२९. | |
| दन्तमूलगतरोगाः- | | | | | | |
| शीताद | | „ १६-१४, १५. | „ २१-२०, २१. | ५६-१०, ११. | „ ७-१३२. | „ ६५-२४. |
| दन्तपुष्पुटक | | „ १६-१६. | „ २१-२३, २४. | ५३-१२. | „ ७-१३२. | „ ६५-२६. |
| दन्तवैष्टक | | „ १६-१७. | | ५६-१३. | „ ७-१३२. | „ ६५-२७. |
| शौषिर | | „ १६-१८. | „ २१-२५, २६. | ५६-१४. | „ ७-१३२. | „ ६५-२८. |
| महाशौषिर | | „ १६-१९, २०. | „ २१-२६, २७. | ५६-१५. | „ ७-१३२. | „ ६५-२९. |
| परिदर | | „ १६-२१. | | ५६-१६. | | „ ६५-३०. |
| सपकुश | चि. १२-७८. | „ १६-२३. | „ २१-२१. | ५६-१७. | „ ७-१३२. | „ ६५-३१. |
| दन्तवैदर्भ | | „ १६-२४. | „ २१-२८, २९. | ५६-१८. | | „ ६५-३३. |
| वर्धन (खलि) | | „ १६-२५. | „ २१-१५. | ५६-१९. | | „ ६५-३४. |
| अधिमांस | | „ १६-२६. | „ २१-२७. | ५६-२१. | „ ७-१३२. | „ ६५-३५. |
| कराल | | | „ २१-१४. | ५६-२०. | „ ७-१३०. | „ ६५-७२. |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|--|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| दन्तनाडी— वातज | | ति. १६-२६. | उ. २१-२९, ३१. | ५६-२१. | पू. ७-१३३. | म. ६५-३६. |
| पित्तज | | „ १६-२६. | „ २१-२९, ३१. | ५६-२१. | „ ७-१३३. | „ ६५-३६. |
| कफज | | „ १६-२६. | „ २१-२९, ३१. | ५६-२१. | „ ७-१३३. | „ ६५-३६. |
| सान्निपातिक | | „ १६-२६. | „ २१-२९, ३१. | ५६-२१. | „ ७-१३३. | „ ६५-३६. |
| श्लेष्मिन्निमित्तज- (रक्तनाडी- आगन्तुनिमित्ता) | | „ १६-२६. | „ २१-२९, ३१. | ५६-२१. | „ ७-१३३. | „ ६५-३६. |
| दन्तगतारोगाः— दालन (कराल) | | „ १६-२८. | „ २१-११, १२. | ५६-२२. | „ ७-१३०. | „ ६५-६५. |
| कुम्भिदन्तक | | „ १६-२९. | „ २१-१९, २०. | ५६-२३. | „ ७-१३०. | „ ६५-६६. |
| दन्तहर्ष | | „ १६-३०. | „ २१-१२, १३. | ५६-२५. | „ ७-१३१. | „ ६५-६८. |
| भजनक (दन्तमेद) | | „ १६-३१. | „ २१-१३. | ५६-२४. | „ ७-१३१. | „ ६५-६७. |
| अधिदन्त | | | „ २१-१५. | | „ ७-१३१. | |
| दन्तशर्करा | | „ १६-३२. | „ २१-१६. | ५६-२६. | „ ७-१३०. | „ ६५-६९. |
| कपालिका | | „ १६-३३. | „ २१-१६, १७. | ५६-२७. | „ ७-१३१. | „ ६५-७०. |
| इयावदन्तक | | „ १६-३४. | „ २१-१७. | ५६-२८. | „ ७-१३१. | „ ६५-७१. |
| हनुमोक्ष- (दन्तचाल) | | „ १६-३५. | „ २१-१४. | | „ ७-१३०. | |
| दन्तविदग्धि | चि. १२-७८. | | „ २१-२४, २५. | ५६-२९. | „ ७-१३२. | „ ६५-३७. |
| जिह्वागतारोगाः— वातज | | „ १६-३७. | „ २१-३१. | ५६-३०. | „ ७-१३४. | „ ६५-८७. |
| पित्तज | | „ १६-३७. | „ २१-३२. | ५६-३०. | „ ७-१३४. | „ ६५-८८. |
| कफज | | „ १६-३७. | „ २१-३२. | ५६-३०. | „ ७-१३४. | „ ६५-८९. |

| रोगाणां | २३४ | | | | | नामानि |
|-----------------------------|----------------------------------|------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुधुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भाषप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| अलास | | नि. १६-३८. | उ. २१-३३. | ५६-३१. | पू. ७-१३४. | म. ६५-९०. |
| उपजिह्विका | चि. १२-७७. सू. १८-१९. | ॥ १६-३९. | ॥ २१-३५. | ५६-३२. | ॥ ७-१३५. | ॥ ६५-९१. |
| अधिजिह्वा | चि. १२-७७. | ॥ १६-५२. | ॥ २१-३४, ३५. | | ॥ ७-१३५. | ॥ ६५-१२३. |
| तालुगतरोगाः- | | | | | | |
| गलशुण्डिका- (कण्ठशुण्डी) | सू. १८-२०. | ॥ १६-४१. | ॥ २१-३७, ३८. | ५६-३३. | ॥ ७-१२६. | ॥ ६५-९९. |
| गलमह | ॥ १८-२२. | | | | | |
| तुण्डिकेरी | | ॥ १६-४२. | ॥ २१-४७. | ५६-३४. | ॥ ७-१३८. | ॥ ६५-१००. |
| अधुष | | ॥ १६-४२. | ॥ २१-४७. | ५६-३४. | ॥ ७-१३५. | ॥ ६५-१०१. |
| कच्छप(पी) | | ॥ १६-४३. | ॥ २१-३९. | ५६-३५. | ॥ ७-१३५. | ॥ ६५-१०२. |
| अर्बुद | | ॥ १६-४३. | ॥ २१-३९. | ५६-३५. | ॥ ७-१३५. | ॥ ६५-१०३. |
| मांससंघात- (तालुसंहति) | | ॥ १६-४४. | ॥ २१-३८. | ५६-३६. | ॥ ७-१३५. | ॥ ६५-१०४. |
| तालुपुप्फुट | | ॥ १६-४४. | ॥ २१-४०. | ५६-३६. | | ॥ ६५-१०५. |
| तालुशोष | | ॥ १६-४५. | ॥ २१-४१. | ५६-३७. | ॥ ७-१३५. | ॥ ६५-१०६. |
| तालुपाक (तालुशोथ) | | ॥ १६-४५. | ॥ २१-४०. | ५६-३७. | ॥ ७-१३५. | ॥ ६५-१०६. |
| तालुपिडका | | | ॥ २१-३६. | | | ॥ ६५-११५. |
| कण्ठगतरोगाः- | | | | | | |
| रोहिणी | ॥ १८-३४- ३६. | ॥ १६-४६. | ॥ २१-४२. | ५६-३८. | ॥ ७-१३७. | ॥ ६५-११६. |
| वातज | ॥ | ॥ १६-४८. | ॥ २१-४२. | ५६-३९. | ॥ ७-१३७. | |
| पित्तज | ॥ | ॥ १६-४९. | ॥ २१-४३. | ५६-४०. | ॥ ७-१३७. | ॥ ६५-११७. |
| कफज | ॥ | ॥ १६-४९. | ॥ २१-४४. | ५६-४०. | ॥ ७-१३७. | ॥ ६५-११८. |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. ध. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. ध. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. ध. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|----------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| सन्निपातज-रोहिणी | | नि. १६-५०. | च. २१-४५. | ५६-४१. | पू. ७-१३७. | म. ६५-११९. |
| रक्तज | „ | „ १६-५०. | „ २१-४४. | ५६-४१. | „ ७-१३७. | „ ६५-१२०. |
| मेदोज | „ | | | | „ ७-१३८. | |
| फण्डशालूक- (तुण्डिकेरी) | | „ १६-५१. | „ २१-४५, ४६. | ५६-४२. | „ ७-१३८. | „ ६५-१२२. |
| अधिजिह्वा | | „ १६-५२. | „ २१-५२. | ५६-४३. | | „ ६५-१२३. |
| बलय | | „ १६-५३. | „ २१-४९. | ५६-४४. | „ ७-१३९. | „ ६५-१२४. |
| बलात् | | „ १६-५४. | | ५६-४५. | | „ ६५-१२५. |
| एकग्रन्द | | „ १६-५५. | „ २१-४६. | ५६-४६. | | „ ६५-१२६. |
| वृन्द | | „ १६-५६. | „ २१-४६. | ५६-४७. | „ ७-१३८. | „ ६५-१२७. |
| शतम्बी | | „ १६-५७. | „ २१-५०, ५१. | ५६-४८. | „ ७-१३८. | „ ६५-१२८. |
| गिलायु | | „ १६-५८. | „ २१-४९, ५०. | ५६-४९. | „ ७-१३९. | „ ६५-१२९. |
| गलविद्रधि | | „ १६-५९. | „ २१-५१, ५२. | ५६-५०. | „ ७-१३८. | „ ६५-१३०. |
| गलौघ | | „ १६-६०. | „ २१-४८. | ५६-५१. | „ ७-१३८. | „ ६५-१३१. |
| स्वाम्न | | „ १६-६१. | „ ०१-५७. | ५६-५२. | „ ७-१३८. | „ ६५-१३२. |
| मांसतान- (अर्बुद) | | „ १६-६२. | „ २१-५३, ५३. | ५६-५३. | „ ७-१३८. | „ ६५-१३३. |
| विदारि | | „ १६-६३. | | ५६-५४. | | „ ६५-१३४. |
| सर्व्वरसुखरोग- | | | | | | |
| मातज | | „ १६-६५. | „ २१-५८, ५९. | ५६-५५. | „ ७-१४०. | „ ६५-१४८. |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्या. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्या. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्या. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| पित्तज | | नि. १६-६५. | उ. २१-६१. | ५६-५५. | पू. ७-१४०. | स. ६५-१४९. |
| कफज | | „ १६-६६. | „ २१-६२. | ५६-५५. | „ ७-१४०. | „ ६५-१५० |
| रक्तज (सुक्ष्मपाक) | | „ १६-६६. | „ २१-६१. | | „ ७-१४१. | |
| सन्निपातज | | | „ २१-६२. | | „ ७-१४१. | |
| पूत्यास्य | | | | | „ ७-१४१. | |
| ऊर्ध्वगु(ग)द | | | | | „ ७-१४१. | |
| अर्बुद | | | „ २१-६२, ६३. | | „ ७-१४१. | |
| कुच्छ्र्वास | | | „ २१-६९. | | | |

मूत्ररोग—

| | | | | | | |
|------------------|------------|-----------------|---------|-------|---------|----------|
| मूत्रकुच्छ्र्वा— | वि. २६-३२. | उ. ५९-४. | नि. ९. | ३०-१. | „ ७-५७. | „ ३४-३. |
| वातज | „ २६-३४. | | „ ९-४. | ३०-३. | „ ७-५७. | |
| पित्तज | „ २६-३४. | „ ५९-५. | „ ९-४. | ३०-३. | „ ७-५७. | „ ३४-४. |
| कफज | „ २६-३५. | „ ५९-६. | „ ९-५. | ३०-४. | „ ७-५७. | „ ३४-५. |
| सन्निपातज | „ २६-३५. | „ ५९-७. | „ ९-५. | ३०-४. | „ ७-५८. | „ ३४-६. |
| अश्मरीज | „ २६-४०. | „ ५९-११- १४. | „ ९-६. | | | „ ३४-१०. |
| पुरीषरोधज | | „ ५९-९. | | ३०-६. | „ ७-५८. | „ ३४-८. |
| शर्कराज | „ २६-३९. | „ ५९-११- १५. | „ ९-९. | ३०-९. | | „ ३४-११. |
| शोणितज | „ २६-४३. | | | ३०-५. | | |
| शल्यज | | „ ५९-९. | | | „ ७-५८. | „ ३४-७. |
| शृङ्गान्न्य | „ २६-४१. | | „ ९-१७. | ३०-८. | | „ ३४-९. |

| रोगाणां | २३७ | | | | नामानि | |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः च. अ. श्लो. |
| मूत्रघात— | | | | | | |
| मूत्रौकषाद | सि. ९-२८. | च. ५८-२४, २६. | नि. ९-३९. | ३१-१७, १९. | पू. ७-५६. | म. ३५-१७, १८. |
| मूत्रजठर | ,, ९-३०. | ,, ५८-१३, १४. | ,, ९-२७, २८ | ३१-८, ९. | ,, ७-५५. | ,, ३५-८, ९. |
| मूत्रोत्सन्न | ,, ९-३४. | ,, ५८-१५, १६. | ,, ९-२९, ३० | ३१-१०, ११. | ,, ७-५५. | ,, ३५-१०, ११. |
| मूत्रक्षय | ,, ९-३४. | ,, ५८-१७. | ,, ९-३७. | ३१-१२. | ,, ७-५५. | ,, ३५-१२. |
| मूत्रातीत | ,, ९-३५. | ,, ५८-११, १२. | ,, ९-२६, २७ | ३१-७. | ,, ७-५४. | ,, ३५-७. |
| वाताष्ठीला | ,, ९-३६. | ,, ५८-७, ८. | ,, ९-१३, २४ | ३१-४. | ,, ७-५४. | ,, ३५-४. |
| वातवस्ति | सि. ९-३७. | ,, ५८-९, १०. | नि. ९-२०-२३. | ३१-५, ६. | ,, ७-५४. | ,, ३५-५. |
| चण्णवात | ,, ९-३८. | ,, ५८-२२, २३. | ,, ९-३५, ३६. | ३१-१५, १६. | ,, ७-५६. | ,, ३५-१५, १६. |
| वातकुण्डलिका | ,, ९-४०. | ,, ५८-५, ६. | ,, ९-२५, २६. | ३१-२, ३. | ,, ७-५६. | ,, ३५-२, ३. |
| मूत्रप्रन्धि | ,, ९-४१. | ,, ५८-१८, १९. | ,, ९-३१. | ३१-१३. | ,, ७-५५. | ,, ३५-१३. |
| मूत्रशुक | | ,, ५८-२०, २१. | ,, ९-३२, ३३. | ३१-१४. | ,, ७-५६. | ,, ३५-१४. |
| विह्विघात | ,, ९-४३. | | ,, ९-३३, ३४. | ३१-१९, २०. | ,, ७-५६. | ,, ३५-१९, २०. |
| वस्तिकुण्डल | ४६. | | | ३१-२१, २४. | ,, ७-५६. | ,, ३५-२१, २४. |
| मृदगर्भ— | | नि. ८-३. | | ६४-३. | ,, ७-१८१. | ,, ६९-११४. |
| कील | | ,, ८-४. | | ६४-६. | | . |
| प्रतिबुर | | ,, ८-४. | | ६४-६. | | ,, ६९-११४. |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता स्र. अ. श्लो. | भावप्रकाशः स्र. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|---------------------------------------|-----------------------------|
| परिघ | | नि. ८-४. | | ६४-६. | | म. ६९-११४. |
| वी मक | | ,, ८-४. | | ६४-६. | | ,, ६९-११४. |
| मूर्च्छा- | | उ. ४६-१. | नि. ६-३०. | १७-१, ५. | पू. ७-३१. | ,, १८. |
| वातज | सू. २४-३५, ३६. | ,, ४६-८. | ,, ६-३०, ३१. | १७-७, ८. | ,, ७-३१. | ,, १८-८. |
| पित्तज | ,, २४-३७, ३८. | ,, ४६-८. | ,, ६-३२, ३३. | १७-९, १०. | ,, ७-३१. | ,, १८-९, १०. |
| कफज | ,, २४-३९, ४०. | ,, ४६-८. | ,, ६-३३, ३४. | १७-११, १२. | ,, ७-३१. | ,, १०-११, १२. |
| सन्निपातज | ,, २४-४१. | | ,, ६-३५. | १७-१३. | ,, ७-३२. | ,, १८-१३. |
| रक्तज | | ,, ४६-८. | | १७-१४, १५. | | ,, १८-१५. |
| मद्यज | | ,, ४६-८. | | १७-१६, १७. | | ,, १८-१७. |
| विषज | ,, २४-३४. | ,, ४६-१८. | | १७-१८. | | ,, १८-१८. |
| गलानिज | | | | | ,, ७-३२. | |
| योनिरोग- | चि. ३०-१. | ,, ३८. | उ. ३३. | ६२-१. | ,, ७-१७७. | ,, ६९. |
| वातज | ,, ३०-९- ११. | ,, ३८-६, ७. | ,, ३३-३८, ३९. | ६२-४. | ,, ७-१७७. | ,, ६९-२-७. |
| पित्तज | ,, ३०-११, १२. | ,, ३८-७. | ,, ३३-४२, ४३. | ६२-७. | ,, ७-१७७. | ,, ६९-३-१०. |
| कफज | ,, ३०-१३, १४. | ,, ३८-८. | ,, ३३-४४, ४५. | ६२-१०. | ,, ७-१७७. | ,, ६९-४-१३. |
| सन्निपातज | ,, ३०-१४. | ,, ३८-९. | ,, ३३-५१. | ६२-१२. | ,, ७-१७७. | ,, ६९-५-१६. |
| अचरणा | ,, ३०-१८. | ,, ३८-१६. | | ६२-९. | ,, ७-१७९. | ,, ६९-१२. |
| अत्यन्तं | | ,, ३८-१५. | | ६२-८. | ,, ७-१७९. | ,, ६९-११. |
| अतिचरणा | ,, ३०-१९. | ,, ३८-१६. | ,, ३३-३१. | ६२-९. | ,, ७-१७९. | ,, ६९-१२. |

| रोगाणां | २३९ | | | | नामानि | |
|--------------------|----------------------|--------------------|------------------|------------------|----------------------|-------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता | सुश्रुत- संहिता | अ. हृदयम् | माधव- निदानम् | शार्ङ्गधर- संहिता | भावप्रकाशः |
| | स्था. अ. श्लो. | स्था. अ. श्लो. | स्था. अ. श्लो. | अ. श्लो. | ख. अ. श्लो. | त. अ. श्लो. |
| अन्तर्मुखी | चि. ३०-२९-३१. | च. ३८-१६. | च. ३३-३५, ३६. | | पू. ७-१७८. | |
| अरजस्कृ | ,, ३०-१७. | | | ६२-११. | ,, ७-१७८. | |
| असृग्दर | ,, ३०-२०८. शा. २-१८. | | | ६२-१-५. | ,, ७-१७६. | |
| उदावर्तिनी | ,, ३०-२५, ३६. | च. ३८-९. | ,, ३३-३३. | ६२-२. | ,, ७-१७९. | म. ६९-६. |
| उपप्लुता (अप्लुता) | ,, ३०-२१, २२. | ,, ३८-१०. | ,, ३३-४८, ४९. | ६२-३. | ,, ७-१७९. | |
| जातनी | | | ,, ३३-३४. | | | ,, ६९-९. |
| लोहितक्षया | | | ,, ३३-४५. | | ,, ७-१७७. | ,, ६९-८. |
| विहृता | | ,, ३८-६. | ,, ३३-४९. | | ,, ७-१७८. | ,, ७०-९. |
| आनन्दचरणा | | | | | | ,, ७०-१२. |
| कर्णिनी | ,, ३०-२७, २८. | ,, ३८-१५. | ,, ३३-५०, ५१. | ६२-८. | ,, ७-१७९. | ,, ७०-११. |
| परिप्लुता | ,, ३०-२३, २४. | ,, ३८-६. | ,, ३३-४६- ४८. | ६२-३. | ,, ७-१७८. | ,, ७०-७. |
| पुत्राग्नी | ,, ३०-२८, २९. | ,, ३८-१३. | | ६२-६. | ,, ७-१७८. | ,, ७०-९. |
| प्रदर | ,, ३०-२०४. | ,, ३८-१३. | | | | ,, ६६. |
| प्रसंसिनी (रक्तजा) | | ,, ३८-१३. | | ६२-६. | ,, ७-१७७. | ,, ६३-८. |
| प्राक्चरणा | ,, ३०-२०. | ,, ३८-१९. | ,, ३३-३२. | | ,, ७-१७९. | |
| फलिनी | | ,, ३८-१८. | | ६२-११. | ,, ७-१७८. | ,, ६९-१४. |
| महायोनि (विहृता) | ,, ३०-३५- ३७. | ,, ३८-१९. | ,, ३३-४०, ४१. | ६२-१२. | ,, ७-१७९. | ,, ६९-१५. |

| रोगाणां नामानि- | स्वरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुधुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|---------------------------|------------------------------------|------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| योनिफन्द | | | | ६२-१,४. | | म. ६९-१९. |
| खण्डिता | | | | | पू. ७-१७८. | |
| अण्डली | | | | ६२-११. | | |
| रक्तयोनि- (लोहितक्षया) | चि. ३०-१६. | उ. ३८-१२. | उ. ३३-४३ | ६२-५. | ,, ७-१७७. | ,, ६९-८. |
| वामिनी. | ,, ३०-३२, ३४. | ,, ३८-१२. | ,, ३३-३८, ३९. | ६२-५. | ,, ७-१७८. | ,, ६९-९. |
| शुष्का | ,, ३०-३३. | | ,, ३३-३७,३८. | | ,, ७-१७८. | |
| वन्ध्या | | ,, ३८-६. | | ६२-२. | | ,, ६९-६. |
| पण्डयोनि | ,, ३०-३४, ३५. | ,, ३८-१८. | ,, ३३-३९, ४०. | ६२-११. | | ,, ६९-१४. |
| सूचीमुखी | ,, ३०-३१, ३२. | ,, ३८-१९. | ,, ३३-३६, ३७. | ६२-१२. | ,, ७-१७८. | ,, ६९-१५. |
| सोमरोग | | | | ३-१,६. परि० | ,, ७-६३. | ,, ६९. |
| रक्तपित्त— | चि. ४. नि. २. | ,, ४५-१. | नि. ३. | ९-१,२. | ,, ७-२०. | ,, ९. |
| ऊर्ध्वभागज | नि. २-८. चि. ४-१५. | ,, ४५-५. | ,, ३-७. | ९-३. | ,, ७-२०. | ,, ९-३. |
| अधोभागज | नि. २-८. चि. ४-१६. | ,, ४५-५. | ,, ३-७. | ९-३. | ,, ७-२०. | ,, ९-३. |
| उभयभागज | नि. २-८. | ,, ४५-६. | ,, ३-१३. | ९-७. | ,, ७-२०. | ,, ९-७. |
| वातज | चि. ४-११. | | ,, ३-११. | ९-५. | ,, ७-२०. | ,, ९-५. |
| पित्तज | ,, ४-११. | | | ९-६. | | ,, ९-६. |
| कफज | ,, ४-११. | | ,, ३-८. | ९-५. | ,, ७-२०. | ,, ९-५. |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावनाकाशः ख. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|--------------------------|
| साविपातिक | „ ४-१३. | | | ९-७. | | |
| राजयक्ष्मा— | नि. ६. चि. ८. | उ. ४१-१. | नि. ५. | १०. | पू. ७-२२. | म. ११. |
| साहस्रज | „ ८-१४-१९. नि. ६-३. | „ ४१-८. | „ ५-४. | १०-१ | | „ ११-१. |
| वेगरोधज | चि. ८-२०-२३. नि. ६-३. | „ ४१-८. | „ ५-४. | १०-१. | | „ ११-१. |
| विषमाशनज | चि. ८-२८-३२. नि. ६-३. | „ ४१-८. | „ ५-४. | १०-१. | | „ ११-१. |
| क्षयज | चि. ८-२४-२७. नि. ६-३. | „ ४१-१०. | „ ५-४. | १०-१. | „ ७-२३. | „ ११-१. |
| व्यवायजन्य | | „ ४१-१७. | | १०-१. | „ ७-२३. | „ ११-२०. |
| शोथजन्य | | | | | | „ ११-२०, २१. |
| क्षोकजन्य | | „ ४१-१८. | | १०-१५. | „ ७-२३. | „ ११-२१. |
| वार्धक्यजन्य | | „ ४१-१९, २०. | | १०-१६-१८. | „ ७-२४. | „ ११-२२, २३. |
| व्यायामजन्य | चि. ११-४-८. | „ ४१-२२. | | १०-१९. | „ ७-२४. | „ ११-२५. |
| अध्वजन्य | | „ ४१-२१. | | १०-१८, १९. | „ ७-२४. | „ ११-२४. |
| ग्रणजन्य | | „ ४१-२३. | | १०-२०. | „ ७-२३. | २६. |
| उरःक्षतजन्य | चि. ११-९- ११. | „ ४१-२४- २६. | | १०-२१- २९. | „ ७-२३. | „ ११-३१, ३३. |
| रेतोदोष— | „ ३०. | | | | „ ७-१७०. | |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्या. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्या. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्या. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|---------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| तनु-रेतस् | चि. ३०-१३९, १४०. | | | | | |
| शुष्क " | " ३०-१३९, १४०. | | | | | |
| फेनिल " | " ३०-१३९, १४०. | | | | | |
| अश्वेत " | " ३०-१३९, १४०. | | | | | |
| पूति " | " ३०-१३९, १४०. | | | | | |
| अतिपिच्छिल " | " ३०-१३९, १४०. | | | | | |
| अन्यधातूपहित " | " ३०-१३९, १४०. | | | | | |
| अवसादि- (ग्रथित) | " ३०-१३९, १४०. | | शा. १-११. | | | |
| वातदुष्ट " | " ३०-१४०. शा. २-४. | | " १-१०. | | पू. ७-१७२. | |
| पित्तदुष्ट " | " ३०-१४२. " २-४. | | " १-१०. | | " ७-१७२. | |
| कफदुष्ट " | " ३०-१४२. " २-४. | | " १-१०. | | " ७-१७२. | |
| रक्तान्वित " | " ३०-१४३. " २-४. | | " १-११. | | " ७-१७२. | |
| वातपित्तदुष्ट " | " २-४. | | " १-११. | | " ७-१७३. | |
| वातकफदुष्ट " | " २-४. | | " १-११. | | " ७-१७३. | |
| पित्तकफदुष्ट " | " २-४. | | | | " ७-१७३. | |
| रक्तपित्तदुष्ट " | | | शा. १-११. | | " ७-१७३. | |
| सन्निपित्तदुष्ट " | | " २-४. | | | " ७-१७४. | |

| रोगाणां | २४३ | | | | | नामानि |
|-------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सूक्ष्म- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| मूत्रप्रभ - रेतस् | | | नि. १-१२. | | | |
| विट् प्रभ " | | | " १-१२. | | | |
| रोमान्तिका- | वि. १२-१२. | | | ५४-१३. | | म. ५९-२२. |
| चातकलास- | " २९-११. | | " १६-४. | | | |
| वागचिकार- (नानात्मज) | सू. २०-१०. | | | | | " २३-४- १६. |
| अतपलाप | " २०-११. | | | २२-६. | पृ. ७-११२. | |
| अनयस्थितचित्तत्व | " २०-११. | | | | " ७-११३. | |
| अङ्गमर्द | | | | | | " २३-२१८. |
| अङ्गशुक्रता | | | | | | " २३-२१८. |
| अङ्गविभ्रंश | | | | | | " २३-२१८. |
| अर्चित | सू. २०-११. | नि. १-६८- ७२. | | २२-४५, ४७. | " ७-१०६. | " २३-६०- ६३. |
| अरसता | " २०-११. | | | | | " २३-५३. |
| अशब्दध्वण | " २०-११. | | | | " ७-११५. | |
| अमदप | " २०-११. | | | | " ७-११२. | |
| अग्निमेद | " २०-११. | | | | | |
| अक्षिव्युदास | " २०-११. | | | २२-८. | " ७-११५. | |
| अक्षिशूल | " २०-११. | | | | | |
| आटोप | वि. २८-२८. | | | २२-६८. | | " २३-२१६. |
| आमघात | | | | २५-५. | " ७-४१. | " २३-६५. |
| आक्षेपक | सू. २०-११. | नि. १-५०, ५१. | नि. १५-१७. | २२-२७, २८. | " ७-१०५. | |

| रोगाणां | २४४ | | | | | नामानि |
|---------------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्या. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्या. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्या. अ. श्लो. | माघव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता स. अ. श्लो. | भावप्रकाशः स. अ. श्लो. |
| चक्षुःश्रुति | सू. २०-११. | | | | | |
| नदरावेष्ट | ,, २०-११. | | | | | |
| चक्षुर्वर्ण | ,, २०-११. | | | | | |
| कण्ठस्तम्भ | ,, २०-११. | | | २४-१,१०. | पू. ७-१०५. | म. २४-१०४. |
| कण्ठाद | ,, २०-११. | | | | | |
| एवाङ्गरीग | ,, २०-११. | | | २२-४०,४१. | | |
| ओष्ठभेद | ,, २०-११. | | | | | |
| दण्ठोद्गम | ,, २०-११. | | | | | |
| कण्ठशूल | ,, २०-११. | नि. १-८४. | | | | |
| कम्प | ,, २४-१५. | | सू. ११-६. | २२-७४. | ,, ७-११२. | ,, २३-२१७. |
| कपायास्यता | ,, २०-११. | | | | ,, ७-११४. | |
| प्रम | ,, २४-१४. | | | | | |
| काण्ठ्य | | | सू. ११-६. | | | ,, २३-२१७. |
| कुञ्जत्व | ,, २०-११. | | नि. १५-१४. | | | ,, २३-१८८. |
| कार्द | | | | | | ,, २३-२१७. |
| पेदाभूमिस्फुटन | ,, २०-११. | | | | | |
| खञ्जत्व | ,, २०-११. | | | २२-५९, ६०. | | ,, २४-१५१. |
| गर्भनाश | वि. २८-२२. | | | २२-७. | | ,, २४-२१९. |
| ग्रीवास्तम्भ- (ग्रीवाहुण्डन) | सू. २०-११. | | | २२-८. | | |
| शदभ्रंश | ,, २०-११. | | | | | |

| रोगाणां | २४५ | | | | नामानि | |
|---------------------------|----------------|--------------------|----------------|------------------|----------------------|--------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता | सुश्रुत- संहिता | अ. हृदयम् | माधव- निदानम् | शार्ङ्गधर- संहिता | भावप्रकाशः |
| | स्या. अ. श्लो. | स्या. अ. श्लो. | स्या. अ. श्लो. | अ. श्लो. | स. अ. श्लो. | ख. अ. श्लो. |
| गुदानि | सू. २०-११. | | | | | |
| गुल्फग्रह | ,, २०-११. | | | | | |
| गृध्री | ,, २०-११. | | | २२-५४, ५६. | पू. ७-१०८. | म. २३-१२९, १३०. |
| घ्राणनाश- (नासाहृण्डन) | ,, २०-११. | | नि. १५-९. | २२-८. | ,, ७-११५. | |
| जातुभेद | ,, २०-११. | | | | | |
| जातुविद्वेष | ,, २०-११. | | | | | |
| जृम्भा | ,, २०-११. | | | | ,, ७-१११. | ,, २३-२०. |
| तमस | ,, २०-११. | | | | | |
| तिमिर | ,, २०-११. | | | | | |
| त्वक्शून्यता | | | | | | ,, २३-५८. |
| तोद | | | | | | ,, २३-२१८. |
| दण्डक | ,, २०-११. | | | | | |
| दन्तभेद | ,, २०-११. | | | | | |
| दन्तशैथिल्य | ,, २०-११. | | | | | |
| नखभेद | ,, २०-११. | | | | | |
| निषानाश | सि. २८-२९. | | | | ,, ७-११२. | ,, २३-२१९. |
| निरामवात | | | नि. १६-३०. | | | |
| पक्षवध(पक्षघात) | सू. २०-११. | नि. १-६०- ६२. | | २२-४०, ४१. | | |

[illegible]

| रोगाणां | २४७ | | | | | नामानि |
|---------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| मुखशोथ | सू. २०-११. | | | | | |
| मूत्रनिग्रह | | | | | | म. २३-१२२. |
| रजोनाश | वि. २८-२२. | | | २२-७. | | ,, २३-२१८. |
| रौक्ष्य | सू. २०-११. | | | | | ,, २३-२१७. |
| लोमहर्ष | | | | | | ,, २३-२१७. |
| सलाहभेद | ,, २०-११. | | | | | |
| त्रिकप्रह | ,, २०-११. | | | | पृ. ७-१०६. | ,, २३-११५. |
| वर्त्मस्तम्भ | ,, २०-२१. | | | | | |
| वर्त्मसंकोच | ,, २०-११. | | | | | |
| वक्षउद्वर्ष | ,, २०-११. | | | | | |
| वक्षवःरोध | ,, २०-११. | | | | | |
| वक्षस्तोद | ,, २०-११. | | | | | |
| वाकृतज्ञ | ,, २०-११. | | | | ,, ७-१०६. | |
| वाचालता | | | | | | ,, २३-२१६. |
| वातखुट्टता- (वातकण्टक) | ,, २०-११. | नि. १-७९. ,, १-७९. | नि. १६-४. | २२-६१, ६२. | | ,, २३-१६०. |
| वामनत्व | ,, २०-११. | | | | ,, ७-१०९. | |
| विद्युमेद | ,, २०-११. | | सू. ११-६. | | | |
| विषादिका | ,, २०-११. | | | ४९-१९. | | |
| विषाद (दीनता) | ,, २०-११. | | ,, ११-६. | | | |
| शृण्णाक्षेप | ,, २०-११. | | | | | |

| रोगाणां | २४८ | | | | | नामानि |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्या. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्या. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्या. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| वेपथु | सू. २०-११. | | | | | |
| वह्निगानाह | ,, २०-११. | | | | | |
| व्यथा | | | | | | म. २३-२१७. |
| गिरास्कूर्ति | | | | | | ,, २३-२१८. |
| गिरोरुक् | ,, २०-११. | | | | | |
| शुक्रक्षय | चि. २८-३४. | | नि. ५-१३. | | पू. ७-११३. | ,, २३-२१९. |
| शङ्खमेद | सू. २०-११. | | | | | |
| शेफलम्भ | ,, २०-११. | | | | | |
| शैत्य | | | | | | ,, २३-२१७. |
| श्यावाश्यास्यता | ,, २०-११. | | | | | |
| श्रोणिमेद | ,, २०-११. | | ,, १५-७. | | | |
| सङ्कोच | | | | | | ,, २३-२१८. |
| स्वेदनाश | | | | | | ,, २३-२१९. |
| श्रम | | | | | | ,, २३-२१९. |
| सर्वाङ्गरोग | सू. २०-११. | | | | | |
| | चि. २८-२९. | | | | | |
| स्तम्भ | चि. २८-२०. | | | | | ,, २३-२१७. |
| हतुमेद | सू. २०-११. | | ,, १५-२९, ३०. | | | |
| द्विक्वा | ,, २०-११. | उ. ५०-१, २. | | १२-१, २ | | |
| हृद्द्व | ,, २०-११. | | | | | |
| हन्मोह | ,, २०-११. | | | | | |

| रोगाणां | २४९ | | | | नामानि | |
|----------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| हृदयकेत | | | | | | म. २३-२१६. |
| घातः प्राधि- (सामान्यज) | चि. २८. | | | | | |
| अन्तरायाम | „ २८-४३, ४४. | नि. १-५५, ५६. | नि. १५-२२- २४. | २२-३६. | पू. ७-१०६. | „ २३-१८१. |
| अपतः शक | सि. ९-१२, १४. | „ १-६४- ६६. | „ १५-१७- १९. | २२-३०. | „ ७-१०८. | „ २३-१९१, १९२. |
| अपतानक | „ ९-१५. | „ १-५२ | „ १५-२०. | २२-३१, ३२. | „ ७-१०८. | „ २३-१९८. |
| भर्षित | सि. २८-४१, ४२. | „ १-६९- ७२. | „ १५-३२- ३७. | २२-४४-४६. | „ ७-१०६. | „ २३-६०- ६३. |
| अस्थिभेद | „ २८-२०. | | | २२-१८. | | |
| अस्थिशोष | | | | | | |
| वाताण्ठीला | सि. ९-७८. | „ १-९०. | „ ९-२३, २४ | २२-७०, ७१. | „ ७-१०९. | „ २३-१०८. |
| अवशङ्कु | | „ १-८२. | „ १५-४३. | २२-६४. | „ ७-१०८. | „ २३-८१. |
| आव्यवात | | | „ १५-४७- ५९. | | | |
| ऊरुस्तम्भ | | | „ १५-४७- ५९. | | | |
| अंसशोष | | „ १-८२. | | २२-६४. | | |
| वाक्षेपक | सि. २८-५०. | „ १-५०-५८. | „ १५-१७. | २२-३७. | „ ७-१०५. | „ २३-१६७. |
| आध्मान | | „ १-८८. | „ ११-६०. | २२-६९. | „ ७-११४. | „ २३-९३. |
| बहिरायाम- (यात्रायाम) | „ २८-४३, ४४. | „ १-५५, ५६. | | २२-३६. | „ ७-१०६. | |
| ऊर्ध्ववात | | उ. ३९-१३१. | | | | २३-९०. |

| रोगाणां | २५० | | | | नामानि | |
|--------------------|-------------------|--------------------|-----------------------------|------------------------------|----------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता | सुश्रुत- संहिता | अ. हृदयम् स्था. अ. श्रो. | माघव- निदानम् अ. श्रो. | शार्ङ्गधर- संहिता | भावप्रकाशः ख. अ. श्रो. |
| एकाङ्गवात | चि. २८-५३- ५५. | | नि. १५-३७- ४०. | २२-४१. | | |
| कलापखज | | नि. १-७८. | १५-१६. | २२-६०, ६१. | पू. ७-१०७. | म. २३-१५३. |
| कोष्ठुकशीर्ष | | १-७६. | १५-५२. | २२-५८, ५९. | ७-१०७. | २३-१५५. |
| खज | | १-७७. | १५-४५. | २२-५९, ६०. | ७-१०७. | २३-१५१. |
| साली | २८-५७. | १-७५. | १५-५५. | २२-७४. | ७-१०६. | २३-१५८. |
| शुभ्रसी | २८-५६. | १-७४. | १५-५४. | २२-५४-५६. | ७-१०८. | २३-१२९, १३०. |
| जिह्वास्तम्भ | | | १५-३१. | २२-५२. | ७-१०६. | २३-४३. |
| तूनी | | १-८६. | ११-६२. | २१-६६, ६७. | ७-१०६. | २३-११२. |
| दण्डक | चि. २८-५१, ५२. | | १५-४२. | | | |
| दण्डपतानक | | १-५३. | १५-४२. | २२-३३, ३३. | ७-१०६. | २३-१७०. |
| धनुःस्तम्भ | २८-४५, ४८. | १-५४. | १५-२४, २६. | २२-३३. | ७-१०६. | २३-१८७. |
| पक्षाघात | | १-६०, ६१. | १५-३८, ४०. | २२-४०, ४१. | ७-१०७. | २३-२०४. |
| पाददाह | | १-८०. | १५-५६, ५६ १/२. | २२-६२, ६३. | | २३-१६२. |
| पादहर्ष | | १-८१. | १५-५५, ५६. | २२-६३, ६४. | ७-१०८. | २३-१६५. |
| प्रतितूनी | | १-८७. | ११-६२. | २२-६७, ६८. | ७-१०७. | २३-११३. |
| प्रत्यष्टीला | | १-९१. | ११-६१. | २२-७२. | ७-१०९. | २३-१०९. |
| ग्रन्थाध्मान | | १-८९. | | २२-६९, ७०. | ७-११४. | २३-१०५. |
| ग्रन्थाध्मान | | | १५-२७, २८. | | | |

| रोगाणां | २५१ | | | | | नामानि |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता स. अ. श्लो. | भावप्रकाशः स. अ. श्लो. |
| पशु | | | नि. १५-४५. | | | |
| बहिरायाम | चि. २८-४५- ४८. | मि. १-५७. | ,, १५-२४- २६. | २२-३६. | पू. ७-१०६. | म. २३-१८४, १८५. |
| मिन्मिन | | ,, १-८५. | | २२-६५, ६६. | ,, ७-१०९. | ,, २३-४५. |
| मन्यास्तम्भ | ,, २८-४५. | ,, १-६७. | | २२-५१. | ,, ७-१०७. | ,, २३-७५. |
| मूफ | | ,, १-८५. | | २२-६५, ६६. | ,, ७-१११. | ,, २३-४५, |
| वातकण्ठक | | ,, १-७९. | ,, १५-५३. | २२-६१, ६२. | ,, ७-१०८. | ,, २३-१६०. |
| विभ्रान्ती | | ,, १-७५. | ,, १५-४४. | २२-५७, ५८. | ,, ७-१०८. | ,, २३-८६. |
| वेपथु | सू. २०-११. | | | २२-७४. | ,, ७-११२. | |
| शिरोमह | | | | | | ,, २३-१८. |
| सर्वाद्रवात | ,, २०-११. चि. २८-५५. | | ,, १५-४०. | २२-४१. | | ,, २३-२१३. |
| सिरामह | | | ,, १५-३७, ३८. | २२-५३. | | |
| हनुमह | ,, २८-५०. | ,, १-५३. | ,, १५-२९, ३०. | २२-४९, ५०. | ,, ७-१०५. | ,, २३-२४, २५. |
| घातरक्त- | ,, २९. | ,, १-४२, ४४. | ,, १६. | २३. | ,, ७-१०४. | ,, २८-९, १०. |
| वृत्तान | ,, २९-१९, २०. | | ,, १६-९. | | | |
| गम्भीर | ,, २९-२१- २३. | | ,, १६-१०, ११. | | | |
| दोषज | ,, २९-२४- २९. | ,, १-४५, ४६. | ,, १६-१२- १६. | २३-९-१२. | ,, ७-१०४. | ,, २८-९- १३. |
| विस्त्रिका- | | स. ५६. | सू. ८-७, ८. | ६-१६, १७. | ,, ७-११. | ,, ६-२४-२६. |
| वित्तर्प- | चि. २१. | मि. १०-३. | | ५२. | ,, ७-१००. | ,, ५५. |

| रोगाणां | २५२ | | | | | नामानि |
|------------------------|------------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|----------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि - | सर्वा- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | व. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता अ. श्लो. | भावप्रकाशः ल. अ. श्लो. |
| वातज | वि. २१-२९, ३०. | नि. १०-४. | नि. १३-४७, ४८. | ५२-५. | पू. ७-१००. | म. ५५-५. |
| पित्तज | „ २१-३१, ३२. | „ १०-५. | „ १३-४८. | ५२-६. | „ ७-१००. | „ ५५-६. |
| कफज | „ २१-३३, ३४. | „ १०-६. | „ १३-४९. | ५२-७. | „ ७-१००. | „ ५५-७. |
| सन्निपातज | „ २१-४१, ४२. | „ १०-६. | „ १३-६५. | ५२-७. | „ ७-१०१. | „ ५५-२२. |
| अग्निदाहज- (विषर्ष) | | | | | „ ७-१०१. | |
| बाह्याश्रय | | | „ १३-४५, ४६. | | | |
| अन्तराश्रय | | | „ १३-४६. | | | |
| उभयाश्रय | | | „ १३-४३. | | | |
| क्षतज | | „ १०-७. | „ १३-६५, ६६. | ५२-२२-२४. | „ ७-१०१. | „ ५५-२३. |
| कर्दम- (पित्तकफज) | „ २१-३७, ३८. | | „ १३-६०- ६४. | ५२-१७-२२. | „ ७-१०१. | „ ५५-१७- २१. |
| अग्नि- (वातपित्तज) | „ २१-३५, ३६. | | „ १३-५०- ५५. | ५२-८-१३. | „ ७-१०१. | „ ५५-९- १३. |
| ग्रन्थि- (वातकफज) | „ २१-३९. | | „ १३-५६- ५९. | ५२-१४-१७. | „ ७-१०१. | „ ५५-१४, १५. |
| विस्फोट— | „ १२-९०. | नि. १३-१८. | उ. ३१-९. | ५३-१-३. | „ ७-९६. | „ ५७-३. |
| वातज | | | | ५३-४. | „ ७-९७. | „ ५७-४. |
| पित्तज | | | | ५३-५. | „ ७-९७. | „ ५७-५. |
| कफज | | | | ५३-६. | „ ७-९७. | „ ५७-६. |
| रक्तज | | | | ५३-१०. | „ ७-९७. | „ ५७-११. |

| रोगाणां | २५३ | | | | नामानि | |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|-----------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | आधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| हृद्द्वज | | | | ५३-७,८. | पू. ७-९७. | म. ५७-७-९. |
| सन्निपातज | | | | ५३-८,९. | ,, ७-९७. | ,, ५७-१०. |
| विद्रधि- | सू. १७-९०- १०३. | नि. ९. | नि. ११-१,२१. | ४०-८,९. | ,, ७-७०. | ,, ४५. |
| वायुविद्रधि | ,, १७-९०. | | | ४०-१,२. | ,, ७-७०. | ,, ४५. |
| अन्तर्विद्रधि | | | | ४०-११-१६. | | ,, ४५-१४. |
| वातज | ,, १७-९६. | ,, ९-७. | ,, ११-६,७. | ४०-४. | ,, ७-७०. | ,, ४५-४. |
| पित्तज | ,, १७-९६. | ,, ९-८. | ,, ११-७,८. | ४०-५. | ,, ७-७०. | ,, ४५-५. |
| कफज | ,, १७-९७. | ,, ९-९. | ,, ११-८,९. | ४०-६. | ,, ७-७०. | ,, ४५-६. |
| सन्निपातज | ,, १७-९७. | ,, ९-१०. | ,, ११-९. | ४०-७,८. | ,, ७-७१. | ,, ४५-७. |
| रक्तज | | ,, ९-१३. | ,, ११-१०. | ४०-१०,११. | ,, ७-७१. | ,, ४५-१०. |
| क्षतज(भागन्तु) | | | ,, ११-११, १३. | ४०-८,१०. | ,, ७-७१. | ,, ४५-८. |
| गुदज | | | | ४०-१४. | | ,, ४५-१३. |
| वस्तिज | | | | ४०-१४. | | ,, ४५-१३. |
| नाभिज | | | | ४०-१५. | | ,, ४५-१३. |
| कुक्षिज | | | | ४०-१५. | | ,, ४५-१३. |
| वल्क्ष्णज | | | | ४०-१५. | | ,, ४५-१४. |
| वृषज | | | | ४०-१६. | | ,, ४५-१४. |
| श्रीद्वज | | | | ४०-१६. | | ,, ४५-१४. |
| हृज्ज | | | | ४०-१६. | | ,, ४५-१४. |
| शकुज | | | | ४०-१६. | | ,, ४५-१४. |

| रोगाणां | २५४ | | | | | नामानि |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | वाधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| छोमज | | | | ४०-१६. | | म. ४५-१४. |
| विष— | | | | | | |
| जङ्गम | चि. २३-९, १०. | क. ३-५. | उ. ३५-५. | ६९-२. | पू. ७-१९६. | „ ६६-१, ३, २३. |
| स्थावर | „ २३-११- १३. | „ २-५. | „ ३५-४. | ६९-३. | „ ७-१९६. | „ ६६-२. |
| गरविष | „ २३-१४. | | „ ३५-६. | ६९-३५, ३७. | „ ७-२००. | „ ६६-४८. |
| कृत्रिमविष | | „ २-२४. | „ ३५-६. | | „ ७-१९९, २००. | „ ६६-४७. |
| हृषीविष | „ २३-३१. | „ २-२५, २६. | „ ३५-३३. | ६९-२५, २६. | „ ७-२००. | „ ६६-३७. |
| पत्र-विष. | | | | | | „ ६६-५. |
| फल „ | | | | | | „ ६६-६. |
| पुष्प „ | | | | | | „ ६६-७. |
| खट्वा „ | | | | | | „ ६६-८. |
| सार „ | | | | | | „ ६६-८. |
| निर्यास „ | | | | | | „ ६६-८. |
| क्षीर „ | | | | | | „ ६६-९. |
| धातु „ | | | | | | „ ६६-१०. |
| कन्द „ | | | | | | „ ६६-११. |
| द्रव्य— | चि. २५. | सू. २१-२८. | | ४२-१. | „ ७-७१. | |
| वातजन्य | | „ २१-२८. | उ. २५-५- ७. | ४२-२. | „ ७-७२. | |
| पित्तजन्य | | „ २१-२८. | „ २५-७, ८. | ४२-३. | „ ७-७२. | |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भाषप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| श्लेष्मजन्य | | सू. २१-२८. | स. २५-९. | ४२-४. | पू. ७-७२. | |
| रक्तजन्य | | ,, २१-२८. | ,, २५-१०. | | ,, ७-७२. | |
| वातपित्तज | | ,, २१-२८. | ,, २५-११. | | ,, ७-७३. | |
| वातकफज | | ,, २१-२८. | ,, २५-११. | | ,, ७-७३. | |
| पित्तकफज | | ,, २१-२८. | ,, २५-११. | | ,, ७-७३. | |
| वातरक्तज | | ,, २१-२८. | ,, २५-११. | | ,, ७-७४. | |
| पित्तरक्तज | | ,, २१-२८. | ,, २५-११. | ४२-५. | ,, ७-७४. | |
| कफरक्तज | | ,, २१-२८. | ,, २५-११. | ४२-५. | ,, ७-७४. | |
| वातपित्तरक्तज | | ,, २१-२८. | ,, २५-११. | ४२-५. | ,, ७-७४. | |
| वातकफरक्तज | | ,, २१-२८. | ,, २५-११. | ४२-५. | ,, ७-७५. | |
| पित्तकफरक्तज | | ,, २१-२८. | ,, २५-११. | ४२-५. | ,, ७-७५. | |
| वातपित्तकफज | | ,, २१-२८. | ,, २५-११. | ४२-५. | ,, ७-७३. | |
| वातपित्तकफरक्तज | | ,, २१-२८. | ,, २५-११. | | ,, ७-७४. | |
| मणायाम | | | नि. १५-२७, २८. | | | |
| दुष्टमण | चि. २५-२०. | ,, २२-७. | स. २५-२-४. | ४२-७,८. | ,, ७-७२. | |
| सथोमण | | चि. २-९,१०. | ,, २६-२. | ४३-१,२. | ,, ७-७६. | |
| नाडीमण | ,, २५-५६. | नि. १०-९,१०. | | ४५-१,२. | ,, ७-७९. | |
| शुद्धमण | ,, २५-८६. | सू. २३-१८. चि. १-७. | ,, २५-११, १२. | ४५-८,९. | ,, ७-७२. | |
| रुक्षमाणमण | | सू. २३-१९. | ,, २५-२२, २३. | ४५-९,१०. | | |
| सप्तत्यमण | | ,, २६-१३. | | ४३-१५. | | |

| रोगाणां | २५६ | | | | | नामानि |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| सम्यग्गुरुद्वयण | | सू. २३-२०. | | ४२-१०, ११. | | |
| निज | वि. २५-९, १०. | वि. १-३. | उ. २५-१. | ४२-१. | पू. ७-७१. | |
| आगन्तुज | ,, २५-७. | ,, १-३. | ,, २५-१. | ४२-१. | ,, ७-७१. | |
| वृद्धि (वर्धन) | ,, १२-९४. | नि. १२-३. | नि. ११-२१, २२. | ३७. | ,, ७-६६. | म. ४२. |
| वातज | ,, १२-९४. | ,, १२-६. | ,, ११-२४. | ३७-३. | ,, ७-६६. | ,, ४२-३. |
| पित्तज | ,, १२-९४. | ,, १२-६. | ,, ११-२४. | ३७-४. | ,, ७-६६. | ,, ४२-४. |
| कफज | ,, १२-९५. | ,, १२-६. | ,, ११-२५. | ३७-४. | ,, ७-६६. | ,, ४२-५. |
| रक्तज | | ,, १२-६. | ,, ११-२५. | ३७-५. | ,, ७-६७. | ,, ४२-६. |
| मेदोज | ,, १२-९४. | ,, १२-६. | ,, ११-२६, २७. | ३७-५. | ,, ७-६७. | ,, ४२-७. |
| मूत्रज | ,, १२-९४. | ,, १२-६. | ,, ११-२६. | ३७-६. | ,, ७-६७. | ,, ४२-८. |
| अन्त्रवृद्धि | ,, १२-९४, ९५. | ,, १२-६. | ,, ११-२९- ३१. | ३७-७- ११. | ,, ७-६७. | ,, ४२-९. |
| अण्डवृद्धि | | | | | ,, ७-६७. | |
| शीतपित्त— | | | | ५०-१-४. | ,, ७-१०२. | ,, ५४. |
| उदरद | सू. २०-१७. | | | ५०-१५. | ,, ७-१०२. | ,, ५४-४. |
| कोष्ठ | ,, २४-१६. | | उ. ३१-३२. | ५०-६. | ,, ७-९४. | ,, ५४-६. |
| शीतला— | | | | १-१०. परि० | | ,, ५९-५५. |
| शूल— | | ,, ४२. | | २६-१. | ,, ७-४२. | ,, २९. |
| वातज | | ,, ४२-८२, ८३. | | ३६-२-५. | ,, ७-४२. | ,, २९-२- ५. |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| पित्तज | | ठ. ४२-८४, ८५. | | २६-६-८. | पू. ७-४२. | म. २९-६-८. |
| कफज | | ,, ४२-८५, ८६. | | २६-९-१०. | ,, ७-४२. | ,, २९-९-१०. |
| साक्षिपातिक | | ,, ४२-८७. | | २६-११. | ,, ७-४३. | ,, २९-१२. |
| आमशूल | | ,, ४२-१२३- १२५. | | २६-१२. | ,, ७-४३. | ,, २९-१३. |
| कुक्षिशूल | | | | | | ,, २९-१४. |
| द्वन्द्वजशूल | | | | २६-१३, १४. | ,, ७-४२. | ,, २९-११- १५. |
| अम्लपित्तजशूल | | | | | ,, ७-४४. | |
| परिणामशूल | | | | २६-१५- १७. | ,, ७-४३. | ,, २९-२३. |
| अक्षद्वजशूल | | | | २६-२१, २२. | ,, ७-४४. | ,, २९-२९. |
| वस्तिशूल | | ,, ४२-१३३, १३४. | | | | ,, २९-१४. |
| नाभिशूल | | | | | | ,, २९-१४. |
| रुदयशूल | | ,, ४२-१३१- १३२. | | | | ,, २९-१८. |
| पार्श्वशूल | | ,, ४२-११७- ११९. | | | ,, ७-१०६. | ,, २९-११. |
| त्रिकशूल | | | | | ,, ७-१०६. | |
| मूत्रशूल | | ,, ४२-१३५. | | | | |
| पुरीषशूल | | ,, ४२-१३६-१३९. | | | | |
| अक्षदोषजशूल | | ,, ४२-१४२-१४४. | | | | |

| रोगाणां | २५८ | | | | | नामानि |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भायप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| शोष— | नि. ६. | | | | | |
| (राजयक्ष्मन्) | „ ६. | उ. ४१. | नि. ५-१६- २३. | १०-१४. | पृ. ७-२३. | म. ११. |
| शोथ— | „ १२-१. | सू. १७-३. | „ १३-२१. | ३६-१. | „ ७-६५. | „ ४१-४. |
| शोणितजन्यरोग- | सू. २४-१. | „ १४-३४. | | | | |
| अक्षिरोग | „ २४-११. | | | ५९. | „ ७-१५३. | „ ६३. |
| अग्निषाद | „ २४-१३. | | | | | |
| अतिदौर्बल्य | „ २४-१३. | | | | | |
| अन्नपानविदाह | „ २४-१४. | | | | | |
| अरुचि | „ २४-१३. | | | १४. | | |
| उपकुश | „ २४-१२. | नि. १६-२१- २३. | उ. २१-२१- २३. | ५६-१७. | „ ७-१३२. | „ ६५-३१. |
| कण्डू | „ २४-१६. | | | | | |
| कम्प | „ २४-१५. | | सू. ११-६. | | „ ७-११२. | „ २३-२१७. |
| कृष्ट | „ २४-१६. | „ ५. | नि. १४. | ४९-१-६. | „ ७-८७. | „ ५३. |
| कोठ | „ २४-१६. | | उ. ३१-३३. | ५०-६. | „ ७-९४. | „ ५४-६. |
| क्रोधप्रचुरता | „ २४-१४. | | | | „ ७-१२०. | |
| क्लम | „ २४-१४. | | | | | „ १८-२१. |
| गुरुगात्रता | „ २४-१३. | | | | „ ७-१२२. | |
| गुल्म | „ २४-१२. | उ. ४२-४. | नि. ११-३३- ३८. | २८-१, २. | „ ७-५२. | „ ३१. |
| चर्मदल | „ २४-१६. | नि. ५-१०. | नि. १४-२९. | ४९-१८. | „ ७-८९. | „ ५३-२६. |
| तन्द्रातिथेय | „ २४-१५. | | | | „ ७-१२२. | |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भाषप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| तमोऽतिदर्शन | सू. २४-१५. | | | | पू. ७-१२१. | |
| तिकांम्लोद्गिरण | „ २४-१४. | | | | | |
| निद्रा | „ २४-१५. | | | | | म. १८-२२. |
| पिष्टका | „ २४-१६. | नि. ६-१४. | | ३३-२७, २८. | „ ७-१२६. | „ ३७. |
| पिपासा | „ २४-१३. | | | | | „ १७. |
| पूरयास्यता | „ २४-११. | | | | „ ७-१४१. | |
| पूतिगन्धता | „ २४-११. | | | | „ ७-१२७. | |
| पूतिग्राणता | „ २४-११. | उ. २२-८. | | | „ ७-१४८. | |
| प्रदर | „ २४-१२. | | | ६१-१. | „ ७-१७६. | „ ६७. |
| प्रमीलक | „ २४-१२. | | उ. २३-१४. | | | |
| बुद्धिसंमोह | „ २४-१४. | | | | | |
| मद | „ २४-१५. | | नि. ६-२६, २७. | १८-७-११. | „ ७-२०३. | „ १९. |
| मुखपाक | „ २४-११. | नि. १६-६५, ६६. | उ. २१-५८, ५९. | ५६-५५. | „ ७-१४०. | „ ६५-१४८. |
| रक्तपित्त | „ २४-१२. | उ. ४५-३, ४. | नि. ३-१. | ९. | „ ७-२०. | „ ९-१४८. |
| रक्तमेह | „ २४-१२. | नि. ६-११. | „ १०-१६. | ३३-१५. | „ ७-६१. | „ ३७-१५. |
| लवणास्यता | „ २४-१४. | | | | | |
| वातरक्त | „ २४-१२. | „ १-४२- ४४. | „ १६. | २३-१-१८. | „ ७-१०३. | „ २८. |
| विद्रधि | „ २४-१२. | „ ९-७. | „ ११. | ४०-१-२०. | „ ७-७०. | „ ४५. |
| विवर्णता | „ २४-१३. | | | | | |
| विसर्प | „ २४-१२. | „ १०-३. | „ १३. | ५२-१-२५. | „ ७-१००. | „ ५१. |
| स्वरक्षय | „ २४-१५. | „ १६-६१. | उ. २१-५७. | ५६-५२. | „ ७-२९. | „ ६५-१३२. |

| रोगाणां | २६० | | | | | नामानि |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| शरीरदौर्गन्ध्य | सू. २४-१५. | | | | पू. ७-११८. | म. २६-८. |
| स्वेदाधिक्य | ,, २४-१५. | | | | ,, ७-११७. | |
| शिरोरुद्ध | ,, २४-१३. | उ. २५-३. | | | | |
| सन्ताप | ,, २५-१३. | | | | ,, ७-१२७. | |
| शूफरोग— | | नि. १४. | उ. ३३. | ४८. | ,, ७-८३. | ,, ५२. |
| अवमन्थ | | ,, १४-८, ९. | ,, ३३-१२, १३. | ४८-६. | ,, ७-८४. | ,, ५२-९. |
| अलर्जी | | ,, १४-७. | ,, ३३-१४. | ४८-४. | ,, ७-८५. | ,, ५२-६. |
| अष्टीलिका | | ,, १४-५. | ,, ३३-१६. | ४८-३. | ,, ७-८४. | ,, ५२-३. |
| अवपाटिका | | | ,, ३३-१९. | | ,, ७-८४. | |
| उत्तमा | | ,, १४-११. | ,, ३३-१४. | ४८-८, ९. | ,, ७-८५. | ,, ५२-१२. |
| कुम्भिका | | ,, १४-६. | ,, ३३-१३. | ४८-३. | ,, ७-८६. | ,, ५२-५. |
| अथित | | ,, १४-६. | ,, ३३-२१. | ४८-३. | ,, ७-८३. | ,, ५२-४. |
| निरुद्धमणि | | | ,, ३३-१९, २०. | | ,, ७-८५. | |
| तिलकालक | | ,, १४-१६, १७. | ,, २३-२५, २६. | ४८-१४, १५. | ,, ७-८६. | ,, ५२-१९. |
| त्वक्पाक | | ,, १४-१२. | ,, ३३-२३. | ४८-१०. | ,, ७-८४. | ,, ५२-१४. |
| पुष्करिका | | ,, १४-१, १०. | ,, ३३-१४, १५. | ४८-७. | ,, ७-८५. | ,, ५२-१०. |
| मांसपाक | | ,, १४-१५. | ,, ३३-२३. | ४८-१२, १३. | ,, ७-८५. | ,, ५२-१७. |
| मांसार्बुद | | ,, १४-१३. | ,, ३३-२५. | ४८-१२. | ,, ७-८५. | ,, ५२-१६. |
| मृदित | | ,, १४-७. | ,, ३३-१६. | ४८-५. | ,, ७-८४. | ,, ५२-७. |
| विद्रधि | | ,, १४-१५. | ,, ३३-२५. | ४८-१३. | ,, ७-८६. | ,, ५२-१८. |
| घतपीनक | | ,, १४-१२. | ,, ३३-२२. | ४८-९, १०. | ,, ७-८४. | ,, ५२-१३. |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः त. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| शोणितार्तुद | | नि. १४-१३. | च. ३३-२४. | ४८-११. | पू. ७-८६. | म. ५२-१५. |
| सर्पपिका | | ,, १४-४. | ,, ३३-११, १२. | ४८-२. | ,, ७-८४. | ,, ५२-२. |
| संमूढपिठका | | ,, १४-८. | ,, ३३-१५. | ४८-५. | ,, ७-८५. | ,, ५२-८. |
| स्पर्शहावि | | ,, १४-१०. | ,, ३३-२१. | ४८-८. | ,, ७-८५. | ,, ५२-११. |
| निवृत्त | | | ,, ३३-१७, १८. | | | |
| शिरोरोग— | ,, १७. | | | ६०. | ,, ७-१४९. | |
| वातजन्य | ,, १७-१६- २१. | उ. २५-५. | ,, २३-३-७. | ६०-२. | ,, ७-१४९. | ,, ६१-३. |
| पित्तजन्य | ,, १७-२२, २३. | ,, २५-६. | ,, २३-९. | ६०-३. | ,, ७-१५०. | ,, ६१-४. |
| फफुजन्य | ,, १७-२४, २५. | ,, २५-७. | ,, २३-१०, ११. | ६०-४. | ,, ७-१५०. | ,, ६१-५. |
| संक्षिप्तजन्य | ,, १७-२६. | ,, २५-८. | ,, २३-११. | ६०-५. | ,, ७-१५०. | ,, ६१-६. |
| रक्तज | - | ,, २५-८. | ,, २३-११. | ६०-५. | ,, ७-१५०. | ,, ६१-७. |
| कुम्भजन्य | ,, १७-२७- २९. | ,, २५-१०, ११. | ,, २३-१२- १५. | ६०-७. | ,, ७-१५१. | ,, ६१-१०. |
| अनन्तवात | सि. ९-८४, ८५. | ,, २५-१३- १५. | | ६०-९, १०. | | ,, ६१-१३, १४. |
| अर्धविभेदक | ,, ९-७४- ७८. | ,, २५-१५, १६. | ,, २३-७, ८. | ६०-११-१३. | ,, ७-१४९. | ,, ६१-१७- १९. |
| सूर्यवर्त | ,, ९-७९- ८३. | ,, २५-११- १३. | ,, २३-१८- २०. | ६०-८. | ,, ७-१५१. | ,, ६१-११, १२. |
| शङ्खक | ,, ९-७०- ७३. | ,, २५-१६- १८. | ,, २३-१६, १७. | ६०-१४, १५. | ,, ७-१५१. | ,, ६१-१५, १६. |
| शिरःकम्प | | | ,, २३-१५. | | ,, ७-१५१. | |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| क्षयजशिरोरोग | | | | ६०-६. | | म. ६१-९. |
| उपशीर्षक | | | च. २३-२१. | | पू. ७-१५१. | |
| श्वयथु— | वि. २३. | | ३६. | | „ ७-६५. | म. ४२. |
| पातज | चि. १२-१२. | „ २३-५. | नि. १३-३०-३२. | ३६-७. | „ ७-६५. | „ ४२-५. |
| पित्तज | „ १२-१३. | „ २३-५. | „ १३-३३-३७. | ३६-८. | „ ७-६५. | „ ४२-६. |
| कफज | „ १२-१४. | „ २३-५. | „ १३-३५-३७. | ३६-९. | „ ७-६५. | „ ४२-७. |
| अभिपातज | | सू. १७-४. | „ १३-३८, ३९. | ३६-११, १२. | „ ७-६६. | |
| विषज | | चि. २३-५. | „ १३-४०-४२. | ३६-१३-१५. | „ ७-६६. | |
| द्वन्द्वज | | | „ १३-३७. | ३६-१०. | „ ७-६६. | |
| सन्निपातज | | „ २३-५. | „ १३-३७. | | „ ७-६६. | |
| उपजिह्विका | सू. १८-१९. | नि. १६-३९. चि. २२-४८. | उ. २१-३५. | ५६-३२. | „ ७-१३५. | „ ६६-९१. |
| गलगुण्ठी | „ १८-२०. | नि. १६-४१. | „ २१-३७, ३८. | ५६-३३. | „ ७-१३६. | „ ६६-९९. |
| गलगण्ड | „ १८-२१. | „ ११-२२. | „ २१-५३. | ३८-१, २. | „ ७-१३९. | „ ४४. |
| गलग्रह | „ १८-२२. | | | | | |
| विसर्प | „ १८-२३. | „ १०-३. | सू. ८. | ५२-१-४. | „ ७-१००. | „ ५६. |
| पिडका | „ १८-२४. | „ ६-१४. | नि. १०. | ३३-२७, २८. | „ ७-६३. | „ ३८. |
| तिलक | „ १८-२५. | नि. १४-१६, १७. | उ. ३३-२५, २६. | ५५-३७. | „ ७-९२. | „ ५३-१९. |
| शङ्खक | „ १८-२६. | उ. २५-१६-१८. | „ २३-१६, १७. | ६०-१४, १५. | „ ७-१५१. | |

| रोगाणां | २६३ | | नामानि | | | |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|----------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | साधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भास्कराक्षः ख. अ. श्लो. |
| कर्णमूलशोथ | सू. १८-२७; चि. ३-२८७. | | | २-२५. | पू. ७-१४६. | म. १-५०४. |
| प्लीहवृद्धि | ,, १८-२८. | नि. ७-१५. | | १-१७. | | ,, ३३. |
| उदररोग | ,, १८-३१. | ,, ७. | नि. १२. | ३५-१,२. | ,, ७-५१. | ,, ४१. |
| आनाह | ,, १८-३२. | उ. ५६-२०, २१. | ,, ११-६०. | २७-१७-१९. | ,, ७-४९. | ,, ३१-१९. |
| अधिमंस | ,, १८-३३. | नि. १६-२५, २६. | उ. २१-२७. | ५६-२१. | | ,, ६६-३५. |
| चर्मकील | चि. १४-१. | ,, २-१८- २०. | सू. ७-५७. | ५-४३. | ,, ७-१३. | ,, ५-४५. |
| रोहिणी | सू. १८-३४- ३६. | ,, १६-४१- ४९. | उ. २१-४२. | ५६-३९-४१. | ,, ७-१३७. | ,, ६६. |
| शास्त्रक | चि. १२-७५. | ,, १६-५१. | ,, २१-४५, ४६. | ५६-४२. | ,, ७-१३८. | ,, ६६-१२२. |
| शिरःशोथ | | | ,, २३-३-१५. | | | |
| सर्वस्तर | | | | ३६-१६. | | |
| विडालिका | ,, १२-७६. | | | | | |
| तालुविदधि | ,, १२-७७. | | | | ,, ७-१३८. | |
| तालुवाक | ,, १२-७७. | ,, १६-४५. | ,, २१-४०. | ५६-३७. | ,, ७-१३६. | ,, ६६-१०७. |
| अभिजिहिका | चि. १२-७७. | ,, १६-५२. | ,, २१-३४, ३५. | ५६-४३. | ,, ७-१३४. | ,, ६६-१२३. |
| उपकुश | ,, १२-७८. | ,, १६-२१- २३. | ,, २१-२१- २३. | ५६-१७. | ,, ७-१३२. | ,, ६६-३१. |
| दन्तविदधि | ,, १२-७८. | | ,, २१-२४, २५. | ५६-२९. | ,, ७-१३२. | ,, ६६-३७. |
| गण्डमाला | ,, १२-७९. | ,, १९-१०- १२. | ,, २९-२५. | ३८-८,९. | ,, ७-६७. | ,, ४४-८. |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| ग्रन्थि | चि. १२-८७. | नि. ११-३. | उ. २९-१. | ३८-११. | पू. ७-६८. | म. ४४-११. |
| अर्बुद | „ १२-८७. सू. १८-३३. | „ ११-१४, १५. | „ २९-१४, १५. | ३८-१८, १९. | „ ७-६९. | „ ४४-१८, १९. |
| अलजी | चि. १२-८८. | „ १४-७. | „ ३३-१४. | ३३-२७. ५९-७४. ४८-४. | „ ७-६४. | „ ५३-६. |
| अक्षत | | | „ ३१-२२- २४. | | | |
| विदारिका | „ १२-८९. | „ १३-२४, २५. | „ ३१-१६. | ५५-२१. | „ ७-६४. | „ ६६-१३४. |
| विस्फोट | „ १२-९०. | „ १३-१८. | „ ३१-९. | ५३-१-३. | „ ७-९६. | „ ५८. |
| स्फोट | „ १२-९०. | | | | | |
| कक्षा | „ १२-९१. | „ १३-१६. | „ ३१-११. | ५५-१४. | „ ७-९५. | „ ६१-६३. |
| रोमान्तिका | „ १२-९२. | | | ५४-१३. | | „ ६०-२२. |
| मसूरिका | „ १२-९३. | „ १३-३८. | „ ३१-८. | ५४-१-४. | | „ ६०-४६. |
| ब्रध्न | „ १२-९४. | | | | | |
| भगन्दर | „ १२-९६. | „ ४-३. चि. ८. | „ २८. | ४६-१. | „ ७-८०. | „ ५०-३. |
| जालकगर्दभ | „ १२-९९. | नि. १३-१४. | „ ३१-१३, १४. | | „ ७-९३. | „ ६१-१५१. |
| अभिघातजशोथ | „ १२-७. | सू. १७-४. | नि. १३-३८. | ३६-११, १२. | „ ७-६६. | „ ४२-१०. |
| व्रणजशोथ | „ १२-७. | „ १७-३. | | ३६-१३, १४. | | „ ४७-२. |
| विषजन्यशोथ | „ १२-७. | सू. १७-४. चि. २३-५. | नि. १३-४०- ४२. | ३६-१३, १४. | „ ७-६६. | „ ४२-१२. |
| अपची | | नि. ११-१०- १२. | उ. २९-२५. | ३८-९, १०. | „ ७-६८. | „ ४४-९. |

| रोगाणां | २६५ | | | | | नामानि |
|--------------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|--------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता खं. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| वृद्धि | सू. १८-३०. | नि. १२-४. | नि. ११-२१, २२. | ३७-१२. | पू. ७-६६. | म. ४३. |
| स्त्रीपद— | वि. १२-९८. | ,, १२-१०. | उ. २९. | ३९-१. | ,, ७-७०. | ,, ४५. |
| वातज | | ,, १२-११. | ,, २९-२०. | ३९-२. | ,, ७-७०. | ,, ४५-३. |
| पित्तज | | ,, १२-११. | ,, २९-२०. | ३९-३. | ,, ७-७०. | ,, ४५-४. |
| कफज | | ,, १२-११. | ,, २९-२०. | ३९-३. | ,, ७-७०. | ,, ४५-४. |
| आस— | | उ. ५३. | नि. ४. | १२. | ,, ७-२४. | |
| महाआस | वि. १७-४६- ४८ | ,, ५१-१२. | ,, ४-१३- १५. | १२-१८-२०. | ,, ७-२५. | ,, १४-५, ७. |
| कर्णश्वास | ,, १७-४९- ५१. | ,, ५१-१३. | ,, ४-१६, १७. | १२-२१-२३. | ,, ७-२५. | ,, १४-८, १०. |
| छिन्नश्वास | ,, १७-५२- ५४. | ,, ५३-११. | ,, १४-११- १३. | १२-२४-२९. | ,, ७-२५. | ,, १४-११. १३. |
| तप्तकश्वास- (प्रतप्तकश्वास) | ,, १७-५५- ६४. | ,, ५१-८- १०. | ,, ८-६-१०. | १२-२७-३४. | ,, ७-२४. | ,, १४-१४- २२. |
| छद्मश्वास | ,, १७-६५. | ,, ५१-७. | ,, ४-५. | १२-३७-४०. | ,, ७-२४. | ,, १४-२४- २६. |
| श्लेष्मविकार— (नानात्मज) | | | | ७-१८-२० ३/४. परि०, ७-११२. | | |
| अतिस्थूल्य | सू. २०-१७. | सू. १५-३२. | सू. ११-८. | | | |
| अपक्वि | ,, २०-१७. | | | | | |
| आलस्य | ,, २०-१७. | | ,, ११-७. | ७-२०. | ,, ७-१२४. | ,, २८-३. |
| उदरं | ,, २०-१७. | | | ५०-३, ४. | ,, ७-१, २. | |
| कटुकांक्ष | | | | | | ,, २८-३. |
| स्रवणकामिता | | | | | | ,, २८-३. |

| रोगाणां | २६६ | | | | | नामानि |
|------------------------------|---------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| बुद्धिमान्द्य | | | | | | म. २८-३. |
| अचैतन्य | | | | | | ,, २८-३. |
| मूत्राधिक्य | | | | | | ,, २८-३. |
| शुक्राधिक्य | | | | | | ,, २८-३. |
| शैत्य | | | | | | ,, २८-४. |
| कण्ठोपलेप (मुखलेप) | सू. २०-१७. | | | ५०-१८. | पू. ७-१२२. | ,, २८-२. |
| गलगण्ड | ,, २०-१७. | नि. ११-२२. | सू. २१-५३. | ३८-१. | ,, ७-१३९. | |
| गुरुगात्रता | ,, २०-१७. | | सू. ११-७. | ३८-१८. | ,, ७-१२२. | ,, २८-४. |
| तन्द्रा | ,, २०-१७. | | | ३८-१८. | ,, ७-१२२. | |
| तृप्ति | ,, २०-१७. | | | ३८-२०. | ,, ७-१२४. | ,, २८-३. |
| धमनीप्रतिचय | ,, २०-१७. | | | | | |
| निद्राधिक्य | ,, २०-१७. | | ,, ११-८. | ३८-१८. | ,, ७-१२२. | ,, २८-२. |
| बलासक | ,, २०-१७. | नि. १६-५४. | | | | |
| मलाधिक्य | ,, २०-१७. | | | ३८-२०. | ,, ७-१२४. | ,, २८-३. |
| मुखमाधुर्य | ,, २०-१७. | | | ३८-१८. | ,, ७-१२२. | ,, २८-२. |
| मुखस्राव (प्रसेक) | ,, २०-१७. | | ,, ११-७. | १२-१८. | ,, ७-१२२. | ,, २८-२. |
| घीताग्निता (अग्निमान्द्य) | ,, २०-१७. | | | | | ,, २८-३. |
| श्लेष्मोद्गरण | ,, २०-१७. | | | | | |
| श्वेतमूत्रनेत्रवर्चस्त्व | ,, २०-१७. | | | १२-१९. | ,, ७-१२३. | ,, २८-३. |
| श्वेतावभासता | ,, २०-१७. | | ,, ११-७. | १२-१९. | ,, ७-१२३. | |

| रोगाणां | २६७ | | | | | नामानि |
|------------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|--------------------------------------|----------------------------|
| रोगाणां नामानि- | खरक- संहिता स्या. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्या. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्या. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता रा. अ. श्लो. | भावप्रकाशः रा. अ. श्लो. |
| घामरुक् | | | | | | म. १-५४. |
| सैमित्त्य | सू. २०-१७. | | | | | ,, २८-४. |
| हृदयोपलेप | ,, २०-१७. | | | | | |
| पथरवाक्यता | | | | ७-३०. परि० | पृ. ७-१२४. | ,, २८-३. |
| सद्योम्रण- | | | | ४३-१,२. | ,, ७-७६. | |
| अविकृल्लस | | | उ. २६-३. | | ,, ७-७६. | |
| विलम्बी | | | ,, २६-४. | | ,, ७-७६. | |
| हृत्त | | वि. २-१०, ११. | ,, २६-३. | ४३-३. | ,, ७-७६. | |
| विज | | ,, २-१९, २०. | ,, २६-४. | ४३-११. | ,, ७-७६. | |
| पिपित्त (प्रचलित, विदलित) | | ,, २-२१, २२. | ,, २६-५. | ४३-१३. | ,, ७-७६. | |
| पृष्ट | | , २-२२, २३. | ,, २६-२,३. | ४३-१४. | ,, ७-७६. | |
| मिन्न | | ,, २-११, १२. | ,, २६-५. | ४३-४. | ,, ७-७६. | |
| शत (निपातित) | | ,, २-२०, २१. | ,, २६-४. | ४३-१२. | ,, ७-७६. | |
| संन्यास- | | उ. ४३-२०, २१. | नि. ३६-६- ३९. | १७-२२, २३. | ,, ७-३२. | ,, ११-२३. |
| स्त्रीरोग- | | | | | ,, ७-१७४. | |
| अपरापात | | सा. १०-११. | सा. २-३९. | | ,, ७-१८२. | ,, ७-१३६, १३७. |

| रोगाणां नामानि- | करक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता स्र. अ. श्लो. | भावप्रकाशः स्र. अ. श्लो. |
|----------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|---------------------------------------|-----------------------------|
| असृग्दर | चि. ३०-२०४. २०८. | शा. २-१८- २०. | | ६१. | पू. ७-१७६. | म. ६८. |
| आर्तवदोष | | शा. २-५. | | ६१. | ,, ७-१७५. | ,, ७०. |
| गर्भलाव | | ,, २-५. नि. ८-१०. | | ६४-२. | ,, ७-१८२. | ,, ७०-७२. |
| गर्भपात | | ,, ८-९, १०. | | ६४-२. | ,, ७-१८२. | ,, ७०-७२. |
| प्रदर | चि. ३०-२०४- २०९. | शा. २-१८- २०. | | ६१. | ,, ७-१७६. | ,, ६८. |
| योनिरोग | ,, ३०-१. | उ. ३२. | उ. ३३. | ६२. | ,, ७-१७७. | ,, ६०. |
| सोमरोग | | | | ३-१-१०. परि. | ,, ७-६३. | ,, ६९. |
| मूढगर्भ | | नि. ८-४, ५. | शा. २-२९, ३०. | ६४-१०. | ,, ७-१८१. | ,, ७०-११३. |
| मर्कल | | शा. १०-२२. | शा. १-९२. | ६४-१०. (१) | ,, ७-१८१. | ,, ७०-१४८. |
| सूतिकारोग | | शा. १०-१९. | | ६५-१०. | ,, ७-१८४. | ,, ७०-१४५. |
| योनिक्लन्द | | | | ६३-१०. | ,, ७-१८०. | ,, ६६-१९. |
| मृतगर्भ | शा. ८-३०. | ,, ८-१२, १३. | शा. २-२२- २४. | ६४-८. | | ,, ७०-११७. |
| स्रोतोरोग— | वि. ५. | शा. ९-१२. | | | | |
| प्राणवाहि— स्रोतोदुष्टि | ,, ५-८. | ,, ९-१२. | | | | |
| अम्बुवाहि— | ,, ५-८. | ,, ९-१२. | | | | |
| अक्षवाहि— | ,, ५-८. | ,, ९-१२. | | | | |
| रसवाहि— | ,, ५-८. | ,, ९-१२. | | | | |
| रक्तवाहि— | ,, ५-८. | ,, ९-१२. | | | | |

| रोगाणां | २६९ | | | | | नामानि |
|--------------------|-----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|------------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चक्र- संहिता स्वा. अ. स्तो. | सुश्रुत- संहिता स्वा. अ. स्तो. | व. हृदयम् स्वा. अ. स्तो. | माधव- निदानम् अ. स्तो. | शार्ङ्गधर- संहिता अ. अ. स्तो. | भावप्रसाद- स्वा. अ. स्तो. |
| मांसवाहि- | वि. ५-८. | शा. ९-१२. | | | | |
| मोतोदुहि | | | | | | |
| मेरोवाहि- | " " ५-८. | | | | | |
| अस्तिवाहि- | " " ५-८. | | | | | |
| मज्जवाहि- | " " ५-८. | " ९-१२. | | | | |
| शुक्रवाहि- | " " ५-८. | " ९-१२. | | | | |
| आर्तवाहि- | " " ५-८. | " ९-१२. | | | | |
| मूत्रवाहि- | " " ५-८. | " ९-१२. | | | | |
| वर्षावाहि- | " " ५-८. | " ९-१२. | | | | |
| स्वेदवाहि- | " " ५-८. | | | | | |
| स्नायुक- | | | | १-१-५. परि० पृ. ७-१८. | | अ. ५-७-९. |
| स्वरभेद- | वि. ८. | | | १३-१. | " ७-२९. | " १०. |
| दातज | " ८-५३. | उ. ५३-४. | नि ५-२४, २५. | १३-२. | " ७-२९. | " १०-२. |
| पित्तज | " ८-५४. | " ५३-४. | " ५-२५. | १३-२. | " ७-२९. | " १०-३. |
| कफज | वि. ८-५४. | उ. ५३-५. | " ५-२६. | १३-३. | " ७-२९. | " १०-४. |
| सन्निपातज | | " ५३-५. | " ५-२६. | १३-३. | " ७-३०. | " १०-५. |
| क्षयज | " ८-५६. | " ५३-६. | " ५-२६. | १३-४. | " ७-३०. | " १०-६. |
| भेरोज | | " ५३-६, ७. | " ५-२७. | १३-४. | " ७-३०. | " १०-७. |
| रक्तजन्य | " ८-५५. | | | | | |
| वातजन्य | " ८-५५. | | | | | |
| पित्तजन्य | " ८-५५. | | | | | |
| हृक्का- | | | " ४-१८. | १२-३. | " ७-३०. | |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्या. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्या. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्या. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता स. अ. श्लो. | भावप्रकाशः स. अ. श्लो. |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| मृहती | वि. १७-२१- २६. | उ. ५०-१४. | वि. ४-२५- २७. | १२-१०. | पू. ८-२६. | म. १३-१०. |
| गम्भीरा | ,, १७-२७- ३०. | ,, ५०-१२, १३. | ,, ४-२८, २९. | १२-९. | ,, ७-२६. | ,, १३-९. |
| व्यपेता (यमला) | ,, १७-३१- ३३. | ,, ५०-१०, ११. | ,, ४-२३, २४. | १२-७. | ,, ७-२६. | ,, १३-७. |
| छिद्रा | ,, १७-३४. | ,, ५०-११, १२. | ,, ४-२१, २२. | १२-८. | ,, ७-२५. | ,, १३-८. |
| भ्रजग्रा | ,, १७-३८- ४१. | ,, ५०-९, १०. | ,, ४-१९, २०. | १२-६. | ,, ७-२५. | ,, १३-६. |
| हृद्रोग- | सू. १७. | ,, ४३. | ,, ५-३८. | २९-१. | ,, ७-५०. | ,, ३४-१. |
| वातज | ,, १७-३०, ३१. | ,, ४३-६. | ,, ५-३९- ४१. | २९-३. | ,, ७-५०. | ,, ३४-३. |
| पित्तज | ,, १७-३२, ३३. | ,, ४३-७. | ,, ५-४१, ४२. | २९-४. | ,, ७-५०. | ,, ३४-४. |
| कफज | ,, १७-३४, ३५. | ,, ४३-८. | ,, ५-४२, ४३. | २९-५. | ,, ७-५०. | ,, ३४-५. |
| सन्निपातज | ,, १७-३५, ३६. | ,, ४३-९. | ,, ५-४३. | २९-६. | ,, ७-५०. | ,, ३४-६. |
| कृमिजन्य | ,, १७-३७- ४०. | ,, ४३-९, १०. | ,, ५-४३, ४४. | २९-६. | ,, ७-५१. | ,, ३४-९. |
| इलीमक- | वि. १६-१३२, १३३. | ,, ४४-१२. | ,, १३-१८, १९. | ८-२२, २३. | ,, ७-२०. | ,, ८-२५, २६. |
| क्षय- | | | सू. ११. | | | |
| षातुक्षय | | सू. १५-९. | ,, ११-२४, २५. | | | |

| रोगाणां | २७२ | | | | | नामानि |
|--------------------|------------------------------|----------------------------------|----------------------------|---------------------------|----------------------------------|--------------------------|
| रोगाणां नामानि- | खरक- संहिता रपा. अ. ओ. | सुद्युत- संहिता रपा. अ. ओ. | अ. हृदयम् संज्ञा. अ. ओ. | नाचव- निदानम् अ. ओ. | शार्ङ्गधर- संहिता न. अ. ओ. | भाष्यप्रकाशः न. अ. ओ. |
| मलमय | | ,, १५-११. | ,, ११-२४, २५. | | | |
| मोक्षम | | ,, १५-७. | ,, ११-२४, २५. | | | |
| भोजःक्षय | | ,, १५-२४. | ,, ११-२९- ४१. | | | |
| भोजोदोष- | | | | | | |
| व्यापन | | ,, १५-२७. | | | | |
| विसेष | | ,, १५-२५, २६. | | | | |
| क्षय | | ,, १५-२७, २८. | | | | |
| क्षारदग्ध- | | ,, ११-२०. | | | ,, ८-१९६. | |
| हीनदग्ध | | ,, ११-२५. | स. ३०-३४, ३५. | | | |
| जतिदग्ध | | ,, ११-२६. | ,, ३०-३५. | | | |
| क्षीरदोष- | | | | ६७. | | न. ७१. |
| मैत्र्य | वि. ३०-२२७. | | | | | |
| मैत्र्य | ,, ३०-२२७. | | | | | |
| पैरस्य | ,, ३०-२३७. | | | | | |
| पेच्छित्य | ,, ३०-२३७. | | | | | |
| पेनसंज्ञात | ,, ३०-२३७. | | | | | |
| रीक्ष | वि. ३०-२३७. | | | | | |
| मीर | ,, ३०-२३७. | | | | | |

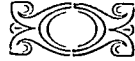
| रोगाणां | २७२ | | | | | नामानि |
|--------------------|--------------------|--------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता | सुश्रुत- संहिता | अ. हृदयम् स्या. अ. श्रो. | माधव- निदानम् अ. श्रो. | शार्ङ्गधर- संहिता स. अ. श्रो. | भावप्रकाशः स. अ. श्रो. |
| स्नेह | चि. ३०-२३७. | | | | | |
| वातज | ,, ३०-२४०- २४२. | नि. १०-२३. | स. २-२, ३. | ६७-२. | | म. ७१-११८. |
| पित्तज | ,, ३०-२४३- २४५. | ,, १०-२४. | ,, २-३. | ६७-२. | | ,, ७१-११९. |
| कफज | ,, ३०-२४६- २५०. | ,, १०-२४. | ,, २-४. | ६७-३. | | ,, ७१-१२०. |
| सन्निपातज | | ,, १०-२४. | ,, २-४. | ६७-३. | पू. ७-१८२. | ,, ७१-१२१. |
| स्तनदोष- | | ,, १०-१७. | | ६६-१, २. | | ,, ५०-१७ १. |
| क्षुद्ररोग- | | | | | ,, ७-९१. | ,, ६१. |
| अग्निरोहिणी | | ,, १३-१९, २०. | ,, ३१-१४, १५. | ५५-१६, १७. | ,, ७-९३. | ,, ५१-६६. |
| अजगण्डिका | | ,, १३-४. | ,, ३१-१. | ५५-१. | | ,, ६१-१४३. |
| अनुसर्षा | | ,, १३-२३. | | | ,, ७-१४. | ,, ६१-११६. |
| अन्धालम्बी | | ,, २३-६. | | ५५-३. | ,, ७-९१. | ,, ६१-१४६. |
| अहिपूतनरु | | ,, १३-५७, ५८. | | ५५-५०, ५१. | | ,, ६१-१०३. |
| अवपाटिका | | ,, १३-५०, ५२. | ,, ३१-१९. | ५५-४५. | ,, ७-८४. | ,, ६१-८५, ८६. |
| थलघ्न | | ,, १३-३२. | ,, ३१-२५. | ५५-२७. | ,, ७-९४. | ,, ६१-११८. |
| अरुपिष्टा | | ,, १३-३६. | ,, ३१-२०. | ५५-३१. | ,, ७-१५२. | ,, ६१-१९. |
| इन्द्रविट्ठा | | ,, १३-११. | | ५५-८. | ,, ७-९१. | ,, ६१-१४१. |
| इन्द्रउत | | ,, १३-३३, ३४. | ,, ३१-३४, ३५. | ५५-२८, २९. | ,, ७-१५०. | ,, ६१-६. |

| रोगाणां | २७३ | | | | | नामानि |
|--------------------|---------------------------------|-------------------------------------|----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------|
| रोगाणां नामानि- | वरक- संहिता रपा. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता रपा. अ. श्लो. | अ. हृदयम् रपा. अ. श्लो. | नाथय- निदानम् अ. श्लो. | शास्त्रधर- संहिता अ. अ. श्लो. | भारतनाथः |
| उःश्लेष्ट | | | अ. ३१-३२. | | | |
| शोथ | | | ॥ ३१-३३. | | | |
| हरिषेणिका | | वि. १३-१५. | ॥ ३१-३६. | ५५-१३. | ५. ७-१३. | ५. ७-१३. |
| षष्ठा | वि. १२-१०, ११. | ॥ १३-१६. | ॥ ३१-११. | ५५-१६. | ॥ ७-१५. | ॥ ६१-६३. |
| कट्टपिका | सु. १७-८४. | ॥ १३-८. | ॥ ३१-३. | ५५-७. | ॥ ७-१३. | ॥ ६१-१०१. |
| कदर | | ॥ १३-३०, ३१. | ॥ ३१-२१. | ५५-३६. | ॥ ७-१३. | ॥ ६१-१०१. |
| गुणग | | ॥ १३-२२, २३. | ॥ ३१-२४. | ५५-१९. | ॥ ७-१५. | ॥ ६१-७०. |
| नाशिया | | ॥ १३-२४. | ॥ ३१-२६. | ५५-२८, २९. | ॥ ७-१५. | |
| गम्भनामा | | ॥ १३-१७. | ॥ ३१-१२. | ५५-१५. | ॥ ७-१३. | ॥ ६१-६३. |
| गर्दमिका | | ॥ १३-११. | ॥ ३१-१०. | ५५-९. | ॥ ७-१३. | ॥ ६१-१५०. |
| गुह्रंश | | ॥ १३-६१. | | ५५-१४. | ॥ ७-१३. | ॥ ६१-१०५. |
| चर्मकील | | ॥ १३-४५. | वि. ७-५७. अ. ३१-२६. | | ॥ ७-१३. | ॥ ६१-४७. |
| विष | | ॥ १३-२१. | ॥ ३१-२३. | ५५-१८, १९. | ॥ ७-१४. | ॥ ६१-७१. |
| जलुमणि | | ॥ १३-४१. | ॥ ३१-२७. | ५५-३५. | ॥ ७-१३. | ॥ ६१-११२. |
| जाम्बदेम | | ॥ १३-१४. | ॥ ३१-१३, १४. | ५५-१२. | ॥ ७-१३. | ॥ ६१-१५०. |
| तिलक | वि. १८-२५. | ॥ १३-४३. | ॥ ३१-२५. | ५५-३७. | ॥ ७-१३. | ॥ ६१-१३५. |
| दारुण | ॥ १८-२६. | ॥ १३-३५. | ॥ ३१-२३. | ५५-३०. | ॥ ७-१३. | ॥ ६१-१५. |
| न्यस्त | | ॥ १३-८४. | ॥ ३१-२७. | ५५-३८. | | ॥ ६१-१५०. |

| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयस् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता त. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
|---------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| निरुद्धप्रवृत्त | | नि. १३-५२- ५४. | च. ३१-१९, २०. | ५५-४५-४७. | पू. ७-८६. | म. ६१-८९, ९०. |
| नीलिका | | ,, १३-४६. | ,, ३१-२८. | ५५-४०. | ,, ७-९३. | ,, ६१-३८. |
| पनसिका | | ,, १३-१२. | ,, ३१-३. | ५५-११. | ,, ७-९१. | ,, ६१-२४. |
| प्रसृति | | | ,, ३१-३०, ३१. | | | |
| पद्मनीकण्डक | | ,, १३-४०. | ,, ३१-६. | ५५-३४. | ,, ७-९४. | ,, ६१-१३८. |
| पलित | | ,, १३-३७. | ,, ३१-२९. | ५५-३२. | ,, ७-१५२. | ,, ६१-१. |
| परिवर्तिका | | ,, १३-४७, ४८. | ,, ३१-१७, १८. | ५५-४१- ४३. | ,, ७-८६. | ,, ६१-७९, ८०. |
| पाप्मा | | ,, १३-२८. | | ४९-२१. | ,, ७-८९. | |
| पाददारी | | ,, १३-२९. | | ४९-२५. | | ,, ६१-१६२. |
| पापाणगर्दभ | | ,, १३-१३. | ,, ३१-४. | ४९-१०. | ,, ७-९९. | ,, ६१-२७. |
| मपक | | ,, १३-४२. | ,, ३१-२६. | ५५-३६. | ,, ७-९३. | |
| यवप्रख्या | | ,, १३-५. | ,, ३१-२. | ५५-२. | ,, ७-९२. | ,, ६१-१४५. |
| युवानपिडका (मुलदूषिका) | | ,, १३-३९. | ,, ३१-५. | ५५-३३. | ,, ७-९४. | ,, ६१-३१. |
| राजिका | | | ,, ३१-१२, १३. | | | |
| लाञ्छन | | | च. ३१-२७. | | | |
| रकसा | | नि. १३-२८. | ,, ३१-५. | | पू. ७-९२. | |
| रुहा (इन्फ्रलस) | | ,, १३-३४. | ,, ३१-२४, २५. | ५५-२९. | ,, ७-१५२. | |
| वराहर्षा | | | | ५५-५१. | ,, ७-९२. | |

| रोगाणां | २७५ | | | | | नामानि |
|----------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|---------------------------------|-----------------------------------|-------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | गान्ध- विद्यानम् अ. श्लो. | कार्ष्ण- संहिता अ. अ. श्लो. | भावप्रकाशः अ. अ. ... |
| नन्दी | | मि. १३-९, १०. | उ. ३१-१९, २०. | | पृ. ५-१२, २१-२२. | ५३. |
| व्यस्य | | " १३-१६. | " ३१-३८. | ५५-५६, ५७. | " ७-१५. | " ६१-६३. |
| निर्विघ्न | | " १३-२८. | | ५९-६३. | " ७-८८. | |
| विदारिका | | " १३-२४, २५. | " ३१-१६. | ५७-६१. | " ७-१६. | " ६१-६२. |
| विद्रुहा | | " १३-७. | " ३१-७. | ५५-५६. | " ७-११. | " ६१-१४८. |
| विद्या | | | " ३१-१०. | | | |
| विस्फोटक- | | " १३-१८. | " ३१-९. | ५३-६. | " ७-१६. | |
| वातज | | | | ५३-६. | " ७-१६. | |
| पित्तज | | | | ५३-७. | " ७-१७. | |
| कफज | | | | ५३-६. | " ७-१७. | |
| सन्निपातज | | | | ५३-८, ९. | " ७-१६. | |
| रक्तज | | | | ५३-१०. | " ७-१७. | |
| हृत्तज | | | | ६३-७, ८. | " ७-१७. | |
| शृङ्गारज- | | " १३-१९, ६०. | | ५७-५९, ५३. | " ७-१७. | " ६१-१८. |
| मरीचा | | " ३-१३, १४. | | ५५-६३, ६३. | | |
| शर्करा | | " १३-२५- ३८. | " ३१-१७- १९. | ५५-६४. | " ७-१७. | " ६१-१७७. |
| मरिचिका (मरिचिका) | | | | ५५-६५. | " ७-१७. | " ६१-११७. |

| रोगाणां | २७६ | | | | | नामानि |
|--------------------|----------------------------------|--------------------------------------|-----------------------------|------------------------------|-------------------------------------|---------------------------|
| रोगाणां नामानि- | चरक- संहिता स्था. अ. श्लो. | सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो. | अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो. | माधव- निदानम् अ. श्लो. | शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो. | भावप्रकाशः ख. अ. श्लो. |
| सन्निवृत्त्युद | | ,, १३-५५, ५६. | ,, ३१-३२, ३३. | ५५-४८, ४९. | पू. ७-९४. | म. ६१-९५. |
| इयावपिण्डिका | | | | | | ,, ६१-१३१. |
| आलस्य | | | | | | ,, ६१-१६०. |
| उत्क्षेप | | | | | | ,, ६१-१६१. |
| ग्लानि | | | | | | ,, ६१-१६२. |



चरकसंहितागतयोगानां स्थानाध्याय-

श्लोकोल्लेखयुतानि नामानि ।

Names of the Recipes in the Caraka Samhita along with reference to the Section, Chapter and Verse.

अगस्त्यहरीतकीलेह-वि. १८-५७-६२.

अगुर्वाद्यतैल-वि. ३-२६७.

अतिविषादिचूर्ण-वि. १४-१८७.

अनुवासनप्रयोग-वि. ३-१७२३.

अपत्यकरघृत-वि. २-४ | २८, ४ | २९.

अपत्यकररस-वि. २-२ | १४-२ | १७.

अपत्यकरीषष्टिकादिगुटिका-वि. २-२ | ३-२ | ९.

अपामार्गादिवर्ति-वि. ९-६६३.

अभयादिकाथ-वि. १५-१०३, १०४.

अभयारिष्ट-वि. १४-१३८-१४३.

अमृतप्राशघृत-वि. ११-३५-४३.

अमृताद्यतैल-वि. २८-१५७-१६४.

अमृताद्यतैल-वि. २९-१०३-१०९.

अमृताह्लादिवर्ति-वि. २६-२४३-२४५.

अर्कक्षीरादिप्रलेप-वि. १४-५७, ५८.

अश्वगन्धादिक्षार-वि. १७-११७.

अष्टकट्टरतैल-वि. २७-४७.

अष्टशतारिष्ट-वि. १२-३२, ३३.

आचाररसायन-वि. १-४ | ३०-४ | ३५.

आटरूपककाथ-वि. ४-६५.

आमलकघृत-वि. १-२ | ४-३ | ६.

आमलकचूर्ण-वि. १-२ | ८.

आमलकरसायन-वि. १-१ | ७५.

आमलकाद्यघृत-वि. ५-१२२.

आमलकायसत्राहारसायन-वि. १-३ | ३-३ | ६.

आमलकावलेह-वि. १-२ | ७.

आमलकावलेह (अपर)-वि. १-२ | १०.

इक्षुदित्स्वगादिधूमवर्ति-वि. १८-७५.

इन्द्रोकरसायन-वि. १-४ | ६.

इन्द्रोकरसायन (अपर)-वि. १-४ | १३-४ | २६.

उदुम्बरादितैल-वि. ३०-७३-७७.

उदुम्बरादिप्रदेह-वि. २१-७२.

उदुम्बरादिलेह-वि. २६-९८, ९९.

पङ्कजादिलेप-वि. ७-१२६.

पङ्कजाद्युद्धर्तनयोग-वि. ७-१२७.

पर्वाक्षीजादियोग-वि. २६-५२, ५३.

परण्डतैल-वि. १३-१७२३.

परण्डतैलप्रयोग-वि. ५-९२, ९३.

ऐन्द्ररसायन-वि. १-३ | २४-३ | २९.

कंसहरीतकी-वि. १२-५०-५२.

कटभ्यादितैल-वि. १०-३३.

कटुकादिकाथ-वि. २६-२०१, २०२.

कटुकाद्यघृत-वि. १६-४७-४९.

कट्फलादिकाथ-वि. १८-११२, ११३.

कनकक्षीरीतैल-वि. ७-१११-११६.

कनकारिष्ट-वि. १४-१५८-१६८.

करीरादिप्रयोग-वि. ३०-८२, ८३३.
 कलिद्रादिचूर्ण-वि. १५-१०१.
 कलकयोग-वि. १०-११०.
 कल्याणकघृत-वि. ९-३५-४१.
 कशेरुकादिघृत-वि. २६-९४, ९५.
 कालकचूर्ण-वि. २६-१९४, १९५.
 कालियादिप्रदेह-वि. २१-७४.
 कालमर्दादिघृत-वि. १८-१६३, १६४.
 किराततिकादिकषाय-वि. २१-५५, ५६.
 किराततिकादिकाथ-वि. ३०-७६७, २६८.
 किरातायचूर्ण-वि. १५-१३७-१४०.
 कुटजकलादिघृत-वि. १४-१९७.
 कुटजादिरसकिया-वि. १४-१८८-१९२.
 कुलत्थादिघृत-वि. १८-१२९.
 कुष्ठादितैल-वि. २७-४३, ४४.
 कुष्ठालेप-वि. ७-११७, ११८.
 केवलामलकरसायन-वि. १-३ | ९-३ | १४.
 कोलादिघृत-वि. ११-३४.
 कण्टकारीघृत-वि. १८-१२५-१२८.
 कण्टकारीघृत-वि. १८-३५.
 कम्पिह्लादितैल-वि. २५-९०, ९१.
 क्षारगुटिका-वि. १२-४३-४६.
 क्षारगुटिका-वि. १५-१८३-१८५.
 क्षारघृत-वि. १५-१७१, १७२.
 क्षारतैल-वि. २६-२२६-२३०.
 क्षारतैल-वि. १३-१६९-१७१.
 क्षारघृष-वि. १७-९७, ९८.
 क्षारान्द-वि. २३-१०१-१०४.
 क्षीरयोग-वि. २९-७१.
 क्षीरयोग (प्रथम)-वि. २-३ | ६-३ | ७.
 क्षीरयोग (द्वितीय)-वि. २-३ | ८-३ | १०.

क्षीरयोग (तृतीय)-वि. २-३ | ११.
 क्षीरपट्टकघृत-वि. ५-१४७, १४८.
 क्षदिरादिगुटिका-वि. २६-२०६-२१४.
 खदिरादितैल-वि. २६-२०६-२१४.
 खुट्टाकपञ्जकतैल-वि. २९-११४३.
 गण्डीराद्यरिष्ट-वि. १२-२९-३१.
 गन्धहस्तिनामाऽगद-वि. २३-७०-७६.
 गुडार्द्रकप्रयोग-वि. १२-४७, ४८.
 गुडूच्यादिघृत-वि. १८-१६१, १६२.
 गृहधूमादियोग-वि. २६-१९८.
 गोक्षीरवाजीकरण-वि. २-३ | ३-३ | ५.
 गौडारिष्ट-वि. १६-१०५.
 घृतयोग-वि. १२९-७१.
 चन्दनादिकाथ-वि. १४-१८६.
 चन्दनादिघृत-वि. १५-१२५-१२८.
 चन्दनादितैल-वि. ३-२५८.
 चन्दनादियोग-वि. २५-८८.
 चन्दनादियोग-वि. २३-१९१, १९२.
 चव्यादिघृत-वि. १४-१८५, १०६.
 चव्यादिघृत (अपर)-वि. १४-१०७-१०९.
 चव्यादिघृत-वि. १९-४४.
 चाङ्गेरीघृत-वि. २९-४३.
 चित्रकघृत-वि. १३-११६.
 चित्रकादिघृत-वि. १२-५५-५९.
 चित्रकादिलेप-वि. ७-८५, ८६.
 चित्रकादिलेह-वि. १८-१३-५६.
 चूर्णाञ्जन-वि. २६-२४७-२४९.
 चयवनप्राशावलेह-वि. १-१ | ६२-१ | ७४.
 जम्बादिचूर्ण-वि. ८-१२७.
 जीवनीयघृत-वि. २९-६१, ७०.
 जीवनीययमक-वि. १०-२८.

जीवन्त्यादिघृत-वि. ८-१११-११३.
 जीवन्त्यादिलेह-वि. १८-१७६-१७९.
 तक्रारिष्ट-वि. १४-७१-७५.
 तालीशाद्यगुटिका-वि. ८-१४५-१४८.
 तालीशाद्यचूर्ण-वि. ८-१४५-१४८.
 तिक्तपट्पलकपृष्ठ-वि. ७-१४०-१४३.
 तिक्तेक्षकादितैल-वि. ७-१०८, ११०.
 तुम्बुर्वादिधूपन-वि. १४-५०, ५१.
 तेजोवत्यादिघृत-वि. १७-१४१-१४४.
 तैलपञ्चक-वि. ५-९६.
 त्र्यम्बादिलेप-वि. ७-८८.
 त्र्यम्बाणादिघृत-वि. ५-११८-१२१.
 त्रिफलादिक्वाथ-वि. ३-२०८, २०९.
 त्रिफलादिक्षार-वि. १५-१८८-१९३.
 त्रिफलादिचूर्ण-वि. ७-६८, ६९.
 त्रिफलाधरिष्ट-वि. १२-३९, ४०.
 त्रिफलायोग-वि. ७-१३६-१३९.
 त्रिफलारसायन (प्रथम)-वि. १-३ | ४१, ३ | ४२.
 त्रिफलारसायन (द्वितीय)-वि. १-३ | ४३,
 ३ | ४४.
 त्रिफलारसायन (तृतीय)-वि. १-३ | ४५.
 त्रिफलारसायन (चतुर्थ)-वि. १-३ | ४६, ३ | ४७.
 त्रिकण्टकादियमक-वि. ६-३८, ३९.
 तुट्ट्यादिचूर्ण-वि. २६-६४, ६५.
 त्र्यम्बणादिघृत-वि. ५-६५.
 त्र्यम्बणादिघृत-वि. २६-८७, ८८.
 त्र्यम्बणादिचूर्ण-वि. १४-६२-६४.
 त्र्यम्बणाद्यघृत-वि. १५-८७.
 त्र्यम्बणाद्यघृत-वि. १८-३९-४२.
 त्वग्नादिलेह-वि. १८-९२, ९३.
 दन्तीघृत-वि. १६-५१.

दन्तीहरीतकी-वि. ५-१५४-१६०.
 दन्त्यरिष्ट-वि. १४-१४४-१४७.
 दन्त्यादिक्षीर-वि. १२-२४.
 दशमूलादिघृत-वि. १७-१४०.
 दशमूलादिघृत-वि. ८-९७, ९८.
 दशमूलादिघृत-वि. १८-१२३, १२४.
 दशमूलादियवागू-वि. १७-१०२, १०३.
 दशमूलाद्यघृत-वि. १५-८२-८६.
 दाडिमाद्यघृत-वि. १६-४४-४६.
 दाढ्यादिक्वाथ-वि. १४-१८६.
 दाढ्यादिघृत-वि. १४-१९६.
 दुग्धप्रयोग-वि. २४-१९५-१९८.
 दुरालभादिक्षार-वि. १५-१७९, १८०.
 दुरालभादिघृत-वि. ८-१०६-११०.
 दुरालभादिलेह-वि. १८-५०.
 दुरालभासव-वि. १५-१५२-१५५.
 दुःस्पर्शादिलेह-वि. १८-५१.
 दृष्टिप्रदावर्ति-वि. २६-२५४, २५५.
 देवदावर्दितािल-वि. २६-२२३.
 द्राक्षाघृत-वि. १६-५२.
 द्राक्षादिघृत-वि. २६-९३.
 द्राक्षादिशीतकषाय-वि. २१-५८.
 द्राक्षाद्यघृत-वि. ५-१२३.
 द्रोणीप्रवेशिकारसायन-वि. १-४ | ७.
 द्विक्षारादिचूर्ण-वि. १८-४८, ४९.
 द्विपञ्चमूलादिघृत-वि. १८-१५८-१६०.
 द्विरुत्तरहिङ्गवादिचूर्ण-वि. २६-२०.
 धानफगादितैल-वि. ३०-७८-८१.
 धात्र्यरिष्ट-वि. १६-१११-११३.
 धात्र्यदिलेह-वि. १६-१००, १०१.
 नलदादिप्रलेप-वि. २१-७७.

नवायलचूर्ण-चि. १६-७०, ७१.
 नागशलादियोग-चि. ११-९१, ९२.
 नागशलारसायन-चि. १-२ | ११.
 नागरघृत-चि. १३-११५३.
 नागरादिघृत-चि. १४-११०-११२.
 नागरादियोग-चि. ५-९१३.
 नागरादियोग-चि. १८-११५.
 नागराद्यचूर्ण-चि. १५-१२९-१३१.
 नारायणचूर्ण-चि. १३-१२५-१३२३.
 निदिग्धिकादियुष्-चि. १७-९४, ९५.
 निरुहस्तिप्रयोग-चि. ३-१६९, १७०३.
 नीलिन्याद्यघृत-५-१०५-१०९.
 नीलिन्याद्यचूर्ण-चि. १३-१३७३.
 नृकेशादिघूपन-चि. १४-४९.
 न्यग्रोधपादादिदेह-चि. २१-७३.
 पञ्चकोलघृत-चि. १३-११२-११४.
 पञ्चकोलादिलेप-चि. ३०-२६४, २६५.
 पञ्चगव्यघृत-चि. १०-१७.
 पञ्चमूलायघृत-चि. १५-८८-९३.
 पञ्चशिरीष-अगद-चि. २३-२१८.
 पञ्चाश्लक्योग-चि. २४-१५१.
 पटोलमूलादिकाथ-चि. ७-६२-६४.
 पटोलमूलादिकाथ-चि. १२-५३, ५४.
 पटोलादिकाथ-चि. २१-६०.
 पटोलादिकाथ-चि. २१-६१.
 पटोलादिशीतकषाय-चि. २१-५९.
 पटोलाद्यचूर्ण-चि. १३-११९-१२४.
 पथ्याघृत-चि. १६-५०.
 पथ्यादिचूर्ण-चि. १५-१०२.
 पत्रकादिलेह-चि. १८-१७४, १७५.
 पत्रप्रयोग-चि. ३-१६७३.

पलाण्डुप्रयोग-चि. १४-२०४.
 पलाशादिपानीय-चि. १५-१४२, १४३.
 पलङ्कपादितैल-चि. १०-३४-३६.
 पाठादिचूर्ण-चि. १४-१९५.
 पाठादियोग-चि. १८-११४.
 पाठादियोग-चि. ३०-२६५, २६६३.
 पारुषकघृत-चि. २९-५८-६०.
 पापाणशेदादिघृत-चि. २६-६०, ६१.
 पापाणशेदादिचूर्ण-चि. २६-६०, ६१.
 पिण्डतैल-चि. २९-१२१-१२३.
 पिण्डालक-चि. १५-१६०-१६२.
 पिप्पलीरसायन-चि. १-३ | ३२-३ | ३५.
 पिप्पलीवर्धमानरसायन-चि. १-३ | ३६-३ | ४०.
 पिपल्यादिघृत-चि. ३-२९९-२२१.
 पिप्पल्यादिघृत-चि. १४-११३-११८.
 पिप्पल्यादिघृत-चि. १४-१०३, १०४.
 पिप्पल्यादिघृत-चि. १८-३६-३८,
 पिप्पल्यादिचूर्ण-चि. १३-७९३.
 पिप्पल्यादिचूर्ण-चि. १५-१०६, १०७.
 पिप्पल्यादिचूर्ण-चि. १५-१६८, १६९.
 पिप्पल्यादिप्रलेप-चि. १४-५४.
 पिप्पल्यादिलेह-चि. १८-९४.
 पिप्पल्यादिलेह-चि. १८-१३५-१३७.
 पिप्पल्याद्यघृत-चि. ५-७४, ७५.
 पीतकचूर्ण-चि. २६-१९६-१९७.
 पुनर्नवादितैल-चि. २६-८२.
 पुनर्नवादियोग-चि. २६-६३.
 पुनर्नवाद्यष्टि-चि. १२-३४-३८.
 पुनर्नवामण्डूर-चि. १६-९३-९६.
 पुराणघृत-चि. ९-५९-६२३.

पुष्करमूलादिकवक-वि. २६-८४.
 पुष्करमूलादिकाथ-वि. २६-८५, ८६.
 पुष्पातुनचूर्ण-वि. ३०-१०-१६.
 प्रथमनचूर्ण-वि. २६-१५.
 प्रमोण्डरीकादिकाथ-वि. २१-५७.
 प्रमोण्डरीकादितैल-वि. २५-८९.
 प्रमोण्डरीकादितैल-(अपर)-वि. २५-९२.
 प्रमोण्डरीकादिधूमवर्ति-वि. १८-७१-७२.
 फटनिःकादिकाथ-वि. ६-४०.
 फटारिष्ट-वि. १४-१४८-१५२.
 फटारिष्ट (विशेष)-वि. १४-१५३-१५७.
 ब्रह्मतैल-वि. २८-१४८-१५६.
 ब्रह्मतैल-वि. २१-११९, १२०.
 ब्रह्माधिवृत-वि. ३-७२-१-२०६.
 ब्रह्माधिवृत-वि. १-२ | १२.
 बीजकादिक-वि. १६-१०६-११०.
 ब्रह्माधिवृत-वि. ३-७३, ७५.
 ब्रह्माधिवृत-वि. ३-७१.
 ब्रह्मजीमूठिका-वि. २-३ | २८, १ | ३३.
 ब्रह्मज्जमान (अम)-वि. ७-१ | १८, १-५७.
 ब्रह्मज्जमान (विशेष)-वि. १-१ | ५८, १ | ६१.
 ब्रह्मज्जमान-वि. १-२ | १३.
 ब्रह्मज्जमान-वि. १-२ | १४.
 ब्रह्मज्जमान-वि. ५-१८३-१४६.
 ब्रह्मज्जमान-वि. १-२ | १५.
 ब्रह्मज्जमानादिशार-वि. १०-१७७, १७८.
 भूमिम्वादिशार-वि. १५-१८१.
 भूमिम्वाचूर्ण-वि. १५-१३०, १३३.
 भण्डारवृष्टक-वि. १६-१०२-३०४.
 मधुकुतैल (साधारण)-वि. २९-११५-११८.
 मधुकादिधृत-वि. ११-४८, ४९.

मधुकादियोग-वि. १७-११५.
 मधुपण्यादितैल-वि. २९-१०-१५.
 मधुकपुष्पासव-वि. १५-१५०, १५१.
 मधुकादिहिम-वि. ३-२०६३.
 मधुकासव-वि. १५-१४६-१४९.
 मध्वरिष्ट-वि. १५-१६३-१६७.
 मनःशिलादिधूम-वि. १८-६९, ७०.
 मनःशिलादिधूमवर्ति-वि. १८-७४.
 मनःशिलादिधृत-वि. १७-१४५, १४६.
 मन्त्रयोग-वि. २३-६१.
 मरिचयोग-वि. ९-६८३.
 मरिचाचूर्ण-वि. १५-१०८-११०.
 महाकल्याणकपुन-वि. ९-४२-४४.
 महाखदिरधृत-वि. ७-१५१-१५६.
 महागन्धहस्तिनागाऽमद-वि. २३-६७-९४.
 महातिक्तकवृत्त-वि. ७-११८-११०.
 महानीलतैल-वि. २६-२६६, २७५.
 महापञ्चगव्यधृत-वि. १०-१८-२४.
 महापत्रकतैल-वि. २९-११०-११३.
 महापेषाचिकधृत-वि. ९-४५-४८.
 महामायूरधृत-वि. २६-१६६-१७४.
 मायूरधृत-वि. २६-१६३-१६५.
 मांसरक्तप्रयोग-वि. ३-१६६.
 मांस्वादियोग-वि. २३-१९०.
 मांसादिलेप-वि. ७-८७.
 गुक्ताचूर्ण-वि. १७-१२७-१२८.
 गुस्तादिचूर्ण-वि. ७-६५-६७.
 गुस्तादिधृत-वि. १०-४८, ४९.
 मूर्वादियोग-वि. २७-३५.
 मूलकतैल-वि. २८-१७२-१७५.
 मूलकाद्यतैल-वि. २८-१६७-१६९.

मूलासव-चि. १५-१५६-१५९.
 मृतसंजीवन-अगद-चि. २३-५४-६०.
 मृद्धीकादिलेह-चि. १८-९१.
 मृद्धीकादिचूर्ण-चि. २६-१९८३.
 मेध्यरसायन-चि. १-३ | ३०, ३१.
 मञ्जिष्ठादियोग-चि. २३-१९६३.
 यवानीषाडवचूर्ण-चि. ८-१४१-१४४.
 यवागूपयोग-चि. ३-१४९, १५०.
 यवादिघृत-चि. १३-११७३.
 यष्टिमधुकादियोग-चि. ३०-२७१, २७२.
 यष्ट्याद्धादिघृत-चि. ११-३३.
 योगराज-चि. १६-८०-८६.
 रास्नाघृत-चि. १८-४३-४६.
 रास्नातैल-चि. २८-१६५, १६६.
 रास्नाद्रितैल-चि. २६-१६०.
 रास्नादियूप-चि. १७-९६.
 रोहिण्यादिघृत-चि. ५-११५-११७.
 रोहितकघृत-चि. १३-८३-८६.
 लवणयोग-चि. २६-२४, २५.
 लशुनक्षीरप्रयोग-चि. ५-९४, ९५.
 लशुनाघघृत-चि. ९-४९-५१.
 लशुनाघघृत (अपर)-चि. ९-५२-५६.
 लोभासव-चि. ७-४१-४३.
 लोहचूर्णप्रयोग-चि. ३०-८४, ८५३.
 लौहादिरसायन-चि. १-३ | १५-३ | २३.
 दक्षादिघृत-चि. १०-२७.
 वचादिचूर्ण-चि. १५-१३४-१३६.
 वचादिचूर्ण-चि. २६-२१.
 वचादियोग-चि. ३०-२५३३.
 वत्सकादिद्रापाय-चि. ३-२०४, २०५.
 वत्सकादिप्रलेप-चि. २७-५४, ५५.

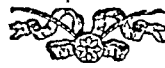
वत्सकादियोग-चि. १५-१८६, १८७.
 वाजीकरणघृत-चि. २-१ | ३३-१ | ३७३.
 वाजीकरणपिण्डरसाः-चि. २-१ | ३८-१ | ४२.
 वाट्ययोग-चि. ५-९८.
 वार्ताकयूप-चि. १७-१००.
 वासाघृत-चि. ४-८८.
 वासाघृत-चि. ५-१२६, १२७.
 वासादिघृत-चि. ३-२२२, २२३.
 विडङ्गादिशार-चि. १३-८०३.
 विडङ्गादिचूर्ण-चि. १८-४८३.
 विडङ्गादिलेह-चि. १८-५२.
 विडङ्गाघलेह-चि. १-२ | ९.
 विषादिकाहरघृततैल-चि. ७-१२०, १२१.
 विरेचन-चि. ३-१६८.
 विशालादिफाण्ट-चि. १६-६०-६२३.
 विषाणिकादियोग-चि. ३०-६७३.
 वृषमूलाद्रितैल-चि. २८-१७०, १७१.
 वृष्य-अण्डरस-चि. २-१ | ४९.
 वृष्यकुकुटमांसप्रयोग-चि. २-१ | ४८.
 वृष्यक्षीर-चि. २-२ | १८-२ | २०.
 वृष्यगुटिका-चि. २-४ | ३०-४ | ३२.
 वृष्यघृत-चि. २-२ | २१-२ | २३.
 वृष्यघृतभृष्टमत्स्यमांस-चि. २-४ | १७, ४ | १८.
 वृष्यदधिसरप्रयोग-२-२ | २४-२ | २६.
 वृष्यपायसयोग-चि. २-३ | १४.
 वृष्यपिप्पलीयोग-चि. २-३ | १२, ३ | १३.
 वृष्यपूपलिका-चि. २-२ | २८, २ | २९.
 वृष्यपूपलिका-चि. २-३ | १५-३ | १७.
 वृष्यपूपलिकादियोग-चि. २-२ | १०-२ | २३.
 वृष्यपूपलिकायोगौ-चि. २-४ | १९-४ | २२.
 वृष्यवस्ति-चि. २-४ | १०.

वृष्यमधुकयोग-चि. २-३ | १९.
 वृष्यमाषयोग-चि. २-१ | ४७.
 वृष्यमाहिपरस-चि. २-१ | ४२, १ | ४३.
 वृष्यमाहिपरस-चि. २-४ | १५, ४ | १६.
 वृष्यमांस-चि. २-१ | ४६.
 वृष्ययोग-चि. २-४ | २५, ४ | २७.
 वृष्यरसाः (अन्ये)-चि. २-१ | ४४, १ | ४५.
 वृष्यशतावरीघृत-चि. २-३ | १८.
 वृष्यषष्टिकौदनप्रयोग-चि. २-२ | २७.
 वृष्या माषादिपूपलिका-चि. २-४ | २३,
 ४ | २४.
 वृष्या मांसगुटिका-चि. ३-४ | ११-४ | १४.
 वृष्योत्कारिका-चि. २-४ | ३३, ४ | ३५.
 व्योपादि-अञ्जन-चि. ९-६५.
 व्योपादिघृत-चि. १६-११८-१२०.
 व्योपादिचूर्ण-चि. २६-५५.
 व्योपादिनस्य-चि. ९-६५.
 व्योपादियोग-चि. २३-१९७३.
 शरुद्रसप्रयोग-चि. १७-११६.
 शट्यादिगण-चि. ३-२११, २१२.
 शट्यादिचूर्ण-चि. १७-१२३, १२४.
 शट्यादिचूर्ण-चि. ५-८५-८७.
 शतावरीदिकाथ-चि. २६-५०.
 शनानर्यादिघृत-चि. ४-९५, ९६.
 शगदिपञ्चमूलक्षीर-चि. १८-१००.
 शर्कराव्यञ्जन-चि. २६-६६-६८.
 शर्करादिलेह-चि. १८-९०.
 शङ्खलादिप्रलेप-चि. २१-७५.
 शङ्खलादियोग-चि. २७-३३, ३४३.
 शिरीषादि-अञ्जन-चि. ९-६४३.
 शिरीषादिनस्य-चि. ९-६४३.

शिरोविरेचनप्रयोग-चि. ३-१७३३.
 शिलाजतुप्रयोग-चि. १२-४९.
 शिलाजतुप्रयोग-चि. ५-९७.
 शिलाजतुरसायन-चि. १-३ | ४८, ३ | ६५.
 शैलेयादितैल-चि. १२-६५, ६६.
 शैलेयादिप्रदेह-चि. १२-६५, ६६.
 शङ्खादिवर्ति-चि. २६-२४६.
 श्यामादिवर्ति-चि. २६-१२.
 श्योनाकादिपरिषेक-चि. २७-५६, ५७.
 श्वदंष्ट्रादिघृत-चि. ११-४४-४७.
 श्वदंष्ट्रादियोग-चि. २६-६३.
 श्वपित्ताञ्जन-चि. १०-५०.
 श्वपित्तधूपन-चि. १०-५०.
 श्वेतकरवीरपल्लवाद्यतैल-चि. ७-१०६, १०७.
 श्वेतकरवीराद्यतैल-चि. ७-१०५.
 पङ्कजपानीय-चि. ३-१४५.
 पाडव-चि. ११-८८-९०.
 सप्तच्छदादिक्वाथ-चि. २६-५७.
 सप्तच्छदादियवागू-चि. २६-५७.
 सारिवादिप्रलेप-चि. २१-७६.
 सितोपलादिचूर्ण-चि. ८-१०३, १०४.
 सिद्धार्थकादि-अगद-चि. ९-६९-७२.
 सिन्धुवारादियोग-चि. २३-१९५३.
 सुकुमारकतैल-चि. २९-९६-१०२.
 सुखावती वर्ति-चि. २६-२५२, २५३.
 सुनिपण्णकवाङ्गेरीघृत-चि. १४-२३४-२४२.
 सैन्धवादिचूर्ण-चि. ११-८५-८७.
 सैन्धवादिनैल-चि. २७-४५, ४६.
 सौवर्चलादिचूर्ण-चि. १७-१०९.
 सौवीराञ्जनादिवर्ति-चि. २६-२५०, २५१.
 स्थिरादिक्षीर-चि. १८-१०१, १०२.

स्थिरादिघृत-चि. २६-२३.
 स्थिरादिघृत-चि. २९-७६-७८.
 स्थिरादितैल-चि. २९-७६-७८.
 स्वर्णक्षीर्यादियोग-चि. २७-३६, ३७.
 हृषुपादिघृत-चि. ५-७१-७३.
 हृषुपादिचूर्ण-चि. १३-१३३-१३६.
 हरिद्रादिक्षार-चि. १५-१८२.
 हरिद्रादिघृत-चि. १६-५३.
 हरीतकीयोग-चि. १-१ | ७६.
 हरीतकीयोग-चि. १-१ | ७७.
 हरीतकीयोग-चि. १४-११९, १२०.
 हरीतकीलेह-चि. १८-१६८, १६९.

हरीतक्यादिघृत-चि. २६-८३.
 हरीतक्यादियोग-चि. १२-२२.
 हिङ्गवादिहैल-चि. २६-२२२३.
 हिङ्गवादिचूर्ण-चि. २६-२२.
 हिङ्गवादिचूर्ण-चि. १७-१०८.
 हिङ्गवादियवागू-चि. १७-१०२, १०३.
 हिङ्गवादिघृत-चि. ९-३४.
 हिङ्गवादिगुटिका-चि. ५-८४.
 हिङ्गवादिचूर्ण-चि. ५-७९-८३.
 हिङ्गुसौवर्चलाघघृत-चि. ५-६९, ७०.
 हीवेरादिघृत-चि. १४-२३०-२३३.
 हीवेरादिजल-चि. ४-३१.



चरकसंहितागतपारिभाषिकशब्दानां स्थानाध्याय-

श्लोकोल्लेखयुता व्याख्या* ।

Explanation of the Technical Terms in the Caraka Samhita, along
with reference to the Section, Chapter and Verse.

| | |
|--|---|
| अङ्गमर्दप्रशमनः-सू. ४-८. अङ्गमर्दं प्रशमयति इति । | अनात्मकः-वि. ९-११. अविधेयमनाः । |
| अचेतनम्-सू. १-४८. निरिन्द्रियम् । | अनाप्लुतः-इ. २-१२. अस्नातः । |
| अक्षानम्-वि. २६-२३६. अक्षानं क्रियते येन तद्द्रव्यं चक्षुः सृष्टम् (अ. ह. को.) । तेन द्रव्येण प्रक्षणम् । | अनिर्वेदः-सू. २५-४०. अखिणता । |
| अतिक्रुशः-सू. २१-१५. अतितनुः । | अनुपानम्-सू. २७-३२३. औषधाक्षपेयविशेषः । (श. क.) तच्च औषधपानानन्तरं विलम्ब्य प्रयोज्यम् (वै. न.) |
| अतियोगः-वि. ६-३१. संशोध्यतिरिक्तप्रवर्तनम् । | अनुबन्धः-वि. ६-११. अस्वहेतुप्रकृतिद्वयकालितः परचित्त्वाप्रशमनीयश्च । |
| अतिस्थूलः-सू. २१-२. अतिपीनः । | अनुबन्धः-वि. ६-११. स्वतन्त्रो व्यक्तलिङ्गो यथोक्त- समुत्पन्नप्रशमयश्च । |
| अव्यवसानम्-वि. ४-५. “अयमेवं रोगः” इत्येवं- भूतो निधायः । | अनुमानम्-सू. ११-२१. युक्त्यपेक्षस्तर्कः । |
| अध्यशनम्-वि. १५-२३६. भुक्तं पूर्वाशेषे तु पुनरध्यशनं भूतम्; अजीर्णं भुज्यते यत्तु तदध्यशनमुच्यते । (सु. सू. ४६-५०९.) | अनुरसः-सू. २६-२८. शुष्कस्य वाऽऽर्सस्य वा प्रथमजिह्वासंघे वाऽऽस्त्वादन्ते वा यो मधुरोऽयमम्लोऽय- मित्यादिना विकल्पेन न गृह्यते किं तर्ह्यव्यपदेश्यतया छाया- मात्रेण कार्यदर्शनेन वा गीयते सोऽनुरसः । |
| अध्युषितम्-वि. २७-५३. पशुषितम् । | अनुलोमनम्-सू. २७-२८४. कृत्वा पाकं मलानां यद्भित्त्वा बन्धमधो नयेत् । तच्चानुलोमनं हेयं यथा प्रोक्ता हरीतकी । (शा. सं. प्र. ख. ४-३३.) |
| अनभिष्यन्दि-सू. २१-५०. अजिग्धम् । | अनुलोमसंभाषा-वि. ८-१७. सन्धाय संभाषा । |
| अनशनम्-सू. २५-४०. उपवासः (श. क.) | |
| अनागतावेक्षणम्-वि. १२-४४. अनागतं विधिं प्रनाणीकृत्यार्थसाधनम् । | |

* अत्र प्रमाणत्वेन गृहीतानां ग्रन्थटीकाकाराणां संक्षिप्तसंज्ञानां विवरणम् ।

अ. ह.-अष्टाङ्गहृदयम् ।
अ. ह. को.-अष्टाङ्गहृदयकोषः ।
च.-चरकसंहिता ।
चक.-चक्रपाणिदत्तः ।
डल्हणः-डल्हणचार्यः ।
प्र. सं.-द्रव्यगुणसंग्रहः ।
ना. नि.-माधवनिदानम् ।

रा. नि.-राजनिघण्टुः ।
य. द.-यनौपधिदर्पणः ।
वै. श.-वैद्यकशब्दसिन्धुः ।
श. क.-शब्दकल्पद्रुमः ।
शा. सं.-शाङ्गधरसंहिता ।
सु.-सुश्रुतसंहिता ।

अनुवर्तमानाः-वि. ६-८. चिरकालमवतिष्ठमाना
बलमभिवर्धयन्तो वा ।

अनुवासनम्-सू. २-१४. स्नेहवस्तिः ।

अनुवासनस्कन्धौ-सि. ९-७. स्वावरात्मको जङ्गमा-
तनक्ष्ण स्नेहः ।

अनुवासनोपगः-सू. ४-८. पञ्चविंशो महाकषायः ।
अस्य द्रव्याणि अनुवासनद्रव्याणां सहायत्वेनोपगच्छन्तीति ।

अनुशस्त्राणि-सू. २५-४०. त्वक्सारदण्डिकाचकु-
रुविन्दजलौकोमिश्रारनखगोशीशेफालिशकापत्रकरीरवालाहु-
लय इति । (सु. सू. ८-१५.) हीनशस्त्राणि, शस्त्रसदृशानि
वा (उल्हणः)

अनुशीलनम्-वि. ४-८. संततशीलनम् ।

अनुपङ्गी-सू. २५-४०. पुनर्भावी ।

अनुपङ्गी-वि. २१-३४. चिरकालस्थायी ।

अनूकम्-शा. २-२७. प्राक्तनाऽव्यवहिता देहजातिः ।

अनूपः-सू. २५-४०. जलप्रायः । (श. क.)

अनैकान्तः (नैकान्तः)-सि. १२-४३. अन्यतरपक्षा-
नवधारणम् ।

अन्तःपरिमार्जनम्-सू. ११-५५. यदन्तःशरीरमनु-
प्रविश्यौषधमाहारजातव्याधीन् प्रमार्ष्टि ।

अन्तराशिः-सू. २७-३. जठराग्निः ।

अन्तर्वैगो ज्वरः-वि. ३-३३. गम्भीराख्यो ज्वरः ।
(सु. उ. ३९-९३.)

अन्तराधिः-शा. ७-५. मध्यम् ।

अन्नद्वेषः-नि. १-२४. अन्नारुचिः ।

अन्नरसखेदः-नि. १-२१. अन्नरसे खेरोऽन्नसादोऽन्न-
रसखेदः सर्वरसखिन्नेत्यर्थः ।

अन्नग्रहस्तोतः-वि. ५-८. यथा भुक्तमन्नमुदरं नीयते
सा गलनाही ।

अक्षविदाहः-वि. ४-६. अन्नस्य पक्वापक्वता ।

अक्षानुगन्तम्-सू. २७-३१९. यदाहारगुणैः पानं
विपरीतं तद्विपरीतं । अक्षानुगानं धातूनां दृष्टं यत्र विरोधि च ॥

अन्येद्युष्कः ज्वरः-वि. ३-३४, ६७. यः ज्वरः
प्रतिदिनं प्रत्येति सोऽन्येद्युष्कः; अन्येद्युष्कस्त्वहोरात्रादेककालं
प्रवर्तते । (मा. नि.)

अपचयः-सू. ७-३७. क्षयः । (श. क.)

अपचारः-सू. २८-७. अहिताहारोपयोगः ।

अपक्षितः-वि. ८-९८. क्षीणः । (श. क.)

अपतर्पणम्-सू. २३-२६. लङ्घनम् । (श. क.)

अपत्यमार्गः-सि. ९-६६. योनिः ।

अपथ्यम्-वि. १५-२३५. अद्वितम् । (श. क.)

अपदेशः-सि. १२-४२. प्रतिज्ञातार्थसाधनाय हेतु-
वचनम् ।

अपरा-शा. ६-२३. गर्भस्य नामिनाडीप्रतिबद्धा
'अमरा' इति लोके क्वयाता ।

अपस्प्रारः-नि. ८-६. चि. १०-३. स्मृतेरपगर्भं
प्राहुरपस्मारं भिषग्विदः । तमःप्रवेशं चीमत्सचेष्टं
धीमत्सवेष्टवात् ॥

अभिघातः-वि. ३०-१६६. अमिहननं (श. क.)

अभिपङ्क्तः-सू. २०-४. भूताद्यावेशः (श. क.)

अभिष्यन्दी-सू. २२-२४. दोषधातुमलस्रोतःश्लेष्मदात् ।

अभेपजम्-वि. १-१ | ५, अभेपजं च द्विविधं
बाधनं सानुबाधनम् ।

अभ्यङ्गः-वि. २-३ | २४. तैलमर्दनम् (श. क.)

अभ्यञ्जनम्-सू. १३-२४. अभ्यङ्गः (श. क.)

अभ्यासः-सू. २५-४०, २६-३४. भावाभ्यसनम-
भ्यासः शीघ्रं सततक्रिया ।

अमर्षः-वि. ९-१२. अक्षान्तिः ।

अम्लः-सू. २६-७५. भूम्यग्निगुणबाहुल्यात् अम्लः ।

अम्लकाक्षिकम्-वि. ५-७७. काजी (वे. शा.)

अयोगः-सि. ६-३१-३४. अयोगः प्रातिलोभ्येन न
चालपं वा प्रवर्तनम् ।

अरिष्टः-सू. २७-१८२. औषधकायमध्वादिसंपादितो दन्त्यभयारिष्टादिः । पक्षौषधाम्बुसिद्धं यत् मथं तत् स्यादरिष्टकम् । (च. द.)

अरिष्टम्-इ. ११-२९. क्रियापथमतिक्रान्ताः केवलं देहमाकुलाः । विष्टं कुर्वन्ति यद्दोषास्तदरिष्टं निश्च्यते ॥

अरिष्टा-चि. २३-३५. मन्त्रेण रज्ज्वादिभिर्वा विषोपरि ग्रन्थः ।

अरुचिः-सू. २८-९. अरुचौ मुखप्रविष्टं नाभ्यवहरति ।

अर्थः-सू. १-१५. सुवर्णादिः ।

अर्थः-सू. ३०-३. हृदयम् ।

अर्थः-सू. ३०-२५. अर्थाः शब्दादयो ज्ञेया गोचरा विषया गुणाः (च. शा. १-३१) .

अर्थापत्तिः-सि. १२-४२. यदकीर्तितमर्थादापद्यते साऽर्थापत्तिः ।

अर्थाभासः-वि. ८-५६. अर्थवदिव आभासते ।

अर्थविवशः-सू. ३०-१९. अर्थमागशः ।

अदितम्-सू. ५-५९. क्षिरानाशौष्ठयिषुकललेक्षण-सन्धिगः । अर्द्धशतानिलो वक्त्रमर्दितं जनयत्यतः । वक्त्रोभवति वक्त्रार्धं प्रोवा चाप्यपवर्तते ॥ शिरस्थलति वाक्त्रो नेत्रादीनां च वैकृतम् । प्रोवाचिषुकदन्तानां तस्मिन्पार्थे च वेदना ॥ (सु. नि. अ. १-६९, ७०-३.)

अर्शः-चि. १४-६. दोषास्त्वह्मासमेदांसि संरूप्य विविषाकृतीन् । मांसाङ्गुरानपानादौ कुर्वन्त्यर्शांसि ताडयुः ॥ (मा. नि. ५-२.)

अर्शोघ्नः-सू. ४-८. अर्शोह ।

अलजी-सू. १७-८८. दहति त्वचमुत्पाने तृष्णामोह-ज्वरप्रदाः । विसर्पत्यनिशं दुःखाद्दहत्यग्निरिवालजी ॥

अलसकः-वि. २-१२. प्रयाति नोर्ध्वं नाधस्तादाहारो न च पच्यते । आमाशयेऽलसीभूतस्तेन सोऽलसकः स्मृतः ॥ (अ. ह. ८-६३)

अवगाहः-सू. ७-७. स्नानम् ।

अवचूर्णनम्-चि. २५-४३. मणावचूर्णनं वर्ण्यं रोषणं लोमरोहणम् ।

अवपीडः-चि. ९-८९. अवपीड्य यत्र कल्कादीनि दीयन्ते ।

अवपीडः-चि. ४-९७. द्रव्यमापोषितं कृत्वा पीडयित्वा रसो दीयते यः सः ।

अवपीडकसर्पिः-चि. १४-२२३. भोजनस्योर्ध्वं यत् पीयते किंवा भूरिमात्रं सर्पिरवपीडकमुच्यते ।

अवपीडकसर्पिः-सू. ७-७. मूत्रजेषु तु पाने च प्राग्भक्तं शस्यते घृतम् ॥ जीर्णान्तिकं चोत्तमया मात्रया योजनाद्वयम् । अवपीडकमेतच्च संशितं (अ. ह. सू. ४-६३.)

अवपीडनम्-चि. २५-४०. कल्कादिना आलेपनं पूयनिर्गमार्थम् ।

अवसादि-चि. १९-५. भूमौ पतितं लीनं भवति ।

अवसादि-चि. ३०-१४०. दुष्टशुक्राय भेदः ।

अविधेयपरिरूपन्दम्-वि. २७-११. अस्वाधीनेन्द्रियम् ।

अविपाकः-सू. १६-१३. अपरिपाकः । (चै. शा.)

अविभ्रमः-वि. ४-८. अभ्रान्तिः ।

अधिभ्रमः-वि. ८-९४. पाककालेऽप्यवैकारिकः ।

अधिस्रम्-वि. २-४ । ५०. प्रतिगन्धरहितम् (चै. शा.)

अवृण्यम्-सू. २८-४. शुक्लम् ।

अशौण्डः-वि. ८-१३. शुण्डा मद्यशाला तत्प्रचारी शौण्डः अशौण्डस्तु तदप्रचारी ।

अश्मस्वेदः-सू. १४-४७, ४९. पाषाणस्वेदः ।

अश्रद्धा-सू. २८-९. अश्रद्धायां मुखप्रविष्टस्याहार-स्याभ्यवहरणं भवत्येव । परं त्वनिच्छा ।

असात्म्यम्-चि. ३०-२९३; शा. १-१२७. यत् सात्म्यविपरीतम्; असात्म्यमिति तद् विद्यात् यत् याति सहात्मताम् ।

असात्म्येन्द्रियार्थसंयोगः-सू. ११-३८. दुःखजनक इन्द्रियविषयसम्बन्धः ।

असाध्यः-सू. १०-८. साधयितुमशक्यः (श. क.)

असुखानुबन्धम्-वि. १-४ । ४. रोगरूपमसुखमनुबध्नातीति असुखानुबन्धम् ।

असुखोद्वर्कम्-वि. १-२३. असुखं दुःखरूपं उद्वर्कं उत्तरकालीनं फलं यस्य स तथा ।

असुनिभृतः-सू. ८-१९. असमाहितः ।

असृक्-वि. २९-१२०. आर्तवम् । (श. क.)

असृक्पित्तम्-सि. १०-१३. रक्तपित्तम् । (श. क.)

असृक्करः-सू. २७-२३८. शोणितकरः । (श. क.)

असृग्धरा-शा. ७-४. शोणितधरा । (श. क.)

अस्थि-इ. ७-३१. कुल्यम् । (श. क.)

अस्थिवाहीनि-वि. ५-८. द्रवरूपास्थिवाहीनि ।

अस्थिसारः-त्रि. ८-१०७. मज्जा । (श. क.)

अलम्-वि. १४-२११. रक्तम् ।

अस्वेदनम्-वि. ७-२१. स्वेदरहितम् ।

अदङ्कारः-शा. १-६३. बुद्धिविकारः ।

अहितम्-सू. २५-३२. अपथ्यम् ।

अहितम्-सू. ३०-२३. परदुःखजनकम् ।

अहिताहारजानम्-सू. २५-३३. समाध्वैव शरीरघातन् प्रकृतौ स्थापयति विषमांश्च समीकरोतीत्येतद्धितं विद्धि, विपरीतं त्वहितमिति.

अहिताहारजातम्-सू. २६-८५. यत् किञ्चिद्दोषमात्रं न निर्हरति कायतः । आहारजातं तत् सर्वमहिता-मोपपद्यते ॥

अंसः-इ. ३-५. स्कन्धः ।

आकाशम्-इ. ४-७. खम् ।

आकुञ्चनम्-शा. ७-१६. सङ्कोचः । (श. क.)

आकृतिः-सू. २४-३३. रूपम् (श. क.)

आकृतिः-इ. ७-८. संस्थानमाकृतिर्ज्ञेया ।

आगन्तुः-सू. ११-४५. भूतविषयाद्यभिप्रसङ्गहारादि-समुत्पद्यः ।

आढ्यवातः-वि. २९-११. आढ्यानां प्रायः भवतीति आढ्यरोगः, वातशोणितम् ।

आनाहः-वि. २६-२६. विष्मृत्तरोधकव्याधिः (वै. श.)
आमं शङ्कन्नानिचितं क्रमेण भूयो विवर्द्धं विगुणानिलेन । प्रवर्तमानं न यथास्वमेनं विकारमानादमुदाहरन्ति (मा. नि.)

आप्ताः-सू. ११-१८, १९. रजस्तमोभ्यां निर्मुक्ता-स्वपोज्ञानवलेन ये । येषां त्रिकालममलं ज्ञानमव्याहृतं सदा ॥ आप्ताः शिष्टा विमुक्तास्ते तेषां वाक्यमसंशयम् । सत्त्वं, वक्ष्यन्ति ते कस्मादसत्त्वं नीरजस्तमाः ॥

आमः-सि. ८-१९. कृमणोऽल्पवलेन घातुपाथम-पाचितम् । दुष्टमामाशयगतं रसमामं प्रचक्षते ॥ (मा. नि.)
आमाशयस्यः कायाभेदोर्वल्पादविपाचितः । आद्य आहार-घातुर्यः स आम इति संज्ञितः ॥ आहारस्य रसः शेषो यो न पक्वोऽभिजायवात् । स हेतुः सर्वरोगाणामाम इत्यभिधीयते (मा. नि.)

आयुः-सू. १-४२. शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगो धारि जीवितम् । नित्यगश्चानुबन्धश्च पथायैरायुर्न्यते ॥ (च. सू. १-४२.) तत्रायुश्चेतनावृत्तिर्जीवितमनुबन्धो धारिचे-त्येकोऽर्थः । (च. सू. ३०-२२.)

आयुर्वेदः-सू. १-४१. हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम् । मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते ॥
आयुर्वेदयतीत्यायुर्वेदः । (च. सू. ३०-२३) 'अ.युरस्मिन् विद्यते, अनेन चाऽऽयुर्विन्दन्ति' इत्यायुर्वेदः (सू. सू. १-१५)

आयुर्वेदतन्त्रम्-सू. ३०-२१. आयुर्वेदशास्त्रम् ।

आरनालम्-वि. १५-११६३. तुलामितं पष्टिकतण्डु-लस्य प्रशुल्य चाक्षं विधिवद् विधाय । द्रोणेऽन्मसि क्षिप्तमथ त्रियामां तत् सप्त रक्षेत् पिहितं प्रयत्नात् । तत्रैव क्लृप्तं सक्लृत् निरस्येत् तत् काविकं कथ्यते आरनालम् ॥ (व. द.)

आरोग्यम्-सू. ९-४. सुखधनकमारोग्यम् (च. सू. ९-४); रोगनिर्मुक्तः (वै. श.)

आशुकारि-सि. ११-१४. आशुशेषनिर्दरणकारि ।

आसवः-सू. २५-४९. यदपकौपधान्बुभ्यां सिद्धं
मयं स आसवः ॥ (व. द.)

आसुतम्-चि. १५-१२१ फन्दमूलफलायनलवणोदक-
संयुतम् । सन्धानाधिरकालाम्लमासुनं परिकीर्तितम् ॥ (व. द.)

आश्च्योतनम्-सू. ५-१९. उन्गीलिते दृग्मध्ये
कायक्षौद्रासवस्मेरुविन्दनां पातनम् । (व. द.)

आस्थापनोपगः-सू. ४-८. पयविंशो महाकषायः ।
(व. द.)

उद्वर्द्धप्रशमनः-सू. ४-८. उद्वर्द्धो वरटीदृष्टाकारः
शोषः तत्प्रशमन उद्वर्द्धप्रशमनः ।

उद्वर्द्धनम्-सू. ६-२४. कल्कघूर्णाभ्यां गात्रमर्दनम् ।
(व. द.)

उन्मादः-नि. ७-५. मनोबुद्धिसंज्ञानस्मृतिमक्ति
शीलचेष्टाचारनिष्ठमः । समुद्भूतं बुद्धिमनःस्मृतीनामुन्माद-
मागन्तुनिजोऽयमहुः ।

उपद्रवः-चि. २१-४. रोगस्योत्तरकालजो रोगः ।

उपयोक्ता-चि. १२-२ यस्तमाहारमुपयुक्ते यदायतमोक्त
साध्यम् ।

उपयोगसंस्था-चि. १-२१ । ७. उपभोगनियमः
त जीर्णलक्षणापेक्षः ।

उर्ध्वधातः-चि. २२-४०. उद्धारः (वै. श.) धातः
(चक्रः)

उष्णः-चि. ३०-४२. शीतविपरीतः । उष्ण सखिपरीतः
स्यात् पाचनश्च विशेषतः (व. द.)

ओकःसात्म्यम्-सू. ६-४९. उपशेते यदौचित्यादोक्तः-
षात्म्यं तदुच्यते ॥

ओजः-सू. ३०-९-११. रसादिष्वर्वातुषारभागधातु-
वेशेपः (वै. श.)

कच्छपी-सू. १७-८५. अवगाढार्तिनिस्तोश महावा-
युपरिमदा । श्लेष्मा कच्छपृष्ठभा पिङ्गा कच्छपी मता ॥

कटुः-सू. २६-४०, ७७. वाय्वग्निगुणयुग्मात् कटुः ।

कण्ठयम्-सू. ४-८. कण्ठाय हितम्, स्वरकरम् ।

कण्डूघ्नः-सू. ४-८. यः कण्डूं हन्ति सः (श. क.)

कपोतान्धः-इ. ३-६. यः रुपाणि दिवा कृष्णानि
पश्यति सः ।

करणम्-चि. १-२२ । २. स्वभाविकानां द्रव्याणाम-
सिखंस्कारः ।

करणम्-चि. ८-७०. तद् यदुपकरणायोपकरणे कर्तुः
कार्याभिनिर्गृह्यतौ प्रयत्नमानस्य ।

करणम्-चि. ८-८७. भेषजम् ।

कर्कशा-नि. ५-८ । ४. अमसृगा ।

कर्म-सू. १-४९. प्रयत्नादि कर्म चेष्टितमुच्यते ।

कर्म-सू. १-५२. कर्तव्यस्य क्रिया कर्म ।

कर्मजरोगः-शा. १-११६. निर्दिष्टं दैवशब्देन कर्म
यत् पौर्वदेहिकम् । हेतुस्तदपि कालेन रोगाणामुपलभ्यते ॥

कल्कः-सू. ४-७. यः पिण्डो रक्षपिष्ठानां सः कल्कः
परिकीर्तितः ।

कवलः-चि. ८-१४०. गण्डूषः ।

कवाथ-चि. ४-६५. दशरक्तिक्रमानेन शृङ्गीत्वा तेल-
द्वयम् । दत्त्वाम्भः षोडशगुणं ग्राह्यं पादावशेषितम् ॥ (व. द.)

कषायः-सू. ४-६-२४. रसा लवणवज्याश्च कषाय
इति संज्ञिताः ।

कषाय-सू. ४-७. स्वरसः, कस्करः, शृतः, शीतः,
फाण्टः, कषाय इति ।

कषायः-सू. २६-४०-९९. पवनपृथिवीव्यतिरेकात्
कषाय इति । वैशद्यस्तम्भजाड्यैर्यो रसनं योजयेद्दधः ।
वध्नातीव च यः कण्ठं कषायः स क्षिण्यपि ॥

काञ्जिकम् (अम्लम्)-सू. अ. २७-१९२. आशुधान्यं
क्षोदितम् बालमूलान्तु खण्डशः । कृतं प्रस्थमितं पात्रं ज ३
तप्राउकं क्षिपेत् ॥ तावत् सन्वाय संरक्षेद् वायुदम्लत्वमागतम् ।
काञ्जिकं तत्तु विशेषमेतत् सर्वत्र पूजितम् ॥ (व. द.)

काम्यलिकः-सू. १३-२३. दधिमस्तवम्भसिद्धस्तु यूपः
काम्यलिकः स्मृतः । (सु. सू. ४६-३८०३)

कायचिकित्सा-सू. ३०-२८. कायस्यान्तरग्नेश्चि-
ह्निष्ठा; सर्माङ्गमंथितानां व्याधीनां ज्वररक्तपित्तशोणमाक्षिप-
स्मारकुट्टमेहानिषारादीनामुपशान्त्यर्थम् (सु. सू. अ. १)

कालः-सू. ११-४२, वि. १-२१ | ६, वि. ८-
१२५-१२८. कालः पुनः परिणाम उच्यते; कालो हि नित्य-
गश्चावस्थिद्वयः । तत्रावस्थिको विकारमपेक्षते, नित्यगस्तु-
क्लुप्तान्तरापेक्षः; कालः पुनः संवत्सरश्चातुरावस्था च, आतुरा-
वस्थास्वपिकार्याकार्यं प्रतिकालाकालसंज्ञा; कालो हि नाम
(मगवान्) स्वयम्भूरनादिमध्यनिघनः । सूक्ष्मामपि कलां
न लीयते इति कालः, संकलयति कालयति वा भूतानीति
कालः ॥ (सु. सू. ६-३.)

कालजरोगः-शा. १-११२. पूर्वमध्यापराहाश्च
रात्र्या यामाह्नयश्च ये । एषु काष्ठेषु नियता ये रोगास्ते च
कालजाः ॥

कालहरः-सू. ४-८. काष्ठघ्नः ।

किट्टम्-सू. २८-४. मलाख्यम् (असारभागः) ।

कुलमापाः-शा. ६-११; क. २०-३३. अर्धस्विजा
यवादयः, उत्स्विजयवपिष्टकृता भक्ष्याः, सुद्गान् मसूरान्
उत्स्विजयवपिष्टान् कुलमापानाहुः (चक्रः).

कुष्ठघ्नः-सू. ४-८. कुष्ठनाशनः ।

कोष्ठः-सू. ११-४८. कोष्ठः पुनरुच्यते महास्रोतः
शरीरमध्यं महानिम्नमामपकाशयश्चेति पयश्चिरादैः ।
स्थानान्यामामिपकानां मूत्रस्य रुधिरस्य च । हृदुण्डुकः
फुफ्फुसश्च कोष्ठ इत्यभिधीयते ॥ (चक्रः).

कौमारभृत्यम्-सू. ३०-२८. कौमारभृत्यं नाम
कुमारभरणवावीक्षीक्षोपसंधानार्थं दुष्टस्तन्यग्रहसमुत्थानां
च व्याधीनामुपशान्त्यर्थम् । (सु. सू. अ. १-८ | ५.)

किमिध्नः-सू. ४-८. किमिह्नः ।

खडः-सू. १३-२३; वि. ८-१२८. १३०, १३१.
तत्रे कश्चिन्मन्त्रोऽस्ति मन्त्रिवाजिचित्रकैः । सुपत्रः खट्वूषोऽय-
मयं वाम्बलिको मतः ॥ दध्यम्बोलवगस्नेहतिलमाषान्वितः
शृतः । स्त्रितेन रसस्तत्र, यूयो धान्यैः, खरः फलैः ।

मूलैश्च दिलदलदाम्लप्रायः काम्बलिकः स्मृतः ॥ (चक्रः)

खरः-सू. १-५९. अमखणः ।

खरस्नेहपाकः-क. १२-१०२, १०३. शीर्यमाणे तु
नियमि वर्तमाने खरस्तथा ।

खर्जूरमांसानि-चि. २०-२८. खर्जूरफलधर्यानि ।

खादीनि-शा. १-६३. सूक्ष्मभूतखादीनि तन्मात्र-
शब्दाभिधेयानि ।

खानि-चि. २३-३२. स्रोतांसि ।

खुडः-चि. २९-११. आढयवातरोगः ।

खेटः-शा. ४-९. खेप्मा ।

गण्डः-इ. ७-२८. कपोलः ।

गण्डूषः-चि. २२-३४. मुखपूरको द्रवः ।

गति-सू. २०-१२. गमनम् ।

गदः-सू. २३-२६, नि. १-५, रोगः

गदापहः-सि. १-२७. व्याधिनाशनः ।

गद्गदः-इ. १-१४. छत्रपदव्यञ्जनाभवाधी, अत्य-
स्पष्टवक्त्रा ।

गन्धः-इ. १-३. स तु प्राणमाहः पृथिवीगुणः ।

गम्भीरः-चि. ३-५२. अन्तर्वेगः । किं वा गम्भीर-
धातुर्यः ।

गरः-सू. ३०-२८. कालान्तरप्रकोपि चिपम् ।

गरः-चि. १२-५. संयोगजं विषम् ।

गरसंयोगजम्-चि. २३-१४. गारार्थः संयोगो रे
ते गरसंयोगा द्रव्यभेदाः तेभ्यो जातं गरसंयोगजम् ।

गर्भः-शा. ३-३, ४-५. चि. ३०-२८. शुक्रशोणित-
संसर्गमन्तर्गमाश्रयगतं जीवोऽयकामति सध्वसंप्रयोगात्तदा गर्भो-
ऽभिनिवर्तते शुक्रशोणितजीवसंयोगे तु खलु कुक्षिगते गर्भ-
संज्ञा भवति ।

गर्भकराः भावाः-शा. ३-१६. गर्भस्योत्पादने
हेतुभूताः शुक्रादयः ।

गर्भकालव्यतिक्रमः-चि. ५-१७२. दशमाक्षरपत्र
गर्भकालस्य व्यतिक्रमः ।

गर्भशृङ्गम्-सू. ६-१४. गृहकोष्ठम् ।

गर्भधारिणी-शा. ८-३२. अपरा ।

गर्भपरिस्त्रावः-चि. ३०-१००. गर्भभ्रमः ।

गर्भव्यापत्-सि. २-९. गर्भदुष्टिः ।

गर्भशब्दम्-सू. २५-४०. मूढगर्भो मृतगर्भो वा ।

गर्भस्वापदम्-शा. ८-२४. गर्भरक्षणम् । (वे. श.)

गर्भस्तिमा-शा. ३-८. गर्भस्तिमाभूत स्तिमा ।

गर्भाशयः-चि. ३८-३३. गर्भाशयः । (वे. श.)

गर्भास्तिमा-सि. ९-६२. गर्भशय्या, गर्भाशय इत्यर्थः
अन्ते तु योगिमाहुः ।

गर्भिणी-सू. १०-१५. गर्भवती । (श. क.)

गर्भोपघातकरम्-शा. ८-२५. गर्भग्राहजनकम् ।

गलः-इ. ११-१५; चि. २२-१६. कण्ठः । (श. क.)

गलग्रहः-चि. ४-२६. कण्ठग्रहः ।

गलपीडा-सि. ५-१८. कण्ठपीडा ।

गान्धम्-इ. २-११. शरीरागन्धः । (वे. श.)

गुटिका-चि. २३-५२. वटिका । (श. क.)

गुटिका-चि. ५-१८३. गुटिका । (श. क.)

गुणः-सू. १-५१. वैशेषिकाच्युततो गुणस्त्वयः पदार्थः ।

गुणाः-सू. १-२८, १०५. गुणादयः चतुर्विंशतिः ।

गुणाः इ. १-३. गुणाः शरीरदेशानां शीतोष्णमृदु-
दाहनाः । (च. क.)

गुदम्-इ. ३-५. नलत्यागद्वारम् । (श. क.)

गुदनिष्क्रमणम्-चि. ७-१३. गुदभ्रमः ।

गुदचलयः-चि. १४-६. गुदस्य मांसचलयः ।

गुहः-सू. ६-२३. सादोषलेपयलकृद्गुहस्तर्पणो
चूहणः । (व. द.)

गुहः-इ. ३-५. पादग्रन्थिः । (श. क.)

गुल्मः-चि. ३-७; चि. ५-७. कुपितानिलगुल्मत्वाद्
गुल्ममूलोदगादपि ॥ गुल्मवद्वा विशालत्वाद् गुल्म इत्यभिधीयते ।
(सू. उ. ४२-५३.)

गृहः-चि. २०-२८. समष्टौ यनैवगः ।

गृष्टिः-चि. २-३ । ३. एकवारप्रसूता गौः ।

गोष्ठः-शा. ८-१९. गवां विश्रामस्थानम् ।

गहः-शा. ५-१४. राहुः ।

ग्रहाः-चि. १-४ । ४६. सोमपानपात्राणि ।

ग्रहणम्-चि. ४-८. ग्रन्थिधारणम् ।

ग्रहणी-इ. ७-२०. चि. १५. कोष्ठपयविशेषः,
ग्रहणीरोगः ।

ग्राह्यम्-चि. १२-२०. ग्रमे भवम् ।

ग्राह्यधर्मः-सू. ७-३४. मैथुनम् ।

ग्राहि-सू. २७-९१. क्षीपनं पाचनं रस्यदुष्णत्वाद्
द्रवगोषणम् । ग्राहि तच्च यथा शुष्नी वीरकं गजपिप्पली ॥
(व. द.)

ग्रीवा-सू. १७-६५. कन्धरा ।

ग्लानिः-चि. ३-३६. हर्षक्षयः ।

ग्लान्ति-इ. ८-२१. क्षीयमाणः ।

घनः-चि. ६-९. सान्द्रः ।

घातः-सू. १३-५०. वधुभक्षणः ।

घाटा-सि. ९-८४. ग्रीवायाः पथ्यानाः ।

घुर्घुरम्-इ. १०-१८. घुर्घुरक इत्याकारः शब्दः ।

घ्राणम्-इ. १-३. घ्राणेन्द्रियम् ।

चक्षुः-इ. १-३. दर्शनेन्द्रियम् । (श. क.)

चक्षुष्यम्-सू. ५-१००. चक्षुषे लोचनाय हितम् ।
(श. क.)

चतुर्थकः-चि. ३-६७. दिनद्वयं यो विश्रम्य प्रत्येति
स चतुर्थकः ।

चतुर्थिका-चि. ११-७२. पलम्

चतुष्पादम्-सू. २९-७. सू. १-१. वैशादिनाद-
चतुष्टयम् ।

चतुःस्नेहः-वि. १०-२०. सर्पितैलवसामज्जात्मकः ।

चयः-सू. १७-११४. वृद्धिः ।

चर्या-शा. १-१४३. ईश्यापथस्थितिः । (श. क.)

चलः-सू. १-५९. गतिमान् ।

चिकित्सकः-वि. ८-५७. वैद्यः ।

चिकित्सा-सू. ९-५, १६-३४; वि. १-१ । ३.
याभिः क्रियाभिर्जायन्ते शरीरे धातवः समाः । सा चिकित्सा
विकाराणां कर्म तद् मियज्ञं मतम् ॥ (वै. श.)

चिकित्सितम्-वि. १-१ । ३. चिकित्सा ।

चिन्त्यम्-शा. १-२०. कर्तव्यतया अकर्तव्यतया
वा यन्मनसा चिन्त्यते इति ।

चिह्नम्-नि. १-९. लक्षणं चिह्नमाकृतिः (मा. नि.)

चूर्णम्-क. ८-६४. चूर्ण्यते पिण्ड्यते यत् । (श. क.)

चूर्णकः-इ. १-२१. सक्तः । (श. क.)

चूपणम्-सि. २३-३५. पानम् । (वै. श.)

चेतः-वि. २४-२९. चित्तम् (श. क.)

चेतनम्-सू. १-४८. २५-२३. मेन्द्रियं द्रव्यम् ।

चेतना-सि. ९-३. बुद्धिवृत्तिभेदः ।

चेतनाधातुः-सू. २५-९. आत्मा ।

चेष्टा-सू. १७-११८. वाङ्मनःशरीरप्रवृत्तिः । (श. क.)

चेतन्यसंग्रहः-सू. ३०-७. तत्र हृदि आत्मा
चेतन्यस्य स्वरूपे प्रवृत्तस्य संग्रहणं करोति ।

च्यवनम्-इ. ३-४. च्युतिः ।

च्यवनानं पितृम्-वि. ११-१०. अश्वभावं वायुना
नीयमानं पितृम् ।

च्युतिः-ति. ५-७. हस्ताद् भ्रंशः ।

छर्दनम्-सि. १२-१५ । ३. वमनम् ।

छर्दिनिग्रहणः-सू. ४-१४, २८. अद्यविंशो महा-
कपायः ।

छादनम्-वि. २५-४१. छादनं तु द्विविधं बाह्या-
न्तरभेदेन ।

छाया-इ. १-३, इ. ७-१६. भौतिकी पदरूपा;
वर्णमाकामतिच्छाया, वासना लक्ष्यते छाया ।

छेदनम्-वि. ११-५५. द्विधाकरणम् । (वै. श.)

छेदनम्-वि. २५-५५. छिद्यन् नफादिकान् दोषानु-
न्मूलयति यद् वलात् छेदनं तद्यथा क्षारा मरिचानि
शिलाजनु । (शा. सं; व. द.)

छेदी-सू. २७-१८७. विच्छेपकः । (वै. श.)

जगलः-सू. २७-१८९. भक्तकिण्वकृता मुरा ।

जघनम्-वि. ५-८. कटयथःस्थानम् (वै. श.)

जघन्यम्-वि. ३०-१७७. पूर्वं वयः ।

जङ्गमम्-सू. १-६८. गच्छतीति जङ्गमम्; गर्मनशीलम् ।

जङ्गा-इ. ३-५. प्रवृत्ता ।

जरणः-वि. ६-२१. जरणभिः, जरणः आहारस्य ।
(व. द.)

जरणशक्तिः-वि. ४-८. पाचनशक्तिः ।

जरायुः-शा. ३-६. जगयुः अपरा, येन वेष्टिता
मनुष्यादयः प्रजायन्ते, जरायुणा वेष्टिता जायन्ते इति
जरायुजाः मनुष्यादयः ।

जलकोष्ठः-सू. १४-३४. अवगाहार्थं कृतं महजल-
पात्रम् ।

जलजाः-सू. २७-५४. जले निवासानलजाः; सत्स्याः
(श. क.)

जलधः-वि. ८-२८. पञ्चाश्रितशोर्वचनं जलधः ।

जलमृतः-वि. १०-४७. जलमज्जेन मृतः इव इति
जलमृतः, विटव्यपायुगूषाङ्गमाप्तातोदरमेहनम् । विद्या-
जलमृते जलं शीतपादकरणानम् ॥

जलयन्त्रम्-वि. २४-१५८. जलसेचनयन्त्रम् ।

जलोपरोधः-सू. २१-४. वेगोपरोधः ।

जाङ्गलाः-सू. २७-५५. स्थलजा जाङ्गलाः प्रोक्ता
मृगा जाङ्गलवारिणः; जाङ्गले भवाः ।

जातिप्रसङ्गा प्रकृतिः-इ. १-५. मायणनाती शौचम्
इत्यादिप्रकृतिः ।

जालिनी-सू. १७-८६. स्तम्भा शिराजालवती स्नि-
ग्धास्त्रावा महाशगा । रुजानिस्तोदयहुला सूक्ष्मच्छिद्रा च
जालिनी ॥

जानुः-इ. ३-५. ऊरुजङ्घयोर्मध्यभागः । (श. क.)

जिह्वा-सि. ५-५. कुण्डला ।

जिह्वा-वि. २२-६. रसज्ञानेन्द्रियम् । (श. क.)

जिह्वातिलैखनम्-सू. ५-७५. जिह्वामलहरदशा-
नुललासिता । (श. क.)

जीर्णः-वि. ३-७. पुराणः ।

जीवः-शा. ३-८. गर्भात्मा ह्यन्तरात्मा यः ।

जीवनम्-सू. १-८७. प्राणधारणम् । (श. क.)

जीवनीयः-सू. ४-८; २५-४०. जीवनीयशब्देनेह
आयुष्यत्वमभिप्रेतम्; मूर्च्छितस्य संज्ञानकत्वेन जीवनीयत्वं
व्याख्येयम् ।

जीवनीयवर्गः-वि. २-३ । १५. जीवनीयानामिति
पट्कपायवर्गोक्तानां जीववर्षभादीनां दशानां वर्गः ।

जीविताभिसरः-सू. ११-१३. जीवनरक्षाकर्ता ।
(दे. श.)

ज्वरः-वि. १-३२. वि. ३-३१. स्वेदावरोधः संतापः
सर्वादिमहं तथा । युगपद्यत्र रोगे च न ज्वरो व्यपदिश्यते ॥
(मा. नि.)

ज्वरान्नः-सू. ४-८. ज्वरनाशनः ।

तण्डुलान्त्रु-वि. ८-१२५. तण्डुलोदकम् । (श. क.)

तत्परावरोधः-सू. ३-१५. यथार्थज्ञानम् ।

मन्त्रम्-सू. ८-६. मन्त्रः ।

तदर्थकारि-वि. २-१३. हेतुव्याधिसमत्वेऽपि हेतु-
व्याधिप्रशमकारि; हेतुविपरीतार्थकारि, व्याधिविपरीतार्थकारि,
हेतुव्याधिविपरीतार्थकारि च ।

तदात्वे-सू. ११-२०. तत्क्षणम् ।

तद्विद्यसंभाषा-वि. ८-६. तच्छास्त्राध्यायिना सह
संभाषणम् ।

तनुः-सि. ७-४३. अघनः ।

तनु-सि. ५-४. कृशम् ।

तनु-वि. २२-२६. स्वच्छम् ।

तन्त्रप्रयोगः-नि. ७-४. तन्त्रं शरीरं तस्य परिपा-
लनार्थं सद्वृत्तौकः प्रयोगः ।

तन्त्रम्-इ. १२-४४. शरीरम् ।

तन्त्रयन्त्रधरः-सू. १२-८. तन्त्रं शरीरं यद्युक्तं
'तन्त्रयन्त्रेषु भिन्नेषु तमोऽन्यं प्रविवक्षताम्'
(इ. अ. १२) इति, तदेव यन्त्रं तस्य धरः यद् वा तन्त्रस्य
यन्त्रं सन्वयः तेषां धरः ।

तन्त्रयुक्तयः-मि. १२-८. तन्त्राधिगमार्था युक्तयः ।

तन्त्रा-वि. १-२ । ३. इन्द्रियाधेयसंविन्नगौरवं
जुम्भणं क्रमः । निद्रार्तस्येव यस्यैते तस्य तन्त्रां विनिर्दिशेत् ॥

तमः-सू. २५-२८. तमोगुणः प्रकृत्या गुणविशेषः ।

तमः-वि. ३-१३. मोहकर्तृत्वात्तमः ।

तमः-वि. २३-२०. अन्धकारः ।

तमःप्रवेशः-वि. १०-३. अन्धकारप्रवेश इव ।

तमःस्कन्धः-सू. २५-२८. तमसः स्कन्धः समूहः ।
पक्षरागश्चेह तत्त्वज्ञानप्रतिषन्धकत्वेन तमःस्कन्ध उच्यते ।

तर्क-वि. ४-८. अप्रत्यक्षज्ञानम् ।

तर्पणम्-वि. ४-३०. वृद्धणम् ।

तर्पणम्-वि. ३-१५. तोषपरेषुजाः मकरः ।

तर्पणादिक्रमः-सि. ६-२५. संशोधनानन्तरं वर्तव्यः
कर्मविशेषः ।

तर्पः-चि. २-४ । ४८. वनितामिलापः ।

तल्लम्-सि. ३-२९. हस्तपादतलम् ।

तल्लस्वेदः-सि. १-५०. अग्न्यादितप्तैश्च हस्ततलेन
स्वेदः ।

ताम्रसल्लस्त्रम्-शा. ४-३६. पशुसरीरेऽस्ति, तच्च
संशोधयित्वा तं सोदाश्रित्वात् ।

तालु-इ. ३-५. जिह्वेन्द्रियाधिष्ठानम् (घ. क.)

तिक्ता-सू. २६-८, ७८. बाष्पाकाशशुण्वाहुल्यात्
तिक्तः प्रतिहन्ति निपाते यो रसनं स्वदत्ते न च । स तिक्तो
मुक्त्वैव यशोपपन्नोऽदकारकः ॥

तिक्तकम्-सू. २७-१९९. तिक्तस्वात्मकं द्रव्यम् ।

तिक्तस्फण्डः-वि. ८-१४३. तिक्तवर्गपरिख्यातागु-
णैर्वाप्यव्याणां समूहः ।

तीक्ष्णः चि. ३-५२. दाहपाककरस्वीक्षणः स्वादुः,
तीक्ष्णं पित्तं प्रायो लेखनं कफनाशकम् । (व. द.)

तीक्ष्णाग्निः-वि. ६-१२. तीक्ष्णोऽग्निः सर्वापचारसहः

तुन्दरः-चि. २२-२६. कपायसः । (घ. क.)

तुल्यः-क. ७-६९, १२-९७. तुल्यं शतफलं विद्यात्
परिमाणविशारदः ॥

तुषोदकम्-चि. ३-२६७. सतुषपचकाजिकम्, शृणान्
माषतुषान् निदन् शर्वास्तु चूर्णसंयुतान् । आरुतान्ममसा
तद्वज्जातं तच्च तुषोदकम् ॥ तुषोदकं शर्करामैः सतुषैः
शकलौकृतं । (व. द.)

तृणपुत्रिङ्गः-शा. ४-३१. पुरुषाकृतिभूयिष्ठः असमस्त-
पुरुषलक्षणशुक्लः ।

तृणपूली-चि. २-१ । १८. पूली नर्पुसकधर्मित्वात् ।
तृणपूली पुष्पाकृतिरिति भाषया पुरुषार्थकिंवाविरहित्वं
दर्शयति ।

तृतीयकः-चि. ३-६७. दिनं क्षिप्वा तृतीयकः ।

तृप्तिः-सू. २५-४०. सन्तोषः ।

तृप्तिघ्नः-सू. ४-८. एकादशो महाकषायः । तृप्तिः
श्लेष्मविकारो येन तृप्तमिव आत्मानं मन्यते तद्घ्नः तृप्तिघ्नः ॥

तृष्णा-चि. ३-२६. पिपासा । (घ. क.)

तृष्णानिघ्नहृणः-सू. ४-१४, २९. जनत्रिशो महा-
कषायः ।

तृणोपशान्तिश्चिकित्सा-चि. ५-२६. उदकन-
दानां दुष्टानां शोतसां चिकित्सा ।

तेजः-चि. १५-३. देहोष्मा शुक्लं वा ।

तोदकम्-सू. २४-४६. व्यथा । (घ. क.)

तोदः-सू. १७-५५. सूवीचित्रचवद्वेदनाविशेषः ।

तोपः-चि. ४-८. मुखनयनप्रवादादिः ।

त्रिकम्-सि. ३-४१. त्रिकसकृत्कोः पृष्ठं वा स्थनोर्यः
सन्निस्तत्रिकं न्युतम् । (वै. श.)

त्रिधोषाफलितम्-सू. ५-५०. त्रिभिः पर्वभिर्मित्रैः
उपनिवृतः ।

त्रिगर्भा-चि. १-१ । १९. प्रथममेकं पृष्ठं, तस्य
न्तरे द्वितीयम्, एवं त्रिगर्भा त्रयो नर्भा अन्तर्गता यस्-
मन्तस्त्रिप्रक्षेपा ।

त्रिपर्ययः-सू. ५-४८. त्रयः पर्ययाः आपानाः यस्मिन्

त्रिप्रकोपणाः-चि. १७-४. असात्म्येन्द्रियार्थसंयोग-
परिणामप्रज्ञापराधकारणकाः ।

त्रिलिङ्गः-चि. ४-१३. सान्निपातिकः ।

त्रिस्तम्भम्-सू. १-२४. त्रीणि हेत्वादीनि सूत्र्यन्ते
थरिन् येन वा इति ।

त्रिस्तम्भम्-सू. १-२५. त्रयः हेत्वाद्यः स्तम्भ-
रूपायस्य सः-स्कन्धश्च स्थूलावयवः प्रविभागो वा ।

त्रिम्बेहः-सि. ३-३६. सर्पिस्तैलत्रसात्मकः ।

त्वक्-इ. ७-३१. स्पर्शमाहि इन्द्रियम् ।

त्वक्सारः-चि. ८-१०३. विशुद्धतरा त्वक् ।

त्वच्यः-सू. ५-८७. त्वचे हितः ।

दक्षिमण्डः-क. ८-१०. दक्ष उर्ध्वच्छो भागः ।

दक्षिमस्तु-सि. ११-३२. उर्ध्वं दक्षि दिगुणवारियुतं तु मस्तु । (वै. श.)

दक्षिसरः-वि. ५-६८. दक्षिसन्तानिका; दध्यप्रभागः । (वै. श.)

दध्यम्लम्-वि. २४-१६१. दध्ना अम्लीकृतम् ।

दध्युत्तरम्-वि. १७-७४. दक्षिसरः ।

दन्तपवनम्-सू. ५-७२. दन्तधावनार्थं काण्डम् ।

दन्तहर्षः-नि. १-२१. शीतलक्षप्रवाताम्लहर्षा-
नामसहा द्विजाः । पित्तमासक्तोपेन दन्तहर्षः स नामतः ॥
(वै. श.)

दरः-सू. १७-३१. दरदरिका ।

दशनच्छदौ-इ. ११-२०. ओष्ठौ ।

दर्शनम्-इ. ४-८. चक्षुर्गोचरता ।

दहनम्-सि. ९-७८. अग्निना दाहः ।

दारणः-सू. १२-४. शोषणत्वात् काठिन्यकरः ।

दारणम्-सू. ११-५५. घननिदारणद्रव्यम् । (वै. श.)

दाहः-वि. ८-३६. दण्डत इव वेदनाविशेषः ।

दाहः-वि. ५-६३. दाहकर्म ।

दाहप्रशमनः-सू. ४-८. एकचत्वारिंशो महाकपायः ।

दिवास्वप्नः-सू. ६-२३. दिवास्त्रापः ।

दिव्यमुदकम्-सू. २७-१९८. आन्तरिक्षं जलम् ।

दीपनः-सि. ३-३८. जठराग्निदीपनः । पचेनाग्निं
वद्विद्ध यद् दीपनं तद् यथा मिसिः । (व. द.)

दीपनीयम्-वि. २८-८७. अग्निदीपनम् ।

दुःस्त्रायः-इ. ११-३. विकृतस्त्रायः ।

दुर्गन्धम्-सू. २७-२१५. पूतिगन्धयुक्तम् ।

दुर्जरम्-सू. २७-१३८. दुष्पचम् ।

दुर्विनम्-सि. २-२०. मेघाच्छप्रविनम् ।

दुर्विलः-इ. ९-१५. निर्मलः ।

दुर्मनाः-सू. १७-७३; इ. ११-३. मनोबलविहीनः ।

दुर्विपाकः-सू. २५-४०. दोषवान् विपाकः ।

दूतः-इ. १-३. वैद्याहानार्थमागतो मनुष्यः ।

दूयनम्-सू. १७-५८. मुखकण्ठादिषु वेदनायुक्तो
दाहः ।

दूषीविषम्-सू. २१-४५; वि. २३-३१, जीर्णं
विषमौषधिभिर्हृतं वा दावामिवातातपशोयितं वा ।
स्वभावतो वा शुण्विप्रहीनं विषं हि दूषीविषतामुपैति
(सू. क. २-२५३.)

दूष्याः-सू. १९-४-९; नि. ४-८. रक्षादयो धातवः ।

दृढाग्निः-वि. ३-१७२. दीप्ताग्निः ।

दृष्टिः-इ. ४-२५. उपलब्धिः, तथा दृष्ट्या दृष्टिशक्ति-
रुपचारादुच्यते ।

देशः-सू. २६-९. भूमिः ।

देशः-वि. १-३. आतुरः ।

देशः-सू. १-६२. भूमिरातुरश्च ।

देशानुपातिनी प्रकृतिः-इ. १-५. यथा अन्तर्देहि-
वासिनः शुचयो भवन्ति ।

देहः-सू. २५-३२ शरीरम् ।

देहप्रकृतिः-सू. ७-४०. दोषानुशयिता तेषां देहप्रकृति-
मन्यते । एतेनैतेषां वातलादीनां मुख्यं स्वास्थ्यं नास्ति,
किंति हि उपचारस्वस्था एते इति दर्शयति ।

देहव्यायामः-सू. ७-३१. शरीरचेष्टाया चेष्टास्थैर्यार्था
यलवर्धनी । देहव्यायामसंख्याता मात्रया तां समाचरेत् ॥

दैन्यम्-वि. ४-८. दीनभावः ।

दैवम्-शा. १-११६, २-४४; वि. ३-३०;
वि. २-१ | १०. निर्दिष्टं दैवशब्देन कर्म यत् पौर्वदेहिकम्;
दैवं पुरा यत्कृतमुच्यते तत्; दैवमात्मकृतं विशात्कर्म यत्पौर्व-
देहिकम्; प्राक्तनकर्म ।

दैवव्यपाभयम्-सू. १-५८, ११-५४. दैवमद्वयं तदाश्रित्य यद् व्याधिप्रतीकारं करोति तदैवव्यपाभयं बलिमन्त्रादिः मन्त्रौपधिमणिमङ्गलवस्तुपहारहोमनियमप्रा-
यश्चित्तोपशमस्वस्त्ययनप्रणिपातगमनादि ।

दोषाः-सू. २७-६८; वि. ४-२२. वातपित्त-
कक्षाः ।

दोषावसेचनम्-वि. ३-४३. दोषाणामवसेचनं
निर्हरणम् ।

दौर्माद्यम्-वि. ५-७. दुर्ग्रहता ।

दौर्बल्यम्-वि. ८-३३. अल्पबलत्वम् । (श. क.)

द्रवः-वि. ३-२४. कायः ।

द्रव्यम्-सू. १-२८, ५१, ६४. २६-१०. यत्र
धर्मगुणा आधिताः यत्र तेषां समवायि कारणं तद्द्रव्यम् ;
रादीन्यात्मा मनः कालो दिशश्च द्रव्यसंग्रहः ; आधारकारणम् ;
यन् आहारोपशोपयुक्तम् ।

द्रव्याणाम् अधिकरणम्-सू. २६-१३. द्रव्याणि
यत्र कुर्वन्ति तत् तेषामधिकरणम् ।

द्रव्याणाम् उपायः-सू. २६-१३. द्रव्याणि यथा
कुर्वन्ति स तेषां उपायः ।

द्रव्याणाम् कर्म-सू. २६-१३. द्रव्याणि यत्
कुर्वन्ति तत्तेषां कर्म ।

द्रव्याणाम् कालः-सू. २६-१३. द्रव्याणि यदा
कुर्वन्ति स तेषां कालः ।

द्रव्याणाम् फलम्-सू. २६-१३. द्रव्याणि यत्
साधयन्ति तत्तेषां फलम् ।

द्रव्याणाम् वीर्यम्-सू. २६-१३, ६५. द्रव्याणि
येन कुर्वन्ति तत्तेषां वीर्यम् ।

द्रोणः-क. १२-९६. वंशवृक्षगुणो द्रोणश्चार्द्रमृगं नत्वगं
च तस्य । स एव कलतः ख्यातो घटसुम्नानमेव च ॥

द्रव्यम्-सू. १४-६६. परस्परं विरुद्धं युग्मम् ।

द्विजः-इ. ८-१३. दन्तः ।

द्वियोनिः-सू. २५-३६. द्विप्रभवः ।

द्विरेताः-शा. २-१७. स्त्रीपुंविहः पुमान् । (वै. श.)

द्वैहृदय्यम्-शा. ४-१५. तस्य यत्कालमेवेन्द्रियाणि
संतिष्ठन्ते, तत्कालमेव चेतसि वेदानाभिर्बन्धं प्राप्नोति; तस्मा-
त्तदाप्रभृति गर्भः स्वप्नदृष्टे, प्रायेणते च, जन्मान्तरानुभूतं
यत् किञ्चित्, तद्द्वैहृदय्यमावस्यते श्रद्धाः ।

धनैषणा-सू. ११-५. द्वितीयैषणा (वै. श.) ।

धन्वः-वि. १-२१. मरुदेशः ।

धमन्यः-सू. ३०-१२. ध्मानात् पूरणाद् बाह्येन
रक्षादिना धमन्यः ; ध्मानात् धमन्यः ।

धर्मः-सू. १-१५. धारणाधर्मः, स चारमधमवेतः
कार्यदर्शनानुमेयः ।

धातवः-वि. १५-१५. देहधारणाद् धातवः ।

धातवः-सू. २२-४१. दोषाः “ दोषा अपि धातु-
शब्दं लभन्ते ” इति वचनात् ।

धातुपाकः-सू. १८-३. धातुषु धातुविनष्टतो
रवपाकः ।

धातुवैषम्यम्-वि. ८-८४. विषमतां गता धातवः ।

धातुव्यूहणम्-शा. ४-१२. धातुरचना; धातुवहनं च ।

धातुसाम्यम्-सू. २१-४२. विकारोपशमरूपकार्यम् ।
(वै. श.)

धातुस्नेहपरम्परा-वि. १५-२०. धातूनां रसादि-
सप्तानां तस्मिन्नां धातुप्रसादरूपाणां परम्पराक्रमः ।

धानाः-वि. २-२-१२. धानाकारा भक्षयाः ।

धानाः-वि. ६-२३. मृष्टयवाः ।

धान्यन्तरीयाः-वि. ५-४४. धान्यन्तरितन्त्राध्यायिनः
शल्यविदः ।

धान्याम्लम्-सू. १५-७; क. १-१२. काशिकम् ।
धारणम्-वि. २३-५८. धारणशब्देन शरीरे धारणं
वृत्ते, धारणं चोषणशब्देनोपक्रमेण प्रविशति ।

धारा-सि. ३-२०. जलादिद्रवद्रव्याणां पतनम् ।

धारि-सू. १-४२ धारयति शरीरे पृथितां गन्तुं
न ददातीति धारि ।

धारि-सू. ३०-६ शरीरिन्द्रियसंस्कारमसंयोगः शरीर-
धारणादारीत्युच्यते ।

धारिलोहितम्-वि. ४-७. जीवशोणितम् ।

धारोष्णम्-वि. २९-८२. दोढकालधारावतित-
ममियोगाद्विना उष्णोभूतम् ।

धीः-सू. २५-४० दुहिः

धीविभ्रमः-वि. १-६. बुद्धरथादशित्वम् ।

धुक्षणम्-वि. ६-२१. प्रबोधकम् ; प्रोद्बोधकम् ।

धूपः-वि. २५-१०८. धूपयति स्वगन्धेन प्रीणयित्वा
दीप्यतीति । (श. क.)

धूपनम्-सू. १७-५८. धूमनिर्गमनमिव ज्ञानम् ।

धूमः-सू. ५-३९, ४०. धानार्थः । (वै. श.)

धूमनेत्रम्-सू. ५-२४. धूमपानार्थं नेत्रम्, नाली-
विशेषः यं द्वारोक्त्य धूमः पीयते ।

धूमपानम्-सू. ५-३१. धूमसेवा । (वै. श.)

धूमवर्तिः-सू. ५-१०६. धूमपानार्थं यवाकृति-
निर्मिता औषधवर्तिः ।

धृतिः-सू. २५-४०. धैर्यम् ; अलौल्यम् ; एतिर्हि
नियमादिवका अहितेभ्यो ननोनियमनमिति यावत्

धैर्यम्-वि. ४-८. धैर्यं विषयवि मनसोऽदैन्यम् ।

धमापनम्-सि. ९-८९ प्रथमतः, 'चूर्णस्याध्मापनं

तद्धि देहस्रोतोविशोधनम्' इति वचनाद् ध्मापनं शिरो-
विरेचनप्रयोजनकमेवेति दर्शयति ।

ध्यानम्-इ. ५-१८. चिन्तनम् ।

नकुलान्धः-इ. ३-६. नकुलान्धस्तु रूपाणि दिवा
शृङ्गानि पश्यति ।

नखाः-इ. १-१२. नखरः ।

नयनम्-इ. १-१२. चक्षुः ।

ननारिपण्डौ-शा. २-१७. नरपण्डो नारिपण्ड-
येति ननारिपण्डौ एतावन्नीजौ तेषां यदुक्तं सुश्रुते 'अशुभ-
स्त्वेव पण्डकः'

नस्तः-सू. १३-२५. नासिकातः ।

नस्तः कर्म-सि. ९-८. नासिकारन्ध्रेणौषधदानम् ;
प्रतिमर्शवपीडनस्य प्रथमनशिरोविरेचनानि नावनश्च ॥ ३३
च्यवनं धूम एव च । प्रतिमर्शश्च विशेषं नस्तः कर्म च
पचधा ॥

नस्तः प्रच्छर्वनम्-सू. १-८५. शिरोविरेचनम् ।

नस्यम्-सि. ९-८७. नस्यं तत् कथ्यते धीरेनासा-
प्राणं यदौषधम् । प्रतिमर्शोऽवपीडश्च नस्यं प्रथमं तथा ।
शिरोविरेचनं चेति नस्तः कर्म च पचधा ॥

नाडीस्येदः-वि. ३०-४८. प्रकारविशेषनिर्मि-
तया नाड्या दीयमानो माध्वः (व. द.)

नाभिः-इ. ३-५. उदरावर्तः (श. क.)

नाल्यः-वि. २२-६. नलिकाः ; स्रोतांसि ।

नावनम्-सू. ५-३५. नस्यम् ।

नासापुटम्-सि. ९-१००. अन्यतरं नासिगारम् ।

नासिका-इ. ३-५. नासा ।

नासिकावंशः-इ. ८-१०. नासिकापृष्ठे उन्नतमस्ति ।

नास्तिकः-सू. ११-१८, १५. नास्ति परलोक
इत्यादि यो मनुते सः ।

निगदम्-वि. १२-१४५. पुरातनम् ।

निगदम्-वि. २४-१७६. निर्दोषम् ।
निगदम्-वि. २६-६८. निर्मलम्
निगमनम्-वि. ८-२७. तस्मात्तथैतिरूपं निर्णयात्मकं
वचनम् ।

निग्रहः-वि. ५-१९. शुक्रवेगरोधनम् ।

निचयात्मकः-वि. ५-१४. साभिप्रायिकः ।

निजः-सू. ११-४५. वि. ३५-५. शारीरशेष-
समुत्पत्तिः ।

निदर्शनम्-वि. १२-४४. मूर्धविदुषां बुद्धिसाम्य-
विषयो दृष्टान्तः ।

निदानम्-सू. ३०-३३. निदानस्यानम् ।

निदानम्-वि. १-१३. निदानं कारणमिदोच्छेत्ते, ततो ह
व्याधिजनकं व्याधिवोधकं च सामान्येनोच्यते । तत्र व्याधि-
जनकं निदानं हेतुः, व्याधिवोधकं च कारणं निदानपूर्वरूप-
स्वोपशयसंप्राप्तिरूपम् । तत्र हेतुरूपं निदानं जनकं च
भवति, व्याधिवोधकं च भवति । किंवा निदानशब्दो
जनककारणवचन एव । इह खलु हेतुनिमित्तमायतनं
कर्ता कारणं प्रत्ययः समुत्पत्तिं निदानमित्यन्यन्तरम् ॥

निद्रा-सू. २१-५८, ५९. स्वप्नः ।

निमित्तम्-सू. १०-१४. हेतुः ।

निमित्तविपरीतम्-वि. २-१३. हेतुप्रत्ययनीकम् ।

निमित्तानुरूपा-इ. १-६. निमित्तार्थानुकारिणी,
निमित्तस्य योऽर्थः कार्यजननरूपः, कार्योपनयनो वा
तमनुवर्ततेति निमित्तार्थानुकारिणी ।

निमित्तः-इ. ३-६. चक्षुर्निमीजनम् ।

निमेषः-वि. २८-९. निमेषोः क्षिप्रा वायुः प्रविष्टो
वर्त्ममथ्रणः । च लघ्वेति इति निमित्तः स गतो मतः ॥
(सु. च. ३.)

निष्ठात्मा-वि. १-८ । १०. अतिन्द्रियः ।

निशेधः-सि. १२-४४. अवस्थावृत्तेयतया विधानम् ।

निरत्ययत्वम्-सि. १०-५. दोष (उपशय) रहितत्वम् ।

निरक्षता-वि. ५-९. उपवासः । (वे. च.)

निरामः-वि. ३-१६८. पक्वः ।

निरूहः-क. १२-५३. आस्थापनम् ।

निरोधः-सू. ३०-२५. मरणम् ।

निर्णयः-वि. १२-४६. विचारितस्मार्पस्य व्यव-
स्थापनम् ।

निर्वेशः-वि. १२-४२. संग्रहशेषस्य विवरणम् ।

निर्वासः-सू. २५-४०. वृक्षात्पुतो रसः ।

निर्युष्टः-वि. २१-१२३. क्वाथः; रसः । (श. च.)

निर्वचनम्-सि. १२-४४. पण्डिततुङ्गिण्यो
दृष्टान्तः ।

निर्वलीकम्-वि. ३-१६. सजीरहितम् ।

निर्वापणम्-सू. १८-५. दाहप्रशमनम्, पाकामि-
शुक्तो मन्त्रीयस्य दाहोद्प्रशमनम् । (व. द.)

निर्वृताः-वि. २९-१३९. निर्वापिताः ।

निर्वृत्तिः-सू. १-६४. अभिव्यक्तिः ।

निष्कुलम्-वि. ११-६६. निरस्त्रि ।

निष्काशः-वि. २६-१४०. पवासः ।

निष्ठीविज्ञा सू. ८-२१. निष्ठीवनम् ।

निष्पीडनम्-वि. २३-३५. पीडयित्वा रसस्य
रसस्य वा निर्हरणम् ।

निष्प्रत्ययनीकः-वि. ३-५६. निरोधितारहितः;
तुल्य इत्यभिधानापि यत् 'निष्प्रत्ययनीकः' इति परोक्षे, तेन
कालार्थगुणतमोऽत्र तन्मदितुल्यतां स्मोच्यति, फालादीनां
चासमानानामपि यत्तत्ता शेषेण परिशुद्धीतानां प्रतीपार्थ-
करणात्तान्मैनामुत्तुनैव भवति ।

निःश्वासः-सू. ७-२४. मुग्धनासाभ्यां निर्गतः
श्वासः ।

निःसंक्षः-इ. ९-४. संज्ञारहितः ।

निस्तोदः-चि. १-३०. अतिव्यपा । (वै. श.)

नीलः-चि. ४-२०. नीलवर्णः ।

नेत्रनाडयः-सि. २-२१. नेत्रगताः रसरकादि-
वाहिन्यः ।

नेत्रम् (वस्तिनेत्रम्)-सि. १-५५. वस्तिद्रव्यप्रवेशार्थं
प्रयुज्यमानो नलिकाविशेषः ।

नेत्राञ्जनम्-चि. ३-३०७. चक्षुर्वक्षणम् ।

न्युज्जा-शा. ८-६. अधोमुखी ।

पक्का-सू. ६-९. जठरामिः ।

पक्तिः-सू. १२-११. पचनम्, पाचकस्याग्नेरधिकृतं
कर्म ।

पक्तिः-चि. ३-१३०. पक्तिहेतुतया जाठरामि
वृत्ते ।

पक्तिस्थानम्-चि. ३-२७५. अभ्यधिष्ठानम्,
ग्रहणी ।

पकरसः-चि. ७-४४. कायः, कथितेनेक्षुरक्षेन कृतः
शिशुः वा ।

पकाशयः-शा. ३-६. नाभेरधोभागः । (वै. श.)

पक्ष्म-इ. ३-६. अक्षिलोम । (श. क.)

पक्कः-इ. १२-५५. दन्तपङ्कः ।

पक्कः-सि. १-३२. सक्थिद्रव्यघातोपलक्षितः घात-
व्याधिविशेषः ।

पचनम्-चि. १-१७. पाकः ।

पञ्चकर्म-सू. २-१५. पञ्चकर्म वमनविरेचना-
स्थापनानुवासनशिरोविरेचनरूपम् ।

पञ्चात्मा-चि. १४-२४. प्राणापानव्यानोदान-
समानरूपः ।

पथ्यम्-सू. २५-४५. पथ्यं पयोऽनपेतं यद्यन्योक्तं
मनसः प्रियम् । पथः शरीरमागृह्णीतोरुपादनपेतम्;
अपेतम् अपकारकम्, अनपेतम् अनपकारकम् इत्यर्थः ।
पथोग्रहणेन पथोवाया दोषा घातवन्तः तथा पथोनिवर्तका

घातवो गृह्यन्ते तेन कृत्स्नमेव शरीरे गृहीतं भवति ततश्च
शरीरानुपपाति पथ्यमिति भवति । किंवा स्वरश्चरवास्थ्य
रक्षणमातुगव्याधिपरिमोक्षयेति पन्थाः तस्मादनपेतं
पथ्यम् । एवमपि मनोऽनुपपातिरप्येव न लभ्यते इत्याह-
यद्योक्तं मनसः प्रियमिति । तेन मनसोऽतिप्रीत्याभिलषितं
तेन मनसो हितमिति प्रियार्थः तेन प्रशमज्ञानातीक्ष्ण-
त्वादयो गृह्यन्ते । एतेन “मनःशरीरानुपपाति पथ्यम्”
इति पथ्यलक्षणमनपवादमुक्तं भवति ।

पथ्यम्-सि. १-६०. हितम्

पदार्थः-सि. १२-४१. पदस्य पदयोः पदानां
वार्थः ।

परः-शा. ४-७. सारः, किंवा परकालोत्पन्नः परः;
शुक्लं हि सर्वधातुभ्यः परमुत्पद्यते ।

परमाणुः-शा. ७-१७. रजश्चिश्चतस्रो भागः । (वै. श.)

परापरत्वम्-सू. २६-२९. देशकालवयोमानपाक-
वीर्यरसादिषु परापरत्वे । परत्वमपरत्वे च तच्च परत्वं प्रधानत्वम्
अपरत्वम् अप्रधानत्वं किंवा वैशेषिके देशकालाद्यपे-
क्षया विप्रकृत्यधिकृष्टवर्तित्वे परापरत्वे ज्ञेये ।

परातुः-इ. ३-५. गतप्राणः ।

परिकर्तिका-चि. १४-८. कर्तनवत् पीडा ।

परिकीर्णः-इ. ३-६. मललिताः ।

परिग्रह-चि. १-२१ । ४. पुनः प्रमाणग्रहणमेकैक-
ज्ञेयानां ग्राह्यताम् । सर्वतश्च ग्रहः परिग्रह उच्यते ।

परिचारकः-सू. १०-४. उपगतात् ।

परिणामम्-चि. २४-९०. चिकित्सास्थितम् ।

परिणामः-सू. २५-४०. परिणामः । (वै. श.)

परिणामः-सू. ११-४१. कालः ।

परिणामलोताः-सू. १४-४३. परिणाहेन वेष्टनेन
लोतः रन्ध्रम् । अथाः सा परिणाहलोताः ।

परिनिर्णयम्-चि. ६-१७. सन्तर्पणम् ।

परिदग्धा-चि. ३-१०५. दग्धवत् कृष्णवर्णा ।

परिपिण्डितम्-चि. ५-७. लतासमूहादिवत्
संपातेनावस्थितम् ।

परियहः-शा. ८-१२. शयनासनपुष्पादिपरिच्छदः ।

परिभ्रूणम्-चि. ३-२७. पुष्टिः, अभिशुद्धिः ।

परिमर्दनम्-चि. २१-१३५. मर्दनम् ।

परिमाणम्-सू. २६-३४. मानम् ।

परिमार्जनम्-सू. २९-७. शोधनम्, शुद्धिकरणम् ।

परिम्लानम्-चि. ५-३८. क्षीणक्षयम् ।

परिसर्पः-चि. २१-११. विसर्पस्य नामान्तरम्,
परिसर्पोऽथवा नाम्ना सर्वतः परिसर्पणात् ।

परिच्छादाः-चि. २५-१८. व्रणाच्छादाः ।

परिपेक्षाः-सू. २०-१३. परिपेचनम् ।

परिपेचनम्-चि. १२-१५५. व्रणवेदनोपशान्त्यर्थ-
सुप्नकार्यमचनम् । (व. द.)

परिहारः-सू. १३-४०. परिहरणम्, त्यागः ।

परीक्षकः-सू. २८-३७. धृतं बुद्धिः स्मृतिर्दाढ्यं-
वृत्तिर्दितनिपेवगम् । वाम् विबुद्धिः शमो धैर्यमाश्रयन्ति
परीक्षकम् ॥ एवंगुणविशिष्टः शास्त्रानुसारेण हितसमालोचकः
परीक्षकः ।

परीक्षा-चि. २५-१७. समालोचना ।

पर्योगः-सू. १५-७. कटाहः ।

पर्य-शा. ७-४. अवयवसन्धिः ।

परमेदः-सू. २२-३६. सन्निभद्रोमः, तथा
सन्निधवेदना, यथा चालने भक्षाशक्तं जायते (वै. श.)

पशुला-ड. ३-५. पार्श्वस्थि (स. क.)

परुषम्-सू. १८-९११, कठिनम् ।

पलम्-क. १२-९२-चतुर्धर्मितं नानम्, पुष्टिः,
पलः, चतुर्धर्मितं, विलम्, पोटशिका, आभ्रम् ।

पवनः-चि. २६-३६. वायुः ।

पवनेन्द्रियः-शा. २-१७. शुक्राशयं गर्भगतस्य हृत्वा
करोति वायुः पवनेन्द्रियत्वम् ।

पाकः-सू. २६-११. पचनम् ।

पाक्यम्-चि. ३-१९७ शतम् ।

पाक्यक्षारः-चि. २१-१२२ पाकेन सुशुतायुक्तेन
विधानेन कृतः क्षारः पाक्यक्षारः ।

पाचनम्-चि. १५-७५. यवाग्वादि, पचत्यामे न
वर्हि च कुर्याद् यत् तद्धि पाचनम् (शा. सं.), पाचने
दोषामयोः शोथस्य वा । (व. द.)

पाचनीयम्-सू. १५-७. पाचनम् ।

पाणिः-इ. १-२२. हस्तः ।

पाणितलम्-चि. १५-१७६. क. १२-२४. कर्पः ।

पाणिस्वेदः-चि. २६-१३७. हस्तेन कृतः स्वेदः ।

पाटनम्-चि. २५-४९. छेदनम् । (वै. श.)

पात्रम्-चि. ५-१७३. आढकः ।

पादः-सू. ९-२७. मिषगादीनामेकतमः ।

पादः-चि. १-४ । ६५ चतुर्थांशः ।

पादचर्मणी-इ. ५-३४. पादयोधर्मणी ।

पादाः-इ. ११-२७. मिषगादयः ।

पानकः-क. १-२६. पानद्रव्यविशेषः (श. क.)

पानम्-सू. १-८७. द्रवद्रव्यगलाघःकरणव्यापारः
(वै. श.)

पाण्मा-चि. ३-१३. पानः पापनिर्वर्त्यत्वात् ।

पामा-चि. ७-१३. सास्त्रावकण्डूपरिदाहकामिः
पामाऽण्डुकाभिः पिडकामिस्तथा (सु. नि. ५-१४.) ।

पायुः-सि. ७-५८. गुदम् ।

पारिपद्यः-सू. १५-७. परिपद्यः शस्तः ।

पारुष्यम्-वि. ९-१०. सारस्वम् ।
 पार्थिवः-सू. १-६८. पृथिवीविकारः ।
 पार्थिवः-सि. ३-२९. गुल्फस्याधोभागः । (वै. श.)
 पार्श्वम्-इ. ३-५. कक्षाधोभागः । (श. क.)
 पार्श्वशूलम्-वि. ८-१७. पार्श्वदेशस्थं शूलम् ।
 (वै. श.)
 पारण्डाः-वि. २३-१६०. चापालिकादयः
 पिचु-वि. ५-७४ कर्षः ।
 पिचुः-वि. ३०-६१. कार्पासखण्डः औषधाण्यवित्तः ।
 पिचुक्रिया-वि. ३०-६१. पिचुप्रणयनम् ।
 पिचुधारणम्-वि. १९-४६. भेषजसाधितकाथ-
 स्नेहाद्रुतत्वं तूलकस्य वलखण्डस्य वा गोनौ स्थापनम् ।
 (व. द.)
 पिच्छनम्-सू. १८-४. अत्यर्थपीडनम् ।
 पिच्छा-सू. १८-१४. पिच्छलो गाढश्च स्थावः ।
 पिच्छावस्तिः-सि. ५-१६. अल्पया मात्रया
 निरुह्यो वस्तिः ।
 पिच्छिलः-सू. १-६१. विजितः । (व. द.)
 पिटका-वि. ६-५८. पिटका, प्रगविशेषः (वै. श.)
 पिण्डः-वि. २१-१०१. वर्तुलाकृतिः । (व. द.)
 पिण्डस्येदः-सू. १४-२५. पिण्डरूपः स्वेदः ।
 पिण्डिका-इ. ६-१३. सि. ३-२९. जङ्गमांस-
 पिण्डिका ।
 पिण्डितम्-वि. ५-४३. पिण्डरूपम् ।
 पित्तम्-सू. १२-११. शरीरस्थधातुविशेषः । (श. क.)
 पित्तम्-सि. ६-७९. शोणितगतं पित्तं रक्तपित्तमिति
 भावः ।
 पित्तरूपानम्-वि. २१-४५. गण्यशरीरम् ।
 पित्तासृक्-वि. ४-२९. रक्तपित्तम् ।

पिष्टम्-वि. २१-८१. पिष्टिः ।
 पिष्टस्वेदनम्-वि. १-२ । १४. अधःस्थिद्र
 पिष्टान्नम्-वि. ७-१२. पिष्टेन कृतमन्नम् ।
 पिहितः-वि. ३०-२७. अवहृदः ।
 पीठसर्पी-सि. २-२१. पशुः ।
 पीडनम्-सू. २०-४. पीडा ।
 पीडा-सि. ९-३. रुजा ।
 पीनसः-वि. ८-६५. नासिकारोगविशेषः ।
 पुटपाकः-सि. ९-११५. पुटपाको हि शालाक-
 स्नेहन-लेखन-प्रसादनभेदात् त्रिविधः उक्तः ।
 पुण्डरीकम्-वि. ७-१३. कुष्ठभेदः ।
 पुनरागतः-वि. ३-३३५. पुनरावृत्तः ।
 पुनरावर्तकः-वि. ३-३४३. पुनरावृत्तो ज्वरः ।
 पुनर्भवः-सू. ११-६. जन्मान्तरम् ।
 पुराणज्वरः-वि. ३-१७२. जीर्णज्वरः ।
 पुरीषजननः-सू. २५-४०. पुरीषोत्पादकः ।
 पुरीषम्-सू. ७-३. विष्टा ।
 पुरीषवाहीनि स्त्रोतांसि-वि. ५-८. मलवहनादयः ।
 पुरीषविरजनीयः-सू. ४-८. पुरीषस्य विरजनं शोध-
 सम्बन्धनिरासं करोतीति (व. द.)
 पुरीषसंग्रहणीयः-सू. ४-१५ । ३१. पुरीषस्य
 संग्रहं रोधं करोतीति ।
 पुरीषसंस्नानम्-वि. ८-८८. द्रवपुरीषनिर्गतिः ।
 पुरीषाधानम्-शा. ३-६. पकाशयः ।
 पुरुषः-शा. १-३९. आत्मा ।
 पुरुषः-शा. ५-४. पुरुषातवः समुद्रिताः 'पुरुष' इति पदं लभन्ते ।

पुरुषः (विषयसंज्ञितः)-वि. २३-४. स पुरुषः
विषयमुच्यते विषादनादेतोः ।

पुरुषकारः-वि. ३-३०. इह जन्मनि कृतं कर्म
ग्रामान्येनोच्यते, स्मृतः पुरुषकारस्तु क्रियते यदिहापरम् ।

पुष्टिः-वि. २४-९. मांसादीनामुपचयः ।

पुष्टिकरः-सू. २५-४०. मांसाद्युपचयकरः ।

पूपलिका-वि. ७-२१. चापडिकेति ख्याता ।

पूपाः-सू. २७-२६७. पिष्टिकाः ।

पुष्पनेत्रम्-सि. ९-५०. पुष्पनेत्रमित्युत्तरवस्तिनेत्रस्य
संज्ञा ।

पुष्पम्-इ. १-२१. नखदन्तेषु अरिष्टलक्षणम् ।

पुष्पम्-शा. ८-५. धार्तवदर्शनम् ।

पुंसवनम्-शा. ८-१९. पुत्रजनकं विधानम् ।

पुंस्त्वम्-सू. २५-४०. शुक्रम् ।

पुंस्त्वोपघाति-सू. २५-४०. शुक्रक्षयकरम् । (व. द.)

पूति-वि. ७-१२. शटितम् ।

पूतिः-वि. ८-९७. दुर्गन्धः ।

पूतिनस्यम्-वि. ४-२६. नासाया दुर्गन्धता ।

पूपवर्तिः-वि. २४-१२६. वर्त्याकारा पूपलिका ।

पूर्वपक्षः-सि. १२-४३. प्रतिज्ञातार्थसंप्रपञ्चं वाक्यम् ।

पूर्वरूपम्-नि. १-६. वि. २८-१९. अव्यक्तं लक्षणं
तेषां पूर्वरूपमिति स्मृतम् । उग्नित्तुरामयो दोषो विशेषेणा-
नविष्ठितः । लिङ्गमव्यक्तमलपश्वाद् व्याधीनां तद्यथायथम् ॥
(मा. नि.)

पृथक्त्वम्-सू. २६-३३. 'इदं द्रव्यं षटलक्षणं
षट्वात् पृथक्' इत्यादिका बुद्धिर्यतो भवति, तत् पृथक्त्वं
भवति ।

पृथुत्वम्-इ. ८-१०. महत्त्वम् । (श. क.)

पृष्ठेपिका-इ. ३-५. पृष्ठवंशः ।

पृष्ठम्-इ. ८-२२. शरीराधोभागः ।

पेयम्-सू. २७-२०४. पानम् ।

पेयम्-इ. ९-११. जलम् । (श. क.)

पेया-क. २-५. अल्पसिक्थपेयद्रव्यम् । (शा. क.)

पेयादिक्रमः-सि. ६-२३. संसर्जनक्रमः ।

पेयामण्डः-वि. ८-१२७. पेयाया उपरि अच्छो
भागः ।

पेशी-वि. २४-१८३. फलगतं सस्यं ।

पेष्याः-सि. ३-४०. कल्कीकृताः ।

पैत्तिकः-वि. ३-१४४. पित्तजो व्याधिः ।

पौत्तिकम्-सू. २७-२४३. पिङ्गला मक्षिका महत्त्वः

पुत्तिकाः तद्वत् मधु पौत्तिकम् ।

पौरुषम्-सू. ३०-२४. उत्कृष्टं कर्म ।

पौरुषम्-वि. २४-६१. शुक्रम् ।

पौर्वदेहिकम्-सू. ११-३१. पूर्वदेहकृतम् ।

पौष्करम्-सू. २६-८४. पुष्करपत्ररूपं शाकम् ।

पौष्टिकी-वि. १-१ । ३०. बृंहणी ।

प्रकाशः-सू. २६-११. दीप्तिः ।

प्रकुञ्चः-क. १२-९२. पलम् ।

प्रकृतिः-सू. ९-४. आरोग्यम् ।

प्रकृतिः-सू. २१-१२. देहजनकं बीजम् ।

प्रकृतिः-वि. १-२. २१-१. तत्र प्रकृतिरुच्यते
खभावो यः । सपुनराहारीषयद्रव्याणां स्वाभाविको
गुर्वादिगुणयोगः ।

प्रकृतिः-सू. २१-५७ स्वभावः । यथा स्वभावा-
देव केचिदनिद्रा भवन्ति ।

प्रकृतिः-इ. ६-२४. स्वभावः सुशीलत्वादिरूपः
किंवा जन्मप्रतिग्रहा श्रेष्ठप्रकृत्यादिरूपः।

प्रकृतिः-वि. ३-१२. स्वभावः, तथा यत्कारणमयं
कार्यं भवति तदुच्यते।

प्रकृतिः-(तृतीया) शा. २-२५. नपुंसकः।

प्रकृति-स्थापनम्-वि. १-१३. विकिरितम्।

प्रकोपः-सू. १२-५. वातादीनां सङ्क्षोभहेतुः।(वै.श.)

प्रकोपणम्-सू. १२-३. प्रकोपकारकम्

प्रक्षिन्नम्-वि. २१-३०. गलितं, शटितम्।

प्रक्षेदि-वि. १-१६. छेदयुक्तम्।

प्रक्षालनम् (एतत्) वि. २१-९८. एतैः प्रक्षालनार्थः
कायः कर्तव्यः।

प्रक्षेपः-सू. ७-३७. हितस्य सेवनम्।

प्रघर्षः-सू. ३-२९. घर्षीरोद्धर्गनम्।

प्रघर्षणम्-वि. १२-१५५. प्रघर्षः।

प्रच्छन्नम्-वि. ७-४०. ऋज्वत्कीर्णं सूक्ष्मं सम-
मनवगाढमनुत्तानमाशु च शस्त्रं पातयेन्मर्मसिरास्ना-
युष्मन्वीनां चातुषपाति। (सू. सू. अ. १४-२६)

प्रच्छेदनम्-सू. ७-१५. वमनम्।

प्रच्छादनम्-वि. २५-९५. प्रावरणम् (श. क.)

प्रच्छिन्नम्-इ. १०-१२. प्रच्छिन्नमिव प्रच्छिन्नं,
छेदनाकारवेदनायुक्तत्वात्।

प्रजननम्-सू. २८-४. लिङ्गम्।

प्रजास्थापनः-सू. ४-१८ | ४८. एकोनपञ्चाशत्तमो
महाकपायः; प्रजोपघातकं दोषं हत्वा प्रजां स्थापयति
(व. द.)

प्रजीर्णम्-शा. १-१११. विदग्धम्।

प्रज्ञापराधः-सू. ७-५२. बुद्धेः अपराधः, अज्ञान-
दुर्ज्ञाने।

प्रज्ञापराधः-शा. १-१०२, धीवृत्तिस्मृतिविभ्रष्टः
कर्म यत् कुरुतेऽशुभम्। प्रज्ञापराधं तं विद्यात् सर्वदोष-
प्रक्षोपणम्॥ बुद्ध्या विषमविज्ञानं विषमं च प्रवर्तनम्।
प्रज्ञापराधं जानीयान्मनसो गोचरं हि तत्॥

प्रज्ञाविपर्यासः-इ. ४-२६. प्रज्ञाविपर्यासिरिति
शेषीभूतासु प्रभावकृतः प्रज्ञाविपर्यासः।

प्रणाडी-सि. ९-१०३. नस्यदाननलिका।

प्रतापः-सू. १८-५. प्रभावः।

प्रतिकर्म-इ. १२-५८. विकिरितम्।

प्रतिकारयेत्-वि. २४-१०७. चिकित्सां कुर्यात्।

प्रतीघातः-वि. ३०-१६८. वेगनिरोधः।

प्रतिच्छाया-इ. १-३. देहच्छाया।

प्रतिपत्तिः-सू. ७-५५. उपदिष्टार्थस्य सम्यगव-
बोधः।

प्रतिपत्तिः-वि. ४-११. कर्मणां यथार्हतया
अनुष्ठानम्।

प्रतिभा-सू. २७-३४९. प्रज्ञा।

प्रतिभातम्-वि. ८-१८. बुद्धिः।

प्रतिमर्शः-सि. ९-८९. नस्तःकर्म।

प्रतिरूपकाः सू. ११-५१. वैयर्थ्यशः।

प्रतिलोमानुलोमगाः-इ. ७-२०. अधोमार्गोर्ध्व-
मार्गगताः।

प्रतिषादः-सू. २५-२७. प्रतिपक्षः।

प्रतिषापः-सि. १०-१७. कपाये चूर्णादिप्रक्षेपः।
(वै. श.)

प्रतिविनीतम्-सू. १५-१७. आलोडितम्।

प्रतिषेधः-वि. ४-८. व्यावृत्तिः।

प्रतिसारणम्-वि. २३-३६. मणघर्षणम् (वै. श.)

प्रतुदाः-सि. १२-१८ | ४. प्रतुद्य बहुधाऽभिहत्य
भक्षयन्ति इति।

प्रत्यक्षम्-सू. ११-२०. आत्मेन्द्रियमनोऽर्पणानां सति-
कर्पात् प्रवर्तते । व्यक्ता तदात्मे या बुद्धिः प्रत्यक्षं सा निरुच्यते ॥
इह च प्रत्यक्षफलरूपापि बुद्धिः प्रत्यक्षशब्देनाभिधीयते,
तथैव लोकव्यवहारात्; परमार्थतस्तु यतो भवतीन्द्रियादेरी-
न्ध्या बुद्धिरुत प्रत्यक्षम् ।

प्रत्यक्षम्-वि. ४-४. यदात्मना इन्द्रियैः चक्षुरादिभिः
अव्यवधानेन गृह्यते रूपादि तत्प्रत्यक्षमिति वाच्यप्रत्यक्षं
गृह्णाति, मनसोऽव्यवधानेन यदुपलभ्यते सुखादि तच्च मानसं
प्रत्यक्षं गृह्णाति ।

प्रत्यक्षनीकम्-सि. १-३५. विपरीनम् ।

प्रत्यक्षः-सू. १-२४. नाशितकारणम् ।

प्रत्याख्येयः-सू. १०-१९. प्रत्याख्यातुं योग्यः
असाध्यभेदः असाध्यत्वरूपनपुरःसरं चिक्किरत्यः ।

प्रत्यात्मानियता-इ. १-५. प्रतिपुरुषमिच्छा ।

प्रदेशः-मि. १२-४२. यत् बहुत्वादर्थस्य कारत्वेनाभि-
धातुमशक्यमेकत्रेनेनाभिधीयते ।

प्रदेशिनी-वि. २८-१०३. अङ्गुष्ठानन्तराऽङ्गुली ।

प्रदेशः-सू. ११-५५. लेपस्य भेदः प्रदेशस्तूष्णः
शीतो वा बहलोऽवहुरविशेषो च । (सू. सू. १८-६०.)

प्रशोपम्-शा. ४-३०. प्रशोप इत्यत्र प्रशब्देन
दुष्टिप्रकर्षं प्रकृतवन्धनतारुपर्यजनकं दर्शयति ।

प्रथमनम्-वि. ९-९६. नस्यविशेषः (वे. श.)

प्रथमापनम्-सि. ९-१०७. प्रथमनस्यदानम् ।

प्रपन्नम्-वि. ८-३६. पाकः ।

प्रपन्नः-शा. २-१४. आगतः ।

प्रशणिकौ-इ. ८-२६. मणिवन्धादूर्ध्वं कूर्परपर्यन्तं
द्वयोर्भुजयोर्भागौ ।

प्रवाचकम्-वि. २४-६४. निवर्तकम्, निवारकम्
शामकम् ।

प्रभवः-शा. १-५३. कारणम् ।

प्रभा-इ. ७-१४. वर्णप्रकाशिनी, प्रकृष्टा दूरात्
प्रकाशते इतिलक्षणद्वयविशिष्टः कान्तिविशेषः ।

प्रभावः-सू. २६-६७. अचिन्त्या द्रव्यशक्ति-
रभिप्रेता रसादिकार्यत्वेन या नावधारयितुं शक्यते ।

प्रभावः-वि. १-४. प्रकृष्टो भावः प्रभावः शक्तिरित्यर्थः,
सचेदाचिन्त्यश्चिन्त्यश्चप्राणः, रसादिसाम्ये यत् कार्यं विदिष्टं
तत् प्रभावजम् । (व. द.)

प्रभावनस्त्वम्-वि. १-९. प्रभावतात्पर्यम् ।

प्रमथ्या-सि. ७-१०. प्रमथया प्रोच्यते द्रव्यं पल-
मात्रं नुकृत्कृतम् । किमिदमेव संपुष्पमथयान्यविजितम् ।
तोये चान्द्रेणैवाध्यं पानमाहुः पलद्वयम् ॥ (वे. श.) । प्रमथ्येति-
पाचनकपायस्त्वानुर्ध्वेदसमयसिद्धसंज्ञा ।

प्रमथ्या-वि. १९-२९. पाचनशीपनीयः कपायः

प्रमाणम्-वि. ४-७. देहपरिमाणम् । (वे. श.)

प्रमाणवन्ति-वि. १४-१७. महाप्रमाणानि ।

प्रमाथि-सू. ७-९. अनुलोमनम् ।

प्रमिताशनम्-वि. १४-१२. अत्यल्पाशनम् ।

प्रमिताशनम्-सू. १५-१५. एकरसाम्बासः ।

प्रमिताशनम्-वि. ११-८. एकरसाम्बासः दिवा
अतीतकालभोजनम् ।

प्रमीलकः-सू. २३-७. सततं प्रध्वानम् ।

प्रयोगः-सू. २४-५६. प्रयुक्तिः उपयोगः ।

प्रयोगः-सू. ५-३७. प्रायोगिरधूमः ।

प्रयोजनम्-सि. १२-४२. यदर्थं कामयमानः
प्रवर्तते ।

प्ररोहः-सू. १-७४. अद्वारः ।

प्रलयः-वि. ३-५. मरणम् ।

प्रलापः-सू. १७-५२. अनर्थकं वचः ।

प्रलुञ्जय-वि. ७-२५. निस्तुपीकृत्य ।

प्रलेपः-सू. २१-४६. कफादिभिः लिप्ता ।

प्रवाहणम्-वि. १२-९६. कुन्थनम्, मलादि-
निष्कासनार्थं प्रयत्नः ।

प्रवाहिका-वि. १९-३४. वायुविवद्धो निचितं
बलात् नृदत्यधस्तादहिताशनस्य । प्रवाहतीऽल्पं बहुशो मलाक्तं
प्रवाहिता तां प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥ (सु. उ. अ. ४०-१३८.)

प्रवृत्तिः-वि. ३-१४. प्रथमाविभाजः ।

प्रवृत्तिः-वि. ८-६८. प्रवृत्तिस्तु खलु चेष्टा कार्यायां
सैव क्रिया, कर्म यत्नः कार्यसमारम्भश्च ।

प्रवेणी-सू. ६-१५. गोणी ।

प्रशमः-सू. १७-११४. वि. २१-४०. शमनम् ।

प्रशमः-सू. ३०-१४. शान्तिः ।

प्रशमनम्-सू. २५-४०. शमनकरणम् ।

प्रसङ्गः-वि. १२-४३. पूर्वाभिहितार्थस्य प्रकरणा-
गतत्वादिना पुनरभिधानम् ।

प्रसज्यम्-सू. २७-२१७. निर्दोषम् ।

प्रसज्या-वि. २६-१८. मयोपरि स्वच्छो भागः

प्रसहाः-सू. ६-१२. प्रसह्य भक्षयन्तीति प्रसहारतेन
संश्लिताः । प्रसहा द्विविधा मत्सादा व्याप्रश्येनादयः,
तथा अमांसादाश्च मवादयः ।

प्रसादः-सू. २७-३४९. प्रसज्यता (श. क.)

प्रसारणम्-शा. ७-१६, वि. २८-९. नैयायिका-
भिमतपञ्चविधचरान्तर्गतकर्मविशेषः, अधिदेशसंयोगकरणम् ।

प्रसेकः-शा. ८-३६. अल्पत्वेन बिन्दुशो वा क्षरणम् ।

प्रसेचनम्-वि. ७-१५९. परिपेकः ।

प्रस्कन्दनम्-वि. ३-२३०. विरेचनम् ।

प्रस्त्राविणी-वि. २३-१५८. 'स्रवणी' ।

प्रसृतः-क. १२-९२. द्वे पले प्रसृतं विदुः ।

प्रस्तरः-सू. १४-४२. प्रस्तीर्यते इति प्रस्तरः
शयनप्रमाणेन स्वेदवस्तूनां विस्तरणम् ।

प्रस्थः-वि. २२-४३. क. १२-९४. षोडशपल-
प्रमाणः ।

प्रसंसदम्-वि. ५-१८४. विरेचनम् ।

प्राग्भक्तम्-वि. ५-८१. भोजनस्य प्र.त्., परिणामेन
वा यथा भोजनात्प्रथामं भवति ।

प्राक्-सू. २७-१८. सर्गादौ ।

प्राग्रूपम्-वि. २२-८. पूर्वरूपम् ।

प्राणवाहोनि स्रोतांसि-वि. ५-८. प्राणसंज्ञ-
वातवहानि स्रोतांसि ।

प्राणः-सू. १२-८. मूर्धोरःऋगृजिह्वाह्रस्वनादिका-
संचारी श्रोत्रनक्षत्रयूहाराक्षमाहारादिकर्मकारी वायुविशेषः;
यो वायुर्ब्रह्मसंचारी स प्राणो नाम वेदयुक् । सोऽयं प्रवेगयत्यन्तः
प्राणाश्वाप्यवलम्बते ॥ प्रायशः कुरुते दृष्टो द्विजाश्वासा-
दिकान्गदान् । (सु. नि. १-१३३.)

प्राणाचार्यः-वि. १-४ । ४०. दैत्यः ।

प्राणाः-वि. २८-१२. जीवितम्, अग्निः सोमो वायुः
सर्वं रजस्तमः पञ्चन्द्रियाणि भूतामेति प्राणाः (सु. शा. ४-३.)

प्राणापानौ-शा. १-७०. उच्छ्वासनिःश्वासौ ।

प्राणाभिसरः-सू. ९-१८, २९-४. प्राणान्
नच्छतो व्यावर्तयतीति प्राणाभिसरः; तस्माच्छाभेऽर्थविज्ञाने
प्रसृतौ कर्मदर्शने । भिषक् चतुष्टये युक्तः प्राणाभिसर उच्यते ॥

प्राणायतनम्-सू. २९-३. शा. ७-९. नाभ्यादयः
प्राणस्थित्याधाराः (वै. शा.) । दशैवायतनान्याहुः प्राणा येषु
प्रतिष्ठिताः शङ्खौ सर्वत्रयं घण्टौ रक्तं शुक्रेजसी मुदम् ॥ दश-
प्राणायतनानि; तस्यैवा मूर्धा, कण्ठः, हृदय, नाभः, मुदं,
वस्त्रिः, ओजः, शुक्रं, शोणितं, मांसमिति ।

प्राणैषणा-सू. ११-३. प्राणो जीवितं, तत् साध्यते
सूर्यस्त्वेन रोगानुपहतत्वेन चानयेति प्राणैषणा ।

प्रादुर्भावः-सि. ९-५. आविर्भावः (श. क.)

प्रायश्चित्तम्-वि. १-१ । ३३. चिकित्सितं व्याधि.
हरं पश्यं साधनमौपधम् । प्रायश्चित्तं प्रशमनं प्रकृतिस्थापनं
हितम् ॥ विद्याद्वैषजनामानि ।

प्रायोगिकी-सू. ५-२४३. नित्यपेयधूमवर्तिसंज्ञा ।

प्रीणनः-सू. २५-४०, २७-३१२. वृत्तिकरः ।

प्ररणम्-सू. २०-५. कारणम् ।

प्रोक्षणम्-शा. ५-१०. जलावसेचनम्, जल-
विन्दुनामवकिणम् ।

प्रीहा-वि. ५-८. कुक्षिवामपार्श्वस्थमांसखण्डम् ।
(ज. क.)

फलम्-सू. २५-२०. कार्यफलं पुनस्तद् यस्प्रयोजना
कार्यागिनिवृत्तिरिष्यते ।

फलवत्-वि. २-४ । ५०. प्रजोत्पत्तिकरम् ।

फलवर्तिः-सि. ७-१०. गुदादौ प्रयुज्यमाना औपव-
प्रत्यवर्तिः ।

फलभारिकम्-वि. २-४ । १८. दाडिमामलकादि-
फलभारसंस्तुतम् ।

फाणितम्-सू. १५-७. पाकात् किञ्चित् घनीभूतम् ।

फाण्टम्-सू. ४-७. क्षिप्त्वोष्णतोये मृदितं तत्
फाण्टं परिशीलितम् ।

फेनसङ्घातः-सू. १९-४. फेनराशिः ।

फेमिलम्-सू. १९-४ । १. सफेनम् ।

बलकरम्-सू. २५-४०. बलजनकम् ।

बलजननम्-सि. १२-१६. बलोत्पादकम् ।

बलदः-सि. ३-४३. शक्तिदः

बलम्-वि. १-३. व्यायामानुमेया शक्तिः, उत्साहः,
उपचयः, जोजः, शरीरसंरक्षणो शक्तिः ।

बन्धम्-सू. १-१०७. बलाय दितम्, बलकरम् ।

बलवर्धनम्-सि. ४-११. बलोपचयकरम् ।

बलिः-सू. ३०-२१. उपहाः

वस्तिः-सू. १-८७. वस्तिकर्म, चर्मपुटद्वारेण
गुदाध्वना कायादिप्रदानरूपः कर्मविशेषः स द्वि वषः अनु-
वासननिरुहमेवात् । स्नेहवस्तिरनुवासनं कपायवस्तिर्निरुहः ।
(व. द.)

वस्तिः-सू. ११-४८. मूत्राशयः ।

वस्तिः-सि. ३-१०. मूत्राशयपुटम् ।

वस्तिकर्म-सू. ७-७. पञ्चकर्मणामन्यतमम् ।

वस्तिद्वारम्-सि. ९-४१. मूत्राशयद्वारम् ।

वस्तिनियमः-वि. ६-१६. वस्ती यथोक्तनियम-
सेवा, किंवा वस्तिनियमशब्देन कर्म-काल-योगरूपं वस्ति-
संस्थानियमं कर्तव्यतया दर्शयति ।

वस्तिनिबन्धनम्-सि. ३-१०. वस्तिनिबन्धनार्थ-
सुपयुक्ता कणिका ।

वस्तिनिलेखनम्-सि. ७-५५. वायुना च तीक्ष्णेन
वस्तिकर्षणम्, वस्तिकर्मजन्यं घर्षणम् ।

वस्तिनेत्रम्-सू. १५-७. वस्तिनलिका ।

वस्तिशीर्षम्-इ. १०-१२. वस्त्यूर्ध्वभागः ।

बहलम्-सू. २२-१३. घनम् ।

बहिःपरिमार्जनम्-सू. ११-५५. बाह्यम् परि-
मार्जनम्-शोधनम्-रोगदूरीकरणम् । यत्पुनः बहिःस्पर्श-
माश्रित्याभ्यङ्गस्वेदप्रदेहपरिषेकोन्मर्दनधैरामयान् प्रमाष्टिं
तद् बहिःपरिमार्जनम् ।

बाधनम्-वि. १-१ । ५. स्वप्नमपथ्यं तदास्वमात्र-
बाधकम् ।

बाह्यकर्म-सू. ११-५६. बाह्यपरिमार्जनम् ।

वाह्यरोगमार्गः-सू. ११-४८. रक्षादिधातुत्वप्रपः
शाखाभिधो रोगमार्गः ।

विडालकः-वि. २६-२३१. नेत्रबहिर्लेपः शालाक्ये
उच्यते ।

विडालपदकम्-वि. १३-१६०. कर्पः ।

वित्त्वः-वि. ७-२६. पलम् ।

वीजम्-शा. २-१८. शुक्रशोणितम् ।

वीजग्रहणम्-शा. २-१३. शुक्रस्य योनौ निषिक्तः
स्यानिःसरणम् ।

वीजाभिसंस्कारः-सू. १२-८. यीजस्य शात्यादेः
अभिसंस्कारोऽङ्गुरजननशक्तिः ।

वीजोपघातः-सू. १९-४ । ५. शुक्रोपघातः ।

बुद्धिः-सू. २५-४०. सम्यग्बोधनम्, निश्चयात्मकं
ज्ञानम् ।

बुद्धिः-शा. १-२३. निश्चयात्मकज्ञानवती धीः ।

बुद्धिः-शा. १-६३. महश्चिदाभिवेद्या ।

बृहच्छरीरः-वि. २-४ । ४. महाकायः ।

बृंहणम्-सू. १-१०७. वेहस्पृलताकरम् । (व. द.)

बृंहणः-सू. २७-१०. तर्पणः ।

बृंहणी सू. २-२५. बृंहणजननी ।

बृंहणीयः सू. ४-८, शा. ८-२७. द्वितीयो
महावपायः ।

ब्रह्मः-सू. १४-१७ शुद्धः ।

ब्रह्म-वि. १-१ । ८० मोक्षम् ।

ब्रह्मचर्यम्-सू. ११-३५ ब्रह्मचर्यशब्देन इन्द्रिय-
संयमलौमनस्यप्रवृत्तयो ब्रह्मज्ञानावगुणा गृह्यन्ते ।

ब्राह्मम्-शा. ४-३. ब्रह्मवत्त्वयुक्तम् ।

भक्षपाचनः-सू. २७-१८१. भक्षपाचनः ।

भक्तिः-इ. १-३. इच्छा ।

भक्तोपरोधाः-वि. २२-५२. भक्तच्छेदः ।

भक्ष्यः-सू. २५-२६. भक्षणीयः ।

भगन्दरः-वि. ४-२७. शुद्धस्य हृदयगुले क्षेत्रे पार्श्वतः
विडकार्तिष्ठतः । मित्रो भगन्दरो ह्येयः स च पथवि-
धो मत्तः ॥ (सा. नि.) वातपित्तश्लेष्ममसिपाताग-
न्तुनिमित्ताः शतपोनकोष्ट्रग्रीवपरिक्षाविशम्बूहावर्जोन्मार्गिणो
यथाधैर्यं पथ भगन्दरा भवन्ति । ते तु भगयुद्धगित-
प्रदेशवाण्याष 'भगन्दरा' इत्युच्यन्ते । अभिप्राः पिच्छाः
मित्रास्तु भगन्दराः ॥ (सु. नि. ४-३).

भग्नः-वि. ९-३९ प्रतिहतः ।

भङ्गः-वि. ९-४० भङ्गाकारवेदना ।

भञ्जनम्-सू. १८-४ जर्जरीकरणम् ।

भस्म-वि. २३-४७ दग्धकाष्ठादिविकारः, भूतिः ।

भस्मप्रहरणः-वि. ३-२३ भस्मायुधः ।

भाः-इ. ७-१६ क्षीप्तिः, मास्तु वर्णप्रकाशिनी, भाः
प्रकृष्टा प्रकाशते ।

भावः-सू. ११-४२ सम्यगवस्थानम् ।

भावना-वि. १-२२-२ द्रव्यदार्थेन पुनः पुनः
औपधमारणं शोषणं च । (वै. श.)

भाष्यम्-वि. ८-३. भाष्यते विप्रततया वर्ण्यते
इति । (श. क.)

भिषक्-सू. १०-४ वैद्यः, भिषक्नाम यो भिषज्यति
यः स्वार्थप्रयोगकुशलः यस्य चायुः सर्वथा विदितं
स्यात् ।

भिषक्कुक्षचराः-सू. ११-५०. भिषक्कुक्षचराः ।

भिषग्जितम्-वि. ३-४१. औषधम् ।

भिषग्विद्या-सू. १२-९. आधुर्वेदः ।

भिषङ्ग्यानी-सू. ९-१७. आत्मानमभिपजं
भिषक्तत्वेन मन्यते इति ।

भूगृहम्-सू. १४-२८. भूस्वेदार्थं गृहम् ।

भूतगुणाः-सू. १-५६. सन्दादयः ।

भूतधात्री-सू. २१-५९. भूतानि प्राणिनः दधाति
पुष्पातीति भूतधात्री, धात्रीव धात्री । रात्रिस्वभावप्रसवाया
निद्राया नामान्तरम् ।

भूतविद्या-सू. ३०-२८. भूतानां राक्षसादीनां
ज्ञानार्थं प्रशमार्थं च विद्या । भूतविद्या नाम देवासुरगन्धर्व-
चक्षुरक्षःपितृपिशाचनागग्रह शुषुप्तेत्येतसां शान्तिकर्म बलि-
हरणादि ग्रहोपशमनार्थम् (सू. सू. १.)

भूताधिकारः-वि. ३-११६. देवादयोऽनुन्मादे
भूता उक्ताः तेषां अधिक्रियन्ते अस्मिन्निति भूताधिकारः ।

भूतानि-सू. २५-१२. प्राणिनः ।

भूमिः-सू. २५-३२. पृथ्वी ।

भूतम्-सू. ६-१२. भूतं भवतिमिति प्रसङ्गम् । (चक्रः)

भृष्टः-वि. २२-३१. मर्जितः ।

भेदः-सू. १७-४६. भेदनवद्भेदनाविशेषः ।

भेदनम्-सू. ११-५५. आशयविदारणम् ।

भेदनीयः-सू. ४-८. चतुर्थो महाकषायः ।

भेदप्रकृतिः-वि. ६-४. भेदकारणम् ।

भेदाग्रम्-वि. ६-४. भेदसंख्यारूपं परिमाणम् ।

भेदि-सू. २७-१९१ भेदनशीलम्, मलववन्धुदित्यर्थः ।

भेद्यम्-वि. ८-१३९. धणुशः भेदनाईम् ।

भेषजम्-वि. १-१४. “स्वस्थस्योजंस्करं किञ्चित्
विधिदार्तस्य रोगमुत्” इति द्विरूपमौपधशब्दवाच्यम् ।

भेषजम्-सू. १०-३ औपधः, चिकित्सितम्, व्याधि-
हरम्, पथ्यम्, साधनम्, प्रायश्चित्तम्, प्रशमनम्, प्रकृतिस्था-
पनम्, हितम् ।

भेषजसमुदायः-सू. १०-५. औपधसमूहः ।

भेषजसंग्रहः-वि. २६-१३३. भेषजामिषायको
ग्रन्थः ।

भेषजसंयोगः-वि. ३-१५१. औपधेन मिश्रत्वं
संस्कृतत्वं सिद्धत्वं वा ।

भैषज्यम्-सू. १-१३४. भेषजम् ।

भोजनम्-सू. २५-४०. भक्षणम्, अन्यवहारः ।

भोज्यम्-सू. २७-२०४. अकठिन आहारविशेष
ओदनादिः ।

भौमः-वि. १५-१३. पार्थिवः ।

भूः-इ. ३-५. नयनोर्ध्वमागरोमराजिः ।

भ्रष्टम्-सू. २७-१९८. पतितम् ।

भ्रंशः-इ. ३-४. सुद्राघोगमनश्च ।

मङ्गलम्-सू. ३०-२१. शुभम्, शस्त्रम् ।

मज्जा-सू. १-६८. अस्थिसारः (श. क.)

मज्जसारः-वि. ८-१०८. मज्जा पथे धातुः सारः
बलवान् उःकृष्टो त्रिशुद्धतरो वा यस्मिन्नितरेभ्यो धातुभ्यः
स मज्जसारः ।

मज्जवाहीनि स्रोतंसि-वि. ५-८. मज्जधातुवाहकाः
मार्गाः ।

मणिकः-इ. ३-५. करवाहुमन्धिः ।

मणिसन्धिः-वि. ९-३३. शिथस्य तन्मणेश्च यत्र
सन्धानं भवति तत्स्थानम् ।

मण्डः-सू. १३-२२. यवादिसाधितः सिक्क-
रहितः प्रवदव्यविशेषः (वै. श.)

मण्डलानि-वि. २८-६४ वर्तुलानि ।

मतिः-सू. २९-७. बुद्धिः, धीः, प्रज्ञा ।

मदः-चि. २४-३४. यदि मद्यगुणाविष्टे हर्षस्तर्षो रतिः सुखम् । विकाराश्च यथास्तरं चित्रा राजसतामसाः ॥ जायन्ते मोहनिद्रान्ता मद्यस्यातिनिषेवणात् । स मद्यविषमो नाम्ना 'मद इत्यभिधीयते ॥ (च. वि. २४-४०.) मदमुच्छ्रियसंन्यासास्तेषां विद्याद्विचक्षणः । यथोत्तरं वलाधिक्यं हेतुलिङ्गोपशान्तिषु ॥ दुर्बलं चेतसः स्थानं यदा वायुः प्रपद्यते । मनो विक्षोभयन् पततोः संज्ञां संमोहयेत्तदा ॥ पित्तमेवं कफश्चैवं मनो विक्षोभयन्नुषाम् । संज्ञां नयत्या कुलतां.... ॥ (च. सू. २४-२७-२९.)

मदात्ययः-चि. ३-१५४. अतिमद्यपानादिजन्य-रोगविशेषः ।

मदिरा-सू. २७-१८०. सुरामण्डः ।

मद्यम्-चि. २६-६३. सुरा ।

मधु-सू. २७-२४५. क्षौद्रम् ।

मधुजातयः-सू. २७-२४३. क्षौद्रजातयः ।

मधुद्रवम्-चि. ५-१३०. मधुना कृतं द्रवम्, मधु निम्नगिर्या प्रवीकृतमित्यर्थः ।

मधुमाणिका-चि. ९-५०. प्रवत्वाद् द्वैगुण्येन माणिकाया द्विकुट्टवस्पायाः बोडशपलं भवति ।

मधुरः-सू. १-६१, २६-७४. रसविशेषः, भूम्यम्बुगुणवाहुल्यात् मधुरः ।

मधुरविपाकः-चि. १-०६. जाठराग्निद्वयगतः रसविशेषः ।

मधुरन्कण्डः-चि. ८-१३८. मधुरगणः मधुरवर्गो वा पद्विभागः यावन्मध्ये मधुरवर्गीयद्रव्यकृतास्थापनविशेषः (च. श.)

मधुशुक्तम्-चि. २६-०७. मधुप्रधानं शुक्तम् । मधु च शुष्कं च इति वा ।

मधुदकम्-सू. २७-३२३. मधुमिश्रमुदकम् ।

मधुलिका-सू. २७-१९०. मधूलकः गोधूमभेदः तेन निर्दिष्टा सुरा मधुलिका ।

मध्यम् औषधम्-क. १२-५५. नातिहीनयोगेन कर्मकारि भेषजम् ।

मध्यमो रोगमार्गः-सू. ११-४८. मर्मास्थि-सन्धिरूप औषधमार्गभेदः ।

मध्यः स्नेहपाकः-क. १२-१०२, १०३. संयाव इव नियसि मध्यो दर्वी विमुगति ।

मनः-सू. ३०-२५. अतीन्द्रियं पुनर्मनः सत्त्वसंज्ञकं 'चेतः' इत्याहुरेके, तदर्थस्मिन्संपदायत्तचैष्टं चेष्टाप्रत्यय-भूतमिन्द्रियाणाम् ।

मनः-चि. ९-४. अन्तःकरणम् ।

मनः-शा. १-१८. सुनपञ्ज्ञानाद्युत्पत्तिर्मनसो लिङ्गम् । (योगदर्शनम्)

मनः-शा. ३-१३. अस्ति खलु तत्त्वगोपपादुकं; यज्जीवं रघुकशरीरमभिसंभ्रूयति, यस्मिन्मनसोऽप्युत्पद्यते, शीलमस्य व्यावर्तते, भक्तिर्विपर्यस्यते, सर्वेन्द्रियाण्युत्पद्यन्ते, बलं हीयते, व्याधय आप्यादयन्ते, गरमः क्षीयः प्राणाज्जहाति, यदिन्द्रियाणामभिप्रादकं च 'मन' इत्यभिधीयते ।

मनोवहस्त्रोतः-इ. ५-४१. वातचित्तेभ्यश्मनां पुनः सर्वशरीरचराणां सर्वाणि स्त्रोताश्चयनभूतानि । तद्वदतीन्द्रियाणां पुनः सत्त्वादीनां केवलं चेतनावच्छरीरमयनभूतमधिष्ठानभूतं च तत्रैतत् स्त्रोतसां प्रकृतिभूतत्वात् विकाररूप-सृज्यते शरीरम् । (च. अ. ५-६.); मनवद्वानि स्त्रोतांसि यद्यपि पृथक्स्त्रोतानि, तथापि मनसः 'वेवलं चेतनावच्छरीरमयनभूतम्' इत्यभिधानात् सर्वशरीरस्त्रोतां तं गृह्यते ।

मनोविघातकरा भावाः-चि. १-२५ । ६. चित्तोपतापकराश्चत्वारः कामक्रोदः शोभोहेमादिशोक-मानोद्वेगमयोपतापः ।

मन्त्रः-सू. ३०-२९. वेदभेदः । स च मन्त्रस्वरूप-भागः । मननात् जायते यस्मात्तस्मान्मन्त्रः प्रकीर्तितः । (श. फ.)

मन्थः-सू. २३-३५. सक्तवः सर्षिपाऽभ्युक्ताः
पीतोदकपरिप्लुताः । नातिद्रवा नातिघान्द्रा मन्थ इत्य-
मिधीयते ॥ (रा. ति.)

मन्दः-वि. २३-८. मन्दः गुणविशेषः तीक्ष्णविविधः ।

मन्दकम्-सू. २५-४० मन्दजातं दधि ।

मन्दाग्निः-वि. ६-१२ स्वल्पापचारमपि यो न
सहते, स मन्दः अग्निः ।

मन्दाग्निः-सू. १३-३८ मन्दः पाचनासमर्थः
अग्निः यस्य सः ।

मन्दः अनलः-वि. ९-३८. अग्निमान्द्यम् ।

मन्या-सि. ९-८४ ग्रीवाधिराद्वयम् ।

मरणम्-सू. ३०-२५. मृत्युः । स्वभावः प्रवृत्ते-
रुपरमो मरणमनित्यता निरोध इत्येकोऽर्थः ।

मर्दनम्-सू. १८-१० धक्कमर्दनम् ।

मर्म-वि. १७-९१ हृदयादीनि ।

मर्म-वि. २१-२६. हृदयम् ।

मर्माणि-सू. ११-४८ मारयन्ति इति मर्माणि ।
मर्माणि पुनर्वर्तिनहृदयमूर्धादीनि । तानि मर्माणि पञ्चात्मकानि
भवन्ति; तथ्या-मांसमर्माणि, विराममर्माणि, स्नायुमर्माणि
सन्धिष्वमर्माणि चेते । न खलु मांसविरामस्नायुसन्धिष्व-
न्वतिरेकेणान्यानि मर्माणि भवन्ति, यस्माज्जोषलभ्यन्ते ।
(सु. शा. ६-३.)

मर्मसंज्ञकानि स्रोतांसि-सि. ९-४ नहि स्रोतसां
मर्मत्वमस्ति; किंवा स्रोतोमर्मशब्देन विराममर्मप्रवृत्तिं किंवा
मर्मसंवेदनानि मर्मोषकाणि वा स्रोतांसि मर्मसंज्ञकानि
स्रोतांसि ।

मलः-सू. २२-१९ विट् ।

मलवृद्धिः-सू. ७-४३ पुरीषस्य स्वमानादधिकता ।

मलशोधनम्-वि. ६-१६. विट्शोधनम्

मलाः-सू. २४-२५. दुष्टदोषाः ।

मलायनानि-सू. ७-४२. द्वे गुदलिङ्गे, छिद्राणि,
द्वे भोजे, द्वौ नासापुटौ, द्वे अक्षिणी, मुखं, लोमकूपानि
एतानि सर्वाणि मलस्यायनानि निर्गमद्वाराणि ।

मस्तिष्कम्-सि. ९-७९. शिरःस्थो मज्जा ।

मस्तु-सू. २४-७. दधिमण्डः ।

मस्तुलुङ्गः-वि. ९-१०१. मस्तिष्कम्, अवेलीन-
घृताकारा मस्तकमज्जा । (सु. शा. १०-४२ उत्तहणः)

महत्-सू. ३०-३ हृदयम् ।

महागदः-वि. ८-२७. राजयक्ष्मा ।

महात्ययत्वम्-वि. ६-७. मज्जादिगम्भीरघात्वपर्य-
क्त्वेन महान्यापत्तिकर्तृत्वादाशुकारित्वाच्च ।

महानिम्नम्-सू. ११-४८. कोष्ठः ।

महाफलाः-सू. ३०-१२ येनौजसा वर्तयन्ति ग्रीणिताः
सर्वदेहिनः । यद्वेते सर्वभूतानां जीवितं नावतिष्ठते ॥ यत्
धारमादौ गर्भस्य यत्तद्गर्भसादसः । संवर्तमानं हृदयं समाविशति
यत्पुरा ॥ यस्य नाशास्तु नाशोऽस्ति धारि यद् हृदयाश्रितम् ।
यच्छरीररसस्नेहः प्राणा यत्र प्रतिष्ठिताः ॥ तत्फला बहुधा वा
ताः फलन्तीव (ति) महाफलाः । (च. सू. ३०-८-११३);
तत्फला भोजः फला भोजोवद्वा इति यावत् । एतेन,
यथोक्तगुणशालित्वेनौजो महत्; एतद्वहेनेन फलन्तीवेति,
महाफला धमन्य उक्ताः । द्वितीयां निरुक्तिमाह—बहुधा
वा ताः फलन्तीति, 'ता हृदयाश्रिता दश धमन्यो बहुधा अनेक-
प्रकारं फलन्तीति निष्पद्यन्ते; एतेन, मूले हृदये दशरूपाः
सत्यो महासंख्याः शरीरे प्रतानभेदाद्भवन्तीत्युक्तम् ।

महाभूतानि-सि. ९-६. आत्मसंवेदनानि सूक्ष्म-
महाभूतानि । (चक्रः)

महामूलाः-सू. ३०-८. महत् हृदयं मूलं यासां ताः ।
तेन मूलेन महता महामूला मता दश (च. सू. ३०-८.)

महास्नेहः-सू. १-७५. क्षीरमांसादीनामपि स्नेहतया स्नेहाध्याये वक्ष्यमाणत्वेन, तेषु सर्पिरादीनां भूरिस्नेहवत्त्वेन महत्त्वम् (चक्रः) सर्पिस्तैलं वसा मज्जा सर्वस्नेहेत्तमा मताः (च. सू. १३.)

महास्त्रोतः-सू. ११-४८. कोष्ठः, महानिम्नम्, आमपकाशयः, शरीरमध्यम् ।

महेन्द्रसलिलम्-चि. १४-१८८. आन्तरिक्षं जलम्
माक्षिकम्-सू. २७-२४३. माक्षिकाः पिप्पलाः तद्भवं
माक्षिकम्. मधुमेदः ।

माञ्जिष्ठमेदः-चि. ६-१०. माञ्जिष्ठोदकसंकाशं शृणुं
विहं गमेहम् । पित्तस्य परिकोपात्तं विद्यान्माञ्जिष्ठमेदिनम् ॥
(च. नि. ४-३३.)

मात्रा-सू. २-१५. अनपायि परिमाणम् ।

मात्राप्रमाणम्-सू. ५-४. आहारमात्राप्रमाणम्
(श. क.)

मात्रावस्तिः-सि. ४-५२. एस्वायाः स्नेहमात्राया
मात्रावस्तिः समो भवेत् (च. सि. ५-५३) एस्वाया इति
अर्धाहःपरिणयनीयायाः । उक्तं हि-“अहोरात्रमहः कृत्स्नं
दिनार्धं च प्रनीक्षते उत्तमा मध्यमा एस्वा स्नेहमात्रा
जरां प्रति” (सू. अ. १३.) इति । सुधृतेनापि
वस्तिपणमुक्तः यथा-अनुवाकने “तस्यापि विकल्पोऽर्धा-
र्धमात्रावहृष्टोऽरिहायो मात्रावस्तिः (सू. चि. ३५) इति,
अनेन च माध्वपलमानो मात्रावस्तिरुक्तो भवति; तत्र हि
पट्पलः स्नेहवस्तिरुक्तः, अनुवासनं तु विपलम् ।

मात्राशी-सू. ५-३. मात्रां मात्रावद्वनमशितुं भोक्तुम्
शीलं. यस्यासौ मात्राशी, यदि वा मात्राया अशितुं
भोक्तुम् शीलं यस्य स तथा ।

माधुतैलिकवस्तिः-सि. ७-२०. मधुतैलाभ्यां
रुतो वस्तिः ।

माधुर्यम्-चि. १-१४. मधुरत्वम् ।

मध्वीकम्-सू. २७-१८८. मधुप्रधानम् ।

मानसः-सू. ११-४५. मनसि भवः ।

मारुतः-सू. १-५९. वायुः ।

मारुतनिग्रहः-सि. ३-४१ वातविबन्धः ।

मारुताशयः-चि. २१-४६. पकाशयाधःशरीरम् ।

मार्गशुद्धिः-चि. ५-६०. स्रोतःशोधनम् ।

मार्गसंरोधः-चि. २९-१५५ स्रोतोऽवरोधः ।

मार्दवम्-सू. १८-५०. मृदुता ।

मार्द्वीकम्-चि. २२-३४. मृद्वीकारसकृत् मयम् ।

मांसम्-सू. २८-४. रज्जवधालुविशेषः ।

मांसलः-सि. ५-६. अतिपुष्टमांसघातुः ।

मांसवाहीनि स्रोतांसि-चि. ५-८. मांसवहानि
स्रोतांसि ।

मांससारः-चि. ८-१०५. मांसमेव सारः उत्कृष्टः
विशुद्धतरो घातुः यस्मिन्वः ।

मिथ्याचारः-चि. ३०-८. असम्यगाहाराचारः ।

मिथ्यायोगः-सू. १-५४. रूपादीनां विरुद्धयोगः ।
(चै. श.)

मिन्मिनः-शा. ३-१५. सायुनासिकाग्न्याररः ।

मुक्तः-शा. ५-२२. प्राप्तमोक्षः । चात्मनः करुणा-
भावाद्भिन्नमण्युपलभ्यते । स सर्वकरुणायोगान्मुक्तद्वयमिधीयते ॥

मुष्कः-सि. ९-४. अण्डकोपः ।

मुष्टिः-चि. १३-१२१. पलम् ।

मूकः-चि. २४-६३. अवाक् ।

मूकत्वम्-चि. ३-१०८. मन्दवचनत्वम्, अवच-
नता वा ।

मूढगर्भः-चि. २३-८६. जडगर्भः(श.क.) । मूढो निरुद्ध-
गतिः । तदुक्तं सर्वविषयसंपूर्णो मनोबुद्ध्यादिसंयुतः । विशुण्णपान-
संमदो मूढगर्भोऽभिधीयते” इति । (सू. नि. ८-१. उल्हणाः)

तमेव कदाचिद्विद्वत्सम्यगागतमपत्यपयमनुप्राप्तमनिरक्ष्यमानं-
विगुणापानसंमोहितं गर्भं मूढगर्भमित्याचक्षते (सु. नि. ८-३.)

मूढचेताः-चि. ९-७. उन्मत्तः ।

मूत्रग्रहः-चि. ६-१७. स्तोत्रं स्तोत्रं सफेनम्
कृच्छ्रान्मूत्रं करोति यः । तस्य वातसमुत्पन्तु विद्यान्मूत्रग्रहं
बुधः ॥ (वै. श.)

मूत्रम्-इ. १-१३. आहारस्य सारहीनमलद्रवः, वस्ति-
पूर्णविक्लेदकन्मूत्रम् ।

मूत्रवाहिन्यः नाड्यः-सि. ९-४. पक्षाशयगतास्त्र
नाड्यो मूत्रवहास्तु याः । तर्पयन्ति सदा मूत्रं सरितः सागरं यथा ।
सूक्ष्मत्वान्नोपलभ्यन्ते मुद्यान्यासां सद्वत्तः (सु. नि. ३-२९३).

मूत्रवाहीनि स्रोतांसि- वि. ५-८. मूत्रवहा नाड्यः

मूत्रविरजनीयः-सु. ४-१५/३४. मूत्रस्य विरजनं
करोति इति । चतुर्विंशो महाकषायः ।

मूत्रविरचनीयः-सु. ४-१५ । ३५. मूत्रस्य विरेचनं
करोति इति पञ्चविंशो महाकषायः ।

मूत्रसंग्रहणीयः-सु. ४-१५ । ३३. मूत्रस्य संग्र-
हणं करोति इति । त्रयविंशो महाकषायः ।

मूत्रस्रोतः-सि. ९-४३. क्षेफवि स्थितो मूत्रमार्गः ।

मूत्राधारः-सि. ९-४. मूत्रं धारयतीति, मूत्राशय
इत्यर्थः; वस्तिः ।

मूत्राशयः-चि. २६-४२ मूत्राधारः, वस्तिः ।

मूच्छा-सि. ३-२१. संमोहः ।

मूच्छायः-चि. ४-२६. मूच्छा ।

मूर्तिः-शा. ४-१२. काठिन्यम् ।

मूर्धविरेचनम्-सु. ५-२७. चि. ३-१७४.
शिरोविरेचनम् ।

मृत्युः-चि. ३-१३. मृत्युकारणत्वान्मृत्युर्वै एवोच्यते ।

मृत्स्नम्-चि-१-३ । ५६. मृत्तणम् ।

मृदितः-चि. ४-७७. काण्ठीकृतः ।

मृदुः-सु. १२-७, सु. २७-२१७. कठिनविपरीतः,
दाक्वविपरीतः ।

मृदु औषधम्-क. १२-५६. अतीक्ष्णम् औषधम् ।

मृदुकोष्ठः-सु. १३-७, क. ७-८. कोमलकोष्ठः ।

मृदुविरेचनम्-सु. २५-४० अतीक्ष्णविरेचनम् ।

मृदुवीर्यम्-सि. ११-५. अतीक्ष्णवीर्यम् ।

मृदुभेदपाकः-क. १२-१०२, १०३. अतीक्ष्णस्नेह-
पाकः; तुल्ये क्लृप्तेन नियमि मेपजानां मृदुः स्मृतः ।

मृद्वीक्रासवः-सु. २७-१८८. द्राक्षासवः ।

मेढ्रम्-इ. ३-५. शिरः, लिङ्गम् ।

मेदः-सु. २१-९, चि. १५-१६ शरीरस्थचतुर्थघातुः
(वै. श.) सर्वभूतानामुदरेस्थिषु च स्थितः शरीरगतः स्नेह-
विशेषः ।

मेदकः-चि. ३-२६७. जगलः ।

मेदःसारः-चि. ८-१०६. मेदः एव सारः उक्तः
विशिष्टतरो घातुः यस्मिन् सः; मेरस्ती ।

मेदुरः-सि. १-३६. मेदस्ती ।

मेदोवाहीनि स्रोतांसि-चि. ५-८. मेदोवहा नाड्यः ।

मेघम्-चि. ३-३०५, १५-२३३. मेदुरम्, मेदो-
जनकं वा ।

मेघा-सु. २७-३५०, धारणावती घीः ।

मेघ्यम्-सु. १-१०७. पवित्रम् ।

मेहः-चि. ६-३. मेहति क्षरति शुक्रादि अनेनेति । (श. क.)

मेहनम्-सु. ७-६. शिरः, लिङ्गम् ।

मैथुनधर्मः-शा. ३-४/२. व्यवायः ।

मैत्रेयम्-सू. २७-१८७. शासवस्य सुरायाश्च द्वयोरे-
कत्र भाजने । सन्धानं तद्विज्ञानीयान् मैत्रेयमुभयाभयम् ॥

मोक्षः-सू. १-१५. संसारविमोक्षः । मोक्षो
रजस्तमोऽभावात् बलवत्कर्मसंक्षयात् । विद्योगः सर्वसंयोगै-
रपुनर्भव उच्यते । (च. शा. १-१४२.)

मोदकः-क. १-२३. वटकः ।

मोरटम्-सू. २७-२३४. पीयूषः सद्यःप्रसूतायाः गोः
क्षीरं सप्तहं यावत् । तदेव सप्ताहात् परतः यावत्
प्रसन्नतां न गच्छति तावत् मोरटम् इत्युच्यते । वचनं च-
क्षीरं सद्यः प्रसूतायाः पीयूषमिति संक्षिप्तम् । सप्तरात्रात्
परं क्षीरं प्रसद्यं न च मोरटम् । इति । विनष्टक्षीरभवं
मत्तु मोरटमिति जेजटः ।

मोहः-शा. ७-१९. अहं स्थिरशरीरी एको, ममेद-
सुपकारकं भवेदमपकारकं इत्यादिरूपः मोहः ।

मोहः-चि. २३-७४. संज्ञाव्याकुलता संज्ञानाशो वा ।

मौलम्-चि. २३-१७. मूले भवम्, तत्र जातम्
वा; मूलजम् ।

म्लाना-सू. १७-६५. गतविभवा, नष्टकातिः,
स्थितिहीनता ।

यकृत्-वि. ५-८. दक्षिणकुक्षेरधास्थशरीरावयवविशेषः
(वे. शा.) घातखण्डः ।

यक्ष्मा-नि. १-५. ज्वरः यक्ष्मशब्देन च राजयक्ष्म-
वदनेकरोगयुक्तत्वं विचारणां दर्शयति ।

यक्ष्मा-चि. ८-७. राजयक्ष्मा ।

यद्रोपवीतप्रतिमाः-चि. १२-९१. यद्रोपवीत-
व्याप्यस्थानमाश्रयापकाः ।

यन्त्रम्-सू. १२-८. सन्धयः ।

यन्त्रम्-द. १२-४५. धिरास्त्राद्यादिरूपम् ।

यमकम्-चि. १९-३६. घृततैले ।

यवागूः-चि. २६-१५५. उचितान्नचतुर्गुणतण्डुलचूर्ण-

कृतपट्टगुणवारिपक्वा बहुसिक्वा उष्णिका (वे. शा.)

यवाग्रजम्-चि. ५-९६. यवशारः ।

यवाग्वादिक्मः-वि. ७-१९. संसर्जनकमः । अथ
द्वितीये तृतीये चाक्षकाले पुराणानां लोहितशालितण्डुला
स्ववह्निषा मण्डपूर्वा सुखोष्णा यवागूः यवाम्रिफलं, चतुर्थे
पञ्चमे षष्ठे चाक्षकाले तथाविधानामेव शालितण्डुलानामुत्तिष्ठिषा
विलेपी उष्णोदकद्वितीया अरुनेहलवणा अल्परुनेहलवणा
वा, सप्तमे अष्टमे नवमे चान्नकाले तथाविधानामेव शालीनां
द्विप्रसृतं सुखिषण्णोदकानुपानं तनुना तनुमेहलवणोपपन्नेन
सुद्वयपेण, दशमे एकादशे द्वादशे चान्नकाले लावकपिडालादी-
नामन्यतमस्य मांसरसेनौदकलवणैश्च नातिसारवता भोज्यम् ।

यापनम्-चि. ३-३०२. यापनावस्तिः ।

यापनावस्त्वयः-चि. १२-१६ । १. आयुषः यापनं
दीर्घकालानुवर्तनं कुर्वन्ति इति यापनावस्त्वयः ।

याप्यम्-सू. १०-९, १०-३७. असाध्यभेदः ।
याप्यं त्वनुपक्रमं न भवति, यापनाकर्तृत्वेन किमिच्छ-
त्वात् । शेषवादायुषो याप्यमसाध्यं पध्यसेवया । लब्धाल्प-
सुखमल्पेन हेतुनाऽऽगु प्रवर्तकम् ॥

यायावराः-चि. १/४-३. सर्वदा गमनशीलाः नैकव-
स्यायिनः ।

यावकः-चि. १-३ । २७. यवान्नम् ।

युक्तिः-सू. ११-७. युधिः पश्यति या भावान् बहु-
कारणयोगजान् । युक्तिश्चकाला सा श्रेया त्रिवर्गः साध्यते यया ॥
(च. सू. ११-२५) बहुकारणयोगो बहुपपत्तियोगः जनिधायी
ज्ञानार्थे, तेन बहुपपत्तियोगज्ञायमानानर्थान् या युधिः
पश्यति ऊदलक्षणा सा युक्तिरिति प्रमाणसहायीभूता । एवमनेन
अवितव्यमित्येकैरूप ऊहोऽत्र युक्तिशब्देनाभिधीयते; सा च परमा-
र्यतोऽप्रमाणभूतापि वस्तुपरिच्छेदे प्रमाणसहायत्वेन व्याप्रिय-
माणत्वात्, तथा तथैव ऊदरूपया प्रागे लोकानां व्यवहारादिह
प्रमाणत्वेनोक्ता । (चक्रः)

युक्तिः-सू. २६-२९, ३१. युक्तिध्वयोजना या तु
युज्यते (३१) । युक्तिध्वेत्यादौ योजना दोषावपेक्षया भेषजस्य

क्षणीचीनरूपना । अत एवोर्ध्वं या तु युज्यते; या कल्प-
ना यौगिकी भवति सा तु युक्तिरुच्यते अयौगिकी तु
कल्पनापि सती युक्तिर्नोच्यते पुत्रोऽप्यपुत्रवत् । (चक्रः)

युक्तिः-वि. ४-४. सम्बन्धः अविनाभाव इत्यर्थः ।
तेनाविनाभावजं परोक्षज्ञानमनुमानमित्यर्थः (चक्रः)

युक्तिव्यपाश्रयम्-सू. १-५८, ११-५४. युक्तिः
योजना; शरीरमेवजयोः द्वितो यो योगः तदपेक्षे संशोधन-
संशाननादि युक्तिव्यपाश्रयमुच्यते (चक्रः) । युक्तिव्यपाश्रय-
पुनराहारौषधद्रव्याणां योजना ।

युगपत्-शा. ६-६. एककालम्

यूक्ताः-वि. ७-१०. बालकमयः (श. क.) केशरमधु-
लोमपक्ष्मवाघः सु जाता अणवः बहुपादाः कृष्णाः शुक्लाः वा
कृतमयः ।

यूषः-वि. २६-२९. सुष्ठुमुद्गदलानान्तु पलैकेन
विपाचितः । पूनापनीतविदलः तदुर्ध्वः कृताकृतः ॥ (वै. श.)

योगः-शा. १-१३७-१३९. योगे मोक्षे च सर्वासां
वेदानामवर्तनम् । मोक्षे निश्चितिर्निःशेषा योगो मोक्ष-
प्रवर्तकः ॥ आत्मेन्द्रियमनोऽर्धाणां सन्निकर्षात् प्रवर्तते । सुख-
दुःखमनारम्भादात्मस्ये मनसि स्थिरे ॥ निवर्तते तदुभयं वशित्वं
चोपजायते । सशरीरस्य योगज्ञास्त य'गमृषय' विदुः ॥

मोक्ष आत्यन्तिक शरीरायुच्छेद । निःशेषेति न
पुनर्भवति । एतेन, यगे निश्चिता वेदाना पुनर्भवतीति
सूचयति । मोक्षप्रवर्तक इति मो उकारणम् । (चक्रः)

योगः-सि. ६-३१. योगः सम्बन्धं प्रवृत्तिः स्यात् ।

योगः-सि. ६-४१. योगो नाम योजना, व्यस्तानां-
पदानामेकीकरणम् (चक्रः)

योगवाहि-सू. २७-२४९. यस्याज्ञानारसवीर्यादिभ्यः
पुष्पेभ्य उत्पन्नं तन्मधु तेनानभिव्यक्तनानाशक्तिरमेव । ततश्च
येन द्रव्येण वामनीयेन वाऽऽस्थापनीयेन वा नृव्येण कार्यान्तर-
कारणेण वा युज्यते तस्यैव कर्म करोति, समानासुकारिद्र-
व्यप्रवाहितशक्तित्वादिति भावः । चकारोऽत्र हेत्वन्तर-
समुच्चये, तेन प्रभावाच्चैति बोद्धव्यम् । तेन सत्यपि, नानौ-
पधिसेभवत्वे प्रभावान्न क्षीरमयादयो योगवाहिनः ; तथा,

अनानात्मका अपि शिलाजलतैलादयो योगवाहिनो भवन्ति ।
(चक्रः) गृह्णाति योगवाहि द्रव्यं संसर्गिवस्तुगुणान् । पच्यमानं
यथैतन्मधुजलतैलाज्यसूतलौहादि ॥ (व. द.)

योनिः-शा. १-६. जातिः ।

योनिः-वि. ३०-१३३. कारणम् ।

योनिः-वि. ४-६. वातादयः ।

योनिः-वि. २३-३. अधिष्ठानम् ।

योनिदोषः-वि. ३०-१५. अपत्यपथरोगः ।

योनिशूलम्-जि. ५-७५. योनिरोगविशेषः ।

रक्तपित्तम्-वि. ४-४. रोगभेदः ।

रक्तवस्तिः-सि. ६-८३. रक्तेन वस्तिः ।

रक्तम्-वि. १५-१६. रुधिरम् ।

रक्तमोक्षः-सि. ९-२४. शृङ्गालावृजलौकोभिः
सिराव्यधेन वा रक्तावसेचनम् ।

रक्तवाहि अर्शः-वि. ७-१४८. रुधिरस्राविगुदक्रीलः ।

रक्तवाहिन्यः घमन्यः-वि. ७-११. रुधिरवाहिन्यः
नाड्यः ।

रक्तवाहिस्रोतांसि-वि. ५-२४. रुधिरवाहिन्यः
नाड्यः ।

रक्तविमोक्षणम्-वि. १२-१००. शृङ्गालावृजलौ-
कोभिः विगव्यधेन वा रक्तावसेचनम् ।

रक्तसारः-वि. ८-१०४. रक्तमेव सारः उत्कृष्टः
विशुद्धतो धातुः यस्मिन्सः ।

रक्तावसेकः-वि. ३-२९० रक्तमोक्षः ।

रक्तावसेचनम्-वि. ३-२८८. रक्तमोक्षणम् ।

रजः-शा. २-३४; वि. ३०-२५. आर्तवम् ।

रजः-सू. १-५७. रजोगुणः ।

रजः-सू. २१-२३. पूर्णम् ।

रजस्वला-वि. ३०-१६५. आर्तवयुक्ता, पुष्पवती ।

रजोदोषः-वि. ३०-९५. आर्तवविकारः ।

रसः-सू. १-६४, २६-२८, २७-७०. रसनेन्द्रियप्राप्तो गुणो रसः । यं पचानामिन्द्रियार्थानामन्यतमे जिह्वाविषयं भावमाचक्षते कुशलाः स पुनरुदकादनन्यः ।

रसः-सि. ३-३५. कायः ।

रसः-वि. १५-१६. रसवातुः, आद्यो घातुः ।

रसः-वि. ८-१३३. सि. १२-१९ स्वरसः ।

रसः-सू. २६-६६. रसो निपाते द्रव्याणाम् । निपाते इति रसनाग्रे; रसनेन्द्रियाण्यन्तिमत्वं रसत्वम् (द्र. स.)

रसः-सू. २८-४. आहारप्रसादाख्यः ।

रसः-वि. ८-१३२. मांसरसः ।

रसक्रिया-वि. २६-२०२. घनीभूतरसस्य संज्ञा, कायादेर्यत् पुनः पाकाद् घनत्वं सा रसक्रिया (व. द.)

रसनम्-इ. १-३. जिह्वेन्द्रियम् ।

रसना-सू. १-६४. जिह्वा ।

रसवाहीनि स्त्रोतांसि-वि. ५-८. हृदयरूपदशधमनीनां शाखाप्रशाखाः ।

रसाञ्जनम्-सू. ५-१५. दावीकायसमं स्त्रीं पादं पक्ष्वा यदा घनम् । तदा रसाञ्जनख्यं तत् मेघगोः परमं हितम् ॥ (वै. श.)

रसायनविधिः-वि. १-१/१४. जराव्याधिनाशनविधिः ।

रसायनम्-सू. ७-४८. रसायनन्तु तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनम् । यथा मृता रुदन्ती च गुग्गुलुश्च हरीतकी (व. द.) दीर्घमायुः स्मृतिं मेधामारोग्यं तर्पणं वयः । प्रभावर्णस्वरौदार्यं देहेन्द्रियफलं परम् ॥ वाक्लिङ्गिप्रणतिं कान्तिं लभते ना रसायनात् । सामोपायो हि

शस्त्रानां रसादीनां रसायनम् ॥

रसायनी-वि. ५-९ रसः अयते गच्छति यथा सा रसायनी, धमनी, नाडी, सिरा, स्त्रोतः ।

रसाला-वि. २-२/२६. सचातुर्गतकाजाभि सगुडा-र्द्रकनागरम् । रसाला स्याच्छिखरिणी सुवृष्टं सघरं दधि ॥

राजयक्ष्मा-नि. ६-१२; वि. ८-९. तं सर्वरोगाणां कष्टतमत्वाद् राजयक्ष्माणमाचक्षते निषजः । यस्माद्वा पूर्वं साक्षीद्वगवतः सोमस्योद्विजस्य तस्माद्वा जयक्ष्मेति । यदा कष्टतमत्वात्तदा 'राजेव यक्ष्मा राजयक्ष्मेति' निरुक्तिर्यौद्धव्या । चन्द्रराजस्येति वचनाद् राजसंज्ञार्थं सोमस्य दर्शयति; ततश्च "राज्ञो यक्ष्मा राजयक्ष्मा" इति निरुक्तिर्भवति । (चक्रः)

राजसं सत्त्वम्-शा. ४-३६. रजोगुणभूयिष्ठं मनः राजसं सत्त्वमाख्यातं रोषाशतवात् ।

राजाहः-सू. ९-१९. हेतौ लिङ्गे प्रशमने रोगाणामपुनर्भवे । ज्ञानं चतुर्विधं यस्य स राजाहो भिषकमः ॥

राजी-इ. ११-१३. रेखा, पङ्क्तिः ।

राजी-वि. १३-१९. श्यवा सिरा ।

राशिः-वि. १-२२/४. राशिस्तु सर्वग्रहपरिमहो मानामात्रफलविनिश्चयार्थः । तत्र सर्वस्याहारस्य प्रमाणग्रहणमेकपिण्डेन सर्वग्रहः, परिग्रहः पुनः प्रमाणग्रहणमेकैकश्येनाहारद्रव्याणाम् । सर्वस्य हि ग्रहः सर्वग्रहः सर्वतश्च ग्रहः परिग्रह उच्यते । सर्वतः इति प्रत्येकावयवत इत्यर्थः । (चक्रः)

राक्षसम् (सत्त्वम्)-शा. ४-३८. अमर्षिणमनुष्यन्धकोपं छिद्रप्रहारिणं क्रूरमाहारातिमात्ररुचिमाभिपप्रियतमं खण्णायामहुलमीर्ज्युं राक्षसं विधात् ॥

रुग्णः-धि. १-३२. सन्धिमुक्तः ।

रुचिकरम्-सू. २५-४०. रुच्युत्पादकम् ।

रुजा-वि. २१-३९. पीडा ।

रुचिरम्-इ. ९-२१. रक्तम् ।

रुक्मार्गः-सि. ७-२१. निवारिताधोमार्गः

रूपम्-नि. १-९. तत्र लिङ्गमाकृतिर्लक्षणं चिह्नं
संस्थानं व्यञ्जनं रूपमित्यनर्थान्तरम् ।

रुक्षः-सू. २०-१९. रुक्षसद्विपरीतः स्यात् विशेषात्
स्तम्भनः खरः। (व. द.) तद्विपरीतः स्निग्धविपरीतः ।

रुक्षः-सू. १७-३०. रुक्षं समीरणकरं परं कफहरं मतम् ।

रुक्षणम्-सू. २२-१०. रौक्षं खरत्वं वैशद्यं यत्
कुर्यादिति रुक्षणम् ॥

रेचनम्-सि. ९-९२. विरेचनम् । विपक्वं यदपक्वं
वा मलादि द्रवतां नयेत् । रेचयत्यपि तज्ज्ञेयं रेचनं
त्रिवृता यथा ॥ (व. द.)

रेतः-चि. ३०-१४६. शुक्रम् ।

रेतोदः-सि. ३-४२. रेतः वीर्यम् ददाति यः सः शुक्र-
जननः शुक्रवर्धनः वा ।

रेतोदोषः-चि. ३०-१४८. शुक्रदोषः ।

रेतोवहाः सिराः-चि. ३०-१३८. शुक्रवहानि स्रोतांसि ।

रोगः-नि. १-५; चि. ३-११. तत्र व्याधिरामयो गद
आतङ्को यक्ष्मा ज्वरो विकारो रोग इत्यनर्थान्तरम्; ज्वरो
विकारो रोगश्च व्याधिरातङ्ग एव च । एकोऽर्थो नामपर्याये-
र्विविधैरभिधीयते ॥

रोगानीकम्-चि. ६-१ रोगसमूहः ।

रोगी-चि. २२-६१. रोगयुक्तः

रोगेशः चि. ८-११३. राजयक्ष्मा ।

रोचनम्-चि. १-१८ रुचिकर्तुं ।

रोपणः-चि. २९-१६२. रोहणः ।

रोम-चि. २३-२३०. लोम, सूक्ष्मबालः, त्वक्छिद्रे
जातः सूक्ष्मकेशः ।

रोमकृपाः-चि. ४-१७. लोमविराणि ।

रोमहर्षः-नि. १-२१. रोमाश्वः ।

लक्षणम्-नि. १-८. लिङ्गम् ।

लक्षणम्-इ. ३-४. मरणलक्षणम् ।

लक्षणनिमित्ता (चिक्रितिः)-इ. १-७ । १. तत्र
लक्षणनिमित्ता नाम सा यस्याः शरीरे लक्षणान्येव हेतुभूतानि
भवन्ति देवात् । हेतुभूतानीति हेतुसदृशानि । तेन दैवमेव
नखरेखापद्मादिसमुद्दिष्टोक्तलक्षणयुक्ते शरीरे राज्यधन-
गमनवधवन्धनादिरूपविकृतिप्राप्तौ हेतुः । लक्षणानि तु
दैवनिमित्तानि बोधकमात्राणि, अतएव दैवादित्युक्तम्; दैवं च
प्राक्तनं कर्मोच्यते (चक्रः)

लक्ष्यनिमित्ता (चिक्रितिः)-इ. १-७ । २. लक्ष्यनि-
मित्ता तु सा यस्या उपलभ्यते निमित्तं यथोक्तं निदानेषु ।

लघुः-सू. १-५९. लघुस्तद्विपरीतः स्याल्लेखनो रोपण-
स्तथा (व. द.) तद्विपरीतः गुरुविपरीतः ।

लङ्घनम्-सू. २२-९, १८. यत् किञ्चिन्नापवकरं देहे
तल्लङ्घनं स्पष्टम् ॥ चतुष्प्रकारा संशुद्धिः पिपासा मास्तातपौ ।
पाचनान्युपवासश्च व्यायामश्चेति लङ्घनम् ॥

लङ्घनम्-चि. ३-१४०, १५-७५. उपवासः, अनशनम् ।

ललाटम्-इ. ३-५. मालम्

लवणः-सू. १-६५, २६-७६ रसविशेषः, तोयानि-
गुणबाहुल्यात् लवणः ।

लवणम्-सू. १-७० सैन्धवादि ।

लवणस्कन्धः-चि. ८-१४१ लवणरसद्रव्यसमूहः ।

लसीका-शा. ७-१५. त्वगन्तरे म्रणमतमुदकम् ।

लाघवम्-चि. १-१४ लघुता

लाघवम्-सि. ३-१९ शीघ्रक्रियता ।

लाला-चि. ६-९ मुखलावः ।

लिङ्गम्-वि. १-६ प्रादुर्भूतलक्षणं पुनर्लिङ्गम्, व्यापेः स्वरूपं लिङ्गयते ज्ञायते अनेन इति लिङ्गम्, आकृतिलक्षणं, विहं, संस्थानं व्यञ्जनं रूपमित्यनयान्तरम् ।

लिङ्गप्राणम्-शा. १-६२. अनुमानप्राणम् ।

लीनम्-सि. १-८. श्लिष्टम् ।

लेखनम्-चि. २३-१७१. गणलेखनम् ।

लेखनीयः-चि. २३-१७१. तृतीयो महाकपा लिखति इति लेखनीयः,

लेपः-चि. ७-१२२. लिप्यति इति लेपः । लेपस्य द्वौ भेदौ-आलेपः प्रदेहश्च । तगोरालेपः आर्द्रमादिष्वर्चमवत् शीतलः तनुर्विशोषी च । प्रदेहः आर्द्रः घनः चण्डश्चेति ।

लेपज्वरः-इ. ८-२४. स्त्रल्पस्त्रीतयुक्तः कफज्वरः ।

लेपनम्-सू. २५-४०. लेपः ।

लेलीनकः-चि. ७-७०. पापाणभेद औत्तरापथिकः, उच्यते दि निघण्टौ “आसीद्देत्यो महायाहुर्लेलिहानो महासुरः । योजनानां त्रयस्त्रिंशत् कायेनाच्छाद्य तिष्ठति । विष्णुचक्रेण संछिन्नो पपात घराणीतले । वसा तस्य समाख्याता के शीतक इति क्षितौ” इत्यादि ।

लेहः-चि. ६-४७. लिप्यते इति लेहः, नातिद्रवो नातिघन औषधकल्पभेदः ।

लोम-इ. ३-६. रोम ।

लामकूपः-सू. २८-४. रोमकूपः ।

लोमहर्षः-चि. ७-११. रोमहर्षः ।

लौकिकः-सू. २८-२८. अपरीक्षकः, रजोमोहावृतात्मा, अययार्थदर्शी ।

लौल्यम्-सू. २५-४०. चाञ्चल्यम्, चलविश्रान्ता, लोष्ठपता ।

वर्धनम्-इ. ८-१७. मुखम् ।

वक्त्री-शा. २-३०. मातुर्व्यवायप्रतिधेन वक्त्री स्याद्बीजदौर्बल्यतया पितुश्च । मातुर्व्यवायप्रतिधेनेति व्यवाय-काले मातुर्व्यवायानिच्छा विषमाङ्गस्यासौ वा व्यवायप्रतिधेः तेन यस्य शुक्रं गर्भाशयं नियमाङ्गोपेति स वक्त्रीत्युच्यते । बीजदौर्बल्यतया च पितुर्वक्त्री स्यादिति योजना । अत्र दुर्बलस्य कर्म दौर्बल्यं तस्य भावो दौर्बल्यता तेन पितुर्वक्त्री अस्य दुर्बलक्रियतयेत्यर्थः । (चक्रः)

वह्नुणः-इ. ३-५. ऊरुघन्धिः । (श. क.)

वदनम्-इ. १-१२. मुखम् ।

वनस्पतिः-सू. १-७१. फलैर्जनस्पतिः । फलैर्जनस्पतिरिति पिना पुष्पैः फलैर्युक्ता वटोदुम्बरादयः । यदुक्तं हारीते “तेषामपुष्पाः फलिनो वनस्पतय इति स्मृताः” इति । (चक्रः)

वपावहनम्-चि. ५-८. भेदः स्थानम् । वपा उदरस्था स्निग्धवर्तिका यामाहुर्जनास्तैलवर्तिकेति ।

वमनम्-सू. १-८४ छर्दनम्, तत्र दोषहरणपूर्वभागं वमनसंज्ञकम् । १७-१७

वमनोपगः-सू. ४-१३ । १३. वमने छर्दनक्रियायां सहायत्वेनोपगच्छतीति वमनोपगः । त्रयोविंशतितमो महाकपायः ।

वमिः-सि. ६-५३ प्रच्छदिका । (श. क.)

वयः-चि. १-३. आयुषोऽवस्थाविभागः, बाल्यादि ।

वयः-चि. ८-१२२ वयस्तथेति कालप्रमाणविशेषापेक्षिणी हि शरीरावस्था वयोऽभिधीयते ।

वयःस्थापनः-सू. ४-१८ । ५० वयस्तद्वयं स्थापयति इति । (व. द.) पद्याशक्तमो महाकपायः ।

वर्चोभेदः-चि. ८-१७. अतिपुरीषप्रवृत्तिः ।

वर्चोवाहीनि-चि. ५-२१, वर्चः पुरीषं वहन्ति इति वर्चोवाहीनि

वर्जनीयः-सि. १-४. अविक्रियः ।

वर्ज्यम्-वि-३-३३३ निषिद्धम्, त्याज्यम् ।

वाक्त्रेयु पदमकृतं गम्यमानत्वा पूर्णम् ।

वर्णः-इ. १-३. श्वेतरकादिवर्णः; वर्णशब्देन च वर्णग्रहः-
चरिताश्चक्षुर्मात्रा रीक्ष्यादयोऽपि गृह्यन्ते, अत एव वर्ण-
प्रस्ताव एव वक्ष्यति-यत् "वर्णग्रहणेन गलातिहर्षरीक्ष्यस्नेहा
न्याख्याताः" इति

वर्णकः-वि. ७-१२. वर्णकरमालेपनम्, रजनचूर्णम् ।

वर्णनाशः-वि. ४-२७. रङ्गनाशः ।

वर्ण्यः-सू. ४-१० । ८. वर्णाय हितः; अष्टमो महाकपायः ।

वर्तः-सू. २०-१२. वलुलीकरणम् ।

वर्तिः-सू. ५-२३. भूस्वर्तिः ।

वर्तिः-सू. ७-९; वि. २-१३. फलवर्तिः-पिष्टे-
मैदनफलदिभिर्वाकाराऽङ्गुष्ठमात्रा शलाकाकारेण वर्तिता
औषधपिष्टिः ।

वर्तिकाः-वि. २-२-१२. वर्त्याकाराः भक्ष्याः ।

वर्तिक्रिया-क १-१. वर्तिक्रियायां चतुर्गुणेन कालेन
पाकाद्वर्त्याकारता कर्तव्या ।

वर्त्म-इ. ८-५. नयनगोलकावरकं निमेषोन्मेषाश्रयं
पटलद्वयं वर्त्म उच्यते ।

वली-वि. ३-२५. शुद्धवली, त्वक्सङ्कोचजन्यो
निम्नोन्नतरूपो मङ्गीविशेषः ।

वर्ती-शा. १-७. स्वेच्छावीनप्रवृत्तिः ।

वक्ष्या-वि. २-१ । ८. आयत्ता ।

वखा-सू. १-६८. मांसप्रभवधातुविशेषः (श.क.)
शुद्धमांसस्य यः स्नेहः सा वखा परिकीर्तिता ॥ (सु. शा. ४)

वाक्प्रशः-सू. ३०-१७. तन्त्रमार्गं कात्स्न्येन
यथाभ्यासमुच्यमानं वाक्यस्यो अन्त्युक्तम् ।

वाक्यशेषः-वि. १२-४२. गलाघवायमाचार्येण

वाक्यार्थशः-सू. ३०-१८. बुद्ध्या सम्यगनुग्रविश्या-
र्थतत्त्वं वाग्मिभ्यामवसमासप्रतिज्ञाहेतुदाहरणोपनयानगमनयुक्ता-
भिनिविष्टादिष्वनुग्रहगम्यामिहच्यमानं वाक्यार्थसो भव-
त्युक्तम् ।

वाजीकरणम्-सू. ३०-२८; वि. २-४/५१. वाजी-
करणमिति अवाजिनं वाजिनं कुर्वन्त्यनेनेति वाजीकरणं, येन
वाज्यर्थं व्यज्यते स्त्रीषु शुक्रं तद्वामीकरणम् । अन्ये तु वाजो
वेगः प्रस्तावाच्छुक्रस्य, स विद्यते येषां ते वाजिनः ते क्रिय-
न्तेऽनेनेति वाजीकरणमित्याहुः । किंवा वाजः शुक्रं सोऽस्या
स्तीति वाजी अवाजी वाजी क्रियते येन तद्वामीकरणम् ।
किंवा वाजो मैथुनम् उक्तं हि हारीते "वाजो नाम
प्रकाशस्वात्तच्च मैथुनवर्धितम् । वाजीकरणं ज्ञानमिः पुंस्त्वमेव
प्रचक्षते" इति शिवदाससेनः । यस्माद् द्रव्याद् भवेत्स्त्रीषु
हर्षो वाजीकरं हि तत् । यथाश्वगन्धा मुबली शर्करा च
शतावरी ॥ (व. द.) येन नारीषु सामर्थ्यं वाजिवल्लभते नरः
मजेष्वाभ्यधिकं येन वामीकरणमेव तत् ॥

वाटय-वि. ५-९८. क्षुण्णशुक्रयवौदनः ।

वातः-सू. १-८८. वाति गच्छति इति वातः, सदा-
गतिः, समीरणः ।

वातकण्टकः-सू. १४-१३. गुल्फाश्रितो वातः; रुक्
पादे विषमे न्यस्ने श्रमाद्वा जायते तदा । वातेन गुल्फ-
माश्रित्य तमाहुर्वातकण्टकम् ॥ (अ. हं. नि. १५-५३)

वातयलानः-वि. २९-११. वातस्यावरणं बल-
मस्त्यस्मिन् शोणिते, इति वातबलासः ।

वातप्रकृतिः-वि. ६-१३. वातप्रधाना प्रकृतिः
स्वभावः यभ्य सः इति वातप्रकृतिः ।

वातयन्त्रम्-वि. २४-१५८. वायुसंचारार्थं यन्त्रम् ।

वातलः-वि. ५-६. वातदुष्टः ।

वातविकाराः-वि. ४-७. वातजनिता रोगविशेषाः ।

वातवेगः-वि. ३-२५. वायुवेगः ।

पातिकापण्डः-शा. २-१७. वाय्वमिदोपात्तं वृ- विगन्धः ।
पणौ तु यस्य नाशं गतौ स वातिरुपण्डः ।

वाद्यः-सू. २५-२७; वि. ८-२८. तत्र वाद्यो नाम स
यत् परेण सह शास्त्रपूर्वकं विष्टुष्य कथयति ।

वानस्पत्यः-सू. १-७१. “पुष्पैर्वानस्पत्यः फलैरपि”
इति पुष्पानन्तरं फलमात्र इत्यर्थः । (चक्रः)

वायुः-सू. १-५७. वातः ।

वारुणीमण्डः-वि. ५-९२. सुरामण्डः । (श. क.)

वारुण्याः प्रसादः-वि. ८-६९. सुराप्रसादः । (श. क.)

वार्तलक्षणम्-सू. २५-४०. आरोग्यलक्षणम् ।

वार्ता-शा. ४-३०. स्थाकृतिभूयिष्ठा अस्ती इति
स्त्रीदण्डविशेषः; असंघर्षलीलक्षणां वार्ता नामेति वार्ता-
संज्ञा शास्त्रममरुहम् । (चक्रः)

विकल्प-वि. १-३. समवेतानां पुनर्वर्षाणामंशा-
यलविकल्पः ।

विकल्पनम्-सि. १०-४४. पाक्षिकाभिधानं यथा-
“सारोदः वाऽयं कुशोदकं वा” (चि. अ. ६) इत्यादि ।

विकल्पना-सि. ११-२३. विशेषकल्पना ।

विकारः-सू. ९-४. धातुवैयम्भम् ।

विकासि-चि. २३-२४. हिंसनशीलं, विपूर्वो हि कसति
हिंसायः । विकासी विकमञ्जवं धातुबन्धान् विमोक्षयेत् ।
(व. द.) सन्निवृत्तस्तु शिथिलान् यत् करोति विकासि तत् ।
विशोऽगौजय धातुभ्यो यथा ऋमुकरोदौ ॥ (व. द.)

विकृतिः-इ. १-३. विकारः

विस्त्रेपः-चि. १-३०. वियोगः ।

विन्धः-सि. ३-११. विगतं प्रतिगन्धो यस्य सः

विगीतिः-चि. ६-४. विद्वद्वा गीतिः विगीतिः विद्व-
भाषणमित्यर्थः ।

विगुणः-सि. ९-३९. गुणवैपरीत्यविशिष्टः । (श. क.)

विष्टुष्यसंभाषा-वि. ८-१८. जल्पवितण्डारूपा संभाषा

विघातः-सि. ११-१७. प्रकोपकहेतुनाऽसंयन्धः ।

विचचिका-चि. ७-१३. क्षुद्रकुष्ठभेदः । तद्वक्ष्यन्-
राज्योऽतिकण्ड्ववर्तिहन् सख्क्षा भवन्ति गात्रेषु. विचचिका-
याम् । (सू. नि. ५-१३) । (वै. श.)

विचारः-सू. २६-९. विचारणा, द्रव्यान्तरसंयोगः ।

विचारणा-सू. १३-४. द्रव्यान्तरासंयुक्तस्नेहपानं
वर्जयित्वा स्नेहोपयोगः ।

विञ्जलम्-वि. ८-१६. विञ्जलम् ।

विज्ञानानि-इ. ९-२३. लक्षणानि, नयनादि-
वैकृतानि

विज्ञानम्-शा. १-४०. शास्त्रार्थज्ञानम् ।

विज्ञानम् सू. २५-७३. विज्ञायते अनेन इति
विज्ञानं लक्षणमित्यर्थः ।

चिद्-सि. ६-४५. पुरीषम् ।

चिद्भेदः-चि. ८-२६. पुरीषभेदः ।

वितण्डा-वि. ८-२८. जल्पविपर्ययो वितण्डा
वितण्डा नाम परपक्षे दोषवचनमात्रमेव ॥ परपक्षे दोषव-
चनमात्रमित्यनेन नस्वपक्षसाधनवचनं वैतण्डिकस्येति दर्शयति ।
(चक्रः)

वित्रामनम्-शा. ८-६४. भयदानम् ।

विद्वधिः-सू. १७-१५. दुष्टरफातिमात्रत्वात्

स वै श्रीं विदधते । ततः श्रीप्रविदाहित्वाद् विप्रधीत्य-
मिमीयते ॥

विदाहः-वि. २४-१४४. हृदये दाहः ।

विदाहि-सू. २७-२९३. विदाहि द्रव्यमुद्गार-
मन्त्रं कृपातिषा तृषाम् । इति दाहश्च जनयेत् पाकं गच्छति
तच्चिरान् ॥ (व. द.)

विधानम्-वि. १२-४३. विधानं नाम सूत्रकारश्च
विषयं वर्णयति; यथा-“ मलायनानि बाधन्ते दुष्टे
मन्त्राधिदैवैः इत्यत्र दुष्टिवादेन मलानां हीनत्वमधिकृत्य-
माचार्यगृहीतमाचार्यो वर्णयति- “मलवर्द्धिं गुह्यतया
लाघवान्मलसंक्षयम् । मलायनानां दुष्येत संगोत्सर्गा-
दतीव च” (सू. अ. ७) इति । (चक्रः)

विधारणम्-वि. ९-२९. वेगनितोषः ।

विनता-सू. १७-८९. अवगाढरुजाल्लेदा पृष्ठे वा
ऽप्युदरेऽपि वा । महती विनता नीला पिङ्का विनता
मता ॥

विनिमित्तानि-इ. ४-१७. विगतत्रिमित्तानि ।

विनिर्मध्य-सि. ६-७८. क्षोभयित्वा ।

विपत्-सू. २५-२९. वैगुण्यम् ।

विपर्ययः-सि. १२-४३. अपकृष्टात् प्रतीपोदाहरणम् ।

विपाकः-सू. २६-६६. विपाकः कर्मनिष्ठः । कर्म-
निष्ठयेति कर्मणो निष्ठा निष्पत्तिः कर्मनिष्ठा क्रियासमाप्तिः,
रसोपयोगे सति योऽन्त्याहारपरिणामकृतः कर्मविशेषः
कफशुक्राभिर्द्रव्यादिलक्षणः, तेन विपाको निश्चीयते ।
विपाकस्तु नित्यपरोक्षः, तत्कार्येणानुमीयते (चक्रः) । जाठरे-
णामिना योगाद् यद् यदेति रसान्तरम् । रसानां परि-
णामान्ते च विपाक इति स्पष्टः । (व. द.)

विपाटनम्-वि. १३-२५. दारणम् ।

विपादिका-वि. ७-२९. कृष्टभेदः

विप्लुतः-सि. ८-३. व्यापकः

विचद्-वि. २४-६३. विवन्धवान् ।

विचद्-द्रोषः-वि. ३-१०९. अत्र दोषशब्दो
विषदोपपदान्मले वर्तते । (चक्रः)

विचन्धः-सि. ४-४९. आनाहरीगः

विचंशः-सू. १५-१३. प्रातिलोम्येन गमनम् ।

विचंशः-सि. ६-३९. विपरीतप्रवृत्तिसामर्थ्यम् ।

विमलम्-सू. २७-११८. विमलम् ।

विमूर्छिताः-सि. ९-७१. मत्स्थिताः ।

वियोगः-सू. ११-१२. भूतानामात्मनो विभोगः,
मरणम् ।

वियोनिः-इ. २-१६. निर्हेतुकः ।

विरजनीयः-सू. २५-४०. विरजनं दोषसम्बन्ध-
निरासं करोति इति सः ।

विरसः-इ. २-२१. अनिष्टरसः ।

विरसाशनम्-वि. २-८ विपरीत आहारः ।

विरुद्धयोनयः-इ. ६-२२. परस्परविरुद्धधर्माणः ।

विरूक्षणम्-वि. ५-१८. रूक्षीकरणम्

विरूक्षस्वेदः-सि. ७-१६. स्नेहरहितः स्वेदः ।

विरेकः-सू. ७-१५. मलभेदः । (श. क.)

विरेचनम्-सू. १-८०. विरेकः ।

विरेचनोपगानि-सू. ४-१३ । २४ इमानि द्रव्याणि
विरेचनक्रियायां सहायत्वेनोपगच्छन्ति ।

विरुद्धितः-सि. ६-५७. कृतलङ्घनः ।

विलयेत्-वि. १२-८२. विस्लापनं कुर्यात् । विस्ला-
पनम् अत्रुल्यादिमर्दनेन शोफविलयनम् । (सु. चि. अ.
१-२२. ब्रह्मणः)

विलेपनम्-च. ६-५० गात्रानुलेपनम् ।

विलेपिका-सु. २७-२५१ विरलद्रवा यवान् ।

विलेपी-नि. ४-५ यवान् ।

विवर्णम्-इ. ४-१७ विरुद्धवर्णम्

विघृता-इ. ८-११, निर्गता ।

विशदः-सु. २६-११ विच्छिन्नविपरीतः । विशदो
विपरीतोऽस्मात् क्लेदाचूषणरोपणः । (व. क.)

विशिरा-इ. ७-५, शिरोविहृता ।

विशुद्धं शोणितम्-सु. २४-२३, २४ तपनीयेन्द्रगोपा-
नं पद्मालककसकिभम् । गुणाफलसवर्णम् विशुद्धं विद्धि शोणितम् ॥

विशेषः-सु. १-२८-४४, ४५ विशिष्यते व्यावर्तत
इति विशेषः पृथक्प्रकृतः ।

विशोधनम्-सु. २७-१३१ विशुद्धिकारकम् ।

विश्लेषः-इ. १२-५१. प्रथम्यावः अयोगः (श. क.)

विषम्-वि. २३-३ गरलम् (श. क.)

विषगरवैरोधिकप्रशमनम्-सु. ३०-२८. विषं
गरलम्, गरः कालान्तरप्रकोपि विषम्, वैरोधिकं संयोगविरुद्धम्,
तेषां प्रशमनमगदतन्त्रम् ।

विषण्णम्-वि. २३-५ खिन्नम्

विषघ्नः-सु. ४-८. विषनाशकः षोडशः कषायवर्गः ।

विषमक्रियत्वम्-वि. ६-७ विषमक्रियत्वमिति पित्त-
स्य संशमनविक्रियायाः कृद्वाविरूपायाः विषमत्वम् ।

विषमज्वरः-वि. ३-७३. दोषोत्थोऽद्वितसम्भूतो-
ज्वरोत्पष्टस्य वा पुनः । घातुमन्यतमं प्राप्य करोति
विषमज्वरम् ॥ (मा. नि.)

विषमाग्निः-वि. ६-१२, वि-१३-१३६. समलक्ष-
णविपरीतलक्षणस्तुविषम इति ॥

विषमाशनम्-वि. १५-४२, २३६. विषमं बहु
वाऽल्पं वाऽप्यप्राप्ततीतकालयोः भोजनम्; बहुस्तोक्षमकाले वा
तज्ज्ञेयं विषमाशनम् ॥ (सु. सु. ४६-५०८.)

विषमाहारः-वि. ६-१३ विषमाशनम् ।

विषादः-सु. २५-४०. खेदः ।

विषाद्यानम्-वि. १३-४२. विषस्य प्रसारकम् ।

विष्किराः-वि. १२-१८ । ४ विकीर्णं भक्षयन्ति इति ।

विष्टम्भः-वि. १४-२१ अप्रचलत्वम् ।

विष्यन्दनम्-सु. २८-३३ विलयनम् ।

विसर्गः-वि. ३-५९. परित्यागः ।

विसर्गः-सु. ६-४. विसृजति जनयति आप्यमंशं
प्राणिनां च घटमिति विसर्गः ।

विसर्पः-वि. २१-११. विविधं सर्पतीति अथ उर्ध्वं
तिर्यक् तथास्फटशोफादिभिः प्रवरतीति विसर्पः ।

विसर्पिणी जिह्वा-इ. ८-१४. वह्निर्निर्गता जिह्वा ।

विसृचिका-वि. २-११. विदधेन्दनोद्भेदैर्वाद्यादि-
सृष्टकोपतः । सूचीभिरिव गात्राणि विध्यतीति विसृचिका ॥
(अ. सं. सु. ११)

विस्फाटकम्-वि. ७-१३. विस्फोटकं नाम कुष्ठं
तनुत्वमिः भेतलोहितैः स्फोटैर्न्याप्तम् ।

विस्मापनम्-वि. १७-१३७. विस्मयजननम् ।

विश्वगन्धि-वि. १४-१४. पूतिगन्धम्, आमगन्धम् ।

विस्तृत्यम्-वि. ५-७. आमगन्धता ।

विहारः-शा. २-२९. गमनप्रमणादिशरीरचेष्टा ।

वीतीभावः-इ. ३-४. अतिक्षीणत्वम् ।

वीर्यम्-सू. २६-६४. मृदुतीक्ष्णगुरुलघुस्निग्धरूक्षोष्ण-शीतलम् । वीर्यमष्टविधं चेति, केचिद् द्विविधमाख्यताः ॥ शीतोष्णमिति, एतच्चकीयमतद्वयं पारिभाषिकैः वीर्यसंज्ञां गुरुलघु प्रशस्तम् । वैद्यके हि रसविपाकप्रभावव्यतिरिक्ते प्रभूतकार्यकारिणि गुणे वीर्यमिति संज्ञा, तेनाष्टविधवीर्यादिमते ऋषिः ३३ विदो गुणा न रसाद्विपरीतं कार्यं प्रायः कुर्वन्ति, तेन तेषां रसः शुभदेशेनैव ग्रहणः, मृदादीनां तु रसा-चमिभावकत्वमस्ति, यथा - पिप्पल्यां कटुरसकार्यं पित्त-कोपननभिभूय तद्वत् मृदु शीतवीर्यं पित्तमेव शमयति इति, तथा कषाये तिक्तानुरसे महति पचमूले तत्कार्यं वातकोप-नमभिभूयोष्णेन वीर्येण तद्विरुद्धं वातशमनमेव क्रियते, तथा मधुरोष्णीक्षौ शीतवीर्यत्वेन वातवृद्धिरित्यादि यदुक्तं सुश्रुते-“एतानि खलु वीर्याणि स्वबलगुणैर्लक्ष्यमभिभूया-त्मकर्म दर्शयन्ति” (सु. सू. अ. ४०.) इत्यादि । एतच्च मतद्वयमप्याचार्यस्य परिभाषासिद्धमनुमतमेव, येनोत्तरत्र “रस-वीर्यविपाकानां सामान्यं यत्र लक्ष्यते” इत्यादे पारिभाषिकमेव वीर्यं निर्देक्ष्यति । (चक्रः)

वीर्यम्-सू. २६-६५. वीर्यं तु क्रियते येन या क्रिया । तावीर्यं कुरुते ऋषिस्तु सर्वं वीर्यकृता क्रिया ॥ पारिभाषिकवीर्यसंज्ञापरिभाषायां तु शक्तिपर्यायस्य वीर्यस्य लक्षणमाह-वीर्यमिति शक्तिः । येनेति रसेन वा विपाकेन वा प्रसवेन वा गुर्वानिपरादिभिर्या गुणैर्या क्रिया तर्पणहृदयशमनारूपया क्रियते, तस्यां क्रियायां तदसादि वीर्यम् । अत एवोक्तं सुश्रुते-“येन कुर्वन्ति तद्वीर्यम्” (सु. सू. अ. ४०.) इति अत्रैव लोके प्रसिद्धा मुपपत्तिमाह-नावीर्यमिति । अवीर्यम् अशक्तमित्यर्थः । वीर्यकृतेति वीर्यवता कृता वीर्यकृता । (चक्रः)

वीर्यम्-सू. २६-६६. वीर्यं यावदधीवासादि पाताञ्चोपलभ्यते ॥ अवीर्यास्तः सहावस्थानं, यावदधीवासादिति यावच्छरीरनिवासात् । निपाताच्चेति शरीरसंयोग-

मात्रात् ; तेन किंचिद्वीर्यमधीवासादुपलभ्यते, यथा-अनूप-मांसादेरुष्णत्वं, किञ्चिच्च निपातादेव लभ्यते, यथा मरीचादीनां तीक्ष्णत्वादि; किञ्चिच्च निपाताधीवासाभ्यां, यथा मरीचादीनामेव । वीर्यं तु किञ्चिदनुमानेन; यथा चैन्धवगतं शैत्यमानूपमांसगतं वा औष्यं, किञ्चिच्च वीर्यं प्रत्यक्षेणैव यथा राजिकागतं तैल्यं प्राणन, पिच्छल-विशदस्निग्धरूक्षादयः चक्षुःस्पर्शनाभ्यां निश्चोयन्ते इति वाक्यार्थः । एतच्च वीर्यं सहजं कृत्रिमं च ज्ञेयम् । एतच्च वीर्यलक्षणं पारिभाषिकवीर्यविषयमेव (चक्रः) । एतच्च वीर्यं सहजं कृत्रिमं च ज्ञेयं; तत्रायं मापाणां गौरवं सुदानां लाघवमित्यादि, कृत्रिमं तु लाजादीनां लघुत्वमित्यर्थः” इति शिवदाससेनः ।

वीर्यः-सू. ९-७१. प्रवर्तनैर्वीर्यः स्मृताः ।

वृक्षौ-शा. ७-१००. मापायां ‘गुदं, इति, आह्लमा-पायां च ‘किद्वनिश्, इति ख्यतौ ।

वृक्षः-वि. २१-३९. वहुलः ।

वृत्तिः-वि. ७-४२. पेयादिक्रमः ।

वृषः-वि. २/४-७. वीर्यपुंस्त्वशक्तिसम्पन्नः ।

वृषणौ-वि. ५-८. अण्डकोपी ।

वृषता-वि. २/४-२४ वीर्यपुंस्त्वशक्तिसंपन्नत्वम् ।

वृष्यम्-वि. ३०-६७ वाजीकरणम् (श. क.)

मणः-वि. २५-४ वृणोति यस्माद् रुद्धेऽपि जगवस्तु न नश्यति । आदेहधारणात्तस्माद् मण इत्युच्यते बुधैः (सु. सू. अ. २१)

वेगधारणम्-सू. ११-३८ वेगनिरोधः ।

वेगनिग्रहः-वि. ६-७१ वेगविचारणम् ।

वेगप्रतिघातः-वि. ८-२१ वेगसंधारणम् ।

वेगोदीरणम् सू. ११-३८ अप्राप्तवेगप्रवर्तनम् ।

वेणिका-वि. २३-३८. रज्जुः ।

वेदः-सू. ३०-२०. धार्यवेदः ।

वेदनास्थापनः सू. ४-१८ । ४७ सप्तवत्वारिंशच्चमो महाकषायः । वेदनायां सम्मूलायां तां निहस्य शरीरं प्रकृतौ स्थापयति इति (व. द.)

वेपनम्-वि. ३-१९. वेपथुः ।

वेशावारः-सू. २७-२६९. मांसं निरस्थिं सुस्विन्नं पुनर्द्वेपदि वेपितम् । पिप्पलीशुषिभारिचगुण्डरपिःसमन्वि-
तम् ॥ एकस्यै विपचेत्सम्भवे शवारः इति स्मृतः ॥

वेष्टनम्-वि. ४-२८. पार्श्वेष्टनम् ।

वेकृतम्-वि. ३-२९. अन्तःपातम् ।

वैगम्यम्-सू. ९९-४ । १ विवृतगन्धता, अनिष्ट-
गन्धता च ।

वैगुण्यम्-वि. ६-३०. गुणानां न्यूनता ।

वैद्यवृत्तिः-सू. ९-२६. मेदीकादण्यमात्रेषु शक्ये
प्रीतिरपेक्षणम् । प्रकृतित्येषु भूतेषु वैद्यवृत्तिरिति ॥

वैपादिकम् (विपादिका)- वि. ७-२२. चतुर्थ
शुद्धकृष्टम्, वैपादिकं पाणिपादस्फुटनं तीव्रवेदनम् ॥

वैम्यम्-सू. १९-४ । १ विरस्ता ।

वैरेचनिकाः धूमाः-वि. ७-४९. शीर्षवैरेचनांशो
धूमाः । सूत्रस्थाने यद्यपि एक एव वैरेचनिको धूम उक्तस्त-
थापि तत्रोक्तद्वैवैरेचनसंज्ञैर्बहुधा भवन्तीति बहुव-
चनमिह कृतम् । (चक्रः)

वैशः-सू. १४-३१ वेथुः ।

वैकिदर्शकः-वि. २४-७३. आकारदर्शकः ।

वैज्वनम्-वि. १-९. तत्र लिङ्गमाकृतिसंज्ञं चिह्नं
स्त्र्योर्नैव व्यञ्जनं रूपमित्यनयोन्तरम् ।

वैप्यासः-वि. १७-१३४ विपर्यासः ।

वैयथनम्-वि. ८-६ व्यथा ।

वैयधः-सू. २८-४ व्यधनम् ।

वैयधनम् सू. ११-५५ व्यधः ।

वैयपदेशः सू. ११-५२ अन्यसम्बन्धेन कीर्तनम् ।

वैयपायः-वि. २६-३९ मूत्रमार्गविगमः ।

वैयवसायः-वि. ४-८ प्रवृत्तिः ।

वैयवायः-सू. ६-३६ मैथुनम् ।

वैयवायि-वि. २३-२६. क. १-५. शीघ्रं व्यवायि-
भावादायु व्यामोति श्वेदं देहम्; व्यवायित्वं सर्वतः
प्रसरणशीलत्वं पानीयपतिततेलवत्; पूर्वं व्याप्यादिकं
कार्यं ततः पार्श्वं व गच्छति । व्यवामि तद् यथा मन्ता
फेनं चाग्नेसमुद्गमम् ॥ (व. द.)

वैयसनम्-इ. १२-२७. वस्त्रादीनां यत् स्फुटनादि ।

वैयसनी-इ. १२-२७. व्यसः कलहवान् वा ।

वैयस्तानि-इ. ३-५. वृषभूतानि ।

वैयकृतीनि-इ. ४-१७. विविधाकृतीनि ।

वैयस्वानम्-वि. १२-४३. यत्सर्वसुखदयविषयः
व्याप्तिरिति, यथा “ पश्ये मास्ति संमूर्छितः सर्वथाऽकञ्चपी-
कृतः सोऽभूतो भवत्यव्ययविग्रहः ” (शा. भा. ४.)
इत्यादिनाऽस्मदाद्यविदितार्थव्याकरणम् (चक्रः)

वैपाधिः-वि. १-५. विविधं दुःखमादधातीति ।

वैयानः-वि. १५-३६. शरीरस्थपञ्चवाय्वन्तर्गतसर्व-
शरीरगवायुः (श. क.)

वैपापस्-सू. २५-४०. रोगः ।

वैपायामः-शा. ८-४५. विस्तारः ।

वैपायिः-वि. ९-३९. वक्त्री ।

व्यासः-सू. २०-१२. विस्तरणम् ।
 शलकप्रहः-सि. ७-८. पुरीषाप्रश्रुतिः ।
 शक्तुः-चि. २१-१३०. भञ्जितयवादिचूर्णम् (श. क.)
 शतारुः-चि. ७-१३. दशमं क्षुद्रकृष्णम् ; रक्तं श्यावं
 सदाहाति शतारुः स्याद् बहुमणम् । (श. क.)
 शब्दः-इ. १२-५८. नादः
 शब्दश्रवौ-इ. ८-१२. कर्णौ ।
 शमः-सि. १-५. शान्तिः ।
 शमनम्-चि. ३-२७२. कषायसर्पिःपानादिः
 न शोधयति यद् दोषान् समाजोदीरयत्यपि । समीकरोति
 संश्रद्धान् शमनं तद् यथामृता ॥ (व. द.)
 शमीधान्यम्-सू. २७-६. माषादि । (श. क.)
 शराविका-सू. १७-८४. अतोन्नता मव्यनिम्ना
 श्यावा क्रैदरुगन्विता । शराविका स्यात् पित्तका शरावाकृति-
 र्विपत्ता ॥
 शरीरान्ताः-इ. ९. ६. हस्तपादादयः ।
 शर्करा-इ. ३-६. मलो दन्तगतो यस्तु पित्तमाहत-
 शोषितः । शर्करेव स्वरस्पर्शौ वा ज्ञेया दन्तशर्करा ॥ (मा. नि.)
 शर्म-सू. १-२९. सुखम्
 शल्यम्-चि. २५-१०६. न केवलं काष्ठतृणादि
 शल्यं, किन्तु “अतिप्रवृद्धं मलदोषमं वा शरीरिणां श्यावर-
 जङ्गमानाम् । यत्किञ्चिदावाचकरं शरीरे तत् सर्वमेव
 प्रवर्तन्ति शल्यम्” इति । (सू. सू. १-८/१. उल्लेखः)
 शल्यापहतृकम्-सू. ३०-२८. शल्योद्धरण-
 कर्तृकम् ।
 शकुली-क. १-२९. पित्तकविशेषः । (वै. श.)

शस्त्रकर्म-सू. १-११. शस्त्रनिर्वहणं कर्म. छेदनादि
 (वै. श.)

शस्त्रपणिधानम्-सू. ११-५५. शस्त्रविचारणम्—
 छेदनमेदनव्यधनदाहणछेदनोत्पाटनप्रच्छन्नसीवनैवणक्षारजलौक-
 सद्येति ।

शस्त्रम्-चि. २६-२७२. कृष्णं लोहम् । (चक्रः)

शस्यानि-चि. १-१ । दृष. अस्थिरहितानि
 फलानि । (चक्रः)

शाखा-सू. ३०-३१. तत्र युर्वेदः शाखा विद्या अत्र
 ज्ञानं लक्षणं तन्त्रमित्यनन्तरम् ।

शाखा. सि. ९-३. शाखाशब्देन चेह शाखा इव शा-
 खेति कृत्वा बाहुद्वयं ज्ञाद्वयं चोच्यते । नेह शाखाशब्देन
 रक्षादिधातूनां ग्रहणं, रक्षादिधातूनां स्वरूपेऽपि विद्यमानत्वात् ।
 (चक्रः)

शाखा-सू. ११-४८; १७-११३. रक्षादयो, धातव-
 स्वरूपं च, स बाह्यो रोगमार्गः ।

शाणः-क. १२-८९. त्रयो माषकाः । (चक्रः)

शान्ताग्निम्-चि. ७-३७. नष्टाग्निम्

शारीरः-चि. ७-३६. शरीरजातः

शर्करा-सू. २७-१८३. शर्कराप्रकृतिक आत्मनः ।
 (चक्रः)

शालाक्यम्-सू. ३०-२८. पटलत्रेयशलाकाप्रधान-
 मङ्गं शालाक्यम् । (चक्रः); शालाक्ये नामोर्ध्वजनुगतानमं
 श्रवणनयनवदनप्राणादिसंश्रितानां व्याधीनामुपशमनार्थम् । (सू.
 १-८ । २); शलाका पटलत्रेयनी, तस्याः कर्म शालाक्यं;
 प्राहणादित्वात् व्यङ्, शालाक्यप्रधानमङ्गं शालाक्यम् ।
 एतेन शिरोगेगर्भतीक्ष्णस्यापि ग्रहणं, प्राधान्यं च शालाक्यस्य
 प्रधानचक्षुर्विषयतया । (शिष्यासंसेनः)

शालाक्यतन्त्रम्-चि. २६-१२३. शलाकाविषय-
 मधिकृत्य कृतं शास्त्रम् ।

शास्त्रम्-पृ. ३०-३१. भाष्ये दः ।

शास्त्रवादः-पृ. ११-२७. शास्त्ररूपो वादः ।

शिरः-पृ. १७-१२. प्राणाः प्राणमूर्ता यत्र श्रिताः
धर्मेन्द्रियाणि च । यदुत्तमाङ्गनानां शिरस्तदभिधीयते ॥

शिरःशूलम्-चि. ८-१६. शिरोरोगः (पे. श.)

शिरोघरा-पृ. १७-२१. मीमा ।

शिरोवस्तिः-चि. ९-७८. आशिरोव्यापत्तं चर्म
कृत्वाऽष्ट द्युलमुत्तुतम् । तेनावेष्य शिराऽधस्तात्पण्ड-
लेन लेपयेत् ॥ शिरस्योषधिस्तस्य तैलैः कोष्ठीः प्रपूरयेत् ।
धारयेदादनः शास्त्रे यां यामाधनेव वा ॥ शिरोवस्तिः कर्तव्येप
शिरोरोगं मन्दहृत्तम् । (यमः) । शिरोवस्तिधर्मनः स्य दृक्षितुषो
द्रादग द्युलः । शिरःवमाणस्य वक्ष्या मस्तके मापविष्टके ।
तन्निरोधं विधानमुत्तरेः कोष्ठीः प्रपूरयेत् । तावद् धारयतु-
यावत् स्यात् नाशकमुत्तुतिः ॥ (पे. द.)

शिरोरूप-चि. ८-२५. शिरोरुजा ।

शिरोरुजाः-द. ८-१८. केपाः ।

शिरोविरेकः-चि. ९-७३. शिरोविरेचनम्, नरुभेदः ।

शिरोविरेचनम्-चि. ९-७७. शिरोविरेकः ।

शिरोविरेचनोपगः-पृ. ४-८. शिरोविरेचनक्रियाया
वृत्त्यत्येनोपगच्छतीति; अतस्मिन्तत्तमो महाकपायः ।

शिशिरज्वरः-चि. ३-२७०. शीतज्वरः । (ग.क.)

शीघ्रकारित्यम्-चि. ३-५५. शीघ्रं करोति इति
शीघ्रकारी तस्य नायः शीघ्रकारित्वम्; च शीघ्रं शीघ्रकारि-
त्वात् प्रगमं याति इति वा ।

शीत-पृ. ४-७. द्रव्यादभ्युत्पन्नोऽथ प्रतप्ते निक्षि-
पतितात् । कपाया मोडमिनियाति च शीतः समुदाहृतः ॥

शीतकपाय-चि. ३-१९७. द्रव्यं तंशुष्णमुष्णोदके
क्षिप्य नशस्वितम् । शीतः शरीरीमुचितो मतः (पे. द.)

शीतज्वरः-चि. ३-२६७. शिशिरज्वरः

शीतप्रमाणनः-पृ. ४-८. शीतं प्रशमयति इति;
क्षिप्यवारिणमो महाकपायः ।

शीतरसः-चि. ७-४४. शीतकपायः ।

शीतरसिकः-पृ. २७-१८५. शीतेधुरसकृतः नक्षिपः ।

शीतलम्-पृ. २७-११०. शीतम् ।

शीताङ्गः-चि. ३-३२५. शीतमर्जः ।

शीघ्र-चि. ८-१४०. शीघ्रशिरः पर्यपर्यकरात्रो
नवेत् ॥ (पे. द.)

शीलम्-चि. ४-८. नरुत्तु लहजो रागः ।

शीर्षविरेचनम्-चि. ९-१७. शिरोविरेचनम् ।

शुक्रम्-चि. २९-६. नमस्त्वादि शुक्रो शास्त्रे
तुष्टक्षीदनाग्रम् । धाम्यराशौ त्रिरात्रं शुक्रं तुक्तं तदच्यते ॥
(च. चि. २६-२२७ चक्रः) शुक्रमाक्षिकपात्र्याम्लमस्तम्बु-
द्विगुणं क्रमात् । गच्छन्ति तुकठिस्तयं किञ्चित् त्रिमशुक्रान्वितम् ॥
(पे. द.)

शुक्तिः-पृ. १२-१६. दे सुवर्गे परार्थे स्याच्छुक्तिरष्टमिका
तथा ।

शुक्रम्-चि. १५-१६. रक्षादं ततो नाय माशान्ने-
दस्तोऽस्मि च । अरुध्नो गज्या उतः शुक्रं शुक्राद् गर्भः
प्रसादजः ॥

शुक्रम्-चि. ३०-११३. वीजं यस्माद् व्यवाये तु
हर्षणेनितुमुत्तुतम् । शुक्रं वीर्यमित्युक्तं, तत् शीघ्र-
संयोगे नेष्टाभ्युत्पत्तिनात् शुक्रं प्रत्ययते स्वानाजलमा-
क्षिप्यते ॥ (चि. २-८/२७) चारो निश्चरस्य रूपद्रव्यं
यदुत्पत्ते (चि. २-८/८९)

शुक्रजननः-पृ. ४-८. शुक्रोत्पादक एतेनक्षि-
महाकपायः ।

शुक्रवायः-चि. ३०-१२९. वीर्यदोषः ।

शुक्लः-सू. २७-६५. शुक्लद्विकरः; यस्माच्छुक्ल-
स्य वृद्धिः स्याच्छुक्लं हि तदुच्यते । यथा नागपलाशाः स्युः
नीलं च कपिकच्छुजम् ॥ (व. द.)

शुक्लवाहिनी नाडी सि. ९-४ शुक्लवह्नोतः ।

शुक्लवाहिनी स्रोतांसि-वि. ५-९९. शुक्लप्रापण्यो
नाड्यः ।

शुक्लशोधनः-सू. ४-८ शुक्लं शोधयति विमलं करो-
ति यः सः विशो महाकषायः ।

शुक्लसारः-वि. ८-१०९. शुक्लं वीर्यापरचामकः सप्तमो
धातुः सारः उत्कृष्टः विशुद्धतरो मस्तिष्कः ।

शुक्लाशयः-वि. २१-७२. वीर्याशयः ।

शुक्लिः-सू. २८-२८. शोधनम् ।

शुद्धसत्त्वम्-शा. ४-३६. सत्त्वगुणप्रधानं पित्तम् ।

शुष्कम्-सू. ५-१०. नीरवम् ।

शुषिरकरम्-सू. १२-७ रन्ध्रकरम् ।

शूकघान्धम्-सू. २७-६. श्लक्ष्णतीक्ष्णामसहितं धान्यम् ।

शून्यता-सू. १७-३९. चित्तस्थानुपस्थितत्वम् ।

शूर्पः-कं. १२-९६. द्रोणस्तु द्विगुणः शूर्पो त्रिगुणः
कुम्भा एव च ।

शूलम्-वि. २१-३० शङ्कुश्च टनवत्तस्य यस्मात्तीव्राश्च
वेदना । शूलावकस्य लक्ष्यं ते तस्माच्छूलमिदोच्यते ॥ (सु.
च. ४२-८१)

शूलप्रशमनः-सू. ४-८. शूलं प्रशमयतीति, पच-
नत्वारिणश्च महाकषायः ।

शूल्यानि-वि. ६-४७. शूलपकानि ।

शूनः-सू. ४-७. बहो तु कथितं द्रव्यं शूनमाहुश्चि-
कित्सकाः ।

शूनशीतम्-वि. ३-१४६ पूर्व शूनं पश्चात् शीतम् ।

शोकः-सू. २५-४०. वेन्ध्वादिविभोगजन्यनोवेदना ।

शोणितम्-इ. ३-४. रक्तम् ।

शोणितमोक्षः-वि. ७-१७२. रक्तमोक्षः । (घ. क.)

शोणितवाहिनी स्रोतांसि-वि. ५-८. शोणितं
वहन्ति नयन्ति ये ते मार्गाः ।

शोणितस्थापनः-सू. ४-८. शोणितस्य दुष्टस्य
दुष्टिम् अपहरय प्रकृतौ शोणितं स्थापयति इति (चक्रः) ।
षट्चत्वारिंशत्तमो महाकषायः ।

शोथहरः-सू. ४-८. शोथं हरति इति. अष्टत्रिंशो
महाकषायः ।

शोफः-सू. १७-२९. शोथः ।

शोषः-वि. ८-१६३. शरीरशोषको रोगविशेषः,
राजयक्ष्मा ।

शोषणः-सू. २५-४०. शोषयतीति ।

शौचाघानम्-सू. ५-९८. पानीयेन मृदा च
शुचित्वापादनम् ।

शमधु-सू. २८-४. प्रमले दीर्घलोमराजिः ।

शमहरः-सू. ४-८. परिश्रमं हरति यः सः, चत्वारिं-
शत्तमो महाकषायः ।

शोषम्-इ. १-३. श्रवणेश्चिद्रथम् ।

श्लक्ष्णः-सू. २६-११. स्वरविपरीतः ।

श्लेष्मप्रकृतिः-वि. ६-१३. श्लेष्मलः, श्लेष्मा कफः
प्रकृतिः स्वभावतः प्रबलो यस्मिन्सः ।

श्लेष्मा-सू. १२-१२. कफः

सोकोस्थानम्-वि. ८-८९. दन्त्यानम्, ओकार्य
संनहार्यम् सो स्थानमतः स्मृतम् ।

भययुः-वि. १०-२३. शोयः ।

भयसनम्-वि. ९-१६. श्रावः ।

भ्यामः-वि. ८-२६. प्राणवायोरभिज्ञानलक्षणैर्ग
निर्गमप्रवेनौ श्रावः, तद्वरीकोषलक्षितौ रोगनिरोधोऽपि
श्रावः ।

भ्यासहरः-सू. ४-८. श्रवः ।

भिक्षुम्-वि. ७-१६२. धेतुम् । (श.क.)

पटङ्गम्-सू. ३-४. प ज्ञानि वाहुद्वयपटादय-
शिरोऽतःपरिष्ठापयत् तत् ।

पटङ्गः-इ. १२-१६. ननुः ।

प्रीत्यनयः-वि. ३-१०३. मुखेन प्रेम्णादर्शनम् ।
(श.क.)

सक्तुः-सू. १३-२४. भृष्टयवादिपूर्णम् ।

सक्तिः-वि. ३-१८. ऊर्ध्वतः ।

सङ्गस्नेदः-सू. १४-४१. तत्र यस्मात्तरितैरवसागतरि-
तैर्वा विपरीतयोक्तैरवस्नेदं सङ्गस्नेद इति श्रियते ।
(सू. १४-४१); 'अस्नेदं योक्तैरिति तिलमायादिदिग्द्वि-
गोप्यादिप्रत्योक्तपुटस्नेदः । अस्नेदः, स्नेदः ।
(चकः)

सङ्गणः-सू. २५-४०. लोभान्गणः ।

सङ्गीर्णभोजनम्-सू. १७-२७. विरहाहारः ।

सङ्गः-वि. १-७. अग्रवृत्तिः ।

सततः-वि. ३-३४. तत्र संतते ज्वरे चलनता
दोषेण श्वादादि प्रकृष्टत्वाद् चलनम् कालो नियम्यते,
सततं तु संततकालपेक्षया हीनचलेन दोषेणापलो ज्वर-
कालः, श्वहोरात्रे द्विकालेनात्र व्यापको भवति ।

सनतकः-वि. ३-६१. ६२. रक्तधातुश्रयः प्रायो
दोषः संततः ज्वरम् ॥ सप्रत्यनीकं कुरुते कालवृद्धि-
श्रवणम् । अग्ररात्रे संततं द्वौ कालावप्युवर्तते ॥ प्रायो-
प्रश्रयत् संततको रक्तवृत्तिरिक्तं माहादिपुनःप्राश्रयत्
इति दर्शयति । सप्रत्यनीक इति कालादिषु मध्येऽन्ततमः
प्रत्यनीकः । कालवृद्धिप्रमाणमिति काल वृद्धिप्रमाणेति-
कामे वृद्धि प्रयत्नं यत्नम् कालवृद्धिप्रमाणम् । तेन,
दोषानुगुणे चान् ज्वरे भवति, दोषानुगुणकालवृत्तिरिक्ते
च काले क्षयो भवति । ज्वरस्य का प्रवृत्तिप्रमाणं
मध्येऽन्ततमद्वयशतौ सस्यामि दोषप्रमाणमितिना दि
कालमावित्यनियमो ज्ञेयः । (चकः)

सत्त्वम्-सू. ८-४. वि. ८-११०. अतीन्द्रियं पुनर्मनः
सत्त्वसत्त्व, 'चेत' इत्यादुरेकं तदन्तरिमप्रायत्तवेष्टं चेष्टा-
प्रत्यभूतमिति श्रियते ॥ चेत इत्यादुरेकं इति परमतस्या-
प्रतिषेधार्थमप्यनुमतम् । अर्थायत्तमं शास्त्रे स्मृतं ।
यम् । तदिति मनः अर्थो मनोऽर्थः ॥ च चेत्यादिविन्तमि-
चादीरिष्य आत्मा चेतनमिति तन्वाता, मनयोः सम्भूत
तदन्तरिमप्रायत्त, एतदायत्ता चेष्टा व्यापारो यस्य तत्तथा;
तन्वायत्तम् तुलादीनं अतिवर्धितमिति श्रियते ।
च आत्मसंशयप्रदेशे प्रयत्नादित्यं, मनश्चेष्टा च तुलादि-
ज्ञानं तथा चिन्तयन्तिनादि तया चक्षुरादिप्रेरण च ।
इन्द्रियाणां चक्षुरादीनां या चेष्टा स्वविषयस्वरूपज्ञान-
लक्षणा, तत्र प्रत्ययभूतं कारणम्, मन इति योजयम् ।
एतेनैतदुक्तं भवति-प्रदा कुर्यादयश्चित्तयादोऽपि विषया
भवन्त्यात्मना च प्रयत्नवान् भवति तदा मनः स्वविषये
प्रवर्तते, इन्द्रियाणि चापि तिष्ठन्ति, इन्द्रियाणि च मनोऽपि-
चित्तान्येव स्वविषयज्ञाने प्रवर्तन्ते । (चकः)

सत्त्वसारः-वि. ८-११०. सत्त्वं मनः, चारः विशुद्धतरो
पातु, उत्कृष्टं चलवद् वा यद्विस्तृतम् ।

सत्त्वावजयः-सू. ११-५४. अद्वितीयोऽर्थो मनो-
निष्ठः ।

सत्त्वोदार्थम्-सू. २१-५६. सत्त्वगुणभूतवत् ।

सदनम्-सू. १७-५३. अवसादः ।

सद्यःप्राणहराणि-वि. ८-९४. शीघ्रघातीति ।
 सन्धाट्-सू. २७-२४५. सन्धानीयम् ।
 सन्धानकरः-सू. १२-८. सङ्घटनकरः (श. क.)
 सन्धानम्-सू. १-१०८. घातविशेषात् द्विधा-
 भूतस्य अवयवस्य ऐक्यभावः (व. द.)
 सन्धानीयः-सू. ४-८. भग्नसंयोजनः (वै. श.),
 पथमो महाकथायः ।
 सन्धायसंभाषा-वि. ८-१७. अशुलोमसंभाषारूपो नादः ।
 सन्धारणम्-सू. १७-८. वेगसंवारणम्, वेगावरोधः ।
 सन्धिः-इ. ३-४. अस्मिन्संयोगस्यानम् (वै. श.)
 सन्धिपत्तिनाः-वि. ३-१२९. त्रयोऽपि मिलिताः ।
 सप्रत्यनीक-वि. ३-६२. कालादिषु मध्येऽन्यतमः
 प्रत्यगीकः तेन सहितः ।
 सप्तमिपत्रम्-वि. ६-७. क्रियायाः दोषेण दूष्येण
 आविरुद्धम् ।
 समधानुः-वि. ८-९५. समाः स्वप्रमाणस्थिताः क्षय-
 इद्विरतिता धातवो यस्य सः ।
 समर्मासत्रयः-सू. ११-१९. समः नातिशूलकृष्टः
 मासश्च त्रयः वृद्धिः अस्मिन्सः । क्षुरिपपासातपसहः
 शीतव्यायामसंस्रहः । समपक्षा समजरः समर्मासत्रयो मतः ॥
 समयः-वि. ८-५४ सिद्धान्तः, समयः पुनर्निष्ठा
 भवति; यथा-आयुर्वेदिकप्रमयः-अतुष्टाद् मेघजमिति,
 याज्ञिकप्रमयः-अलभ्या यत्रमनैः पशव इति, मोक्ष-
 याज्ञिकप्रमयः-संभूतेष्वर्हिसेति ।
 समयोगः-सू. ११-४३. समः हीनातिमिथ्यात्व-
 रहितः अर्थानां स्मरणः कालस्य च योगः मेलनं समयोगः ।
 समयोगवाहि-शा. ६-४. समेन सचितप्रमाणेन
 वाचानां मेलनेन सम्यङ् नीरोगतया वहतीति समयोगवाहि ।

समवायः-सू. १-२९, ५०. समवायोऽपृथग्भावो
 भूम्यादीनां गुणैर्मतः । स नित्यो यत्र हि द्रव्यं न तत्रा-
 नित्यतो गुणः ॥ (द्रव्यगुणसंमहः)

समवायिकारणम्-सू. १-५९. यत् स्वसमवेतं
 कार्यं जनयति ।

समवायी-सू. १-५९. समवायिचिह्नः ।

समशानम्-वि. १५-२३५. 'पथ्यापथ्यमिदं कृत् शुकं
 समशानं मतम्; हितहितोपसंयुक्तमन्त्रं समशानं स्मृतम् ।
 (सू. सू. ४६-५०८).

समाश्रिः-वि. ६-१२. अपन्नारतो विवृतिमापयमा-
 नोऽनपचारतः प्रकृताववतिष्ठमानोऽभिः ।

समातीतम्-सू. २७-३०९. एकवर्षातीतम् ।

समानः-वि. ६-४. उभयवाचकत्वेन तुल्यः ।

समावृतः-वि. २१-२९. सम्यक् प्रकारेण आवृतः

समासः-सू. ३०-१८. संक्षेपः

समीरणः-वि. ४-८ वायुः

समुच्चयः-वि. १२-४४. यदिदं चेदं चेतिङ्कारा
 विधीयते ।

समुत्तिष्ठताः वि. २-९. प्रकुपिताः ।

समुत्क्षिता-वि. २८-४१ अतिविरता ।

समुदीरणम्-वि. ९-७ प्रेरणम् ।

समृद्धः-इ. ९-४ संपन्नः ।

सम्यगयोगः-वि. ६-१० हीनातिमिथ्यायोगविपरीतं
 यथा स्यात्तथा प्रवर्तनम् ।

सरः-सू. २७-२३७. मलानामपानवायोश्च प्रवर्तकः,
 सरोऽनुलोमनः प्रोक्तः सरस्तेषां प्रवर्तकः । (व. द.)

सरस्वतम्-वि. २/४-४८. अस्वैर्यम् ।

सर्पिः-वि. ५-१८३ घृतम्, दुग्धसम्पूरणैः । (वै. श.)

सर्पिमण्डः-वि. २६-२३२. घृतस्योपरितनोऽच्छो भागः ।

सर्वग्रहः-वि. १-२१ । ४. सर्वस्य आहारस्य प्रमाण-
ग्रहणमेकपिण्डेन सर्वग्रहः ।

सर्वक्षमः-वि. १२-९. सर्वरसाभ्यासक्षमः ।

सर्वपी-सू. १७-८७. पिष्टका नातिमहती क्षिप्रपाका
महाराजा । सर्वपी सर्वपात्राभिः पिष्टकाभिर्विता भवेत् ॥

सात्म्यम्-वि. १-१९-२०. सात्म्यं नाम तद्यदात्म-
न्युपशेते सुखयति अपथ्यमपि सद्भिकारं न जनयति । सात्म्या-
र्थो ह्यपशार्थः; ओक्तसात्म्यम्-ओक्तादभ्यासात् सात्म्यम् ।
उपशेते यदौचित्यादोक्तसात्म्यं तदुच्यते ।

सात्म्यम्-वि. ८-१३० यद् यस्य सेवितं सुखाय
सम्पद्यते तत्तस्य सात्म्यम् (वै. श.)

सात्त्विकः-वि. २४-५५ सत्त्वगुणप्रधानः ।

साद्रूप्यम्-वि. १-२४ । १ प्रशस्तगुणयोगिता ।

साधनम्-वि. १-१ । २. चिकित्सितं व्याधिहरं
पथ्यं साधनमीषवत् । प्रायश्चित्तं प्रशमनं प्रकृतिस्थापनं हितम् ।
विषाद् मेघजनामानि ।

सानुवाचनम्-वि. १-१ । ५. दीर्घकालावस्थायी
कुण्ठनिविकारकारी अभेषजप्रकारः ।

सामान्यम्-सू. १-२८. सामान्यमेकावकरणम् । तुल्या-
र्थता दि सामान्यम् ।

सारः-सू. १-७३ वृक्षान्तर्गतकठिनकाष्ठम् ।

सारः-वि. ८-१०२. विशुद्धतरो धातुः ।

साहसम्-वि. ८-१९. सदृशं शक्तिमनालोच्य
यानि क्रियन्ते तानि साहसानि ।

सिद्धम्-वि. ३-४६. पक्वम्, साधितम्, संस्कृतम् ।

सिद्धसाधिताः-सू. ११-५०, ५२ श्रीयशोदान-
सिद्धानां व्यपदेशादतद्विधाः । वैद्यशब्दं लभन्ते ये ज्ञेयास्ते सिद्ध-
साधिताः ।

सिद्धिः-सू. २५-२२. उत्पत्तिः ।

सिराः-सू. ३०-१२ सरणात् शिराः ।

सिराकर्म-वि. २६-२०४ सिराव्यधनम् ।

सिराजालम्-सू. १७-२१. सिराणां जालकाकारेण
प्रथनम् ।

सिरानद्धः-वि. ५-१६९. शिराभिः आसमन्तामद्धः
वद्धः ।

सिराव्यधनम्-वि. ७-४० सिरावेधः ।

सीधुः-वि. ८-१६५ पकापकेधुरसङ्गतमद्यम् । (वै. श.)

सीमन्तः-इ. ८-६. केशविन्यासः ।

सीधनम्-वि. २५-५५. विमक्तस्य सूत्रेण सूच्या
च सन्धानम् ।

सुकम्-सू. २४-७. कन्द्यादिकृतसन्धानविशेषः ।
(वै. श.)

सुखम्-सू. ३०-१३. आरोग्यम् ।

सुगन्धिः-सू. २७-१६७. शुभागन्धः ।

सुप्तसुप्तानि-वि. १४-१७. अत्यर्थं निश्रेयतानि ।

सुसाङ्गता-वि. ७-१२. अज्ञानामसंवेदनशीलता ।

सुप्तिः-वि. १२-१२. स्वप्नाज्ञानम् ।

सुभाषितम्-वि. ५-१५३. द्वन्द्वेण सुष्ठु आर्षी-
कृतम् ।

सुमदम्-वि. २४-७५. सममदम् ।

सुमुखाः-वि. २४-८०. प्रियाकाराः ।

सुमूर्च्छितम्-वि. २९-७९. साधु मिलितम् ।

सुरा-सू. २७-३२३. अनुदृतमण्डा ।

सुरासवः-सू. २७-१८७. सुराकृत आसवः यत्र सुरयैव तोयकार्यं क्रियते ।

सुप्रमा-र. ७-८. परमा शोभा ।

सुसंहतम्-वि. ८-११६ निमिडमन्त्रज्ञानम् ।

सूक्ष्मः-सू. १-५९. सूक्ष्मस्तु सौक्ष्म्यात् सूक्ष्मेषु स्रोतः-सुरसुरः स्मृतः ।

सूतिकागारम्-शा. ८-३३. यत्र गर्भिणी प्रसूता, यत्र च तिष्ठति तत् सूतिकागारम्, अरिष्टम् ।

सूत्रम्-सू. ३०-३१. आयुर्वेदः । तत्र सूत्रनात् सूत्रणाचार्यमन्त्रतः सूत्रम् ।

सूरः-सू. १३-२३. मुक्ताणि द्वदलदालीनिर्मितं प्रवं भोजनम् ।

सेवनम्-वि. २१-१५. सेवः ।

सेवनी-वि. ९-४. मेद्राद्योमाने चर्मसन्निधः ।

सौम्यः-सू. ६-५. सोमगुणप्रधानः ।

सौवीर्यम्-वि. २९-६. काञ्चिकभेदः । सौवीरं तु यवैराम्. षकं च 'न'सुपै छतम् । गोधूमैरपि सौवीरमाचार्याः हेचिद्विरे ॥ (व. द.)

सौवीरम्-सू. ५-१५. सुवीरानदीमयं सौवीरम् ।

सौवीर्यम्-सू. २७-१९१. मयविशेषः ।

सौहित्यम्-सू. ५-६. मात्रादिकमेव वृत्तिः, वृत्तिमात्रं वा । गतिजातिशब्दैर्वोऽप्योऽभिधीयते सा व्याप्तिः संप्राप्तिरित्यर्थः ।

संकरः-वि. १७-७१. स्वेदविशेषः ।

संकरपः-वि. २ । ४-४७. योपिद्वारागः ।

संख्या-वि. १-१२ । २. सू. २६-३२. गणना, संख्या स्याद् गणितम्, गणितमिदं द्विष्ट्यादि ।

संज्ञः-वि. ४-८. नार्यादिषष्ठः ।

संप्रहणः-वि. ८-१२८. संप्राप्तिः ।

संप्राहिकम्-सू. २५-४०. आग्नेयगुणभूयिष्ठं तोयां शो परिशोपयेत् । संयच्छति मलं तत् स्याद् प्राक्षी गुण्ययादयो यथा (व. द.)

संज्ञा-शा. १-१५४. आलोचनं निर्विकल्पकम् ।

संज्ञानाशः-वि. ६-८५. चेतनानाशः ।

संज्ञास्थापनः-सू. ४-८. संज्ञां ज्ञानं च स्थापयतीति संज्ञास्थापनः, अष्टचत्वारिंशत्तमो महाकषायः ।

संतर्पणम्-वि. ८-४८. वृत्तिजनकं धातुवर्धनं च । (व. द.)

संतापः-वि. ३-२६. देहेन्द्रियमनसां तापः ।

संदीपनम्-वि. ५-१६८. अग्निदीपिकम् ।

संधारणम्-वि. ५-१०. वेगनिरोधः ।

संतानदोषः-मृतवत्सत्वादिः ।

संपद-शा. २-६. प्रशस्तगुणता ।

संप्रतिपत्तिः-वि. ७-८. सम्पक् प्रतिपत्तिः ।

संप्रसादनाः-वि. २१-९८. सर्वर्णकराः सर्वे साध्ये कर्तव्या इत्यर्थः; किंवा संप्रसादनाः इति रक्षितप्रसादनाः ।

संप्राप्तिः-वि. १-६, ११. जातिः जन्मः संप्राप्तिः गतिजातिशब्दैर्वोऽप्योऽभिधीयते सा व्याप्तिः संप्राप्तिरित्यर्थः ।

व्याधिजनदोषव्यापारविशेषयुक्तं व्याधिज-भेदं संप्राप्ति-
शब्देन वाच्यम्, अत एव पर्याये "आगतिः" इत्युक्तम् ।
आगतिर्हि उत्पादकारणस्य व्याधिजनपर्यन्तं गमनम् ।
इयं च संप्राप्तिव्याधि-विशेषं बोधयत्येव । यथा ज्वरे
"स यदा पुरुषितः प्रविश्यामाशयम्" इत्यारभ्य 'तदा
ज्वरमभिर्नर्वर्तयति' इत्यन्तेन या संप्राप्तिरुच्यते, तया
ज्वरस्यामाशयपक्षकत्वान्मुपचातच्छ्वरसङ्पक्षवादयो धर्माः
प्रतीयन्ते । न च वाच्यं-दोषाणामयमाशयपक्षकत्वा-
दिर्धर्मः, ततश्च कारणधर्माणां निदानग्रहणेनैव ग्रहणं
भवतीति; यतः कारणधर्मोऽप्ययं पृथक् कृतोच्यते;
यथा — लिङ्गत्वविशेषेऽपि भाविन्याधिवोधकत्वविशेषात्
पूर्वरूपं पृथगुच्यते, अत एव चाभ्युपगम्येव संप्राप्ति-
लक्षणमुक्तं—“यथा दुष्टेन दोषेण यथा चातुर्विधता ।
निर्दिष्टिरामयस्यासौ संप्राप्तिर्जातिरिति” (वा. नि. अ.
१) इति । (चक्रः)

संभवः—सि. १२-४५. संभवो नाम यद्यस्मिन्नुपपद्यते
सं तस्य संभवः; यथा मुखे विच्छिन्ननीलिकादयः संभव-
न्तीत्यादि । (चक्रः)

संभारः—वि. ७-२६. तद्योग्यास्तिलद्रव्यसमुदायः ।

संभाषा—वि. ८-१५. भिषक् भिषजा सह संभाषेत ।
तद्विद्यसंभाषा हि ज्ञानाभियागसंहर्षकरी भवति,
वैदारयमपि चाभिनिर्वर्तयति, वचनशक्तिमपि चाधत्ते,
यथाभाविरीयति, पूर्वश्रुते च संदेहवतः पुनः श्रवणा-
च्छ्रुतसंशयमपकर्षति, श्रुते चासंदेहवतो भूयोऽप्यवसायम-
भिनिर्वर्तयति, शश्रुतमपि च कंचिदर्थं श्रोत्रविषयमापाद-
यति, यथाचार्यः शिष्याय श्रुतश्रुते प्रवृत्तः क्रमेणोपदि-
शति गुण्याभिमतमर्थजानं तत्परस्परं सह जल्पन्
विण्णेन विजिगीषुराह संदर्भात् तस्मात्तद्विद्यसंभाषामभि-
प्रशंसन्ति कुशलाः ।

संभाषाविधिः—वि. ८-१५. द्विविधा तु सख
तद्विद्यसंभाषा भवति—सन्धायसंभाषा, विगृह्यसंभाषा च ।

समोहः—सू. १०-२०. मनसो मोहः ।

संयोगः—नि. ६-१०. द्वयोर्वद्भ्यां वा प्रव्याणां संहती-

भावः ।

संवत्सरः—सू. ३०-२५. वत्सरः ।

संवाहनम्—सू. ७-२३; वि. २-३/२५. पाणिना
पादादिप्रदेशे सुषमभिहननमुन्मर्दनं च (चक्रः)

संश्रुतः—च. २५-२०. आश्रुतमुखः ।

संश्रुतकाष्ठः—सि. २-८. वायुनाऽल्पीकृतकोष्ठः,
वायुस्याप्तकोष्ठ इत्येके ।

संश्रुतिम्—इ. १२-५६. निष्पत्तिम् ।

संशमनम्—वि. ३-३१६. न शोधयति यद्दोषान्
समाप्नोदीत्यपि । समीकरोति च क्रुद्धास्तत् संशमनमुच्यते ॥
(सू. सू. ३९-७ डल्हनः)

संशयः—वि. १२-४३. विशेषाकांक्षाऽनिर्धारितोभय-
विषयज्ञानम्; यथा मातरं पितरं चैकं मन्यन्ते जन्मकारणम् ।
स्वभावं परानर्माणं यदृच्छां चापरे जनाः (सू. अ. ११) ।

संशोधनम्—च. ३-२२७. रूपानाद् यद्विर्नयेद्-
धर्मवधो वा मलसंशयम् । देहसंशोधनं तत् स्याद् देव-
दालीफलं यथा ॥ (व. द.)

संसर्गः—सि. ८-२१. दोषद्वयमेलकः ।

संसर्गः—शा.-३-३. मैथुनम् ।

संसर्जनक्रमः—सू. १६-२६. पेयादिक्रमः ।

संस्पृष्टः—वि. ३-१२९. शुभमभूताः

संस्कारः—सू. २६-३४; वि. १-२२. संस्कारो हि
शुणान्तराधानमुच्यते । ते 'शुणास्तेषां विनसंनिकर्षशौच-
मन्यनदेशकालवासनभावनादिभिः कालप्रकर्षमाजनादिभिः
धीयन्ते ॥

संस्कारवाहः—शा. २-१९. संस्कारेण यस्मिन्वाजी-
करणादिना परं यस्य शुकमदुष्टद्वारं सत् प्रवर्तते स
संस्कारवाहः (चक्रः)

संस्तम्भः—सि. ९-४०. स्तम्भता ।

संस्थानम्-नि. १-९. संस्थानमाकृतिर्ज्ञेया सुपमा
विषया च या (इ. अ. ७)।

संस्नेहनम्-वि. १-२९. संसर्जदनुवापनम्।

संस्पर्शनम्-वि. २-४/४६. संस्पर्शनवान्।

संस्पर्शस्निहः-वि. ७-२४. हस्तादिस्पर्शेन स्नि-
वेदनावान्।

संस्वादविशेषः-सू. २६-८. रसानामवान्तरभेदः।
संस्वादभेदस्तु एकस्यामपि मधुरजाताविधुक्षीरगुडादिगतः
प्रत्यक्षमेव भेदो दृश्यते, स तु संस्वादभेदः स्वसंवेद्य एव;
यदुक्तं-“इधुक्षीरगुडादीनां माधुर्यस्यान्तरं महत्। भेदस्तथापि
नाख्यातुं सरस्वाद्याऽपि शक्यते” इति ॥ (चक्रः)

संज्ञनम्-शा. ८-३२. शरीरम्। (रा. ति.)

संहर्षः-वि. ८-१५. स्पर्धा।

संहर्षणः-सू. २५-५०. मनःप्रसन्नताजनकः।

सांख्यः-शा. ५-१७. संख्या तत्त्वज्ञानं, तया वर्तत
इति सांख्यः (चक्रः)

सांग्राहिकः-वि. ८-१३० ग्राही।

स्कन्धः-सि. ९-३. स्कन्धशब्देनान्तराधिरुन्मते
(चक्रः)

स्कन्धः-नि. १-२१. बाहुग्रीवासन्धिः।

स्कन्धः-सू. २५-२८. समूहः।

स्कन्धम्-इ. ३-५. व्युत्तम्।

स्तन्यजननः-सू. ४-८. सप्तदशो महाकपायः।

स्तन्यम्-वि. ३०-२२९. दुग्धम्।

स्तन्यशोधनः-सू. ४-८. अष्टदशो महाकपायः।

स्तन्याशयः-वि. ३०-२४३. स्तनः।

स्तम्भनम्-सू. २२-१२. स्तम्भनं स्तम्भयति गतिमन्तं
चलं ध्रुवम्; रोगिणश्चैत्यात्कपायस्वाद्युपाकाच्च यद् भवेत्।
वातकृत् स्तम्भनं तस्याद् यथा वातकटुण्टुभौ ॥ समीरण-
भूयिष्ठं दातव्याद् यक्ष्मस्त्वतः। विधाय वृद्धिं स्तम्भनाति
स्तम्भनं तद् यथा घटः ॥ (व. द.)

स्तम्भयम्-सू. २१-४६. अङ्गानामार्द्रपटावगुण्ठि-
तत्त्वमिव। (वै. श.)

स्थावरा-वि. २३-६. अवला।

स्थिरम्-सू. २२-१४. स्थिरो वातमलस्तम्भी। (व. द.)

स्थूलम्-सू. २२-११. स्थूल. श्याद् बन्ध-
कारकः। स्थूलः स्थौल्यकरो देहे स्रोतसामवरोधकृत्।
(व. द.)

स्निग्धम्-सू. २२-१५. स्नेहमार्दवकृत्स्निग्धो बल-
वर्णकरस्तथा। स्निग्धं वातहरं श्लेष्मकारि वृष्यं बलावहम्।
(व. द.)

स्नेहनम्-सू. २२-११. स्नेहनं स्नेहविष्यन्दमार्दव-
क्षेदकारकम्।

स्नेहपिचुः-वि. ३०-१०८. मेपजघाधितकाय-
स्नेहाप्लुतं तूलकं वस्त्रखण्डं वा (व. द.)

स्नेहमात्रा-सू. १३-२९. स्नेहस्य परिमाणम्।

स्नेहवध्यः-वि. ३-२१७. स्नेहवध्यः।

स्नेहविधिः-वि. ६-३७. स्नेहनविधिः।

स्नेहविमर्दनम्-सू. ५-८५. स्नेहेन मर्दनम्।

स्नेहविरेचनम्-वि. ५-१७२ स्नेहेन विरेचनम्।

स्नेहाभ्यङ्गः-सू. ५-८५. स्नेहेन अभ्यङ्गः।

स्नेहाशयाः-सू. १३-११. स्नेहस्थानानि।

स्नेहोपगः-सू. ४-८. एकविंशो महाकपायः।

स्नेहिकधूमः सू. ५-३७. वसाहतमधूच्छिष्टैर्युक्ति-
गुणैर्बरोपधः ॥ वर्ति मधुरकैः कृत्वा स्नेहिकी भूममाचरेत् ।
(च. सू. ५-२५३)

रूपन्दनम्-सू. १८-७ । १ ईषत्कम्पनम् ।

स्पर्शनम्-सू. ५-८७. स्पर्शनेन्द्रियम् ।

स्पर्शविज्ञानम्-सू. ३०-६ स्पर्शो विज्ञायतेऽनेनेति.
स्पर्शं वा विज्ञानातीति स्पर्शविज्ञानम् ।

स्पर्शास्तम्-चि. ७-११. स्पर्शशानाभाववत्त्वम् ।

स्पर्शासहः चि. ५-१३. हस्तादिस्पर्शेन तीव्रवेदना-
जनकः ।

स्मृतिभ्रंशः शा. १-१०१. तत्त्वज्ञाने स्मृतिर्यस्य
रजोमोहादृतात्मनः । भ्रदयते स स्मृतिभ्रंशः स्मर्तव्यं हि स्मृतौ
स्थितम् ॥

स्त्रावः-सि. ५-७. स्त्रवः ।

स्त्रावणम्-सू. ५-१५ नेत्रस्त्रावणम् ।

स्त्रावणम्-चि. २३-४५ रक्षास्त्रावणम् ।

स्त्रावी-चि. २५-२०. व्रणभेदः ।

स्त्राव्यम्-चि. १५-७५. विरेचनीयम् ।

स्त्रोतः-सू. ३०-१२ चि-५-४. स्त्रवणात् स्त्रोताधि ।

स्त्रोतसां प्रवर्तनम्-सू. १२-८ स्त्रोतसां प्रवृत्त्युत्पा-
दनम् ।

स्त्रोतसां शोधनम्-सू. २७-१९३. स्त्रोतसां शुद्धि-
कारकम् ।

स्त्रोतोधिशोधनम्-सू. २७-२२८. स्त्रोतसां शोधनम्

स्त्रंसः-सू. २०-१२ किञ्चित्त्वस्थानचलनम् ।

स्त्रंसः-इ. ३-४. मनागमनम् ।

स्त्रंसनम्-चि. २८-२४१. पक्षव्यं यदपक्षैश्चिच्छिष्टं कोष्ठे
मलादिकम् । नयत्यधः स्त्रंसनन्तद् यथा स्यात् कृत-
मालकः ॥ (व. द.)

स्त्रनः-इ. ५२२ शब्दः ।

स्त्रपनः-चि. ८-८७. निद्रा ।

स्त्रपनदर्शनम्-इ. १-३. स्त्रपनां दर्शनम् ।

स्त्रभावः-सू. ११-६. स्वकीयो भावः; परिदृश्यमान-
पृथिव्यादिभावानामेवायं स्वभावो-यत्-प्रयोगविशेषान्मि-
लिताः सन्तश्चेतनं पुरुषादिलक्षणं कार्यविशेषमारभन्ते, यथा
सुराभीजाभीनि प्रत्येकममदकराण्यापि मदकरं मद्यमारभन्ते, नात्र
कश्चिदात्मा विद्यते यस्य परलोकः स्यादिति स्वभाववादिनो
भावः । (चक्रः)

स्त्ररक्षयः चि. ८-२६ स्त्ररभेदः ।

स्त्ररश्च गन्धश्च-इ. १-१-३ स्त्ररादिप्रद्वेणेन च स्व-
राशभावोऽपि गृह्यते. तेनाश्लिष्वशब्दामावगन्धाभावाद-
योऽपि रिष्टान्यवगम्यन्ते ।

स्त्ररमः सू. १-७३. सू. ४-७ स्त्रो रघः स्त्ररघः
प्रोक्तः ।

स्त्रर्यम्-चि. ८-११५ स्त्रराय हितम् ।

स्त्रसंज्ञा-सि. १२-४४. या तन्त्रकारौर्व्यवहारार्थं संज्ञा
क्रियते सा ।

स्त्रस्त्ययनम्-सू. ३०-२१ स्त्रस्त्यवाचनम् ।

स्त्रस्थवृत्तम्-शा. ६-७. येन विधिना स्वस्थस्तिष्ठति
तदाचरणम् । (वै. शा.)

स्त्रस्थवृत्तिः-सू. १-६७. सुष्ठु अवतिष्ठते नीरोग-
त्वेनेति स्वस्थः तस्य वृत्तिः स्वस्थरूपतयाऽस्त्युत्तमम् ।

स्त्राधारम्-चि. ८-३. शोमनाभिधेयम् ।

स्वाभाविकरोगः-शा. १-११५. कालस्य परिणामेन जरामृत्युनिमित्तजाः । रोगाः स्वाभाविका दृष्टाः स्वभावो निष्प्रतिक्रियः ॥ जरामृत्युरुपास्मिताज्जाता जरामृत्यु-निमित्तमा, मृत्युशब्देनेह युगातुरुपायुःपर्यवधानभवकाल-मृत्युप्रायः किंवा जरामृत्युशैथिल्यमर्तं तस्माज्जाता जरामृत्यु निमित्तजाः; जरामृत्युनिमित्तं च प्राणिनां साधारण-देहनिर्गतकभूतस्वभावोऽष्टं च । अथ स्वाभाविकानां का चिकित्सेत्याह-स्वभाव इत्यादि । निष्प्रतिक्रिय इति साधारणचिकित्सेया रसायनवर्ज्यया न प्रतिक्रियते, रसायनेन तु प्रतिक्रियत एव; तेन “अस्य प्रयोगाच्छयवनः सुश्रद्धोऽभू-त्पुनर्युवा” (चि. अ. १.) इत्यादि रसायनप्रयोगेण समं न विरोधः; किंवा, स्वाभाविका जरादयो रसायनजनितप्रकारादुत्तरकालं पुनरवश्यं भवन्तीति निष्प्रतिक्रियत्वेनाकाः । (चक्रः)

स्वास्थ्यम्-सू. सि. ६-२६. स्वस्थता ।

स्वास्थ्यरक्षणम्-सू. ३०-२६. स्वस्थतानुपालनम् ।

स्विन्नः-सू. २७-२५७. उत्स्विन्नधान्यतण्डुलकृतः, किंवा सप्त्यवस्विन्नत्वेन मृदुभूतः ।

स्वेदः-सू. १४-१. तप्तैः चैकतपाणिनांस्वयमपैः स्वेदोऽथवाह्नारकैर्लेपाद् बातहरेः सहाम्ललवणस्नेहेः सुखोष्णैस्तथा । एवं तप्तज्योऽप्युवातशमनक्राथ दिसैकादिभि-स्तप्तेस्तोयनिषेवनोद्भववृद्धद्वार्षः शिगार्चैः कृत्वा ॥ (व. ६.)

स्वेदनम्-सू. २२-११ स्वेदनात् गतं स्वेदनं स्वेदकारकम् ।

स्वेदवाहीनि स्त्राणांसि-वि. ५-८. स्वेदवहा धमन्यः ।

स्वेदोपगः-सू. ४-१३. (२०) द्वारिणो महाकपायः ।

एतुः-इ. ३-५. कपोलाभ्या परा चित्तुःस्याधो हनुः ।

हरितकम्-सू. ८-२०. आर्द्रकादि ।

हरितम्-चि. ८-५१. क्षीरोपदिग्गतवर्गवत् ।

हर्षः-चि. २/४. संकलपूर्वकशुक्रोद्रेकवज्रोच्छ्रायादि-कारीच्छा ।

हस्तौ-इ. १-१२. भुजौ ।

हावः-चि. २-१ । १. नरं प्रति स्त्रीणां शृङ्गारचेष्टाविशेषः ।

हिक्काघनम्-सि. ७-२७. हिक्काचिकित्सोक्तं भेषजम् ।

हिक्कानिग्रहणः-सू. ४-८. त्रिशो महाकपायः ।

हितम्-सि. २-२४. पथ्यम् ।

हिताशनैः उपेक्षेत-चि. ५-४६. हिताशनस्तिष्ठेत्, न किञ्चिद्वेपथं कुर्यात् ।

हिताशी-चि. ९-९६. पथ्याशी ।

हिताहितम्-सू. २५-३२. ३३. भगवन्तमात्रेय-मभिवेश उवाच-कथमिह भगवन् हिताहितानामाहार-जातानां लक्षणमनपवादमभिजानीमहे । तमुवाच भगवानात्रेयः-यदाहारजातमभिवेश समाश्वेव शरीर-धातुः प्रकृतौ स्थापयति विषमांश्च समीक्यतीत्येतद्धितं विद्धि, विपरीतं त्वहितमिति; इत्येतद्धिताहितलक्षणमन-पवादं भवति ।

हिमम्-सू. २७-२००. हिमवच्छिखरादिभ्यो द्रवी भूयांभिवर्षति । यत्तदेव हिमं हेमं जलमाहुर्मनीषिणः ॥ (वै. शा.)

हीनतेजाः-चि. ३-३३५. हीनकान्तिः ।

हीनदृष्टिके-इ. ३-६. अदूरदर्शिनी, नष्टदृष्टिके वा ।

हीनमात्रम्-सि. १-५९. हीनमात्रायां प्रयुक्तम् ।

हीनयोगः-शा. १-१२८. हीनयोगेनेहायोगो प्राणः ।

हीनसत्त्वम्-चि. ९-२१. हीनमनसम् ।

हीनाग्निः-सि. ६-५८. मन्दाग्निः ।

हृत्-सि. १-१६. हृदयम् ।

हृदयम्-सू. ३०-६, ७. यद्धि तप स्पर्शविज्ञानं धारि तत्तत्र संश्रितम् ॥ तत् परसौजमः स्थानं तत्र चैतन्य-संग्रहः । हृदयं मदर्थश्च तस्मादुक्तं चिकित्सकैः ॥

हृदयापकर्षणम्-सि. २-९ हृदयहिंसनम् ।

हृद्यः-सू. ४-८ सि. २३-५५ मनोहरः ।

हृद्विशोधनम्-सि. ७-१७ हृदयस्य विशोधनम् ।

हृह्रासः-चि. ५-१५. उपस्थितवमनत्ववान् उल्लेखः ।

हृष्टः-सि. ९-५४ स्तब्धः ।

हेतुः-सि. १-३८. कारणम् ।

हेतुचतुष्टयम्-सू. ८-३० चत्वारो हेतवः ।

हेतुप्रतीक्षिणः-सू. ३८-३२. ईरणाद्यपेक्षिणः ।

हेतुवर्जनम्-त्रि. ७-२७ निदानस्य त्यागः ।

हेतुविपरीतः-नि. १-१०. निदानेन विपरीतः ।

हेतुविपरीतार्थकारि-नि. १-१० हेतुना विपरीतार्थ-
कारि; विपरीतार्थकारि तदेवोच्यते यद्विपरीततयाऽऽपाततः
प्रतीयमानं विपरीतस्यार्थं प्रसमलक्षणं करोति (चक्रः)

हेतुवैषम्यम्-सू. १६-२७ हताः विषमता ।

हेतुव्याधिविपरीताः-नि. १-१०. हेतुना तथा
व्याधिना तथा हेतुव्याधिभ्यां च विपरीताः ।

हेत्वर्थः-सि. १२-४१ हेत्वर्थो नाम यदन्यत्रातिहि-
तमन्यत्रोपपद्यते; यथा-“समानगुणाभ्यासो हि धातूनां वृद्धि-
कारणम्” (सू. भ. १२) इति वातमधिकृत्योक्तं, तत्र वात-
स्येतिवक्ष्ये यदयं समानशब्दं धातूनामिति करोति, तेन यथा
वायोऽस्य रसादीनामपि समानगुणाभ्यासो वृद्धिकारणमिति
गम्यते । (चक्रः)

हेत्वाभासाः-वि. ८-५९. हेतुवदाभासन्त इति हेत्वा-
भासाः । (चक्रः)

होमः-सू. ३०-२१. हवनम् ।

हंसोदकम्-सू. ६-४७ दिवा सूर्यास्तसंज्ञं निशि
चन्द्रांशुशीतलम् । कालेन पक्वं निर्दोषममस्त्येनाविपीकृतम् ।
हंसोदकमिति स्यात्.... ।

हासः-शा. ६-९. क्षयः ।

हीमत्त्वम्-चि. ८-२०. लज्जावस्त्वम् ।

च र क संहितागतः

The group of waters

चरकसंहिताटीकाकारभक्तपाणिदत्तः

सुश्रुतसंहिताटीकाकारो
बहुलाचार्यः

- १ ऐन्द्रं जलम् ऐन्द्रमिति प्राण्यदृष्टवशेनेन्द्रप्रेरितम्
२ कारम् करा वर्षोपलास्तेषां तोमम्
३ हिमम् (हैमम्) तदेव (अवदयावजं निशाजलमेव) संहतावभवत्वेन
स्फटिकशिलाशकलसरशावयवं हिमं तद्भवं हैमम्

च र क संहितागतः

The group of milks

- १ गव्यं पयः
२ महिषीपयः (माहिषम्)
३ चट्टीपयः (भौष्टकम्)
४ ऐकशकं पयः ऐकशकमिति बडवायाः
५ छागं पयः (आजम्)
६ क्षाविकं पयः
७ हस्तिनीपयः
८ मातुषं पयः
९ दधि
१० मन्दकम् यदा क्षीरे विक्रियामापन्नं घनत्वं न याति तदा
तन्मन्दकम्
११ जातदधि मन्दकावस्यामुत्सृज्य घनतया जातम्
१२ घृतः दधुपरिस्नेहः
१३ मण्डः दधिमण्डो मस्तिवर्यर्थः
१४ राक्षम्

ज ल व र्गः ।

in the Caraka Samhita

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री

आन्तरिक्षम् (अ.); दिव्यम् (दि.)

निरुपपत्त्यादि

इन्द्रस्य इदम् ऐन्द्रम्

कराणामिदम्

ॐ नमः शिवाय
भारतसर्वोदय आधुनिक पाठशाला

गौरसवर्गः ।

in the Caraka Samhita

महिष्या इदम्

उष्ट्रीणां क्षीरम् (अ.); कारभम् (दि.)

वाक्-छागलं क्षीरम्

गोरिदं गव्यं पीयते इति पयः

महिष्याः पयः

उष्ट्रपाः पयः

एकशकाया इदं ऐकशकम्

छाग्या इदं छागम्

अव्या इदं आभिकम्

हस्तिन्याः पयः

मानुष्या इदम्

मण्डयति इति

तथति द्रुतं मण्डति इति, तर्कं पादजलं श्लोकम्

चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डब्बणाचार्यः

१५ नवनीतम्

१६ घृतम्

१७ पीयूषः

सद्यःप्रसूतायाः क्षीरम्

सद्यःप्रसूतायाः गोः क्षीरं सप्ताहं चावय

१८ मोरटम् (मोरटः)

तदेव (सद्यःप्रसूतायाः क्षीरमेव) यावन्न परतः
प्रसन्नतां याति तावत् 'मोरट' इत्युच्यते

तदेव सप्ताहात् परतो यावत्प्रसन्नतां न गच्छति
तावत् 'मोरट' इत्युच्यते

१९ किलाटः

नष्टक्षीरभागः यं लोका क्षीरसामित्वाहुः

कूर्बिकीभूतक्षीरस्य घनभागः किलाटः; यं
लोकाः क्षीराश्रमित्वाहुः

२० तक्रपिण्डकः

तक्रकृषिकाया एव सुतद्रवो घनो भागः

च र क सं हि ता ग तः

The group of the products of Sugarcane

१ इक्षुः

२ पीण्डकः

३ वंशकः

४ गुडः

५ क्षुद्रो गुडः

असित गुड इत्युच्यते

६ धौतगुडः

७ मत्स्यगिडिका

खण्डमध्ये पाकात् पत्रोभूता

मत्स्याण्डनिभा

८ खण्डशर्करा

९ गुडशर्करा

१० यासशर्करा

दुरालभाकायहृता शर्करा

११ मधुशर्करा

मधुभाण्डेषु शर्कराकारा भवति

१ माक्षिकम्

२ आमरम्

मक्षिकाः पित्रलाः तद्भवम्

च र क सं हि ता ग तः

The group of Honeys

सद्यःकृत्यटीकाकारावरुणदत्तदेनाद्री

निरुचयादि

दण्णो मयितान्नयं तरकाळं नीतमुष्णुतं नवनीतं घृतयोनिः

मियते इति घृतम् ।

पीयते

मुरति इति मोरटः

इक्षु व र्गः

In the Caraka Samhitā

तक्रस्य पिष्टः

इज्जते इति इक्षुः

पुण्ड्रदेशे जातः

गुडति इति

मन्दं स्यन्दते इति; मत्स्यानमति रुजति इति; शर्करोष्णं तु
मीनाण्ड्री भेत्ता मत्स्यष्टिका क्षिता । (घन्वन्तरीयनिघण्टुः
२-१०४)

मधु व र्गः

in the Caraka Samhitā

अमरैः निर्मितम्

चरकसंहितातट्टीकाकारश्चक्रपाणिदत्तश्च सुश्रुतसंहितातट्टीकाकारो डल्हणाचार्यश्च

- ३ क्षौद्रम् क्षुद्रमक्षिकामवम् ।
४ पौष्टिकम् पित्रला मक्षिका महत्यः पुष्टिकाः तद्भवम् ।

च र क संहितागतः
The Group of cooked foods

- १ पेया बहुद्रवा यवागूः (चक्रः) पेया सिक्थसमन्विता (सु.) यवागूर्विरलद्रवा । (सु.) अत्र पेया यवागूर्व्यते, सा च सिक्थसमन्विता भवति । पेया यवाग्वपरपर्याया सिक्थसमन्विता विरलद्रवा । (ड.)
- २ विलेपिका (विलेपी) विरलद्रवा यवागूः (चक्रः) विलेपी बहुसिक्था स्यात् (सु.) बहुसिक्था घनसिक्था पृथग्द्रवरहिता अत एव लेप्या (ड.)
- ३ मण्डः तदुपरितनो (पेयाया उपरितनो) भागः (ड.) सिक्थविरहितः (सु.)
- ४ क्षौदनः
- ५ कुलमापः यवपिष्टमुष्णोदकसिक्थमीपस्विन्नमपूपीकृतम् । यवपिष्टमुष्णोदके सिक्थमीपस्विन्नमृदिते शङ्गा-टादिप्रकारं कुलमापमाहुः 'यवादयः स्विन्ना' इत्येके (ड.) (चक्रः) ।
- ६ स्विन्नमक्षयाः उत्स्नेदनमात्रकृताहण्डरिकादयः ।
- ७ अकृतयूषः अस्नेहलयणं सर्वमकृतं कटुकैर्भिना (चक्रः) अस्नेहलयणं सर्वमकृतं कटुकैर्भिना ।
- ८ कृतयूषः विशेषं लवणस्नेहकटुकैः संस्कृतं कृतम् ॥ विशेषं लवणस्नेहकटुकैः संस्कृतं कृतम् ॥ (सु.) (सु. स. अ. ४६) [चक्रः]
- ९ यूपः
- १० सूपः
- ११ सक्तुः
- १२ अपूपः
- १३ घाव्यः मृष्टयवौदनः । (चक्रः) यवगोधूमादिभिर्दलितैः कृतः अन्ये तु मृष्टयव-कृतो भक्ष्य इत्याहुः । (ड.)

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री

निरुक्त्यादि

कु ता न्न व र्गः ।
in the Caraka Samhita

पेया सिक्यसमन्विता; निर्देव्या प्राकृता पेया तक्त-
दाडिमतण्डुलैः (अ.) अल्पसिक्या पेया (हे.) पातुं योग्या ।

घनसिक्या विलेपी स्यात् (अ.) बहुसिक्या विलेपी (हे.) विलिम्पति इति ।

सिक्यैर्यैरदितो मण्डः; लाजाम्बुसैन्धवकणाधाम्यनागर-
दाडिमैः। युक्तो विमृदितः पृतो मण्डः संस्कृत उच्यते॥(अ.) मण्डयति इति ।
असिक्यो द्रवो मण्डः (हे.)

अद्रवाणि सिक्यानि ओदनः। (हे.) उन्नति-क्लिपति इति

यूषो भान्यैः (हे.)

यूषति इति

मृष्टानां निस्तुषयवानां चूर्णम् (हे.)

भानाचूर्णं सक्तवः स्तुः

न पूयते न विशीर्यते, अद्रिरुप्यते इति नैरुक्ताः

चरकसंहितातट्टीकाकारश्चक्रपाणिदत्तश्च सुभुतसंहितातट्टीकाकारो ब्रह्मणाचार्यश्च

| | | |
|---------------------|---|---|
| १४ धानाः | मृद्वयवाः (चक्रः) | मृष्टयवाः (द) |
| १५ विरुद्धधानाः | अद्भुतस्य यवस्य धानाः (चक्रः) | |
| १६ द्राक्कुल्यः | शालिपिष्टैः घतिलैश्चैलपक्वाः क्रियन्ते | 'शांकुली' इति लोके (र.) |
| १७ मधुकोडाः | पारुपनीमूतमधुगर्भाः; मधुसीर्षक एव मधुकोडः (चक्रः) | |
| १८ पूषाः | पिण्डिकाः (चक्रः) | 'पुना' इति लोके (र.) |
| १९ पूषलिका | चापदिकैतिख्याता (चक्रः) | |
| २० वेशवारः | मांसं निरस्त्रि च स्वेवं पुनर्द्वेपदि पेयितम् । विष्पलीशुण्डिमरिचगुण्डवर्षिः समन्वितम् ॥ ऐक्यं विपचेत्सम्यग्वेशवार इति स्मृतः । | मांसं निरस्त्रि च स्वेवं पुनर्द्वेपदि पेयितम् ॥ विष्प- लीशुण्डिमरिचगुण्डवर्षिः समन्वितम् । ऐक्यं पाचयेत् सम्यग्वेशवार इति स्मृतः ॥ (र.) |
| २१ क्षीरपूषकाः | क्षीरप्रधानाः पूषाः (चक्रः) | |
| २२ हस्तुरसपूषकाः | | |
| २३ पाडवः | पाडवस्तु मधुराम्लद्रव्यकृतः (चक्रः) | स्पष्टाम्लमधुरोऽस्पष्टरूपाम्लवर्णोषणः । अतिफः खाडवः कोलकपित्वाद्युपहृतः (र.) |
| २४ पर्पटः | | |
| २५ पृथुकाः | पिण्डिकाः (चक्रः) | आर्द्रशालिधान्यं मृदु मृष्टं सुखलाघातविष्पटी भूतावयवं 'पृथुका' इत्युच्यते (र.) |
| २६ विमर्दकः | नानाद्रव्यैः समायुक्तः पक्वामस्निन्नभिजितैः (चक्रः) | |
| २७ रसाला | सचतुर्जातकाजानि ससितार्द्रकनागरम् । रसाला स्याच्छिखरिणी संघृष्टं ससरं इति (चक्रः) | शिखरिणी (र.) |
| २८ पानकम् | | पानकानि अम्लिकादाक्षादिकृतानि (र.) |
| २९ रागपाडवः | कथितं तु गदोपेतं सहकारफलं नवम् । तैलनागर- संयुक्तं बिज्ञेयो रागपाडवः (चक्रः) | स तु दाडिममृद्वीकायुक्तः स्याद्रागपाडवः (र.) स इति मुद्रयूषः (र.) |
| ३० आत्रामलकलेङ्गाः | आत्रामलकलेङ्गास्तु तयोः प्रयक् कायेन सशर्करेण घनाः क्रियन्ते । | |
| ३१ शुक्रम् (चक्रम्) | यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सगुडक्षौद्रकाजिकम् । धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं शुक्तं शुक्रं तदुच्यते (चक्रः) | |

अष्टाङ्गद्वयटीकाकारावरुणवृत्तहेमाद्री

घाना मृष्टववादि (अ.) मृष्टववादि धान्वम् (हे.)

निरुक्त्यादि

वीर्यते इति, घानाः शुष्कमृष्टयवाः (अ. को.)

मधु कोष्ठे येषां से

पुनरिति इति

पूषं तदाकारं ऋति

स्विन्नं पिष्टं शुष्कजीरकादिभिर्भित्तं मांसम् (हे.) नागर-
पाम्यकाजाजिह्वपृतादिसंस्कृतं मांसम् (अ.) (हे.)

क्षीरे भाविताः पूषकाः इति शिवदाससेनः

इक्षुरसे भाविताः पूषकाः इति सिद्धदाससेनः

पृथुकाक्षिपितसंज्ञाः (अ.) अशुष्कभान्यानां मृष्टा-
स्तण्डुलाः (हे.)

करमयितेन मरिचशर्करादियुक्तेन दध्ना कृता उल्लेखिका-
संज्ञा (अ.) मरिचशर्करादियुक्तं करमयितं दधि (हे.)

पुत्राम्लिकादिसंस्कृतमुदकादिकम् (हे.)

निमर्दकः। विमर्दकः घृतपुष्पकान्वितद्रव्यमिति कैचित्
[अ. को.]

रसमलति इति। दधिसितामरीचादिकृतं लेणम्।

पानाय कामति इति

लिप्यन्त इति

शुक्तं कन्ददिघन्धानम्। कन्दमूलफलादीनि सस्नेह-
लवणानि च। यत्रैकस्याभिरुयन्ते तच्छुक्तमभिधीयते (हे.)

ईशुचिर् पूतीभावे, पूतीभावः क्लेदः शुच्यति इति,
उच्यतेऽनेनेति चुकम्

चरकसंहिता तट्टीकाकारभक्तपाणिदत्तस्य सुश्रुतसंहिता तट्टीकाकारो उद्धणाचार्यस्य

- ३२ सिण्डाकी सिण्डाकी-स्वनामप्रसिद्धा तीरभुक्ता (चक्रः) मूलकादि शाकमेव किंचित् स्विन्नं क्षुण्णं सुगन्धिकटुकमन्यान्वितं वटकीकृतं सुप्तेषु “सिण्डाकी” इत्युच्यते, अन्ये तु “शाक-सिक्थमण्डाकृतिः सिण्डाकी” इत्याहुः
- ३३ उत्कारिका
- ३४ लदमन्यः लदकप्रधानो मन्यः (चक्रः)
- ३५ काम्बलिकः दधिलवणस्नेहतिलादिकृत ईषदम्लः (चक्रः) अथ काम्बलिकोऽपरः ॥ दध्यम्ललवणस्नेह-तिलमाषसमन्वितः । (ड.)
- ३६ किलाटः नष्टक्षीरभागः सै लोकाः क्षीरसामित्याहुः (चक्रः) क्षीरकूर्चिकापिण्डः
- ३७ कृशरा तिलतण्डुलमाषकृता यवागूः (चक्रः) तिलतण्डुलमाषकृता यवागूः (ड.)
- ३८ खडः सशाकपल्लवेन कृतो यूषः (चक्रः) खडो द्विविधः—सतकशमीधान्यः सतकशाकश्च । तथा हि—“सतकाणि शमीधान्यानि स्निग्धानि संग्राहकाणि खडानि” इति, सतकशाकस्तु “कवित्यतकचात्रेतीमरिचाजिचिवकैः । सुपकः खडयूषोऽयम्....” इति (ड.)
- ३९ पायसः परमाढ्यम् (चक्रः)
- ४० फाणितम् (शुडस्य) तन्तुलीभावाद्भवति (चक्रः)
- ४१ मन्यः सफवः सर्पिषा युचाः शीतवारिपरिप्लुताः । नात्यच्छा नातिसान्द्राश्च मन्य इत्यभिधीयते ॥ (चक्रः)
- ४२ लाजाः
- ४३ तक्रम्
- ४४ लक्षित्
- ४५ कूर्चिका क्षीरेण समं दधि तक्रं वा पक्वम् (चक्रः) विग्रहितं क्षीरं घनत्वमापन्नं कूर्चिका (ड.)

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरणदत्तहोमाद्री

निरुपस्थादि

मूलकसर्पपश्यानि ग्रथितासुतानि कालजीरकराजिका-
चूर्णमावितान्यम्लवीक्षणानि शाण्डाकीशब्देनोच्यन्ते (अ.)
शाकमुद्गरादिबटवन्धानं शाण्डाकी । सर्पं च “शाण्डाकी
कन्दमूलादिमुद्गरादिवटकेः कृता ॥” तथा “मूलकच्छेद-
तन्धानं शाण्डाकी स्यात् बहुदवा ॥” इति (ऐ.)

एकीर्यते इति

उदबालोद्विताः सफणः सफणिका उदमन्मयाच्या
जलावक्षीरिवशाः (अ.) दवालोद्विताः सफणो मन्मः, स
एवोदके द्रवे उदमन्मः (ऐ.)

उदकेन सह मध्यते इति

तिलहृदयम्लप्रायः काश्चलिकः स्मृतः [ऐ.]

अल्पक्षीरो बहुना तमेण कृतः (अ.) दध्ना तमेण वा सह
पाकात् तमोर्ध्वमागः पृथग्भूतः किलाटः [ऐ.]

कृताय (बले) राति इति

रालः फलेः मूलेष्व [ऐ.]

पयसा संस्कृतः

शुद्धगुणीभूत इक्षुरसः [अ.]

पाण्यते द्रवत्वात् इति फाणितं खण्डश्चेता

मध्यते इति

शृणानां शानीनां सण्डुलाः [ऐ.]

लण्यन्ते इति

मयितं दधि तक्रम् [ऐ.]

तक्रं चतुर्भागाम्बु । तत्रति द्रुतं मच्छति इति

दधितक्रकृता किलाटिका [अ.]

उदधिदर्पाम्बु, उदकेन क्षयति इति

दध्ना तमेण वा सहपाकारुष्टमभूतं घनदधमागं क्षीरम् [ऐ.]

कृत्वास्तक्रंमस्तु अस्ति अस्याः

अथ रक्तसंहितातट्टीकाकारकपाणिनिरचिता सुश्रुतसंहितातट्टीकाकारे बह्विधाचार्यः

४६ मरुतु

४७ चवागू

चवागूर्बिलद्वया । (घ.)

४८ पिङ्गाकः

तिलकलकः (चक्रः)

प्रसङ्गवर्गः

अथ रक्तसंहितातट्टीकाकारे
The group of Creatures

| | | |
|-----------------------|---|--|
| १ गौः | | |
| २ खरः | गर्भजः | गर्भज |
| ३ अश्वतरः | वेगधरः अथ अश्वयां करज्जातः | अश्वयां गर्भमेव जनितो "वेधर" इति लोके, |
| ४ चट्टः | | करमः |
| ५ अश्वः | | घोटकः |
| ६ द्वीपी | चित्रव्याघ्रः | व्याघ्रभेदश्चित्रव्याघ्रः, "चित्रक" इति लोके । |
| ७ विहः | | पराकमी निद्रालः |
| ८ श्लक्षः | मद्रूकः | मल्लकोऽतिलोमशः "रिछ" इति लोके |
| ९ वानरः | | मर्कटः |
| १० वृकः | कुङ्कुमाङ्गुली पशुपशुः | कुङ्कुमसदृशः पशुः क्षुद्रः |
| ११ व्याघ्रः | | चित्रतमुखो निद्रालुर्हिंसः |
| १२ तरक्षः | व्याघ्रभेदः "तरच्छ" इति ख्यातः | मृगशत्रुर्व्याघ्रविशेषः, 'जरख' इति लोके |
| १३ वभ्रुः (महावभ्रुः) | अतिलोमशः कुङ्कुरः पर्वतोपकण्ठे भवति । केचिद् तद् [नकुल] भेदः महावभ्रुः बृहत्कुलमाहुः | |
| १४ मारजारः | | बिडालः, गुहाशयत्वाद्दण्डविडालो बोद्धव्यः |
| १५ मूषिकः | | भूमिमूषिकः |
| १६ लोपाकः | स्वल्पशृगालो महालाङ्गूलः | शृगालभेदः, 'लाङ्गलक' इति लोके |

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणस्तथे माद्री

निरुक्त्वादि

सुनातस्य दूषो द्रवमाणो मस्तु [हे.]

मस्तुति-परिणमति इति

निरलद्रवा (अ.) सविम्वो द्रवो यवागुः (हे.)

यूयते पिष्टादिना इति

तिलादीनां निष्पीडितैः कल्कः [अ.]
चद्रुतैर्लज्जितादिभिः [हे.]

पीव्यते इति

प्रा णि वर्गः ।
in the Caraka Samhita

गच्छतीति ।

गर्दभः (हे.)

अं शब्दं रातीति, समस्त्यस्य वा इति

वेगधरः (अ.) अध्यायां गर्दभाज्जातः (हे.)

तत्तुल्यः

करमः (हे.)

उप्यते दण्डते मरी इति

तुरगः (अ.) षोडशः (हे.)

अश्वत्थेऽप्यनम् इति

चक्रव्याघ्रः द्रोणी (हे.)

द्रोणी वर्णावीमते द्रोणोऽस्त्यस्य वा तद्विषासित्वात् इति
द्रोणं द्विवर्णं चर्म तदस्त्यस्य इति वा

केसरी (हे.)

हिनस्ति इति

लोमशो मर्कटप्रदः (हे.)

नाशति, मर्कटोति हिनस्ति इति

मर्कटः (हे.)

वने रमते इति वनरः तस्यायम्

वराहभक्षकः (हे.)

वर्हते इति

महाव्याघ्रः (हे.)

व्याघ्रिग्रहन्ति इति

नृगादनः (हे.)

तर् (मोर्गे) क्षिणोति (क्षणदि) इति

जाह्नवी, नकुल इत्यन्ये (अ.) अच्छमातः (हे.)

विमर्ति इति

विडालः (हे.)

आसृभ्यो गृहं माष्टि इति

चन्द्रकः (हे.)

मृषति इति

लोमशः (अ.) लोमशो जम्बुकप्रदः (हे.)

चरकसंहिताटीकाकारअक्रपाणिदत्तः

सुश्रुतसंहिताटीकाकारो ङरहणाचार्यः

१७ जम्बुकः

शृगालः

१८ इयेनः

सिद्धान्तो गरुडान्वयः

१९ वान्तादः

कुङ्कुरः

२० चापः

कनकवायसः

इन्द्रनीलमणिषट्शपक्षः शस्तदर्शनः 'करटाशन'
इति कोके प्रसिद्धः

२१ वायसः

२२ शशज्जी [शशपाती] 'पाञ्जिः' इति ख्याता

चिह्नपाकारो महाचरणनखः प्रहारेण शशकाहरण-
शीलः 'शशामि' इति कोके

२३ मधुदा

२४ भासः

भस्मवर्णः पक्षी शिखावान्

गोकुलचारी गृध्रविशेषः धेतशिखावान्,

२५ गृध्रः

मांसाशी योजनदण्डिः .

२६ उल्लकः

कौशिकः

२७ कुलिङ्गकः

कालचटकः कुलिङ्गः

कुलिङ्गो वन्यचटको ग्राम्यचटकाकारः ।

२८ धूमिका

चिह्नपाकारो नादोऽस्यापितमस्सो हस्तमस्स-
ग्राही 'कुरल' इतिलोके ।

२९ कुररः

भूमिशयवर्गः

१ धेतः काकुलीमृगः

काकुलीमृगः "माडयावर्ग" इति ख्यातः
तस्य धेत इत्यादयश्चत्वारो भेदाः

२ इयामः

,,

३ चित्रपृष्ठः

,,

४ कालकः

,,

५ कृदिफा

सङ्ख्यः

६ चिह्नटः

चिह्नारः

अष्टाक्षरव्यटीकारावरुणदत्तहेमाद्री

निरुक्त्यादि

शृगालः (अ.) (हे.)

जमति इति

गरुडाकृतिः (अ.) शशानकः (हे.)

श्यायते इति

श्या (अ.) (हे.)

वान्तमति इति

किक्कीदिविः (अ.)

चपति इति

काकः (अ.) (हे.)

वय एव वायसः वयते वा

शशारिः (हे.)

शशं हन्ति इति

मधुघातकः [हे.]

मधु हन्ति इति

श्वेतशिखारिः गृध्रसदृशो गोष्ठचारी [हे.]

कृष्णो महान् दूरदर्शी [हे.]

गृध्रयति मांसम् इति

काकारिः [अ.] घृकः [हे.]

उलति नेत्राभ्यां दहति इति

कृष्णवटकः [अ.] कुलिङ्गो गृध्रवटकः (हे.)

कौ लिङ्गति-गच्छति, यद्वा कुरिष्यतं कृष्णवर्णं लिङ्गं वर्णं यस्य सः

धूम्याटः (हे.)

धूम इव जलीयपदार्थोऽस्ति अस्याः

वरुणः श्वेतमस्तको मरुत्यमाही (हे.)

कुरेति शब्दं राति इति

चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः

सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डबहणाचार्यः

७ मेकः

८ गोधा

९ शलकः महाशकली 'शलक' इति ख्यातः

शल्यको वज्रशकलो बृहद्रोधानुकारी 'साला' इति लोके

१० गण्डकः गोवाभेदः

११ कदली "कदलीहट्ट" इति ख्यातः

महाबिडालसमो व्याघाकारः "कदलीहण्ड" इति पौण्ड्रे प्रसिद्धः अन्ये सर्पविशेषमाहुः ।

१२ नकुलः

भुजङ्गशत्रुः

१३ श्वाविव 'शेजक' इति ख्यातः

स्वविषदशरोमयुक्ता 'सिंह' इति लोके

आनूपवर्गः

१ लमरः महाशकरः

महाशकरः, अन्ये तु महाश्वकारश्चमरान्तकः

२ लमरः केसामृत्युः

केसामृत्युर्गोषदशः

३ लमः (बह्नी) गण्डकः

गण्डकः

४ महिषः

५ गवयः गवाकारः

गोषदशः

६ गजः

हस्ती

७ न्यग्रुः न्यग्रुशो हरिणः

'न्यग्रुण' इति लोके

८ वराहः

शूकरः

९ हरः बहुशृङ्गो हरिणः

शरदि शृङ्गत्यागी, तल्लक्षणमुच्यते 'विकटबहु-
विषाणः शम्भराकारदेहः सलिलतटवरत्वाच्छ-
म्बरेभ्यो विचित्रः । त्यजति शरदि शृङ्गं रौत्वतो
ऽसौ हरः स्यात्पृथुलमृगविशेषः प्रायशश्चेदि-
देशे ॥ इति ।

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरणदसहेमाद्री

निरुक्त्यादि

मण्डकः [हे.]

विभेति इति

पद्मनखमाहिणी [हे.]

गुम्नाति इति

गण्डति-गृह्ण्यते इति

शलाकासदृशरोमा [हे.]

नाष्टि क्लृप्तमस्य इति

श्वानं विष्यति इति

वनतुरगः [हे.]

सरति इति

बन्धो गौः [हे.]

चमति इति

गण्डकः [हे.]

खड्गति-भिनति, इति

अश्वशत्रुः [हे.]

महति, मर्यां शेते इति वा

सारनाम्नकुदरहितो गोसदृशः [हे.]

शुवति, गवते इति वा, गवं शब्दं याति प्राप्नोति गवं
इति शब्दं याति इति वा

दस्ती [य.] [हे.]

गजति मायति इति

कुरङ्गसदृशो विरुट्बहुविषाणः [हे.]

न्यसति इति

शकरः [हे.]

वरमाहन्ति इति

बहुविषाणः शरदि शत्रुत्यागो [हे.]

रौति इति

चरकसंहिताटीकाकारकृपाणिदत्तः

सुश्रुतसंहिताटीकाकारो ब्रह्मणाचार्यः

चारिश्यवर्गः

| | | |
|------------|---------------------|--|
| १ कर्मः | | कच्छपः |
| २ कर्कटकः | | द्विविधः शुक्रकृष्णभेदेन |
| ३ मत्स्यः | | |
| ४ शिशुमारः | गोमुण्डनकः | हत्याकारोऽन्तर्वक्त्रो बहिर्निःश्वासमुक्, सोऽपि द्विविधो बर्तुलदीर्घभेदेन दीर्घ'फाणित' इति लोकाः प्राहुः |
| ५ तिमिजितः | सामुद्रो महामत्स्यः | तिमिर्बहुतमो मत्स्यः, तिमिजितस्ततोऽपि महत्तमः |
| ६ शुक्तिः | मुष्काप्रमथो जन्तुः | समुद्रजा शिम्पिः |
| ७ शङ्खः | | |
| ८ ऊदः | जलविडम्बा | ऊदः पानीयविडम्बाः 'भोदन' इति लोके |
| ९ कुम्भीरः | घटिकावान् | नानाभेदो घटियालगोषादिभेदेन |
| १० चुडकी | "शुश्रु" इति ख्यातः | |
| ११ मत्सरः | | हिंस्रदंष्ट्रकः |

जलचरवर्गः

| | | |
|----------------------|-------------------------------|---|
| १ हंसः | हंसध्वनिधोऽपि राजहंसादिप्राणः | कलस्वरो ललितगतिः प्रसिद्धः |
| २ कौबः | "कोब" इति ख्यातः | कौचिरः |
| ३ बलाका | शुक्रा | वक्रभेदः 'बगुली' इति लोके |
| ४ मकः | पाण्डुरपक्षः | पाण्डुरपक्षः |
| ५ कारण्डवः | काकवक्त्रः | शुक्रहंसभेदोऽल्पः अन्ये करह(ई)वमाहुः सक्तं च "कारण्डवः काकवक्त्रो वीरवक्त्रिः कृष्णवर्णमाह" इति |
| ६ छत्रः | स्वनामप्रसिद्धः प्रसेवगलः | महाप्रमाणः प्रसेवगलः "सगढ" इति लोके |
| ७ शरारिः [शरारौमुखः] | "शरारि" इति लोके | शरारीमुखः स्फिरवर्णो "गिराटी" इति लोके । |

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्रौ

निरुक्त्यादि

| | |
|---|---|
| कच्छपः [हे.] | कुरति कुर्मूर्ति इति वा |
| कुलीरः [हे.] | कृणोति इति |
| जलान्तर्वाधिनो मरस्याः [हे.] | मायति इति |
| दिशुष्णः [हे.] | |
| तिमिः शतयोजनविस्तृतः तं गिलतीति [हे.] | तिमिं गिलति इति |
| मुष्कास्फोटः [हे.] | शुक गतौ, शोषति इति |
| कम्बुः [हे.] | शाम्यति अशुभमस्मात् इति |
| जलविशालः [हे.] | चनति इति |
| महानक्रवहाः (हे.) | कुम्भिनं हस्तिनमपीरयति इति |
| तुलकी दन्त्याकारोऽन्तर्वक्त्रो बहिर्निधासमुक् (हे.) | |
| विह्वलः (हे.) | वा कुर्यात्किञ्चिदिति वक्ष्यन्त्यस्मात् इति |
| मानसीकाः (हे.) | हन्ति-गच्छति इति |
| कुर (हे.) | कुरुति इति |
| विसकण्टिका [हे.] | बलाहकान् कायति बलेनाकति याति वा |
| पाण्डुरपक्षः [हे.] | वदति इति |
| गुम्फो हंसवदः (हे.) | करणे अवं फारण्डं पञ्जरबन्धं वाति इति |
| मदान् प्रसेवकगलः (हे.) | हवते इति |
| | वारं जलं ऋच्छति इति |

शरकसंहिता तट्टीकाकारम्भकपाणिन्यस्य सुश्रुतसंहिता तट्टीकाकारो बल्लभाचार्यस्य

८ पुष्कराक्षः [पुष्कर-
शास्त्रिका]

पुष्करशास्त्रिका, पञ्चपञ्चशास्त्रिका

९ केशरी

१० मणितुण्डकः

११ मृणालकण्ठः

१२ मङ्गः

पानीमकाकः

जलकाकः

१३ बादम्बः

कलहंसः

कलहंसोऽतिधूम्रपक्षः, अन्ये तु रक्तचतुशिरः-
कृष्णपादादीनां लक्षणं कृत्वा 'कयंब' इति
पठन्ति ।

१४ काकतुण्डकः

श्वेतकारण्डकः

१५ उक्तोद्यः

"कुरल" इति ख्यातः

कुररभेदो मत्स्याशो

१६ पुण्डरीकाक्षः

पुण्डरः

पुण्डरीको नक्षत्रनयनः

१७ मेघरावः

मेघनादः चातक इत्यन्ये तन्न तस्मै भारिचरत्वा- चातकः
भावात्

१८ अम्बुकुण्डली

जलकुण्डली

जलकुण्डली कृष्णवर्णा, 'बुडियाक' इति, लोके ।

१९ आरा

आरा स्वनामख्याता

२० नन्दीमुखी

पवाटी

नन्दीमुखः पवाटी आटीभेदः

२१ वाटी

२२ सुसुखाः

२३ सहचारिणः

२४ रोहिणी

२५ कामकाली

२६ सारसः

सारसः प्रसिद्धः

लक्ष्मणेन रक्तशिराः प्रसिद्ध एव

२७ रक्तशीर्षकः

सारसभेदो- लोहितशिराः

अष्टाङ्गहृदयटीकाकाराचरणदत्तहेमाद्री

निरुक्त्यादि

मणिरिव तुण्डं यस्य सः

जलकाकः (हे.)

मज्जति इति

कलहंसः (हे.)

कदम्बल्लायं संवचारित्वात्

कुररसदृशः (हे.)

उच्चैः क्रोशति इति, उत्क्रोशकुररौ घनौ

पुण्डरीके द्वय अक्षिणी यस्य सः

मेघस्य द्वय राशौ यस्य सः

अभ्युगः कुक्कुटी

लक्ष्मणः (हे.)

सरस्वि भवः

चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः सुश्रुतसंहिता तट्टीकाकारो ढहणाचार्यश्च

| | | |
|---------------|---|---|
| २८ चक्रवाकः | | द्वन्द्वचरो निशावियोगी |
| जाङ्गलवर्गः | | |
| १ पृषतः | चित्रहरिणः | मिन्दुचित्रितः चिल इति लोके |
| २ शरभः | अष्टापद उष्ट्रप्रमाणो महाशृङ्गः पृष्ठगतचतुष्पादः काश्मीरे प्रसिद्धः | अष्टापद उष्ट्रप्रमाणो महाशृङ्गः पृष्ठगतचतुष्पादः काश्मीरे प्रसिद्धः |
| ३ रामः | हिमालये महासृगः | |
| ४ श्वर्षष्टः | चतुर्दंष्ट्रः कार्तिकपुरे प्रसिद्धः | चतुर्दंष्ट्रोऽतिदुष्टः 'कर्कटक' इति कार्तिकपुरे (८.) |
| ५ सृगमातृका | स्वल्पा पृथूदरा हरिणजातिः | अल्पा पृथूदरा चतुरङ्गलो 'भेदली' इति लोके (८.) |
| ६ शशः | | |
| ७ उरणः | | |
| ८ कुरङ्गः | हरिणभेदः | चतुरगतिः 'चतुरङ्ग' इति लोके यो न कृष्णो न ताम्रश्च कुरङ्गः सोऽभिधीयते [सु.] |
| ९ गोकर्णः | गोमुखहरिणविशेषः | गोहर्णो गोसदृशकर्णः 'गोन' इति प्रसिद्धः (८.) |
| १० कोट्टकारकः | | |
| ११ चारुङ्कः | हरिणभेदः | चारुशरीरः स्वल्पतनुर्मृगभेद एव |
| १२ हरिणः | ताम्रवर्णः | हरिणस्ताम्रउच्यते (सु.) गोरहरिणः (८.) |
| १३ एणः | कृष्णसारः | एणः कृष्णः (सु.) कृष्णहरिणः (८.) |
| १४ शम्बरः | | |
| १५ कालपुच्छकः | | |
| १६ श्रृङ्गः | नीलाण्डो हरिणः | श्रृङ्गे नीलाण्डः 'रोव' इति प्रसिद्धः (८.) |
| १७ वरपोतः | हरिणभेदः | |
| पिष्टिकरवर्गः | | |
| १ लावः | | लावः प्रसिद्धः (८.) |

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री

निरुपत्यादि

चक्राहः (हे.)

चक्र इत्याख्यया चक्ष्यतेऽसाविति

अष्टचरणः (हे.)

पृषन्ति बिन्दवः सन्ति अस्य इति मत्वर्थीयः अच्

शृणाति इति

रमन्तेऽस्मिन् इति

शूनो दंष्ट्रेष्व दंष्ट्रा यस्य सः

लघुतृदरा दाशाभा (हे.)

दाशति प्लुता गच्छति इति

मिलेशयः (हे.)

उच्चै रणो यस्य, उरण्यति देवताः प्रीणातीति श्री-
भोजः कण्ड्वादिपाठात्

लघुचतुरगतिः (हे.)

कौ रक्षति इति

गोमदशकणो रासभाकारः (हे.)

गोः कर्णाविव कर्णौ यस्य

चारुजनुः (हे.)

ह्रियते गीतेन इति

तामरणः (हे.)

एति इति

कुण्डवर्णः (हे.)

संवृणोति इति

विकटघट्टविषाणः (हे.)

नीलाण्डः (हे.)

श्लषति इति श्लषीगतौ इत्यस्मात् । इयति इति वा

स्वित्रयोषी (हे.)

ल्यति (लावयति) ल्यते इति वा ।

| चरकसंहिताटीकाकारभ्रूपाणिदत्तः | | सुश्रुतसंहिताटीकाकारो ङ्ग्रहणाचार्यः |
|-------------------------------|---|---|
| २ वर्तारकः (वर्तीरः) | कपिजलमेदः | कपिजलादूकः कपिजलादल्पो वर्तिकातः कपि- न्महान् वर्तिकावदश एव 'घर्षरा' इति लोके [ड.] |
| ३ वार्तीकः | चटकमेदः संघातचारी | |
| ४ कपिजलः | गौरतिप्तिरिः | गौरतिप्तिरिः [ड.] |
| ५ चकोरः | | रकाक्षो विषसूचकः स्वनाम्ना ख्यातः [ड.] |
| ६ लपचकः | चकोरमेदः | ककरमेदः कुशचयुर्मदाविलः [ड.] |
| ७ रक्तवर्मकः कुकुभः | रक्तवर्मक इति कुकुभविशेषणं तेन स्थूलकुकुभो गृह्यते | |
| ८ वर्तकः | "वद्वी" इति ख्यातः | |
| ९ वर्तिका | स्वल्पप्रमाणा ज्ञात्यन्तरमेव | वर्तीरमेदः [ड.] |
| १० वर्ही | मन्त्रः | |
| ११ तिप्तिरिः | | कुङ्गतिप्तिरिश्चित्रपक्षः [ड.] |
| १२ कुकुटः | | |
| १३ कङ्कः | | |
| १४ शारपदः | | |
| १५ इन्द्रासः | मणिकङ्कः | |
| १६ गोमर्दः | चोडाकङ्कः | गोक्ष्वेदः |
| १७ गिरिवर्तकः | | |
| १८ ककरः | | लावान्तकः कपिजलास्थूलः 'ककर' इति लोके |
| १९ अवकरः | | |
| २० वारदः | | |

अष्टाक्षरद्वयटीकाकारावरुणदचहेमाद्री

निरुपत्यादि

अल्पकपिञ्जलसदृशः [हे.]

वनचटकः स्वल्पसंचातचारी (हे.)

गौरतिसिः (हे.)

कृषिरिव जवते वेगेन गच्छति इति यद्वा - कं श्रुति-
सुखदं पिञ्जयति इति

रफाक्षः (हे.)

चकते ज्योत्स्नया तृप्यति इति

श्रमचरः कृशचक्षुर्मदाविलः (हे.)

कुक्कुभो द्विविधः स्थलजो जलजश्च । रफवर्त्मकविशेषणा-
त्स्थलजो गृह्यते [हे.]

कुक्कुशब्दं करोति इति

वर्तीरादल्पः [हे.]

वर्तते इति

वर्तीका वर्तकादल्पत्वा तत्सदृशा (हे.)

वर्तते इति

शिखी मयूरः (हे.)

बर्हमस्याऽस्ति इति

चित्रपक्षः (हे.)

तित्तिशब्दं राति इति

तान्नष्टाख्यः (हे.)

कुशुन्यारणेन कुटति इति

कङ्कते इति

कङ्कसदृशः चारुगतिः (हे.)

कङ्कसदृशो विविधवर्णः (हे.)

शारपदेन्द्राभ इत्येकपदमिति चक्रपाणिदत्तः (अ. को.)

गोक्ष्वेडः (हे.)

गौरिव नर्दति इति

गिरौ यत्तेति इति

कृकचशब्दकारी पीतकृष्णगलः कृष्णवश्रुचरणो रक्त-
पृष्ठः (हे.)

क्रेति करोति वाशवे इति

प्रतुदवर्गः. चरकसंहिता तट्टीकाकारभ्रमपाणिदक्षस्य सुश्रुतसंहिता तट्टीकाकारो ङ्गहणाचार्यस्य

- १ शतपत्रः काष्ठकुण्डः दावाघाटः 'काष्ठकुण्ड' इति लोके
- २ भृङ्गराजः प्रसिद्धो भ्रमरवर्णः भ्रमरको धूम्याटसदृशः 'पक्षिराज' इति लोके
- ३ कोयष्टिः 'कोडा' इति ख्यातः कोयङ्गका दीर्घजङ्घा 'कोयङ्ग' इति लोके
- ४ जीवजीवकः विपदर्शनमृत्युः विपदर्शनमृत्युः
- ५ कैरातः
- ६ कोकिलः (परमृतः) कोकिलः
- ७ भृत्यद्वयः डाहुकः 'दात्युह' इति वा पाठः दात्युहः कालकण्ठकः 'रात्युह' इति लोके
- ८ गोपापुत्रः
- ९ प्रियात्मजः (मातृनिन्दकः) मातृनिन्दकः प्रियात्मकः "पुत्ररञ्जक" इति लोके
- १० लक्ष्मी [लट्वा] फेलाको रक्तपुच्छावोभागः फेलातको रक्तपुच्छावोभागः अन्ये भरद्वाज-
मेदमाहुः "लाट" इति लोके
- ११ लट्[ट]पकः [लट्पकः] तद्भेदः (लट्भेदः) द्वितीयफेलातकः, अन्ये संधानचञ्चुवाकृतिच-
सुमागं दीर्घपुच्छादिलक्षणेन प्रतुदं विहङ्गमाहुः
- १२ वधुः
- १३ वटश
- १४ लिङ्गिमानकः [लिङ्गिमाणवकः] लिङ्गिमवदुत्कटध्वनिः लिङ्गिमोत्कटध्वनिः
- १५ जटी
- १६ दुन्दुभिः
- १७ पाक्षारः
- १८ लोहपृष्ठः

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री

निरुप्यन्त्यावि

मृत्नाभो मृत्नराजः कृष्णवर्णचन्द्रकमलः शिखावान्
गोप्रेरकः (हे.)

शतं बहूनि पत्राणि यस्य सः, दावाघाटः

मृत्न इव राजते इति

एकोदरो द्विशिराः (हे.)

फे जलं यद्विरिवास्म इति

जीवं जीवयति इति

परपुष्टः (हे.)

किराते पर्यन्तभूमौ भवः

कोकते चित्तं गृह्णाति इति

दास्युहः अन्धकाकः (हे.)

अतिशयेन ऊहते इति

लट्वा—रक्तपुच्छाधोभागः (हे.)

प्रिया आत्मजा यस्य सः

लटति इति

बिभर्ति भरति इति वा

जटा अस्य अस्ति इति

दुन्दु इति अव्यञ्जशब्देन भाति इति

लोहस्य इव कठिनं श्यामलं वा पृष्ठं यस्य सः, लोह-
पृष्ठस्य इव रमात्

| चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः | | सुश्रुतसंहिताटीकाकारो ब्रह्मणाचार्यः |
|---------------------------------|--|--|
| १९ कुल्लिङ्गः | कुल्लिङ्ग इति वनचटकाकारः पीतमल्लकः 'वापे' इति लोके | वग्नचटको ग्राम्यचटकाकारः |
| २० कपोतः | | वनवासी "पाण्डुक" इति लोके स च नानाविधः |
| २१ शुक्रः | | |
| २२ शारङ्गः | | चातकः |
| २३ चिरटी | | |
| २४ कङ्कुः | | |
| २५ यष्टिका | | |
| २६ सारिका | | |
| २७ कलविद्धः | ग्राम्यचटकः | |
| २८ चटकः | देवकुलचटकः स्वल्पप्रमाणः | |
| २९ अक्षारचूडकः | | |
| ३० पारावतः | | पारावतो गृहदेवकुलालयः |
| ३१ पाण्ड (न) विकः | | च र क संहितागतः The group of Wines चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः |
| मध्यवर्गः | परिभाषा | |
| १ शुक्रम | कन्दमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च । यत्र द्रवेऽभिप्लव्यन्ते तच्छुक्रमभिधीयते ॥ | |
| २ शीघ्रः | शीघ्रिखुरसै पक्कैरपक्कैरासवो भवेत् ।' | |
| ३ आनालम् | आनालान्तु गोधूमैरासैः स्यान्निस्तुपीकृतैः । पक्कैर्वा सन्धितैस्तु सौवीरसदृशं गुणैः ॥ | |
| ४ स्वल्पचुक्रम (शुक्रं चुक्रम) | यन्मस्त्वादि शुक्रौ भाण्डे सगुलसौद्रकाजिकम् । धान्यराशौ मित्रात्रस्थं स्वल्पं चुक्रं तदुच्यते ॥ | |
| ५ आसवः | यदपक्कौपषाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः । | |

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदक्षहेमाद्री

निरुक्त्यादि

पाण्डुकः (हे.)

के लिङ्गं चूष्य अस्य

ओ वायुः पोतः नौरिवास्य, कस्य वायोः पोतः इव वा

कीरः (हे.)

शोभते, शोभति, शशति वा इति

शौर्यंते आतपैः इति

सेपाविनी (हे.)

घरति इति

कलं मधुरास्फुटं वद्धते रौति इति

कलविद्धः (हे.)

चटति भिनत्ति धान्यादिकम् इति

पारे गिरिदुर्गनद्यादिपरपारे आपततीति, पृषोदरादित्वात्
पस्य वः

म छ व र्गः

In the Caraka samhita

सुश्रुतसंहिताटीकाकारो उच्छृणाचार्यः

सर्वं मयं पथरसं कालान्तरं वशाद्यदा त्यक्त्वाऽन्यसमम्ल-
रवं याति शुक्लं तदुच्यते ॥

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदक्षहेमाद्री

कन्दमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च यत्र श्वेदमिधूयन्ते
तच्छुष्कमभिधीयते (हे.)यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे घण्टाक्षौद्रकाजिकम् । धान्यराशौ
त्रिरात्रस्थं शुक्लं शुक्लं तदुच्यते ॥ (हे.)यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे घण्टाक्षौद्रकाजिकम् । धान्य-
राशौ त्रिरात्रस्थं शुक्लं शुक्लं तदुच्यते ॥ (हे.)

द्रवप्रधान आसवः

औषधयुक्तैर्महाकरैः कृतं मयम् आसवः (हे.)

| परिभाषा | चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः |
|-------------------|--|
| ६ अरिष्टः | अरिष्टः कायसिद्धः स्यात् सम्पको मधुरद्रवैः । औषधकायमध्यादिसंवादितः |
| ७ शीघ्रः (सीघ्रः) | आश्रयथापि शीघ्रः स्वादित्याहुस्तद्विदो जनाः । |
| ८ प्रसवा | सुरामण्डः प्रसवा स्यात् |
| ९ कादम्बरी | ततः कादम्बरी घनः । |
| १० जगलः | तदधो जगलो ह्येयो भक्तविष्वक्ता सुरा । |
| ११ मेदकः | मेदको जगलाद् घनः ॥ |
| १२ क्षिण्वम् | सुरावीज्य क्षिण्वकम् । |
| १३ वारुणी | यत्तालसर्जूरसैः सन्धिता सैव वारुणी । |
| १४ गुडगुण्डम् | गुडाम्बुना सतैलेन कन्दशकफलैस्तथा । आश्रितं चाम्लतां यातं गुडगुण्डं तदुच्यते ॥ एवमेवेष्टुगुण्डं स्यात् मृद्वीकाधम्मव तया । |
| १५ तुषाम्बु | तुषाम्बु चाश्रितं ज्ञेयमामेर्विदलितैर्यवैः । |
| १६ सौवीरकम् | सुनिस्तुपैश्च पक्वैश्च सौवीरं चाश्रितं भवेत् ॥ |
| १७ धान्याम्लम् | कुसुमापो धान्यमण्डेन चाश्रितं काजिकं भवेत् । |
| १८ तुषोदकम् | भृष्टान्माषधुषान् सिद्धान् यवचूर्णसमन्वितान् । आश्रितान्ममसा तद्वज्जातं तच्च तुषोदकम् ॥ |
| १९ काजी | आशु धान्यं क्षोदितञ्च बालमूलन्तु खण्डशः । कृतं प्रस्यमितं पात्रे जलं तत्राढकं क्षिपेत् ॥ तावत् सन्धाय संरक्षेत् यावदम्लस्यमागतम् । काजिकं तत्तु विज्ञेयमेतच्च सर्वत्र पूजितम् ॥ |
| २० शिण्डाकी | शिण्डाकी चासुता ज्ञेया मूलकैः सार्यपादिभिः । |
| २१ मधुगुण्डम् | जम्बीरस्वरसप्रलपं मधुतः कुडवं तया । तावच्च पिप्पलीमूलविबीकृत्य घटे क्षिपेत् । धान्यराशौ स्वितं मासं मधुगुण्डं तदुच्यते ॥ |

| | |
|--|---|
| सुधुतसंहिताटीकाकारो डब्रणाचार्यः | अष्टाश्लेषयटीकाकारायरणदंष्ट्रमात्री |
| द्रव्यप्रधानमरिण्डम् | स (आप्तव) एव कथितौपधैः भरिष्टः (हे.) |
| उभय(द्रव्यद्रव्य)प्रधानं मयम् | अपक्वेक्षरसकृतः, पक्वेक्षरसकृतश्च (अ.) |
| सुराया मण्ड उपर्यन्तरे भागः | |
| जगलोऽधःकिं नयस्य, यो बहिःस्थित्युत्ते; किञ्चमफ- सुरा जगलः | वारण्या अधोभागो घनो जगलः (अ.) |
| | जगलस्याधोभागो मेदकः (अ.) |
| | वारणी श्वेतसुरा । सा च श्वेतपुनर्नवादिमूलयुक्तेन शालि- षिटेन क्रियते (हे.) |
| गुडाम्बुना तत्रैलेन सन्धानं कादिकं तु यत् । कन्दशाकफलैर्गुणं गुडशुक्रं तदुच्यते ॥ | |
| | तद्वैः यवैः कृतम् (अ.) |
| | यितुषैः यवैः कृतम् (अ.) |
| | तण्डुलकण्डनादिकृतम् (अ.) |
| | |
| | शाण्डकी कन्दमूलफलादिमुद्गादिवटकैः कृता, तथा मूलक- च्छेदसन्धानं शाण्डाकी स्याद् बहुधा । |
| अम्बीरस्य फलसं पिप्पलीमूलसंयुतम् । मधुमाण्डे विनिक्षिप्य धान्यराशौ निपापयेत् ॥ अथहेन तज्जातरसं मधुशुक्लमुदाहृतम् । | |

| परिभाषा | खरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः |
|------------------|--|
| २२. सुपा | अनुद्धृतमण्डा |
| ३२. मदिरा | सुरामण्डः |
| २४. शार्करः | शार्कराप्रकृतिक आसवः |
| २५. पकरघः | यः कथितेनेष्टुरतेन क्रियते |
| २६. क्षीतरसिकः | क्षीतेष्टुरचकृतः |
| २७. गौडः | गुडप्रकृतिकः |
| २८. सुरासवः | यत्र सुरसैव तोवकामं क्रियते |
| २९. मैरेयम् | मैरेयं चातकीपुष्पगुडघान्यान्तर्धेयुतम् । |
| ३०. मधूलकम् | आसवस्य सुरायाश्च द्वयोरेकत्र माजने । |
| ३१. माण्वीरुम् | चन्धानं तद् विजानीयान्मैरेयमुपयाश्रयम् ॥ |
| ३२. आदिछी (सुरा) | मधूलकः गोघूमभेदः । तत्कृतं मद्यम् । अन्ये तु |
| ३३. आसुतम् | मेदकमाहुः मधुप्रधानम् |

| | |
|--|---|
| सुभृतसंहिताटीकाकारो ऋहणाचार्यः | अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणवसुदेमात्री |
| सुरा लोहितवर्णा पिष्टकिण्वकलेन किञ्चित्कलुषा | शालिपिष्टकृतं मधं सुरा (हे.) |
| शुशर्करया खण्डशर्करया वा क्लिपते | शर्कराशंखन्वी मधविशेषः (भ.) |
| पक्ष्मेनेधुरसादिना कृतः | पक्ष्मेनेधुरसेन कृतं पक्षरघः (हे.) |
| अपक्वसकृतः | |
| सुराया स्यते तोयकार्यं क्रियते यस्मिन् सः | शुद्धकृतं मधं गौडम् (हे.) |
| सुराघबयोः प्रत्येकनिष्पादितयोरस्मिन्नित्य पुनः सन्धाना- न्मैरेयः | तत्र मधुनैव सुरासन्धानेन या क्रियते तां सुरां सुरासवमाहुः मैरेयः कोद्रवैर्जायते (भ.) |
| मधूलकः स्वल्पगोघृमो मध्यदेशे 'पीसीका' इति ख्यातः, मर्कटहरततुर्णं वा तत्कलकिण्वं मधूलकम् | |
| अक्षरय विभीतकस्य बल्कलैः सह कृता | विभीतकबल्कलयुक्तशालिपिष्टकृता वैभीतकी सुरा (हे.) |
| | कन्दमूलफलार्थं च लवणोदकैर्युतम् । |
| | सन्धानाच्चिरकालाम्लमायुतं परिकीर्तितम् (हे.) |

चरकसंहिताया अकारादिक्रमेणानक्रमणिका ।

The Alphabetical Index to the Caraka Samhita

| | | |
|--|---|--|
| अक्षतस्य लक्षणम् वि. १२-८८ | अजात्रीगुणाः सू. २७-३०७, ३०८ | अतिप्रदीप्तस्नेहरोपाः तचिकिरसा च सि. ५-१८ |
| अक्षिरोगाश्वत्वारः सू. १९-४/५ | अजातोदकलक्षणम् वि. १३-५५, ५८ | अतिपालवृद्धयोर्मैथुननिषेधः सि. ४-४०-४२ |
| अक्षोढगुणाः सू. २७-१५७, १५८ | अजीर्णाध्ययनत्रा व्यापदः सि. १२-१४/५ | अतिमात्रप्रणीतनेत्रदोषास्तचिकिरसा च सि. ५-१५, १६ |
| अग्निविसर्पस्य निदानलक्षणे वि. २१-३५, ३६ | अजीर्णोपपत्तयः लिङ्गानि वि. ६-२७ | अतिमात्रमोजनान्न्येऽप्यामप्रकोपस्य हेतवः वि. २-८, ९ |
| अग्निसंयुक्तगार्भं पेयादिक्रमः सि. १२-६-८ | अज्ञानविधिः सू. ५-१४-१९ | अतिमात्रस्य मोजनस्य दोषाः वि. २-७ |
| अभ्यासां संप्रहृष्टेषां चिकित्सायामुपयोगः सू. २५-४०-४४ | अणुतैलनिर्माणविधिः सू. ५ ६२-६८ | अतियोगजन्या व्यापदस्तासां चिकित्सा च सि. ६-४५-४७ |
| अङ्गुलीव्यस्य गुणाः सू. २७-११६३ | अणुतैलस्य वर्णनं वि. ५-५७-६२ | अतियोग(वस्त्यतिभोग)व्यापदो वर्णनं चिकित्सा च सि. ७-१२-१४ |
| अङ्गुलीव्यस्य गुणाः सू. २७-१५९ | अणुतैलस्य प्रयोगकालः सू. ५-५६ | अतिभोगे (शोषनस्यातिभोगे) द्वौ वस्ती सि. ५०-३७, ३७३ |
| अङ्गप्रद्व्यापदो वर्णनं तचिकित्सा च सि. ६-७६, ७७ | अणुतैलस्य प्रयोगविधिः सू. ५-६९, ७० | अतिव्यायामे दोषाः सू. ७-३३ |
| अङ्गमर्दप्रदामनो दशको महाकपायः सू. ४-१७/४४ | अतसीतैलस्य गुणाः सू. २७-२९२ | अतिघारचिकित्सासूत्रम् सि. ८-४३-४५ |
| अङ्गशूलव्यापदो वर्णनम् सि. ७-४७-५३ | अतिहारस्य निदानम् सू. २१-१०-१२ | अतिसारयोर्मयशोऽजयोर्लक्षणम् वि. १९-११, १२ |
| अङ्गुल्याधितं रिष्टम् इ. ३-६ | अतिहारस्य प्रतिहारः सू. २१-२९-३३ | अतिघारस्य पित्तस्य निदानसंप्राप्ति-लक्षणानि वि. १९-६ |
| अचरणाया योनेर्लक्षणम् वि. ३-१-१८ | अतिहारस्य चिकित्साक्रमः सू. २१-१६ | अतिघारस्य प्रागुत्पत्तिः वि. १९-३, ४ |
| अच्छर्दनीयाः सि. २-८ | अतिहारस्य दोषाः सू. २१-१३, १४ | |
| अजगन्धागुणाः सू. २७-१७३ | अतिहारस्य लक्षणम् सू. २१-१५ | |
| अजरुपतोऽहवत्तस्तन्मनसश्च भुजवतो गुणाः वि. १-२५ ९ | अतिचर्कमणत्रा व्यापदः सि. १२-१४/३ | |
| | अतिचरणाया योन्या व्यापतेर्लक्षणम् वि. ३०-१९ | |
| | अतिनिद्रायां प्रतिहारः सू. २१-५५, ५६ | |

| | | |
|--|--|---|
| अतिसारस्य वातजस्य निदानसंप्राप्ति- लक्षणानि चि. १८-५ | अतीवधाराः पट्ट सू. १९-४ ३ | अनित्यस्वविचारः शा. १-५९. |
| अतिसारस्य मलेमजस्य निदानसंप्राप्ति- लक्षणानि चि. १९-७ | अर्यमेनिदानं लिङ्गं चिकित्सा चि. १५-११७-२३३ | अनुपविरेचनयोगोरदेशः फ. ८-१६ |
| अतिसारस्य पट्टप्रियङ्गुदाः सि. ८-१९-२१ | अत्यशनाश्रुतस्नेहस्य चिकित्सा सि. ४-३५. | अनुपशोषसंभ्रहः चि. २-८/३६-८/३८ |
| अतिसारस्य धंलिपातजस्य निदानसंप्राप्ति- लक्षणानि सि. १९-८-१० | अत्यशनाश्रुतस्नेहस्य लक्षणम् सि. ४-३४ | अनुपशोषसंभ्रहः ,, १२-१०१ |
| अतिसारहरं नूतनम् सि. ८-३६, ३७ | अव्यासनाया व्यापदः सि. १२-१४ ४ | अनुपशोषस्य दत्ते निःशेषं वा दत्ते मस्तौ दोषास्तथाचिकित्सा । सि. ५-९, १० |
| अतिसारहरा यवाग्नयः सि. ८-३८-४२ | अधिजिह्वाया लक्षणम् चि. १२-७७ | अनुपशोषस्योपाणां वमनदाने दोषाः चि. ३-१४७, १४८ |
| अतिसारे अन्नभक्षणम् चि. १९-२३-४१ | अधिमोषाश्रुदादीनामपि शोथेऽन्तर्भावः सू. १८-३३. | अनुपानस्य गुणाः सू. २७-३२५, ३२६ |
| अतिसारे वातादिचिकित्साक्रमः चि. १९-१२१, १२२ | अधोगरफपित्तस्य व्याप्यत्वे हेतुः नि. २-१५-१७ | अनुपशोषस्योपाणां चिकित्सा चि. १७-८१ |
| अतिसारोक्तक्रमस्यान्यत्राप्यतिदेशः सि. ८-३४. | अधोपातनिग्रहे दोषास्तथाचिकित्सा च सू. ७-१२, १३ | अनुपशोषस्य परीक्षा वि. ८-९१ |
| अतिसारोद्भवाः सि. ८-२२. | अध्ययनविधिः वि. ८-७. | अनुपशोषस्य लक्षणम् वि. ८-७४ |
| अतिसारोपद्वानां नाशना योगाः सि. ८-२३-३३ | अध्यात्मद्रव्यगुणानां संभ्रहः सू. ८-१३ | अनुपशोषस्य भेदकृतो दोषभेदः वि. ६-११. |
| अतिस्थूलस्य चिकित्साक्रमः सू. २१-१६ | अननुयोज्यस्य लक्षणम् चि. ८-५१ | अनुमानज्ञेया विषयाः वि. ४-८ |
| अतिस्थूलस्य दोषाः सू. २१-४ | अनन्तवातस्य निदानलक्षण- चिकित्सितानि सि. ९-८४-८५३ | अनुमानस्य लक्षणम् सू. ११-२१, २२ |
| अतिस्थूलस्य लक्षणम् सू. २१-९ | अनारोग्यकरस्य उदकस्य लक्षणम् वि. ३-७ २ | अनुमानस्य लक्षणम् वि. ४-९ |
| अतिस्थूलस्य उपक्रमः सू. २१-२१-२८ | अनारोग्यकरस्य कालस्य लक्षणम् वि. ३-७ ४ | अनुमानस्य लक्षणम् वि. ८-४० |
| अतिस्निग्धस्य लक्षणम् सू. १३-५९ | अनारोग्यकरस्य देशस्य लक्षणम् वि. ३-७ ३ | अनुमानेन पुनर्भवस्य प्रतिपादनम् सू. ११-३१ |
| अतिस्निग्धस्य चिकित्सा सू. १४-१५ | अनारोग्यकरस्य वातस्य लक्षणम् वि. ३-७ १ | अनुयोगस्य लक्षणम् वि. ८-५२ |
| अतिस्निग्धस्य लक्षणम् सू. १४-१४ | अनास्थाप्याः सि. २-१४. | अनुयोगस्य लक्षणम् वि. ८-५० |
| अतीतकालस्य लक्षणम् वि. ८-५८ | | अनुलोमसंभाषाविधिः वि. ८-१७ |

| | | |
|--|---|--|
| अनुवासनद्रव्याणि वि. ८-१५० | क्रियाक्रमस्य सू. १७-१०३ | सि. ९-१७ |
| अनुवासननिरुद्धयोरेकान्ततः सेवननि- षेधः सि. ४-५०, ५१ | अन्तर्दिग्धीनां स्थानविशेषकृतं लक्षणम् सू. १७-१०१, १०२ | अपतन्त्रकापतानकयोर्दिग्वाद्यो भोगः सि. ९-१९ |
| अनुवासनविधानम् सि. १-२०-२६ | अन्तर्वेगज्वरलक्षणम् वि. ३-३९, ४० | अपतन्त्रकापतानकयोर्विद्विस्तारस्यम् सि. ९-१६ |
| अनुवासनात्पूर्वं युक्तस्नेहस्यदिविशिष्टं भोजनं देयम् सि. ४-४३ | अन्तर्काले ज्वरिताय दन्तधावनं विधेयम् वि. ३-१५७-१५९ | अपतन्त्रकापतानकयोर्लक्षणशोधनं निषेधः सि. ९-२० |
| अनुवासनात् या व्यापदो भवन्ति सि. २-१८ | अन्नजहिकाया लक्षणम् वि. १७-३८- ४१ | अपतर्पणजा रोगाः सू. २३-२६-२९ |
| अनुवासनानर्हाः सि. २-१७ | अन्नपरिपाकक्रमः वि. १५-६-११ | अपतर्पणजेषु रोगेषु प्रतिकारः सि. २३-३० |
| अनुवासनार्हाः सि. २-१९ | अन्नपानस्य विधिविहितस्य प्राणिनां प्राणत्वम् सू. २७-३ | अपतर्पणभेदास्तेषां प्रयोगावस्था च वि. ३-४३, ४४ |
| अनुवासने आमश्नेहनिषेधः सि. ४-४८ | अन्नप्रशंसा सू. २७-३४९, ३५० | अपतानकस्य संप्राप्तिलक्षणानि सि. ९-१४, १५ |
| अनुवासनो ऋशको महाकषायः सू. ४-१३ | अन्नवहस्रोतसां मूलं तद्दृष्टिलक्षणं च वि. ७-८ | अपत्यकं घृतम् वि. २-४/२८, ४/२९ |
| अनुवासितायोर्भां जलं देयं तद्गुणाश्च सि. ४-४३-४५ | अन्नविषस्य लिङ्गाणि वि. १५-४५, ४६ | अपत्यकरो पष्टिकादिगुष्टिका वि. २-२/३-२/९ |
| अनूपजानां साधारणगुणाः सू. २७-५६, ५७ | अन्नसम्पन्नायोगस्यामिजनकत्वम् वि. १५-२११-२१६ | अपत्यपरिहारे फलम् सू. २८-४३, ४४ |
| अनेकरसेषु द्रव्येभ्यस्तेष्वेकदोषात्मकविका- रेषु च द्रव्यविकारप्रभावतश्चैवं कथं व्यवस्येदिति वदन्तम् वि. १-९-१२ | अन्नस्येन्द्रियपोषकत्वम् वि. १५-१२ | अपरिसंख्येयसंयोगानामपि विरेचनद्रव्या- णां पटुषु शतेष्वन्तर्भावं कृत्वोपदेशः क. १-६ |
| अन्तरायामस्य लक्षणम् वि. २८-४३-४५ | अन्यद्वेषजं कदा प्रयोज्यम् क. १२-६१ | अपवादः (अच्छर्दनीयानाम्) सि. २-९ |
| अन्तर्गतस्य पच्यमानगुणस्य लक्षणानि वि. ५-४५ | अन्ये योगाः वि. ४-६७-७१ | अपस्मारनाशकाः प्रदेहघृणाः वि. १०- ३७, ३८ |
| अन्तर्मुक्त्या योनेर्लक्षणम् वि. ३०-२९, ३० | अन्येषु ज्वरस्य लक्षणम् वि. ३-६३ | अपस्मारनिवृत्तिः वि. १०-३ |
| अन्तर्दिग्धीनां स्थानविशेषकृतं लक्षणम् सू. १७-१०१, १०२ | अपतन्त्रकस्य संप्राप्तिलक्षणानि सि. ९-११-१४ | |
| अन्तर्वेगज्वरलक्षणम् वि. ३-३९, ४० | अपतन्त्रकापतानकयोः पानम् सि. ९, १८ | |
| अन्तर्काले ज्वरिताय दन्तधावनं विधेयम् वि. ३-१५७-१५९ | अपतन्त्रकापतानकयोः शिरोविरेचनम् | |
| अन्नजहिकाया लक्षणम् वि. १७-३८- ४१ | | |
| अन्नपरिपाकक्रमः वि. १५-६-११ | | |
| अन्नपानस्य विधिविहितस्य प्राणिनां प्राणत्वम् सू. २७-३ | | |
| अन्नप्रशंसा सू. २७-३४९, ३५० | | |
| अन्नवहस्रोतसां मूलं तद्दृष्टिलक्षणं च वि. ७-८ | | |
| अन्नविषस्य लिङ्गाणि वि. १५-४५, ४६ | | |
| अन्नसम्पन्नायोगस्यामिजनकत्वम् वि. १५-२११-२१६ | | |
| अन्नस्येन्द्रियपोषकत्वम् वि. १५-१२ | | |
| अन्यद्वेषजं कदा प्रयोज्यम् क. १२-६१ | | |
| अन्ये योगाः वि. ४-६७-७१ | | |
| अन्येषु ज्वरस्य लक्षणम् वि. ३-६३ | | |
| अपतन्त्रकस्य संप्राप्तिलक्षणानि सि. ९-११-१४ | | |
| अपतन्त्रकापतानकयोः पानम् सि. ९, १८ | | |
| अपतन्त्रकापतानकयोः शिरोविरेचनम् | | |

| | | |
|---|---|---|
| अपस्मारस्य चिकित्सासूत्रम् नि. ८-१० | अपस्मारे कृतिपयसिद्धयुतानि चि. १०-२५, २६ | अभिपुक्तगुणाः सू. २७-१५७, १५८ |
| अपस्मारस्य निदानपूर्विका संप्राप्तिः नि. ८-४ | अपस्मारे चिकित्साक्रमः चि. १०-१४-१६ | अभेपञ्चलक्षणम् चि. १-१५ |
| अपस्मारस्य पूर्वरूपाणि नि. ८-६, ७ | अपस्मारे जीवनीययमकम् चि. १०-२८ | अभेपञ्चभेदाः ,, १-५ |
| अपस्मारस्य प्रत्यात्मिकं लक्षणम् ८-५ | अपस्मारे नस्यानि चि. १०-४१-४५ | अभ्यङ्गस्य गुणाः सू. ५-८५-८९ |
| अपस्मारस्य भेदाः चि. १०-८ | अपस्मारे पद्मगव्यं घृतम् चि. १०-१७ | अभ्यङ्गशुश्या लक्षणम् चि. ८-६२ |
| अपस्मारस्य वातजादिभेदेन लक्षणानि चि. १०-९-११ | अपस्मारे पञ्चदशायं तैलम् चि. १०- ३४-३६ | अभ्यङ्गानां वर्जनीयानां निर्देशः सू. २७-३१८ |
| अपस्मारस्य वेगकालः चि. १०-१३ | अपस्मारे महापद्मगव्यं घृतम् चि. १०-१८-२४ | अम्लरसस्य गुणकर्माणि तस्यातिवोगे दोषाश्च सू. २६-४३ २ |
| अपस्मारस्य संप्राप्तिः चि. १०-४ | अपस्मारे मुखाया वृत्तिः चि. १०-४८, ४९ | अम्लहाडिकस्य गुणाः सू. २७-१९२ |
| अपस्मारस्य सामान्यरूपम् चि. १०-६-८ | अपस्मारे रसायनयोगाः चि. १०-६४, ६५ | अम्लवाह्येया गुणाः सू. २७-९२ |
| अपस्मारस्यारिष्टभूतानि पूर्वरूपाणि इ. ५-२२, २३ | अपस्मारे वचायं घृतम् चि. १०-२७ | अम्लवेतसफलस्य गुणाः सू. २७-३५२ |
| अपस्मारस्याप्यलक्षणम् चि. १०-१२ | अपस्मारे क्षपित्ताशनं तद्दधूपनयोगश्च चि. १०-५०, ५२ | अम्लीकाकन्दस्य गुणाः सू. २७-१२१ |
| अपस्माराणां संख्या नि. ८-३ | अपस्मारे प्लागम्बुधन्वनिर्देशः नि. ८-९ | अम्लीकाफलस्य गुणाः सू. २७-१५२ |
| अपस्माराश्चत्वारः सू. १९-४ ५ | अभिचाराभिशापत्रयोर्ध्वर्योर्लक्षणम् चि. ३-११८-१२१ | अयनयोः स्वरूपम् सू. ६-५ |
| अपस्मारे अतृप्तामिनिवेशस्य निदान- लिङ्गचिकित्सा चि. १०-५४-६३ | अभिघात-काम-क्रोध-शोक-भयज्वराणां चिकित्सा चि. ३-३१७-३२३ | अयोगजन्या व्यापदस्तासां चिकित्सा चि. ६-३८-४४ |
| अपस्मारे अज्ञानि चि. १०-४६, ४७ | अभिघातज्वरलक्षणम् चि. ३-११२-११४ | अयोगव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च चि. ७-७-११ |
| अपस्मारे अन्ये घृतयोगाः चि. १०-२९- ३१ | अभिघातजे विपजे च शंथे चिकित्सा चि. १२-१०२ | अयोगातियोगमिध्यायोगयुक्तस्य कर्मणो लक्षणम् सू. ११-३९, ४१ |
| अपस्मारे अभ्यङ्गार्थं विद्वत्तैलानि चि. १०-३२ | अभिशापप्रभवस्य जनपदोद्ध्वंसस्याप्यधर्म एव हेतुः चि. ३-२३ | अयोगातियोगमिध्यायोगयुक्तस्य कालस्य लक्षणम् सू. ११-४२ |
| अपस्मारे आगन्तव्यनुबन्धचिकित्सा चि. १०-५३ | अभिपद्मज्वरलक्षणम् चि. ३-११४, ११७ | |
| अपस्मारे वरसादनम् चि. १०-३९, ४० | | |

| | | |
|---|---|--|
| अरजस्काया येनेर्लक्षणम् चि. ३०-१७ | अर्धाभेदकस्य निदानलक्षणचिकि- त्सितानि चि. ९-७४-७८ | अर्शसाभिरपत्तिक्षेत्रम् चि. १४-६ अर्शसाभिरपत्तिक्षेत्रे घटगुणोदरसंभवः चि. १४-३२ |
| अरिष्टज्ञाने सर्वथा यत्नो विधेयः इ. ९-२३, २४ | अर्शुद्विचिक्षातिदेशः चि. १२-८७ | अर्शोघ्नो दशको महाकपायः सू. ४-११ |
| अरिष्टलक्षणानां संक्षेपतः कथनम् इ. १२-४०-६१ | अर्शःसु सामान्यचिकित्सा चि. १४-२४३-२४८. | अर्शोऽरोगः द्विविधः सू. १९-४ ७ |
| अरिष्टलक्षणानि इ. ९-१२-१७ | अर्शसां चतुर्विधचिकित्सितम् चि. १४-३३ | अलज्या लक्षणम् सू. १७-८८ |
| अरिष्टस्य गुणाः सू. २७-१८२ | अर्शसां हृन्मज्जायां त्रिदोषजानां च हेतु- लक्षणं च चि. १४-२० | अलज्या लक्षणम् चि. १२-८८ |
| अरिष्टलक्षणम् सू. ११-२९ | अर्शसां द्विविधो भेदः चि. १४-११ | अलसकृत्स्विकामदोषेषु चिकित्साक्रमः चि. २-१३, १४ |
| अरिष्टानि इ. ९-३-५ | अर्शसां पित्तोत्पन्नानां रूपाणि चि. १४-१४ | अलसकृत्स्व लक्षणम् चि. ७-२३ |
| अरिष्टानि ,, ९-२१, २२ | अर्शसां पित्तोत्पन्नानां हेतुः चि. १४-१५, १६ | अलाघुगुणाः सू. २७-१३२ |
| अरिष्टानि ,, ११-१३-२६ | अर्शसां पूर्वरूपाणि चि. १४-२१, २२ | अवगाहस्वेदस्य कल्पना सू. १४-४५ |
| अरिष्टाया लक्षणम् चि. २६-११७ | अर्शसां वातोल्लवणानां रूपाणि चि. १४-११ | अवगाहस्वेदस्य द्रव्याणि सू. १४-३४ |
| अरोचकस्य वातजादिभेदेन चिकित्सा चि. २६-१२४-१२६ | अर्शसां वातोल्लवणानां हेतुः चि. १४-१२, १३ | अवन्ध्याया अपि चिराद्भैषज्ये हेतुः शा. २-७ |
| अरोचकानां चिकित्सा चि. २६-२१५-२२० | अर्शसां सर्वदोषजत्वम् चि. १४-२३-२५ | अवपीडनस्य दानविधिः सि. ९-९८-१०७ |
| अर्शकगुणाः सू. २७, -१७० | अर्शसां श्लेष्मोल्लवणानां रूपाणि चि. १४-१७ | अवल्लग्नस्य गुणाः सू. २७-३३ |
| अर्थप्राप्तेर्लक्षणम् चि. ८-४८ | अर्शसां साध्यासाध्यविचारः चि. १४-२६-३१ | अवल्लग्नस्य गुणाः सू. २७-१५-१७ |
| अर्थान्तरस्य लक्षणम् चि. ८-६४ | अर्शसां सामान्यो हेतुः चि. १४-९ | अवल्लग्नस्य गुणाः सू. २७-१८-१०३ |
| अर्शितस्य चिकित्सा चि. २८-९९, १०० | अर्शसां सामान्यो हेतुः चि. १४-९ | अवसाधिनः शुक्रस्य लक्षणम् चि. ३०-१४४, १४५ |
| अर्शितस्य लक्षणम् चि. २८-३८-४२ | अर्शसामधिष्ठानभूता धातवः चि. १४-६ | अविषकानां दोषाणां तरुणज्वरे पाचनानि चि. ३-१४२ |
| अर्शितादीनां दण्डकान्तानां समानं लक्षणम् चि. २८-५२ | अर्शसामाकृतयः चि. १४-१० | अविरिच्यैव येषां भेषजं जीर्यते तेषां चिकित्साः क. १२-७९, ८० |

| | | |
|--|--|--|
| अविरेक्याः सि. २-११ | अष्टमे मासि मातृगर्भयोः परस्परमोजो- ग्रहणम् शा. ४-२४ | अस्थिजानां व्याधीनां चिकित्सा सू. २८-२७ |
| अव्यक्तस्य निर्देशः शा. १-६०-६२ | अष्टादशक्षयाणां गणना सू. १७-६३ | अस्थिप्रक्षोषजा रोगाः सू. २८-१६ |
| अव्यक्तान्महदायुस्तत्तिक्रमः शा. १-६६-६८ | अष्टावाहाराविधिशेषायतनानि वि. १-२१ | अस्थिमज्जगते वाते चिकित्सा चि. २८-१३ |
| अव्याधिसहस्रीरस्य लक्षणम् सू. २८-७ | असंख्येयत्वाद् द्रव्याणां रसत एवावस्था- पनद्रव्योपदेशः चि. ८-१३७, १३८ | अस्थिनां विवरणम् शा. ७-६ |
| अक्षितपीतादीनां फलम् सू. २८-३ | असद्वृत्तान्यननुष्ठेयानि सू. ८-१९-२७ | अस्तिग्धस्य लक्षणम् सू. १३-५७ |
| अक्षिरोविरेचनाहः सि. २-६० | असमर्थानां संशोपनप्रकारः सू. १५-१९-२१ | अस्तिष्काके आयुषः प्रमाणम् शा. ६-२९ |
| अशुभफलं कर्म न कर्तव्यम् चि. ३-४६ | असमानप्रकृत्यादीनां जनानां कथं युगपदे केन व्याधिनोर्द्वंसनमित्यभिप्रेक्ष्य प्रश्नः वि. ३-५ | अस्वेद्याः सू. १४-१६-१९ |
| अश्मघनस्वेदस्य कल्पना सू. १४-४७-४९ | असात्त्विकेन्द्रियार्थसंयोगस्य वर्णनम् शा. १-११८, ११९ | अस्वेद्या हिष्वासात्तुराः चि. १७-८२-८४ |
| अश्मरीजमृदुकृच्छ्रचिकित्सा चि. २६-५९ | असात्त्विकेन्द्रियार्थसंयोगस्यैकरूपत्वे युक्तिः सू. ११-३८ | अहिततमानामाहारद्वयानां (प्रकृत्यैव) निर्देशः सू. २५-३९ |
| अश्मरीजमृदुकृच्छ्रे अन्ये योगाः चि. २६-६६-६८ | असाध्यविषपलक्षणम् चि. २१-२८ | अहितस्यायुषो लक्षणम् सू. २०-२४ |
| अश्मरीजमृदुकृच्छ्रे शुटयादिचूर्णम् चि. २६-६४, ६५ | असाध्यवृत्तपरिहर्तव्यानि शरीराणि इ. ६-३-२४ | अहिताहारोपयोगादन्या रोगप्रकृतयः सू. २८-७ |
| अश्मरीजमृदुकृच्छ्रे पाषाणभेदादिचूर्णं शृतं वा चि. २६-६०, ६१ | असुरस्यायुषो लक्षणम् सू. ३१-२४ | अहिताहारोपयोगिनोप्यारोग्यदर्शने श्रेष्ठः सू. २८-७ |
| अश्मरीजमृदुकृच्छ्रे पुनर्नवादियोगः चि. २६-६३ | असृजि प्रकृषितस्य वातस्य लक्षणम् चि. २८-३१ | अहेतोलक्षणम् वि. ८-५७ |
| अश्मरीजमृदुकृच्छ्रे श्वर्द्रादियोगः चि. २६-६२ | असृग्दरचिकित्सा चि. ३०-८६-९० | आक्षिपीकलस्य गुणाः सू. २७-१६३ |
| अश्वत्थफलस्य गुणाः सू. २७-१०५ | असृग्दरे कतिपययोगाः चि. ३०-९६-१०० | आक्षिपक्या गुणाः सू. २७-१८६ |
| अश्वत्थफलस्य गुणाः सू. २७-१६३, १६४ | असृग्दरे पुण्यायुगं चूर्णम् चि. ३०-९०-९६ | आक्षेपस्य लक्षणम् चि. २८-५० |
| अष्ट प्रकृतयः शा. १-६२ | | आगन्तुक्रोगाणामुत्पत्तौ प्रज्ञापराधस्य कारणत्वम् सू. ७-५१, ५२ |

| | | |
|--|--|---|
| आगन्तुकविकाराणामनुसृतौ विधिः सू. ७-५३, ५४ | आजसांघस्य गुणाः सू. २७-६१ | आरमानमभिसमीक्ष्य शुक्लवतो गुणाः वि. १-२५ |
| आगन्तुकोन्मादस्य चिकित्सासूत्रम् नि. ७-१६, १७ | आटरूपककायः वि. ४-६५, ६६ | आग्नेयकृतं समाधानमग्निवेशकृते जनपदो दूषंसनविषयके प्रश्ने वि. ३-६ |
| आगन्तुकोन्मादानां साध्यासाध्यविभागः नि. ७-१५ | आतुरगृहं गच्छतो वैद्यस्य यात्रायामशुभानि निमित्तानि इ. १२-२६-३० | आदानविषयार्थोर्ध्वलस्य हासदृष्टिक्रमः सू. ६-६-८ |
| आगन्तुज्वरभेदाः वि. ३-१११ | आतुरशृङ्गावस्थाः प्रशस्ताः इ. १२-७१-७९ | आदौ दुष्टरक्तनिग्रहे दोषाः वि. १४-१७७-१७९ |
| आगन्तुज्वरलक्षणानामग्न्येवागन्तुरोगेष्वति- देशः वि. ३-१२५ | आतुरस्य गुणाः सू. ९-९ | आध्मानव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च मि. ६-५८-६० |
| आगन्तुज्वरस्य चातुर्विध्यं कारणभेदेन दोषानुबन्धश्च नि. १-३० | आतुरस्यानिमित्त इन्द्रियज्ञानविपर्यासो मरणलक्षणम् इ. ४-५, १६ | आध्मानव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च मि. ७-२१-२६ |
| आगन्तुज्वरस्य वैशिष्ट्यम् नि. १-३१ | आतुरत्वप्राः प्रशस्ताः इ. १२-७१-७९ | आनाहस्य संप्राप्तिर्लक्षणं च सू. १८-३२ |
| आगन्तुज्वरेषु दोषादिविचारः वि. ३-१२६-१२८ | आतुरद्वितो विधिः सू. २८-३४, ३५ | आनाह्नोऽस्तिष्ठम् इ. ९-१० |
| आगन्तुनिज्वरोगयोर्लक्षणतो भेदः सू. २०-७ | आतुरावस्थास्वपि कालाकालनिर्देशः वि. ८-१२८ | आदिपदशनाद्वदनार्थं भेषजं प्रयोज्यम् क. १२-५९ |
| आगन्तुनिजातुन्मानौ परस्परमनुबन्धीतः नि. ७-१८ | आरमशुसाया गुणाः सू. २७-३४ | आप्तवाक्यद्वारा पुनर्भवस्य प्रतिपादनम् सू. ११-२७-२९ |
| आगन्तुमृगणानां हेतुश्चिकित्सा च वि. २५-७-९ | आत्मनः शुभाशंसनप्रकारः सू. ८-२८ | आप्तस्य लक्षणम् सू. ११-१८, १९ |
| आगन्तुकविकारस्य कारणानि सू. २०-४ | आत्मनः साक्षिभूतत्वस्य धनम् शा. १-८३ | आप्तोपदेशलक्षणम् वि. ४-४ |
| आगन्तुत्मादनिदानम् नि. ७-१० | आत्मनो निर्विकारत्वनिर्देशः शा. ४-३३ | आप्तोपदेशाज्ज्ञातव्या विषयाः वि. ४-६ |
| आगन्तुत्मादस्य निदानम् वि. ९-१६ | आत्मनोऽनुबन्धः शा. २-३७, ३८ | आप्तोपदेशादिभिः सर्वैरध्यवसानममोह- करं भवति वि. ४-९-१२ |
| आगन्तुत्मादस्याधतकालः नि. ७-१४ | आत्मनो लक्षणम् सू. १-५६ | आप्तोपदेशादिभिः सर्वै रोगं परी- निर्णयो विषयः वि. ४-५ |
| आगन्तुज्वरस्य निजाद् भेदको धर्मः वि. ३-१२८, १२८३ | आत्मपरलोकास्तित्वप्रतिपादनम् सू. ११-७-१६ | |
| आचारसंयमम् वि. ४-३०-३५ | आत्मा कथं देहादेहात्तरं यातीति निरूपणम् शा. २-३१-३६ | |
| आचारपरीक्षा वि. ८-४ | | |

| | | |
|--|---|---|
| आमं द्विविधम् सू. १९-४ ७ | आमादिषट्कसंसर्गविकृतिषा चि. ८-३५ | आयुर्वेदस्य प्रयोजनम् सू. १-५३ |
| आमप्रहण्याधिकारिषा सू. १५-७३-७६ | आमाशयस्ये वाते विकृतिषा चि. २८-९१ | आयुर्वेदस्य प्रयोजनम् सू. ३०-२६ |
| आमज्वरलक्षणम् चि. ३-१३३-१३५३ | आमलेहानां गुणाः सू. २७-२८२ | आयुर्वेदस्य शाश्वतस्ये प्रमाणम् सू. ३०-२७ |
| आमप्रदोषभेदौ वि. २-१० | आमस्य गुणाः ,, २७-१३९ | आयुर्वेदस्याधर्ववेदेऽन्तर्भावः सू. ३०-२१ |
| आममललक्षणम् चि. १५-९४ | आमातकस्य गुणाः ,, २७-१२९ | आयुर्वेदस्याधिकरणम् सू. १-४६, ४७ |
| आमलक्षणाः चि. १-१ ३६, १-३७ | आमातकस्य गुणाः ,, २७-१६१ | आयुर्वेदस्याभ्यावज्ञानि ,, ३०-२८ |
| आमलक्षणात् सू. चि. १-२ ४-२ ६ | आमामो द्विविधः ,, १९-४ ७ | आयुर्वेदाभ्यासनेऽधिकारिणः सू. ३०-२९. |
| आमलक्षणात् सू. ,, १-२ ८ | आयुःपरीक्षायाः प्रशंसा इ. ११-२८ | आयुर्वेदावतरणम् १-३-४० |
| आमलक्षणात् सू. चि. १-१ ७५ | आयुःशब्दस्य पर्यायाः सू. ३०-२२ | आयुर्वेदोपदेशो महर्षीणां धर्मार्थमेव चि. १-४ ५७-४ ५९ |
| आमलक्षणात् सू. (केवलम्) चि. १-३ ९-३ १४ | आयुषः अग्रमाणम् सू. ३०-२५ | आयुर्वेदस्य उपयोगविधिः क. ८-६, ७ |
| आमलक्षणात् सू. गुणाः सू. २७-२८२ | आयुषः प्रमाणम् सू. ३०-२५ | आयुर्वेदस्य गुणाः क. ८-४, ५ |
| आमलक्षणात् सू. गुणाः सू. २७-१४७ | आयुषः प्रमाणज्ञानहेतोः शरीरपरीक्षा वि. ८-१२४ | आयुर्वेदस्य द्वाकारसेन एको योगः क. ८-८ |
| आमलक्षणात् सू. चि. १-३/३-३/८ | आयुषः प्रमाणविशेषज्ञानार्थं परीक्षया आतुरगता वर्णस्वरदयो भावाः इ. १-३ | आयुर्वेदस्य पर्यायाः क. ८-३ |
| आमलक्षणात् सू. चि. १-२ ७ | आयुषोऽनियतत्वसाधनम् इ. ३-३६ | आयुर्वेदस्य सुरामण्डेन सीधुना दधि- मण्डेन, आमलक्षणात् सू. शरीररूपेण च एकैको योगः क. ८-९, १० |
| आमलक्षणात् सू. (अपरः) चि. १-२ १० | आयुषो नियतत्वे अनियतत्वे च युक्तिः इ. ३-२९-३५ | आयुर्वेदस्य गुणाः सू. ३७-१३२, १३३ |
| आमातिशये प्रकृपितस्य वातस्य लक्षणम् चि. २८-२७ | आयुर्वेदलक्षणम् सू. १-४१ | आयुर्वेदस्य लक्षणम् इ. १२-८७, ८८ |
| आमातिशारे अनुलोमनार्थं हरीतकी- योगः चि. १९-१८ | आयुर्वेदलक्षणम् सू. १-४१ | आयुर्वेदस्य लक्षणम् सू. ९-४ |
| आमातिशारे प्रमथ्याः चि. १९-१९-२२ | आयुर्वेदलक्षणम् सू. १-४१ | आयुर्वेदस्य हेतुः सू. १-५५ |
| आमातिशारे संप्रहणौषधनिषेधः चि. १९-१४-१७ | आयुर्वेदलक्षणम् सू. १-४१ | आयुर्वेदस्य गुणाः सू. २७-१६६ |
| | आयुर्वेदस्य निवृत्तिः ,, ३०-२३ | आयुर्वेदस्य लक्षणम् शा. ४-३७ २ |
| | आयुर्वेदस्य निषेधपुरुषार्थसाधनत्वम् सू. ३०-२९ | आयुर्वेदस्य गुणाः सू. २७-९८-१०३ |

| | | |
|--|---|---|
| आविकदुग्धस्य गुणाः सू. २७-२४३ | आस्यापनोपयुक्तः कषायस्कन्धः वि. ८-१४४ | आहारस्याहितस्य लक्षणम् सू. २६-८५-१०१ |
| आविकमांसस्य गुणाः ,, २७-६२ | आस्यापनोपयुक्तफल्गुस्कन्धः वि. ८-१४३ | आहारान्कीदृशानभ्यसेत् सू. ५-१०, ११ |
| आसवयोनयः सू. २६-४८, ४९ | आस्यापनोपयुक्तो मधुरस्कन्धः वि. ८-१३९ | आहारान्कीदृशानभ्यसेत् ,, ५-१२ |
| आसवानां पच्यतमानां चतुरशीति- निर्देशः सू. २५-४९ | आस्यापनोपयुक्तोऽम्लस्कन्धः वि. ८-१४० | इक्षुरस्य यात्रिकस्य गुणाः सू. २७-२३७. |
| आसवानां बहुविधो विकल्पः संस्कारश्च सू. २५-४९ | आस्यापनोपयुक्तो लवणस्कन्धः वि. ८-१४१ | इक्षुवर्गः सू. २७-२३७-२४९ |
| आसवानां यथास्वं संयोगसंस्कारसंस्कृ- तानां स्वरूपं कर्तव्यम् सू. २५-४९ | आहारपरिणामकरा भावाः शा. ६-१४-१६ | इक्षोर्भक्षितस्य गुणाः सू. २७-२३७ |
| आसवानां साधारणगुणाः ,, २५-५० | आहारपाकपेक्षो दोषप्रकोपः वि. ३०-३१२ | इक्ष्वाकुकल्पोपक्रमः क. ३-१, २ |
| आसीनप्रवसायितस्य गुणाः ,, २१-५० | आहारमात्राविचारः सू. ५-३-९ | इक्ष्वाकोः कषायेषु नव योगाः क. ३-१४ |
| आसुरघृतस्य लक्षणम् शा. ४-३८ १ | आहारयोगिवर्गः सू. २७-२८६-३०८ | इक्ष्वाकोः पच्येष्टयोगाः क. ३-१५-१८. |
| आसुरादीनां पट्टविधानां राजसत्वम् शा. ४-३८ | आहारविकाराणां वैरोधिकानामुपदेशः सयुक्तिकः सू. २६-८२-८४ | इक्ष्वाकोः पयोमुखा अष्टौ एकश्च सुरामण्डयोगः क. ३-५-९ |
| असुर्या गुणाः सू. २७-९८-१०३ | आहारविकाराणां वैरोधिकानां संक्षेपेण लक्षणम् सू. २६-८०, ८१ | इक्ष्वाकोः पर्यायाः सू. ३-३ |
| आस्येन धार्याणि द्रव्याणि सू. ५-७६, ७७ | आहारराशिमधिकृत्य मात्राऽमात्रात्व- विचारः वि. २-४, ५ | इक्ष्वाकोरेष्टौ भर्तियोगाः क. ३-१५ |
| आस्यापनद्रव्याणि सि. २-११-१३ | आहारविधिविशेषाणां लक्षणतोऽवयवतश्च व्याख्यानम् सू. २६-३५-३७ | इक्ष्वाकोरेकः पल्लयोगः क. ३-१२, १३ |
| आस्यापनादनारयाप्यानां या व्यापदो भवन्ति सि. २-१५ | आहारविधिविशेषाणामुपतनज्ञानफलम् वि. १-२३ | इक्ष्वाकोरेको घृतयोगः क. ३-१३ |
| आस्यापनार्हाः सि. २-१६ | आहारविकारो देहपरीक्षा वि. ८-१२० | इक्ष्वाकोरेको घृतयोगः क. ३-११, १२ |
| आस्यापने कृतमत्फलं श्रेष्ठमित्यत्र मुनीनां मतानि सि. ११-३-१० | आहारस्य कार्यम् सू. २८-४ | इक्ष्वाकोरेको मन्थयोगः क. ३-१९ |
| आस्यापने कृतमत्फलं श्रेष्ठमित्यत्रात्रे- यकृतो निश्चयः सि. ११-११-१४ | आहारस्य परिणामः ,, २८-४ | इक्ष्वाकोरेको मांसयोगः क. ३-२० |
| आस्यापनो दशको महाकषायः सू. ४-१३ | | इक्ष्वाकोर्गुणाः क. ३-४ |
| आस्यापनोपयुक्तः कटुकस्कन्धः वि. ८-१४२ | | इक्ष्वाकोर्वीजानां पट्टं वर्धमानयोगाः क. ३-१३ |
| | | इक्ष्वाकर्मस्तौ एको योगः क. ३-१० |

| | | |
|--|---|-------------------------------------|
| इक्ष्वाकोस्तोत्रे एको योगः क. ३-११ | उचिद्विग्रविषे चिकित्सा | उदराणां निदानम् चि. १३-१२-१५ |
| इक्ष्वाकीफलस्य गुणाः सू. २७-१४५ | चि. २३-२०८-२११ | उदराणां पूर्वस्वरूपं चि. १३-१६-१९ |
| इन्द्रियगतरोषजा रोगाः सू. २८-२० | उचिर्भाष्यातिभाष्यजा व्यापदः | उदराणां संप्राप्तिः चि. १३-१-११ |
| इन्द्रियजानां व्याधीनां चिकित्सा सू. २८-२९ | सि. १२-१४ १ | |
| इन्द्रियजा परोक्षगोपायः इ. ४-३, ४ | उच्छ्वासाधितं सिद्धम् इ. ३-६ | उदराणां साध्याभाष्यविचारः |
| इन्द्रियोत्पत्तिसमकालमेव गर्भस्य चेतसि | उच्छ्वलस्य गुणाः सू. २७-१४ | चि. १३-५०-५४ |
| वेदनानिर्वन्धः क्षा. ४-१५ | उत्तमस्नेहमात्राया गुणाः , १३-३३, ३४ | उदराण्यष्टौ सू. १९-४ १ |
| इन्द्रोक्तं रसायनम् चि. ४-६ | उत्तमस्नेहमात्रार्हाः पुरुषाः | उदराधितमरिष्टम् इ. ३-६ |
| इन्द्रोक्तं रसायनम् (अपरम्) | सू. १३-३१, ३२ | उदरे एरण्ड तैलम् चि. १३-१७२ |
| चि. ४-१३-२६ | उत्तरबस्त्रेदिभिः सि. ९-५०, ५१ | उदरे क्षारतैलम् चि. १३-१६९-१७१ |
| उक्ष्वाजीनाभ्ययोगानामपि कल्पना | उत्तरस्य लक्षणम् चि. ८-३६ | उदरे क्षीरस्य प्रशस्तत्वम् |
| कार्या चि. १२-४९, ५० | उत्पलस्य गुणाः सू. २७-११५ | चि. १३-१९३, १९४ |
| उक्ष्मात्राविचारः क. १२-८६ | उदयप्रलयौ केषां भवतः | उदरे बन्धयः चि. १३-१७३, १७४ |
| | क्षा. १-६९ | उदरे यवाग्नयोगः , १३-१६५, १६६ |
| उक्ष्मातुक्चिकित्सापरिमहः | उदरवहस्रोतसां मूलं तदुल्लिखणं च | उदरे विषप्रयोगः , १३-१७५-१८३ |
| चि. ३-३४४ | चि. ५-८ | उदरे शकम् चि. १३-१६७, १६८ |
| उक्ष्मातुक्मक्षणाणां गुणसंप्रदः | उदरस्य कफजस्य निदानसंप्राप्ति- | उदरेषु अन्नपानम् चि. १३-९५-९९ |
| सू. २७-२७५, २७६ | लक्षणानि चि. १३-२९-३१ | |
| उक्ष्मातुक्फेदानां द्रव्यमानाद्यपेक्षिणो गुणाः | उदरस्य पित्तजस्य निदानसंप्राप्ति-लक्षणानि | उदरेषु अभयौघ्रच्छागक्षीरहरीतकीशिला- |
| सू. २७-२८३ | चि. १३-२६-३८ | जतुगुग्गुलुशृङ्गवेराणां प्रयोगाः |
| उक्ष्मातुक्कानां रोगाणां चिकित्सातिदेशः | उदरस्य वातजस्य निदानसंप्राप्ति- | चि. १३-१५१-१५३ |
| चि. ३०-२९१, २९२ | लक्षणानि चि. १३-२३-२५ | उदरेषु कतिपयघृतयोगाः |
| उक्ष्मेषु विधिनियेषु वैद्येन स्वयमप्युक्तो | उदरस्य सक्षिपातजस्य निदानसंप्राप्ति- | चि. १३-१३८-१४५ |
| विधेयः सि. २-२५-२८ | लक्षणानि चि. १३-३२-३४ | उदरेषु कतिपययोगाः चि. १३-१४६-१५० |
| उचिर्बस्त्रेहृत्प्रागमनकालः सि. १-४६ | उदरस्य संप्राप्तिर्लक्षणं च सू. १८-३१ | उदरेषु क्षीरविधानम् , १३-१०७, १०८ |
| उचिर्द्विग्रहलक्षणम् चि. २३-१५३ | उदराणां क्षोषजानां सामान्यसंप्राप्तिः | उदरेषु घृतयोगाः चि. १३-१११ |
| | चि. १३-२०-२२ | |

| | | |
|---|---|--|
| उदरेषु चित्रकवृत्तम् वि. १३-११६ | उदावर्ते द्विरुत्तरं हिमूषादिचूर्णम् वि. २६-२० | उन्मादस्य निदानपूर्विका संप्राप्तिः नि. ७-४ |
| उदरेषु तक्रविधानम् ,, १३-१०१-१०६ | उदावर्ते निरुहविधानम् वि. २६-१६, १७ | उन्मादस्य पूर्वरूपाणि नि. ७-६ |
| उदरेषु नारायणचूर्णम् चि. १३-१२४-१३२ | उदावर्ते प्रथमचूर्णम् वि. २६-१५ | उन्मादस्य प्रत्यात्मलक्षणम् नि. ७-५ |
| उदरेषु नीलिन्यायं चूर्णम् वि. १३-१३७ | उदावर्ते लक्षणयोगः वि. २६-२४, २५ | उन्मादस्य संप्राप्तिः चि. ९-५ |
| उदरेषु पञ्चकोनघृतम् वि. १३-११२-११४ | उदावर्ते वचादिचूर्णम् वि. २६-२१ | उन्मादस्य सामान्यनिदानम् चि. ९-४ |
| उदरेषु पटोलार्थं चूर्णम् ,, १३-११९-१२३ | उदावर्ते विरेचनमनुवाचनं च चि. २६-१९ | उन्मादस्य सामान्यलक्षणम् ,, ९-६, ७ |
| उदरेषु प्रदेहपरिपेक्षादि चि. १३-१०८-११० | उदावर्ते श्यामादिवर्तिः वि. २६-१२ | उन्मादस्याष्टाव्यलक्षणानि चि. ९-२२ |
| उदरेषु यवायं घृतम् चि. १३-११७ | उदावर्ते स्तिरायं घृतम् चि. २६-२३ | उन्मादाः पञ्च सू. १९-४ ४ |
| उदरेषु वर्जनीयानि ,, १३-९९, १०० | उदावर्ते हिमूषादिचूर्णम् वि. २६-२२ | उन्मादे अपामार्गादिवर्तिः चि. ९-६६, ६७ |
| उदरेषु विरेचनम् चि. १३-११८ | उदुम्बरकुष्ठस्य लक्षणम् नि. ५-८ २ | उन्मादे कल्याणकं घृतम् ,, ९-३५-४२ |
| उदरेषु हृषुपाय चूर्णम् ,, १३-१३६ | उदुम्बरपल्लवस्य गुणाः सू. २७-१०५ | उन्मादे श्रासनादि चि. ९-७९-८५ |
| उदर्दप्रशमनो दशको महाकपायः सू. ४-१७ | उदुम्बरफलस्य गुणाः ,, २७-१६४ | उन्मादे नस्माञ्जनयोगाः चि. ९-६३ |
| उदावर्तस्य चिकित्सा चि. २६-११ | उदुम्बरस्य लक्षणम् चि. ७-१५ | उन्मादे पुराणघृतम् चि. ९-५९-६३ |
| उदावर्तस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणम् चि. २६-५-१० | उद्गारनिमहे क्षोपास्तत्रिकिरसा च सू. ७-१८ | उन्मादे ग्रंथणम् चि. ९-७८ |
| उदावर्ताः षट् सू. १९-४ ३ | उद्गालकस्य गुणाः सू. २७-१४ | उन्मादे मरिचयोगः ,, ९-६८ |
| उदावर्तिन्या योनेर्लक्षणम् चि. ३०-२५, २६ | उन्मादकराणां भूतानामुन्मादने त्रिविधं प्रयोजनम् नि. ७-१५ | उन्मादे महाकल्याणकं घृतम् चि. ९-४२-४४ |
| उदावर्ते अन्नपानम् चि. २६-१८ | उन्मादकराणां भूतानामुन्मादयिष्यता- मारम्भविशेषः नि. ७-१२ | उन्मादे महापैशाचिकं घृतम् चि. ९-४५-४८ |
| उदावर्ते अन्या वर्तयः चि. २६-१३, १४ | उन्मादस्युत्पत्तिः चि. ९-८ | उन्मादे लघुनाथं घृतम् चि. ९-४९-५१ |
| उदावर्ते आनाहलक्षणं तच्चिकित्सा च चि. २६-२६-३२ | उन्मादसंख्या नि. ७-३ | उन्मादे लघुनाथं घृतम् (अपरम्) चि. ९-५२-५६ |
| | उन्मादस्य चिकित्साक्रमः चि. ९-२३-३३ | उन्मादे व्योषादिनस्यमञ्जनं च चि. ९-६५ |

| | | |
|---|--|--|
| उन्मादे शिरीषादिनस्यमज्जनं च वि. ९-६४ | उपायस्य विवरणम् वि. ८-१३०, १३१ | योगाः वि. ११-२५, २६ |
| उन्मादे सिद्धार्थकायगदः वि. ९-६९-७४ | उपायस्य लक्षणम् ,, ८-५९ | उरःक्षते लाक्षादियोगाः वि. ११-१५-१७ |
| उन्मादे हिङ्वादिष्टम् वि. ९-३३, ३४ | उपोदिकाया गुणाः सू. २७-९३ | उरःक्षते श्वेदग्रादिष्टम् वि. ११-४४-४७ |
| उन्मादे हिङ्वादिष्टम् ,, ९-५७, ५८ | उभयगण्डदिशस्यासाध्यत्वे हेतुः नि. २-१८-२० | उरःक्षते घाटवः वि. ११-८८-९० |
| उपकुशस्य लक्षणम् ,, १२-७८ | उरःक्षतस्य क्षीप्रप्रतिकर्तव्यता वि. ११-९५ | उरःक्षते सर्पिर्गुणयोगाः वि. ११-५०-७७ |
| उपजिह्विकाया लक्षणम् ,, १२-७७ | उरःक्षते अमृतप्राणघृतम् वि. ११-३५-४३ | उरःक्षते सैन्धवादिर्गुणम् वि. ११-८५-८७ |
| उपजिह्विकायाः संप्राप्तिर्लक्षणं च सू. १८-१९ | उरःक्षते आवस्त्रिकी चिकित्सा वि. ११-७८-८० | उरुवृक्षस्य गुणाः सू. २७-१०८ |
| उपश्वस्य लक्षणम् वि. २१-४० | उरःक्षते इक्ष्वालिकादिक्षीरम् वि. ११-१८, १९ | उरुमाणगुणाः सू. २७-१५७, १५८ |
| उपश्वस्याशुप्रतिकारोपदेशः वि. २१-४० | उरःक्षते एलादिगुटिका वि. ११-२१-२४ | उरुगुणस्य गुणाः सू. २७-२९० |
| उपश्ववायव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च सि. ६-९०, ९१ | उरःक्षते कतिपययोगाः ,, ११-२८-३२ | उरुजलदाननिषेधः वि. २२-२३ |
| उपनयनिगमनयोर्लक्षणम् वि. ८-३५ | उरःक्षते कोलादिष्टम् वि. ११-३४ | उरणभोजनगुणाः वि. १-२५ १ |
| उपनाहस्वेदस्य द्रव्याणि सू. १४-३५, ३६ | उरःक्षते नागबलादियोगाः वि. ११-९१, ९२ | उरणवातस्य निदानलक्षणं सि. ९-३८ |
| उपनाहस्वेदे बन्धनद्रव्याणि सू. १४-३७ | उरःक्षते पथ्यम् वि. ११-९३, ९४ | उरणेन सार्धं मधुनो विरोधकथनम् सू. २७-२४६ |
| उपनाहस्वेदे बन्धनमोक्षविधिः ,, १४-३८ | उरःक्षते मधुकादिष्टम् वि. ११-४८, ४९ | ऊरुस्तम्भ एकः सू. १९-४ ८ |
| उपप्लवाया योनेर्लक्षणम् वि. ३०-२१, २२ | उरःक्षते मधुकादियोगः वि. ११-२० | ऊरुस्तम्भस्य चिकित्सासूत्रम् वि. २७-६०, ६१ |
| उपयोक्तुर्विवरणम् वि. १-२२ ८ | उरःक्षते यष्टपादादिष्टम् वि. ११-३३ | ऊरुस्तम्भस्य निदानं संप्राप्तिश्च वि. २७-३-१४ |
| उपयोगसंख्याया विवरणम् वि. १-२२ ७ | | |
| उपश्वस्य लक्षणम् नि. १-१० | | |
| उपस्तम्भास्त्रयः सू. ११-३६ | | |
| उपायस्य लक्षणम् वि. ८-७८ | | |

| | | |
|--|---|--|
| ऊरुस्तम्भस्य पूर्वरूपाणि चि. २७-१५ | ऊरुस्तम्भे श्योनाकादिपरिपेकः तत्प्रलेपो वा चि. २७-५६-६० | ऋष्यजिह्वस्य लक्षणम् नि. ५-८-४ |
| ऊरुस्तम्भस्य लक्षणानि चि. २७-१७, १८ | ऊरुस्तम्भे सैन्धवाय तैलम् चि. २७-४५, ४६ | ऋष्यजिह्वस्य लक्षणम् चि. ७-१७ |
| ऊरुस्तम्भस्य साध्यासाध्यलक्षणानि चि. २७-१९ | ऊरुस्तम्भे स्नेहप्रयोगजा दोषाः चि. २७-१६ | एकं हृदयम् शा. ७-८ |
| ऊरुस्तम्भद्वाराः कृतिपययोगाः चि. २७-२८-३२ | ऊरुस्तम्भे स्वर्णक्षीयादियोगः चि. २७-३६, ३७ | एककुष्ठस्य लक्षणम् चि. ७-२१ |
| ऊरुस्तम्भे अन्ययोगाः चि. २७-५०-५३ | ऊर्ध्वगरकपितस्य साध्यत्वे हेतुः नि. २-१२-१४ | एकसाफदुग्धस्य गुणाः सू. २७-२२१ |
| ऊरुस्तम्भे अन्यौ योगौ चि. २७-३८ | ऊर्ध्वजत्रुरोगनिदानोपसंहारः चि. २६-१३३ | एकस्मिन्पुरुषे मनसोऽनेकवदाभासे कारणम् सू. ८-५ |
| ऊरुस्तम्भे अष्टकट्वरं तैलम् चि. २७-४७ | ऊर्ध्वताल्यव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च चि. ७-३२-३९ | एकस्मिन्पुरुषे मनसोऽनेकवदाभासे कारणम् सू. ८-५ |
| ऊरुस्तम्भे आवस्थिकी चिकित्सा चि. २७-३९-४१ | ऊर्ध्वबासस्य लक्षणम् चि. १७-४९-५१ | एको लेहयोगः क. ८-१२ |
| ऊरुस्तम्भे कुष्ठाय तैलम् चि. २७-४३, ४४ | ऊर्ध्वपोहसमर्थेन भिपजाऽत्रोक्तकम्भे- ष्वपकर्षप्रक्षेपावपि कार्या वि. ८-१४९ | एकगजस्य गुणाः सू. २७-३३ |
| ऊरुस्तम्भे तैलयोगाः चि. २७-४१, ४२ | ऋतुकाले स्त्रियाः कर्तव्यम् शा. ८-५ | एणमांसस्य गुणाः ,, २७-७७ |
| ऊरुस्तम्भे वाणचिकित्सा चि. २७-४८ | ऋतुजा विकाराः कथं न भवन्ति शा. २-४५ | एतच्छास्त्रज्ञानफलम् सि. १२-५१-५५ |
| ऊरुस्तम्भे मूर्वादियोगः चि. २७-३५ | ऋतुभेदेन कालविभागः वि. ८-१२५ | एतत्तन्त्रपठनफलम् ,, १२-३४-३५ |
| ऊरुस्तम्भे वत्सादिप्रलेपः चि. २७-५४, ५५ | ऋत्वादिबलाबलाज्वरकालस्या- न्यथात्वम् चि. ३-७५ | एरण्डतैलस्य गुणाः सू. १३-१२ |
| ऊरुस्तम्भे बल्मीकमृत्तिकागुर्घादनम् चि. २७-४९ | ऋत्वादिविभागेन संवत्सरविभागः सू. ६-४ | एरण्डतैलस्य गुणाः ,, २७-२८९ |
| ऊरुस्तम्भे शाङ्खेष्टादियोगः चि. २७-३३, ३४ | ऋत्वाद्यपेक्षः कालविचारः चि. ३०-३०४-३०८ | एरण्डमूलाद्यो निरुद्धः सि. ३-३६-४२ |
| | | एरण्डमूलाद्यो यापनवस्तिः सि. १२-१६ २ |
| | | एवांसकस्य गुणाः सू. २७-११०, १११ |
| | | ऐतिहास्य लक्षणम् वि. ८-४१ |

| | | |
|--|---|---|
| ऐन्दुकस्य गुणाः सू. २७-११४ | कक्षाया लक्षणम् वि. १२-९१ | कपालकुष्ठस्य लक्षणम् नि. ५-८ १ |
| ऐन्द्रं रसायनम् वि. १/३-२४-२९ | कच्छपिकाया लक्षणम् सू. १७-८४ | कपालकुष्ठस्य लक्षणम् वि. ७-१४ |
| ऐन्द्रसत्त्वस्य लक्षणम् शा. ४-३७ ३ | कटुरसस्य गुणकर्माणि तस्यातियोगे दोषाश्च सू. २६-४३ ४ | कपिजलमांसस्य गुणाः सू. २७-६८ |
| ऐरावतकस्य गुणाः सू. २७-१६१ | कठिकस्य गुणाः सू. २७-९५-९७ | कपित्थस्य गुणाः सू. २७-१३६, १३७ |
| ओजःक्षयलक्षणम् सू. १७-७३ | कणभदष्टलक्षणम् वि. २३-१५२ | कफकासे कटुकणादिकायः वि. १८-११२, ११३ |
| ओजसः कर्माणि सू. ३०-९-११ | कण्ठादूर्ध्वं गच्छतः स्नेहस्य लक्षणं चिह्नित्वा च सि. ४-३८, ३९ | कफकासे कण्टकारीवृतम् वि. १८-१२५-१२८ |
| ओजसो लक्षणम् सू. १७-७४, ७५ | कण्टयो दशको महाकषायः सू. ४-१० | कफकासे कतिपययोगाः वि. १८-११७-१२२ |
| ओदनस्य गुणाः ,, २७-२५७, २५८ | कण्ट्यो दशको महाकषायः सू. ४-११ | कफकासे कुलयादिघृतम् वि. १८-१२९ |
| ओदनानां मांसादिविशिष्टद्वयसंयोग- साधितानां गुणाः सू. २७-२५९ | कथं भिषक् त्रिकालं वेदनां चिह्नित्सति शा. १-८६-९७ | कफकासे चिकित्साक्रमः वि. १८-१०७-१११ |
| ओषधीनां नामरूपयोगज्ञाने गुणाः सू. १-१२०-१२३ | कथं भूतमना भौषधं विवेक्तु सि. ६-१७ | कफकासे दशमूलादिघृतम् वि. १८-१२३-१२४ |
| ओष्ठाश्रयमरिष्टम् इ. ८-१२ | कथं भूतमौषधं व्यापयते सि. ६-२८ | कफकासे दोषापेक्षिणी चिकित्सा वि. १८-१३१, १३२ |
| औद्भिदद्वयसंमिश्रः सू. १-७३ | कथं भूते देशे जातानि द्रव्याण्युपादेयानि क. १-९ | कफकासे धूमयोगाः वि. १८-१३० |
| औद्भिदलवणस्य गुणाः ,, २७-३०३ | कथं भूतौ स्त्रीपुरुषौ मैथुनमुपेयाताम् शा. ८-७ | कफकासे नागरादियोगः वि. १८-११५ |
| औषम्यस्य लक्षणम् वि. ८-४२ | कथं भेषजं स्वीकर्ण्यं मन्दस्वं च याति क. १२-५३-५६ | कफकासे पाठादियोगः ,, १८-११४ |
| औषधं त्रिविधम् सू. ११-५४, ५५ | कथं भेषजं स्वीकर्ण्यं मन्दस्वं च याति क. १२-५३-५६ | कफकासे पिप्पलीययोगः ,, १८-११६ |
| औषधद्रव्याणि कथं रसायानि क. १-११ | कदम्बस्य गुणाः सू. २७-११४ | कफगुल्मे निदानं लक्षणं च वि. ५-१४, १५ |
| औषधद्रव्याहरणविधिः क. १-१० | कदा पुनः संशोधनौषधं देयम् क. १२-६३, ६४ | कफगुल्मे आतिदेशिकी चिकित्सा वि. ५-१६१, १६२ |
| औषधानां नामरूपयोगज्ञाने दोषाः सू. १-१२४-१३२ | कन्योत्पत्तौ कारणम् शा. २-११-१४ | कफगुल्मे क्षीरपद्वलकं घृतम् वि. ५-१४७, १४८ |
| औषधाहारविषयकमरिष्टम् इ. १२-६-८ | | |

| | | |
|--|---|---|
| कफगुल्मे चिकित्साक्रमः नि. ५-४८ कफगुल्मे दन्तीहरीतकी चि. ५-१५४-१६० | कफप्रहण्यां पिप्पलायं चूर्णम् चि. १५-१६८-१७० | कफजप्रतिदयामचिकित्सा चि. २६-१५०-१५७ |
| कफगुल्मेऽनपानम् चि. ५-१६४-१६८ | कफप्रहण्यां भलातकादिक्षारः चि. १५-१७७,१७८ | कफजप्रमेहाणां साध्यत्वे उपपत्तिः नि. ४-११ |
| कफगुल्मे भलातकायं घृतम् चि. ५-१४३-१४६ | कफप्रहण्यां भूनिम्बादिक्षारः चि. १५-१८१ | कफजमूत्रकृच्छ्रे व्योषादिचूर्णम् चि. २६-५५ |
| कफगुल्मे मिश्रकर्नेदः चि. ५-१४९-१५१ | कफप्रहण्यां मधुकुण्डुणासवः चि. १५-१५०,१५१ | कफजमूत्रकृच्छ्रे सप्तच्छदादियवागूः कायो वा चि. २६-५७ |
| कफगुल्मे वसनम् चि. ५-१३७ | कफप्रहण्यां मधूकासवः चि. १५-१४६-१४९ | कफजयोनिव्यापरोर्निदानं लक्षणं च चि. ३०-१३,१४ |
| कफगुल्मे विरेचनयोगाः चि. ५-१४२,१५३ | कफप्रहण्यां मध्वरिष्टः चि. १५-१६३-१६७ | कफजशिरोरोगस्य चिकित्सा चि. २६-१८०-१८२ |
| कफगुल्मे स्नेहयोगाः चि. ५-१४२ | कफप्रहण्यां मूलासवः चि. १५-१५६-१५९ | कफजहृद्दोगस्य चिकित्सा चि. २६-९६,९९ |
| कफप्रहण्यां कतिपये क्षारयोगाः चि. १५-१७३-१७६ | कफप्रहण्यां वत्सकादियोगः चि. १५-१८६,१८७ | कफजहृद्दोगे उदुम्बरादिभेदः चि. २६-९८,९९ |
| कफप्रहण्यां क्षारगुटिका चि. १५-१८३-१८५ | कफप्रहण्यां हरिद्रादिक्षारः चि. १५-१८२ | कफजादिप्रमेहलक्षणम् चि. ६-१२ |
| कफप्रहण्यां क्षारघृतम् चि. १५-१७१,१७२ | कफप्रहण्यां मज्जापानम् चि. १५-१४४,१४५ | कफपित्तराश्रयस्य वायोलक्षणाः चि. २८-६१,६२ |
| कफप्रहण्यां त्रिकलादिक्षारः चि. १५-१८८-१९३ | कफप्रहण्यां निदानलक्षणे चि. २०-१२,१३ | कफप्रमेहस्य निदानलक्षणे चि. ३०-२१६-२१९ |
| कफप्रहण्यां दुरालभादिक्षारः चि. १५-१७९,१८० | कफप्रहण्यां ह्रिद्रादिक्षारः चि. १५-१८२ | कफप्रमेहस्य दृष्ट्याः नि. ४-७ |
| कफप्रहण्यां दुरालभासवः चि. १५-१५२-१५५ | कफप्रहण्यां मूलासवः चि. १५-१५६-१५९ | कफप्रमेहस्य निदानम् नि. ४-५,६ |
| कफप्रहण्यां पलाशादिपानीयम् चि. १५-१४२,१४३ | कफप्रहण्यां मधूकासवः चि. १५-१४६-१४९ | कफप्रमेहस्य संपातिः ,, ४-८,९ |
| कफप्रहण्यां पिण्डासवः चि. १५-१६०,१६१ | कफप्रहण्यां मध्वरिष्टः चि. १५-१६३-१६७ | कफप्रमेहाणां लक्षणानि चि. ६-९ |
| | कफप्रहण्यां मूलासवः चि. १५-१५६-१५९ | कफप्रमेहेषु कतिपययोगाः चि. ६-२५-२९ |

कफरोगे शस्त्रास्त्रयो वस्त्रयः
सि. १०-२३, २४

कफाधिकवातरफचिकित्सा
चि. २९-१४५-१४८

कफाधिकस्य वातरफस्य लिङ्गानि
चि. २९-२९

कफाश्लेष्मेदस्य चिकित्सा
सि. ४-३२, ३३

कफाश्लेष्मेदस्य लक्षणम्
सि. ४-३२, ३३

कफाश्लेष्मेदस्य यदा लालादयः
स्युस्तदा चिकित्सा क. १२-७७

कफोदरे क्षारयोगाः
चि. १३-१५८-१६४

कफोदरे चिकित्साविधिः
चि. १३-७२-७३

कफोदरेऽरिष्टयोगाः चि. १३-१५७

कफोन्मादस्य निदानलक्षणे
चि. ९-१३, १४

करजफलस्य गुणाः सू. २७-१६०

करणस्य परीक्षा चि. ८-८७

करणस्य विवरणम् चि. १-२२ | २

करमर्दस्य गुणाः सू. २७-१६१

करीरस्य गुणाः ,, २७-१४२, १४३

कर्कटरसाद्यो यापनवस्त्रिः
सि. १२-१८ | ७

कर्कशुगुणाः सू. २५-१३२

कर्कशस्य गुणाः सू. २७-१५-१७

कर्कोटकस्य गुणाः ,, २७-१५-१७

कर्चूरस्य गुणाः सू. २७-१५५

कर्णपूरणस्य गुणाः सू. ५-८४

कर्णमूलशोधचिकित्सा
चि. ३-२८७, २८८

कर्णमूलशोधस्य संप्राप्तिर्लक्षणं च
सू. १८-२७

कर्णरोगचिकित्सा चि. २६-२२१

कर्णरोगस्य वातजादिभेदेन लक्षणानि
चि. २६-१२७, १२८

कर्णरोगाश्चत्वारः सू. १९-४, ५

कर्णरोगे क्षारतेलम्
चि. २६-२२६-२३०

कर्णरोगे देवदारुदितैलम्
चि. २६-२२३-२२५

कर्णरोगे द्विगुवादितैलम् चि. २६-२२२

कर्णिन्या योनेर्लक्षणम्
चि. ३०-२७, २८

कर्दमविषर्षस्य निदानलक्षणे
चि. २१-३७, ३८

कर्चुदारपुष्पाकस्य गुणाः २७-१०४

कर्चुदारस्य गुणाः सू. २७-१८-१०३

कर्मवस्त्रेर्विवरणम् सि. १-४७

कर्मलक्षणम् ,, १-५२

कर्मलक्षणातिदेशः वि. ८-२९

कर्माणि सू. १-३

कर्पूस्त्रेस्य कल्पना सू. १४-५०, ५१

कलम्ब्या गुणाः ,, २७-१८-१०३

कलायस्य गुणाः ,, २७-२८, २९

कलायस्य गुणाः ,, २७-१५-१७

कलायशाकस्य गुणाः सू. २७-९२

कल्लक्षणां सू. ४-७

कल्पस्थानस्य विषयः क. १-३

कपायकल्पनं पञ्चविधम् सू. ४-७

कपायस्य गुणकर्माणि तस्यातियोगे
दोषाश्च सू. २६-४३

कसेकस्य गुणाः सू. २७-११६, ११७

कस्मिन्काले कस्य दोषस्य प्रकोपः
चि. ३०-३०९, ३१०

कस्मिन्काले कदा नावनं विधेयम्
चि. २-२३

कस्मिन्वयसि कस्य दोषस्य प्रकोपः
चि. ३०-३११

काकणस्य लक्षणम् चि. ७-२०

काकणकुण्डस्य लक्षणम् नि. ५-८

काकाण्डोलाया गुणाः सू. २७-३४

काकमाच्या गुणाः ,, २७-८९

कान् नातिस्त्रिगुणान् विरेचयेत् सि. ६-८

| | | |
|---|---|--|
| कामला द्विविधा-सू. १९-४ ७ | कालमृत्योरकालमृत्योश्च विवरणम् वि. ३-३७, ३८ | कासानां साध्यासाध्यविचारः वि. १८-३०, ३१ |
| कामलापाण्डुरोगयोः अन्नपानम् वि. १६-४१, ४२ | काललवणस्य गुणाः सू. २७-३०३ | किटिमस्य लक्षणम् वि. ७-२२ |
| कामलापाण्डुरोगयोः संशोधनम् वि. १६-३९, ४० | कालशकस्य गुणाः सू. २७-९१ | किटस्य कार्यम् सू. २८-४ |
| कामलापाण्डुरोगयोः स्नेहनम् वि. १६-४३ | कालस्य विवरणम् ,, १-२२ ६ | किमङ्गं गर्भस्य कुक्षौ प्रथममुत्पद्यते इत्यत्र महर्षीणां मतानि शा. ६-२१ |
| कामलायाः असाध्यलक्षणम् वि. १६-३८ | कालाकालमृत्योर्निर्णयः शा. ६-२८ | किमपेक्ष्य दत्तो वस्तिः सम्यक् सिद्धि- मेति सि. ३-६ |
| कामलायाः निदानं लक्षणं च वि. १६-३४-३६ | कालमलस्य क्षिण्डाकीप्रभृतेर्गुणाः सू. २७-२८५ | किलाटगुणाः सू. २७-२२४-२३५ |
| कामलायामावस्थिकी चिकित्सा वि. १६-१२१-१३१ | काश्मर्यफलस्य गुणाः सू. २७-१३५ | किलासनि त्रीणि सू. १९-४ ६ |
| कामशोकभयक्रोधभूतावेशविषमज्वराणां लक्षणम् वि. ३-१२२-१२४ | कासरूपं राज्यक्षमलक्षणम् वि. ८-५१ | कीटविषचिकित्सा वि. २३-१७०-१७४ |
| कामादिजन्मादचिकित्सा वि. ९-८६ | कासस्य क्षतजस्य निदानलक्षणे वि. १८-२०-२३ | कीटविषे लेपो वि. २३-१९९ |
| कारणस्य परीक्षा वि. ८-८६ | कासस्य क्षयजस्य निदानलक्षणे वि. १८-२४-२९ | कीटानां वातोत्पत्तिरित्यम् वि. २३-१६५, १६६ |
| कारणस्य लक्षणम् ,, ८-६९ | कासस्य विषजस्य निदानलक्षणे वि. १८-१४-१६ | कीटशमनानुपानं युक्तम् सू. २७-३१९, ३२० |
| कारवीगुणाः सू. २७-३०७, ३०८ | कासस्य पूर्ववृत्तम् वि. १८-५ | कुक्कुटमांसस्य गुणाः सू. २७-६६ |
| कार्यस्य परीक्षा वि. ८-८९ | कासस्य भेदाः ,, १८-४ | कुक्षौ गर्भस्य वृद्धेर्हेतुः शा. ४-२७ |
| कार्यस्य लक्षणम् ,, ८-७२ | कासस्य भेदे हेतुः ,, १८-९ | कुक्षौ गर्भोत्पत्तिप्रकारः शा. ४-७ |
| कार्यफलस्य परीक्षा ,, ८-९० | कासस्य वातजस्य निदानलक्षणे वि. १८-१०-१३ | कुक्षौ त्रिविधावकाशांशविभागः वि. २-३ |
| कार्यफलस्य लक्षणम् ,, ८-७३ | कासस्य श्लेष्मजस्य निदानलक्षणे वि. १८-१७-१९ | कुक्षौ यथा गर्भस्तिष्ठति शा. ६-२२ |
| कार्ययोनेः परीक्षा ,, ८-८८ | कासस्य संप्राप्तिः वि. १८-६-८ | कुक्षौ यथा गर्भोऽभिवर्धते शा. ६-२३ |
| कार्ययोनेर्लक्षणम् ,, ८-७१ | कासहरो दशको महाकषायः सू. ४-१६ | कुचेलाया गुणाः सू. २७-९५-९७ |
| कार्यविशेषापेक्षया वस्तीनां संस्कार- विशेषः सि. १०-१३-१७ | कासाः पञ्च सू. १९-४ ४ | कुत्रिकागुणाः ,, २७-३०७, ३०८ |
| कालघस्तेर्विवरणम् सि. १-४७-५० | | कुटिजरस्य गुणाः ,, २७-९८-१०३ |

| | | |
|---|--|---|
| कुटीरप्रवेशिकस्य विधिः चि. १-१ १७-१ २४ | कुष्ठहरः पटोलमूलादिफापः चि. ५-६२-६४ | कुष्ठे स्नानपानद्रव्याणि चि. ७-१२८-१३० |
| कुटीरप्रवेशिको विधिः केषां हितः पातातपिको विधिश्च तेषां हितः चि. १-४ २७, ४ २८ | कुष्ठहरयोगाः चि. ७-६०, ६१ | कुष्ठे गन्धबहुवर्णमाक्षिकपारदानां प्रयोगाः चि. ७-७०-७२ |
| कुटीरवेदस्य कल्पना सू. १४-५२-५४ | कुष्ठहराः प्रदेहाः सू. ३-१७ | कुष्ठे चित्रकादिलेपः चि. ७-८५, ८६ |
| कुटीरवेदस्य द्रव्याणि सू. १४-२८ | कुष्ठादिचूर्णम् ,, २३-१५, १६ | कुष्ठे तिक्तपट्टपलकपृतम् चि. ७-१४०-१४३ |
| कुठेरकस्य गुणाः सू. २७-९८-१०३ | कुष्ठानां दोषदूष्यसंग्रहः नि. ५-३ | कुष्ठे तिक्तदवाकुतैलम् चि. ७-१०८-११० |
| कुतुम्भकस्य गुणाः सू. २७-९८-१०३ | कुष्ठानां दोषांशविकल्पादिमिर्वेदनादि- विशेषाः नि. ५-४ | कुष्ठे तैलयोगाः चि. ७-१००-१०५ |
| कुत्र कीदृशो वस्त्रियोगः चि. १०-९, १० | कुष्ठानां निदानम् चि. ७-४-१० | कुष्ठे त्रिफलादिलेपः ,, ७-८८ |
| कुपितस्य वायो रूपाणि चि. २८-२०-२३ | कुष्ठानां पूर्वरूपाणि नि. ५-७ | कुष्ठे त्रिफलायोगः ,, ५-१३६-१३९ |
| कुमारजीवस्य गुणाः सू. २७-९८-१०३ | कुष्ठानां बहुत्वेषुपि सप्तस्वेवान्तर्भावं कुत्सो- पदेशः नि. ५-४ | कुष्ठे त्रिफलादिचूर्णम् चि. ७-६८, ६९ |
| कुम्भकामलाया लक्षणम् चि. १६-३७ | कुष्ठानां साध्यासाध्यत्वम् नि. ५-९ | कुष्ठे पथ्यमपानम् चि. ७-८०, ८३ |
| कुम्भीवेदस्य कल्पना सू. १४-५६-५८ | कुष्ठानां साध्यासाध्यविचारः चि. ७-३७, ३८ | कुष्ठे महाखदिरपृतम् चि. ७-१५२-१५६ |
| कुलकस्य गुणाः सू. २७-९५-९७ | कुष्ठानि सप्त सू. १९-४ २ | कुष्ठे महातिक्तकपृतम् चि. ७-१४४-१५० |
| कुलमग्नमेहस्यासाध्यत्वम् चि. ६-५७ | कुष्ठे अग्नये लेपाः चि. ७-९१-९९ | कुष्ठे मांस्यादिलेपः चि. ७-८७ |
| कुलत्वस्य गुणाः सू. २७-२६ | कुष्ठे आसवयोगाः नि. ७-७३-८१ | कुष्ठे सुस्तादिचूर्णम् ,, ७-६५-६७ |
| कुल्माषादीनां गुणाः सू. २७-२६०, २६१ | कुष्ठे नद्यालनयोगौ चि. ७-१६०, १६१ | कुष्ठे योगाः चि. ७-१५७-१५९ |
| कुष्ठमो दशको मदाकपायः सू. ४-११ | कुष्ठे स्रवतनयोगः चि. ७-१२७ | कुष्ठे लेपयोगः ,, ७-८४ |
| कुष्ठनामानि चि. ७-१३ | कुष्ठे एडगजादिलेपः ,, ७-१२६ | कुष्ठे लेपाः ,, ७-१२४, १२५ |
| कुष्ठस्याननुवर्तनम् चि. ७-१५१ | कुष्ठे कदल्यादिमेदकपानं किण्वलेपश्च चि. ७-८९, ९० | कुष्ठे विषादिकादौ लेपयोगाः चि. ७-१२०, १२१ |
| कुष्ठस्यारिष्टभूतानि पूर्वरूपाणि इ. ५-१४, १५ | कुष्ठे कनकक्षीरीतैलम् चि. ७-१११-११६ | |

कुण्डे श्वेतकरवीरपल्लवायं तैलम्
वि. ७-१०६, १०७

कुण्डेषु अनुवाचनम् वि. ७-४७

कुण्डेषु आस्थापनम् ,, ७-४६

कुण्डेषु कृमिसंभवः नि. ५-१०

कुण्डेषु क्षारः वि. ७-५४

कुण्डेषु चिकित्साक्रमः
वि. ७-३९-४२

कुण्डेषु दोषलिङ्गानि वि. ७-३४-३६

कुण्डेषु दोषविशेषेण चिकित्सा
वि. ७-५८, ५९

कुण्डेषु घूमपानम् वि. ७-४९

कुण्डेषु नस्यम् ,, ७-४८

कुण्डेषु रक्तमोक्षः ,, ७-५०-५३

कुण्डेषु लेपात्पूर्वं वर्षणविधानम्
वि. ७-५६, ५७

कुण्डेषु वसनयोगः वि. ७-४३

कुण्डेषु विरेचनयोगः ,, ७-४४, ४५

कुण्डेषु विषप्रक्षेपः ,, ७-४५

कुण्डेष्वन्नपानसाधनार्थं हितानि तैलानि
वि. ७-११९

कुण्डपादीनां स्नेहनप्रकारः

सू. १३-९२-९५

कुण्डपादीनां स्नेहने वर्जनीयद्रव्याणि
सू. १३-९१

कुसुम्मतैलस्य गुणाः सू. २७-२९३

कुसुम्भशाकस्य गुणाः ,, २७-११०

कुसुम्भस्य गुणाः ,, २७-९८-१०३

कूपजलस्य गुणदोषाः ,, २७-२१४

कूपस्वेदस्य कल्पना ,, १४-५९, ६०

कूर्ममांसस्य गुणाः ,, २७-८३

कूर्मायो यापनावस्तिः सि. १२-१८/६

कृकलासकदण्डलक्षणम् वि. २३-१४९

कृच्छ्रसाध्यस्य लक्षणम् सू. १०-१४-१६

कृच्छ्रसाध्यस्य लक्षणम् ,, १८-३७

कृतप्रेताह्वापरकलिषु क्रमेण धर्मस्य
मनुष्याणामायुषध हासः
वि. ३-२४-२८

कृतवेधनकल्पोपक्रमः क. ६-१, २

कृतवेधनस्य चत्वारः क्षीरयोगाः
क. ६-५

कृतवेधनस्य दश पिच्छायोगाः
क. ६-८

कृतवेधनस्य द्वादशतिः कषाययोगाः
क. ६-५-७

कृतवेधनस्य पर्याया गुणाश्च
क. ६-३, ४

कृतवेधनस्य पञ्च वर्तियोगाः एको
घृतयोगश्च क. ६-८

कृतवेधनस्य सप्त मांसरघयोगाः
क. ६-११, १२

कृतवेधनस्याष्टौ लेहयोगाः क. ६-९, १०

कृतवेधनस्यैकः सुरायोगः क. ६-५

कृतवेधनस्यैक इक्षुरसयोगः क. ६-१२

कृताञ्जवर्गः सू. २७-२५०-२८५

कृमिकर्तृककुण्डोपद्रवाः नि. ५-११

कृमिघ्नमेवजविधेरन्यत्राप्यतिदेशः
वि. ७-२८-३०

कृमिज्वरोगाणां संक्षेपेण चिकित्सा
वि. ७-१४

कृमिज्वरोरोगस्य चिकित्सा
वि. २६-१८३-१८६

कृमीणां प्रकृतिविघातः वि. ७-२१-२७

कृमीणां भेदाः वि. ७-९

कृमीणामपकर्षणम् वि. ७-१५-२०

के चिरेण के च शीघ्रं मायन्ति
वि. २४-८५-८७

के नराः सेव्याः सू. ७-५८, ५९

के नरा वृज्याः ,, ७-५६, ५७

केम्बूकस्य गुणाः ,, २७-९५-९८

केल्टस्य गुणाः ,, २७-११४

केशसंख्याकषणम् शा. ७-१४

केशादिकल्पनस्य गुणाः सू. ५-९९

केशाश्रयमरिष्टम् इ. ८-६-९

| | | |
|---|---|--|
| केशाधितं रिष्टम् इ. ३-६ | किमिजातयो विंशतिः सू. १९-४ ८ | क्षयकासे कासमैपज्यसंग्रहः चि. १८-१९० |
| केशां प्रमेहः सहसा भवति नि. ४-५०, ५१ | किमिनाशनो निरुहः सि. ८-९, १० | क्षयकासे कासमर्दादिघृतम् चि. १८-१६३, १६४ |
| केशां प्रमेहो न भवति नि. ४-५२ | क्रीमादनस्य गुणाः सू. २७-११६, ११७ | क्षयकासे गुह्य्यादिघृतम् चि. १८-१६१, १६२ |
| केशां स्निग्धं केषां च रुक्षं विरेचनं प्रयोज्यम् क. १२-८३ | क्रीमाख्यव्यापदो वर्णनम् सू. ६-९२, ९३ | क्षयकासे चिकित्साक्रमः चि. १८-१३४ |
| केषां स्नेहविरेचनं केषां च रुक्षं विरेचनं देयम् सि. ६-९-१४ | क्रीमभेदाः शा. २-१७-२१ | क्षयकासे चिकित्साक्रमः चि. १८-१४९-१५७ |
| केषु शूलेषु वमनादीनां प्रवृत्तिः केषु च निवृत्तिः वि. ८-१२६, १२७ | क्रीम्याचिकित्सा चि. ३०-१९१-२०३ | क्षयकासे जीवश्ल्यादिलेहः चि. १८-१७६-१८१ |
| कोरदपस्य गुणाः सू. २७-१६-१८ | क्रीम्यस्य निदानं सामान्यलक्षणं च चि. ३०-१५३-१५७ | क्षयकासे द्विपथमूल्यादिघृतम् चि. १८-१५८-१६० |
| कोविदारस्य गुणाः ,, २७-९८-१०३ | क्रीम्यानि चरवारि सू. १९-४ ५ | क्षयकासे द्विमेदादिधूमवर्तिः चि. १८-१४५-१४८ |
| कोविदारपुष्पशाकस्य गुणाः सू. २७-१०४ | क्षतकासे वावस्थिकी चिकित्सा चि. १८-१३९-१४३ | क्षयकासे धूमयोगाः चि. १८-१४४ |
| कोशातकाथो निरुहः सि. ३-५६-५८ | क्षतक्षीणस्य निदानम् चि. ११-४-८ | क्षयकासे पद्मकादिलेहः चि. १८-१७४, १७५ |
| कोष्ठयोर्मृदुकूरयोर्लक्षणम् सू. १३-६५-६९ | क्षतक्षीणस्य पूर्वरूपम् ,, ११-१२ | क्षयकासे विष्पल्यादिलेहः चि. १८-१३५-१३७ |
| कोष्ठस्थे वाते चिकित्सा चि. २८-८६-८८ | क्षतक्षीणस्य लक्षणम् ,, ११-९-११ | क्षयकासे हरीतकीलेहः चि. १८-१६५-१६७ |
| कोष्ठाश्रयाणां दोषाणां शास्त्रागमने हेतुः सू. २८-३१, ३२ | क्षतक्षीणस्य विशेषलक्षणम् ,, ११-१३ | क्षयकासे क्षयार्णां हेतवः सू. ९७-७६, ७७ |
| कोष्ठे प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम् चि. २८-२४ | क्षतक्षीणस्य साध्यासाध्यविचारः चि. ११-१४ | क्षयकासे क्षयधुविधारणे दोषास्तच्चिकित्सा च सू. ७-१६, १७ |
| कौशेयतत्त्वस्य लक्षणम् शा. ४-३७ ६ | क्षयकासे क्षतिपयपुतयोगाः चि. १८-१६५-१६७ | क्षयथोर्नासाशोषस्य च लक्षणम् चि. २६-१११ |
| किमिन्द्रो दशको महाक्षयः सू. ४-११ | क्षयकासे क्षतिपयलेहयोगाः चि. १८-१७०-१७३ | |

क्षारस्य गुणास्तथाविमात्रसेवने
दोषाश्च वि. १-१७

क्षीणवित्कस्य चिकित्सा सि. ८-१८

क्षीणेऽन्नपानम् चि. ११-८१-८४

क्षीरदोषा अष्टौ सू. १९-४ | १

क्षीरदोषाणां निदानं संश्रान्तिश्च
चि. ३०-२२९-२३६

क्षीरदोषे धान्याः संशोधनम्
चि. ३०-२५१, २५२

क्षीरदोषे हितमन्नपानम्
चि. ३०-२५७-२६०

क्षीरयोगः प्रथमः चि. २-६-७

क्षीरयोगो द्वितीयः ,, २-८-१०

क्षीरयोगस्तृतीयः चि. २-११

क्षीराणां नामकर्माणि सू. १-१०५-११३

क्षीराश्रया वृक्षास्तेषां कर्म च
सू. १-११४, ११५

क्षीरक्षरवृषाणां गुणाः सू. २७-२६९

क्षुद्रश्वासस्य लक्षणम् चि. १७-६५-६७

क्षुद्राख्यहिकाया लक्षणम् ,, १७-३४-३७

क्षुद्रेगनिग्रहे दोषास्तथिकित्सा च
सू. ७-२०

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः किं पूर्वमिति प्रश्नस्योत्तरम्
शा. १-८२

क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागः शा. १-६५

खड्गिमांसस्य गुणाः सू. २७-८४

खण्डस्य गुणाः सू. २७-२४०

खण्डिकाया गुणाः ,, २७-२८, २९

खराहाया गुणाः ,, २७-१७२

खर्जूरस्य गुणाः ,, २७-११६

खर्जूरस्य गुणाः ,, २७-१२७

खर्जूरादिमन्यः ,, २३-३८

खल्या लक्षणम् चि. २८-५७

खल्याश्चिकित्सा ,, २८-१०१, १०२

खालित्यपलितयोरन्ये कतिपययोगाः
चि. २६-२७६-२८३

खालित्यपलितयोर्महानीलतैलम्
चि. २६-२६८-२७५

खालित्यस्य लक्षणम् चि. २६-१३२

खालित्यादिविक्रिंशा ,, २६-२६२-२६७

गण्डीरस्य गुणाः ,, २७-१०६

गण्डीरस्य गुणाः सू. २७-१७१

गतायुषो गुणवच्चतुष्पादेऽपि न गुणोदयः
इ. ११-२७

गन्धनस्य गुणाः सू. २७-१४

गन्धमाल्यनिपेवणस्य गुणाः सू. ५-९६

गन्धविज्ञानमरिष्टभूतम् इ. २-७-१६

गन्धर्वोन्मत्तस्य लक्षणम् चि. ९-२०

गमनाहं स्त्री चि. २-१ | ७-१ | १६

गम्भीराख्यहिकाया लक्षणम्

चि. १७-२७-३०

गरलक्षणं तथिकित्सा च

चि. २३-२३३-२४१

गरविषलक्षणानि चि. २३-१४

गर्भः कथं प्रसूयते शा. ६-२४, २५

गर्भग्रहणविधिः शा. ८-६

गर्भस्य कारणम् ,, २-३, ४

गर्भस्य देवादिप्रकोपनिमित्तविकारोपलब्धौ
प्रमाणम् शा. ६-२७

गर्भस्य पञ्चभूतविकारस्तेतनाधिष्ठानभूतत्व-
साधनम् शा. ४-६

गर्भस्य पितृजन्तवप्रतिपादनम् शा. ३-७

गर्भस्य पितृजा भावाः ,, ३-७

गर्भस्य पित्रोः सदृशत्वे कारणम्
शा. २-२६, २७

गर्भस्य मीजदोषादिप्रभवा विकृतयः
शा. ४-३०-३२

गर्भस्य महाभूतप्रभवा भावाः शा. ४-१२

गर्भस्य मातृजन्तवप्रतिपादनम् ,, ३-६

गर्भस्य मातृजा भावाः शा. ३-६

गर्भस्य रसजन्तवप्रतिपादनम् ,, ३-१२

गर्भस्य रसजा भावाः शा. ३-१२

गर्भस्य व्यापत्तेर्हेतुः ,, ४-२९

गर्भस्य संस्थानवर्गेन्द्रियवैकृतानां हेतुः
शा. २-२८-३०

गर्भस्य समुदायप्रभवत्वसाधनोपसंहारः
शा. ३-१४

| | | |
|---|---|---|
| गर्भस्य चारम्यजत्वप्रतिपादनम् शा. ३-६१ | गलग्रहस्य संप्राप्तिर्लक्षणं च सू. १८-२२ | गुणलक्षणतिथेः वि. ८-२९ |
| गर्भस्य सात्त्व्यजा भावाः शा. ३-११ | गलगुणिकायाः संप्राप्तिर्लक्षणं च सू. १८-२० | गुणाः सू. १-४९ |
| गर्भस्यसुखप्रसवस्य कारणम् ,, ३-३ | गव्यदुग्धस्य गुणाः सू. २७-२१७, २१८ | गुदकण्ठाभ्यां गुग्गुलुस्नेहदाननिषेधः सि. ४-४९ |
| गर्भस्याज्ञाभिनिर्गृह्यादिविषये अग्निवेशस्य कृतिष्वे प्रश्नाः शा. ६-२० | गङ्गेरुकाया गुणाः सू. २७-१४२, १४३ | गुदगतो बस्तिः सर्वशरीरस्थान् दोषान् कथमपहरतीत्यग्निवेशप्रश्नः सि. ११-१५, १६ |
| गर्भस्याजन्मनि हेतुः शा. ४-२८ | गाढशकृतामर्शसां चव्यादिघृतम् वि. १४-१०७-११० | गुदगतो बस्तिः सर्वशरीरस्थान् दोषान् कथमपहरतीत्यग्निवेशकृतं समाधानम् सि. ११-१७, १८ |
| गर्भस्यात्मजत्वप्रतिपादनम् ,, ३-८, ९ | गाढशकृतामर्शसां चिकित्साक्रमः वि. १४-९६-१०२ | गुदवाहादौ द्राक्षादियोगाः सि. ८-१६ गुदपक्षाशयस्थे वाते चिक्षिर्वा चि. २८-९० |
| गर्भस्यात्मजा भावाः शा. ३-१० | गाढशकृतामर्शसां नागरादिघृतम् वि. १४-११०-११२ | गुदभ्रंशचिक्षिर्वा वि. १९-४२ |
| गर्भस्याभिनिर्गृहेः कारणम् ,, ३-३ | गाढशकृतामर्शसां पिप्पल्यादिघृतम् वि. १४-१०४-१०६ | गुदभ्रंशे अनुवासनम् ,, १९-४५ |
| गर्भस्येन्द्रियाण्यज्ञावयवाश्च यौगपद्येनो- त्पद्यन्ते शा. ४-१४ | गाढशकृतामर्शसां पिप्पल्यादिघृतम्- परम् वि. १४-११३-११८ | गुदभ्रंशे चव्यादिघृतम् ,, १९-४४ |
| गर्भिण्या लिङ्गानि शा. ४-१६ | गाढशकृतामर्शसां मलवातातुलोमना योगाः वि. १४-१०३ | गुदभ्रंशे चागिरीघृतम् ,, १९-४३ |
| गर्भिण्या सूतया च सर्पिण्या दष्टस्य लक्षणम् वि. २३-१३३ - | गाढशकृतामर्शसां हरीतकीयोगः वि. १४-११९, १२० | गुदभ्रंशे विचुना संप्रवेशनम् ,, १९-४६ |
| गर्भिण्यास्त्रीनप्रार्थनायामद्वितमवि- हितोपसंहितं दद्यात् शा. ४-१९ | गाढशकृत्स्वशःस्वपानविधिः वि. १४-१२१-१२९ | गुदे प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम् वि. २८-२६ |
| गर्भे भूतप्रदण्डक्रमः ,, ४-८ | गाम्भर्वसत्वस्य लक्षणम् शा. ४-३७ ७ | गुरुलाघवचिन्ता यैः कार्या यैश्च न कार्या सू. २७-३४३, ३४४ |
| गर्भोपघातकरा भावाः शा. ४-१८ | गुडशर्कराया गुणाः सू. २७-२४१ | गुरुलाघवं धातूनाम् सू. २७-३३७ |
| गर्भोपघातकरान् भावान् विहाय गर्भिणी यदिच्छेत् तपस्ये दद्यात् शा. ४-१७ | गुडानी गुणाः सू. २७-२३८, २३९ | गुरुलाघवं संस्कारापेक्षम् ,, २७-३३९ |
| गलगण्डस्य संप्राप्तिर्लक्षणं च सू. १८-२१ | गुणभूतानां सुरादीनां फलादिप्रधान- द्रव्यानुवर्तित्वम् क. १२-४४ | गुरुलाघवं स्वभावात् ,, २७-३३६ |
| गलगण्डचिक्षिर्वा वि. २१-१३९, १४० | गुणलक्षणम् सू. १-५१ | गुरुलाघवं स्त्रीपुंभेदेन ,, २७-३३८ |
| गलगण्डगण्डमालमोर्लक्षणम् वि. १२-७९ | | गुरुलाघवे मात्रायाः कारणत्वम् सू. २७-३४०, ३४१ |

| | | |
|---|---|--|
| गुचिष्टुन्मसस्य लक्षणम् चि. ९-२० गुन्मसंख्या नि. ३-३ | गृहगोषिकाशतपदीदृष्टलक्षणम् चि. २३-१५६ | ग्रहणीदोषमेपत्रस्य संकलप्य कथनम् चि. १५-१९६, १९७ |
| गुन्मस्य निदानं संप्राप्तिश्च नि. ५-३-६ | गोक्षीरवाजीकरणम् चि. २-३ ३-५ | ग्रहणीदोषाश्चत्वारः सू. १९-४, ५ |
| गुन्मस्य पक्वलक्षणानि ,, ५-४०-४४ गुन्मस्य पच्यमानलक्षणानि नि. ५-४०-४४ | गोजिह्वाया गुणाः सू. २७-९५-९७ गोधाथो यापनवस्तिः सि. १२-१८ ५ गोधामांसस्य गुणाः सू. २७-७० | ग्रहणीरोगस्य भेदाः चि. १५-५८ ग्रहण्यामावस्थिकी चिकित्सा चि. १५-१९८-२०५ |
| गुन्मस्य चिकित्सासूत्रम् नि. ५-१६, १७ | गोधूमस्य गुणाः सू. २७-२१ | ग्रहण्याः स्थानं कर्म च चि. १५-५६, ५७ |
| गुन्मस्य संप्राप्तिर्लक्षणं च सू. १८-२९ | गोमांसस्य गुणाः सू. २७-७९ | ग्रीष्मचर्या सू. ६-२७-३२ |
| गुन्मस्य सामान्य लक्षणम् चि. ५-७ | गोरसवर्गः सू. २७-२१७-२३६ | घृतपानार्हाः सू. १३-४१-४३ |
| गुन्मस्य स्थानानि ,, ५-८ | गोरसादीनां वर्जनीयानां निर्देशः सू. २७-३१८ | घृतस्य गुणाः सू. १३-१४ |
| गुन्मसस्यामलक्षणानि ,, ५-४०-४४ | गोवृषाथो यापनवस्तिः सि. १८-८ | घृतस्य गुणाः सू. २७-२३१-२३२ |
| गुन्मस्यारिष्टभूतानि पूर्वेषूपानि इ. ५-१२, १३ | गौडस्य गुणाः सू. २७-१८६ | घ्राणपाकस्य लक्षणम् चि. २६-११९ |
| गुन्मस्यासाध्यलक्षणम् चि. ५-१६९-१७१ | गौधूमपैष्टिकानां संस्कारात् लघुत्वम् सू. २७-२७२ | घ्राणप्रवृत्ते रक्तपित्ते चिकित्सा चि. ४-९७-१०१ |
| गुन्माः षट् सू. १९-४ ४ | गौधूमकमक्ष्याणां गुणाः सू. २७-२७१ | घ्राणेन्द्रियविकृतयोऽरिष्टभूताः इ. ४-२१ |
| गुन्मादिरोग्वातिदेशिकवस्तयः सि. १०-४४, ४५ | गौघेरकलक्षणम् चि. २३-१३४ | चक्षुराश्रितमरिष्टम् इ. ३-६ |
| गुन्मे अग्निसंशुद्धयविधानम् चि. ५-१३५, १३६ | अथितरक्तचिकित्सा चि. ४-७२-८४ | चटकमांसस्य गुणाः सू. २७-७५ |
| गुल्लस्य गुणाः सू. २७-१७४ | अन्यपरीक्षा वि. ८-३ | चणकस्य गुणाः ,, २७-२८, २९ |
| गृध्रसी द्विविधा सू. १९-४ ७ | अग्निविषर्पस्य चिकित्सा चि. २१-११८-१३८ | चतुर्भुजकलपोपक्रमः क. ८-१, २ |
| गृध्रस्याश्रितिका चि. २८-१०१ | अग्निविषर्पस्य निदानलक्षणे चि. २१-३९ | चतुर्थकविपर्ययलक्षणम् चि. ३-७३ |
| गृध्रस्या लक्षणम् चि. २८-५६ | अन्यीनां निदानं चिकित्सा च चि. १२-८१-८६ | चतुर्थे मासि गर्भस्य स्वरूपम् शा. ४-२० |
| गृह्णपोतमांसस्य गुणाः सू. २७-७० | ग्रहणीगदस्य पूर्ववत् चि. १५-५५ | चतुर्थो यलाथो यापनवस्तिः सि. १२-१६ १० |
| गृह्णोश्चानिधे चिकित्सा चि. २३-२१६ | ग्रहणीगदस्य सामान्यलक्षणम् चि. १५-५२-५४ | |

| | | |
|---|---|---|
| चतुर्विधयोगस्यैव सुखदुःखहेतुत्वम् शा. १-१३०, १३१ | चिकित्साया लक्षणम् सू. ९-५ | छर्दरिष्टभूतानि पूर्वरूपाणि इ. ५-२५ |
| चतुर्विधवित्तवार्त्मकस्य राशिपुरुषस्य लक्षणम् शा. १-३५-३८ | चिकित्साया लक्षणम् ,, १६-३४ | छर्देषाध्यलक्षणम् चि. २०-१९ |
| चतुष्पादं भेषजमलमारोग्यायेत्या- त्रेयकृता स्थापना सू. १०-३ | चिकित्सार्थः चि. १-१३, १४ | छर्देषप्रदाः ,, २०-१६, १७ |
| चन्दनायो बलिः सि. ३-४८-५२ | चिकित्सासूत्रम् सू. १०-६ | छर्देषमेदाः ,, २०-५ |
| चरकदण्डयलाभ्यां कृतोऽभिवेशतन्त्र- प्रतिसंस्कारः सि. १२-३७-४१ | चित्रकस्य गुणाः ,, २७-१०६ | छर्देषप्रवचिकित्सा ,, २०-४५ |
| चरकप्रतिसंस्कृतस्याभिवेशतन्त्रस्य दण्डयलकृता संपूर्तिः चि. ३०-२८८-२९० | चिरप्रवृत्तछर्दिचिकित्सा चि. २०-४६, ४७ | छलस्य लक्षणम् चि. ८-५६ |
| चर्मकुष्ठस्य लक्षणम् चि. ७-२१ | चिर्भटस्य गुणाः सू. २७-११२ | छागदुग्धस्य गुणाः सू. २७-२२३ |
| चर्मदलस्य लक्षणम् ,, ७-२४ | चिलपा गुणाः ,, २७-९८-१०३ | छागरसायो निरुद्धः सि. ३-४३ |
| चिकित्सायाः पादचतुष्टयम् सू. ९-३ | चीनस्य गुणाः ,, २७-१४ | छायाः पद्मभूतानां विविधलक्षणाः इ. ७-१०-१३ |
| चिकित्सायाः प्रयोजनम् सू. १६-३५, ३६ | चुसुपणिकाया गुणाः सू. २७-९८-१०३ | छाया भरिष्टभूताः इ. ७-३-७ |
| चिकित्सायाः प्रयोजनान्नास्तत्समाधानं च सू. १६-२७-३३ | च्यवनप्राशः चि. १-६२-७४ | छायाप्रमयोर्विशेषः इ. ७-१३, १७ |
| चिकित्साप्रामुख्यस्य गुणाः सू. १६-३७, ३८ | छत्रकजातीनां गुणाः सू. २७-१२३, १२४ | छिद्रोदरे निदानसंप्राप्तिलक्षणानि चि. १३-४२-४४ |
| चिकित्सायां कालविचारः चि. ३०-२९६, २९७ | छत्रधारणस्य गुणाः सू. ५-१०१ | छिद्रोदरे चिकित्साविधिः चि. १३-९१, ९२ |
| चिकित्सायां देशसात्म्यविचारः चि. ३०-३१५-३१९ | छर्दनयोगयुक्तस्य मधुन उष्णाविरोधित्वम् क. १-१५ | छिन्नश्वासस्य लक्षणम् इ. १७-५२-५४ |
| चिकित्सायां मात्राविचारः चि. ३०-३१३, ३१४ | छर्दयः पथ सू. १९-४ ४ | जगलस्य गुणाः सू. २७-१८१ |
| | छर्दिनिग्रहो दशको महाकषायः सू. ४-१४ | जग्नमविषस्य लिङ्गानि चि. २३-१५ |
| | छर्दिनिग्रहे दोषास्तच्चिकित्सा च सू. ७-१४, १५ | जग्नमविषस्य मेदाः ,, २३-९, १० |
| | छर्दः पूर्वरूपम् चि. २०-६ | जग्नमस्थावरोमयविषप्रभावः चि. २३-१७ |
| | | जनपदोद्भवसे साधारणी चिकित्सा चि. ३-१२-१८ |
| | | जम्बीरस्य गुणाः सू. २७-१६७ |

| | | |
|--|--|--|
| जम्बूफलस्य गुणाः सू. २५-१४० | जाङ्गलादिदेशलक्षणम् वि. ३-४७,४८ | जीमूतानां चावारः स्वरस्योगाः क. २-१२ |
| जरासंभवकैवल्यलक्षणम् चि. ३०-१७६-१८० | जाङ्गलानां निर्देशः सू. २७-४५,४६ | जीमूतानां षट् क्षीरयोगाः क. २-५-७ |
| जलपिप्पलीगुणाः सू. २७-१७१ | जाङ्गलानां साधारणगुणाः सू. २७-५९,६० | जीमूतानामष्टौ मात्रायोगाः क. २-११ |
| जलवर्गः सू. २७-१९६-२१६ | जाठराग्नेः श्रेष्ठत्वं तत्पालनोपदेशश्च चि. १५-३८-४१ | जीमूतानामेकः सुगन्धयोगः ,, २-८ |
| जलस्य गुणा ऋतुमेदेन सू. २७-२०३-२०६ | जाठराग्नेः श्रेष्ठत्वं तत्पालनोपदेशश्च चि. १५-३८-४१ | जीमूतानामेको घृतयोगः ,, २-१३ |
| जलस्य दिव्योदकालाभे उपादेयस्य लक्षणम् सू. २७-२०१, २०२ | जाठराग्नेर्विकृतस्य कर्म चि. १५-३-५ | जीमूतानामेकोनविंशतिः कपाययोगाः क. २-९, १० |
| जलस्य गुणमेदः पात्रमेदेन सू. २७-१९९, २०० | जाठराग्नेर्दुष्टहेतवः चि. १५-४२-४४ | जीर्णज्वरे अभ्यङ्गादिविधानम् चि. ३-१७४-१७६ |
| जलस्याकालवृष्टस्य निन्दा सू. २७-२०७ | जाठराग्नेश्चतुर्विधो भेदः वि. ६-१२ | जीर्णज्वरे क्षीरं परं प्रथमतः चि. ३-२३९ |
| जलस्यैकविधत्वेऽपि गुणमेदे हेतुः सू. २७-१९६, १९७ | जातः कथमभिवर्धते सद्यो हन्यते च शा. ६-२५, २६ | जीर्णज्वरे घृतयोगे युक्तिः चि. ३-२१६-२१८ |
| जलानुपानप्रतिषेधः सू. २७-३२७, ३२८ | जातस्य गर्भस्य विनाशो हेतुः शा. २-८-१० | जीर्णज्वरे चिकित्साविशेषः चि. ३-२९१ |
| जलान्महितानि. ,, २७-२१५ | जातस्योत्तरकालजां मात्राः शा. ४-१४ | जीर्णज्वरे पिप्पल्यादिघृतम् चि. ३-२१९-२२१ |
| जलोदरस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि चि. १३-४५-४९ | जातुकस्य गुणाः सू. २७-९८-१०३ | जीर्णज्वरे घृतादिघृतम् चि. ३-२२४-२२६ |
| जलोदरे चिकित्साविधिः चि. १३-९३, ९४ | जालगर्दभस्य लक्षणचिकित्सा चि. १२-९७-१०० | जीर्णज्वरे वाष्पादिघृतम् ,, ३-२२२, २२३ |
| जलोदरे शस्त्रकर्म चि. १३-१८९-१९० | जालिन्या लक्षणम् सू. १७-८४ | जीर्णतर्पणस्य नरस्य भोजनविधानम् चि. ३-१५६ |
| जलौकोविपचिकित्सा चि. २३-२१०, २११ | जिज्ञासाया लक्षणम् वि. ८-४६ | जीर्णे भुक्त्वो भोजनस्य गुणाः वि. १-२५ ४ |
| जाङ्गमद्रव्यसंग्रहः सू. १-६८, ६९ | जिह्वालेखनस्य गुणाः ,, ५-७५ | जीर्णौषधस्य लिङ्गानि सि. ६-२६ |
| | जिह्वाश्रयमरिष्टम् इ. ८-१४ | जीर्णौषधे यदि तुष्णोद्दमूर्च्छाः स्युस्तदा कर्तव्यम् क. १२-७६ |
| | जीमूतकल्पोपक्रमः क. २-१, २ | जीवनीयो दशको महाकषायः सू. ४-९ |
| | जीमूतगुणाः क. २-४ | |
| | जीमूतपर्यायाः क. २-३ | |

| | | |
|---|--|--|
| जीवादानव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च सि. ६-७८-८४ | ज्वरस्य प्रत्यासिक्तं लक्षणम् चिं. ३-३१ | ज्वरे अनुलोमनाः कषाययोगाः चि. ३-२०७ |
| जीवादाने वस्तयः सि. १०-३८-४२ | ज्वरस्य प्रभावः ,, ३-२६ | ज्वरे अनुवासनप्रयोगः चि. ३-१७७ |
| जीवितदातुमिषजः प्रशंसा चि. १-४ ६०-४ ६२ | ज्वरस्य प्रवृत्तिः ,, ३-१४, १५ | ज्वरे अभ्यग्नाप्रदेहपरिपेक्षाः चि. ३-२५६, २५७ |
| जीवन्त्या गुणाः सू. २७-१०७ | ज्वरस्य साध्यासाध्यलक्षणम् चि. ३-५०-५३ | ज्वरे क्षारवधादिवृत्तिः चि. ३-२४५, २४६ |
| जृम्भानिमहे दोषास्तचिकित्सा च सू. ७-१९ | ज्वरस्य सौम्याग्नेयभेदयोर्विवरणम् चि. ३-३७-३९ | ज्वरे उष्णं जलम् चि. ३-१४३ |
| जेन्ताकरवेरस्य कल्पना सू. १४-४६ | ज्वरस्याष्टमेऽहनि निरामत्वे हेतुः चि. ३-२७६, २७७ | ज्वरे कषायविधानम् चि. ३-१६० |
| जेन्ताः कस्वेदस्य द्रव्याणि ,, १४-२८ | ज्वरस्याष्टौ कारणानि नि. १-१७ | ज्वरे क्षीरयोगाः ,, ३-२३४-२३८ |
| ज्वरघ्नः कषायाः चि. ३-१९७, १९८ | ज्वरस्यैकत्वेऽपि कारणभेदाद्वेदप्रदर्शनम् नि. १-३२ | ज्वरे गुह्ययादनिरुद्धः ,, ३-२४७-२४९ |
| ज्वरचिकित्सासूत्रम् नि. १-३६-४० | ज्वरहरो दशको महाकषायः सू. ४-१६. | ज्वरे शुक्लभोजनस्य निषेधः चि. ३-२७७, २७८ |
| ज्वरपर्यायाः चि. ३-११ | ज्वराणामन्येषां च व्याधीनामरिष्टभूत- पूर्वरूपाणि इ. ५-३-५ | ज्वरे चन्दनायं तैलम् चि. ३-२५८ |
| ज्वरप्रमोक्षे लक्षणानि ,, ३-३२४-३२८ | ज्वरितानां यवाग्वर्थे प्रशस्तानि धान्यानि चि. ३-१७७-१७८ | ज्वरे चन्दनाद्यनुवाधनम् ,, ३-२५३ |
| ज्वरसंप्राप्तिः ,, ३-१२९-१३१ | ज्वरितानां यूषायै हितान्यजानि चि. ३-१८८ | ज्वरे जीवन्त्याद्यनुवासनम् चि. ३-२५०, २५१ |
| ज्वरस्यायुस्त्वपि प्रभावश्च नि. १-३५ | ज्वरितानां हितानि मांसानि चि. ३-१९०-१९३ | ज्वरे त्रिकण्टकाशं पयः चि. ३-२३६ |
| ज्वरस्याधिष्ठानम् चि. ३-१० | ज्वरितानां हितानि शाकानि चि. ३-१८९ | ज्वरे त्रिफलादिकषायः चि. ३-२०८, २०९ |
| ज्वरस्यारिष्टभूतानि पूर्वरूपाणि इ. ५-९ | ज्वरितेभ्य उष्णपानीयदाने हेतुः चि. ३-३९-४० | ज्वरे दाहप्रशमना उपकाराः चि. ३-२५९-२६६ |
| ज्वरस्य कारणानि चि. ३-२७ | ज्वरे नागराशं पयः चि. ३-२३७ | ज्वरे निरुद्धवृत्तिप्रयोगः चि. ३-१६९-१७१ |
| ज्वरस्य पुनरावर्तने हेतुः चि. ३-३३३-३३८ | ज्वरे अगुर्वादितैलम् चि. ३-२६७ | |
| ज्वरस्य पूर्वरूपम् चि. ३-२८, २९ | | |
| ज्वरस्य पूर्वरूपाणि नि. १-३३, ३४ | | |
| ज्वरस्य प्रकृतिः चि. ३-१२, १३ | | |

| | | |
|--|--|---|
| ज्वरे निरुहानुवासनप्रयोगाः चि. ३-२४० | ज्वरे श्वेतशीतं जलम् चि. ३-१४४ | तद्विषयसंभाषायाः भेदाः चि. ८-१६ |
| ज्वरे पटोलादिवस्तिः ,, ३-२४१-२४४ | ज्वरे संशोधनयोग्या अवस्था चि. ३-२२७ | तन्त्रयुक्तिज्ञानफलम् चि. १२-४५-५० |
| ज्वरे पटोलायनुवासनम् ,, ३-२५२ | ज्वरेषु दोषापेक्षिणी चिकित्सा चि. ३-२८३-२८६ | तन्त्रस्य पर्यायाः सू. ३०-३१ |
| ज्वरे पयःप्रयोगः ,, ३-१६७३ | ज्वरे सर्पिर्विधानम् चि. ३-१६४, १६५ | तन्त्रस्याष्टौ स्थानानि सू. ३०-३३ |
| ज्वरे पेया-कषाय-क्षीर-सर्पिर्द्विरेचनानां कालाः चि. ३०-३०२ | ज्वरे स्वेदाप्रवृत्तिहेतुः चि. ३-१३२ | तन्त्रादीनां निरुक्तिः ,, ३०-६९-७१ |
| ज्वरे मधूकादिहिमः चि. ३-२०६ | ज्वरे हितं पानम् ,, ३-१९४ | तन्त्रार्थाः सू. ३०-३२ |
| ज्वरे मांसरसप्रयोगः ,, ३-१६६ | ज्वरो द्विविधः सू. १९-४-७ | तन्त्रानिदानं संप्राप्त्य चि. ९-२१, २२ |
| ज्वरे यत्रागूषयोगः ,, ३-१४९, १५० | ज्वरो द्विविधः शा. १-५, ४-५८ | तन्त्रायां चिकित्सासूत्रम् सि. ९-२४ |
| ज्वरे यवागूषयोगः ,, ३-१७९-१८७ | तद्विषयः शा. १-५, ४-५८ | तन्त्रालक्षणानि ,, ९-२३ |
| ज्वरे घृतविधानम् ,, ३-१६३ | तद्विषयः गुणाः सू. २७-१३६ | तन्त्रियमा (स्नेहपाननियमा) पालने दोषाः सू. १३-२०, २१ |
| ज्वरे रकावसेकावस्था ,, ३-२८९ | तद्विषयः गुणाः सू. २७-२३६ | तन्त्रकथावस्य लक्षणम् चि. १७-५५-६२ |
| ज्वरे लङ्घनं येषां न हितम् ,, ३-२७२ | तद्विषयः गुणाः सू. २७-२२८ | तन्त्रोर्निजागन्तून्मादयोर्हेतुसंघर्षात् संसृष्टपूर्वरूपलिङ्गानि नि. ७-१८ |
| ज्वरे लङ्घनविचारः ,, ३-१३९-१४१ | तन्त्रादीनां प्रयोगाः सू. २३-१७ | तन्त्रज्वरे कषायरमनियेषः चि. ३-१६१, १६२ |
| ज्वरे लघुनादिक्रमकरणे युक्तिः चि. ३-२७३-२७६ | तन्त्रादीनां (मलक्षयवृद्धिज्ञानां) व्याख्यानं क्रियाक्रमः सू. ७-४४ | तन्त्रस्य गुणाः सू. २७-११६, ११७ |
| ज्वरे वतसकादिकषायः ,, ३-२०४, २०५ | तन्त्रागजलस्य गुणदोषाः सू. २७-२१४ | तन्त्रयोगाः ,, २३-३४-३७ |
| ज्वरे वमनं कदा देयम् ,, ३-१४६ | तन्त्रुलीयकस्य गुणाः ,, २७-९४ | तन्त्रादिक्रमः कुत्र योज्यः सि. ६-२५ |
| ज्वरे वमनयोगाः ,, ३-२०८, २२९ | तन्त्रवद्वृत्तेर्मोक्षसाधनत्वम् शा. १-१५०-१५४ | तन्त्रार्था नराः चि. ३-१५५ |
| ज्वरे वर्जनीयानि ,, ३-३३०-३३२ | तन्त्रवद्वृत्तेर्मोक्षः शा. १-१४७-१४९ | तन्त्र (आगन्तुलोपस्य) प्रतिकारः सू. १८-५ |
| ज्वरे विरेचनम् ,, ३-१६८ | तन्त्र (भेषजस्य अमेपजेन अवशिष्टत्वे) आत्रेयकृते समाधानम् सू. १०-५ | तालप्रलम्बस्य गुणाः सू. २७-११५ |
| ज्वरे विरेचनयोगाः ,, ३-२३०-२३२ | तन्त्र रकादिवातपित्तविषयकप्रभेदेषु आत्रेयस्य समाधानम् चि. १५-२७-३५ | तालशस्यस्य गुणाः ,, २७-११६ |
| ज्वरे शिरोविरेचनप्रयोगः ,, ३-१७३ | तद्विषयसंभाषायाः प्रशंसा चि. ८-१५ | तालशस्यस्य पक्षस्य गुणाः ,, २७-१३० |
| ज्वरे शिरोविरेचनधूमवर्त्यसिद्धेशः चि. ३, २५४, २५५ | | तालविद्वेषलक्षणम् चि. १२-७७ |
| ज्वरे जीतप्रशमना उपचाराः चि. ३-२६८-२७१ | | |

| | | |
|---|--|--|
| तालुशोपचिकित्सा चि. २६-२०३ | तित्वकस्य सुरायोगः क. ९-८ | तृप्तिप्रो दशको महाकपायः सू. ४-११ |
| तिफरस्य गुणकर्माणि तस्यासियोगे दोषाश्च सू. २६-४३ ५ | तिल एषणाः सू. ११-३ | तृष्णाः पद्य सू. १९-४ ४ |
| तित्तिरिमांसस्य गुणाः सू. २७-६७ | तीक्ष्णस्य विरेचनस्य लक्षणम् क. १२-५१-५३ | तृष्णाचिकित्सितोपक्रमः चि. २२-१-३ |
| तित्तिर्याथो यापनवस्तिः सि. १२-१८/१ | तीक्ष्णादीनि भेषजानि केषु योज्यानि क. १२-५७, ५८ | तृष्णानां निदानं संप्राप्तिश्च ,, २२-४-७ |
| तिन्दुकस्य गुणाः सू. २७-१४६ | तीक्ष्णो वस्तिर्मधुरमत्यास्यापन्नं च सि. ८-१५ | तृष्णानां पूर्वरूपम् ,, २२-८ |
| तिर्यग्गतदोषचिकित्सासूत्रम् नि. ८-३८, ३९ | तुम्बुरुगुणाः सू. २७-१७१ | तृष्णानां सामान्यलक्षणम् ,, २२-८ |
| तिलकादीनां संप्राप्तिर्लक्षणं च सू. १८-२५ | तुम्बुरुगुणाः ,, २७-३०६, ३०७ | तृष्णानामुपपत्तयः ,, २२-९, १० |
| तिलगुणाः सू. २७-३० | तुल्यातुल्यवीर्यसंयोगादिकार्यम् क. १२-४८ | तृष्णानिमहणो दशको महाकपायः सू. ४-१४ |
| तिलतैलस्य गुणाः सू. १३-१२ | तुपोदकस्य गुणाः सू. २७-१९१ | तृष्णायां वातपित्तपोर्द्धत्वम् चि. २२-१९-२९ |
| तिलपर्णिकाया गुणाः सू. २७-९५-९७ | तृप्तस्य गुणाः सू. २७-१३६ | तृष्णायां शीतत्रले देयम् ,, २२-२२ |
| तिलशारुस्य गुणाः ,, २७-१०९ | तृणधान्यानां गुणाः ,, २७-१६-१८ | तृष्णायाः कफजायाधिकिरसा चि. २२-४७-४९ |
| तिस्वकस्यारिष्टयोगः क. ९-९, १० | तृणशस्यगुणाः ,, २७-१४५ | तृष्णायाः क्षयजायाधिकिरसा चि. २२-५० |
| तित्वकस्यैकः सौवीरकयोगः क. ९-७, ८ | तृतीयकचतुर्थकज्वरयोर्लक्षणम् चि. ३-६४-७२ | तृष्णायाः क्षयजायाः संप्राप्तिर्लक्षणं च चि. २२-१६ |
| तित्वकस्योपयोगविधिः क. ९-३-५ | तृतीयकचतुर्थकज्वरयोर्विशेषः चि. ३-२९२ | तृष्णायाः पित्तजामाधिकिरसा चि. २२-४१-४६ |
| तित्वकस्य कम्पिलकेन एको योगः क. ९-१०, ११ | तृतीये मासि गर्भस्य स्वरूपम् शा. ४-११ | तृष्णायाः पित्तजायाः संप्राप्तिर्लक्षणं च चि. २२-१३, १४ |
| तित्वकस्य चत्वारो घृतयोगाः क. ९-१४-१६ | तृतीये मासि गर्भे द्वैहृदयोत्पत्तिः शा. ४-१५ | तृष्णायाः शौघप्रतिकार्यत्वम् चि. २२-६२ |
| तित्वकस्य त्रयो लेहयोगाः क. ९-११-१३ | तृतीयो बलाथो यापनवस्तिः सि. १२-१६ ६ | तृष्णायाः सामान्यचिकित्सा चि. २२-२५-२९ |
| तित्वकस्य दध्यादिभिः पद्य योगाः क. ९-६ | | तृष्णाया असाध्याया लक्षणम् चि. २२-१८ |

| | | |
|---|---|--|
| तृष्णाया आमजायाः संप्राप्तिर्लक्षणं च चि. २२-१५ | त्वगाश्रिते वाते चिकित्सा चि. २८-९२ | त्रिफलारसायनं चतुर्थम् चि. १-३ ४५-३ ४७ |
| तृष्णाया उपसर्गजायाः संप्राप्तिर्लक्षणं च चि. २२-१७ | त्वग्दोषसंस्वेदहरः प्रदेहः सू. ३-२९ | त्रिविधं रोगविशेषज्ञानम् वि. ४-३ |
| तृष्णाया मणजायाश्चिकित्सा चि. २२-५१-५६ | त्वचि प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम् चि. २८-३० | त्रिवृताया गुणाः क. ७-५, ६ |
| तृष्णाया वातजायाः संप्राप्तिर्लक्षणं च चि. २२-११, १२ | त्रपुपस्य गुणाः सू. २७-११०, १११ | त्रिवृतायाः पर्वायाः ,, ७-४ |
| तृष्णाया वैशेषिकी चिकित्सा चि. २२-४० | त्रयस्त्रयो रसा दोषमेकैकं जनयन्ति त्रयस्त्रयश्चोपशमयन्ति, तेषां विवरणम् वि. १-६ | त्रिवृताया भेदाः क. ७-७ |
| तेषां (अतिक्षारलवणसात्म्यानां) तत्सा- म्यतः कमेणापगमनं श्रेयः वि. १-१९ | त्रयाणां मर्मसु प्राधान्यम् सि. ९-३ | त्रिवृत्कषायेण बिल्वकषायेण च एकैकी योगः क. ८-११ |
| तेषां (प्रमेहानां) याप्यत्वे हेतुः वि. ४-२७ | त्रयोदशमूत्रदोषाणां नामतो निर्देशः सि. ९-२५, २६ | त्र्युपपाद्यो मन्थः सू. २३-१८ |
| तेषु (शितोद्विरेचनस्य सम्यग्योगयोगाति- योगेषु) चिकित्सा सि. १-५३ | त्रयोदशसंक्षिपातज्वराणां लक्षणम् चि. ३-१०२ | दण्डकस्य लक्षणम् चि. २८-५१ |
| तैलगण्डविवरणस्य गुणाः सू. ५-७८-८० | त्रयो रोगाः सू. १९-४६ | दण्डधारणस्य गुणाः सू. ५-१०२ |
| तैलपानार्हाः सू. १३-४४-४६ | त्रिकण्टकाद्यं तैलं घृतं समकं च चि. ६-३८, ३९ | दक्षौर्लक्षणम् चि. ७-२३ |
| तैलस्य गुणाः ,, १३-१५ | त्रिकण्टकाद्यं तैलं घृतं समकं च चि. ६-३८, ३९ | दधिमस्तुगुणाः सू. २७-२२८ |
| तैलस्य वातशमकृत्यं सोपपत्तिकम् वि. १-१३, १४ | त्रिदोषज्योनिव्यापतेर्लक्षणम् चि. ३०-१४, १५ | दधिसरगुणाः ,, २७-२२८ |
| तैलस्य सामान्यगुणाः सू. २७-२८६-२८८ | त्रिदोषजहृदोगस्य चिकित्सा चि. २६-१०० | दधिसेवनविधिः ,, ७-६१ ८२ |
| तैलस्यानुक्तस्य गुणसंप्रदेहः ,, २७-२९४ | त्रिदोषज्ज्वरदोगस्य चिकित्सा चि. २६-१०० | दध्नः अदितत्वं शत्रुभेदे रोगभेदे च सू. २७-२२७ |
| तोदनस्य गुणाः सू. २७-१४२, १४३ | त्रिदोषज्ज्वरमादस्य निदानलक्षणे ,, ९-१५ | दध्नः प्रशस्तता रोगभेदे ,, २७-२२६ |
| त्वगाधया वृक्षास्तेषां कर्म च सू. १-११६-११९ | त्रिपण्णा गुणाः सू. २७-९८-१०३ | दध्नः समुद्वेग्य गुणाः ,, २७-२७८ |
| | त्रिफलारसायनं प्रथमम् चि. १-३/४१, ३ ४२ | दध्नः साधारणगुणाः ,, २७-२२५ |
| | त्रिफलारसायनं द्वितीयम् ,, १-३ ४३ ३ ४४ | दन्तधावनविधिर्गुणाश्च सू. ५-७१, ७२ |
| | त्रिफलारसायनं तृतीयम् ,, १-३ ४५ | दन्तपचने योग्यद्रुमाः सू. ५-७३ |

| | | |
|---|---|--|
| दन्तविद्रघेर्लक्षणम् वि. १२-७८ | दन्तीद्वन्द्वयोरेको मययोगः क. १२-२१, २२ | दृष्टानां चतुष्पदानां विषलक्षणाणि चिकित्सा च वि. २३-२२९-२३२ |
| दन्तशठस्य गुणाः सू. २७-१६१ | दन्तीद्वन्द्वयोरेको मोदकयोगः क. १२-२०, २१ | दाडिमस्य गुणाः सू. २७-१४९-१५१ |
| दन्ताश्रयमरिष्टम् इ. ८-१३ | दन्तीद्वन्द्वयोर्गुणाः क. १२-६ | दाहप्रशमनो दशको महाकषायः सू. ४-१७ |
| दन्ताश्रितं रिष्टम् ,, ३-६ | दन्तीद्वन्द्वयोर्प्राणमग्नं प्रयोगविधिः क. १२-४, ५ | दाहे द्वौ वस्ती नि. १०-३३ |
| दन्तीद्वन्द्वयोः पञ्चासवयोगाः क. १२-३२-३४ | दन्तीद्वन्द्वयोर्मध्ययोगः क. १२-२१, २२ | दिवाग्निद्रा केषां सर्वदा अहिता सू. २१-४५ |
| दन्तीद्वन्द्वयोः पक्ष लेहयोगाः क. १२-११-१५ | दन्तीद्वन्द्वयोर्मस्रतैलयोगः क. १२-७, ८ | दिवाग्निद्रायाः प्रतिषेधो ग्रीष्मेतरेषु श्रुतुषु सू. २१-४४ |
| दन्तीद्वन्द्वयोः घन कलकयोगाः क. १२-७, ८ | दन्तीद्वन्द्वयोर्मुद्रादिमिस्रयो रसयोगाः क. १२-१८ | दिवाग्निद्राया दोषाः सू. २१-४६-४९ |
| दन्तीद्वन्द्वयोरेको मोदकयोगः क. १२-२७-२९ | दन्तीद्वन्द्वयोर्द्वयः स्नेहयोगाः क. १२-९, १० | दिवाग्निद्रा येनां हिता ,, २१-३९-४३ |
| दन्तीद्वन्द्वयोरेको रसुणैको योगः क. १२-१७ | दन्तीद्वन्द्वयोर्द्वयो यवाश्वादियोगाः क. १२-१९ | दिवास्वप्नजा व्यापदः सि. १२-१४ ७ |
| दन्तीद्वन्द्वयोरेको कलकयोगः क. १२-३१ | दन्तीद्वन्द्वयोर्द्वयो यवाश्वादियोगाः क. १२-१९ | दिवास्वप्नस्य गुणाः सू. २१-५० |
| दन्तीद्वन्द्वयोरेको कषाययोगः क. १२-३० | दन्तीद्वन्द्वयोर्द्वयो यवाश्वादियोगाः क. १२-१९ | दिव्यजलस्य गुणाः सू. २७-१९८ |
| दन्तीद्वन्द्वयोरेको सुराकम्पिपलकयोगः क. १२-३५ | दन्तीद्वन्द्वयोर्द्वयो यवाश्वादियोगाः क. १२-१९ | दीपनीयो दशको महाकषायः ,, ४-९ |
| दन्तीद्वन्द्वयोरेको सौवीरकयोगः क. १२-३५ | दन्तीद्वन्द्वयोर्द्वयो यवाश्वादियोगाः क. १२-१९ | दुःखहेतवः शा. १-९८ |
| दन्तीद्वन्द्वयोरेको उत्कारिकायोगः क. १२-२०, २१ | दन्तीद्वन्द्वयोर्द्वयो यवाश्वादियोगाः क. १२-१९ | दुर्बलमे वमनं कूरकोष्ठे विरेचनं च न देयम् सि. ६-३७ |
| दन्तीद्वन्द्वयोरेको दध्नीर्णयोगः क. १२-१६ | दन्तीद्वन्द्वयोर्द्वयो यवाश्वादियोगाः क. १२-१९ | दुष्टप्रतिश्यायजा रोगाः वि. २६-१०७-१०९ |
| दन्तीद्वन्द्वयोरेको रुस्तुषोदकयोगः क. १२-३५ | दन्तीद्वन्द्वयोर्द्वयो यवाश्वादियोगाः क. १२-१९ | दुष्टप्रतिश्यायस्य लक्षणम् ,, २६-११० |
| दन्तीद्वन्द्वयोरेको उपरध्नीर्णयोगः क. १२-२३-२६ | दन्तीद्वन्द्वयोर्द्वयो यवाश्वादियोगाः क. १२-१९ | दुष्टघणाः वि. २५-२४, २५ |
| | दन्तीद्वन्द्वयोर्द्वयो यवाश्वादियोगाः क. १२-१९ | दुष्टस्य शुक्रस्याबीजत्वम् वि. ३०-१३३, १३४ |
| | दन्तीद्वन्द्वयोर्द्वयो यवाश्वादियोगाः क. १२-१९ | दुष्टस्य प्रशस्तस्य लक्षणम् इ. १२-६७-७० |

दूषीविषय लक्षणम् चि. १३-३१

दृष्टान्तस्य लक्षणम् चि. ८-३४

देवादयो यथा पुरुषस्य देहं विशन्ति
चि. ०-१८, १९

देशान्तस्य लक्षणम् चि. ९-२०

देशभेदाः क. १-८

देशस्य (भूमेः) परीक्षा वि. ८-९२, ९३

देशस्य लक्षणम् बि. ८-७५

देशस्य विवरणम् वि. १-२२ | ५

देशादिपरीक्षाव्यतिरेकेण केवलं
योगैरेव चिकित्सां कुर्वतो दोषः
वि. ३०-३२०

देहप्रकृतेर्लक्षणम् सू. ७-४०

दोषकुष्ठयोः परस्परशोधकत्वम्
वि. ७-३३

दोषत्रयादपरिमितविकारोत्पत्तौ युक्तिः
वि. ६-७

दोषप्रशमनप्रकोपकरसाः सू. १-६६

दोषमानविकल्पजा द्विषष्टिभेदाः
सू. २७-४१-४४

दोषशेषशमनोपायः क. १२-६६

दोषम्यानप्रकृतीः प्राप्य विषं यस्करोति
चि. २३-२८-३०

दोषाणां रुदाविद्विरुद्धाभिमतऽपि
क्रिया कार्या भवति
चि. ३०-३२१-३२५

दोषाणां गतिस्त्रिविधा
सू. १७-११२, ११३

दोषाणां त्रयप्रकोपप्रशमकालाः

सू. १७-११४

दोषाणां परिसंलभ्यत्वम्
वि. ६-५

दोषाणां प्रकृतिभूतानां विकृतानां च
कर्म सू. २०-९

दोषाणां प्रशमनोपायाः सू. १-५८

दोषाणां प्राकृती वैकृती च गतिः
सू. १७-११५-११९

दोषाणां वृद्धिस्त्यक्तविकल्पलक्षणानि
सू. १७-४५-६१

दोषाणां वृद्धिस्त्यसाम्यलक्षणानि
सू. १७-६२

दोषाणां शरीरे स्थानविभागः
सू. २०-८

दोषाणां स्थानसामीप्याद्वरणमुचितम्
चि. २६-२९१

दोषातिप्रवृत्तौ कर्तव्यम् क. १२-७३

दोषादिवलमेवेत्थं भेषजं प्रयोज्यम्
क. १२-६०

दोषाधिक्यमवेक्ष्य कुष्ठचिकित्सा कार्या
चि. ७-३१, ३२

दोषाधिक्यवशात् कुष्ठविशेषोत्पत्तिः
चि. ७-२७-३०

दोषाधिक्यविशेषेण सप्तविधः कुष्ठ-
विशेषः नि. ५-५

दोषान्तरादिसंघटे वाते चिकित्सा
चि. २८-१८४-१९९

दोषापेक्षिणो निरुद्धकल्पना चि. ३-६९

दोषाप्रवृत्तौ कर्तव्यम् क. १२-७१, ७२

दोषौषधादीनि परीक्ष्यैव चिकित्सा
विधेया चि. ३०-३२६, ३२७

प्रवृत्तीपर्यायाः क. १२-३

द्रव्यं चेतनमचेतनं चेति द्विविधम्
सू. २६-१०

द्रव्यकर्मवीर्याधिकरणकालोपायफलानां
लक्षणम् सू. २६-१३

द्रव्यगुणानां रसेष्टूपचारः ,, २६-३६

द्रव्यभेदाः (प्रभावभेदेन) सू. १-६७

द्रव्यभेदाः (उत्पत्तिभेदेन) सू. १-६८

द्रव्यभेदाः सू. १-४८

द्रव्यलक्षणम् सू. १-५१

द्रव्यलक्षणातिदेशः वि. ८-२९

द्रव्यसंग्रहः सू. १-४८

द्रव्याणामनुक्तानां गुणकर्मदीनां ज्ञाने
उपायाः सू. २७-३३०, ३३१

द्रव्याणां गुणाः ,, ९-७

द्रव्याणां गुणाः कर्म च सू. २६-१०

द्रव्याणां पार्यिवादिभेदेन लक्षणं गुणाश्च
सू. २६-११

द्रव्याणां बलाधानार्थं स्वरूपभावना
कार्या क. १२-४७, ४८

द्रव्याणां मात्रादिज्ञानस्य प्रयोजनम्
सू. २६-४६, ४७

द्रव्याणां रसद्वारेण त्रिषष्टिविधो भेदः
सू. २६-१४-२२

द्रव्याणां सद्य उद्धृतानां द्रवाणां च
द्विगुणं मानं प्राप्यम् क. १२-९८, ९९

| | | |
|---|---|--|
| प्रव्याणां सर्वेषामेव औपमत्वे युक्तिः सू. २६-१२ | द्विविधा परीक्षा वि. ८-८३ | धामार्गवगुणाः क. ४-४, ५ |
| प्राक्षायो वस्त्रिः सि. ३-५३-५५ | द्विष्टार्यजायाश्छर्देर्निदानलक्षणे वि. ३०-१८ | धामार्गवपर्यायाः ,, ४-३ |
| प्राक्षया गुणाः सू. २७-१३२ | द्वेभ्यमपि पथ्यं कल्पनाविविधिः त्रियत्वं गमयेत् वि. ३०-३३१ | धामार्गवस्य चत्वारः क्षीरयोगाः क. ४-७ |
| द्रुतप्रणीतादिबस्त्रिदोषाः तेषां चिकित्सा च सि. ५-१०, ११ | द्वैष्टद्व्यविमानने दोषाः शा. ४-१५ | धामार्गवस्य दश लेहयोगाः क. ४-१३-१५ |
| द्रोणोप्रायेधिकरसायनम् चि. १-४ ७-४ १२ | द्रौ घृतयोगौ क. ८-१३, १४ | धामार्गवस्य द्वादश शकृद्रवयोगाः क. ४-११, १२ |
| द्रवद्वज्ज्वरलक्षणम् वि. ३-८४ | धनैषणा सू. ११-५ | धामार्गवस्य नव कषाययोगाः क. ४-७-९ |
| द्रवद्वज्ज्वरलक्षणम् वि. ३-८४ | धन्वनस्य गुणाः सू. २७-१४२, १४३ | धामार्गवस्य पात्रवानां नय योगाः ,, ४-६ |
| द्रवद्वज्ज्वरलक्षणम् वि. ३-८४ | धमनीनिरुक्तिः ,, ३०-१२ | धामार्गवस्य एकादश कषाययोगाः क. ४-१६, १७ |
| द्रवद्वज्ज्वरलक्षणम् वि. ३-८४ | धमन्यो दश महामूलाः ,, ३०-८ | धामार्गवस्यैकः कल्कयोगः क. ४-१५ |
| द्रवद्वज्ज्वरलक्षणम् वि. ३-८४ | धातुकीपुष्पकृतावस्य गुणाः सू. २७-१८८ | धामार्गवस्यैकः सुरायोगः ,, ४-७ |
| द्रवद्वज्ज्वरलक्षणम् वि. ३-८४ | धातव एव धातूनामाहारः सू. २८-३ | धामार्गवस्यैको घृतयोगः ,, ४-१८ |
| द्रवद्वज्ज्वरलक्षणम् वि. ३-८४ | धातुक्षयजङ्घ्मलक्षणम् वि. ३०-१८१-१८७ | धामार्गवस्यैको घ्रेययोगः ,, ४-१० |
| द्रवद्वज्ज्वरलक्षणम् वि. ३-८४ | धातुक्षयाद्यया शोषः संभवति तद्वर्णनम् नि. ६-८, ९ | धामार्गवस्यैकोऽन्नयोगः ,, ४-९ |
| द्रवद्वज्ज्वरलक्षणम् वि. ३-८४ | धातुमेदेन पुरुषस्य मेदः शा. १-१६, १७ | धूमनेत्रनिर्माणविधिः सू. ५-४९-५१ |
| द्रवद्वज्ज्वरलक्षणम् वि. ३-८४ | धातूनां योगपथेन वृद्धिहासौ भवतः शा. ६-५, ६ | धूमपानविधिः सू. ५-४६-४८ |
| द्रवद्वज्ज्वरलक्षणम् वि. ३-८४ | धातूनां साम्यार्थं कर्तव्यम् शा. ६-७, ८ | धूमपानस्य गुणाः सू. ५-३७-३२ |
| द्रवद्वज्ज्वरलक्षणम् वि. ३-८४ | धानानां गुणाः सू. २७-२६६ | धूमपानानर्हाः ,, ५-४१-४५ |
| द्रवद्वज्ज्वरलक्षणम् वि. ३-८४ | धान्यगुणाः ,, २७-३०७, ३०८ | धूमपानेऽष्टौ कालाः ,, ५-३३-३७ |
| द्रवद्वज्ज्वरलक्षणम् वि. ३-८४ | धान्यकगुणाः ,, २७-१७३ | धूमवर्तेर्निर्माणविधिः ,, ५-२३, २४ |
| द्रवद्वज्ज्वरलक्षणम् वि. ३-८४ | धामार्गवकल्पोपक्रमः क. ४-१-३ | धूमस्य सम्यक्पीतस्य लक्षणम् ,, ५-३७ |
| द्रवद्वज्ज्वरलक्षणम् वि. ३-८४ | | धूमस्य सुपीतस्य लक्षणम् ,, ५-५२ |

| | | |
|--|---|--|
| धूमस्यातिपीतस्य लक्षणम् सू. ५-५३-५५ | नस्यकर्म केपु रोगेषु कार्यम् सि. ९-९४, ९५ | निजविकाराणामनुरूपतो विधिः सू. ७-४६-५०. |
| धूमस्याविधिपीतस्य दोषास्तत्र प्रतीकारः सू. ५-३८-४० | नस्यकर्मणो व्यापदस्तत्त्विकित्सा च सि. ९-१०९-११५ | निजमृगानां संप्राप्तिः चि. २५-१० |
| धृतिविभ्रंशस्य वर्णनम् शा. १-१०० | नामधलारसायनम् चि. १-२ ११ | नित्यत्वविचारः शा. १-५९ |
| ध्वजभङ्गकृतकैवल्यलक्षणम् चि. ३०-१६३-१७६ | नागरङ्गफलस्य गुणाः सू. २७-१५६ | निदानत्रैविध्यम् नि. १-३ |
| ध्वंसकविक्रित्सा चि. २४-२०४-२०५ | नाडीस्वेदस्य कल्पना सू. १४-४३ | निदानदोषदृष्ट्यविशेषेभ्यो विकारविधात- भावामावप्रतिविशेषाः नि. ४-४ |
| ध्वंसकलक्षणम् , २४-१९९-२०३ | नाडीस्वेदस्य द्रव्याणि सू. १४-२९-३३ | निदानपञ्चकवर्णनोपसंहारः नि. १-१३, १४ |
| नखदन्तविपलक्षणं तत्त्विकित्सा च चि. २३-२१९, २२० | नाड्या गुणाः सू. २७-९५-९७ | निदानपदपर्यायाः नि. १-३ |
| नखाधितं रिष्टम् इ. ३-६ | नातिद्रुतं भुक्वतो गुणाः सि. १-२५ ७ | निदानस्य लक्षणम् नि. १-७ |
| नदीनां वर्षाजलवहानां जलगुणाः सू. २७-२१३ | नातिविलम्बितं भुक्वतो गुणाः चि. १-२५ ८ | निदानादिविशेषेभ्यो गुल्मस्यान्येषां च रोगाणां विशेषविज्ञानम् नि. ३-४, ५ |
| नदीनां विभिन्नपर्वतप्रभवानां जलगुणाः सू. २७-२०९-२१२ | नान्दीमुख्या गुणाः सू. २७-२२ | निदानाशस्य हेतुः नि. २१-५७ |
| नदीमाषकस्य गुणाः सू. २७-११४ | नाभेरधो वाते प्रकुपिते चिक्रित्सा चि. २८-९९ | निदानाशे प्रतिकारः सू. ११-५२-५४ |
| नपुंसकगर्भाया लक्षणानि शा. २-२४, २५ | नारिकेलफलस्य गुणाः सू. २७-१३० | निद्रायाः कारणम् , २१-३५ |
| नरः कथमरोगो भवति , २-४६, ४७ | नालिकाया गुणाः सू. २७-९८-१०३ | निद्राया दोषा अकालेऽतिप्रसङ्गाच्च सेवितायाः सू. २१-३७, ३८ |
| नलिन्या गुणाः सू. २७-९८-१०३ | नासाश्रययोर्लक्षणम् चि. २६-११५ | निद्राया भेदाः सू. २१-५८, ५९ |
| नवज्वरे अपथ्यानि चि. ३-१९५, १९६ | नासास्त्रावस्य लक्षणम् चि. २६-२१२ | निद्राविधारणे दोषास्तत्त्विकित्सा च सू. २७-२३ |
| नवज्वरे निषेदानि , ३-१३८ | नासिकाश्रयमरिष्टम् इ. ८-१०, ११ | निन्दिताः पुरुषाः सू. २१-३ |
| नव द्वाराणि शा. ७-१२, १३ | निकोचगुणाः सू. २७-१५७, १५८ | निम्बस्य गुणाः , २७-९५-९७ |
| नवनीतस्य गुणाः सू. २७-२३० | निग्रहस्थानस्य लक्षणम् चि. ८-६५, ६६ | निरपिनस्वेदो दशविधः , १४-६४ |
| नस्तःकर्मगुणाः सि. ९-८८ | निजविकारस्य कारणानि सू. २०-४ | निरपत्यस्य निम्दा चि. २-१६-१९ |
| नस्यकर्मभेदाः सि. ९-८९-९२ | | |

| | | |
|---|--|---|
| निरामज्वरलक्षणम् चि. ३-१३१ | नेत्ररोगे अमृताहाविवर्तिः चि. २६-२४३-२४५ | पक्ष्मणशोथभेदनो भेषजगणः चि. २५-५३, ५४ |
| निरुहकृपयस्तेदयोर्मात्रा सि. ३-३० | नेत्ररोगेऽञ्जनानि चि. २६-२४०-२४२ | पक्षाशयशोधनाध्वारो वस्तयः सि. १०-२५-३७ |
| निरुहमात्राः (वयोभेदेन) सि. ३-३१, ३२ | नेत्ररोगेऽन्यान्यञ्जनानि चि. २६-२५६-२६२ | पक्षाशये प्रकुपितस्त वातस्य लक्षणम् चि. २८-२८, २९ |
| निरुहयोगाः सि. ३-३५-४५ | नेत्ररोगे आक्षूयोनानि चि. २६-२३७-२३९ | पक्षपातस्य चिकित्सा चि. २८-१०० |
| निरुहविधानम् सि. १-२०-२६ | नेत्ररोगे घृण्णजनम् चि. २६-२४७-२५० | पक्षमवर्तमाश्रयमरिष्टम् इ. ८-४, ५ |
| निरुहानन्तरमनुवाचनं देयम् सि. ३-२८, २९ | नेत्ररोगे दृष्टिप्रदा वर्तिः चि. २६-२५४, २५५ | पक्षमाश्रितं रिष्टम् इ. ३-६ |
| निरुहे प्रतिभोजनम् सि. ३-७० | नेत्ररोगे विहालकाः चि. २६-२३१-२३६ | पक्ष्यमानज्वरलक्षणम् चि. ३-१३६, १३७ |
| निर्मलाम्बरधारणस्य गुणाः सू. ५-९५ | नेत्ररोगे शङ्खादिवर्तिः ,, २६-२४६ | पक्ष्यकर्मतः प्राक्कर्तव्यम् सू. २-१५ |
| निर्वायगौ प्रदेहौ ,, ३-२६, २७ | नेत्ररोगे सुखावती वर्तिः चि. २६-२५२, २५३ | पक्ष्य कर्मेन्द्रियाणि शा. ७-७ |
| निवृत्तेः स्वरूपम् शा. ५-११ | नेत्ररोगे सौवीराञ्जनादिवर्तिः चि. २६-२५१, २५२ | पक्ष्य कषाययोनयः सू. ४-६ |
| निवृत्तेऽपि व्याधौ दोषशेषापवृत्त्यर्थ- मनवायिप्रयोगस्य सेवनं विधेयम् चि. ३०-३२७-३३० | नेत्ररोगे आहारोऽर्जोर्णं प्रातर्भोजननिषेधः चि. १५-२४१-२४३ | पक्ष्यको निरुहः सि. ८-८ |
| निष्क्रियस्य पुरुषस्य क्रियानिर्देशः शा. १-७५, ७६ | न्यग्रोधपल्लवस्य गुणाः सू. २७-१०५ | पक्ष्यदश कोष्ठाङ्गानि शा. ७-१० |
| निष्ठपूत-पुटीय-रेतांस्यम्भसि मज्जन्ति यस्य स न जीवति इ. ९-१८-२९ | न्यग्रोधफलस्य गुणाः ,, २७-१६३, १६४ | पक्ष्य महाभूतानि तेषां गुणाश्च शा. १-२७, २८ |
| निष्पावस्य गुणाः सू. २७-३३ | न्युब्जपार्श्वगतस्त्रीसेवननिषेधः शा. ८-६ | पक्ष्यमे मासि गर्भस्य स्वरूपम् शा. ४-२१ |
| निष्पावस्य गुणाः ,, २७-९८-१०३ | पक्ष्यगुल्मस्य चिकित्सा चि. ५-४६, ४७ | पक्ष्यसु विषमज्वरेषु हिताः पक्ष्य कषायाः चि. ३-२००-२०३ |
| नीपस्य गुणाः ,, २७-१४५ | पक्ष्यगुल्मे शल्लक्रियोपदेशः चि. ५-३९ | पक्ष्यान्जुलशाकस्य गुणाः सू. २७-१०९ |
| नेत्रकम्पनाभिहते शूदे दोषास्तच्चिकित्सा च चि. ५-१४-१५ | पक्ष्यमललक्षणम् ,, १५-९३, ९४ | पक्ष्यानां मारुतानामन्योन्यावरणे लिङ्गानि तत्त्वचिकित्सा च चि. २८-१९९-२४८ |
| नेत्ररोगस्य वातजादिभेदेन लक्षणानि चि. २६-१२९-१३१ | पक्ष्यरसस्य गुणाः सू. २७-१८४ | |

| | | |
|--|---|---|
| पञ्चेन्द्रियद्रव्याणि सू. ८-९ | परिकर्तै द्वौ वस्ती सि. १०-३४, ३५ | पर्वपुष्पा गुणाः सू. २७-१०७ |
| पञ्चेन्द्रियसुद्धयः , ८-१२ | परिचारकस्य गुणाः सू. ९-८ | पलाण्डोर्गुणाः , २७-१७५ |
| पञ्चेन्द्रियाणि , ८-८ | परिप्लुताया योनेर्लक्षणम् चि. ३०-२३, २४ | पलाशयो निरुहः सि. ३-४४, ४५ |
| पञ्चेन्द्रियादीनां परिगणनम् सू. ८-३ | परिमर्शनविधिः इ. ३-४ | पलितस्य कृष्णम् चि. २६-१३२ |
| पञ्चेन्द्रियाधिष्ठानानि , ८-१० | परिप्रेक्ष्येदस्य कल्पना सू. १४-४४ | पशूनां वस्तिर्कर्मविधिः चि. ११-१९-२९ |
| पञ्चेन्द्रियाधिष्ठानानि शा. ७-७ | परिप्रेक्ष्येदस्य द्रव्याणि इ. १४-३४ | पाञ्चभौतिकानामपि चक्षुरादीनां तैजसत्वा दिव्यपदेशे हेतुः सू. ८-१४ |
| पञ्चेन्द्रियार्थाः सू. ८-११ | परिस्त्रावव्यापदो वर्णनम् सि. ७-५८-६२ | पाटलस्य गुणाः , २७-१५ |
| पटोलस्य गुणाः , २७-९५-९७ | परिस्त्रवे द्वौ वस्ती सि. १०-३२ | पाठाया गुणाः चि. २७-८८ |
| पत्तूरस्य गुणाः , २७-९८-१०३ | परिस्त्रावव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च सि. ६-६८-७० | पाण्डुकामल्योर्दोषापेक्षिणी चिकित्सा चि. १६-११५, ११६ |
| पट्यापथ्ययोर्लक्षणम् सू. २६-४५ | परिहारस्य लक्षणम् चि. ८-६० | पाण्डुकामल्योः पानाहारे तोयम् चि. १६-११४ |
| पद्मपल्लवस्य गुणाः , २७-१०५ | परीक्षायाः प्रयोजनम् , ८-१३२ | पाण्डुप्रदरचिकित्सा चि. ३०-११६-१२० |
| पनसफलस्य संपकस्य गुणाः सू. २७-१४३, १४४ | परीक्षाया विषये भिषजां प्रश्नाः चि. ८-८० | पाण्डुरोगस्य निदानम् सू. १६-७-११ |
| पयसः उपवासादिष्वनुपानत्वम् सू. २७-३२२ | परीक्षाया विषये भिषजां प्रश्नानामुत्तरम् चि. ८-८१-८२ | पाण्डुरोगस्य पित्तत्रयस्य निदानलक्षणे चि. १६-१९-२२ |
| परमाणुमेदेन शरीरावयवानामसंख्येयत्वम् शा. ७-१७ | परीक्षायाश्चातुर्विध्यम् सू. ११-१७ | पाण्डुरोगस्य पूर्वरूपम् चि. १६-१२ |
| परमात्मनो लिङ्गानि शा. १-७०-७४ | परीक्ष्याणां द्विषो मेदः, तयोः परीक्षणो- पायश्च इ. १-४ | पाण्डुरोगस्य भेदाः , १६-३ |
| परलोकेपणा सू. ११-६ | परुषकस्य गुणाः सू. २७-१२८ | पाण्डुरोगस्य मृजस्य चिकित्सा चि. १६-११७ |
| परादिगुणानां लक्षणम् सू. २६-३१-३५ | परुषकस्याम्लस्य गुणाः , २७-१३२ | पाण्डुरोगस्य मृजस्य निदानलक्षणे चि. १६-३० |
| परादीनां गुणानां निर्देशः , २६-२९-३० | पर्पटकस्य गुणाः , २७-९५-९७ | पाण्डुरोगस्य वातजस्य निदानलक्षणे चि. १६-१७-१८ |
| परावरवैद्यपरीक्षा सू. ३०-७२-८३ | पर्पटकीकलस्य गुणाः , २७-१६२ | |
| परिकर्तिकाव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च चि. ६-६१-६७ | पर्वण्यस्य गुणाः सू. २७-१७० | |
| परिकर्तिकाव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च सि. ७-५४-५७ | | |

| | | |
|--|--|--|
| पाण्डुरोगस्य श्लेष्मजस्य निदानलक्षणे चि. १६-२३-२५ | पाण्डुरोगेऽन्मौ घृतयोगौ चि. १६-५४, ५५ | पार्श्वरुजाहरः प्रदेहः सू. ३-२५ |
| पाण्डुरोगस्य संप्राप्तिः चि. १६-४-६ | पाण्डुरोगे पथ्याघृतम् चि. १६-५० | पालङ्क्याया गुणाः ,, २७-९८-१०३ |
| पाण्डुरोगस्य सान्निपातिकस्य निदान- लक्षणे चि. १६-२६ | पाण्डुरोगे पुनर्नवामण्डूरम् ,, १६-९३-९६ | पाशवसत्वस्य लक्षणम् शा. ४-३९ १ |
| पाण्डुरोगस्य सामान्यलक्षणम् चि. १६-१३-१६ | पाण्डुरोगे नीत्रकारिण्टः चि. १६-१०६-११० | पाशवादीनां त्रिविधानां राजसत्वम् शा. ४-३९ |
| पाण्डुरोगस्यासाध्यलक्षणम् चि. १६-३१-३३ | पाण्डुरोगे मण्डूरघटकाः चि. १६-७२-७९ | पांशुजलयणस्य गुणाः सू. २७-३०४ |
| पाण्डुरोगाः पथ सू. १९-४ ४ | पाण्डुरोगे मण्डूरघटकाः चि. १६-१०२-१०४ | पिडकाः क्षराविकादिभ्योऽन्याः सू. १७-१०८-११० |
| पाण्डुरोगे षट्पदायं घृतम् चि. १६-४७-४९ | पाण्डुरोगे दृज्जे व्योपायं घृतम् चि. १६-११८-१२० | पिडकाः सप्त सू. १९-४ २ |
| पाण्डुरोगे कतिपययोगाः चि. १६-६१-६९ | पाण्डुरोगे योगराजः चि. १६-८०-८६ | पिडकानां नामानि ,, १७-८३ |
| पाण्डुरोगे कामलाहरौ योगौ चि. १६-९८ | पाण्डुरोगे विशालादिकाण्टः ,, १६-६०-६२ | पिडकानां संभवः प्रमेहं विनाऽपि सू. १७-१०४, १०५ |
| पाण्डुरोगे मौढोऽरिष्टः ,, १६-१०५ | पाण्डुरोगे शिलाजतुघटकाः ,, १६-८७-९२ | पिडकानां साध्यासाध्यत्वनिर्देशः सू. १७-१०६, १०७ |
| पाण्डुरोगे त्रिकलायो लेहः ,, १६-९९ | पाण्डुरोगे संशोधनम् चि. १६-५५-५९ | पिडकानामुपद्रवाः सू. १७-१११ |
| पाण्डुरोगे दन्तीघृतम् ,, १६-५१ | पाण्डुरोगे हरिद्रादिघृतम् ,, १६-५३ | पिडकायाः संप्राप्तिर्लक्षणं च सू. १८-२४ |
| पाण्डुरोगे दाहिमार्यं घृतम् चि. १६-४४-४६ | पादत्रधारणस्य गुणाः सू. ५-१०० | पिण्डकगुणाः सू. २७-२६७ |
| पाण्डुरोगे दाह्यादिलेहः चि. १६-९७ | पादाभ्यग्नस्य गुणाः सू. ५-९०-९२ | पिण्डातुल्यस्य गुणाः सू. २७-१२२ |
| पाण्डुरोगे दाक्षायुतम् ,, १६-५२ | पादाभ्यग्नस्य गुणाः सू. ५-९०-९२ | पितृभिरुन्मत्तस्य लक्षणम् चि. ९-२० |
| पाण्डुरोगे घ्राण्यवलेहः चि. १६-१००, १०१ | पादाभ्यग्नस्य गुणाः सू. ५-९०-९२ | पित्तकासे कतिपययोगाः चि. १८-१०३-१०७ |
| पाण्डुरोगे घ्राण्यरिष्टः चि. १६-१११-११३ | पादाभ्यग्नस्य गुणाः सू. ५-९०-९२ | पित्तकासे चिकित्साक्रमः चि. १८-८३-८६ |
| पाण्डुरोगे नवायघचूर्णम् चि. १६-७०, ७१ | पादाभ्यग्नस्य गुणाः सू. ५-९०-९२ | पित्तकासे त्वगादिलेहः चि. १८-९२, ९३ |
| | पादाभ्यग्नस्य गुणाः सू. ५-९०-९२ | पित्तकासेऽन्नपानम् चि. १८-९६-९९ |

| | | |
|--|--|---|
| पित्तकासे पित्तपल्यादिलेहः चि. १८-१४, १५ | पित्तगुल्मेऽभ्यङ्गाः चि. ५-१३१ | पित्तजमूत्रकृच्छ्रे कतिपययोगाः चि. २६-५१ |
| पित्तकासे मृद्वीकालेहः चि. १८-९१ | पित्तगुल्मे रूपावसेचनम् चि. ५-३६-३८ | पित्तजमूत्रकृच्छ्रे शतावयादिकायः चि. २६-५० |
| पित्तकासे मेहयोगाः चि. १८-८७-८९ | पित्तगुल्मे रोहिण्यायं घृतम् चि. ५-११४-११७ | पित्तजयोनिव्यापत्तिर्निदानं लक्षणं च चि. ३०-११, १२ |
| पित्तकासे शरादिपचनमूलक्षीरम् चि. १८-१०० | पित्तगुल्मे वासाघृतम् चि. ५-१२६, १२७ | पित्तज्वरचिकित्साया रक्तपित्तोदितदेशः चि. ४-९५, ९६ |
| पित्तकासे शर्करादिलेहः चि. १८-९० | पित्तगुल्मे विरेचनयोगाः चि. ५-१२८-१३० | पित्तज्वरस्य लक्षणानि नि. १-२२-२४ |
| पित्तकासे स्थिरादिक्षीरम् चि. १८-१०१, १०२ | पित्तप्रहणीगदस्य निदानलक्षणे चि. १५-६५, ६६ | पित्तज्वरस्य संप्राप्तिः नि. १-२२-२४ |
| पित्तकुष्ठे प्रलेपनम् चि. ७-१३१ | पित्तप्रहण्यां किरातायं चूर्णम् च. १५-१३७-१४० | पित्तज्वरस्य हेतुः नि. १-२२-२४ |
| पित्तकुष्ठे स्नानम् ७-१३२-१३५ | पित्तप्रहण्यां चन्दनायं घृतम् चि. १५-१२५-१२८ | पित्तदूषितशुक्रस्य लक्षणम् चि. ३०-१४१ |
| पित्तगुल्मस्य निदानं लक्षणं च चि. ५-१२, १३ | पित्तप्रहण्यां नागरायं चूर्णम् चि. १५-१२९-१३१ | पित्तप्रदरस्य निदानलक्षणे चि. ३०-२१४-२१६ |
| पित्तगुल्मस्य संप्राप्तिर्लक्षणानि च नि. ३-८, ९ | पित्तप्रहण्यां भूमिमायं चूर्णम् चि. १५-१३२, १३३ | पित्तप्रमेहनामानि नि. ४-२५, २६ |
| पित्तगुल्मे आमलकायं घृतम् चि. ५-१२२ | पित्तप्रहण्यां वचायं चूर्णम् चि. १५-१३४-१३६ | पित्तप्रमेहस्य निदानसंप्राप्तिश्च नि. ४-२४ |
| पित्तगुल्मे घृतयोगाः चि. ५-११४ | पित्तप्रहण्यां चिकित्साक्रमः चि. १५-१२२-१२४ | पित्तप्रमेहानां लक्षणानि चि. ६-१० |
| पित्तगुल्मे चिकित्साक्रमः चि. ५-३३-३५ | पित्तच्छर्देर्निदानलक्षणे चि. २०-१०, ११ | पित्तप्रमेहानां लक्षणानि नि. ४-२८-३५ |
| पित्तगुल्मे त्रायमाणायं घृतम् चि. ५-११८-१२१ | पित्तच्छर्द्याश्चिकित्सा ,, २०-२६-३३ | पित्तमेहेषु कतिपययोगाः चि. ६-३०-३३ |
| पित्तगुल्मे द्राक्षायं घृतम् चि. ५-१२३-१२५ | पित्तजमूत्रकृच्छ्रचिकित्सा चि. २६-४९ | पित्तरोगे शस्तास्त्रयो वस्तयः चि. १०-२१, २२ |
| पित्तगुल्मेऽन्नपानानि चि. ५-१३३, १३४ | पित्तजमूत्रकृच्छ्रे एवांसवीजादियोगौ चि. २६-५२, ५३ | |
| पित्तगुल्मे वस्तयः चि. ५-१३२ | | |

| | | |
|--|---|--|
| चित्तलस्य पित्तकोपे कारणं तस्यावजयनं च वि. ८-९७ | पित्ताधिकस्य वातरफस्य लिङ्गानि वि. २९-२७, २८ | पीयूषगुणाः सू. २७-२२४-२३५ |
| पित्तश्लेष्म लक्षणम् वि. ८-९७ | पित्तापरमारस्य लक्षणम् नि. ८-८ २ | पीड्यगुणाः सू. २७-१४५ |
| पित्तविकारानां गणना सू. २०-१४ | पित्ताश्रुतस्नेहस्य चिकित्सा सि. ४-३१ | पीलुपर्णिकाया गुणाः सू. २७-१४५ |
| पित्तस्य कुपितस्योपक्रमः सू. २०-१६ | पित्ताश्रुतस्नेहस्य लक्षणम् ,, ४-३१ | पुंगवर्माया लक्षणानि शा. २-२४, २५ |
| पित्तस्य गुणाः प्रशमने सूत्रम् सू. १-६० | पित्तोदरे चिकित्साविधिः वि. १३-६८-७१ | पुण्डरीककुण्डस्य लक्षणम् नि. ५-८ ५ |
| पित्तस्य क्षीरान्तर्गतस्य कुपिताकुपितस्य शुभाशुमकरत्वम् सू. १२-११ | पित्तोन्मादस्य निदानलक्षणे वि. ९-११, १२ | पुण्डरीकस्य लक्षणम् वि. ७-१८ |
| पित्तस्यात्मस्वरूपस्य लक्षणकर्माणि सू. २०-१५ | पित्तोन्मादस्य लक्षणम् नि. ७-७ २ | पुत्रघ्न्या योनेर्लक्षणम् ,, ३०-२८ |
| पित्तद्वन्द्वस्य चिकित्सा वि. २६-९०-९२ | पित्तासाज्वरनाशनकषाययवागूनामतिदेशः वि. ३-२१५ | पुत्रोत्पत्तौ कारणम् शा. २-११-१४ |
| पित्तद्वन्द्वो कशेरुकाद्यं घृतम् वि. २६-९४, ९५ | पित्तासामिग्रहे दोषास्तत्तद्विचिकित्सा च सू. ७-२१ | पुनरावृत्ते ज्वरे चिकित्सा वि. ३-३३९-३४२ |
| पित्तद्वन्द्वो द्राक्षाद्यं घृतम् वि. २६-९३ | पित्तप्ली-क्षार-लक्षणानामतिमात्रसेवननिषेधः वि. १-१५ | पुनरावृत्ते ज्वरे क्षिरातित्वादिप्रकारः वि. ३-३४३ |
| पित्तातिसारे कतिपययोगाः वि. १९-५१-५५ | पित्तप्लीरसायनम् वि. १-२/३२-३/३४ | पुरीषजानां कृमिणां ससृथानादि वि. ७-१३ |
| पित्तातिसारे गुदवलीषाकचिकित्सा वि. १९-८७-९२ | पित्तप्लीवर्धमान रसायनम् वि. १-३ ३६-३ ४० | पुरीषवहस्रोतसां मूलं तद्वृद्धिलक्षणं वि. ५-८ |
| पित्तातिसारे चिकित्साक्रमः वि. १९-५० | पित्तप्ल्या गुणाः सू. २७-२९७ | पुरीषविरजनीयो दशको महाकषायः सू. ४-१५ |
| पित्तातिसारेऽनुवासनम् वि. १९-६१, ६२ | पित्तप्ल्या गुणास्तस्या क्षतिमात्रसेवने दोषाश्च वि. १-१६ | पुरीषवैगविधारणे दोषास्तत्तद्विचिकित्सा च सू. ७-८, ९ |
| पित्तातिसारेऽक्षपानम् ,, १९-५६-६० | पित्तप्ल्याद्यं घृतम् वि. ५-७४, ७५ | पुरीषसंग्रहणीयो दशको महाकषायः सू. ४-१५ |
| पित्तातिसारे विच्छाद्यस्तिः वि. १९-६३-६८ | पित्ताचोन्मत्तस्य लक्षणम् वि. ९-२० | पुरीषादिमलानां क्षयलक्षणानि सू. १७-७०-७२ |
| पित्तादिदोषसंघट्टस्य तस्य (अजीर्णस्य) लिङ्गानि वि. १५-४७-४९ | पीडयमाने बन्धावन्तरा गुक्ते दोषास्त- त्तद्विचिकित्सा च. वि. ५-१३, १४ | पुरुषमामयं चाधिकृत्य समेनानां महर्षीणां विवादाः सू. २५-३-२९ |
| पित्तादिसंसर्गज्ञानम् वि. २८-५८-६१ | पीतेऽप्यौषधेऽशुद्धस्य कर्तव्यम् सि. ६-३५, ३६ | |

| | | |
|--|---|---|
| पुरुषसंश्रयकृमिविषयेऽग्निवेशस्य प्रश्नः वि. ७-८ | पैत्तिकप्रतिश्रयायचिकित्सा वि. २६-१४४ | प्रकृतेर्विवरणम् वि. १-२२ १ |
| पुरुषस्य कारणत्वम् शा. १-३९-५२ | पैत्तिकप्रतिश्रयाये आवस्थिकी चिकित्सा वि. २६-१४४-१४९ | प्रजास्थापनो दशको महाकपायः सू. २८-३६-४२ |
| पुरुषस्य प्रभवः शा. १-५३ | पैत्तिकप्रतिश्रयाये पठाथं तैलम् वि. २६-१४५ | प्रज्ञापराधस्य वर्णनम् शा. १-१०२-१०९ |
| पुरुषस्य लोकसंमितत्वम् शा. ५-३-६ | पैत्तिकयोनिरोगाणां चिकित्सा वि. ३०-६३ | प्रज्ञापराधदुष्पञ्चस्याप्यरिष्टस्याज्ञानम् इ. २-६ |
| पुरुषस्य सार्विकादिव्यपदेशे हेतुः सू. ८-६ | पैत्तिकविषलक्षणम् वि. २३-१६८ | प्रणीयमानो वस्तिर्मेहेतुभिर्न याति, सुखं च बहिर्नीयाति ते हेतवः सि. १-५५, ५६ |
| पुरुषस्य गुणाः सू. २७-११८ | पैत्तिकशिरोगस्य चिकित्सा वि. २६-१७५-१७९ | प्रतमकस्य लक्षणम् वि. १७-६३, ६४ |
| पूतिनस्यस्यापीतवस्य च लक्षणम् वि. २६-११३, ११४ | पैत्तिकशोथे चिकित्सा वि. १२-६८ | प्रतिच्छाया अरिष्टभूताः इ. ७-३-७ |
| पूषगुणाः सू. २७-२६७ | पैत्तिकशोथे स्नानानुलेपने वि. १२-६९ | प्रतिच्छायाश्रयमरिष्टम् इ. ८-३ |
| पूषलिकागुणाः वि. २७-२६७ | पैत्तिके योनिरोगे जीवनीयधृतम् वि. ३०-६९ | प्रतिज्ञाया लक्षणम् वि. ८-३० |
| पूषरफस्य लक्षणम् ,, २६-११६ | पैत्तिके योनिरोगे शतावरीधृतम् वि. ३०-६४-६८ | प्रतिज्ञादानेर्लक्षणम् वि. ८-६१ |
| पूषसंशोधित एव शरीरे वृष्ययोगा उपयोक्तव्याः वि. २-५०, ५१ | पैत्तिकोन्मादचिकित्सा वि. ९-७६, ७७ | प्रतिदिनमनुवास्याः सि. ४-४६ |
| पूर्वरूपस्य लक्षणम् वि. १-८ | पैत्तिकोन्मादचिकित्सा वि. ९-७६, ७७ | प्रतिदिनानुवाचने हेतुः सि. ४-४७ |
| पूर्वरूपारिष्टज्ञानफलम् इ. ५-२६ | पैत्तिकोन्मादचिकित्सा वि. ९-७६, ७७ | प्रतिनाहस्य लक्षणम् वि. २६-११२ |
| पूर्वोक्त(श्रूयणादिधृतादि)धृतयोगेभ्य एव चूर्णानि गुटिकाश्च कल्पनीयाः वि. ५-७६-७८ | पैत्तिकोन्मादचिकित्सा वि. ९-७६, ७७ | प्रतिमर्शगुणाः सि. ९-११६ |
| पूर्वोक्तापत्यकरोपष्टिकादिगुटिकाय- व्ययोगानां फलम् वि. २-२ ३० | पैत्तिकोन्मादचिकित्सा वि. ९-७६, ७७ | प्रतिमर्शप्रयोगविधिः सि. ९-११७ |
| पृथुकानां गुणाः सू. २७-२७३ | पैत्तिकोन्मादचिकित्सा वि. ९-७६, ७७ | प्रतिश्रयायस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि वि. २६-१०४-१०६ |
| पेयादिकमाचरणे हेतुः सि. ६-२४ | पैत्तिकोन्मादचिकित्सा वि. ९-७६, ७७ | प्रतिश्रयायाद्राजयक्ष्मा कथं प्रवर्तते वि. ८-४८-५० |
| पेयाया गुणाः सू. २७-२५० | पैत्तिकोन्मादचिकित्सा वि. ९-७६, ७७ | प्रतिश्रयायाश्चत्वारः सू. १९-४ ५ |
| पेगीसंख्याकथनम् शा. ७-१४ | पैत्तिकोन्मादचिकित्सा वि. ९-७६, ७७ | प्रतिष्ठापनाया लक्षणम् वि. ८-३२ |

| | | |
|--|--|---|
| प्रतिसंस्कर्तुः कर्म सि. १२-३६ | प्रधानमर्मणां हृदयशिरोवस्तीनां वर्णनम् सि. ९-४ | प्रमेहानां चिकित्साक्रमः चि. ६-१५-१८ |
| प्रतुदानां निर्देशः सू. २७-५०-५२ | प्रधानमर्मणामुपघाते विशेषलक्षणानि सि. ९-६ | प्रमेहानां दोषद्वयसंग्रहः चि. ६-८ |
| प्रतुदानां साधारणगुणाः सू. २७-५९, ६० | प्रधानमर्मणामुपघाते सामान्यलक्षणानि सि. ९-५ | प्रमेहानां पूर्वरूपाणि नि. ४-४७ |
| प्रत्यक्षलक्षणम् वि. ४-४ २ | प्रध्मापनस्य प्रयोगविधिः सि. ९-१०७, १०८ | प्रमेहानां पूर्वरूपाणि चि. ६-१२-१४ |
| प्रत्यक्षतः पञ्चेन्द्रियज्ञेया विषयाः वि. ४-७ | प्रपुनःप्राप्तस्य गुणाः सू. २७-९८-१०३ | प्रमेहानां साध्यासाध्यविचारः चि. ६-५६ |
| प्रत्यक्षस्य लक्षणम् सू. ११-२० | प्रभावस्य लक्षणम् ,, २६-६७ | प्रमेहानां साध्यासाध्यविभागः ,, ६-७ |
| प्रत्यक्षस्य लक्षणम् वि. ८-३९ | प्रभावस्योदाहरणानि सू. २६-६८-७२ | प्रमेहानामुपद्रवाः नि. ४-४८ |
| प्रत्यक्षेण पुनर्मर्षस्य प्रतिपादनम् सू. ११-३० | प्रभावादिभेदेन रोगानीकभेदाः नि. ६-३ | प्रमेहानामनुपानानि चि. ६-४६ |
| प्रत्यनुमोगस्य लक्षणम् वि. ८-५३ | प्रभाषितं शुभाशुभत्वम् इ. ७-१४, १५ | प्रमेहानामनपानम् ,, ६-१९-२४ |
| प्रत्याख्येयस्य लक्षणम् सू. १०-१९, २० | प्रमाणतो देहपरीक्षा वि. ८-११७ | प्रमेहेऽपतर्पणम् ,, ६-५९ |
| प्रत्याख्येयस्य लक्षणम् सू. १८-४० | प्रमाणप्रकरणोपसंहारः सू. ११-२६ | प्रयोजनस्य लक्षणम् नि. ८-४४ |
| प्रत्यागते वस्ती पश्चात्कर्म सि. ३-२७ | प्रमेहचिकित्सासूत्रम् नि. ४-४९ | प्रलेपविषये कर्तव्याकर्तव्योपदेशः चि. २१-९८-१०७ |
| प्रथमद्वितीयतृतीयपरस्तीनां फलम् सि. ३-२६ | प्रमेहनिदानसेवननिषेधः चि. ६-५३ | प्रवाहणे द्वौ वस्ती सि. १०-३६ |
| प्रथमे मासि गर्भस्य स्वरूपम् शा. ४-९ | प्रमेहपिडकाचिकित्सा ,, ६-५८ | प्रवाहिकाव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च सि. ७-४०-४२ |
| प्रदरचिकित्सा चि. ३०-२२७, २२८ | प्रमेहरूपविषयोविशेषनिर्णयः चि. ६-५४ | प्रवृत्तेर्मूलम् शा. ५-९, १० |
| प्रदरस्य निदानं संप्राप्तिश्च चि. ३०-२०४-२१० | प्रमेहस्य निदानम् नि. ६-४ | प्रवृत्तेर्लक्षणम् वि. ८-७७ |
| प्रदुष्टस्रोतसां घातुरूपकत्वम् वि. ५-९ | प्रमेहस्य संप्राप्तिः नि. ६-५, ६ | प्रवृत्तेर्विवरणम् ,, ८-१२९ |
| प्रदुष्टस्रोतसां चिकित्सासूत्रम् वि. ५-२६-२८ | प्रमेहस्यादिष्टभूतानि पूर्वरूपाणि इ. ५-१६, १७ | प्रशस्तो मिथक् सू. २९-१३ |
| | प्रमेहा विंशतिः सू. १९-४ ९ | प्रशान्तानां विकाराणामपुनरागमनोपायः शा. २-४२-४४ |

| | | |
|--|---|---|
| प्रसवकालः शा. ४-२५ | प्राणैषणा सू. ११-४ | फलनिकादिकायः चि. ६-४० |
| प्रसवादिज्ञानां निरुक्तिः सू. २७-५३-५५ | प्रातराशोऽजीर्णोऽपि वायमाशस्य न दूषणत्वम् चि. १५-२३७-२४० | फलमांसादिभिः संस्कृतानां भक्ष्याणां गुणाः सू. २७-२६८ |
| प्रसवानां निर्देशः सू. २७-३५, ३६ | प्रायोगिकधूमवर्तिद्रव्याणि सू. ५-२०-२२ | फलवर्गः ,, २७-१२५-१६५ |
| प्रसवानां विशेषगुणाः ,, २७-५८ | प्रार्थनासंधारणे दोषाः शा. ४-१९ | फलानां वर्जनीयानां निर्देशः सू. २७-३१७ |
| प्रसवानां साधारणगुणाः सू. २७-५६, ५७ | प्रियालतैलस्य गुणाः सू. २७-२९१ | फलारिष्टो द्वितीयः चि. १४-१५३-१५७ |
| प्रस्तरस्वेदस्य कल्पना सू. १४-४२ | प्रियालस्य गुणाः ,, २७-१५८ | फलनीनां नामकर्माणि सू. १-८०-८५ |
| प्रस्तरस्वेदस्य द्रव्याणि ,, १४-२७ | प्रेतसत्त्वस्य लक्षणम् शा. ४-३८ ५ | फल्गुगुणाः सू. २७-१२८ |
| प्राकृतवैकृतज्वरलक्षणम् चि. ३-४२-४९ | लक्षपल्लवस्य गुणाः सू. २७-१०५ | फाण्टलक्षणम् ,, ४-७ ३ |
| प्राकृचरणाया योनेर्लक्षणम् चि. ३०-२० | लक्षकलस्य गुणाः ,, २७-१६३, १६४ | फेनसंघातवत्स्तन्ये पाठादियोगः चि. ३०-२६५-२६७ |
| प्रागेव जनपद्मोद्वंसनाद्भेषजोद्धरणोपदेशः चि. ३-३, ४ | ह्रीद्वाभिवृद्धेः संप्राप्तिः लक्षणं च सू. १८-२८ | वदरस्य गुणाः सू. २७-१३२ |
| प्राचीनामलकस्य गुणाः सू. २७-१४५ | ह्रीद्वाभिवृद्धेः निदानसंप्राप्तिर्लक्षणानि चि. १३-३५-३८ | वदरस्य गुणाः ,, २७-१४७ |
| प्राज्ञाज्ञरोगिणोर्लक्षणम् ,, ११-५६-६२ | ह्रीद्वाभिवृद्धेः चिकित्साविधिः चि. १३-७५-७८ | वद्धक्षतान्त्रयोः शस्त्रकर्म चि. १३-१८४-१८८ |
| प्राणवर्धनादीनामेकैकस्योत्कृष्टतमत्वम् सू. ३०-१५ | ह्रीद्वाभिवृद्धेः पिप्पल्यादिष्वर्णम् चि. १३-७९ | वद्धगुदोदरस्य निदानसंप्राप्तिर्लक्षणानि चि. १३-३९-४१ |
| प्राणवद्धोतसां मूलं तदुष्टिलक्षणं च चि. ५-८ | ह्रीद्वाभिवृद्धेः पैत्तिके चिकित्सा चि. १३-८७ | वद्धगुदोदरे चिकित्साविधिः चि. १३-८९, ९० |
| प्राणाचार्यप्रशंसा चि. १-४ ५१-४ ५४ | ह्रीद्वाभिवृद्धेः रोहितकृष्टतम् चि. १३-८३-८६ | वर्हिमांसस्य गुणाः सू. २७-६३, ६४- |
| प्राणादिबद्धोतसां दुष्टित्वेत्तवः चि. ५-१०-१२ | ह्रीद्वाभिवृद्धेः रोहितकलतासन्धानम् चि. १३-८१, ८२ | बलं त्रिविधम् ,, ११-३६. |
| प्राणाभिसराणां लक्षणम् सू. २९-७ | ह्रीद्वाभिवृद्धेः विज्ञादिक्षारः चि. १३-८० | बलदोषप्रमाणज्ञानहेतोरानुरूपरीक्षा चि. ८-९४ |
| प्राणायतनानि सू. २९-३, ४ | फञ्जया गुणाः सू. २७-९८-१०३ | बलमांसक्षये येषचिकित्स्याः इ ९-८, ९ |
| प्राणिनां देशभक्ष्यविशेषेण गुरुलाघवम् सू. २७-३३२, ३३३ | | |

| | | |
|--|---|--|
| चलविशेषं दृष्ट्वा मैपञ्चमवचार्यम् चि. ८-१२३ | वस्तिशुद्धस्य यवागृविधानम् सि. ८-१७ | वालरोगाणां चिकित्सा चि. ३०-२८२-२८७ |
| चलादिरसायनानि चि. ३-१२ | वस्तीनां गुणाः सि. १२-२०, २१ | वाष्पनिग्रहे दोषास्त्यक्तित्वा च सू. ७-१२ |
| चलादीन् प्रविभज्य दशौ वस्तिः सर्वरोगा- न्निवर्तयति सि. १०-४ | वस्तेः शीर्षनिर्गमने हेतवः सि. १-५६, ५७ | वाहुक्षीर्षगते वाते चिकित्सा चि. २८-९८ |
| चलायौ यापनवस्ती सि. १२-१६ ५, १६ ६ | वस्तेः समहीनातियोगलक्षणानि सि. १-४०-४६ | विद्यालिकादीनां सामान्यचिकित्सा चि. १२-८० |
| चलाया गुणाः सू. २७-१०७ | वस्तेः सर्वशरीरमलहरत्वे दृष्टान्त- द्रव्यम् सि. ७-६४, ६५ | विद्यालिकाया लक्षणम् चि. १२-७६ |
| चलयो दशको महाकपायाः सू. ४-१० | वस्तेः पूर्वमगमने हेतुस्तथिकित्सा च सि. ५-१२ | विभीतकस्य गुणाः सू. २७-१४८ |
| वस्त्यावसम्पक्वणीते व्यापदः सि. ३-२०-२३ | वस्तेर्गुणाः सि. १-२७-४० | विम्ब्या गुणाः सू. २७-१४२, १४३ |
| वस्तिकुण्डलस्य निदानलक्षणे सि. ९-४४-४९ | वस्तेर्गुणाः ,, १०-५ | वित्त्वपत्रस्य गुणाः सू. २७-१०७ |
| वस्तिदानसमये आवरियकं कर्म सि. ३-२५ | वस्तेर्भेदाः ,, १०-८ | वित्त्वपत्र्या गुणाः ,, २७-१०७ |
| वस्तिदानसमये प्रशस्तं शयनम् सि. ३-३३, ३४ | वस्तेर्मृदुत्वं तीक्ष्णत्वं च कथं विधेयम् सि. ७-६३ | वित्त्वस्य गुणाः ,, २७-१२८ |
| वस्तिदानानन्तरं देयं भोजनम् सि. ३-३४, ३५ | वस्तौ द्रव्यनिक्षेपक्रमः सि. ३-२३ | विषस्य गुणाः सू. २७-११६, ११७ |
| वस्तिनेत्रप्रमाणम् सि. ३-८-१० | वस्त्यलामेऽनुकल्पविधिः सि. ३-१२ | वीजोपघातजकृद्व्यलक्षणम् चि. ३०-१५८-१६० |
| वस्तिनेत्रविधानोपयोगीनि द्रव्याणि सि. ३-७ | वस्त्यसम्पद्योगजन्यद्व्यदशव्यापदां निर्देशाः सि. ७-५, ६ | वृद्धिविभ्रंशस्य वर्णनम् शा. १-९९ |
| वस्तिनेत्राकृतिः सि. ३-८-१० | वस्त्यादिषु परिहरणीयानि सि. १-५४, ५५ | वृद्धेर्लक्षणम् पा. १-२२, २३ |
| वस्तिनेत्रेणुर्दोषाः ,, ५-८ | वस्त्यादिषु परिहारकाः ,, १-५४ | वृद्धेर्विवरणम् ,, १-३२-३४ |
| वस्तिप्रयोगविधिः सि. ३-१२-२० | वदिरायामस्य लक्षणम् चि. २८-४६-४८ | गृहणं मांसम् सू. २२-२५ |
| वस्तिप्रयोजनविधिः सि. ३-१२-२० | वदिरायामस्यारिष्टभूतानि पूर्वरूपाणि इ. ५-२४ | गृहणद्रव्याणि ,, २२-१३, १४ |
| वस्तिप्रयोजनविधिः सि. ३-१०, ११ | वदिवेगज्वरलक्षणम् चि. ३-४१ | गृहणस्य कृतातिकृतलक्षणम् सू. २२-३८, ३९ |
| | बहुप्रजस्य प्रशंसा ,, २-१९-२३ | गृहणस्य लक्षणम् सू. २२-१० |
| | बहुसंतानोत्पत्तौ कारणम् शा. २-११-१४ | गृहणी गुटिका चि. २-१ २४-१ ३३ |
| | | गृहणीयवस्त्यनर्हाः सि. १०-११ |

| | | |
|--|--|--|
| वृंष्टणीयाः सू. २२-२६ | मिषक् चवरप्रशमने विशेषतो यतेत चि. ३-३४५ | भूशयानां वाधारणगुणाः सू. २७-५६, ५७ |
| वृंष्टणीयानि सू. २२-२७, २८ | मिषकमस्य लक्षणम् सू. १-१३५ | भूस्त्वणस्य गुणाः सू. २७-१७२ |
| वृंष्टणीयो दशको महाकषायः सू. ४-९ | मिषग्लुभूषोः कर्तव्यम् सू. १-१३३ | भूस्वेदस्य कल्पना सू. १४-५५ |
| वृहत्याद्यो यापनवस्तिः सि. १२-१६ ४ | मिषञ्च प्रत्मातुरस्य कर्तव्यम् चि. १-४ ५५ | भूस्वेदस्य द्रव्याणि सू. १४-२८ |
| प्रप्रस्य लक्षणचिकित्सिते चि. १२-९४, ९५ | मिषज्ज्ञातव्यानि कानिचित्प्रकरणानि चि. ८-६८ | भूष्टकगुणाः सू. २७-१७० |
| त्राहाराक्षसोन्मत्तस्य लक्षणम् चि. ९-२० | मिषज्ज्ञातव्यानि कानिचित्प्रकरणानि चि. ८-६८ | भेदनविधिः चि. ५-१३८-१४१ |
| त्राहारासनं प्रथमम् चि. १-१ ४१-१ ५७ | मिषज्ज्ञातव्यानि कानिचित्प्रकरणानि चि. ८-६८ | भेदनीयो दशको महाकषायः सू. ४-९ |
| त्राहारासनं द्वितीयम् चि. १-१ ५८-१ ६१ | मिषज्ज्ञातव्यानि कानिचित्प्रकरणानि चि. ८-६८ | भेदनो निरुद्धः सि. ८-१२ |
| त्राहारासनं तृतीयम् चि. १-१ ५८-१ ६१ | मिषज्ज्ञातव्यानि कानिचित्प्रकरणानि चि. ८-६८ | भेदनप्रहणकालाः चि. ३०-२९८-३०१ |
| त्राहारासनं चतुर्थम् चि. १-१ ५८-१ ६१ | मिषज्ज्ञातव्यानि कानिचित्प्रकरणानि चि. ८-६८ | भेदनप्रहणयोग्यः कालः चि. ३०-२९३ |
| त्राहारासनं पञ्चमम् चि. १-१ ५८-१ ६१ | मिषज्ज्ञातव्यानि कानिचित्प्रकरणानि चि. ८-६८ | भेदनप्रहणविधिः चि. १-३८-४० |
| त्राहारासनं षष्ठम् चि. १-१ ५८-१ ६१ | मिषज्ज्ञातव्यानि कानिचित्प्रकरणानि चि. ८-६८ | भेदनभेदाः चि. १-४ |
| त्राहारासनं सप्तमम् चि. १-१ ५८-१ ६१ | मिषज्ज्ञातव्यानि कानिचित्प्रकरणानि चि. ८-६८ | भेदनसम्यग्योगलक्षणम् चि. ३०-२९३ |
| त्राहारासनं अष्टमम् चि. १-१ ५८-१ ६१ | मिषज्ज्ञातव्यानि कानिचित्प्रकरणानि चि. ८-६८ | भेदनस्य पर्यायाः चि. १-३ |
| त्राहारासनं नवमम् चि. १-१ ५८-१ ६१ | मिषज्ज्ञातव्यानि कानिचित्प्रकरणानि चि. ८-६८ | भेदनस्य युक्तस्य लक्षणम् सू. १-१३४ |
| त्राहारासनं दशमम् चि. १-१ ५८-१ ६१ | मिषज्ज्ञातव्यानि कानिचित्प्रकरणानि चि. ८-६८ | भोजनपरिपाकस्यानम् चि. २-१५-१८ |
| त्राहारासनं एकादशम् चि. १-१ ५८-१ ६१ | मिषज्ज्ञातव्यानि कानिचित्प्रकरणानि चि. ८-६८ | भौतिकवात्त्वमीनां कर्म चि. १५-१३-१५ |
| त्राहारासनं द्वादशम् चि. १-१ ५८-१ ६१ | मिषज्ज्ञातव्यानि कानिचित्प्रकरणानि चि. ८-६८ | मकुष्ठकस्य गुणाः सू. २७-२७ |

| | | |
|---|--|---|
| मक्षिकादष्टलक्षणम् वि. २३-१५८ | मदनफलानां दश पाठ्यादियोगः क. १-२६ | मदात्ययस्य पैत्तिकस्य चिकित्सा वि. २४-१३६-१५० |
| मज्जपानार्हाः सू. १३-५० | मदनफलानां पञ्च पयोमुखा योगाः क. १-१७, १८ | मदात्ययस्य वैत्तिकस्य निदानलक्षणे चि. २४-९२-९४ |
| मज्जप्रदोषजा रोगाः सू. २८-१७ | मदनफलानां विंशतिहरकारिकायोगाः मोदकयोगाश्च क. १-२३ | मदात्ययस्य वातिकस्य चिकित्सा वि. २४-१२१-१३५ |
| मज्जसमुत्थानां व्याधीनां चिकित्सा सू. २८-२८ | मदनफलानां विंशतिहृद्ययोगाः क. १-२२ | मदात्ययस्य वातिकस्य निदानलक्षणे २४-८८-९१ |
| मज्जाया गुणाः सू. १३-१७ | मदनफलानां पञ्चविंशयोगाः क. १-२१ | मदात्ययस्य श्लेष्मिकस्य चिकित्सा २४-१६४-१८८ |
| मज्जारन्ध्रः प्रकुपितस्य वातरस्य लक्षणम् वि. २८-३३ | मदनफलानां षोडश क्षण्डुली- पूषयोगाः क. १-२४-२५ | मदात्ययस्य श्लेष्मिकस्य निदानलक्षणे २४-९५-९७ |
| मज्जतो गुणाः सू. २७-२९५ | मदनफलानामष्टौ मात्रायोगाः क. १-१६ | मदात्ययस्य सन्निपातजनस्य चिकित्सा २४-१८९-१९० |
| मज्जलक्ष्मणस्य लक्षणम् नि. ५-८/३ | मदनफलानामेकः काणितयोगः क. १-२० | मदात्ययस्य सामान्यलक्षणम् २४-१०१-१०६ |
| मज्जलक्ष्मणे लेवी चि. ७-१२२, १२३ | मदनफलानामेको घ्रेययोगः क. १-११ | मदात्यये क्षीरप्रयोगः चि. २४-१९५-१९८ |
| मज्जलक्ष्मणस्य लक्षणम् वि. ७-१६ | मदनफलपर्यायाः क. १-२७ | मदात्यये पैत्तिके पश्चात्प्लवकयोगाः वि. २४-१५१ |
| मज्जलक्ष्मणस्य लक्षणम् वि. २३-१२८ | मदनमूर्च्छायोद्योगः सू. २४-५४-५८ | मदात्यये मद्यप्रयोगः चि. २४-११०-१२० |
| मज्जस्य गुणाः सू. २७-१५१, २५२३ | मदनलक्षणम् चि. २४-३९, ४० | मदात्यये क्षीतला बाष्पोपचाराः वि. २४-१५२-१६३ |
| मज्जकृष्णार्णा गुणाः सू. २७-९५-१७३ | मदनस्य नयो भेदास्तेषां लक्षणानि चि. २४-४१-५१ | मदात्यये हितो विहारः चि. २४-१९१-१९४ |
| मज्जस्यगिह्याया गुणाः सू. २७-२४० | मदनस्य यातजादिभेदेन लक्षणम् सू. २४-३०-३३ | मदानां क्षोणितमद्यविपजानां वातादिजे- ध्वन्तर्मात्राः सू. २४-३४ |
| मज्जस्यनर्मस्य गुणाः सू. २७-८१ | मदनस्य संप्राप्तिः सू. २४-२५-२९ | |
| मज्जस्यविषे चिकित्सा सू. २३-२०८-२११ | मदात्ययस्य चिकित्सासूत्रम् चि. २४-१०७, १०८ | |
| मदनलक्ष्मणस्य क. १-१०२ | | |
| मदनफलानां प्रदणस्यापनत्रिभिः क. १-१३ | | |

| | | |
|--|--|--|
| मदाश्रित्वारः सू. १९-४, ५ | मधुकोडगुणाः सू. २७-२६७ | मध्वाद्यो यापनवस्तिः सि. १२-१८/११ |
| मदिराया गुणाः ,, २७-१८० | मधुघृताद्यौ यापनवस्ती सि. १२-१८ १४-१८ १५ | मध्वात्मस्य कष्टतमत्वे हेतुः सू. २७-२४७, २४८ |
| मद्यदोषाः चि. २४-५२-५८ | मधुतैलयो यापनवस्तिः सि. १२-१८ १३ | मध्वासवस्य गुणाः सू. २७-१८९ |
| मद्यनिवृत्तेर्गुणाः चि. २४-२०६ | मधुनः श्लेष्मशमकत्वम् वि. १-१४ | मनःपुरःसराणामिन्द्रियाणामर्थग्रहणे सामर्थ्यम् सू. ८-७ |
| मद्यपाने सुखाः सहायाः सू. २४-७९-८४ | मधुनः साधारणगुणाः सू. २७-२४५ | मनःशरीरसुदानामेव रसायनसिद्धिर्भवति चि. १-४ ३६-४ ३८ |
| मद्यप्रशंसा चि. २४-३-१० | मधुनो जातिभेदाः ,, २७-२४३, २४४ | मनसः कर्म शा. १-२१ |
| मद्यवर्गः सू. २७-१७८-१९५ | मधुनो योगवाहित्वम् ,, २७-२४९ | मनसो ग्राह्यविषयाः सू. ८-१६ |
| मद्यस्य जीर्णस्य गुणाः सू. २७-१९३ | मधुमेहस्य निदानम् ,, १७-७८, ७९ | मनसो द्वौ गुणौ शा. १-१९ |
| मद्यस्य दश गुणास्तेषां कर्माणि च चि. २४-२९-३८ | मधुमेहस्य लक्षणम् ,, १७-८१ | मनसोऽर्थाः शा. १-२० |
| मद्यस्य प्रकृतिदर्शकत्वम् चि. २४-७२, ७३ | मधुमेहस्य विशेषनिर्णयः चि. ६-५५ | मनसो लक्षणम् सू. ८-४ |
| मद्यस्य युक्तिपीतस्य गुणाः चि. २४-६१-७१ | मधुमेहस्य संप्राप्तिः सू. १७-७९-८० | मनसो लक्षणम् शा. १-१८ |
| मद्यस्य विधित्वा पीतस्य गुणाः चि. २७-१९४, १९५ | मधुमेहस्योपेक्षणे विट्कानां समुद्भवः सू. १७-८२ | मनोदेहसंतापलक्षणम् चि. १-४ ३६, ४ ३७ |
| मद्यस्य विधिसंवितस्य गुणाः चि. २४-२६-२७ | मधुरसस्य गुणकर्माणि तस्यातिगोत्रे दोषाश्च सू. २६-४३ १ | मनोऽभिषातजच्छर्वाधिकृतिषा चि. २०-४१-४४ |
| मद्यस्य स्वभावेनान्नतुल्यत्वम् चि. २४-५९, ६० | मधुशर्कराया गुणाः सू. २७-२४२ | मनोर्धानामानुकूल्यस्य फलम् चि. ३०-३३२-३३३ |
| मद्यस्यामिनवस्य गुणाः सू. २७-१९३ | मधूकरस्य गुणाः ,, २७-१२८ | मन्दं प्रणीते वाह्ये वा स्नेहे दोषास्त- च्चिकित्सा च सि. ७-१७ |
| मद्यस्याविधिपीतस्य दोषाः चि. २४-२८ | मधूदकमनुपानं स्थूलदेहानाम् सू. २७-३०३ | मन्दकगुणाः सू. २७-२२८ |
| मद्यानां वर्जनीयानां निर्देशः सू. २७-३१८ | मधूलिकासुराया गुणाः सू. २७-१९० | मन्याश्रितं रिष्टम् इ. ३-६ |
| मद्यानां सामान्यगुणाः ,, २७-३७८ | मधूत्पा गुणाः सू. २७-२२ | मधुराद्यो यापनवस्तिः सि. १२-१८ ३ |
| मद्यनुपानस्याधिकारिणः ,, २७-३२४ | मध्यमस्नेहमात्राया गुणाः सू. १३-३७ | मरिचस्य गुणाः सू. २७-२९८ |
| | मध्यमस्नेहमात्रायाः पुरुषाः ,, १३-३५, ३६ | |

| | | |
|---|--|--|
| मर्त्येभिपजोऽवश्यं पूजनीयाः चि. १-४ ३९-४ ५० | महाहिक्काया लक्षणम् चि. १७-२१-२६ | मानसदोषौ तज्जा विकाराश्च वि. ६-५ |
| मर्मणां परिपालनानि सि. ९-९, १० | मांसजविकाराणां चिकित्सा सू. १८-२६ | मानसव्याधेः प्रतीकारः सू. ११-४६, ४७ |
| मर्मणां संख्या सि. ९-३ | मांसप्रदोषजा रोगाः ,, २८-१३-१५ | मानसशारीरयोस्त्रिविधं प्रकोपकारणम् सू. ६-६ |
| मर्मणां संख्या तत्र त्रयाणां प्राधान्यम् चि. २६-३, ४ | मांसमेदःस्थे घाते चिकित्सा चि. २८-९३ | मानसा दोषाः शा. ४-३४ |
| मर्मसंख्याकथनम् शा. ७-१४ | मांसमेदसोः प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम् चि. २८-३२ | मानस्य द्वैविध्यम् क. १२-१०५ |
| मलजानां कृमीणां समुत्पत्तिर्नादि वि. ७-१० | मांसरसवोगाः वि. ४-४९, ५० | मातृपदुग्धस्य गुणाः सू. २७-२२४ |
| मलजानां व्याधीनां चिकित्सा सू. २८-३० | मांसरसस्य क्षयेऽनुपानत्वम् सू. २७-३२१ | मातृपस्य गुणाः ,, २७-९८-१०३ |
| मलानां क्षयशूलोर्लक्षणम् सू. ७-४३ | मांसरसस्य गुणाः सू. २७-३१३-३१५ | मातृस्य गुणाः ,, २७-२४ |
| मलायनानि सू. ७-४२ | मांसवर्गः सू. २७-३५-८७ | मासान्मरिष्यतो लिङ्गादि इ. ११-१०-१२ |
| मलाश्रितदोषजा रोगाः २८-२२ | मांसस्य शरीरवृंहणे प्राधान्यम् सू. २७-८७ | मासान्मरिष्यतो लिङ्गादि इ. १२-२४ |
| मशकदण्डलक्षणम् चि. २३-१५७ | मातृलङ्घनस्य गुणाः सू. २७-१५३, १५४ | माहिपदुग्धस्य गुणाः सू. २७-२१९ |
| मसूरस्य गुणाः सू. २७-२८, २९ | मातृवातस्तेगुणाः सि. ४-५३, ५४ | माहिपमांसस्य गुणाः २७-८० |
| मसूरिकाया लक्षणम् चि. १२-९३ | मात्राया अपित्तबलापेक्षितम् सू. २७-३४२ | मिथ्योपयुज्यमानानां पण्णां रसानां दोषप्रकोपकत्वम् वि. १-४ |
| महादादीनि परिरक्षता गत्परिहार्यं यथा सेव्यं तस्योपदेशः सू. ३०-१३, १४ | मात्रावतः संशोधनोपधस्य गुणाः सि. ६-१५, १६ | मुकलगुणाः सू. २७-१५७, १५८ |
| महर्षाणां समितौ रसाहारविनिश्चये कथा सू. २६-३-९ | मात्रावतो भोजनस्य गुणाः १-२५ ३ | मुकज्वरलक्षणानि चि. ३-३२९ |
| महागद एकः सू. १९-४ ८ | मात्रावतो भोजनस्य गुणाः वि. २-६ | मुकस्य लक्षणम् शा. ५-२२ |
| महायोन्था लक्षणम् चि. ३०-३५, ३६ | मातृस्यसत्त्वस्य लक्षणम् शा. ४-३९ २ | मुकात्मनो लक्षणम् शा. १-१५५ |
| महाधासस्य लक्षणम् ,, १७-४६-४८ | मानपरिभाषा क. १२-८७-९७ | मुक्तेः पर्यायाः शा. ५-२२-२४ |
| महास्नेहानां नामवर्णानि सू. १-८६, ८७ | मानसदोषवर्णप्रदः सू. १-५७ | मुकोन्मादलक्षणम् चि. ९-९७ |
| | | मुखपाकचिकित्सा चि. २६-२०४, २०५ |

| | | |
|---|---|---|
| सुखरोगस्य चिकित्सा चि. २६-१८७-२०५ | मूत्रकृच्छ्रस्य निदानलक्षणे सि. ९-३२ | मूत्राण्ठीलाया निदानलक्षणे सि. ९-३६ |
| सुखरोगस्य वातजादिभेदेन लक्षणानि चि. २६-११९-१२३ | मूत्रकृच्छ्रस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि चि. २६-३२-४४ | मूत्रोत्सङ्गस्य निदानलक्षणे सि. ९-३२-३४ |
| सुखरोगाश्चत्वारः सू. १९-४ ५ | मूत्रकृच्छ्रहृत्तिरुदः सि. ८-१३, १४ | मूत्रौकषादस्य निदानलक्षण- चिकित्सितानि सि. ९-२७, २८ |
| सुखरोगे कटुषादिकायः चि. २६-२०१, २०२ | मूत्रकृच्छ्रे पुनर्नवादिमिश्रकस्नेहः चि. २६-४६-४८ | मूत्रौकषस्य वातजादिभेदेन लक्षणम् सू. २४-३५-४१ |
| सुखरोगे कालकृच्छ्रम् चि. २६-१९४, १९५ | मूत्रजठरस्य निदानलक्षणचिकित्सितानि सि. ९-२९-३१ | मूत्रौकषाः संप्राप्तिः सू. २४, २५-२९ |
| सुखरोगे खदिरादिपुष्टिका तैलं च चि. २६-२०६-२१४ | मूत्रनिग्रहे दोषास्तच्चिकित्सा च सू. ७-५-७ | मूत्रौकषाश्चत्वारः ,, १९-४ ५ |
| सुखरोगे पीतकृच्छ्रम् चि. २६-१९६, १९७ | मूत्रमार्गप्रवृत्तस्य रक्तपित्तस्य चिकित्सा चि. ४-८५ | मूत्रौकषे चतुर्धनधूमवर्तिद्रव्याणि सू. ५-२६ |
| सुखरोगे श्लेष्मिकादिचूर्णम् चि. २६-१९८-२०० | मूत्रवहलोतवां मूलं तद्दुष्टिलक्षणं च चि. ५-८ | मूलकस्य गुणाः सू. २७-१६८ |
| सुधातकस्य गुणाः सू. २७-११९ | मूत्रविरजनीयो दशको महाकषायः सू. ४-१५ | मूत्रविरजनीयो दशको महाकषायः सू. ४-१५ |
| सुदस्य गुणाः सू. २७-२३ | मूत्रसंक्षयस्य निदानलक्षणे सि. ९-३४ | मूत्राद्याः पूर्वोक्त(दशमूलाय)कल्पाति- देशः सि. १२-१८ १० |
| सुमूर्धतामाहुराणां गृहावस्था इ. १२-३२-३९ | मूत्रसंप्रवृत्तयो दशको महाकषायः सू. ४-१५ | मूत्रौकषाया गुणाः सू. २७-१२५, १२६ |
| सुमूर्धतामाहुराणां दूताः इ. १२-९-२४ | मूत्राघाता अष्टौ सू. १९-४ १ | मूत्रौकषाश्चत्वारः गुणाः ,, २७-१८८ |
| सुमूर्धतामाहुराणां कानिचिद्विज्ञानानि इ. ७-१८-३१ | मूत्राघातानां चिकित्सा सि. ९-४९, ५० | मूत्रौकषं केषां प्रयोज्यम् क. १२-६७-६९ |
| सुमूर्धतामाहुराणां इ. ८-१६-२६ | मूत्राणां नामकर्माणि सू. १-९२-१०४ | मेदःसंभ्रमा रोगाः सू. २८-१६ |
| सुखादिकायः सू. २३-१२, १३ | मूत्राण्ठीतस्य निदानलक्षणे सि. ९-३५ | मेदोजविकाराणां चिकित्सा ,, १८-२६ |
| सुखाद्यो यावन्नवस्तिः सि. १२-१६ १ | | |
| मूत्राघाते योगः चि. ११-२७ | | |

| | | |
|--|---|---|
| मेध्यरसायनानि चि. १-३ ३०, १-३ ३१ | यवसफोर्गुणाः सू. २७-२६३ | यावविपिटकानां गुणाः सू. २७-२७३ |
| मेधेयकृता मेधजामेधगयोस्तुल्यत्वप्रतिपादने चेष्टा सू. १०-४ | यवस्य गुणाः ,, २७-१९ | यावसर्कराया गुणाः ,, २७-२४२ |
| मेधुनेऽयोग्यौ स्त्रीपुरुषौ शा. ८-६ | यवाग्न्योगाः ,, ४-४३-४८ | युक्तेलक्षणम् सू. ११-२३-२५ |
| मेरेयस्य गुणाः सू. २७-१८७ | यवाग्नः सू. २-१७-३३ | युचया पुनर्मेवस्य प्रतिपादनम् सू. ११-३२ |
| मोक्षस्य लक्षणम् शा. १-१४२ | यवानीगुणाः ,, २७-३०७, ३०८ | युग्मेषु दिनेषु पुत्रकामौ अपुत्रेषु दुहितुकामौ संवसेताम् शा. ८-५ |
| मोक्षस्योपायाः ,, १-१४३-१४६ | यवान्या गुणाः ,, २७-१७० | यूध-रस-सूपानां संस्कारविशेषेण लाघव- गौरवे सू. २७-२६२ |
| मोक्षोपायाः ,, ५-१२ | यवापूपगुणाः ,, २७-२६५ | येभ्योऽपस्मारी रक्ष्यः चि. १०-६६ |
| मोचकलक्ष्य सपक्वस्य गुणाः सू. २७-१४३, १४४ | यष्टयाहो वस्तिः सि. ३-४६ | येषामरुणा येषां च इयामा हिता क. ७-८-९ |
| मोरटगुणाः २७-२२४-२३५ | यष्टयाहो वस्तिरपरः सि. ३-४७ | येषां यवाग्नौ हिता चि. ३-१५४ |
| यः पेर्य पातुं न शक्नोति स त्रियसे इ. ९-११ | यस्मात्पित्तस्य रक्तपित्तमिति संशालामः नि. ३-५ | येषु साध्येष्वपि रोगेषु कर्म न सिद्धिमेति ते रोगाः सि. १-५७-६० |
| यकृद्वात्युदरे विकिरसा चि. १३-८८ | यस्य विरेचनमूर्ध्वं याति तस्य चिकित्सा क. १२-७० | योगवस्तेर्विवरणम् सि. १-४७-५० |
| यक्षोन्मत्तस्य लक्षणम् ,, ९-२० | यादृशं यस्मिंश्च काले देवादयोऽभि- धर्षयन्ति चि. ९-२१ | यो गर्भः संपूर्णदेहः, समये सुखं च जायते तस्य कारणम् शा. २-५-६ |
| यथा फलात्पूर्वं पुष्पोत्पत्तिः एवं मरणा- त्प्रागरिष्टोत्पत्तिः इ. २-३-५ | यापनाबस्तेरतिसेवने दोषाधिक्रिस्ता च सि. १२-३०-३२ | योगसंज्ञा कथं भवति क. १२-४३ |
| यथोक्त (विरेचनशोषौषध) वसनफलं सम्य- ग्वसितस्य च पश्चात्कर्म सि. ६-२२, २३ | यापनायस्त्रयप्रभृतौ कर्तव्यम् सि. १२-२९, ३० | योगस्य लक्षणम् शा. १-१३८-१३९ |
| यमे एरुस्याभिष्टदौ कारणम् शा. २-१६ | याप्यस्य लक्षणम् सू. १०-१७, १८ | योगिनामष्टविधमैश्वर्यम् शा. १-१४०, १४१ |
| यमोत्पत्तौ कारणम् शा. २-११-१४ | याप्यस्य लक्षणम् ,, १८-३९ | यो दुर्बलो बहुदोषश्च दोषपाकेन स्वयमेव विरिच्यते तत्र कर्तव्यम् क. १२-६५ |
| यनकृतसुराया गुणाः सू. २७-१९० | याम्यसत्त्वस्य लक्षणम् शा. ४-३७ ४ | योनिदीर्गमेध्यचिकित्सा चि. ३०-१२४-१२८ |
| यवक्षारस्य गुणाः सू. २७-३०५ | यावकगुणाः सू. २७-२६५ | |
| यवघातस्य गुणाः ,, २७-९८-१०३ | | |

| | | |
|--|---|---|
| योनिरोगाणां चिकित्सासूत्रम् ३०-४१-४६ | रक्तगुल्मस्य निदानलक्षणे : चि. ५-१८-१९ | रक्तपित्तस्य साध्यासाध्यलक्षणानि चि. ४-१३-१४ |
| योनिरोगे उदुम्बररुदुग्धप्रयोगः चि. ३०-७७, ७८ | रक्तगुल्मस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि नि. ३-१४ | रक्तपित्तस्य साध्यासाध्यविनिश्चयः नि. २-९ |
| योनिरोगे उदुम्बरादितैलम् चि. ३०-७३-७७ | रक्तगुल्मे चिकित्साक्रमः चि. ५-१७२-१८२ | रक्तपित्तस्य हेतुः चि. ४-६ रक्तपित्तस्य हेतुः ,, ४-२३ |
| योनिरोगे करीरादिप्रयोगः चि. ३०-८२-८४ | रक्तग्रन्थेर्निदानलक्षणे सि. ९-४१-४२ रक्तजमूत्रकृच्छ्रेऽप्यथ्यानि नि. २६-७६ | रक्तपित्तस्यारिष्टभूतानि पूर्वरूपाणि इ. ५-१०, ११ |
| योनिरोगे घातक्यादितैलम् चि. ३०-७९-८२ | रक्तजमूत्रकृच्छ्रे श्वदंष्ट्राघृतम् चि. २६-७४, ७५ | रक्तपित्तस्यासाध्यतालक्षणानि नि. २-२३-२६ |
| योनिरोगे पिप्पल्यादिर्वर्तिः चि. ३०-७२ | रक्तजविकाराणां चिकित्सा सू. २८-२५ | रक्तपित्तस्यासाध्यलक्षणानि चि. ४-१८-२१ |
| योनिरोगे लोहचूर्णप्रयोगः चि. ३०-८४, ८५ | रक्तपित्तं त्रिविधम् सू. १९-४ ६ | रक्तपित्तस्योपद्रवाः नि. २-७ |
| योनिरोगेषु पलाशादिकलकः ,, ३०-१२२ | रक्तपित्तस्य चिकित्सासूत्रम् नि. २-११ | रक्तपित्ते आदौ स्तम्भनिषेधः चि. ४-२५-२८ |
| योनिरोगेष्व्वादौ वातशमनं कार्यम् चि. ३०-११४-११६ | रक्तपित्तस्य दोषाधिक्यवशात्लक्षणानि चि. ४-११-१२ | रक्तपित्ते घृतयोगाः चि. ४-८९, ९० |
| योनिरोगेष्व्वावस्थिकी चिकित्सा चि. ३०-१२०-१२२ | रक्तपित्तस्य द्विविधा गतिः चि. ४-१५-१७ रक्तपित्तस्य निदानपूर्विका संप्राप्तिः नि. २-३-४ | रक्तपित्ते तर्पणपेयायोग्याऽवस्था चि. ४-३२ |
| योनिव्यापच्चिकित्सतोपक्रमः चि. ३०-१, २ | रक्तपित्तस्य पूर्वरूपाणि नि. २-६ | रक्तपित्ते तर्पणयोगाः चि. ४-३२-३५ |
| योनिव्यापत्सु दोषाधिक्यनिरूपणम् चि. ३०-३-६ | रक्तपित्तस्य प्रागुत्पत्तिः ,, २-१० रक्तपित्तस्य मार्गभेदः दोषभेदेन ,, २-८ | रक्तपित्ते दोषाधिक्यवशान्मार्गानुबन्ध- विशेषः चि. ४-२४ |
| योनिव्यापदां सामान्यहेतुः चि. ३०-८ | रक्तपित्तस्य शोधप्रतिकार्यत्वम् चि. ४-५ | रक्तपित्ते निदानपरिवर्जनम् चि. ४-५३ |
| योनिव्यापदो विंशतिः सू. १९-४ ९ | रक्तपित्तसंज्ञानिमित्तम् ,, ४-९ | रक्तपित्ते प्रमेहे च वस्तयः चि. १०-४३ |
| योनिव्यापद्वेदाः चि. ३०-७ | रक्तपित्तस्य संप्राप्तिः ,, ४-७-८ | रक्तपित्ते प्रलेपयोगाः चि. ४-१०२-१०५ |
| योनिव्यापद्विषयेऽग्निवेशस्य प्रश्नाः चि. ३०-३-६ | रक्तपित्तस्य साध्यस्य लक्षणानि चि. ४-२२ | रक्तपित्ते मार्गादीन्वेक्ष्य लङ्घनं तर्पणं वा विधेयम् चि. ४-२९, ३० |

| | | |
|--|--|--|
| रक्तपित्ते वमनयोगाः चि. ४-५९, ६० | रक्तातिप्रवृत्तौ बाष्पोपनाराः चि. १४-२१२-२१३ | रक्ताशंसि सुनिषण्णकचाग्नेरीधृतम् चि. १४-२२४-२४२ |
| रक्तपित्ते शीतोपचाराः ,, ४-१०६-१०९ | रक्तातिसारचिकित्सा चि. १९-७१-८६ | रक्ताशंसि ह्रीवेरादिधृतम् चि. १४-२३०-२३३ |
| रक्तपित्ते मंशमनी चिकित्सा चि. ४-६२-६४ | रक्तातिसारलक्षणम् ,, १९-६९-७० | रक्ताशंस्यतिविषादिचूर्णम् चि. १४-१८७ |
| रक्तपित्ते संशोधनम् चि. ४-५४-५८ | रक्तातिष्ठारे चिकित्साक्रमः चि. १९-९३-१०१ | रक्ताशंस्यन्ये योगाः चि. १४-१९१-१९४ |
| रक्तपित्ते हितं पानम् ,, ४-५१, ५२ | रक्तादिधातुभिराधृतस्य वायोर्लक्षणानि चि. २८-६३-६८ | रक्ताभरणधारणस्य गुणाः सू. ५-९७ |
| रक्तपित्ते हितं मांसम् ,, ४-४१, ४२ | रक्तादिधातूरपत्तिविषयेऽभिवेशस्य कतिपये प्रश्नाः चि. १५-२२-२६ | रक्षोभला व्यापदः चि. १२-१४ २ |
| रक्तपित्ते हितान्यनानि ,, ४-३६, ३७ | रक्ताशंसां प्रशमना औषधयोगाः चि. १४-१८५ | रक्तदोषसंसर्गपथानभिधाने हेतुः चि. १-८ |
| रक्तपदोषना रोगाः सू. २८-११-१३ | रक्ताशंसि कफानुबन्धलक्षणानि चि. १४-१७३-१७४ | रक्तदोषसन्निपाते व्यवस्था चि. १-७ |
| रक्तमूत्रकुच्छूचिक्रिया चि. २६-७३, ७४ | रक्ताशंसि कुटजादिरक्षकिया चि. १४-१८८-१९० | रक्तद्वारेण द्रव्याणां धीर्योपदेशः सू. २६-४५-४७ |
| रक्तयोनेर्लक्षणम् ,, ३०-१६ | रक्ताशंसि चण्डनादिकाथः चि. १४-१८६ | रक्तनेन्द्रियविकृतयोऽरिष्टभूताः इ. ४-२२ |
| रक्तशाल्यादीनां विशेषगुणाः सू. २७-११, १२ | रक्ताशंसि चिकित्साक्रमः चि. १४-१८०-१८४ | रक्तप्रदोषजा रोगाः सू. २८-८-१० |
| रक्तस्थे वाते चिकित्सा चि. २८-९२ | रक्ताशंसि दाव्यादिकाथः चि. १४-१८६ | रक्तभेदासंख्येयत्वेऽपि चिकित्सार्थं त्रिवर्णभेदकल्पना सू. २६-२४ |
| रक्तातिप्रवृत्तौ कुटजफलाद्यं धृतम् चि. १४-१९७ | रक्ताशंसि दाव्यादिचूर्णम् ,, १४-१९६ | रक्तमलयोः कार्यम् ,, २८-४ |
| रक्तातिप्रवृत्तौ घृतविधानम् चि. १४-१९६ | रक्ताशंसि दोषानुबन्धविशेषाधिक्रिया-विशेषः चि. १४-१७५, १७६ | रक्तविकल्पज्ञानस्य प्रयोजनम् सू. २६, २७ |
| रक्तातिप्रवृत्तौ परिपेचनयोगाः चि. १४-२१४ | रक्ताशंसि पाठाद्यं चूर्णम् चि. १४-१९५ | रक्तविकल्पयोगे युक्तिः ,, २६-२७, २६ |
| रक्तातिप्रवृत्तौ पलाण्डुप्रयोगः चि. १४-२०३ | रक्ताशंसि पिच्छापक्तिः चि. १४-२०४-२२९ | रक्तविज्ञानमरिष्टभूतम् इ. २-१७-१९ |
| रक्तातिप्रवृत्तौ पेयायोगाः चि. १४-१९९-२०३ | रक्ताशंसि नातानुबन्धलक्षणानि चि. १४-१७०-१७२ | रक्तवीर्यविपाकानामेकस्मिन् द्रव्ये सह वधतां भेदेन ज्ञानार्थं लक्षणम् सू. २६-६६ |
| रक्तातिप्रवृत्तौ प्रशमना औषधयोगाः चि. १४-२०४-२११ | | |

| | | |
|---|--|---|
| रस-शोजित-मांस-भेदोऽपि-मज्ज-शुक्र- नहस्रोतघां मूलं तद्दृष्टिलक्षणं च चि. ५-८ | रसानां वीर्येणाल्पमध्यवरत्नप्रदर्शनम् सू. २६-५३-५६ | राजयक्षमणिः कारणचतुष्टयम् चि. ८-१ |
| रससंग्रहः सू. १-६५ | रसागुरसकल्पनया द्रव्याणां भेदोऽसंख्येयः सू. २६-२३ | राजयक्षमणिः पूर्वरूपाणि चि. ८-३३-३७ |
| रसस्य लक्षणं विशेषे प्रत्ययाश्च सू. १-६४ | रसागुरसयोर्लक्षणम् सू. २६-२८ | राजयक्षमणिः साध्यासाध्यत्वविचारः चि. ८-४७ |
| रसस्य सर्वदेहव्यापकत्वम् चि. १५-३६ | रसायनज्ञानार्थमृषीणामिन्द्रसमीपे गमनम् चि. १-४ ३-४ ५ | राजयक्षमणिः साहसप्रभवस्य निदान- संप्राप्तिलक्षणानि चि. ८-१४-१९ |
| रसस्यागुरसरीरगतस्यानुमानेन ज्ञानम् इ. ३-२०-२२ | रसायनप्रयोगात् पूर्वं कोऽशोधन- विधिः चि. १-२५-२८ | राजयक्षमणिः साहसप्रभवस्य निदान- संप्राप्तिलक्षणानि चि. ८-१४-१९ |
| रसादिशातुर्भिषजः प्रशंसा दि. १-२६ | रसायनप्रयोगो द्विविधः चि. १-१६ | राजयक्षमणिदोषजत्वम् चि. ८-६३ |
| रसादिधातुगतज्वराणां चिकित्सा चि. ३-३३५, ३३६ | रसायनविधानस्य फलम् ,, १-२ ३ | राजयक्षमणिदोषजत्वम् चि. ८-६३ |
| रसादिधातूनां क्षयलक्षणानि सू. १७-६४-६९ | रसायनसेवनगुणाः चि. १-७-८ | राजयक्षमणिः कफप्रभेकचिकित्सा चि. ८-११८-१२१ |
| रसादिमानज्ञानार्थं विमानस्थानोपदेशः चि. १-३ | रसायनसेवाफलम् ,, १-२/२०-२/२२ | राजयक्षमणिः खड्युपयोगः चि. ८-११८-१३२ |
| रसादिसप्तधातुगतज्वराणां लक्षणानि चि. ३-७६-८३ | रसालाया गुणाः सू. २७-२७८ | राजयक्षमणिः छर्दश्चिकित्सा चि. ८-१२२ |
| रसादुत्तरोत्तरं रसादिधातुपोषणक्रमः चि. १५-१६, १७ | रसे रक्तगते चिकित्सा ,, २३-१८७ | राजयक्षमणिः जम्बूवादिचूर्णम् चि. ८-५७ |
| रसानां पञ्चभूतप्रभवत्वम् सू. २६-३८-४० | रसोपदेशेनैव सर्वश्रेष्ठगुणोपदेशस्यायी- कित्वम् सू. २६-४८-५२ | राजयक्षमणिः जीवन्त्यादिघृतम् चि. ८-१११-११३ |
| रसानां मात्रामात्राभ्यामुपयुज्यमानानां गुणदोषौ सू. २६-४४ | राक्षससत्त्वस्य लक्षणम् शा. ४-३८ २ | राजयक्षमणिः तालीसाद्यं चूर्णं गुटिका च चि. ८-१४५-१४८ |
| रसानां विज्ञानम् सू. २६-७३-७९ | राक्षसोन्मत्तस्य लक्षणम् चि. ९-२० | राजयक्षमणिः दशमूलाद्यं घृतम् चि. ८-९७-९८ |
| रसानां विषाकनिर्देशः सू. २६-५७, ५८ | रागपाण्डवानां गुणाः सू. २७-२८१ | राजयक्षमणिः दुरालभादिघृतम् चि. ८-१०६-११० |
| | राजक्षवकस्य गुणाः ,, २७-९० | |
| | रात्रमाषस्य गुणाः सू. २७-२५ | |
| | राजयक्षमणिः आयुत्पत्तिः चि. ८-३-१२ | |

| | | |
|---|---|---|
| राजयक्षमणि पयकोलादिष्टतम् चि. ८-१६६ | राजयक्षमणि शिरःपार्श्वशूलेषु स्वेदविधिः चि. ८-७१-७६ | राजयक्षमण्युत्सादनं स्नानं च चि. ८-१७५-१७८ |
| राजयक्षमणि मीनसपिंक्तिरसा चि. ८-६५-७० | राजयक्षमणि शिरःशूलादिभ्यश्चक्ष्मणि चि. ८-८२-८६ | राजयक्षमा कथं प्रवर्तते चि. ८-३८-४० |
| राजयक्षमणि प्रशस्त्रानि मयानि चि. ८-१६४-१६६ | राजयक्षमणि धितोपलादिचूर्णम् चि. ८-१०३, १०४ | राजयक्षमा हि एकादशगमाधीनां संपातः चि. ८-४३-४६ |
| राजयक्षमणि प्रशस्तो विहारः चि. ८-१८४-१८८ | राजयक्षमणि सिद्धयुतयोगः चि. ८-९९-१०२ | राजयक्षमणिः कण्ठात्सरक्तकफप्रवृत्तौ हेतुः चि. ८-५७, ५८ |
| राजयक्षमणि यलादिष्टतं क्षीरं च चि. ८-११४, ११५ | राजयक्षमणि सिद्धयोगाः चि. ८-८९-९६ | राजयक्षमणिः पार्श्वशूलक्षणम् चि. ८-५६ |
| राजयक्षमणि बृंहणयोगः चि. ८-१६७, १६८ | राजयक्षमणि वृद्धपादाग्रदाह- चिकित्सा चि. ८-१०५ | राजयक्षमणिः शूलक्षेत्रक्षणम् चि. ८-५६ |
| राजयक्षमणि बृंहणयोगः चि. ८-१७१, १७२ | राजयक्षमणो धातुक्षयजस्य निदान- संप्राप्तिलक्षणानि चि. ८-२४-२७ | राजयक्षमणिः श्वासलक्षणमतिशारलक्षणं च चि. ८-५९ |
| राजयक्षमणि मृदु संशोधनम् चि. ८-८७, ८८ | राजयक्षमणोऽरिष्टभूतानि पूर्वैरुपाणि इ. ५-६-८ | राजयक्षमणिः स्वरभेदलक्षणम् चि. ८-५३-५५ |
| राजयक्षमणि यवानीपाहवचूर्णम् चि. ८-१४०-१४४ | राजयक्षमणो विषमाहारजस्य निदान- संप्राप्तिलक्षणानि चि. ८-२८-३२ | राजयक्षमणोऽरिष्टानि इ. ९-६, ७ |
| राजयक्षमणि रास्नादिष्टतम् चि. ८-१७० | राजयक्षमणो वेगसंभारणजस्य निदान- संप्राप्तिलक्षणानि चि. ८-२०-२३ | राजयक्षमणोऽरुचिलक्षणम् चि. ८-६०, ६१ |
| राजयक्षमणि लेपादि सू. ८-७७ | राजयक्षमण्यतिशारचिकित्सा चि. ८-१२२-१२६ | राजयक्षमणो विह्वलं हि बलम् चि. ८-४१, ४२ |
| राजयक्षमणि वैदिकीष्टिः चि. ८-१८९ | राजयक्षमण्यनुपानयोगाः सू. ८-१३३ | राजादनफलस्य संपत्तयः गुणाः सू. २७-१४३, १४४ |
| राजयक्षमणि शमनीयो विधिः चि. ८-१९७ | राजयक्षमण्यन्नम् चि. ८-११६ | राजाहर्षवैद्यलक्षणम् चि. ६-१९ |
| राजयक्षमणि शिरःपार्श्वशूलेषु प्रदेहयोगो नावनादीनि च चि. ८-७८-८१ | राजयक्षमण्यन्नपानम् ,, ८-१७९-१८३ | राजिलकृतदंशलक्षणम् चि. २३-१२९ |
| | राजयक्षमण्यन्नचिकित्सा चि. ८-१३४-१४० | रात्रिजागरणस्य गुणाः सू. २१-५० |
| | राजयक्षमण्यवगाहनम् चि. ८-१७३, १७४ | राशिपुरुषस्यैव वेदनाविशेष इति निरूपणम् शा. १-८४, ८५ |
| | राजयक्षमण्यावस्थिकी चिकित्सा कार्या चि. ८-६३, ६४ | |

| | | |
|---|---|--|
| राशेर्विवरणम् वि. १-२२ ४ | रोगाणां शमनम् शा. २-३९, ४० | रोहितमांसस्य गुणाः सू. २७-८२ |
| रासनाद्यो निरुहः सि. ३-६१-६४ | रोगाणां साध्यादिभेदाः सू. १८-४१ | रौक्ष्यादनागतः स्नेह उपेक्ष्यः सि. ४-४० |
| रुधिरान्वितशुक्रस्य लक्षणम् वि. ३०-१४३ | रोगाणां साध्याद्याध्यत्वे विभागः सू. १०-९, १० | लकुचस्य गुणाः सू. २७-१३२ |
| रुक्षक्षीरचिकित्सा वि. ३०-२६९, २७० | रोगाणां सामान्यचिकित्सासूत्रम् सू. १८-४४-४७ | लक्ष्मणाया गुणाः ,, २७-९८-१०३ |
| रुक्षणद्रव्याणि सू. २२-१४, १५ | रोगाणां हेतुः शा. २-३९, ४० | लघुपञ्चमूलाद्यो यापनवर्तिः सि. १२-१६ ८ |
| रुक्षणस्य कृतातिहतलक्षणम् सू. २२-३९ | रोगाणामतिप्रवृद्धानामसाध्यतागमनम् नि. ५-१४, १५ | लङ्घनद्रव्याणि सू. १२-१२, १३ |
| रुक्षणस्य लक्षणम् सू. २२-१० | रोगाणामनुत्पत्तौ उत्पन्नानां च शान्तये कारणम् सू. ७-५५ | लङ्घनस्य कृतातिकृतलक्षणम् सू. २२-३४-३७ |
| रुक्षणीयाः सू. २२-२८-३० | रोगाणामसाध्यतापत्तिकारणानि नि. २-२१-२३ | लङ्घनस्य प्रकारभेदाः ,, २२-१८ |
| रुक्षणीयानि ,, २२-२८-३० | रोगानीदस्य संख्येयत्वे असंख्येयत्वे च युक्तिः वि. ६-४ | लङ्घनस्य मिश्रप्रकारस्याधिकारिणः सू. २२-१९-२४ |
| रूपस्य पर्यायाः नि. १-९ | रोगानिदस्य संख्येयत्वे असंख्येयत्वे च युक्तिः वि. ६-४ | लङ्घनस्य लक्षणम् सू. २२-९ |
| रेतोदोषा अष्टौ सू. १९-४ १ | रोगामिदस्य सिपञ्चा वर्जने हेतुः सू. २९-१०-१२ | लङ्घनादीनां पण्णामकृतानां लक्षणस्य समासेनोपदेशः सू. २२-४१ |
| रेतोऽभिघातमूत्रकृच्छ्रचिकित्सा वि. २६-६९-७२ | रोगामिदस्य लक्षणम् सू. २९-८, ९ | लवणस्य गुणकर्माणि तस्यातिथोगे दोषाश्च सू. २६-४३ ३ |
| रोगमार्गावयवः सू. ११-४८, ४९ | रोगायतनोपसंहारः ,, ११-४३ | लवणस्य गुणास्तस्यातिमात्रसेवने दोषाश्च वि. १-१८ |
| रोगस्य लक्षणम् ,, ९-४ | रोगाव्यतिरिक्तः ,, २०-३ | लवणानां नामकर्माणि सू. १-८८-९१ |
| रोगस्यायतनानि त्रीणि ,, ११-३७ | रोगोऽपि रोगान्तराणां निदर्शनार्थकरो भवति नि. ८-१६-२२ | लवणानां सामान्यगुणाः ,, २७-३०४ |
| रोगाणां ज्ञानोपायाः नि. १-६ | रोगान्तिकाया लक्षणम् वि. १२-९२ | लवलीफलस्य गुणाः ,, २७-१७६, १७७ |
| रोगाणां तरुणावस्थायां सुखसाध्यत्वम् नि. ५-१३ | रोहिण्याः संप्राप्तिः ,, १८-३४, ३५ | लघुनस्य गुणाः ,, २७-१४५ |
| रोगाणां द्विविधा प्रकृतिद्विविधमविष्टानं च. सू. २०-३ | रोहिण्याः साध्यासाध्यत्वनिर्देशः वि. १८-३६ | लाङ्गलिक्या गुणाः ,, २७-१०८ |
| रोगाणां परस्परानुबन्धकत्वम् वि. ६-८, ९ | | लाजपेयागुणाः ,, २७-२५३-२५६ |
| रोगाणां भेदाः सू. १८-४१-४३ | | |

| | | |
|--|--|---|
| लाजमण्डस्य गुणाः सू. २७-२५३-२५६ | वत्सकस्य त्रयः सलिलयोगाः क. ५-११ | वमनस्य योगे पञ्चाहर्कम् सू. १५-१४, १५ |
| लाजसत्त्वगुणाः ,, २७-५७ | वत्सकस्य नव कषाययोगाः क. ५-७-९ | वमनस्य सम्यग्योगलक्षणानि सू. १५-१३ |
| लावनांसस्य गुणाः ,, २७-६९ | वत्सकस्य पञ्च घूर्णयोगाः ,, ५-९, १० | वमनस्यातियोगजा उपपत्त्याः सू. १५-१३ |
| लावादिचिकित्साणां साधारणगुणाः सू. २७-५९, ६० | वत्सकस्य पर्मायाः क. ५-२, ४ | वमनस्यातियोगलक्षणानि सू. १५-१३ |
| लिङ्गत्वेनोष्णानां व्याधीनां पुष्पगन्धधिरवममि संभवति नि. ८-४० | वत्सकस्य भेदौ क. ५-५ | वमनस्यातियोगलक्षणानि सू. १६-११, १२ |
| लतादण्डलक्षणम् वि. २३-१४४-१४६ | वत्सकस्यैकः कुशरायोगः क. ५-११ | वमनस्यायोगलक्षणानि सू. १५-१३ |
| लताविषे सिद्धयोगाः ,, २३-२००-२०४ | वत्सकदानीगुणाः सू. २७-१०६ | वमनादिकर्मणः प्रागुपकल्पनीयाः संभागाः सू. १५-३-७ |
| लेखनीयो दशको महाकषायः सू. ४-९ | वनत्तिकास्य गुणाः सू. २७-९५-९७ | वमनादिभिः शुद्ध आतुरो यथा परिपाल- नीयः सि. ६१-३५ |
| लोकपुरुषयोः सामान्योपदेशस्य प्रयोजनम् सू. ५-६-८ | वमनं विरेचनं च द्रव्यं कथं वामयति विरेचयति च क. १-५ | वमनादीनां प्रवृत्तिनिवृत्तिविषयातिशयः वि. ८-१३३, १३४ |
| लोकपुरुषयोस्तुल्यत्वदर्शनम् शा. ४-१३ | वमनद्रव्याणां कल्पसंग्रहः वि. ८-१३५ | वमनादीनामादौ अन्तरा स्नेहस्वेदप्रयोगः अन्ते च स्नेहप्रयोगः सि. ६-७ |
| लोहास्य गुणाः सू. २७-९८-१०३ | वमनद्रव्याणां मदनफलस्य धेष्टत्वम् क. १-१३ | वमनायोगे कर्तव्यम् क. १-१४ |
| लोहिकाया गुणाः ,, २७-९८-१०३ | वमनद्रव्याणि सू. २-७, ८ | वमनार्थं वचादियोगाः वि. ३०-२५२, २५३ |
| लोह्रासवः वि. ६-४१-४५ | वमनविधिः सू. १५-९ | वमनार्हाः सि. २-१० |
| लोमसंलक्षकथनम् शा. ७-१४ | वमननिरेचनद्रव्याणां भावनार्थमालोष- नार्थं च द्रव्याणि क. १-१२ | वमनार्हो गुल्मी वि. ५-४९-६३ |
| लोमाश्रितं रिष्टम् इ. ३-६ | वमनविरेचनयोः कर्तव्यः क्रमः नि. १-१०, ११ | वमने पाकप्रतीक्षा क्रिमर्थं न कार्या क. १२-६२ |
| लोहरसायनम् वि. १-३/१५-३/२३ | वमनविरेचनयोः समहीनातियोग- लक्षणानि सि. १-१५-२० | वमने विरेचने च दोषोत्प्रेषणविधिः सि. १-८, ९ |
| चंशकार्पण्डूकस्येक्षोः श्रेष्ठत्वे हेतुः सू. २७-२३८ | वमनस्य दश व्यापदः सि. ६-२९, ३० | वमनोपगो दशको महाकषायः सू. ४-१३ |
| वत्सककृत्तरोपक्रमः क. ५-१, २ | वमनस्य पूर्वकर्म सू. १५-८ | |
| वत्सकस्य गुणाः ,, ५-६ | वमनस्य योगातियोगानां लक्षणम् सि. ६-३१-३४ | |

| | | |
|--|---|---------------------------------|
| वमनौपधपानविधिः क. १-१४ | वशिनोऽपि पुत्रयस्यासुसैमाविराक्रमणे | वातकासे कतिपययोगाः |
| वमनौपधे पीते कर्तव्यम् | कारणम् शा. १-७८ | चि. १८-६३, ६४ |
| सू. १५-११, १२ | वसन्तचर्या सू. ६-२२-२६ | वातकासेऽगस्त्यहरीतकीलेहः |
| वमितस्यान्तर्गसर्जनकमः सू. १५-१६ | वसागुणाः सू. २७-२९५ | चि. १८-५७-६२ |
| वयःस्थापनो दशको महाकषायः | वसापानार्हाः सू. १३-४७-४९ | वातकासे चिकित्साक्रमः |
| सू. ४-१८ | वसाया गुणाः सू. १३-१६ | चि. १८-३२-३४ |
| वयस्तो देहपरीक्षा वि. ८-१२२ | वाक्पदोपाणां लक्षणम् वि. ८-५४ | वातकासे चित्रकादिलेहः |
| वरकस्य गुणाः सू. २७-१४ | वाक्पदप्रशंसाया लक्षणम् वि. ८-५५ | चि. १८-५३-५६ |
| वराहमांसस्य गुणाः ,, २७-७८ | वाजीकरणः विण्मरसः चि. २-३८-४१ | वातकासे त्र्युपगार्थं घृतम् |
| वर्णाणां संक्षेपेण निर्देशः ,, २७-६, ७ | वाजीकरणघृतम् चि. २-३३-३८ | चि. १८-३९-४२ |
| वर्णेषूक्तानां हेयोपादेयतानिर्देशः | वाजीकरणशब्दनिष्कृतिः | वातकासे दुरालमादिलेहः |
| सू. २७-२०९-३११ | चि. २-४ ५१ | चि. १८-५०, ५१ |
| वर्ज्यानि वस्तिनेत्राणि तेषां दोषाश्च | वाजीकरणस्य लक्षणं गुणाश्च | वातकासे द्विसारादिचूर्णम् |
| चि. ५-३-७ | चि. १-९-१२ | चि. १८-४८, ४९ |
| वर्ज्यानि वस्तिषु सि. १२-२३ | वाजीकरणस्यावश्यकर्तव्यता | वातकासे धूमपानम् |
| वर्ज्या वस्तयस्तेषां दोषाश्च ,, ५-६, ७ | चि. २-३, ४ | चि. १८-६५-६८ |
| वर्णविकृतयोरिष्टरूपाः इ. १-१३ | वाजीकरणेषु प्रियाः श्रेष्ठत्वं तत्र हेतुश्च | वातकासेऽन्नपानम् चि. १८-७६-८२ |
| वर्णाः शरीरस्य प्राकृता वैकृताश्च | चि. २-४-७ | वातकासे पिप्पल्यायं घृतम् |
| इ. १-९-१३ | वाजीकराः केचन भावाः | चि. १८-३६-३८ |
| वर्णाधिकारः इ. १-८ | चि. २-३ २०-३ ३० | वातकासे प्रपौण्डरीकादिधूमवर्तिः |
| वर्णौ दशको महाकषायः सू. ४-१० | वाटपगुणाः सू. २७-२६५ | चि. १८-७१, ७२ |
| वर्तकादिविकृताणां साधारणगुणाः | वातकाफाधिकवातरक्तचिकित्सा | वातकासे मनःशिलादिधूमः |
| सू. २७-६० | चि. २९-१४९-१५६ | चि. १८-६९, ७० |
| वर्षाचर्या सू. ६-३३-४० | वातकासे इन्द्रदीत्वगादिधूमः | वातकासे रास्नाघृतम् |
| वर्षासु विषस्य तीक्ष्णत्वं शरदि विषस्य | चि. १८-७५ | चि. १८-४३-४६ |
| मन्दवीर्यत्वं च चि. २३-७, ८ | वातकासे कण्टकारीघृतम् चि. १८-३५ | वातकासे विडङ्गादिचूर्णम् |
| | | चि. १८-४७ |

| | | |
|---|--|--|
| वातकासे विच्छादिलेहः चि. १८-५२ | वातगुल्मे लशुनक्षीरम् चि. ५-९४, ९५ | वातप्रहण्यां दशमूलायं घृतम् चि. १५-८२-८६ |
| वातकुण्डलिकाया निदानलक्षणे सि. ९-३९, ४० | वातगुल्मे वाटवयोगः चि. ५-९८ | वातप्रहण्यां पथमूलायं घृतम् चि. १५-८८-९३ |
| वातगुल्मस्य निदानं लक्षणं च चि. ५-९-११ | वातगुल्मे शटपादिवूर्णम् चि. ५-८५-९० | वातप्रहण्यां पथ्यादिवूर्णम् चि. १५-१०२ |
| वातगुल्मस्य निदानसंप्राप्तिलक्षणानि नि. ३-६, ७ | वातगुल्मे शिलाजतुप्रयोगः चि. ५-९७ | वातप्रहण्यां त्रिप्लवायं चूर्णम् चि. १५-१०५-१०७ |
| वातगुल्मे एण्डैलैप्रयोगः चि. ५-९२, ९३ | वातगुल्मे सौवर्चलायं घृतम् ५-६९, ७० | वातप्रहण्यां मरिचायं चूर्णम् चि. १५-१०८-११० |
| वातगुल्मे चिकित्साक्रमः चि. ५-२४-३१ | वातगुल्मे रनेहृत्वेदविधानम् चि. ५-२०-२२ | वातप्रहण्यां मांसरसः चि. १५-११५, ११६ |
| वातगुल्मे तैलपथकम् चि. ५-९६ | वातगुल्मे रवेदनम् सू. ५-९९ | वातप्रहण्यां यवागूः, १५-११२-११४ |
| वातगुल्मे ऋष्यपणादिघृतम् चि. ५-६५३ | वातगुल्मे हृष्यपथं घृतम् चि. ५-७१-७३ | वातप्रहण्यां पाथवः, १५-१११, ११२ |
| वातगुल्मे ऋष्यपणादिघृतमपरम् चि. ५-६६३ | वातगुल्मे हिङ्गवादिचूर्णम् चि. ५-७९-८४ | वातप्रहण्यामभयादिकायक्षूर्णं च चि. १५-१०३, १०४ |
| वातगुल्मे नागरादियोगः चि. ५-९१ | वातप्रहण्यागदस्य निदानलक्षणे चि. १५-५९-६४ | वातप्रहण्याधिकित्सा चि. १५-७७-८१ |
| वातगुल्मे नीलिन्यायं घृतम् चि. ५-१०५-१०९ | वातप्रहण्यां कतिपययोगाः सू. १५-९८-१०० | वातप्रहण्याधिकित्सा चि. २०-७-९ |
| वातगुल्मेऽन्ये घृतयोगाः चि. ५-६७, ६८ | वातप्रहण्यां कलिज्वादिचूर्णम् चि. १५-१०१, १०२ | वातप्रहण्याधिकित्सा, २०-२०-२५ |
| वातगुल्मे यस्तिष्ठम् चि. ५-१००-१०४ | वातप्रहण्यां चित्रकादिगुटिका चि. १५-९५-९७ | वातजपीनसचिकित्सा, २६-१३४, १३५ |
| वातगुल्मे मोजनम् चि. ५-११०-११३ | वातप्रहण्यां तक्रविधानम् चि. १५-११७-१२१ | वातजपीनसे भावस्थिनी चिकित्सा चि. २६-१३७-१४२ |
| वातगुल्मे रक्तावसेसनम् चि. ५-३२ | वातप्रहण्यां ऋष्यपणायं घृतम् चि. १५-८७ | वातजपीनसे सकतुधूमः चि. २६-१३६ |
| | | वातजमूत्रकृच्छस्य चिकित्सा, २६-४५ |
| | | वातजयोन्यपत्तेर्निदानं लक्षणं च चि. ३०-९-११ |

| | | |
|---|--|---|
| वातजादिभेदेन क्षीरदोषस्य लिङ्गानि चि. ३०-२३७, २३८ | वातरक्तस्य पूर्वलक्षणम् चि. २९-१६-१८ | वातरक्ते वस्तिः चि. २९-८८, ८९ |
| वातजे ज्वरे वादावप्यभ्यादयः कार्याः चि. ३-२७९, २८० | वातरक्तस्य भेदास्तेषां लक्षणानि च चि. २९-१९-२३ | वातरक्ते मधुकर्तैलम् चि. २९-११५-११८ |
| वातज्वरस्य लक्षणानि नि. १-१८-२१ | वातरक्तस्य साध्यासाध्यलक्षणम् सू. २९-३०-३४ | वातरक्ते मधुयष्ट्यादितैलम् चि. २९-९०-९५ |
| वातज्वरस्य संप्राप्तिः नि. १-१८-२१ | वातरक्तस्य स्थानम् चि. २९-१२-१५ | वातरक्ते महापद्मकं तैलम् चि. २९-११०-११३ |
| वातदूषितशुक्रस्य लक्षणम् नि. ३०-१४० | वातरक्तहरास्त्रयः प्रवेहाः सू. ३-२१, २२ | वातरक्तेऽमृताश्च तैलम् चि. २९-१०३-१०९ |
| वातनुगिरुहः सि. ८-५ | वातरक्तं आवस्थिकी चिकित्सा सू. २९-१५६-१६२ | वातरक्ते रक्तमोक्षणविधिः चि. २९-३५-४० |
| वातपित्तकफा एव सर्वधातुदूषकाः शा. ६-१८ | वातरक्ते कतिपययोगाः चि. २९-७९-८१ | वातरक्ते विशेषचिकित्सा चि. २९-४२-४८ |
| वातप्रदरस्य निदानलक्षणे चि. ३०-२१०-२१३ | वातरक्ते खुहाकपद्मकं तैलम् चि. २९-११४-११५ | वातरक्ते शूलादिचिकित्सा चि. २९-१२४-१२७ |
| वातप्रमेहचिकित्सा चि. ६-३४ | वातरक्ते घृतयोगः क्षीरयोगश्च चि. २९-७१ | वातरक्ते संशोधनम् चि. २९-८२-८७ |
| वातप्रमेहानां लक्षणानि चि. ६-११ | वातरक्ते घृतयोगाः चि. २९-५५-५७ | वातरक्ते सामान्यचिकित्सा चि. २९-४१, ४२ |
| वातवस्तेर्निदानलक्षणे सि. ९-३७ | वातरक्ते चतुर्गन्धैः चि. २९-७२-७५ | वातरक्ते सुकुमारकं तैलम् चि. २९-९६-१०२ |
| वातमेहनानामानि नि. ४-३९ | वातरक्ते जीवनीयघृतम् चि. २९-६१-७० | वातरक्ते रिशरायं घृतं तैलं वा चि. २९-७६-७८ |
| वातमेहलक्षणानि नि. ४-४०-४६ | वातरक्ते दाहचिकित्सा चि. २९-१२८-१३४ | वातरक्ते हितमन्नपानम् चि. २९-५०-५४ |
| वातमेहानां निदानं संप्राप्तिश्च नि. ४-३६, ३७ | वातरक्ते पारुषकघृतम् चि. २९-५८-६० वातरक्ते पिण्डतैलम् | वातरक्ते हितमन्नपानम् चि. २९-५०-५४ |
| वातमेहानामसाध्यत्वे हेतुः नि. ४-३८ | वातरक्ते पारुषकघृतम् चि. २९-५८-६० वातरक्ते पिण्डतैलम् | वातरक्ते हितमन्नपानम् चि. २९-५०-५४ |
| वातरक्तं द्विविधम् सू. १९-४ ७ | वातरक्ते पारुषकघृतम् चि. २९-५८-६० वातरक्ते पिण्डतैलम् | वातरक्ते हितमन्नपानम् चि. २९-५०-५४ |
| वातरक्तचिकित्सितोपक्रमः चि. २९-१, २ | वातरक्ते वलातैलम् चि. २९-११९, १२० | वातरक्तेऽहितानि चि. २९-४९ |
| वातरक्तस्य निदानं संप्राप्तिश्च चि. २९-३-११ | | |

| | | |
|--|---|--|
| वातरोगहराः स्नेहयोगाः चि. २८-११८-१४१ | वातरोगेषु सामान्यचिकित्सा चि. २८-८६-८८ | वातादयः प्रकृतिभूता आरोभ्यकराः शा. ६-१८ |
| वातरोगाणां पुरुरूपम् चि. २८-१९ | वातरोगेषु स्नेहविधिः चि. २८-७५-७७ | वातादिदुष्टे क्षीरे पितृतो वातस्य यानि लिङ्गानि भवन्ति चि. ३०-२३९-२५१ |
| वातरोगाणां साध्याष्टाध्यविचारः चि. ३८-७२-७४ | वातरोगेषु स्वेदविधिः चि. २८-७८-८२ | वातादिप्रकृतिसंज्ञाविचारः चि. ६-१३ |
| वातरोगाणां सामान्यनिदानं संप्राप्त्य चि. २८-१५-१८ | वातरोगे स्वेदाः ,, २८-१०९-११७ | वातादिप्रकृतीनां चरमार्थमु(न्)प्रणिष्ठाः चि. ६-१४ |
| वातरोगिणां यत्प्रशस्तम् चि. २८-१०४-१०६ | वातलस्य लक्षणम् चि. ८-९८ | वातादिप्रकृतेषु युक्तमनुपानम् सू. २७-३२१ |
| वातरोगे तैलप्रशंसा चि. २८-१८१-१८३ | वातलस्य वातप्रकोपे कारणं तस्यावजयनं च चि. ६-१६ | वातादिभ्यो गुणतो विपरीतं ताडयति चि. १-१४ |
| वातरोगेऽन्ये तैलयोगाः चि. २८-१७७-१८१ | वातलक्षणाणां गणना सू. २०-११ | वातादीनां क्षयलक्षणम् सू. १८-१२ |
| वातरोगे वलतैलम् चि. २८-१४२-१५६ | वातविषये मरीचिकता विप्रतिपत्तिः सू. १२-९ | वातादीनां प्रकृतिस्थानां कर्म सू. १८-४९-५१ |
| वातरोगे मांसरसाः चि. २८-१०६-१०८ | वातविषये वागीविदकृतं तस्माधानम् सू. १२-१० | वातादीनां गृहिलक्षणम् सू. १८-१३ |
| वातरोगे मूलकतैलम् चि. २८-१७७-१७६ | वातव्याधिरिक्तित्वतोपक्रमः चि. २८-१,२ | वाताधिकवातरक्तचिकित्सा चि. २९-१३५-१४४ |
| वातरोगे मूलकायं तैलम् चि. २८-१६७-१६९ | वातहराः प्रदेहाः सू. ३-१८-२० | वाताधिकस्य वातरक्तस्य लिङ्गानि चि. २९-२४-२६ |
| वातरोगे रास्नातैलम् चि. २८-१६५, १६६ | वातहृद्रोगे चिकित्सा चि. २६-८१ | वातापस्मारस्य लक्षणम् चि. ८-८ १ |
| वातरोगे श्वपूलादितैलम् चि. २८-१७०, १७१ | वातहृद्रोगे द्रव्यपूणां तैलम् चि. २६-८७-८९ | वाताश्रुतस्नेहस्य निमित्ता सि. ४-२९, ३० |
| वातरोगे शस्तान्नयो वस्तयः सि. १०-१८-२० | वातहृद्रोगे पुनर्निवायं तैलम् चि. २६-८२ | वाताश्रुतस्नेहस्य लक्षणम् सि. ४-२८ |
| वातरोगेषु संशोधनम् चि. २८-८३-८५ | वातहृद्रोगे पुष्करमूलादिकलकः चि. २६-८४ | वातिकयोनिरोगाणां चिकित्सा चि. ३०-४७, ४८ |
| | वातहृद्रोगे हरीतक्यादिघृतम् चि. २६-८३ | वातिकविषलक्षणम् चि. २३-१६७ |
| | वातातिसारे आवरिषकी चिकित्सा चि. १९-४७-४९ | वातिकशिरोरोगचिकित्सा चि. २६-१५८, १५९ |

| | | |
|--|---|---|
| वातिकशिरोरोगे रासनादिस्तलम् चि. २६-१६०-१६२ | वापीजलस्य गुणदोषाः सू. २७-२१४ | वाय्वादीनां वैगुण्योत्पत्तौ हेतुः वि. ३-१९, २० |
| वातिकदीनां पानविधिः चि. २४-२१-२५ | वानिन्या योन्या लक्षणम् चि. ३०-३३ | वारिचराणां साधारणगुणाः सू. २७-५६, ५७ |
| वातिके योनिरोगे कतिपययोगाः चि. ३०-६१, ६२ | वायुं प्रकोपयन्ति प्रशमयन्ति च कथं प्रको- पणप्रशमनानि सू. १२-७ | वारिचराणां निर्देशः सू. २७-४१-४४ |
| वातिके योनिरोगे कारमर्यादिष्टम् चि. ३०-४२-५३ | वायुना गात्रे वेष्टयमाने चिक्षिप्सा चि. २८-९७ | वारिजानां साधारणगुणाः सू. २७-५६, ५७ |
| वातिके योनिरोगे पिपल्यादिप्रयोगः चि. ३०-५४-५६ | वायुना गात्रे सङ्कुचिते चिक्षिप्सा चि. २८-९८ | वारिजानां निर्देशः ,, २७-४० |
| वातिके योनिरोगे प्रयोगाः चि. ३०-५६-६० | वायोः कुपितस्योपक्रमः सू. २०-१३ | वारिजानां साधारणगुणाः सू. २७-५६, ५७ |
| वातिके योनिरोगे वलाघृतम् चि. ३०-४९-६७ | वायोः पञ्च भेदास्तेषां स्थानानि कर्म च चि. २८-५१-११ | वार्ताकफलस्य गुणाः सू. २७-१६२ |
| वातोदरे चिक्षिप्साविधिः चि. १३-५९-६७ | वायोः प्रकोपणानि सू. १२-५ | वार्ताकस्य गुणाः ,, २७-९५-९७ |
| वातोदरे तैलानि चि. १३-१५४-१५६ | वायोः प्रभावः ,, १२-८ | वासाघृतम् चि. ४-८८ |
| वातोन्मादस्य निदानलक्षणे चि. ९-९, १० | वायोः प्रशमनानि ,, १२-६ | वास्तुकस्य गुणाः सू. २७-८८ |
| वातोन्मादस्य लक्षणम् नि. ७-७ १ | वायोः शरीरचरस्य कुपितस्य कर्माणि सू. १२-८ | विकृष्टस्य गुणाः सू. २७-१४५ |
| वातोपद्वेषे मर्मसु चिक्षिप्सा चि. ९-८ | वायोः शरीरचरस्याकुपितस्य कर्माणि चि. १२-८ | विकारप्रकृत्योः स्वहेतुवशावरम् नि. ८-४१ |
| वातोत्पन्नमेदचिक्षिप्सा चि. ६-५२ | वायोः स्वभावः चि. २८-३, ४ | विकारविनिवर्तनोपायाः सू. १-६२, ६३ |
| वादमर्यादालक्षणम् वि. ८-२६ | वायोरात्मरूपस्वलक्षणकर्माणि सू. २०-१२ | विकाराणां प्रेरणम् ,, २०-५' |
| वादमार्गज्ञानार्थमधिगम्यानि पदानि चि. ८-२७ | वायोर्गुणाः सू. १२-४ | विकृतितो देहपरीक्षा वि. ८-१०१ |
| वादस्य लक्षणम् चि. ८-२८ | वायोर्गुणाः प्रशमने सूत्रं च सू. १-५९ | विकृतिमापन्नानां दोषाणां शरीरोपघा- तकत्वम् वि. १-५ |
| वानस्पत्यस्य लक्षणम् शा. ४-३९ ३ | वायोर्लोकेषु चरतः कुपितस्य कर्माणि सू. १२-८ | विकृतिनिमित्तावस्था इ. १-७ |
| | वायोर्लोकेषु चरतः प्रकृतिभूतस्य कर्माणि १२-८ | विकृतिर्लक्षणनिमित्ता इ. १-७ १ |
| | | विकृतिर्लक्षणनिमित्ता ,, १-७ २ |
| | | विकृतेर्भेदाः इ. १-६ |
| | | विक्षयकचिक्षिप्सा चि. २४-२०४, २०५ |

| | | |
|--|--|---|
| विशयकलक्षणम् चि. २४-१९९-२०३ | विनताया लक्षणम् सू. १७-८४ | विरचनद्रव्याणां कल्पसंग्रहः वि. ८-१३६ |
| विगुणवातानां कार्यम् ,, २८-१२-१४ | विपाकस्याल्पमध्यभूयस्त्वप्रदर्शनं द्रव्यगुण- वैशिष्ट्यात् सू. २६-६३ | विरचनयोगानां वाग्नितनिरासार्थमुपायाः क. ७-७५, ७६ |
| विगुणसंभावाविधिः वि. ८-१८-२५ | विपाकानां कार्यम् ,, २६-५९-६२ | विरचनविधिः सू. १५-१७, १८ |
| विचर्चिषाया लक्षणम् चि. ७-२६ | विपादिकाया लक्षणम् चि. ७-२३ | विरचनस्य दश व्यापदः सि. ६-२९, ३० |
| विट्पथप्रवृत्तस्य रक्तपित्तस्य चिकित्सा चि. ४-८६, ८७ | विभोरप्यात्मनः शैलादितिरस्कृतस्याज्ञाने हेतुः शा. १-८०, ८१ | विरचनस्य योगातिशयोक्त्यानां लक्षणम् सि. ६-३१-३४ |
| विट्प्रावलेहः चि. २-९ | विभ्रंशव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च सि. ६-८५-८७ | विरचनस्य सम्यग्योगलक्षणम् सू. १६-५, ६ |
| विट्पथ गुणाः सू. २७-३०२ | विमर्दकस्य गुणाः सू. २७-२७७ | विरचनस्यातियोगलक्षणानि सू. १६-९, १० |
| विट्प्रावलेहस्य चिकित्सा सि. ४-३६, ३७ | विरुद्धगुणा अपि दोषाः परस्परं नोपपन्नं चि. २६-२९२, २९३ | विरचनस्यायोगलक्षणम् ,, १६-७, ८ |
| विट्प्रावलेहस्य लक्षणम् ,, ४-३६ | विरुद्धवीर्यत्वेऽप्यबाधकत्वम् क. १२-४५ | विरचनस्याधिकमत्वे हेतुः तच्चिकित्सा च क. १२-७४, ७५ |
| विट्प्रावलेहस्य निदानलक्षणे ,, ९-४२, ४३ | विरुद्धवीर्याणां प्रयोगे हेतुः क. १२-४६ | विरचनार्थपेक्षया यस्तोः श्रेष्ठत्वप्रतिपाद- नम् सि. १०-६-८ |
| विट्प्रावलेहस्य संप्रकृत्य च शोधस्य लक्षणम् चि. २५-५२ | विरुद्धस्य कदाचित् वितथावे कारणम् सू. २६-१०६ | विरचनात् या व्यापदो भवन्ति सि. २-१२ |
| विट्प्रावलेहस्य लक्षणम् चि. १२-८९, ९० | विरुद्धाशनजानां व्याधीनां प्रतीकारः सू. २६-१०४, १०५ | विरचनासंयोगाः चि. ३०-२५४-२५६ |
| विट्प्रावलेहस्य लक्षणम् सू. २७-१२० | विरुद्धाहारनिमित्तानां व्याधीनां निर्देशः सू. २६-१०२, १०३ | विरचनाहार्ताः सि. १-१३ |
| विट्प्रावलेहस्य विधौ ,, १७-९०-९२ | विरुद्धधानानां गुणाः सू. २७-२६७ | विरचनेऽज्ञप्रयुक्ते दोषाः सू. १६-४ |
| विट्प्रावलेहस्य संप्राप्तिः ,, १७-९३ | विरचनं नश्यं कैर्द्रव्यैः कल्पनीयम् सि. ९-९६ | विरचने विगुणमूलस्य श्रेष्ठत्वम् क. ७-३ |
| विट्प्रावलेहस्य स्थानानि ,, १७-९४ | विरचनद्रव्याणि सू. २-९, १० | विरचने विशिष्टप्रयुक्ते गुणाः सू. १६-३ |
| विट्प्रावलेहस्य निदानम् ,, १७-९१, ९२ | विरचनद्रव्याणि कथं क्रियासमर्थतमानि भवन्ति क. १-७ | विरचनोपगो दशको महाकषायः ,, ४-१३ |
| विट्प्रावलेहस्य निरुक्तिः ,, १७-९५ | | विरचनस्य गुणाः सू. २७-२५१ |
| विट्प्रावलेहस्य निदानं प्राप्ताया लक्षणम् सू. १७, १८ | | विरचनोपगो निरोधनां चिकित्सा चि. ३०-१००-११४ |

| | | |
|--|---|---|
| विशुद्धरक्तस्य पुरुषस्य लक्षणम् सू. २४-२४ | विषसंक्रमणार्थमुपधानम् चि. २३-६५-६७ | विषे गृहधूमादियोगः चि. २३-१९८ |
| विशुद्धशुक्लक्षणम् चि. १-४ ५० | विषस्य चतुर्विंशत्युपक्रमाः चि. २३-३५-३७ | विषे चन्दनादियोगः ,, २३-१९१, १९२ |
| विशेषलक्षणातिदेशः वि. ८-२९ | विषस्य दश गुणाः वि.-२३-२४-२७ | विषे चूपणम् चि. २३-३९ |
| विषमरारिद्विगदः चि. २३-२१२-२१४ | विषस्य पशुपक्षिशरीरे लक्षणानि चि. २३-२२, २३ | विषेऽञ्जनम् ,, २३-६९ |
| विषमेघजनस्य गुणाः सू. २७-२९६ | विषस्य प्रागुत्पत्तिर्निरुक्तिश्च चि. २३-४, ५ | विषे दंशच्छेदाचूपणारिष्टा-दाह-विस्त्रावण- वमन-विरेकाः चि. २३-४२-४५ |
| विषं यथा मारयति चि. २३-३२ | विषस्य मनुष्यशरीरे सप्त वेगानां पृथग्लक्षणानि चि. २३-१८-२१ | विषे धूमागदाः ,, २३-९७-१०० |
| विषघ्नो दशको महाकषायः सू. ४-११ | विषस्य योनिप्रभवानि ,, २३-६, ७ | विषे नस्यम् ,, २३-६८ |
| विषचिकित्सा दोषस्थानभेदेन चि. २३-६२-६४ | विषहरः प्रदेहः सू. ३-२८ | विषे पक्षिशरीरोऽगदः चि. २३-२१७, २१८ |
| विषप्रदातुर्लक्षणानि चि. २३-१०५-१०७ | विषहरा अणदयोगाः चि. २३-५१-५३ | विषे मांसादियोगः ,, २३-१९६ |
| विषमज्वरनाशना योगाः ,, ३-२९६-३०९ | विषातानां हितान्यन्नपानानि चि. २३-२४-२२७ | विषे मन्त्रयोगः ,, २३-६१ |
| विषमज्वराणां सन्निपातजत्वम् चि. ३-७४ | विषातानामहितान्यन्नपानानि चि. २३-२२८ | विषे महागन्धहस्तिनामागदः चि. २३-७७-९४ |
| विषमज्वरे चिकित्साक्रमः चि. ३-२९३-२९५ | विषे आमशयगते चिकित्सा चि. २३-१८५ | विषे मांसादियोगाः चि. २३-१९०, १९१ |
| विषमतीक्ष्णग्न्योः कर्म चि. १५-५० | विषे कण्ठगते चिकित्सा चि. २३-१८४ | विषे रक्तवर्णं प्रदेहसंज्ञाय चि. २३-४०, ४१ |
| विषमाग्न्याशीनां ग्रहणीरोगेऽन्तर्भावः चि. १५-७१ | विषे कतिपयसिद्धयोगाः ,, २३-१८९ | विषे रघगते चिकित्सा ,, २३-१८६ |
| विषमाशनाद्यथा शोषः संभवति तद्वर्णनम् नि. ६-१०, ११ | विषे क्षारागदः ,, २३-१०१-१०४ | विषे वेणिकावन्ध-निष्पीडनोत्कर्तनानि चि. २३-३८ |
| विषमाहिताशनजा व्यापदः सि. १२-१४ ६ | विषेऽक्षिगते चिकित्सा ,, २३-१८३ | विषे व्योपादियोगः चि. २३-१९७ |
| विषमृतस्य लिङ्गानि चि. २३-३३, ३४ | विषेऽगदाः चि. २३-९५-९७ | विषे शिरोगते चिकित्सा चि. २३-१८१, १८२ |
| विषवेगानां चिकित्सा चि. २३-४६-५० | विषे गन्धहस्तिनामागदः चि. २३-७०-७६ | विषे सिन्धुवारादियोगः चि. २३-१९३-१९५ |
| | | विषे हृदिदाहप्रसेकयोश्चिकित्सा चि. २३-१७९, १८० |
| | | चिकित्साणां निर्देशः सू. २७-४७-४९ |

| | | |
|---|--|---|
| चिकित्सादिषु पूर्वोक्तकल्पातिदेशः चि. १२-१८ ४ | विसर्पे उदुम्बरादिप्रदेहः चि. २१-७२ | विसर्पेषु चिकित्सासूत्रम् चि. २१-४३-५० |
| विसर्पस्य कषाययोगाः चि. २१-५४ | विसर्पे कालीयादिप्रलेपः ,, २१-७४ | विसृचिकाया लक्षणम् चि. २-११ |
| विसर्पस्य कफजस्य निदानलक्षणे चि. २१-३३, ३४ | विसर्पे किराततिष्ठादिकषायः चि. २१-५५, ५६ | विस्तरतः प्रकृतिमप्राप्तस्य नज्यानां व्याख्यानप्रतिज्ञा चि. १२, १३ |
| विसर्पस्य दोषसंज्ञाः चि. २१-१५ | विसर्पे दोषभेदेन चिकित्सा चि. २१-११६, ११७ | विस्फोटकानां लक्षणम् चि. ७-२५ |
| विसर्पस्य निरुक्तिः ,, २१-११ | विसर्पे द्राक्षादिशीतकषायः चि. २१-५८ | विस्फोटकानां लक्षणम् चि. १२-१० |
| विसर्पस्य पित्तजस्य निदानलक्षणे चि. २१-३१, ३२ | विसर्पे नलदादिप्रलेपः ,, २१-७७ | वीर्यस्य भेदा लक्षणं च सू. २६-६४, ६५ |
| विसर्पस्य वाय्वाभ्यन्तराश्रयभेदेन द्वैविध्यम् चि. २१-२५-२७ | विसर्पेऽन्नपानम् ,, २१-१०८-११४ | वीर्याविद्वद् भुक्त्वतो भोजनस्य गुणाः चि. १-२५ ५ |
| विसर्पस्य भेदाः ,, २१-१२-१४ | विसर्पे न्यग्रोधपादपादिलेपः चि. २१-७३ | वृक्षधूसकस्य गुणाः सू. २७-९८, १०३ |
| विसर्पस्य वातजस्य निदानलक्षणे चि. २१-२९, ३० | विसर्पे पटोलादिकषायः चि. २१-५९-६१ | वृक्षाम्लस्य गुणाः सू. २७-१५१ |
| विसर्पस्य संप्राप्तिः लक्षणं च चि. २१-२९, ३० | विसर्पे प्रदेहयोगाः चि. २१-७१ | वृद्धेः संप्राप्तिलक्षणं च सू. १८-३० |
| विसर्पस्य संप्राप्तिः लक्षणं च सू. १८-२३ | विसर्पे प्रवेहयोगाः ,, २१-७८-९७ | वृश्चिकदण्डलक्षणम् चि. २३-१५०, १५१ |
| विसर्पस्य साध्यासाध्यलक्षणम् चि. २१-२३, २४ | विसर्पे प्रपौण्डरीकादिकषायः चि. २१-५७ | वृश्चिकादिविषेऽगदः चि. २३-२०६, २०७ |
| विसर्पस्य सामान्यनिदानम् चि. २१-१६-२२ | विसर्पे रक्तमोक्षणप्रशंसा चि. २१-१४१-१४३ | वृषस्वकृजिरुहः चि. ८-११ |
| विसर्पस्य सामान्यनिदानम् चि. २१-१६-२२ | विसर्पे रक्तसायः चि. २१-६८-७० | वृषपुष्पस्य गुणाः सू. २७-९६, ९७ |
| विसर्पाः सप्त सू. १९-४ २ | विसर्पे वमनम् ,, २१-५१-५३ | वृष्यं क्षीरम् चि. २-२ १८-२ २० |
| विसर्पाणां साध्यासाध्यविचारः चि. २१-४२ | विसर्पे वज्यानि ,, २१-११५ | वृष्यं शतावरीवृतम् चि. २-३ १८ |
| विसर्पमिषात विस्फोटकज्वराणां चिकित्सा चि. ३-२९० | विसर्पे विरेचनम् ,, २१-६२-६७ | वृष्याः कुण्डमांसप्रयोगः चि. २-१ ४८ |
| | विसर्पे शाहलादिप्रदेहः चि. २१-७५ | वृष्यः पायसयोगः चि. २-३ १४ |
| | विसर्पे सारिवादिप्रलेपः चि. २१-७६ | |

| | | |
|---|--|--|
| वृष्यः विपपलीयोगः चि. २-३ १२,३ १३ | वृष्यो मांसरसः चि. २-४६ | वैगुण्यमापन्नानां देशादीनामुत्तरोत्तरं गरीयस्त्वम् वि. ३-९-११ |
| वृष्यः पट्टिकौदनयोगः चि. २-२ २७ | वृष्यो मापयोगः ,, २-४७ | वैद्यः स्वसुतानिवातुरान् चिकित्सेय चि. १-४ ५६ |
| वृष्यगुटिका चि. २-४ ३०-४ ३२ | वृष्यो माहिषरसः चि. २-४ १५,४. १६ | वैद्यस्य कर्तव्यम् सू. ९-२४, २५ |
| वृष्यघृतम् चि. २-२ २१-२ २३ | वृष्यो माहिषरसः चि. २-४२, ४३ | वैद्यस्य गुणाः ,, ९-६ |
| वृष्यतमाः स्नेहवस्त्रयः सि. १२-१९ | वृष्यो योगः चि. २-४ २५-४ २७ | वैद्येनातुरस्य मरणं जानताऽपि कुत्र न वक्तव्यम् इ. १२-६२-६६ |
| वृष्यरसाः चि. २-१ ४४,१ ४५ | वृष्यो रोहितमत्स्ययोगः चि. २-४ १४ | व्यक्तस्य निर्देशः शा. १-६०-६२ |
| वृष्या मण्डरसाः चि. २-१ ४९ | वृष्यो विहारः चि. २-२ ३१ | व्यपेताख्यहिकाया लक्षणम् चि. १७-३१-३३ |
| वृष्यादीनामायुष्यलोपकत्वम् चि. १५-२०, २१ | वृष्यौ वृष्यलिकायोगौ. चि. २-४ ११-४ २२ | व्यवसायस्य लक्षणम् सि. ८-४७ |
| वृष्याः वृष्यलिकाः चि. २-२/२८-२/२९ | वैष्णवस्य गुणाः सू. २७-२० | व्यवायवा व्यापदः सि. १२-१४ ८ |
| वृष्याः वृष्यलिकाः चि. २-३ १५-३ १७ | वेगसंघारणाद्यथा शोषः संभवति तद्वर्णनम् वि. ६-६, ७ | व्याधितरूपौ द्वौ वि. ७-३ |
| वृष्या वस्त्रयः चि. २-४ १० | वेगा धारणीयाः सू. ७-२६-२९ | व्याधिसहशरीरस्य लक्षणम् सू. २८-७ |
| वृष्या मक्ष्ययोगः चि. २-२ १०-२ १३ | वेगा न धारणीयाः सू. ७-३, ४ | व्याधिहेतोः कर्मणो वर्णनम् शा. १-११७ |
| वृष्या माप दिवृष्यलिकाः चि. २-४ २३, ४ २४ | वेतसशाकस्य गुणाः सू. २७-१०९ | व्याधिहेतोः कालस्य वर्णनम् शा. १-११०-११६ |
| वृष्या मांसगुटिकाः चि. २-४ ११-४ १४ | वेत्राप्रस्य गुणाः सू. २७-९५-९७ | व्याधीनां चिकित्सासम्बन्धनिर्देशः चि. ८-३०-३२ |
| वृष्योत्कारिका चि. २-४ ३३-४ ३५ | वेदनानामधिष्ठानम् शा. १-१३६ | व्याधीनां निदानविपरीतमौषधं कार्यम् वि. ३-४१, ४२ |
| वृष्यो दक्षिणयोगः चि. २-२ २४-२ २६ | वेदनास्थापनो दशको महाकषायः सू. ४-१८ | व्याधीनां सुदुदाहृतत्वादौ हेतुः सू. २८-७ |
| वृष्यो मत्स्ययोगः चि. २-४ १७ | वेदनानां सर्वथा निवृत्तेरुपायः शा. १-१३७ | |
| वृष्यो मधुकयोगः ,, २-२ १९ | वेतवारगुणाः सू. २७-२६९ | |

| | | |
|--|--|---|
| व्याधीनां मृदुदारुणत्वादौ हेतुः सू. २८-७ | मृणशोधपाचना उपनादाः ,, २५-४९-५१ | मृणे पत्रदानम् चि. २५-९५ |
| व्याधीनां लिङ्गसंकेतम् नि. ८-२७-२९ | मृणशोधप्रशमनी विकिरसा ,, २५-४४-४८ | मृणे पीडनविधिः ,, २५-६१, ६२ |
| व्याधीनां सुखसाध्यत्वादिविवरणम् नि. ८-३३-३५ | मृणस्य पैतिकस्य लक्षणं विकिरसा च चि. २५-१३, १४ | मृणे प्रपौण्डरीकाद्यं तैलम् चि. २५-८९ |
| व्याधीनां हेतुसंमहः नि. १-५४ | मृणस्य वातिकस्य लक्षणं विकिरसा च चि. २५-११, १२ | मृणे प्रपौण्डरीकाद्यं तैलमपरम् ,, २५-९२ |
| व्याधीनां हेतुसंकेतनिर्देशः नि. ८-२४-२६ | मृणस्य कैष्मिकस्य लक्षणं विकिरसा च चि. २५-१५-१६ | मृणे प्रलेपनविधिः चि. १५-११०-११२ |
| व्याधीनामपरिसंख्येयत्वम् वि. ६-५ | मृणस्यानानि चि. २५-२६ | मृणे रोपणविधिः ,, २५-८७ |
| व्याधीनामाश्रयः सू. १-५५ | मृणस्त्रावाः ,, २५-२८ | मृणे लोमसंजननम् ,, २५-११८ |
| व्याधेर्युक्ताववशाने विप्रतिपत्ताविकिरसा- यामपि विप्रतिपद्यन्ते वि. ७-४-७ | मृणानां त्रिविधा परीक्षा चि. २५-२२, २३ | मृणे ऽवसृज्यजननम् ,, २५-११३ |
| व्याधेः पर्यायाः नि. १-५ | मृणानां विशतिर्भेदाः ,, २५-२०, २१ | मृणे ऽवसादनविधिः ,, २५-१०० |
| व्याधेर्भेदाः ,, १-४ | मृणानां षट्त्रिंशदुपक्रमाः ,, २५-३८-४३ | मृणे ऽवसादनविधिः ,, २५-१०० |
| व्याध्यवस्थानविशेषज्ञानफलम् नि. ८-३६, ३७ | मृणानां साध्यासाध्यलक्षणानि नि. २५-३६, ३७ | मृणे ऽवसादनविधिः ,, २५-१०० |
| व्यापदां चिकित्सा सि. १२-१५ | मृणे उत्सादनविधिः चि. २५-९९ | मृणे ऽवसादनविधिः ,, २५-१०० |
| व्यापन्नयोनिरुपदवाः चि. ३०-३७, ३८ | मृणे एषणविधिः ,, २५-८०-८२ | मृणे ऽवसादनविधिः ,, २५-१०० |
| व्यायामस्य लक्षणं गुणाश्च सू. ७-३१, ३२ | मृणे कम्पिलाद्यं तैलम् ,, २५-९०, ९१ | मृणे ऽवसादनविधिः ,, २५-१०० |
| व्यायामशक्तितो देहपरीक्षा चि. ८-१२१ | मृणे क्षारकर्मविधिः ,, २५-१०७ | मृणे ऽवसादनविधिः ,, २५-१०० |
| व्यायामानर्हाः सू. ७-३५ (१, २) | मृणे अग्निनिकर्मविधिः ,, २५-१०१-१०६ | मृणे ऽवसादनविधिः ,, २५-१०० |
| व्योपायः सक्तुः ,, २३-१९-२४ | मृणे चन्दनादियोगः ,, २५-८८ | मृणे ऽवसादनविधिः ,, २५-१०० |
| मृणमन्वाः चि. २५-२७ | मृणे त्वक्विशुद्धिकरो लेपः ,, २५-११४ | मृणे ऽवसादनविधिः ,, २५-१०० |
| मृण दोषाः ,, २५-३१-३५ | मृणे धूपनविधिः चि. २५-१०८, १०९ | मृणे ऽवसादनविधिः ,, २५-१०० |
| मृणभेदाः ,, २५-६ | मृणे निर्वापणविधिः ,, २५-६३-६५ | मृणे ऽवसादनविधिः ,, २५-१०० |
| | मृणे ऽन्ययोगाः ,, २५-९३, ९४ | मृणे ऽवसादनविधिः ,, २५-१०० |

| | | |
|---|---|--|
| शङ्खकशिरोगस्त्रिरात्रादन्ति इ. ९-२० | शरीरधातूनां वैषम्यस्य फलं लक्षणं च शा. ६-४ | शस्त्रक्षाराम्निकर्मणो विप्रमे वहवो. ऽनर्था: चि. १४-३४-३७ |
| शङ्खकस्य निदानलक्षणचिह्नित्सितानि सि. ९-७०-७३ | शरीरपरिमाणनश्य गुणा: सू. ५-९३ | शस्त्रादिप्रभवस्य जनपदोद्ध्वंसस्याधर्मं एव हेतु: वि. ३-२१, २२ |
| शङ्खकस्य संप्राप्तिर्लक्षणं च सू. १८-२६ | शरीरभेदा: शा. ४-३५ | शाकवर्ग: सू. २७-८८-१२४ |
| शटया गुणा: सू. २७-८८ | शरीरमलविरेचनभेदा: क. १-४ | शाकानां वर्धनीयानां निर्देश: सू. २७-३१६ |
| शणपुष्पशाकस्य गुणा: ,, २७-१०४ | शरीरलक्षणम् शा. ६-४ | शाकुनसद्वस्य लक्षणम् शा. ४-३८ ६ |
| शणस्य गुणा: सू. २७-९८-१०३ | शरीरविचयप्रयोजनम् ,, ६-३ | शाखाश्रयाणां दोषाणां कोष्ठगमने हेतु: सू. २८-३३ |
| शतपदीविषे चिकित्सा चि. २३-२१५ | शरीरवृद्धिकरा भावा: शा. ६-१३ | शारदजलस्य प्रशंसा सू. २७-२०८ |
| शतारूपो लक्षणम् ,, ७-२६ | शरीरस्य व्याधीनां वाशितकीटादि- प्रभवत्वम् सू. २८-५ | शारदस्य गुणा: ,, २७-१४ |
| शतात्र्या गुणा: सू. २७-१०७ | शरीरस्याङ्गविभाग: शा. ७-५ | शारीरदोषसंग्रह: ,, १-५७ |
| शताहकस्य गुणा: ,, २७-१४५ | शरीरापेक्षसम्पन्नयोगोदाहरणम् चि. ३०-२९४, २९५ | शारीरदोषा: वि. ६-५ |
| शब्दस्य लक्षणम् वि. ८-३८ | शरीरावयवेषु शुक्लाधवम् सू. २७-३३४, ३३५ | शारीरदोषाणां परस्परानुवन्धकत्वम् वि. ६-१० |
| शमीधान्यवर्ग: सू. २७-२३-३४ | शरीरिऽज्जल्या परिमेयानि द्रव्याणि शा. ७-१५ | शारीरा दोषा: शा. ४-३४ |
| शमीफलस्य गुणा: ,, २७-१५० | शरीरैकदेशे रोगोत्पत्तौ हेतु: चि. १५-३७ | शार्करस्य गुणा: सू. २७-१८३ |
| शरचर्या ,, ६-४१-४५ | शर्कराया गुणा: सू. २७-२४१ | शार्ङ्गेष्टाया गुणा: ,, २७-९५-९७ |
| शराविकाया लक्षणम् ,, १७-८४ | शर्कराया: साधारणगुणा: ,, २७-२४२ | शालकल्याण्या गुणा: सू. २७-१०२, १०३ |
| शरीरज्ञानफलम् शा. ६-१९ | शर्कराया: साधारणगुणा: ,, २७-२४२ | शालिपण्याद्यो यापनवस्ति: सि. १२-१६ ११ |
| शरीरदोषनिमित्तानि परिहरन् रसायन- मुपयुञ्जीत चि. १-२ ३ | शङ्खकमांसस्य गुणा: ,, २७-७१ | शालिसर्कोर्गुणा: सू. २७-२६४ |
| शरीरदौर्गन्ध्यहर: प्रदेह: सू. ३-२९ | शशमांसस्य गुणा: ,, २७-७६ | शालीनां सामान्या गुणा: सू. २७-८-१० |
| शरीरधातवो हि समानैर्वर्धन्ते शा. ६-९-११ | शङ्कुलीगुणा: सू. २७-२६७ | |
| शरीरधातूनां मलप्रसादभेदेन द्वैविध्यं मलप्रसादयो: कार्यश्च शा. ६-१७ | | |

| | | |
|---|--|---|
| शालूकलक्षणम् चि. १२-७५ | शिरोरोगस्य त्रिदोषजस्य निदानलक्षणे सू. १७-२७ | शिरोविरेचनार्हाः सि. २-२२ |
| शालूकस्य गुणाः सू. २७-११६, ११७ | शिरोरोगस्य पित्तजस्य निदानलक्षणे सू. १७-२२, २३ | शिरोविरेचनो दशको महाकषायः सू. ४-१३ |
| शालेयगुणाः सू. २७-१७० | शिरोरोगस्य वातजस्य निदानलक्षणे सू. १७-१५-२१ | शिलाजतुरसायनम् चि. १-३ ४८-३ ६५ |
| शाल्मलीपुष्पशाकस्य गुणाः सू. २७-१०४ | शिरोरोगस्य वातजादिभेदेन लक्षणानि चि. २६-११८ | शिशिरचर्याः सू. ६-१९-२१ |
| शाल्मलीपुष्पस्य गुणाः सू. २७-१८-१०३ | शिरोरोगाः पच चि. १९-४ ४ | शिष्यपरीक्षा वि. ८-८ |
| शाल्वशानोपायाः वि. ८-५, ६ | शिरोरोगाणां नामानि चि. १७-१३, १४ | शिष्यं प्रत्याचार्यस्योपदेशः वि. ८-१३, १४ |
| शास्त्रस्य ज्ञानज्ञाने गुणदोषौ सू. १०-८४-८६ | शिरोरोगाणां निदानं संप्राप्तिश्च चि. १७-८-११ | शिशोपनयनविधिः वि. ८-९-१२ |
| शिक्षिगोनर्दादिषु पूर्वोक्त(पञ्चमूल्यादि)- रूपविदेशः सि. १२-१७ | शिरोरोगे महामायूरघृतम् चि. २६-१६६-१७५ | शीतप्रशमनो दशको महाकषायः सू. ४-१७ |
| शिप्रुगुणाः सू. २७-१७० | शिरोरोगे मायूरघृतम् चि. २६-१६३-१६५ | शीतमुष्णं च जलं कुत्र देयं कुत्र वा वर्ज्यम् चि. २२-५७-६१ |
| शिम्वीजासीनां गुणाः सू. २७-३१, ३२ | शिरोरोगे चि. २६-१६३-१६५ | शीतरसिकस्य गुणाः सू. २७-१८५ |
| शिरःकम्पस्य निदानलक्षण- चिकित्सितां सि. ९-८६, ८७ | शिरोविरेचनद्रव्याणि वि. ८-१५१ | शीतलक्षणम् सू. ४-७ २३ |
| शिरःशूलव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च सि. ७-४३-४६ | शिरोविरेचनद्रव्याणि सू. २-३-६ | शीतहरः प्रवेहः सू. ३-२८ |
| शिरःशोधलक्षणम् चि. १२-७४, ७५ | शिरोविरेचनस्य विधिः सि. १-५०, ५१ | शुक्रगांसस्य गुणाः सू. २७-७४ |
| शिरसः प्राधान्यमग्नेषु सू. १७-१२ | शिरोविरेचनस्य समलक्षणानि सि. १-५१, ५२ | शुक्रसंघितकन्दावीनां गुणाः सू. २७-२८४ |
| शिरसि तैलनिषेधस्य गुणाः सू. ५-८१-८३ | शिरोविरेचनस्य हीनलक्षणानि सि. १-५१, ५२ | शुक्रक्षयहेतुः चि. २-४ ४३-४ ४५ |
| शिरोरोगाहरो प्रवेही सू. ३-२३, २४ | शिरोविरेचनस्यातियोगलक्षणानि सि. १-५१, ५२ | शुक्रजननो दशको महाकषायः सू. ४-१२ |
| शिरोरोगस्य कफजस्य निदानलक्षणे सू. १७-२४-२६ | शिरोविरेचनानां या व्यापदो भवन्ति सि. २-२१ | शुक्रदुष्टेर्निदानं संप्राप्तिश्च चि. ३०-१३५-१३८ |
| शिरोरोगस्य क्रिमिजस्य निदानलक्षणे सू. १७-२७-२९ | | शुक्रदोषमेदाः चि. ३०-१३९, १४० |

| | | |
|--|---|---|
| शुक्रदोषविषये आग्नेयं प्रसमग्निवेशस्य प्रश्नाः वि. ३०-१२८-१३२ | शुद्धाशुद्धचिकित्साप्रयोगलक्षणम् नि. ८-२३ | शुष्कार्शःसु विप्लवादिप्रलेपः वि. १४-५४-५६ |
| शुक्रदोषाणां चिकित्सा वि. ३०-१४६-१५३ | शुद्धिलक्षणदर्शनेऽपि सावशेषीपथे वमनो- पदेशः सि. ६-२१ | शुष्कार्शःसु प्रलेपनम् वि. १४-१३५, १३६ |
| शुक्रप्रदोषजा रोगाः सू. २८-१८, १९ | शुष्पागा गुणाः सू. १७-८८३ | शुष्कार्शःसु प्रलेपनयोगाः वि. १४-५२, ५३ |
| शुक्रमांषदाश्वत्वारो वस्तयः सि. १८-२८, २९ | शुष्कधान्यवर्गः ,, २७-८-२२ | शुष्कार्शःसु फलारिष्टः वि. १४-१४८-१५२ |
| शुक्रविकाशे दृष्टान्तः वि. २-८ ३९ | शुष्कप्रसाविभेदेनार्शसां द्विविधो भेदः वि. १४-३८ | शुष्कार्शःसु रक्तलावणम् वि. १४-५९-६१ |
| शुक्रमणलक्षणम् वि. २५-८६ | शुष्कयोन्या लक्षणम् वि. ३०-३२ | शुष्कार्शःसु स्नेहाभ्यङ्गपूर्वकस्वेदनम् वि. १४-३९-४४ |
| शुक्रशोणितमीवसंयोगस्य गर्भसंक्षकत्वम् शा. ४-५ | शुष्कार्शःसु कतिपययोगाः ,, १४-६५-७० | शुष्कार्शःस्वनुवासनानि वि. १४-१३०-१३४ |
| शुक्रमुत्थानां वषाधीनां चिकित्सा शा. २८-२८ | शुष्कार्शःसु कतकारिष्टः ,, १४-१५८-१६८ | शुष्कार्शःस्वभयारिष्टः वि. १४-१३८-१४३ |
| शुक्रस्थस्य प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम् वि. २८-३४ | शुष्कार्शःसु तक्रप्रयोगविधानम् वि. १४-७६-८८ | शुष्कार्शःस्वर्कक्षादिप्रलेपः वि. १४-५७, ५८ |
| शुक्रस्थे वाते चिकित्सा वि. २८-९४, ९५ | शुष्कार्शःसु तक्रारिष्टः वि. १४-७१-७५ | शुष्कार्शःस्ववगाहविधानम् वि. १४-४५-४७ |
| शुक्ले प्रतिहते दोषास्तचिकित्सा च सू. ७-१०, ११ | शुष्कार्शःसु तुम्बुवादिधूपनम् वि. १४-५०, ५१ | शुष्कार्शसामान्यपानविधानम् वि. १४-८९-९५ |
| शुद्धसत्वस्य लक्षणम् शा. ५-१३-१५ | शुष्कार्शःसु त्र्यूषणादिवर्णम् वि. १४-६२-६४ | शुल्लप्रशमनो दशको महाफपायः सू. ४-१७ |
| शुद्धसत्वानां मध्ये ब्राह्मणस्यात्यन्त- शुद्धत्वम् शा. ४-३७ | शुष्कार्शःसु दन्त्यरिष्टः वि. १४-१४४-१४७ | शुल्लस्य चिकित्सा वि. २६-१०१-१०३ |
| शुद्धस्य शुक्रस्य लक्षणम् वि. ३०-१४४-१४६ | शुष्कार्शःसु धूपनम् वि. १४-४८ | शृङ्गवेरिकागुणाः सू. २७-१७१ |
| शुद्धस्य शोणितस्य फलम् सू. २४-४ | शुष्कार्शःसु निरुद्धवस्तिः वि. १४-१३७ | शृङ्गाटकस्य गुणाः ,, २७-११६, ११७ |
| शुद्धाया बुद्धेः फलम् शा. ५-१६-२१ | शुष्कार्शःसु नृकेशादिधूपनम् वि. १४-४९ | शुतलक्षणम् ,, ४-७ २ |
| शुद्धार्तलक्षणम् वि. ३०-२२५, २२६ | | |

| | | |
|--|--|--|
| श्रुतलक्षणम् सू. ४-७-२ | शोथस्फोपश्रवाः सू. १८-१८ | इयामान्निवृतायाः क्षीराभिः सप्त योगाः क. ७-२० |
| शोक्स्यानिमित्तम् शा. २-४९ | शोथहरी दशको महाकषायः सू. ४-१६ | इयामान्निवृतायाः पानकादिषु पञ्च योगाः क. ७-३३ |
| शोणितगुल्मस्य स्त्रिया एव संभवे हेतुः नि. ३-१३ | शोथानां हृन्मज्जसंनिपातजानां निदानं लक्षणं च सू. १८-७ | इयामान्निवृतायाः प्रथमस्तर्पणयोगः क. ७-३४, ३५ |
| शोणितजानां कृमीणां समुत्थानादि वि. ७-११ | शोथानां पृथक् पृथक् प्रकारेण भेदाः सू. १८-८ | इयामान्निवृतायाः सैन्धवादिभिर्द्वादश चूर्णयोगाः क. ७-१४ |
| शोणितजानां रोगाणां निर्देशः सू. २१-१९-२६ | शोथानां भेदाः सू. १८-३ | इयामान्निवृताया अम्लादिभिर्नव कल्कयोगाः क. ७-१२, १३ |
| शोणितजानां रोगाणामनुक्तानां संग्रहः सू. २४-१७ | शोथानां लक्षणम् , १८-९-१५ . | इयामान्निवृताया अम्लादिभिर्नव कल्कयोगाः क. ७-१२, १३ |
| शोणितदुष्टनिदानम् सू. २४-५-१० | शोथानां स्थानविशेषकृतमसाध्यत्वम् सू. १८-१६, १७ | इयामान्निवृताया अम्लादिभिर्नव कल्कयोगाः क. ७-१२, १३ |
| शोणितरोगेषु क्रियाक्रमः , २४-१८, १९ | शोथलक्षणः सू. १९-४ ६ | इयामान्निवृताया उद्धरणविधिः क. ७-१०, ११ |
| शोणितस्य वाताग्निदुष्टस्य लक्षणम् सू. २४-२०, २१ | शोथनीयवस्त्यनर्हाः सि. १०-१२ | इयामान्निवृताया गोमूत्रेण सहाष्टादश- योगाः क. ७-१५-१७ |
| शोणितस्य निशुद्धस्य लक्षणम् सू. २४-२२ | शोथस्य पूर्वरूपाणि नि. ६-१३ | इयामान्निवृताया जीवकादिभिश्चतुर्दश योगाः क. ७-१८, १९ |
| शोणितास्थापनो दशको महाकषायः सू. ४-१८ | शोथस्य राज्यक्षमेति संज्ञायां हेतुः नि. ६-१२ | इयामान्निवृताया मधुकर्नको योगः क. ७-१७ |
| शोथस्य कफजस्य निदानं लक्षणं च सू. १८-७ ३ | शोथस्य साध्यासाध्यलक्षणानि नि. ६-१५, १६ | इयामान्निवृताया मधुकर्नको योगः क. ७-१७ |
| शोथस्य निजस्य सामान्यनिदानम् सू. १८-७ २ | शोथस्यायतनानि नि. ६-३ | इयामान्निवृतायाः क्षीरयोगो क. ७-६८ |
| शोथस्य वित्तजस्य निदानं लक्षणं च सू. १८-१८ | शोथस्यैकादश रूपाणि , ६-१४ | इयामान्निवृतायाः पञ्च मोदकयोगाः क. ७-३६-५५ |
| शोथस्य वातजस्य निदानं लक्षणं च सू. १८-७ १ | शोथश्चत्वारः सू. १९-४ ५ | इयामान्निवृतायाः षट्सु ऋतुषु पञ्च योगाः सू. ७-५६-६० |
| शोथस्यागन्तोनिदानम् सू. १४-४ | शोथिणः क्षीणमांसस्य प्रशस्तानि मांसानि चि. ८-१४९-१६३ | इयामान्निवृतायाः पाण्डवादिभिर्दश योगाः क. ७-७४ |
| | श्मश्रुलोम्नां संख्याकथनम् शा. ७-१४ | इयामान्निवृतायाः घृतकाजि न्योगौ क. ७-७२, ७३ |
| | इयामाकस्य शुणाः सू. २७-१६-१८ | |

| | | |
|---|---|---|
| दश्यामात्रिवृत्तयोर्धृतयोगी क. ७-६६,६७ | श्लेष्मणः शरीरान्तर्गतस्य कुपिता- कुपितस्य शुभाशुभकारणम् सू. १२-१२ | श्लेष्मिकशोथे प्रत्येकपरिपेक्षासुलेपनानि चि. १२-७० |
| दश्यामात्रिवृत्तयोर्द्वितीयस्वर्णयोगः क. ७-६५,६६ | श्लेष्मण आत्मस्वरूपस्वलक्षणकर्माणि सू. २०-१८ | श्लेष्मिकशोथे सामान्ययोगाः चि. १२-७१, ७२ |
| दश्यामात्रिवृत्तयोर्द्वौ चूर्णयोगौ क. ७-६१-६४ | श्लेष्मणो गुणाः प्रशमने सूत्रम् सू. १-६१ | श्लोकस्थाननिरुक्तिः सू. ३०-४६ |
| दश्यामात्रिवृत्तयोर्मध्ययोगौ क. ७-६९-७१ | श्लेष्मदूषितशुक्लस्य लक्षणम् चि. ३०-१४२ | श्वयपावन्नपानम् चि. १२-६०-६३ |
| दश्यामात्रिवृत्तस्त्वोपक्रमः क. ७-१, २ | श्लेष्मप्रमेहानां लक्षणानि नि. ४-१२-२३ | श्वयपावन्नयोगाः ,, १२-२५-२८ |
| ध्रमनिःश्वासधारणे दोषास्त्वचिक्रिसा च सू. ७-२४ | श्लेष्मलस्य लक्षणम् वि. ८-९६ | श्वयपावन्नतोऽरिष्टः ,, १२-३२, ३३ |
| ध्रमहरो दशको महाकपायः सू. ४-१६ | श्लेष्मलस्य श्लेष्मप्रकोपे कारणं तस्यावजयनं च वि. ६-१८ | श्वययोः कफजस्य लिङ्गम् ,, १२-१४ |
| ध्रमस्या गुणाः सू. २७-१०७ | श्लेष्मविकाराणां गणना सू. २०-१७ | श्वययोः पित्तजस्य लिङ्गम् चि. १२-१३ |
| ध्रोत्रेन्द्रियविकृतयोऽरिष्टभूताः इ. ४-१९, २० | श्लेष्मातकस्य गुणाः सू. २७-१५९ | श्वययोः साध्यासाध्यलक्षणम् चि. १२-१४-१६ |
| श्लोपदस्य लक्षणचिकित्सेते चि. १२-९८ | श्लेष्मातिसाराध्माः कतिपययोगाः चि. १९-१०३-१२० | श्वययोर्निजस्य निदानम् चि. १२-५, ६ |
| श्लेष्मग्रहण्याश्चिकित्साक्रमः चि. १५-१४१ | श्लेष्मातिसारे चिकित्साक्रमः चि. १९-१०२, १०३ | श्वययोर्वातजस्य लिङ्गम् चि. १२-१२ |
| श्लेष्मजानां कृमाणां समुत्थानादि वि. ७-१० | श्लेष्मापस्मारस्य लक्षणम् नि. ८-८ ३ | श्वययोश्चिकित्साक्रमः ,, १२-१६-१९ |
| श्लेष्मज्वरस्य लक्षणानि नि. १-२५-२७ | श्लेष्मोन्मादस्य लक्षणम् नि. ७-७ ३ | श्वययोर्कंसहरीतकी ,, १२-५०-५२ |
| श्लेष्मज्वरस्य संप्राप्तिः नि. १-२५-२७ | श्लेष्मिकशुल्मस्य संप्राप्तिर्लक्षणानि च नि. ३-१०, ११ | श्वययो कतिपययोगाः चि. १२-४१, ४२ |
| श्लेष्मज्वरस्य हेतुः ,, १-२५-२७ | श्लेष्मिकयोनिरोगाणां चिकित्सा चि. ३०-७०-७२ | श्वययो कतिपययोगाः चि. १२-२१ |
| श्लेष्मणः कुपितस्योपक्रमः सू. २०-१९ | श्लेष्मिकविपलक्षणम् चि. २३-१६९ | श्वययो क्षारगुटिका ,, १२-४३-४६ |
| | | श्वययो गण्डीराद्यरिष्टः ,, १२-२९-३१ |
| | | श्वययो गुहार्द्रकप्रयोगः ,, १२-४७, ४८ |

| | | |
|---|--|---|
| श्वयथौ चित्रकादिष्टम् चि. १२-५५-५९ | श्वसाश्रयमरिष्टम् इ. ८-१५ | पटु विरेचनशतानि सू. ४-४ |
| श्वयथौ दन्त्यादिक्षीरम् चि. १२-२४ | श्वसे कफपित्तानुबन्धजेऽनुपानम् चि. १७-११४ | पटु विरेचनाश्रयाः , ४-५ |
| श्वयथौ पटोलमूलादिकायः चि. १२-५३, ५४ | श्वसे पित्तानुबन्धजे मधूलिका- गुल्कारिका चि. १७-१११ | पटुध्यापदां हेतुः सि. २-२६, २७ |
| श्वयथौ पुनर्नवाद्यरिष्टः चि. १२-३४-३८ | श्वसे वातपित्तानुबन्धजेऽनुपानम् चि. १७-११३ | पष्टिकस्य गुणाः सू. २७-१३ |
| श्वयथौ पूर्वरूपम् चि. १२-१० | श्वसे वातानुबन्धजे पथ्यम् चि. १७-११२ | पष्टे मासि गर्भस्थ स्वरूपम् शा. ४-२२ |
| श्वयथौ कलत्रिकायरिष्टः चि. १२-३९, ४० | श्वसे वातानुबन्धजे पथ्यम् चि. १७-११२ | पण्डया योन्या लक्षणम् चि. ३०-३४ |
| श्वयथौ वर्जनीयानि चि. १२-२० | श्वित्रचिकित्सा चि. ७-१६२-१७२ | पण्णां त्वचां विवरणम् शा. ७-४ |
| श्वयथौ वातजे शोथे योगाः चि. १२-३३ | श्वित्रस्य नामानि भेदाश्च चि. ७-१७३, १७४ | पोटश विकाराः शा. १-६४ |
| श्वयथौ शिलाजतुप्रयोगः चि. १२-४९ | श्वित्रस्य निदानम् चि. ७-१७७ | संकरस्वेदस्य कल्पना सू. १४-४१ |
| श्वयथौ शैलेयादितैलम् ,, १२-६५-६७ | श्वित्रस्य साध्यासाध्यलक्षणम् चि. ७-१७५, १७६ | संततज्वरलक्षणम् चि. ३-११, ६२ |
| श्वयथौ संप्राप्तिः ,, १२-८, ९ | श्वो यमनं पाता किं भुञ्जीत सि. ६-१८, १९ | संततज्वरलक्षणम् ,, ३-५३-६१ |
| श्वयथौ सामान्यलक्षणम् ,, १२-११ | पटुत्रिंशत्तन्त्रयुक्तिनिरूपणम् चि. १२-४१-४५ | संततज्वरलक्षणम् ,, १७-६३, ६४ |
| श्वयथौ हरीतक्यादियोगः चि. १२-२२ | पटुपञ्चाशत्प्रत्ययज्ञानि शा. ७-११ | संतर्पणजा रोगाः सू. २३-५-७ |
| श्वयथौ हिता अभ्यप्रप्रदेहादयः चि. १२-६४ | पटुपानीयं विपासाज्वरशान्तये चि. ३-१४५ | संतर्पणजेषु रोगेषु प्रतिकारः चि. २३-८, ९ |
| श्वसाहरो दग्धो मदाकषायः सू. ४-१६ | पटुपानीयं विपासाज्वरशान्तये चि. ३-१४५ | संतर्पणजेषु रोगेषु पूर्वार्तनादि सू. २३-१४ |
| श्वसाः पञ्च सू. १९-४ ४ | पटुपानीयं विपासाज्वरशान्तये चि. ३-१४५ | संतर्पणजेषु रोगेषु वृत्तपानम् सू. २३-२५ |
| श्वसानां संप्राप्तिः चि. १७-४५ | पटुभिर्मांसैर्मरिष्यतो लिङ्गानि इ. ११-७-९ | संतर्पणनिमित्तानि सू. २३-३, ४ |
| श्वसानां साध्यासाध्यविचारः चि. १७-६८, ६९ | पटुवर्णां सार्थयोगिकत्वम् चि. ८-१४५-१४८ | संतर्पणमन्थविधानम् सू. २३-३९ |
| | | संतर्पणोत्थप्रमेहचिकित्सा चि. ६-४७-५० |

| | | |
|--|--|--|
| संन्यास एकः सू. १९-४ ८ | संशोधनस्यायोगस्य प्रतिहारः सू. १६-२४ | सद्यःक्षीणस्य चिकित्साक्रमः सू. २३-३१-३३ |
| संन्यासस्य लक्षणम् सू. २४-४४ | संशोधनातिथोगस्य प्रतिहारः सू. १६-२५ | सद्योष्टहीतगर्भाया लिङ्गम् शा. २-२२, २३ |
| संन्यासस्य संप्रतिः सू. २४-२५-२९ | संशोधनानन्तरं कर्तव्योऽयसंजनक्रमः सि. १-११-१३ | सद्योष्टताद्यो यापनवृत्तिः सि. १२-१८ १२ |
| संन्यासस्थोपक्रमः सू. २४-४५-५३ | संशोधनानन्तरं पथ्यम् सू. १६-२२, २३ | सद्योष्टमूर्ध्नीनां लक्षणानि इ. १०-४-२० |
| संन्यासान्मदमूर्च्छायोर्भेदः सू. २४-४२ | संशोधने स्नेहे वृत्तिः सू. १३-८० | सद्योष्टतानुष्ठानम् सू. ८-१८ |
| संप्रयोगशरीरमूलीयवाजीकरणपादोपक्रमः चि. २-१, २ | संसर्गजप्रकृतैर्लक्षणम् वि. ८-९९ | सद्योष्टस्य लक्षणम् ,, ९-१८-२३ |
| संप्राप्तेर्भेदास्तेषां पृथग्लक्षणानि च नि. १-१२ | संसर्गजे पुनर्नवाद्यो निरुहः सि. ३-६५-६८ | सन्ध्यामीयो दशको महाकृपागः सू. ४-९ |
| संप्राप्तेर्लक्षणम् नि. ३-११ | संसर्गसन्निपातजगुल्मचिकित्सा चि. ५-६८ | सन्निपातस्य प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम् चि. २८-३७ |
| संभवस्य लक्षणम् वि. ८-४९ | संसर्गसन्निपातज्ज्वराणामतिदेशेन लक्षणकथनम् चि. ३-११०, १११ | सन्निपातस्य सद्योष्टकथनम् शा. ७-१४ |
| संयोगस्य विवरणम् वि. १-२२ ३ | संहननतो देहपरीक्षा वि. ८-११६ | सन्निपातगुल्मस्य निदानलक्षणे चि. ५-१७ |
| संवत्सरेण मरिच्छतो लिङ्गानि इ. ११-३-६ | सहनतो(मनस्तो) देहपरीक्षा वि. ८-११९ | सन्निपातच्छर्देर्निदानलक्षणे चि. २०-१४, १५ |
| संशमने स्नेहे वृत्तिः सू. १३-८१ | सत्त्वभेदाः शा. ४-३६ | सन्निपातच्छर्द्याधिक्रिया वि. २०-४० |
| संशयस्य लक्षणम् वि. ८-४३ | सत्त्वस्य औपपादुकत्वप्रतिपादनं सत्त्वजाश्च भावाः शा. ३-१३ | सन्निपातजशिरोरोगस्य चिकित्सा चि. २६-१८३ |
| संशोधनं विनैव येषां कर्मवातातपाग्निभि- र्दोषाः क्षयं यान्ति तेषां कर्तव्यम् क. १२-८१, ८२ | सदाऽतुरा अनाद्वराश्च मानवाः सू. ७-३९, ४० | सन्निपातज्ज्वरस्य साध्यासाध्यलक्षणम् चि. ३-१०९, ११० |
| संशोधनकरणे गुणाः सू. १५-२२ | सदाऽतुरा नराः सि. ११-२७ | सन्निपातज्ज्वरे बृहत्त्यादिगणः चि. ३-१३, २१४ |
| संशोधनयोग्याः पुरुषाः सू. १६-१३-१५ | सदाऽतुरस्यै हेतुचिकित्सा च सि. ११-२८-३६ | सन्निपातज्ज्वरे शब्दादिगणः चि. ३-२११, २१२ |
| संशोधनस्य गुणाः सू. १६-१६-१९ | | |
| संशोधन(वसन)स्य मात्रा सू. १५-१० | | |

| | | |
|--|--|---|
| सन्निपातोदरे चिकित्साविधिः चि. १३-७४ | समनस्कानामिन्द्रियाणां प्रकृतिभावे स्या- पने उपायाः सू. ८-१७ | सर्पविण्मृगजाः क्रीडाः चि. २३-१४० |
| सपुष्पफलकुसुमोत्पलनालानां गुणाः सू. २७-११७, ११८ | समनस्कानामिन्द्रियाणां प्रकृतिविकृतिहेतवः सू. ८-१५ | सर्पविषं कस्यां दंष्ट्रायां तिष्ठति चि. २३-१३७-१३९ |
| संपूर्णयुधो निमित्तम् शा. ६-३० | समपीतमद्यस्य मदात्ययप्रशमकत्वम् चि. २४-१०९ | सर्पविषे सामान्यचिकित्सा चि. २३-२५०-२५३ |
| सप्त विक्राणि सू. ११-३४ | समप्रकृतेर्लक्षणम् वि. ८-१०० | सर्पाणां कालादिभेदेन तीक्ष्णमन्दविषत्वम् चि. २३-१६१-१६४ |
| सप्तधातूनां किट्टानि चि. १५-१८, १९ | समसांसप्रमाणस्य प्रशस्तता सू. २१-१८, १९ | सर्पाणां पुंस्त्रीनपुंसकभेदेन लक्षणानि चि. २३-१३०-१३३ |
| सप्तमे मासि गर्भस्य स्वरूपम् शा. ४-२३ | समवायलक्षणम् सू. १-५० | सर्पाणामवस्थामेदेन तीक्ष्णविषत्वम् चि. २३-१३६ |
| सप्तलाशङ्खिन्योः कम्पलकेनैको योगः क. ११-१६ | समवायस्य लक्षणानिदेशः वि. ८-२९ | सर्पिषः पित्तशमकत्वम् वि. १-१४ |
| सप्तलाशङ्खिन्योः पञ्च सम्प्रदानयोगाः क. ११-१७ | समविषमाध्यक्षानां लक्षणम् चि. १५-२३५, २३६ | सर्पिषः सर्वस्नेहोत्तमत्वम् सू. १३-१३ |
| सप्तलाशङ्खिन्योः पर्यायाः क. ११-३ | समाग्नेर्गुणाः चि. १५-२३४ | सर्पिरादीनां पानकालाः सू. १३-१८ |
| सप्तलाशङ्खिन्योः पट्ट तैलयोगाः क. ११-९-११ | समाग्नेर्दुर्बलाग्नेश्च कर्म „ १५-५१ | सर्वकुष्ठनिदानम् नि. ५-६ |
| सप्तलाशङ्खिन्योः षोडश कल्कयोगाः क. ११-६-८ | सम्यक्शुद्धस्य लिप्तानि सि. ६-१९, २० | सर्वगतस्यापि पुरुषस्य सर्ववेदनाज्ञाना- भावे हेतुः शा. १-७९ |
| सप्तलाशङ्खिन्योः षोडश कल्कयोगाः क. ११-११-१५ | सम्यक्शुद्धस्य लक्षणम् सू. १४-१३ | सर्वलुण्ठानामनिलपित्तक्षयजत्वम् चि. २२-२४ |
| सप्तलाशङ्खिन्योः षोडश कल्कयोगाः क. ११-११-१५ | सम्यग्युपयुज्यमानानां घृणां रसानां शरीर- यापकत्वम् वि. १-४ | सर्वद्रव्यं पाच्यभौतिकम् सू. २६-१० |
| सप्तलाशङ्खिन्योः षोडश कल्कयोगाः क. ११-४ | सर्पदक्षानामाकृतिभेदेन शृङ्गुदाकृणत्वम् चि. २३-१३५ | सर्वविषेणमृतं घृतम् चि. २३-२४२-२४९ |
| सप्तलाशङ्खिन्योः षोडश कल्कयोगाः क. ११-५ | सर्पदक्षानामसाध्यत्वं स्थान-काल स्वभाव- प्रदेशः चि. २३-१५९, १६० | सर्वस्यापि मदात्ययस्य त्रिशोषजत्वम् चि. २४-९८-१०० |
| सप्तलाशङ्खिन्योः षोडश कल्कयोगाः क. ११-११, २८२ | सर्पभेदास्तेषां लक्षणानि च चि. २३-१२४-१२६ | सर्वस्रोतसां साधारणं प्रकोपकारणम् वि. ५-२३ |

| | | |
|---|---|---|
| सर्वाङ्गकुपिते वाते चिकित्सा चि. २८-९२ | सविषधूमलक्षणम् वि. २३-१२० | सान्निपातिकप्रहण्याधिक्रित्तिः चि. १५-१९४, १९५ |
| सर्वाङ्गे प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम् चि. २८-२५ | सविषमण्डुकदण्डलक्षणम् ,, २३-१५४ | साङ्गिपातिकप्रदरस्य निदानलक्षणे चि. ३०-२१९-२२४ |
| सर्वाणि मर्माणि वाताद् विशेषतो रक्ष्याणि सि. ९-७ | सविषमत्स्यजलौकोदण्डलक्षणम् चि. २३-१५५ | सान्निपातिकमूत्रकृच्छ्रचिकित्सा चि. २६-५८ |
| सर्वेन्द्रियविकृतयोऽरिष्टभूताः इ. ४-२४-२६ | सर्वं शयानस्य यस्मिन्ने हेतुः सि. ३-२४ | साङ्गिपातिकविषसर्पलक्षणम् चि. २१-४१ |
| सर्वेषां स्रोतसां धातूनां च प्रदुष्टा वात- पित्तश्लेष्माणो दूषयितारः चि. ५-९ | सर्वमिचारास्य लक्षणम् वि. ८-४५ | सान्निपातिकोन्मादस्य लक्षणम् नि. ७-७ |
| सर्वेषामेव वातपित्तश्लेष्मणां प्रभुत्वमित्यात्रे- यकृतं समाधानम् सू. १२-१३-१५ | सहचराद्यो थापनयस्तिः सि. १२-१६ । ३ | सामान्यजा नानात्मजाश्च विकाराः सू. २०-१० |
| सर्वेषु गुल्मेषु वातस्यावश्यम्भावित्वम् नि. ३-१६ | सहजानामर्शसां निमित्तम् चि. १४-६ | सामान्यतः पञ्चकर्मानर्हाः सि. २-४-७ |
| सर्वेषु वमनयोगेष्वनुक्तमपि मधुसैन्धवं देयम् क. १-१५ | सहजानामर्शसां रूपाणि ,, १४-७, ८ | सामान्यप्रतिकारः वि. ३-८ |
| सर्वपतैलस्य गुणाः सू. २७-२९० | साम्राट्किंशत्वारो वस्तयः वि. १०-३०, ३१ | सामान्यलक्षणातिदेशः ,, ८-२९ |
| सर्वप्या लक्षणम् ,, १७-८४ | सात्म्यतो देहपरीक्षा वि. ८-११८ | सामान्यविशेषयोर्लक्षणम् सू. १-४४, ४५ |
| सर्विकीटदण्डलक्षणम् चि. २३-१४१-१४३ | सात्म्यस्य लक्षणम् सू. ६-४९, ५० | सामुद्रजलस्य गुणाः सू. २७-२१६ |
| सर्विकुङ्कुमादिदण्डलक्षणम् चि. २३-१७५, १७६ | सात्म्यस्य लक्षणं मेदाश्च वि. १-२० | सामुद्रलवणस्य गुणाः ,, २७-३०४ |
| सर्विषजललक्षणम् चि. २३-१२१ | सात्त्विकराजसतामसानामापानानां लक्षणानि चि. २४-७४-७८ | सारतो देहपरीक्षा वि. ८-१०२-११५ |
| सर्विषदंशस्य निर्विषदंशस्य च लक्षणम् चि. २३-१७७, १७८ | साधारणेषु प्रायदृशरद्वसन्तेषु संशोधनो- पदेशः सि. ६-४-६ | सार्पसत्त्वस्य लक्षणम् शा. ४-३८ । ४ |
| सर्विषदन्तपवन-शिरोऽभ्यङ्गाञ्जन-स्नानो- दकोत्सादन-वस्त्रालङ्कार-वर्णक-भूपादु- काऽक्षयज-वर्म-वेतु-शयनासन-माल्य- लक्षणम् चि. २३-११६-१२० | साध्यानामुन्मादानां चिकित्सितम् नि. ७-८, ९ | सार्पपशाकस्य गुणाः सू. २७-१२२ |
| | सान्निपातिकगुल्मस्य निदानादि असाध्यत्वं च नि. ३-१२ | साहस्यया शोषः संभवति तद्वर्णनम् नि. ६-४ |
| | साङ्गिपातिकप्रहणीगदस्य निदानलक्षणे चि. १५-७२ | सिद्धितिकाया गुणाः सू. २७-१४२ |
| | | सिद्धान्तस्य लक्षणम् वि. ८-३७ |
| | | सिद्धिस्थाननिरुक्तिः सि. १२-३३ |

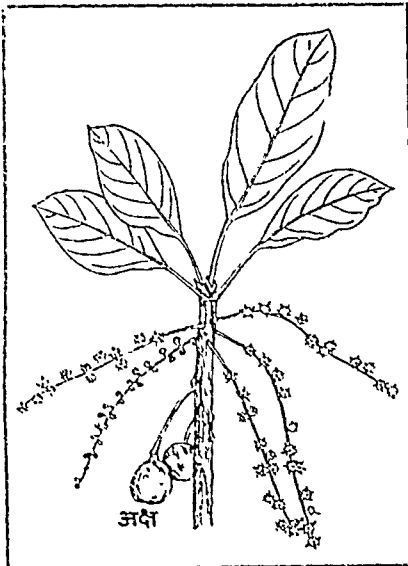
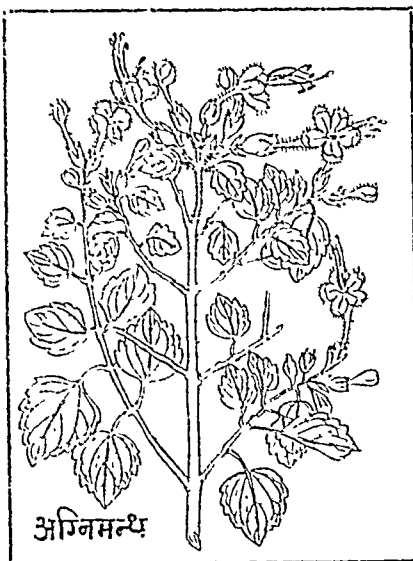
| | | |
|--|---|---|
| सिध्मकुष्ठस्य लक्षणम् नि. ५-८ ५ | सुधाया उपयोगविधिः क. १०-९-१० | सूर्यावर्तकस्य निदानलक्षणचिकित्सितानि चि. ९-७९-८३ |
| सिध्मकुष्ठे लेपयोगाः चि. ७-११७, ११८ | सुधाया एकः पानयोगः क. १०-१४ | सैन्धवस्य गुणाः सू. २७-३०० |
| सिध्मस्य लक्षणम् ,, ७-१९ | सुधाया एकः सुरायोगः द्वौ घृतयोगौ च क. १०-२० | सौवर्चलस्य गुणाः ,, २७-३०१ |
| सिरागतस्य प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम् चि. २८-३६ | सुधाया एको प्रेययोगः क. १०-१५-१७ | सौवीरकस्य गुणाः ,, २७-१९१ |
| सिरानिरुक्तिः सू. ३०-१२ | सुधाया एको लेहयोगः क. १०-१८ | स्तन्यगौरवे चिकित्सा चि. ३०-२७९-२८२ |
| सिरासंख्याकथनम् शा. ७-१४ | सुधाया यूषादिभिस्त्रयो योगाः क. १०-१९ | स्तन्यजननो दशको महाकपायः सू. ४-१२ |
| सुखदुःखहेतवः ,, १-१३२-१३५ | सुनिषण्णकस्य गुणाः सू. २७-८८ | स्तन्यदौर्गन्ध्ये चिकित्सा सू. ३०-२७४-२७८ |
| सुखघाध्यस्य लक्षणम् सू. १०-११-१३ | सुमुखाया गुणाः सू. २७-१७३ | स्तन्यदौर्गन्ध्ये विषाणिकादियोगः चि. ३०-२७३ |
| सुखसाध्यस्य लक्षणम् सू. १८-३८ | सुरसस्य गुणाः सू. २७-१६९ | स्तन्यवैषण्ये यष्टीमधुकादियोगः चि. ३०-२७१, २७२ |
| सुखस्यामुषो लक्षणम् सू. ३०-२४ | सुराद्यो गापनवस्तिः सि. १२-१८ १६ | स्तन्यशुद्धिकरः किंवातिकाकादिवशात् चि. ३०-२६७, २६८ |
| सुचिराद्भ्रमप्रसवे हेतुः शा. २-१५ | सुराऽनुपानं कृणानाम् सू. २७-३२३ | स्तन्यशुद्धिकरः पञ्चकोलादिलेपः चि. ३०-२६४ |
| सुधागुणाः क. १०-३, ४ | सुरापानविधिः चि. २४-११-२० | स्तन्यशुद्धिकराः कतिपययोगाः चि. ३०-२६०-२६४ |
| सुधाप्रयोगार्हा नराः क. १०-५-७ | सुराया गुणाः सू. २७-१७९ | स्तन्यशोधनो दशको महाकपायः सू. ४-१२ |
| सुधाप्रयोगानर्हा नराः क. १०-३, ४ | सुरासप्तस्य गुणाः सू. २७-१८७ | स्तन्यशोधनो दशको महाकपायः सू. ४-१२ |
| सुधाभेदौ क. १०-७, ८ | सुवर्चलाया गुणाः सू. २७-९८-१०३ | स्तन्यशोधनो दशको महाकपायः सू. ४-१२ |
| सुधायाः पर्यायाः क. १०-८ | सुस्निग्धे क्षूरकोष्ठे च कर्तव्यम् क. १२-७८ | स्तन्यशोधनो दशको महाकपायः सू. ४-१२ |
| सुधायाः शुष्कमत्स्येन मासेन च एकैको योगः क. १०-१९ | सुखीमुख्या योनेर्लक्षणम् चि. ३०, ३१ | स्तन्यशोधनो दशको महाकपायः सू. ४-१२ |
| सुधायाः सर्पिषा मांसरसेन चैकैको योगः क. १०-१३ | सूप्यशाकस्य गुणाः सू. २७-९८-१०३ | स्तन्यशोधनो दशको महाकपायः सू. ४-१२ |
| सुधायाः सौवीरकादिभिः सप्त योगाः क. १०-१०-१२ | सूप्यान्नविकृतानां भक्ष्याणां गुणाः सू. २७-२७४ | स्तन्यशोधनो दशको महाकपायः सू. ४-१२ |

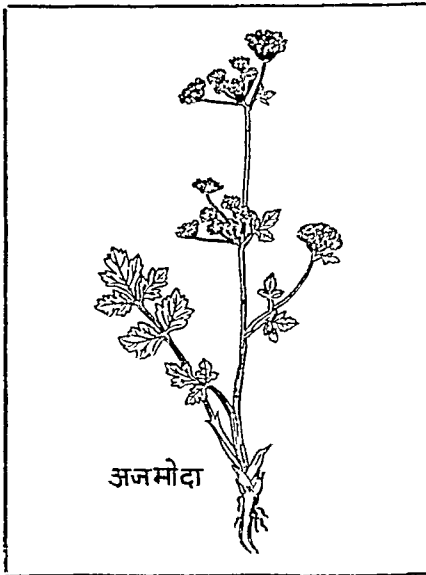
| | | |
|--|---|--|
| स्तरम्बव्यापदो वर्णनं चिकित्सा च सि. ६-८८, ८९ | स्नायुसंख्याकथनम् शा. ७-१४ | स्नेहसेवनेऽतिमात्रया त्वरया च दोषाः सू. १३-९६, ९७ |
| स्त्रीगर्भाया लक्षणानि शा. २-२४, २५ | स्नाय्वादिगतदोषजा रोगाः सू. २८-२९ | स्नेहस्य गुणाः सि. १-७, ८ |
| स्त्रीणामुत्तरगस्तदाने विशेषः सि. ९-५२-७० | स्नाय्वादिजानां व्याधीनां चिकित्सा सू. २८-२९ | स्नेहस्य चतुर्विंशतिः प्रविचारणाः सू. १३-२३-२८ |
| स्त्रीपुरुषयोरेभीष्टप्रजानिर्वाहकर्मो- पदेशः शा. ८-३, ४ | स्निग्धभोजनगुणाः सि. १-२४ २ | स्नेहस्य जङ्गमस्याशयाः सू. १३-११ |
| स्त्रीपुरुषयोर्वैज्ञानिका भावाः शा. ४-१४ | स्निग्धस्य लक्षणम् सू. १३-५८ | स्नेहस्य त्रिविधा मात्राः सू. १३-२९, ३० |
| स्त्रीषु विषये न सर्वेऽपि समवला भवतः सर्वोपयोगिनां बाजीकरणयोगानामुपदेश आवश्यकः चि. २-४ ३-४ ९ | स्नेहकर्मणः कालावधिः सि. १-६, ७ | स्नेहस्य योनिर्द्विविधा सू. १३-९ |
| स्त्रीसंप्रयोगे शुक्रं कथं प्रवर्तते चि. २-४-४६-४ ४९ | स्नेहद्रव्याणि सू. २२-१५ | स्नेहस्य लक्षणम् ,, २२-११ |
| स्थानदिशेभ्यो विषे चिकित्सा चि. २३-१२२, १२३ | स्नेहद्रव्यस्य प्रकर्षः ,, १३-५१ | स्नेहस्य लवणोपहितस्य गुणाः सू. १३-९८ |
| स्थापनाया लक्षणम् सि. ८-३१ | स्नेहपाकपरीक्षा क. १२-१००-१०४ | स्नेहस्य स्थावरस्याशयाः सू. १३-१० |
| स्थावरविषयस्य भेदाः चि. २३-११-१३ | स्नेहपाने कालभेदोऽधिकारिभेदश्च सू. १३-१९ | स्नेहस्यानुपानम् ,, १३-२२ |
| स्थावरं पलिङ्गानि चि. २३-१६ | स्नेहपाने तृष्णोपद्रवचिकित्सा सू. १३-७०-७३ | स्नेहस्वेदादीनां क्रमः ,, १३-९९ |
| स्थिराद्यो निरुद्धः सि. ३-३६ | स्नेहपाने पूर्वकर्म सू. १३-६० | स्नेहाः स्नेहनीयाश्च २२-३१ |
| स्थिराद्यो शयनवस्तिः सि. १२-१६ | स्नेहपाने हिताहितम् सू. १३-६१-६४ | स्नेहादिकर्मस्वविधिना विहितेषु साधनम् सू. १६-२६ |
| स्थूलद्रव्ययोः रूपस्य गणान्ये युक्तिः सू. २१-१७ | स्नेहवस्तेः पलापदः सि. ४-२५ | स्नेहानां प्रविचारणाविधिः सू. १३-८३-९० |
| स्थूलद्रव्ययोः स्पर्शयोः स्वप्नाहारहेतुत्वम् सू. २१-५१ | स्नेहयोः संशोधनसंशमनयोः पानकालः सू. १३-६१ | स्नेहोपगो दशको महाकपायः ,, ४-१३ |
| स्नानस्य गुणाः सू. ५-७४ | स्नेहविचारणया विषयाः सू. १३-८२ | स्नेहाः के सू. १३-५० |
| स्नायुनस्य प्रकुपितस्य वातस्य लक्षणम् सि. २८-३५ | स्नेहविभ्रमजा दोषास्तत्र चिकित्सा च सू. १३-७४-७८ | स्नेहा न के ,, १३-५३-५६ |
| | स्नेहव्यापत्तौ हेतवः सू. १३-७९ | स्नेहिकधूमवर्तिप्रव्याणि ,, ५-२५ |

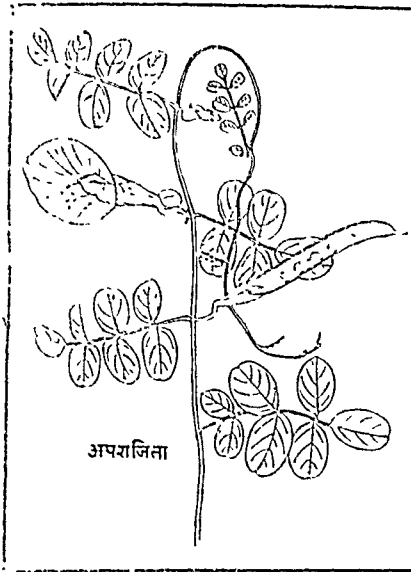
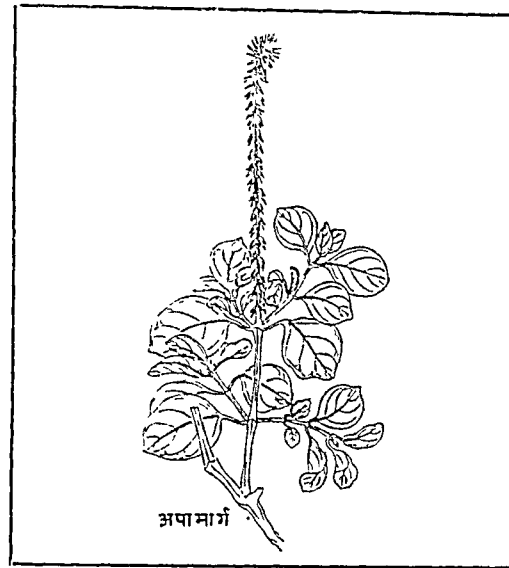
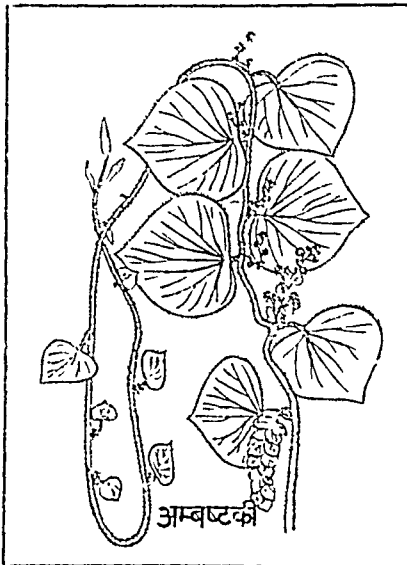
| | | |
|---|--|---|
| स्पर्शनेन्द्रियविकृतयोऽरिष्टभूताः इ. ४-२३ | स्वराः प्राकृताः इ. १-१४ | हंसादीनामण्डानां गुणाः सू. २७-८५, ८६ |
| स्पर्शविज्ञेयाः आतुरशरीरभूताः विकृतयः इ. ३-४५ | स्वरा वैकृताः इ. १-१४ | हंसोदकस्य स्वरूपम् सू. ६-४५-४८ |
| स्मृतिविभङ्गस्य वर्णनम् शा. १-१०१ | स्वस्थशृत्तसेवने हेतुः सू. ७-४५ | हनुमहस्य चिकित्सा चि. २८-१०२, १०३ |
| सुतरक्तस्यान्नपानविधिः सू. २४-२३ | स्वस्थशृत्तोपदेशः सू. ५-१३ | हनुमहस्य लक्षणम् चि. २८-४९ |
| स्रोतसः पर्यायाः वि. ५-९ | स्वस्थदितो विधिः सू. २८-३४, ३५ | हनुमहस्य यापनवस्तिः सि. १२-१६ ७ |
| स्रोतसां भेदाः वि. ५-७ | स्विन्नेन गत्कार्यम् सू. १४-६७ | हरितकवर्गः सू. २७-१६६-१७७ |
| स्रोतसां सामान्यं दुष्टलक्षणम् वि. ५-२४ | स्वेदः पञ्चविधः सू. १४-६५, ६६ | हरितानां वर्जनीयानां निर्देशः सू. २७-३१८ |
| स्रोतसां सामान्यवर्णनम् वि. ५-३-४ | स्वेदकल्पना रोगाद्यपेक्षिणी सू. १४-७-१० | हरीतकीगुणाः चि. १-२९-३४ |
| स्रोतसां स्वरूपम् वि. ५-२५ | स्वेदगुणाः सू. १४-३, ५ | हरीतकीसेवनानर्हाः चि. १-१ ३५ |
| स्रोतोनिवृद्धिः सू. ३०-१२ | स्वेदगुणाः चि. ५-२३ | हरीतक्यादियोगः चि. १-१ ७६ |
| स्वतन्त्रस्यापि पुरुषस्यानिष्टयोनिसु जन्मप्रद्वये हेतुः शा. १-७७ | स्वेदनद्वयं सू. २२-१६ | हरीतक्यादियोगोऽपरः चि. १-१ ७७ |
| स्वप्नदर्शनं कथं भवति इ. ५-४१, ४२ | स्वेदनस्य लक्षणम् ,, २२-११ | हरेणुगुणाः सू. २७-२८, २९ |
| स्वप्नभेदाः इ. ५-४३ | स्वेदसाध्या विकाराः ,, १४-२०-२४ | हर्षस्य निमित्तम् शा. २-४१ |
| स्वप्ना अरिष्टभूताः इ. ५-२७-४० | स्वेदस्य गुणाः चि. १-७-८ | हलीमकस्य चिकित्सा चि. १६-१३४-१३७ |
| स्वप्ना अल्पफलाः इ. ५-४४-४६ | स्वेदाः स्वेदनीयाश्च सू. २२-३१ | हलीमकस्य लक्षणम् चि. १६-१३२, १३३ |
| स्वप्ना महाफलाः इ. ५-४४-४६ | स्वेदाद्यभेदाः सू. १४-३९, ४० | हस्तिनीदुग्धस्य गुणाः सू. २७-२२४ |
| स्वभावतः प्रतिकारानर्हाः वि. ३-४५ | स्वेदे हृत्पथक्षणादीनां रक्षणविधिः सू. १४-११, १२ | दिकाः पञ्च सू. १९-४ ४ |
| स्वरभेदचिकित्सा चि. २६-२८३-२९० | स्वेदोपगो दशको महाकपायः सू. ४-१३ | द्विक्वाचिग्रहणो दशको महाकपायः सू. ४-१४ |
| स्वरविकृतयोऽरिष्टरूपाः इ. १-१५, १६ | स्वेदो यथा कार्यकरः सू. १४-६ | |
| स्वरलक्षणम् सू. ४-७ १ | स्वेदो वक्षोत्तसां मूलं तद्वृष्टिलक्षणं च वि. ५-८ | |
| | हंसमांसस्य गुणाः सू. २७-६५ | |

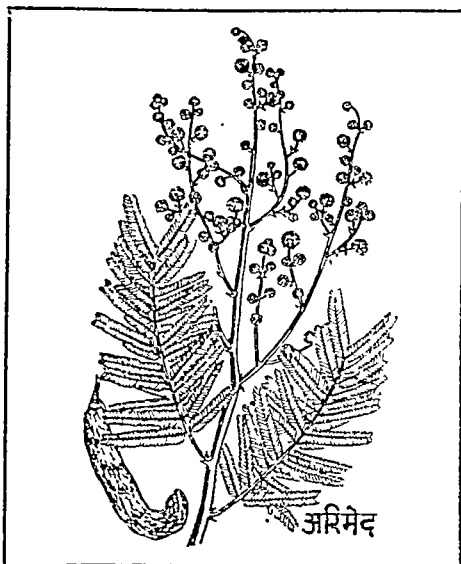
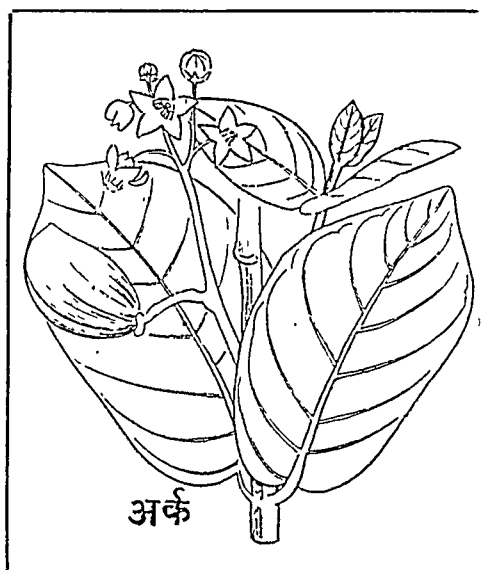
| | | |
|---|--|---|
| द्विकायां कतिपययोगाः चि. १७-१२९-१३५ | द्विकाश्वासयोः शंक्रदशप्रयोगः चि. १७-११६ | द्विकाश्वासयोर्लेहयोगाः चि. १७-११८-१२० |
| द्विकायां चिकित्सासूत्रम् चि. १७-१४७-१५० | द्विकाश्वासयोः शठपाथं चूर्णम् चि. १७-१२३-१२४ | द्विकाश्वासयोर्वातार्तकजो यूयः चि. १७-१०० |
| द्विकायां तेजोवत्यायं घृतम् चि. १७-१४१-१४४ | द्विकाश्वासयोः शीघ्रप्राणहरत्वं तत्र हेतुश्च चि. १७-६-९ | द्विकाश्वासयोर्हृदिश्लेष्मघ्नमवर्तिः चि. १७-७७-७८ |
| द्विकायां दशमूलायं घृतम् चि. १७-१४० | द्विकाश्वासयोः शोधनविचारः चि. १७-८३-९३ | द्विकाश्वासयोर्हिम्वादिचूर्णम् चि. १७-१०८ |
| द्विकायां मनःशिलादिघृतम् चि. १७-१४५-१४६ | द्विकाश्वासयोः संशोधनम् चि. १७-१२१, १२२ | द्विकाश्वासयोर्हिम्वादियवाग् चि. १७-१०१ |
| द्विकायाः साध्यासाध्यविचारः चि. १७-४२-४४ | द्विकाश्वासयोः सामान्यचिकित्साक्रमः चि. १७-७०-७६ | द्विदुनो गुणाः सू. २७-२९९ |
| द्विकाश्यापदो वर्णनं चिकित्सा च सि. ७-२७-२९ | द्विकाश्वासयोः सौवर्चलादिचूर्णम् चि. १७-१०९ | द्विदुतमानामाहारद्रव्याणां (प्रकृत्यैव) निर्देशः सू. २६-३८ |
| द्विकाश्वासयोः कतिपयघ्नयोगाः सि. १७-७९-८० | द्विकाश्वासयोः सौवर्चलादिचूर्णम् चि. १७-१०९ | द्विदुतमाहारविधिविधाननिरूपणम् चि. १-२४ |
| द्विकाश्वासयोः कतिपययोगाः सि. १७-९४, ९५ | द्विकाश्वासयोः सौवर्चलादिचूर्णम् चि. १७-१०९ | द्विदुतमाहारविधिविधाननिरूपणम् चि. १-२४ |
| द्विकाश्वासयोः कल्कयोगाः चि. १७-११० | द्विकाश्वासयोः सौवर्चलादिचूर्णम् चि. १७-१०९ | द्विदुतमाहारविधिविधाननिरूपणम् चि. १-२४ |
| द्विकाश्वासयोः क्षारयूयः चि. १७-९७, ९८ | द्विकाश्वासयोः सौवर्चलादिचूर्णम् चि. १७-१०९ | द्विदुतमाहारविधिविधाननिरूपणम् चि. १-२४ |
| द्विकाश्वासयोः पथ्यम् चि. १७-१०० | द्विकाश्वासयोः सौवर्चलादिचूर्णम् चि. १७-१०९ | द्विदुतमाहारविधिविधाननिरूपणम् चि. १-२४ |
| द्विकाश्वासयोः पाठादिस्थानम् चि. १७-१०६, १०७ | द्विकाश्वासयोः सौवर्चलादिचूर्णम् चि. १७-१०९ | द्विदुतमाहारविधिविधाननिरूपणम् चि. १-२४ |
| द्विकाश्वासयोः पानम् ,, १७-१०५ | द्विकाश्वासयोः सौवर्चलादिचूर्णम् चि. १७-१०९ | द्विदुतमाहारविधिविधाननिरूपणम् चि. १-२४ |
| द्विकाश्वासयोः पूर्वरूपानि चि. १७-१८-२० | द्विकाश्वासयोः सौवर्चलादिचूर्णम् चि. १७-१०९ | द्विदुतमाहारविधिविधाननिरूपणम् चि. १-२४ |

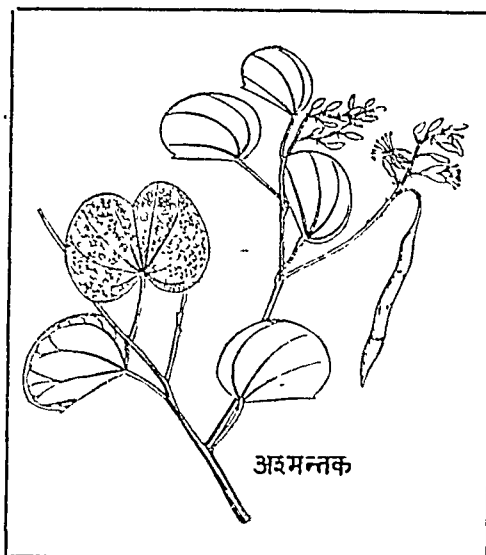
| | | |
|---|---|--|
| हृदयपर्यायाः सू. ३०-३ | हृद्रोगस्य क्रिमिजस्य निदानलक्षणे सू. १७-३७-४० | हृद्रोगाः पञ्च सू. १९-४ ४ |
| हृदयस्य महत्त्वे धर्थावे च हेतुः सू. ३०-४-७ | हृद्रोगस्य निदानसंभ्रामिलक्षणानि चि. २६-७७-८० | हेतुविशेषान्नाग्देह्यतौ चिकित्सा चि. १५-२०६-२११ |
| हृदि प्रकुपिते वाते चिकित्सा चि. २८-९६ | हृद्रोगस्य पिताजस्य निदानलक्षणे सू. १७-३२,३३ | हेतुलक्षणम्. चि. ८-३३ |
| हृद्गृह्ण्यपदो वर्णनं चिकित्सा च चि. ६-७१-७५ | हृद्रोगस्य वातजस्य निदानलक्षणे सू. १७-३०,३१ | हेत्वन्तरस्य लक्षणम्. चि. ८-६३ |
| हृद्यो दशको महाकषायः सू. ४-१० | हृद्रोगस्य सन्निपातजस्य निदानलक्षणे सू. १७-३६ | हेमन्तचर्या सू. ६-९-१८ |
| हृद्रोगस्य कफजस्य निदानलक्षणे सू. १७-३४,३५ | | होलाकस्वेदस्य कल्पना सू. १४-६१-६३ |
| | | हृत्स्मरनेहमाश्रया गुणाः ,, १३-४० |
| | | हृत्स्वस्नेहमाश्रयाः पुरुषाः ,, १३-३८,३९ |

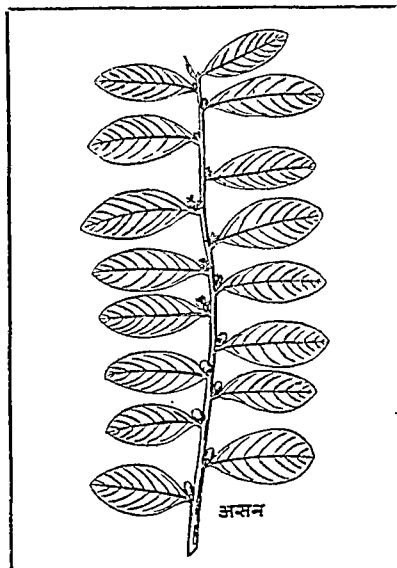
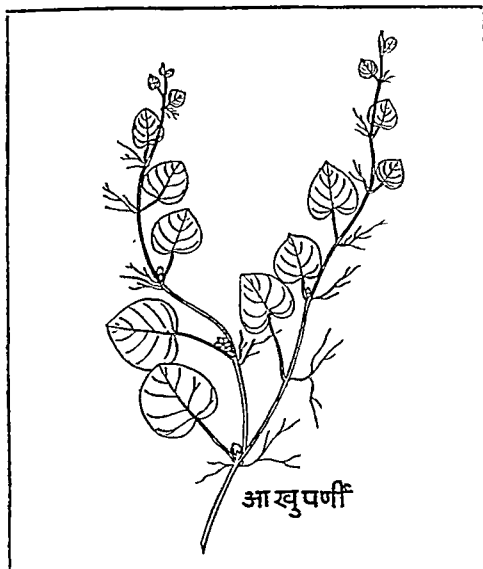
1. *Terminalia belerica* Roxb.2. *Aquilaria Agallocha* Roxb.3. *Chlorodendron phlomoides* L.4. *Alangium lamarkii* Thw.

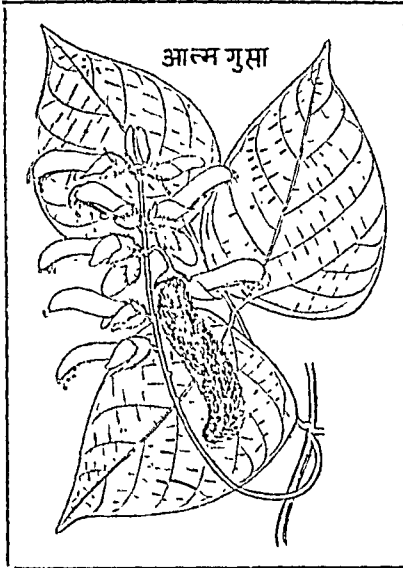
5. *Apium graveolens* L.6. *Linum Usitatissimum* L.7. *Abutilon indicum* G. Don.8. *Aconitum heterophyllum* Wall.

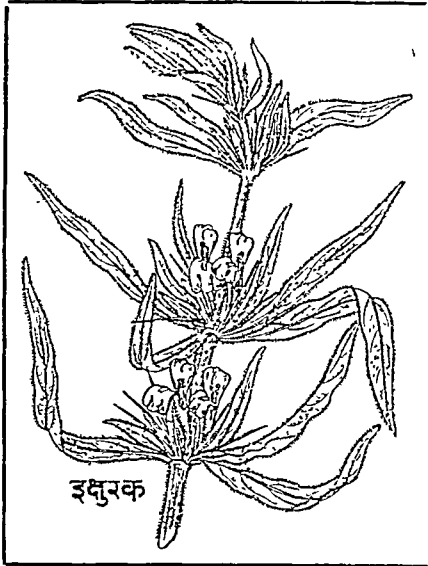
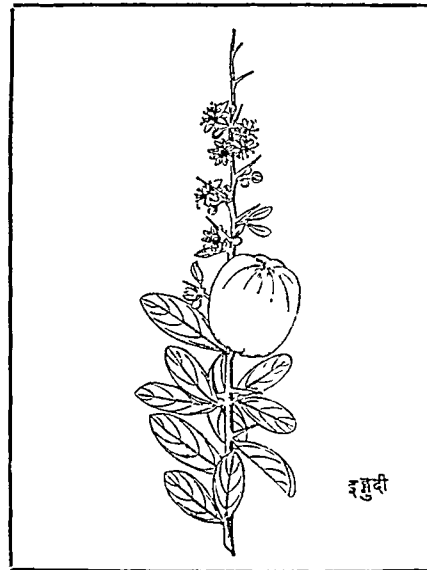
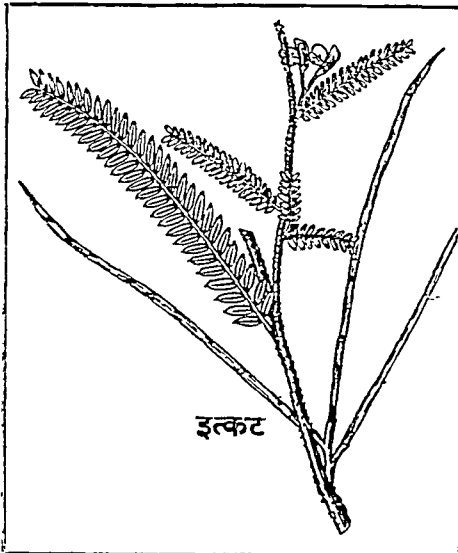
9. गिरिकर्णिका *Clitoria ternatea* L.10. *Achyranthes aspera* L.11. *Cissampelos pareira* L.12. *Dioscorea oppositifolia* L.

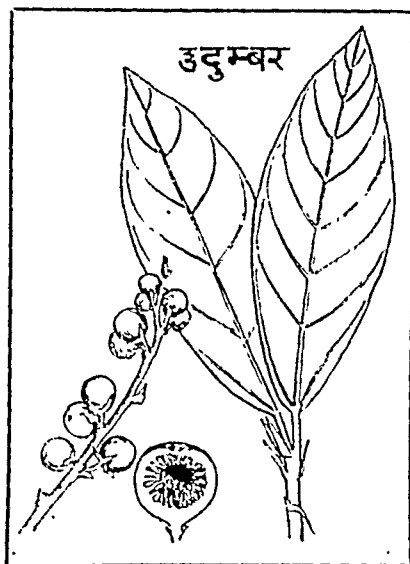
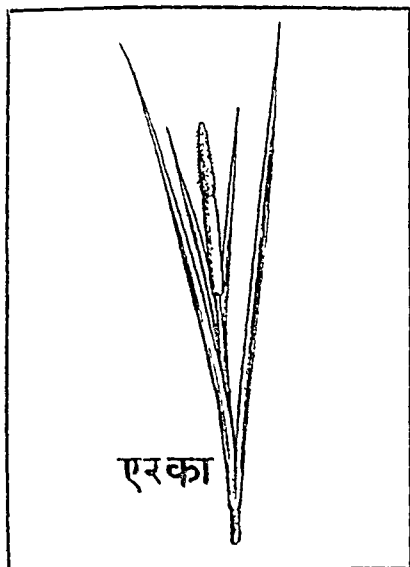
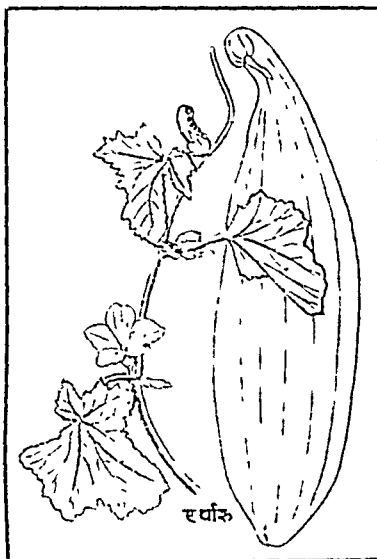
13. *Acacia leucophloea* Willd.14. *Calotropis gigantea* R. B. R.15. *Ocimum gratissimum* L.16. *Terminalia Arjuna* W. & A.

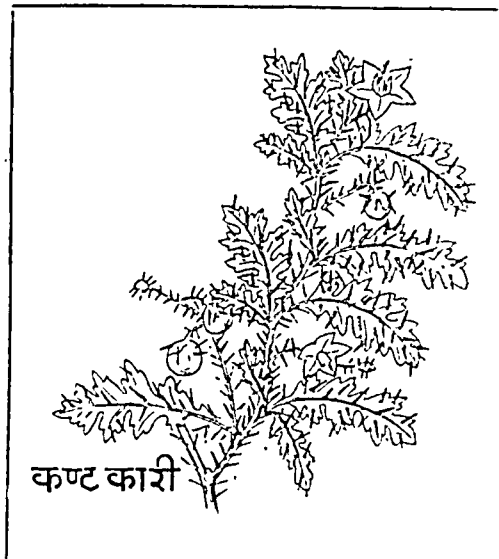
17. *Trichodesma indicum* R. B. R.18. *Saraca indica* L.19. *Bauhinia racemosa* Lam.20. *Withania somnifera* Dunal.

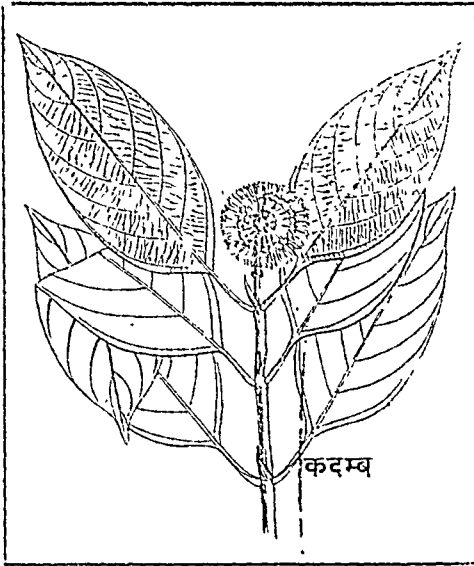
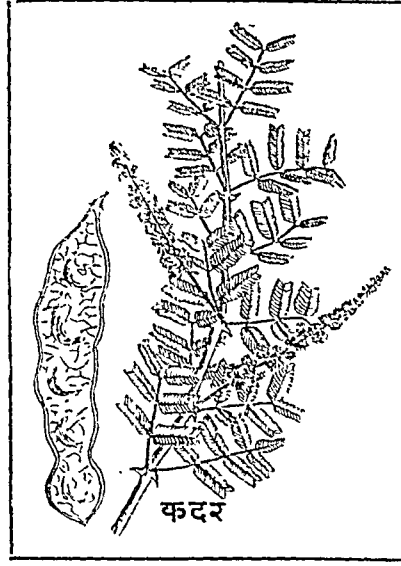
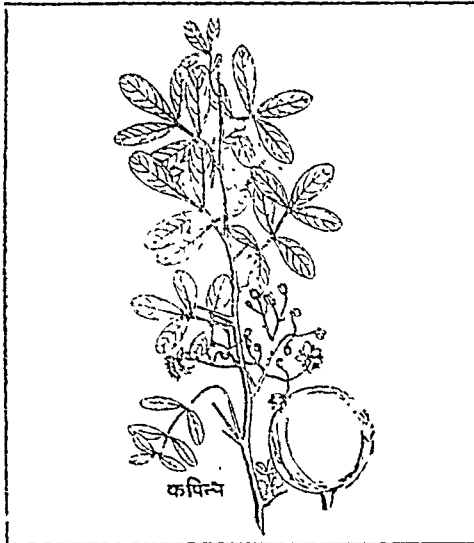
21. *Ficus religiosa* L.22. *Bridelia montana* Wall.23. *Ipomea reniformis* Chols.24. *Cajanus indicum* Spreng.

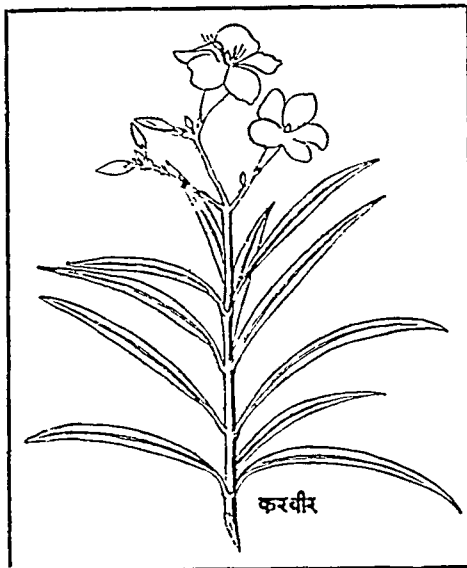
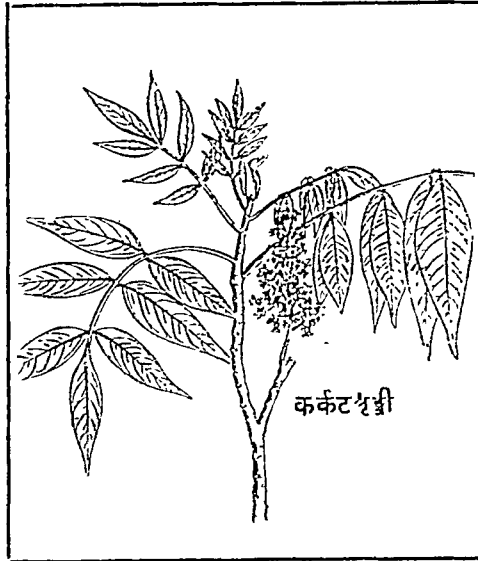
25. *Mucuna pruriens* D. C.26. *Phyllanthus emblica* L.27. *Mangifera indica* L.28. *Saccharum officinarum* L.

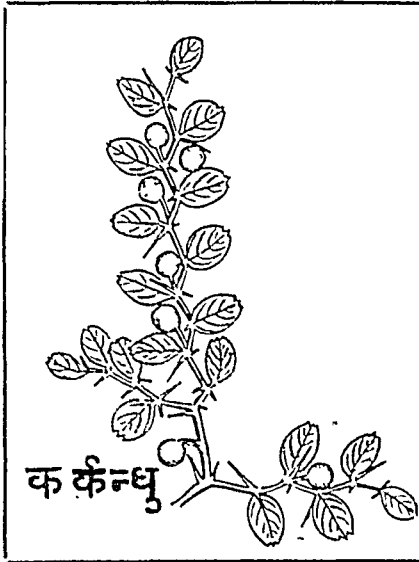
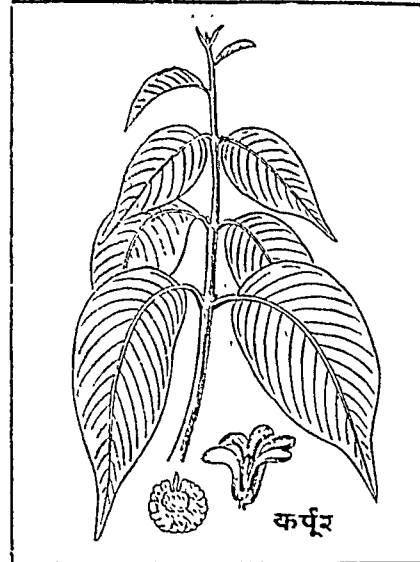
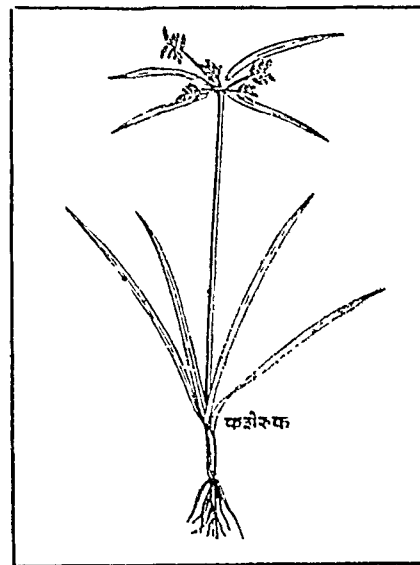
29. *Hygrophila spinosa* Andres.30. *Balanites Roxburghii* Planch.31. *Sesbania aculeata* Pers32. *Blepharis edulis* Pers.

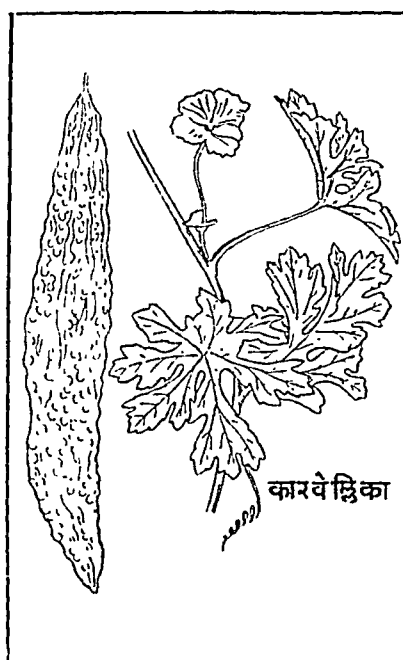
33. *Ficus glomerata* Roxb.34. *Basella rubra* L.35. *Typha elephantina* Roxb.36. *Cucumis utilis* L.

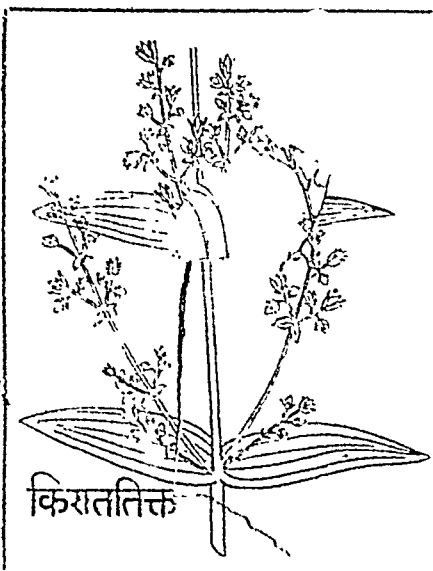
37. *Ricinus Communis* L.38. *Lagenaria vulgaris* Ser.39. *Hibiscus abelmoschus* L.40. *Solanum Xanthocarpum* Sche.

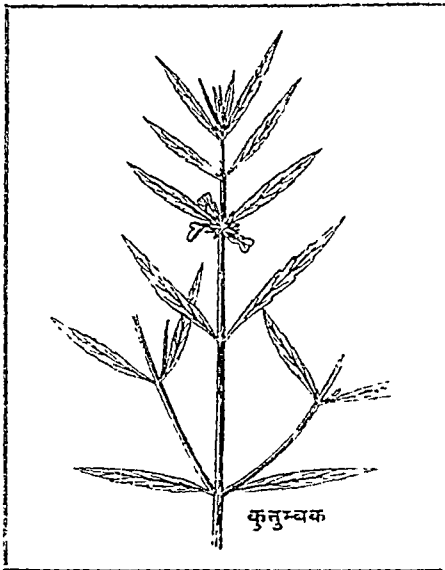
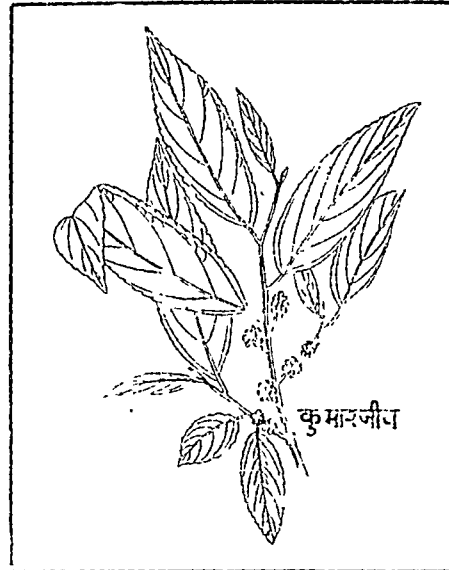
41. *Anthocephalus cadamba* Miq.42. *Acacia senegal* Willd.43. *Feronia elephantinum* Correa.44. *Carisa carandas* L.

45. *Nerium odorum* Soland.46. *Copparis aphylla* Roth.47. *Pongamia glabra* Vent.48. *Rhus Succedanea* L.

49. *Zizyphus nummularia* W.C.50. *Dryobalanops aromatica* Goertn.51. *Lathyrus Sativus* L.52. *Seirpus kysoor* R.

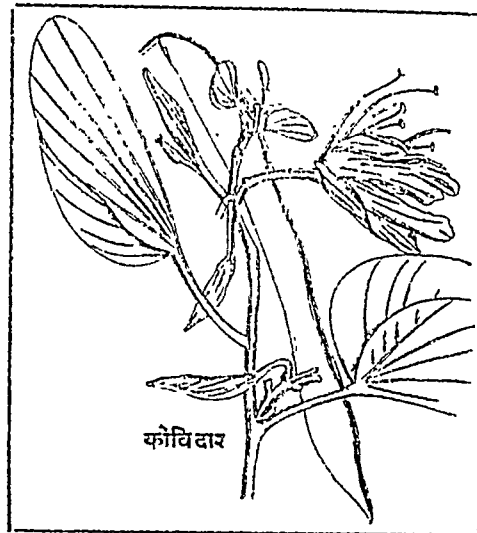
53. *Solanum nigrum* L.54. *Momordica charantia* L.55. *Gossypium herbaceum* L.56. *Ichnocarpus frutescens* Br.

57. *Ginelina arborea* L.58. *Cassia occidentalis* L.59. *Swertia chirata* Ham.60. *Holarrhena antidysenterica* V'all.

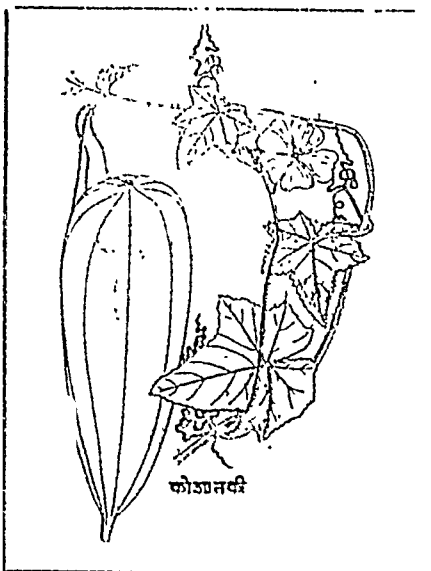
61. *Leucas linifolia* Spreng.62. *Putranjiva Roxburghii* Wall.63. *Careya arborea* R.64. *Barleria prionitis* L.



65. *Carthamus tinctorius* L.



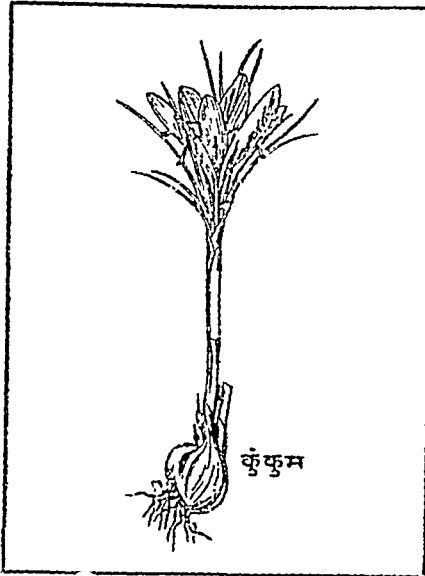
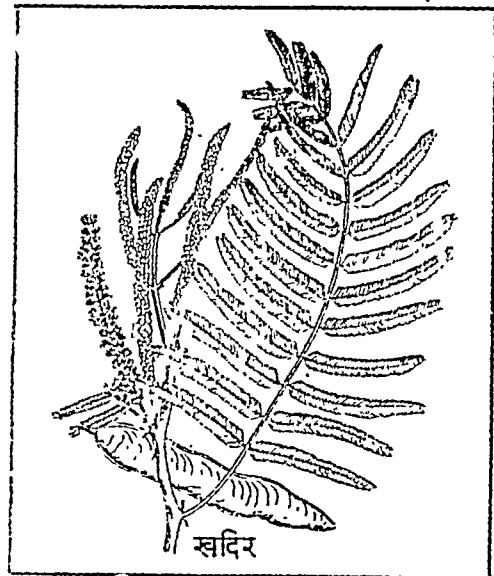
66. *Bauhinia variegata* L.



67. *Luffa acutangula* var. *amara* Clerke.



68. *Schleicheria trijuga* Willd.

69 *Crocus sativus* L.70. *Acacia catechu* Willd.71. *Balsamodendron mukul* Hook.72. *Abrus precatorius* L.



73. *Tinospora cordifolia* Miers.



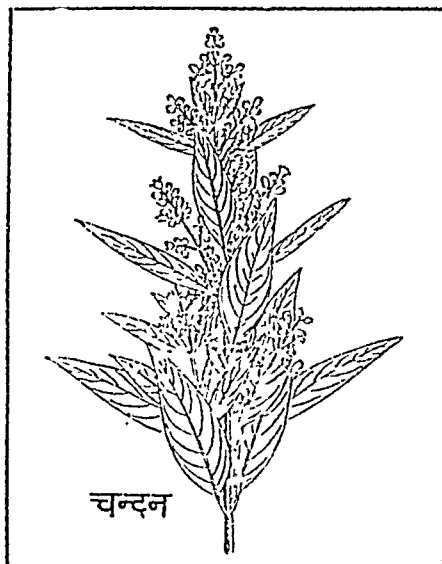
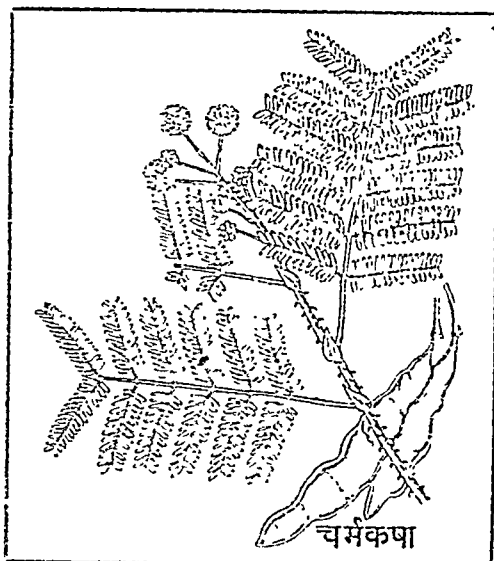
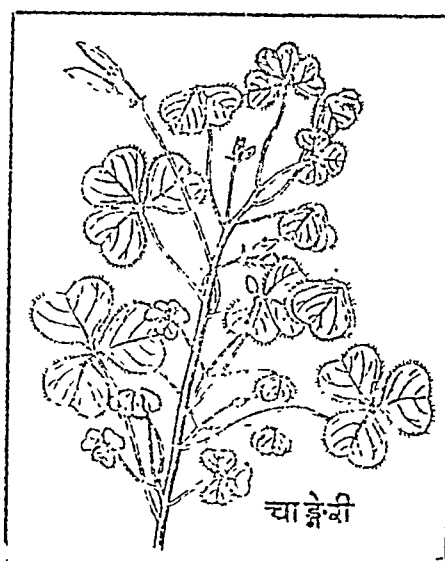
74. *Tribulus terrestris* L.

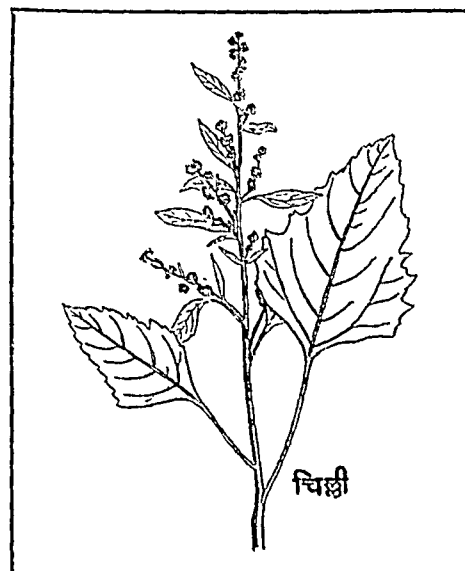


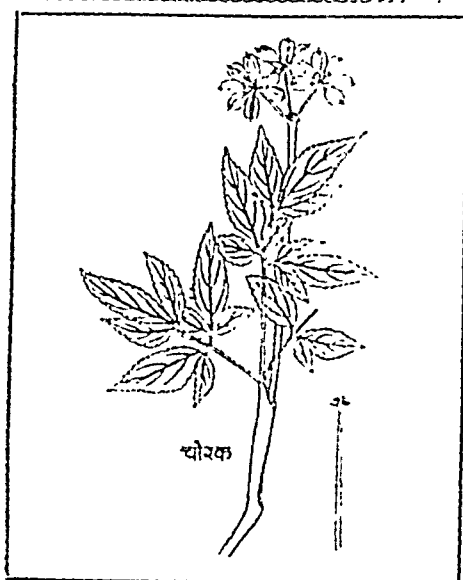
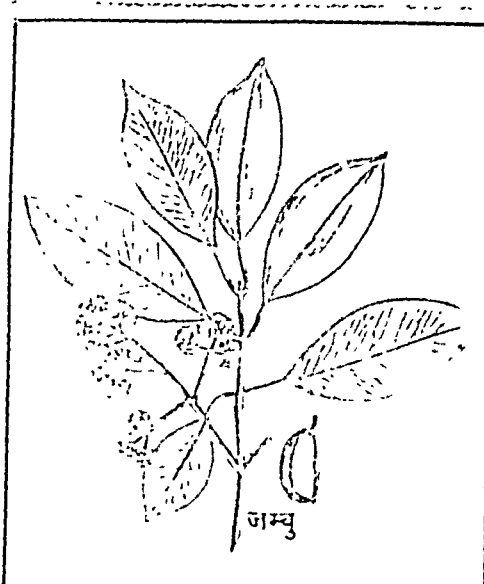
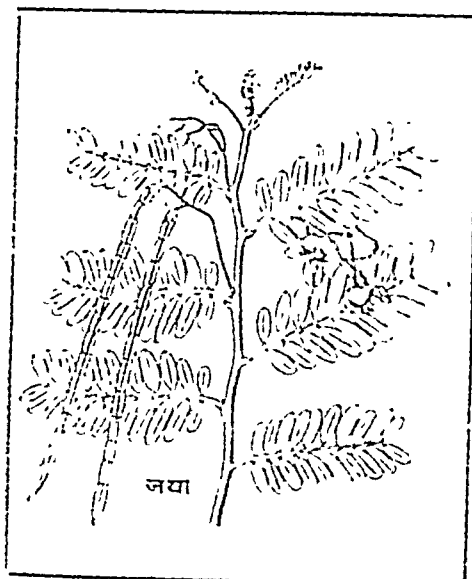
75. *Elephantopus scaber* L.

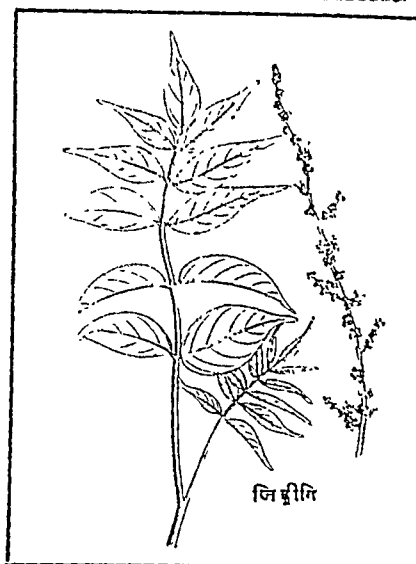


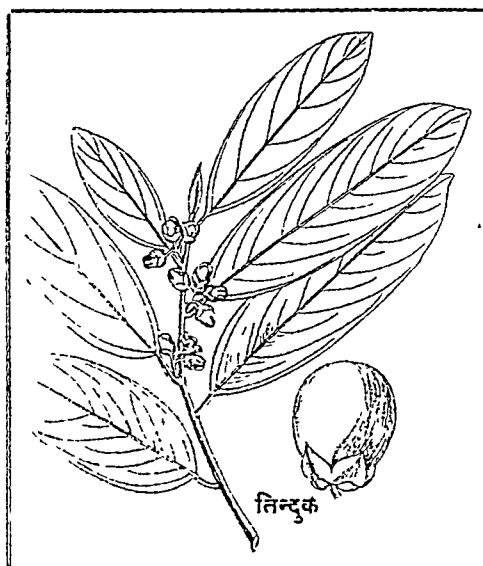
76. *Cassia tora* L.

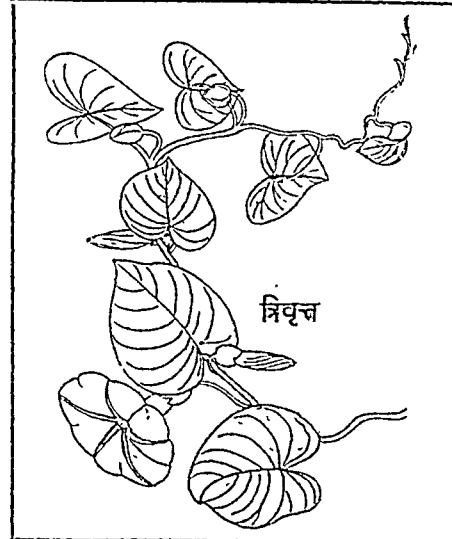
77. *Corchorus olitorius* L.78. *Santalum album* L.79. *Acacia concinna* D. C.80. *Oxalis corniculata* L.

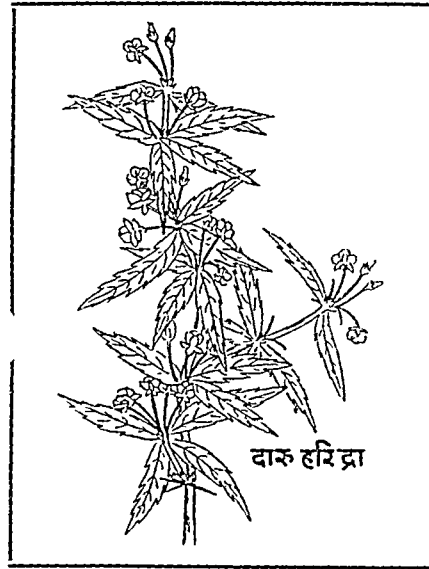
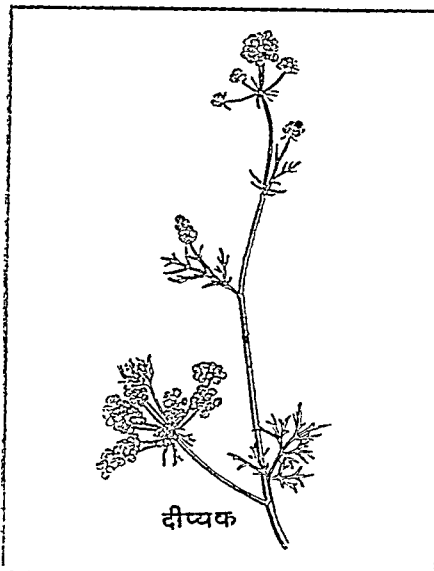
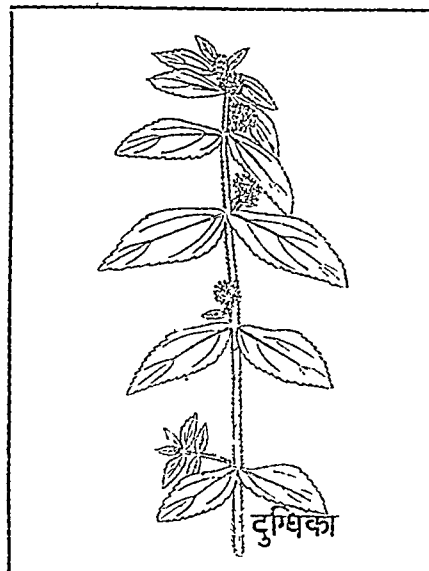
81. *Plumbago zeylanica* L.82. *Holoptella integrifolia* Planch.83. *Cucumis melo* L.84. *Chenopodium album* L.

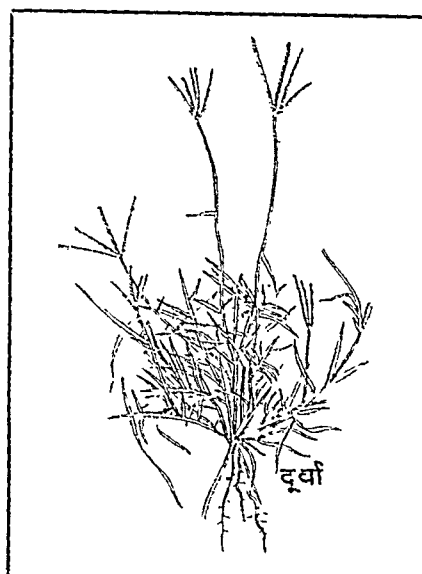
85. *Angelica glauca* Edgew.86. *Eugenia jambos* Lamk.87. *Sesbania egyptica* Pers.88. *Lippia nodiflora* Rich.

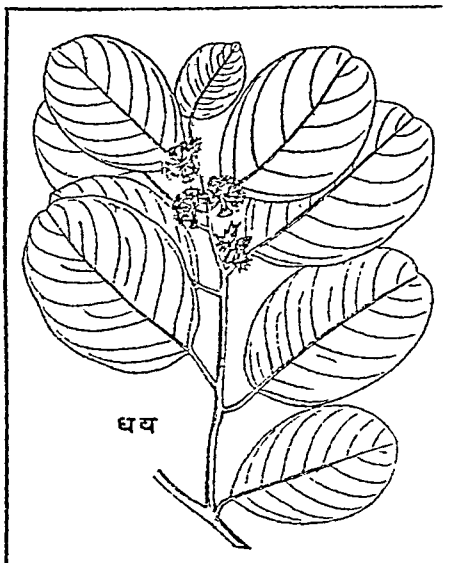
89. *Myristica fragrans* Houtt.90. जिझिनी *Odina wodier* Roxb.91. *Cuminum cyminum* L.92. *Celastrus paniculata* Willd.

93. *Cinnamomum tamala* Fr. Nees.94. तिन्तिडिक *Tamarindus indica*, L.95. *Diospyros embryopteris* Pers.96. *Sesamum indicum* L.

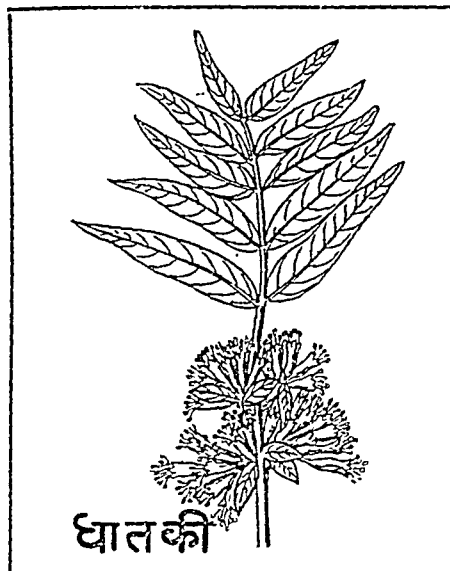
97. *Gynandropis pentaphylla* D. C.98. *Zanthoxylum alatum* Roxb.99. *Morus indica* L.100. *Ipomea turpethum* Br.

101. *Punica granatum* L.102. *Berberis aristata* D. C.103. *Carum copticum* Benth.104. *Euphorbia pilulifera* L.

105. *Fagonia arabica* L.106. *Cynodon dactylon* Pers.107. *Vitis vinifera* L.108. *Grewia tilifolia* Vahl.



109. *Anogeissus latifolia* Wall.



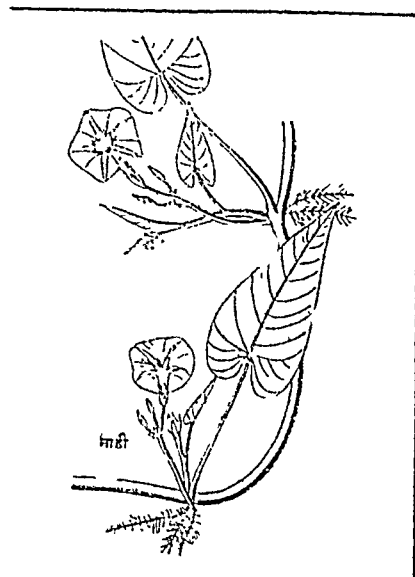
110. *Woodfordia floribunda* Salisb.

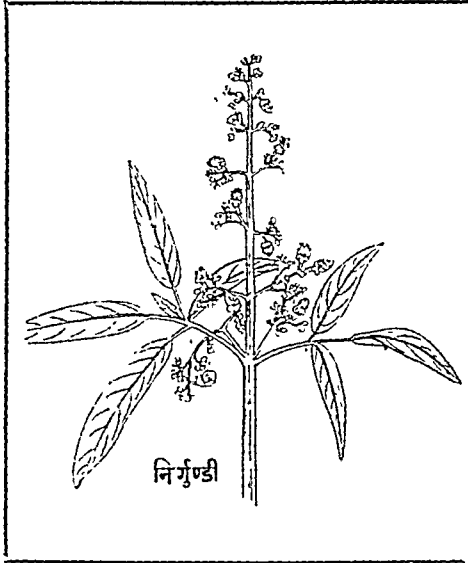
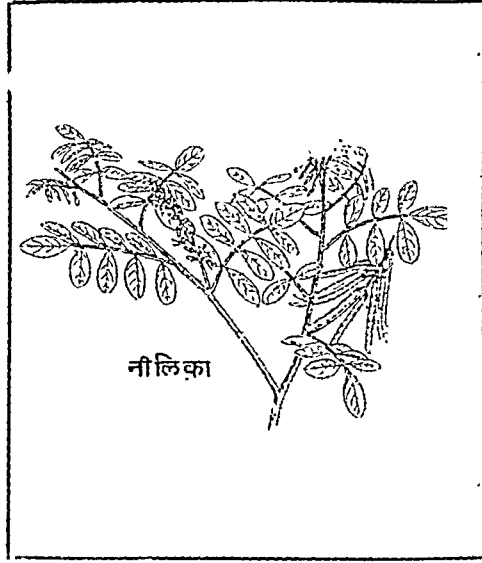


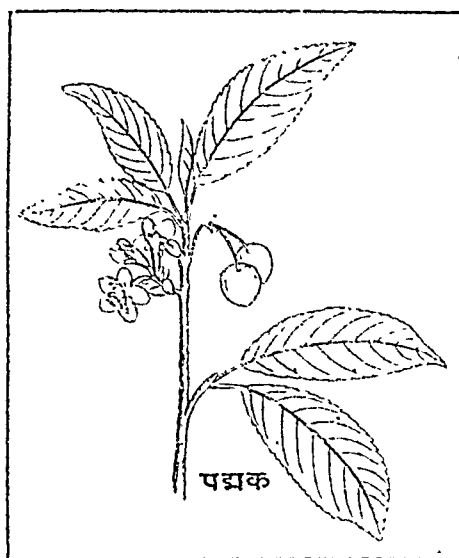
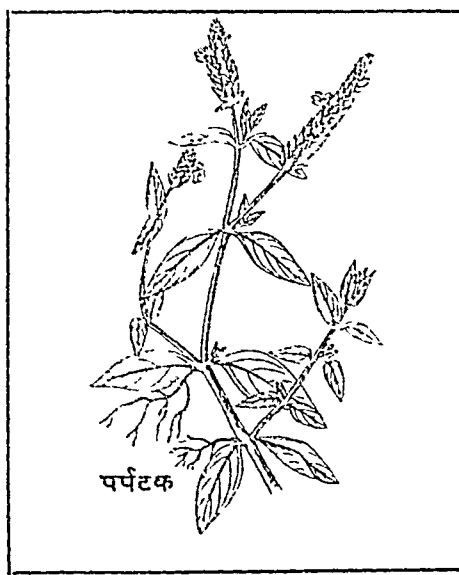
111. *Coriandrum sativum* L.

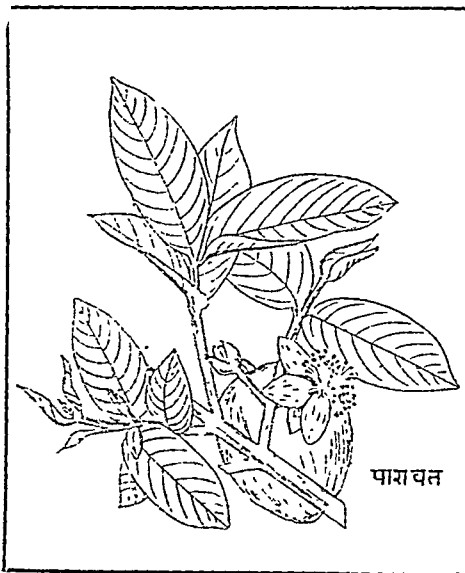
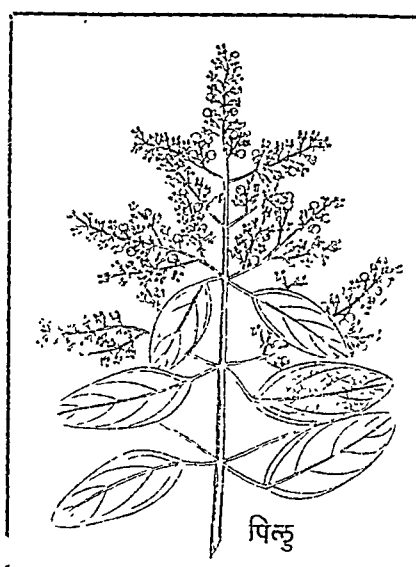


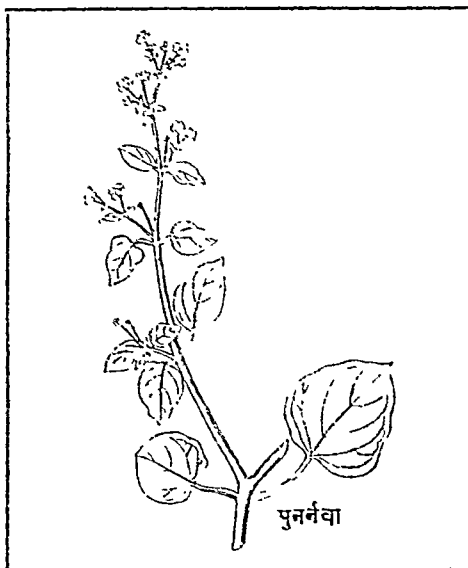
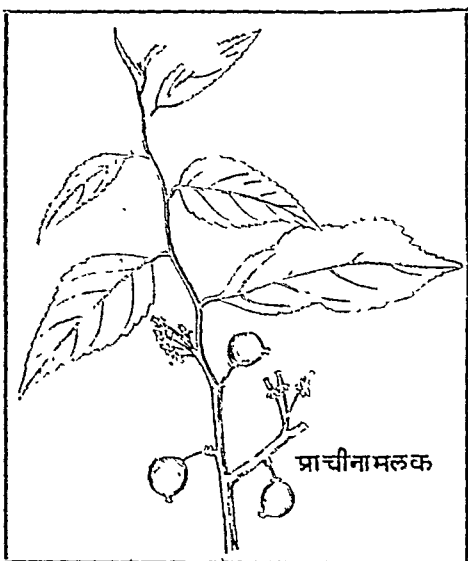
112. *Ficus retusa* L.

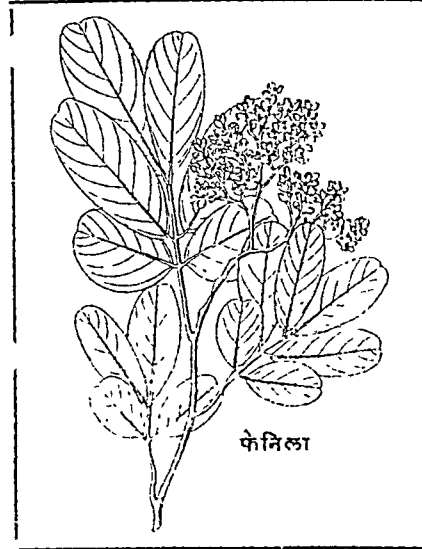
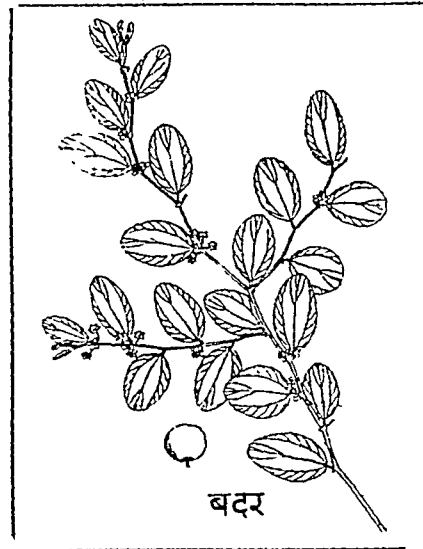
113. *Onosma echinoides* L.114. *Citrus aurantium* L.115. *Ipomea aquatica* Forst.116. *Melia azadirachta* L.

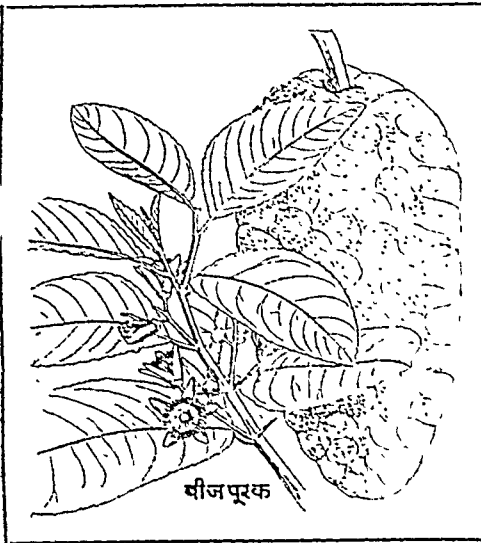
117. *Vitex negundo* L.118. *Indigofera tinctoria* L.119. *Ficus Bengalensis* L.120. *Trichosanthes dioica* Roxb.

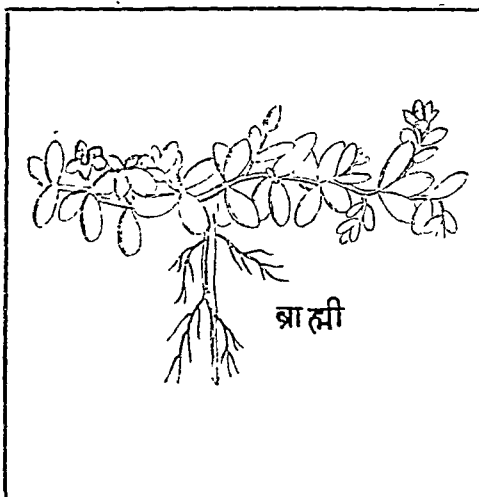
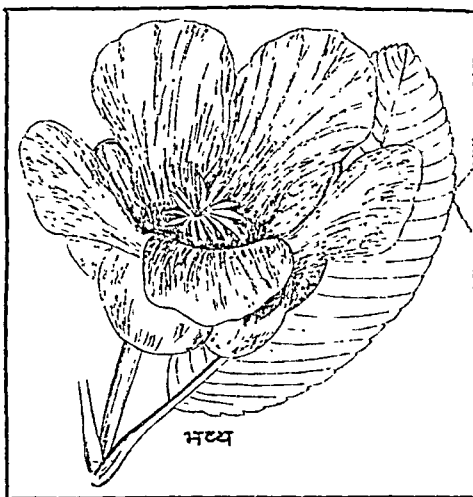
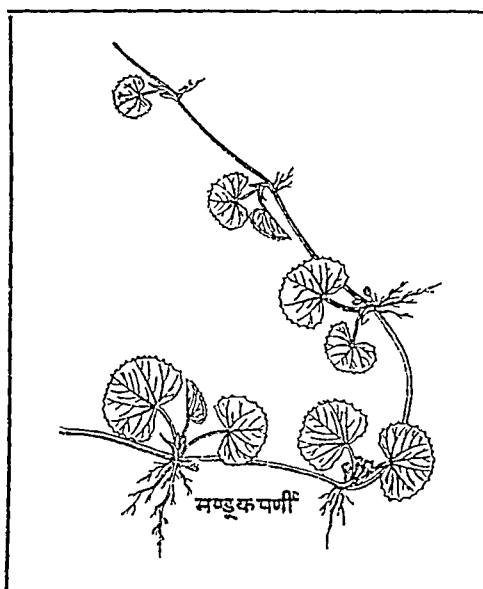
121. *Cinnamomum iners* Reinw.122. *Prunus pudum* Roxb.123. परुषक *Grewia asiatica* L.124. *Rangia repens* Nees.

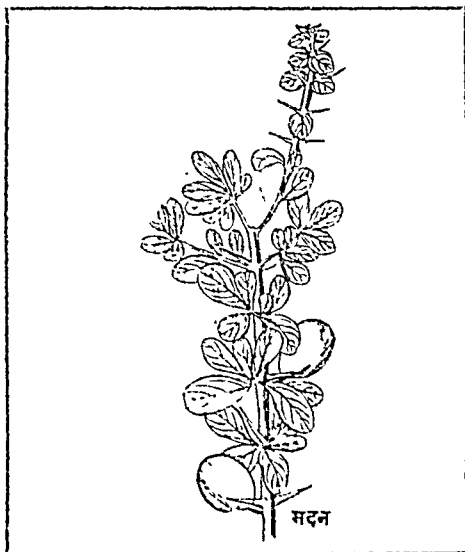
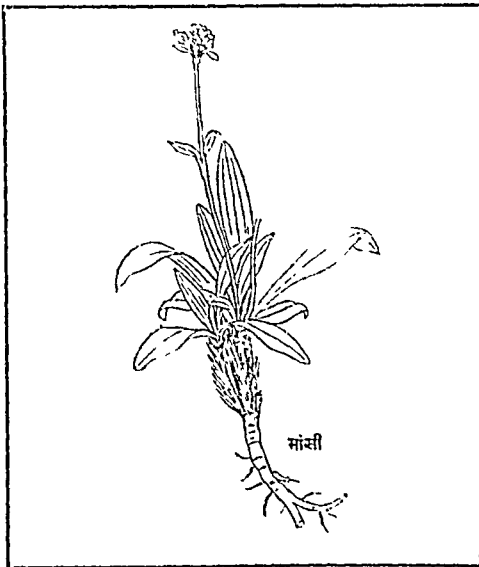
125. *Psidium guyana* L.126. *Saxifraga ligulata* Wall.127. *Piper longum* L.128. पीठ *Salvia persica* L.

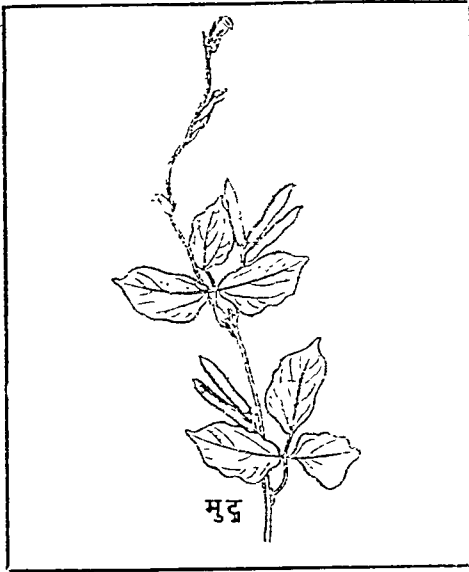
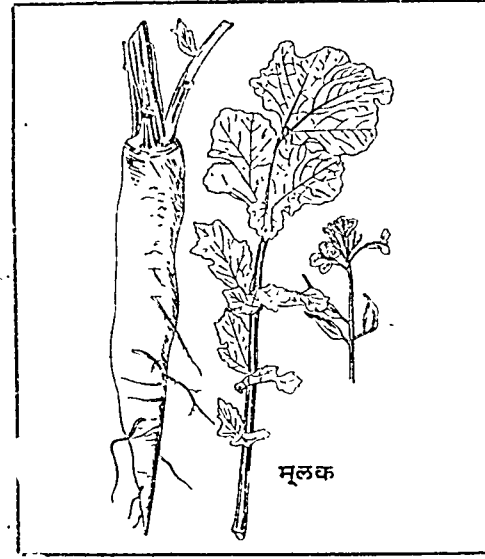
129. *Berhavia repens* L.130. *Pederia fetida* L.131. *Flacourtia cataphracta* Roxb.132. *Aglaia roxburghiana* Miq.

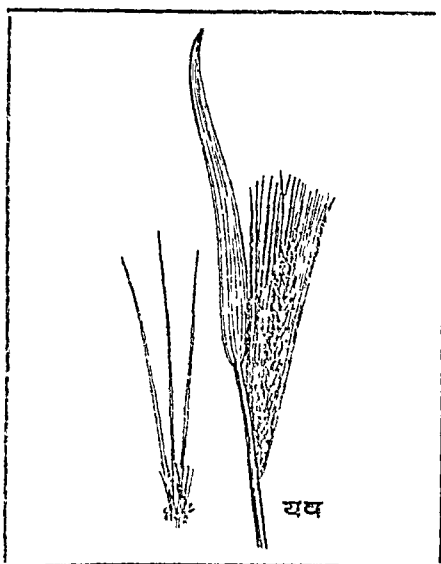
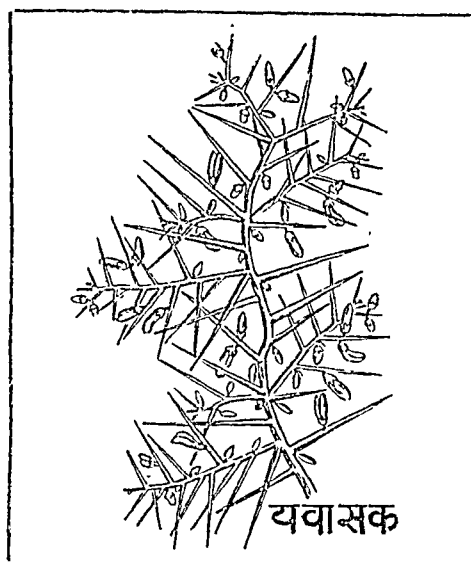
133. *Ficus tsiela* Roxb.134. *Sapiindus trifolius* L.135. *Mimusops elengi* L.136. *Zizyphus jujuba* Lamk.

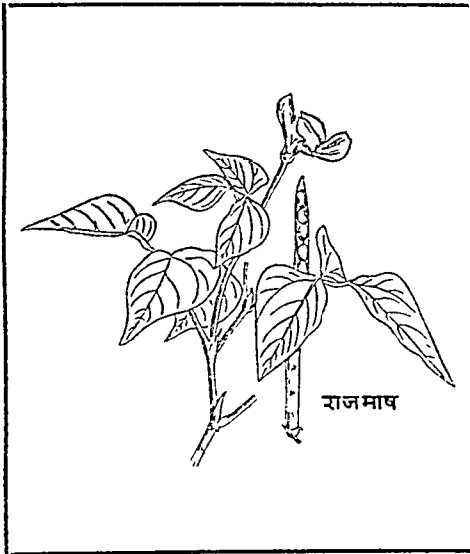
137. *Aegle marmelos* Corr.138. *Pterocarpus marsupium* Roxb.139. *Citrus medica* L.140. *Solanum indicum* L.

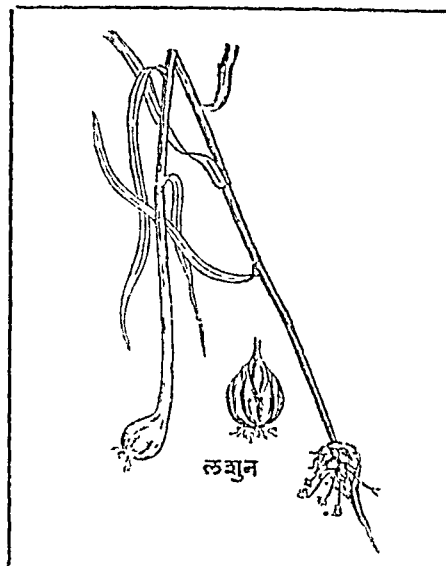
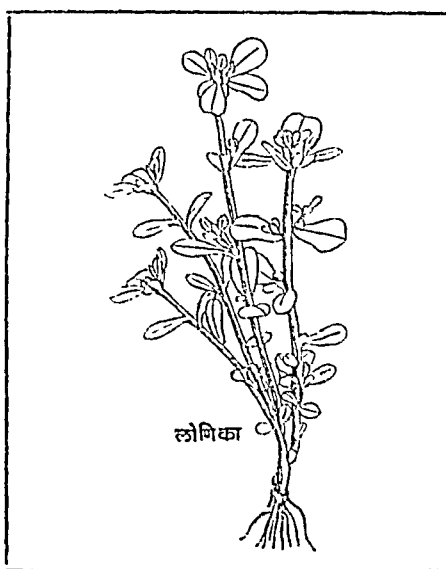
141. *Herpestis monniera* Benth.142. *Dillenia indica* L.143. *Eclipta alba* Hassk.144. *Hydrocotyle asiatica* L.

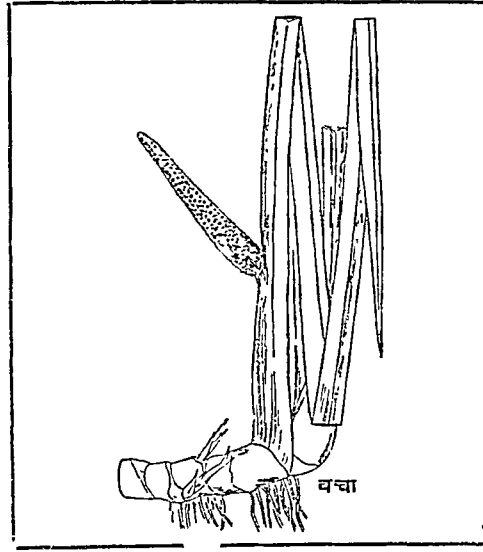
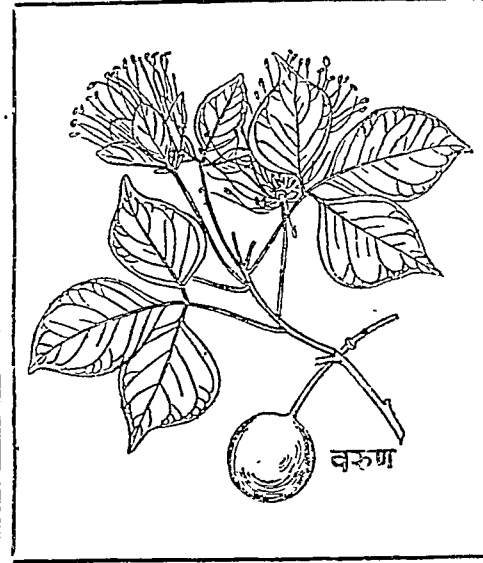
145. *Randia dumetorum* Lam.146. *Bassia latifolia* Roxb.147. *Piper nigrum* L.148. *Nardostachys jatamansi* D.C.

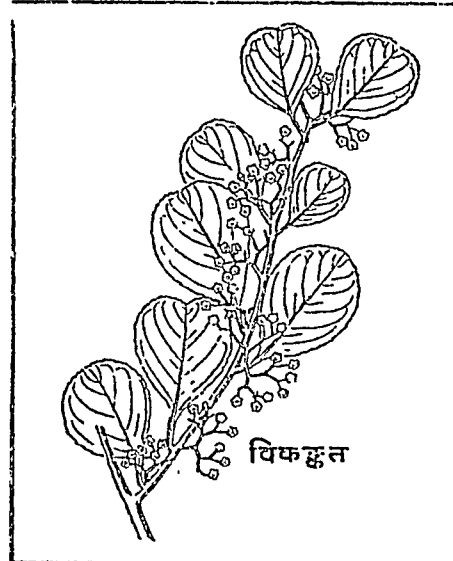
149. *Phaseolus mungo* L.150. *Cyperus rotundus* L.151. *Clematis triloba* Heyne.152. *Raphanus sativus* L.

153. *Hordeum vulgare* L.154. *Alhagi maurorum* Desv.155. *Nymphaea lotus* L.156. *Doemia extensa* Br.

157. *Vigna catiangu* Endl.158. *Mimosa hexandra* Roxb.159. *Pluchea lanceolata* Oliv.160. *Loranthus falcatus* L.

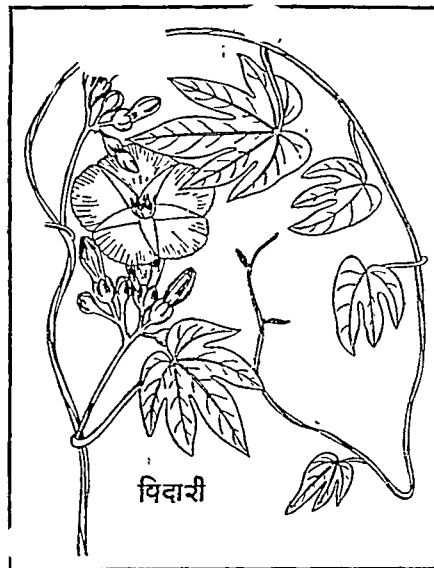
161. *Soyimida febrifuga* Juss.162. *Allium sativum* L.163. *Artocarpus Lokoocha* Roxb.164. *Portulaca oleracea* L.

165. *Symplocos racemosa* Roxb.166. *Acorus calamus* L.167. *Salix tetrasperma* Roxb.168. *Cratogeomys religiosa* Forst.

169. *Prunus amygdalus* Bill.170. *Solanum melongena* L.171. *Adhatoda vasica* Nees172. *Gymnosporia montana* Benth.



173. *Embellia ribes* Burn.



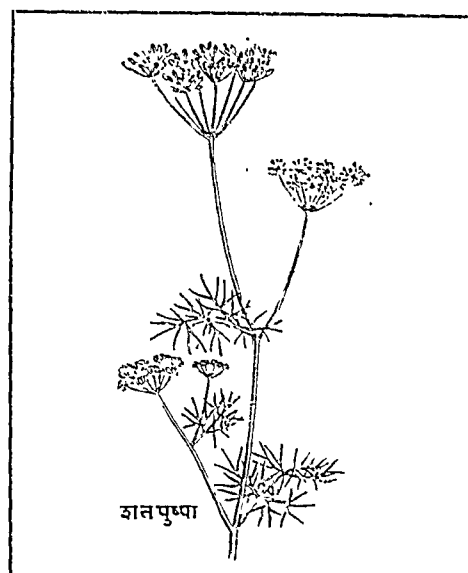
174. *Ipomoea digitata* L.

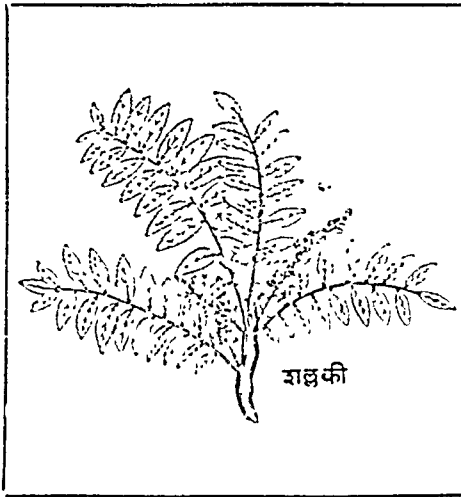
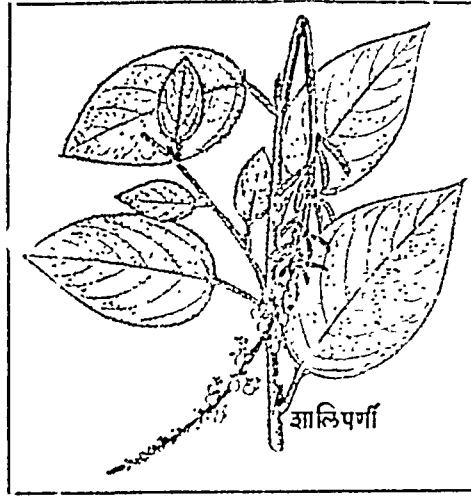
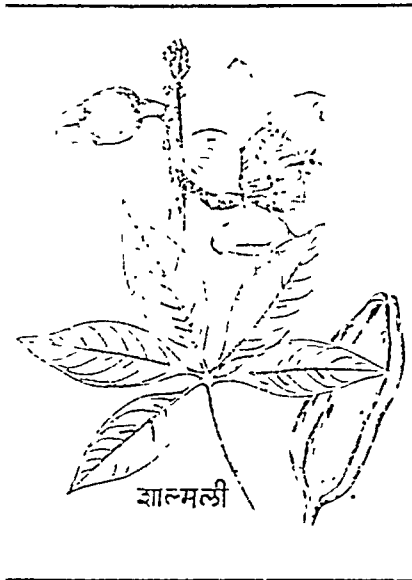
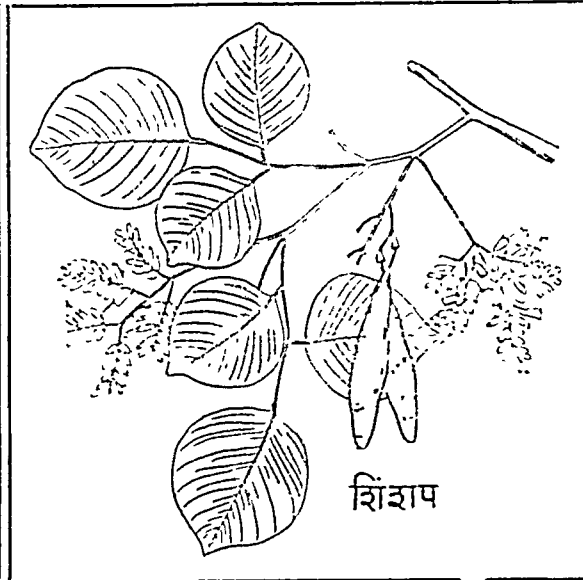


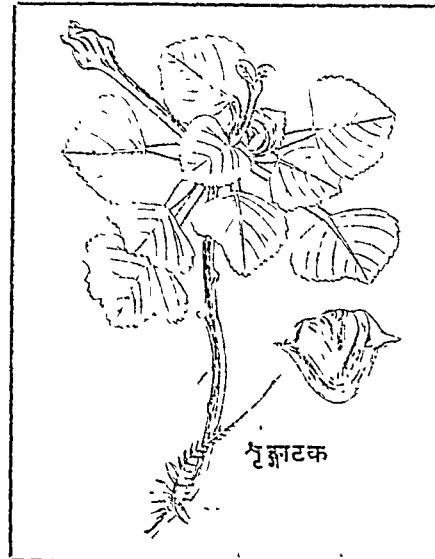
175. *Evolvulus alsinoides* L.

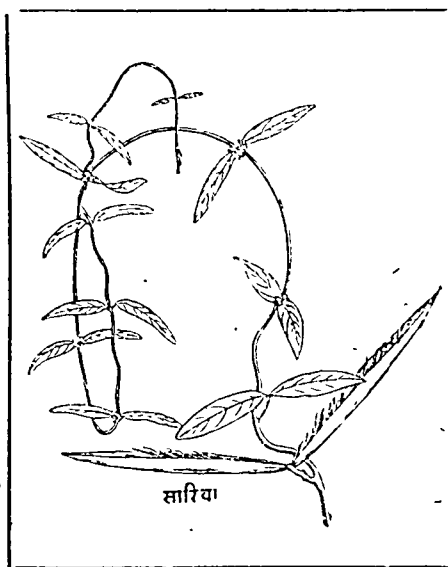


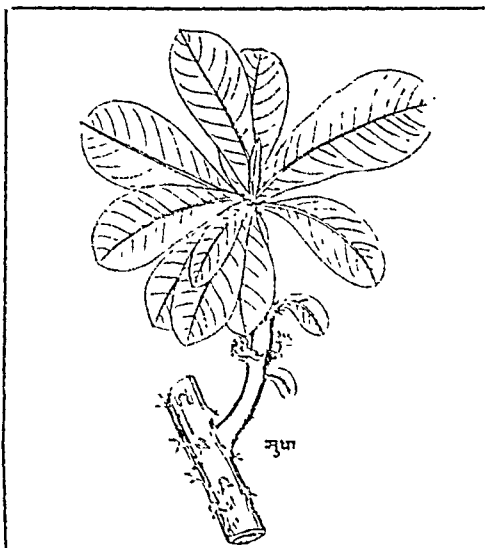
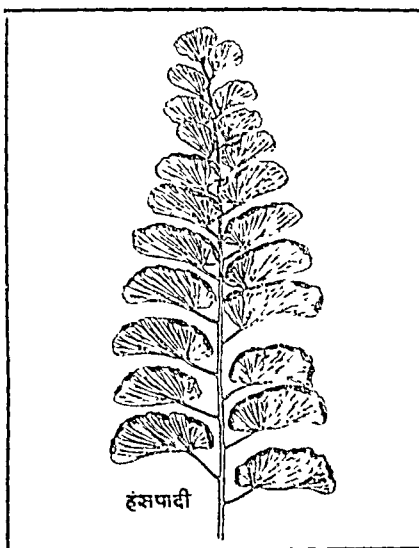
176. *Crotalaria juncea* L.

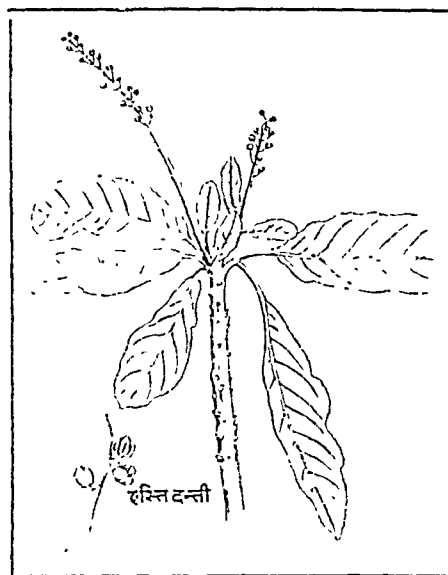
177. *Crotalaria verrucosa* L.178. *Peucedanum graveolens* Benth.179. *Asparagus racemosus* Willd.180. *Prosopis spicigera* L.

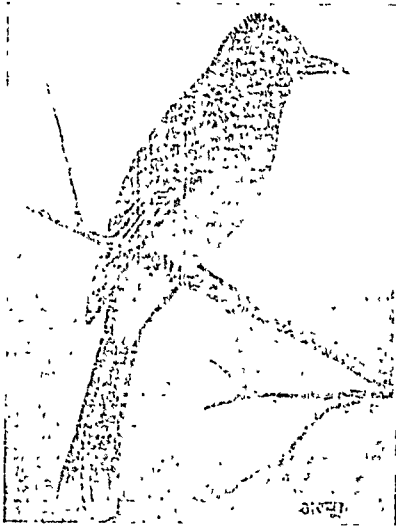
181. *Boswellia serrata* Roxb.182. *Desmodium gangeticum* D. C.183. *Bombax malabaricum* -D. C.184. *Dalbergia sissoo* Roxb.

185. *Moringa pterygosperma* Gœrtn.186. *Albizzia lebbeck* Benth.187. *Zingiber officinale* Rose.188. *Trapa bispinosa* Roxb.

189. *Alstonia scholaris* R. Br.190. *Shorea robusta* Gærtn.191. *Brassica Campestris* L.192. *Hemidesmus Indicus* Br.

193. *Euphorbia nerifolia* L.194. *Ocimum sanctum* L.195. *Proralea corylifolia* L.196. *Adiantum lunulatum* Burm.

197. *Juniperus communis* L.198. *Croton oblongifolius* Roxb.199. *Adina cordifolia* Hook.200. *Argemone Mexicana* L.



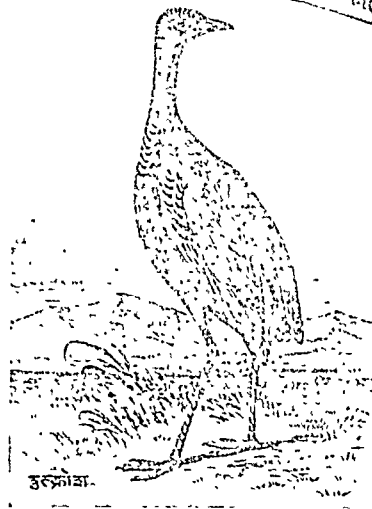
1. अल्युह The bulbul



2. अम्बुकुटी The water hen



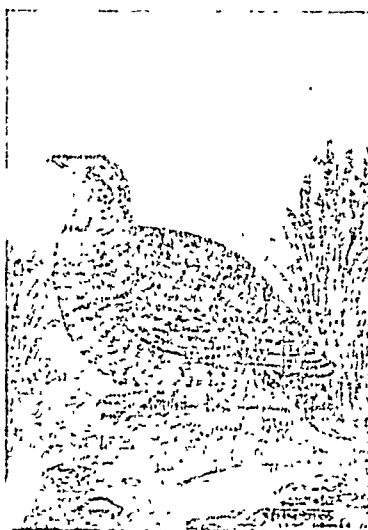
3. इन्धान The adjutant



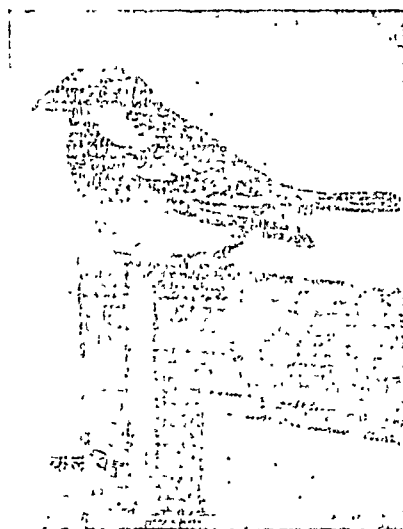
4. उलकोश The trumpeter



5. कङ्क The heron



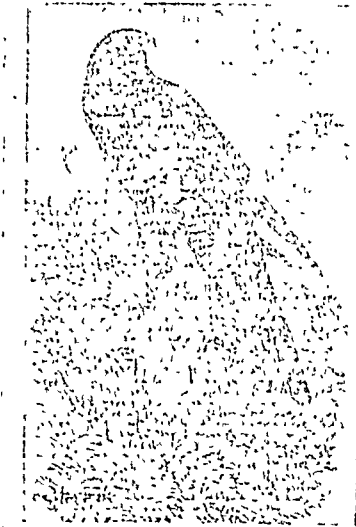
6. गविसल The grey partridge



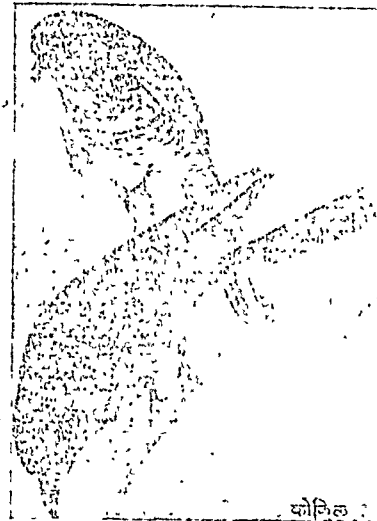
7. कलविङ्क The house sparrow



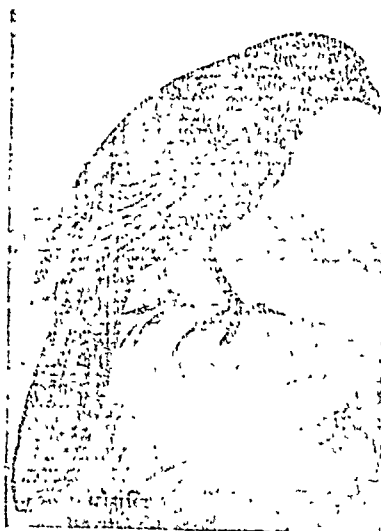
8. कुरर The fish eagle



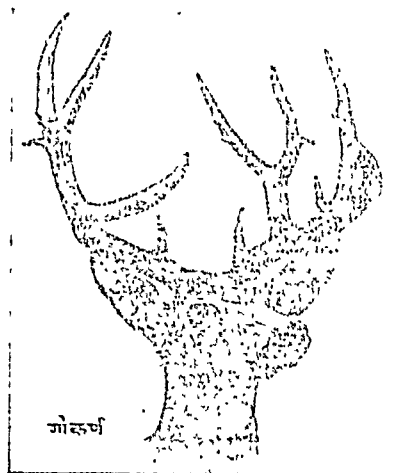
9. कुलिङ्क The sparrow hawk



10. कोकिल The koel



11. कोयटि The Coucal



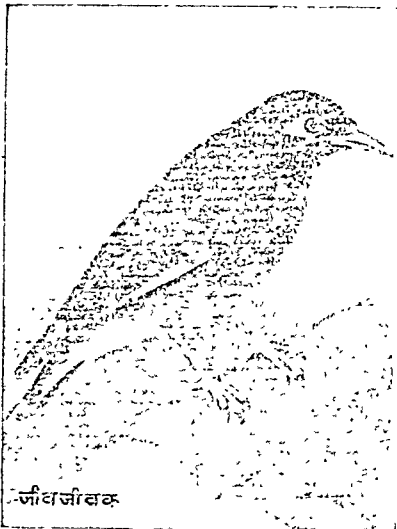
12. गोरुर्ण The mule deer



13. गोषा Iguana



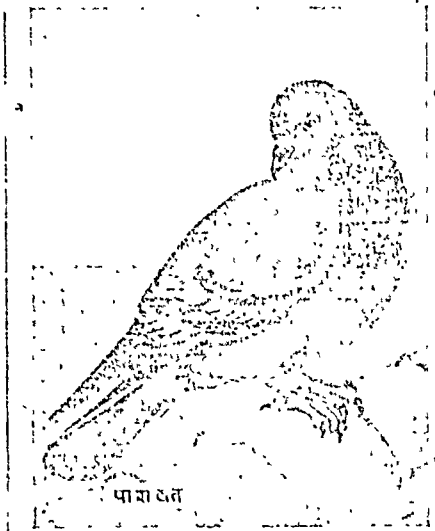
14. चारुष्क The gazelle



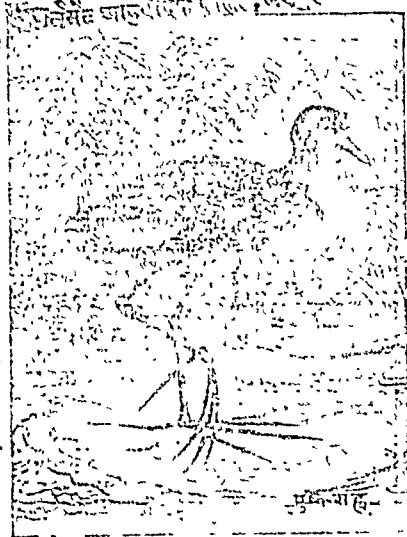
15. जीवजीवक The common mynah



16. हुन्दुभि The hornbill



17. पारावत The pigeon



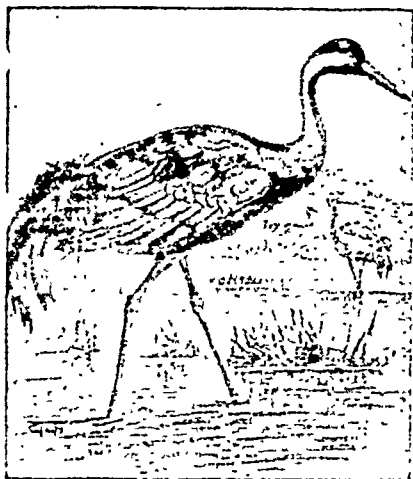
18. गुच्छराह The lily trotler



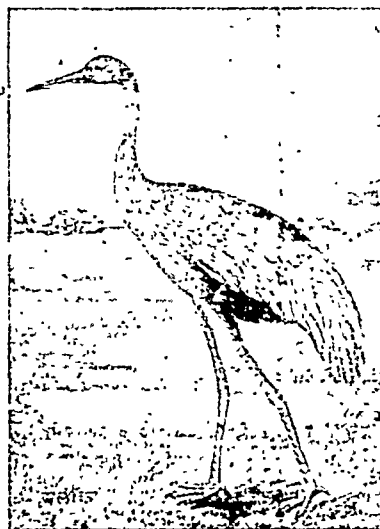
19. पृषत The chital (Spotted deer)



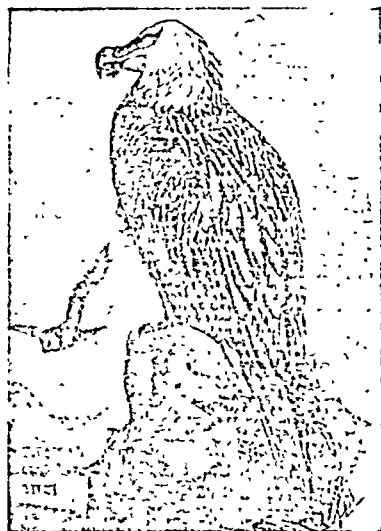
20. प्रियासज The babbler



21. वक्र The common crane



22. वक्रा The snow wreath crane



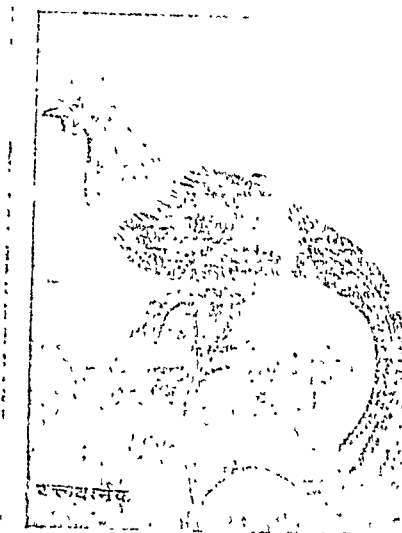
23. भास The bearded vulture



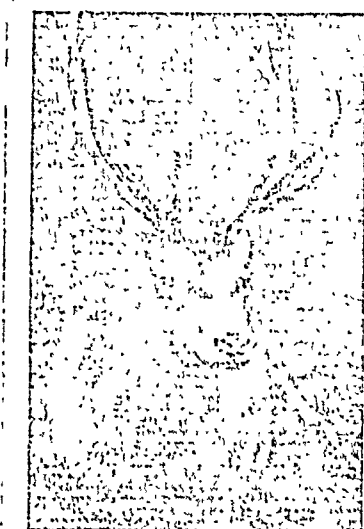
24. मत्स्य The fish



25. मृणालकण्ठ The snake bird



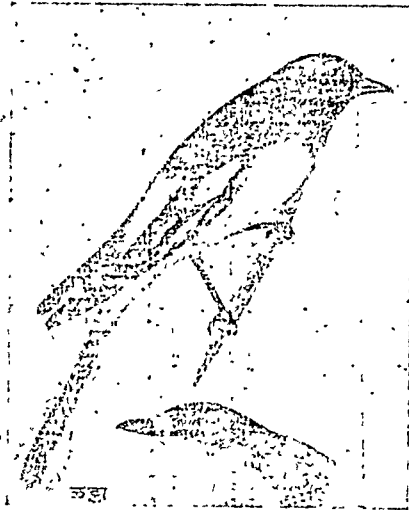
26. रक्तवर्त्मक The red jungle fowl



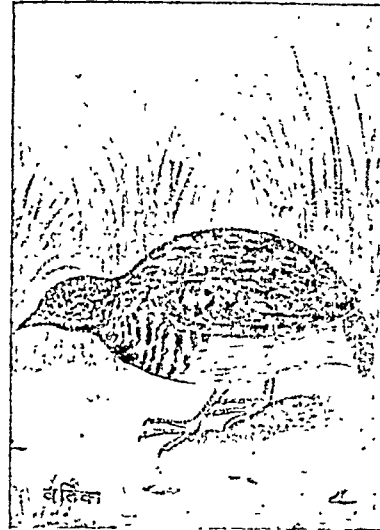
27. रान The hangal or Kashmir deer



28. लघ्वक The minivet



29. लहुरा The scarlet minivet



30. वर्तिका The female bustard or button quail



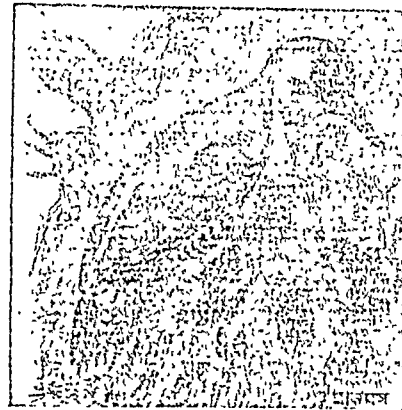
31. वर्तिका The rain quail



32. वानर The monkey



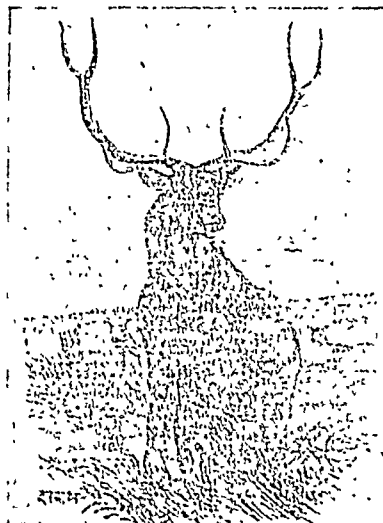
33. जातीक The jungle bush quail



34. दातपत्र The wood pecker



35. शम्भर The Indian sambhar



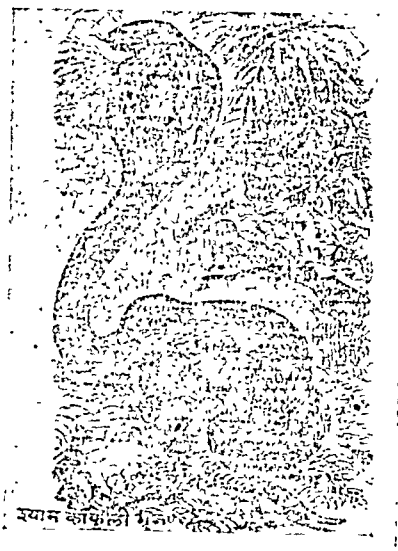
36. शरभ The elk or wapiti



37. शशाङ्कनी The golden eagle



38. शारपद The stork



39. श्यामकाकुलीसृण The dark-brown python



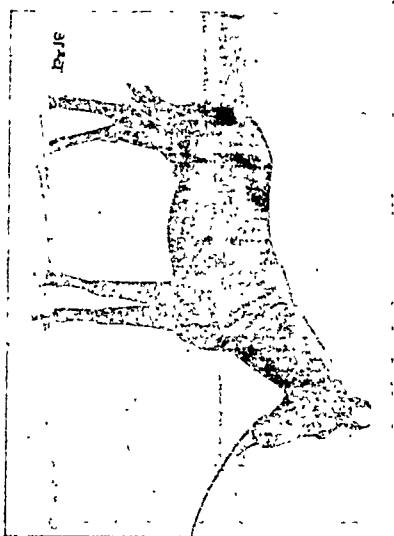
40. श्येन The hawk



41. सिंह The lion



42. हंस The swan



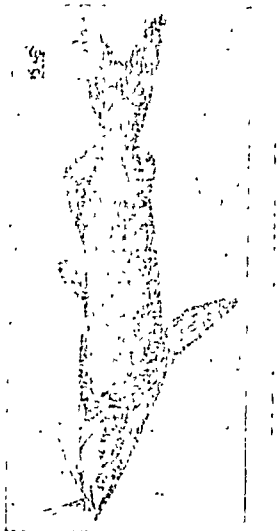
43. ३१ The horse



44. ३१२ The mule



45. ३११ The cobbler's owl bird (Avocet)



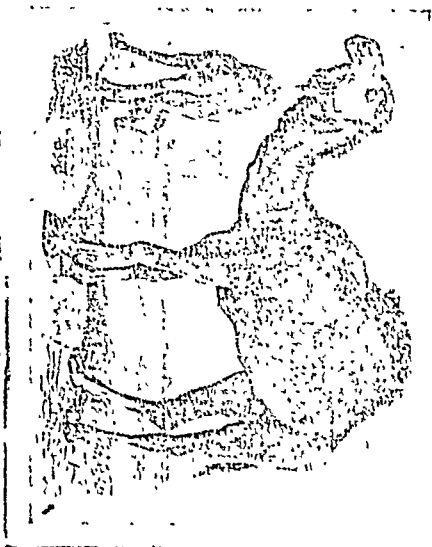
46. ३१ The cat-fish



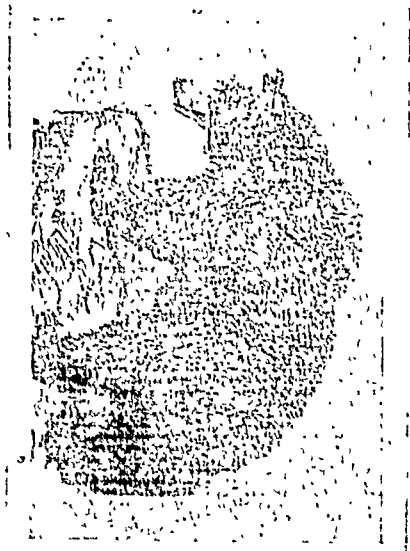
47. सृष The sorial (wild sheep)



48. सूत The owl



49. एक The camel



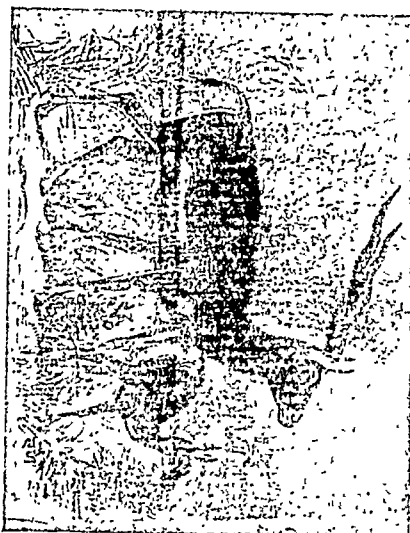
50. भू The bear



51. मृग The musk deer



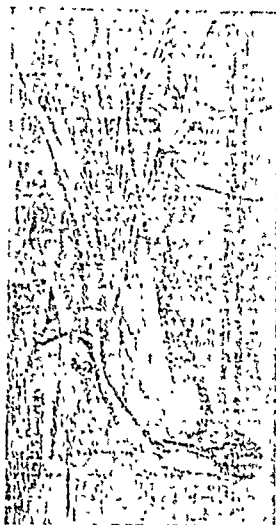
53. मर्मट The marmot



52. गृध्र The black buck (Indian antelope)



54. कृमि The crab



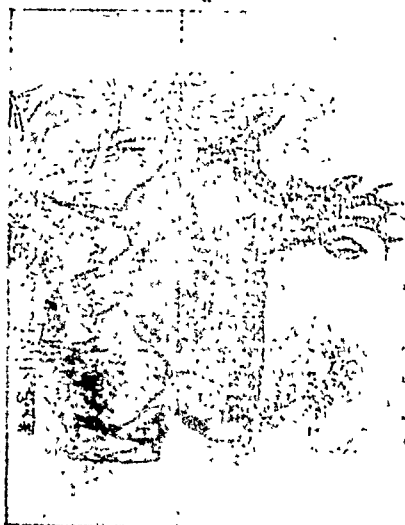
55. कृष्ण The common river tern



57. गण्डक The gangetic garial



56. मुकुट The cock



58. मृग The roe deer



59. वृषि The baya of weaver bird



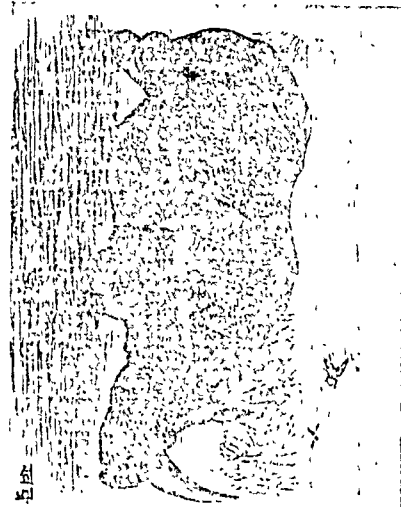
61. कूर्म The tortoise



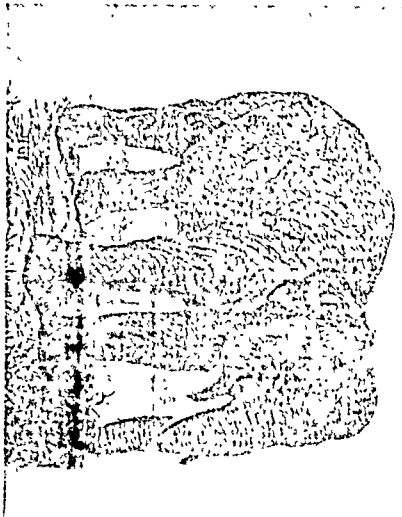
60. शीतल The hedgehog



62. मृग The Indian muntjak (Barking deer)



63. चरु The rhinoceros



65. गज The elephant



64. अश्व The ass



66. गजक Gecko



67. गाय The gaur



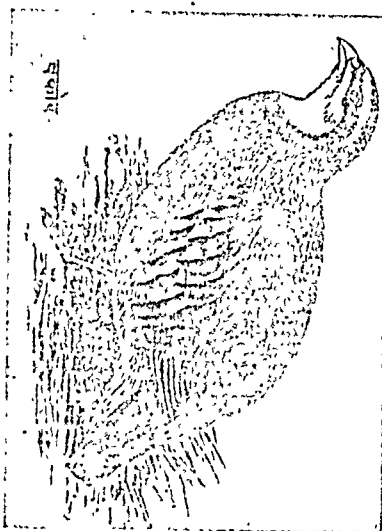
69. गे The cow



68. गरु The vulture



70. गिर The hill partridge



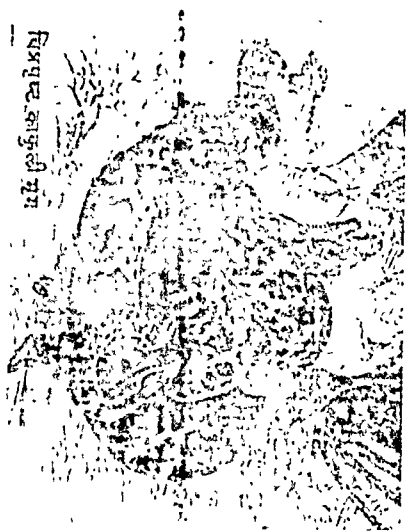
71. चक्र The chukor



73. चक्र The yak



72. चक्र The tree sparrow



74. चक्र The reticulated python

75. *Rasa* The musk shrew77. *Vāṭī* The hoopoe76. *Susu* The susu (Gaugetic dolphin)78. *Sagṛa* The jackal



79. རྩེ The hyena



80. རྩེ The partridge



81. རྩེ The whale



82. རྩེ The panther

85. ताम्रपक्षी The flamingo



83. पुराणी The owl



86. कृक The pelican



84. मृग The mongoose

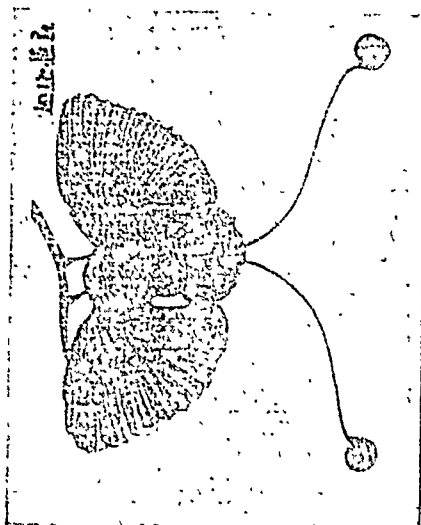




87. पक्षि The peacock



89. पक्षि The frog



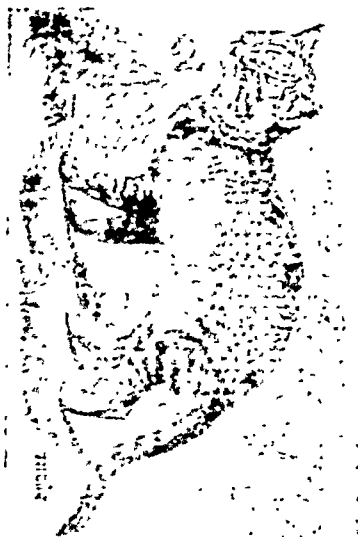
88. पक्षि The king bird of paradise



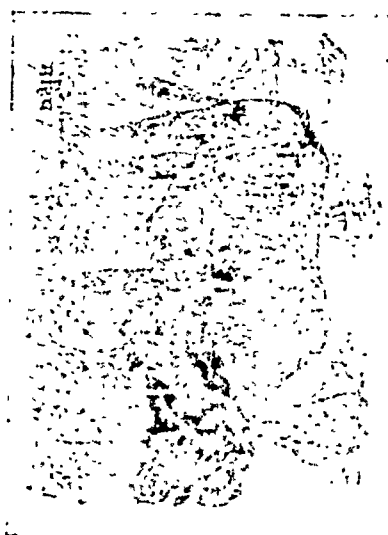
90. पक्षि The magar (the great Indian crocodile)



91. मृग The honey buzzard



93. मृग The cat



92. मृग The buffalo



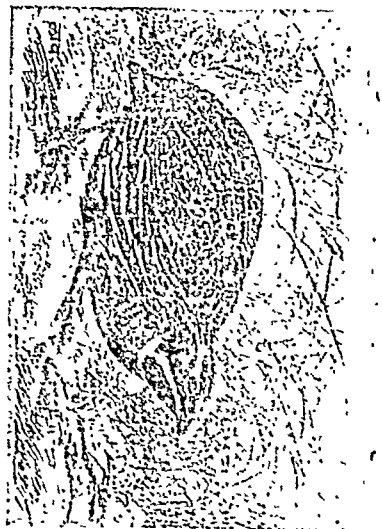
94. मृग The horse



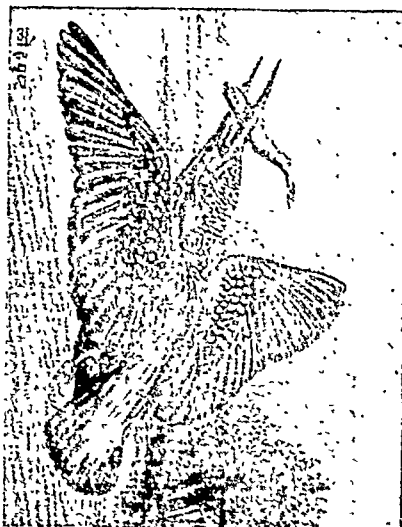
95. गुरगुरि The hog deer



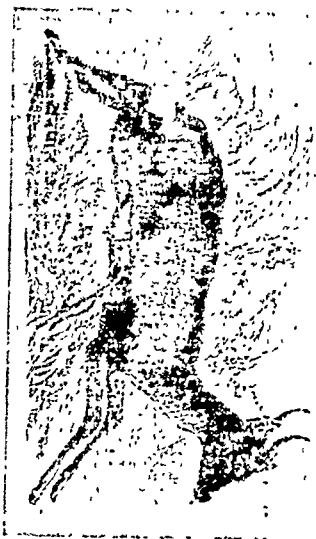
97. लोपक The fox



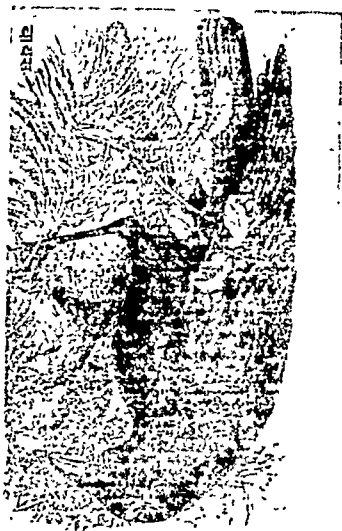
96. कृक The common quail



98. किरण The king fisher



99. कृशा The deerlet



101. कृशा The crow



100. अश्वि The dog



102. अश्वि The spoon-bill



103. वृकः The wolf



105. शृङ्गः The conch snail



104. वृक्षः The tiger



106. शृङ्गः The skimmer or scissorbill



107. va The hare



109. y/e The pearl oyster



108. fopet The estuarine crocodile



110. q/er The porcupine



111. वृष The wild boar



112. रथ The red deer

